

॥ श्रीमद्ब्रह्माधीश्वरा विजयन्तान्तमाम् ॥
 जगद्गुरु श्रीमद्ब्रह्माचार्यलना
 निम्बधर्मद्वय महात्मा आदर्शानां प्रचार करुणार
 स वि त्र भा सि क.

शुद्धाद्वैत-सुक्तिमार्तक.

देवदीपोत्सवांक



वर्ष १ :

ॐ

आश्विन

सं. १६८९

अंक १-७

ॐ

कालिक

सं. १६८८

जगद्गुरु श्रीमद्ब्रह्माचार्यल.

तंत्री अने प्रकाशक :

वसंतराम हरिकृष्ण शास्त्री.

१७४८, राजा महेतानी पोणः अमदावाद.

शुद्धाद्वैत-भक्तिभारतम्

व५६ ६.]

आश्विन, श्रीचतुर्दशी ४५३.

[अ० ७.]

सर्वोत्तमहेतुनिरूपणम् ॥

श्रीकृष्णाय नमः । आत्यरूपेणानन्द । परमानन्द । आत्यस्य कृष्णरूपत्वेन वह्निरूपत्वेनो
अनन्तपद्मात् । कथमुभयरूपं १ श्रीकृष्णस्यमिति । ईदृशस्य कथं प्राकृत्यं २ कृष्णनिधिरिति । किमर्थं ३
दैवोद्धारप्रयत्नामेनि । अदर्शनदशायामुद्धारार्थं स्मृतिमात्रेति । न प्रयत्नं २ श्रीभागवतेति ।
क्रो-मृदार्थं २ साकुरेति । तस्यैव वेदार्थत्वाय वेदपारगेति । मत्तातरसत्तया सशयनिराकरणाय
मायावादेति । अतिरिक्तमतवृत्तसंशयभावाय सर्वेति । साकाररक्षणप्राप्तुपायनिरूपणे भक्तिमार्गेति ।
मार्गाधिक्यमोघाय शीघ्रेति । भगवतो ब्रह्मणाप्रियत्वाद् उद्धारभावाभावाय अगीकृत्यैवेति ॥ अंगी
कृति समार्गा । अथवा मार्गरेवमन्तः अंगीकृताविति । अंगीकृते मार्गं वसंपादनेन मद्वाकारुणिक
इति । करुणासार्यकचाय विमुक्तिरिति । भगवतोधिकसामर्थ्यवत्त्वाय अदेयेति ॥ अदेयं भगवतोऽलौकिक-
सामर्थ्यं, दक्षता, तथोपाय इति । स्वसर्वस्वदातृत्वमोघाय स्वदेयदातृत्वमोघाय वा महोदारेति ।
इदोऽपि सर्वप्रवृत्त्यभावाय प्राकृतेति । स्वीयजनमोहाभावाय वैथान्यरेति । सुखसेव्यत्वाय वल्लभेति ।
विषयत्वेनापि प्रियतायै सद्भवेति । धर्मतोपि प्रियतायै हितकृदिति । न बाह्यमार्गेणैव किन्तु हृत्वा हित
कृत्वबोधनाय जनेति । फलदानपर्यन्तं तथात्वमोघार्थं निश्चिन्नेति । स्वतः स्वस्वसिद्ध्यपि तथानाय
सर्वेति । भक्तिशिक्षकत्वेन तथाचमुक्तं, ज्ञानदानेनापि तथाचमोघाय श्रीकृष्णज्ञानद इति । वाचापि
तथात्वबोधाय गुरुरिति । एतेन सर्वथा तथेत्युक्तं, देयसंपत्तिरित्यादि । कृपावत्त्वाय पद्मेति । हर्षान्त-
दातृत्वाय कृपेति ॥ प्रियत्व दानोत्तरमपि न दत्तमिति प्रतीत्या आपस्यकृत्वाय पतिः । प्रतिपद्य
निराकृत्यै रोषदृक् इति । भक्तेषु तदभावाय भक्तेति । सेवाया सुकरत्वाय सुखेति । पूजाविषय
त्वाभावाय दुराराधयेति ॥ सेवाया माहात्म्यज्ञानसिद्ध्यर्थं दुर्लभेति । सर्वेषां स्वरूपाज्ञानात् सूर्य-
स्येव उर्गति । स्वीयानां बोधकत्वाय वागिति । स्वपदप्राप्तिवत्त्वाय श्रीभागवतेति । स्वस्यैव तदमृत-
योग्यतायै तत्सारेति । अन्येषु दानमिति सानिच्येति । देयस्यासाधारणत्वाय विमुक्तिद इति ॥
मुक्तिपदार्थमाहुः रासलीलेति । योग्यतया दानमाहुः कृपयेति । परमफलदातृत्वमाहुः विरहेति ।
तत् पूर्व स्थितिहेतुमाहुः भक्त्येति । वेदसार्थकत्वाय कर्ममार्गेति । तदगिच्चेनेत्यर्थः । तथापि-
मार्गांतरनिरूपणाय यागादिति । निःसाधनफलदानाय पूर्णानन्द इति ॥ तथापि स्वस्य पूर्णानन्द-
त्वाय पूर्णकाम इति । फलरूपत्वाय वाक्पतिरिति । असाधारणेश्वरत्वाय विषुषेश्वर इति ॥ असा-

धनसाधनबोधनाय कृष्णनामेति । स्वमात्रकृतित्वाय भक्तपरायण इति ॥ विश्वासोत्पादनाय भक्त्याचरोति । सर्वथा निरपेक्षत्वाय स्वार्थेति ॥ तादृक्प्रियत्वाय तादृशेति ॥ परमकृपालुत्वाय स्वदासेति । समर्थकृपालुत्वाय सर्वशक्तिश्रुति । परोक्षेपि तथात्वाय भुवीति । सर्वथा पालकत्वाय पितृति । स्नेहेन स्वधर्मस्थापनाय स्ववशेति ॥ असाधारणधर्मवैलक्षण्येन गर्वाभावाय स्मयेति ॥ भगवत्त्वाय पतिप्रतेति । सर्वथोपास्यत्वाय पारलौकिकेति । गूढाश्रयत्वेनापि भगवत्त्वाय निगूढेति । अंगीकृतेषु ज्ञापनेनापि तथात्वाय अनन्येति । मोहनिवाकरत्वेनापि तथात्वाय उपासनादीति भगवत्त्वेपि पुष्टिपुरुषोत्तमत्वाय भक्तिमार्ग इति । भक्तिमार्गस्थित्ययोग्येपि फलदानाय पृथगिति सर्वधर्मानितिवस्तुहार्दज्ञानाय श्रीकृष्णेति । उत्तरलीलारसानुभावकत्वाय प्रातिक्षणेति । बाहिःस्पृष्टिं वशामाहुः तत्कथेति । कथानिरोधार्थं तद्विस्मृतेति । स्वामिनीवद्वज्रमात्रप्रियत्वाय व्रजेति । अन्यः गत्यभावाय प्रियेति । भावात्मकस्य लीलारसानुभावाय । पुष्टीति । तदनुभवयोग्यतायै रह प्रिय इति एतादृशेपि भक्तनिकटस्थितिसपादकत्वाय भक्तेति । आंतरत्वेनाविदितचेष्टत्वाय सर्वेति । कदाचिप्रतीतावपि मोहनमोहनतथात्वाय अतिमोहन इति । एकप्रयोजनत्वाय भक्तेति । असाधारणप्रयोजनार्थं पतितपावन इति । तत्प्रकारार्थं स्वयं इति । रसांतरनिवर्तनाय यश इति । गुप्त्यर्थं पर इति परं दृष्ट्वा निवर्तत इति लीलासहितस्वस्थितिज्ञापनाय लीलेति । जीजामात्रभरत्वाय गोवर्द्धनेति । तन्मयत्वाय तल्लीलेति । एवमेव स्वस्थितभगवद्भोगाय यशोभक्तेति । स्वाविष्टत्वेनैव तथात्वज्ञापनाय यजकतंति । तेनैव चतुर्विधभक्तिमार्गायतसाधकत्वाय चतुर्वर्गेति । अंगीकृत्यन्यथाकृत्यभावाय सत्येति । गुणक्षोभनिवर्त्तकत्वाय त्रिगुणातीत इति । गर्वादया बाहिर्मुख्यामायाय नयेति । सर्वथा दोषाभाषोपायाय स्वकीर्तीति । तद्वर्द्धनप्रकारनिरूपणार्थं तत्त्वेति । मायेति । ब्रह्मेति । स्वरूपोत्कर्षणापि तद्वर्द्धनाय अप्राकृतेति । एतादृशेऽप्यनुसरण्यत्वाय सहजेति । लौकिकोत्कर्षणापि तथात्वाय त्रिलोकीति । भूमौ निरोपतस्तत्मात्म्य भूमौति । विषयप्रकारेणापि तथात्वाय सहजेति । तादृशे कर्तव्यबोधनाय अशेषेति । इति श्रीहरिरायजीविरचित सर्वोत्तमहेतुनिरूपणं सम्पूर्णम् ॥

[आ प्रचीर्ण लेख उभोईवाला भगवदीय गोविंदबाल छानलाल परीखे प्राचीन प्रथमरयी लक्षणे प्रकट करवा मोकलेछो, वन ते अशुद्ध जग्यायी व्रण वर्षधी प्रकट करी घटायो नहि. सोदाज समय परेले तेनी एक शुद्ध प्रति प्राप्त यता वा अंकया मुद्रित यथो छे. संवत्.]

पार्श्वानि कीर्तन.

राम महार ॥—छाळ माइ सोगत हें रंगभांने ॥ सीस सोहे कामरी खोही लाळ लज्ज
र रीने ॥१॥ बुंदन कीच घाटवनळें मोहन चक्रित चहुंदिस हेरे ॥ कचहु दिस भ्रमहोत विकट
राधे राधे श्रीमुख देरे ॥२॥ तिर्हि ठिन तडित उज्यारो देख्यो प्यारी महल झरोले ॥ रसिक
प्रीतम पग धरत उज्यारो देख्यो प्यारी महल झरोले ॥ ३॥

राग केदारो ॥—कौन लई कौन दर्ई हँहरियाँ गोपाल मेरी, ग्वाल बाल सखनमौंज तुमही हँसत हो. पाय गहि सखी रहो कौन लई कासो कहो ? छेत कौन देख्यो सखी कहा पास बसत हो ? लेखो दुराय धरि दोसमें कहा चोर परत ? हँसो जाय ऐसी होय हमपर कहा हँसत हो । नददास बसत पास त्रजमें गिरिराज पास टेडो फँटा आडवद कौनपे कसत हो ?

राग गोरी ॥—सुनहु सखा मनभाते हो, रसिक रसीली बात, एक समय निस नवनिजुजमें बैठे प्यारी सग, भई बात बे-रतिरसकी हों कहा दुराऊ अंग ? प्रगट चिन्ह एक देख्यो उरमें अद्रमुतही सोभा देत । तिउ प्रसून राजत है कुचविच मेरो मन हरि छेत हो ॥२॥ कमलबीच रुख्यो मधुकर सुत तहा ते उटयो न जाय । सोभा अधिक देखि मेरे द्रग तहा रहे अरुणाव हो ॥३॥ तब में हास्य कीयो प्यारीसों तर्क वितर्ककी बातें, प्यावत हो अतिरस तुम इनकों सदा रहत मदमाते ॥४॥ प्यारी कहै तुम सुनों प्राण प्रति मुरलीकी रस देत, अवरसुधा सर्वसुख हमारी तोहि क्षण हरि छेत हो ॥५॥ तब एक वचन क्यो उन हमसों सुनों रयाम चित लय, रतिसप्राम गुप्त जे बातें कहत सखनसों जाय ॥६॥ उनसों कहा दुराऊँ प्यारी बेहे हमारे सग, निसवासर बे रहत हृदयमें बसत दाहिने अंग ॥७॥ बाँये अंग तुम रहत हो निसादिन इतनो अतर जान, इत उत नय्य भेज्यो यह मधुकर उनसों कहा रहे अंगहो ॥८॥ यह रस उनसों कहा दुरत है तुम हम तरु बे बेछि, जेसैं अष्ट सखी तुम प्रिय अति तेसैं हम सग खेन्हो ॥ ९ ॥ तब हँसि मुसकि विसाखा बोली लालनके दिग आय, वा दिनकी बात सन भूषी खादी आक बिनाय हो ॥१०॥ नदी सर दिग नवनिजुजमें पूरणमासी गेह, प्रथम सनेह भयोही ता दिन हम जानत सन नेह ॥११॥ तब गलनाह छाडि मोर मुस चितयो नयननकोर । मोनों चटनमुधारससयुत मेरे नैनचकोर ॥१२॥ मुसकि सजुचि गये नवनिजुजमें ललिताकों दै सैन, हमहु तब ऊनही दिग आवे अंग सग भेज्यो नैनहो ॥१३॥ यह सन बात कहत हे ता दिन सुनो सखा रस रन्याल, बुभनदास आस इतनीही श्रीगोवरधनधर लाल हो ॥ १४ ॥

[प्राचीन ग्रन्थसू संग्रहीत.]

राग भैरव ॥—तू दयाल दीन हों तू दानी हों भिखारी ॥ हों प्रसिद्ध पातकी तू पाप पुज हारी ॥ १ ॥ नाथ तू अनाथको अनाथ कौन मौसो ? मौसमान आरत नही आरतहंर तोसों ॥ २ ॥ ब्रह्म तू जीव हों तू अमर हों चेतो, तात मात गुरु सखा तू सन विप्र हित मेरो ॥ ३ ॥ तोहि मोहि नातो अनेक मानीये जो भावे ॥ ज्यो त्यो बुद्धि दृष्टांत, चरन सरन पावे ॥ ४ ॥ पद

पूतना विष दै अमृत पायो ॥ जो कहु दैन सों फल पैयत गाहक वेदने गायो ॥ १ ॥ सतयज्ञ राजा बलि कीनो बाध पाताल पठायो ॥ छत्र गरु राजा नृग दीनी गिरिगट रूप करायो ॥ २ ॥ रक्त जन्मके मित्र सुदामा कंचन धाम धनायो ॥ सरदास तेरी अद्रमुत लील वेद नेति कहि गायो ॥ ३ ॥

राग रेखतो ॥—मैं तो हूँ पतित आप पावन पतित नाथ पावन पतित हो तो पातक हरोईगे ॥ मैं तो महादीन आप दीनबंधु दीनानाथ दीनबंधु हो तो दया जिनमे धरोईगे ॥ मैं तो हूँ गरीब आप तारक गरीबनके, तारक गरीब होतो निरुद्ध बरोईगे ॥ मेरी करनीये कुछ सुकर न कीजे पान्ह करुनानिधान हो तो करुना करोईगे ॥

राग भैरव ॥—कृष्ण नाम रसना रटत सोई धन्य कलिमें ॥ ताके पद पकजकी रेनुकी बलिमें ॥१॥ सोई सुकृत सोई पुनित सोई कुलवता ॥ जाको निसबासर रहे कृष्णनाम चिंता ॥२॥ योग यज्ञ तीर्थ व्रत कृष्णनाम माहीं ॥ बिना कृष्णनाम कलि ऊद्वार ओर नाहीं ॥३॥ सब सुखको सार कृष्ण कहूँ न निसरीये ॥ कृष्णनाम ले ले भवसागरको तरिये ॥४॥ श्रीगोवर्धन धरन प्रभु परम मंगल कारी ॥ ऊधरे जन सूरदास ताकी बलिहारी ॥ ५ ॥

बुलसी या जग आयके पांच रत्न हे सार ॥ सत मिलन अरु हरि भजन दया दीन उपकार

(ब्रह्महृद-अधिकारीजी देवराजभारद्वाजी श्रीगणेशभारद्वाजी)

अष्टसिद्धिनिरूपनको पद.

राग यथासुचि ॥—श्री यमुना को नमन करीए, हरखि सकल सिद्धि अष्टही पैये ॥ लौकिक देह यही सेवाको, एक अलौकिक रूपही पैये. ॥१॥ लीलादर्शन दूसरी सिद्धि कालिंदी रतिवर्धनी कहीए, सो रस अनुभवरूप तीसरी, भुवनपावनी तारतें कहीए. ॥२॥ सर्वाभिलाषसिद्धि हैं चौथी, अनंतगुणभूषण पैये, सो सेवा आधीन प्रानपति, मनमें सुखभावन करी लैये. ॥३॥ आदिपदमें चरणपूजा, मुरखि की प्रियमातृक कहीए, निप्रयोगमें अंतर प्रागटय, कृष्णभावन सिद्धि पंचमी कहीए. ॥४॥ सिद्धि छट्ठी हे लीलादर्शन, अंतरदृष्टि करी पैये, नमन करतही सदा यमुनाको, गोपिकावत् प्रियही पैये. ॥५॥ सिद्धि सातमी भावरूप करि रस अनुभवही पैये, सानिध्य तिहारे स्तुतिको गान करी, भाव रुढ करी लैये. ॥६॥ सिद्धि अष्टमी प्रागटय हरिको, अंतर अनुभव करिये, हरि सेवा फिर अनुभव करिकें, मोक्ष लें सर्व सुख पैये. यही कथा श्रीयमुनाजी सकल गोपिका संगम कहीये, मदनश्रमजलकनन करिके, सकल अंग रस पैये. ॥८॥ यह अष्टक हरिरूप कथनमें, सेवाफललें पैये, मुरखि प्रसन्न ह्वे हैं, स्वभाव जय कर लैये. ॥ ९ ॥ भावहीन प्रभु बिहृदके करे हैं यमुना, स्वामिरमन ते, श्रीवल्लभ श्रीविठ्ठल मुरतरु नमसंबध करावन तें. ॥१०॥ छठी कथा यह श्रीहरियायही, श्रीमुखमल मकरंद तें, सोही जश मकरंदको ले जीवें मयुष रस गुनगान तें. ॥११॥

अथ श्रीदेवकीनन्दनकुमारचरणैकशरण-सोभाचन्द्रकृत-

भक्तिविधान ॥

(संशोधक.—श्रीयुक्त शास्त्री काशीराम कटरानजी मांगरोल.

[लग्नदीप पाठश्रमाधना अथ परधी आगना दुहा २१ थी १४ भुधी अमे उनारी गन दीपात्सवांक्रमां छपाया हना. तेन अथपरधी शास्त्रीश काशीरामभाष्ये गेक प्रति उनारी अभने भोक्षी छे ते अदी प्रष्ट हरीअे छीअे.]

मगन रहत मन रातदिन, जानत भोर न सांझ. ॥७॥ बन्दो श्रीवज्रभूमिरज वज्रवासिनजे चरन, अरु वज्रके तरु तृण छता, शोभा तिनके शरन. ॥८॥ शोभा मन बच कर्म करी, इनहीकी गति आही, इन विनु ओर न इष्ट मम, इहे जान मनमाहे. ॥९॥ श्री स्वामिनी गिरिधरन विनु मोरे गति नहि आन, श्रीदेवकीनन्दनजीकी कृपा, करहु भक्तिविधान. ॥१०॥ देवकीनन्दनकी कृपा, मइ मोहि जिहि मांत, अरु प्रभुकी चरावटि, कहुं जगत विल्यात. ॥११॥ दाक्षिन देश तिलगमे, श्रीलक्ष्मण द्विजराज, ताके गृह प्रकटे अग्नि, सन जीवन हितकाज. ॥१२॥ अति वल्लभ गिरिधरनके, तातें वल्लभ नाम, छांडि देश व्रज आवके, घने श्रीगोकुल गाम. ॥१३॥ पारंगत आगम निगम, सबे शान्न व्याकरण, मायानाद निराकरण, मय विधि संशय हरन. ॥१४॥ .१५...१६...१७...१८...१९...२०—२१....२२...अति पंडित अरु अति चतुर, भक्तनको सुख देत. ॥२३॥ अति पंडित तातें अनुज श्रीमद् गोविन्दराय, सेवत विद्वत्प्रायको दिन प्रति अति चित्त लाय. ॥२४॥ श्रीबालकृष्ण तातें अनुज सेवन निल....२५....२६....तातें अनुज प्रवीन अति करुना निधि रघुनाथ, सेवा गोकुलचन्द्ररति, परम सुखद प्रभु हाथ ॥२७॥ महाराज यदुनाथजी, तातें अनुज सुशील, सेवा गोपीनाथरति, दरश उपारे भोल. तातें अनुज दयाल अति, सुन्दर श्रीघनश्याम. ॥२९॥....३०

[दुहा ११ सू. ६४ तक गत दीपोत्सवांक्रमें छप गये हैं.]

नाम पाय गुरु भेट नही, हे न भक्त को संग । न्यान नही गुरु ग्रन्थमें, चित न भिगावत रग ॥६५॥ तिनके हितसौ भाषा करि, दोहा करे रसाळ । सब संसे चितमें मिटे, उपजे प्रीत गोपाल ॥६६॥ जो सन्देहमें प्रश्न कीय, भेटयो सो प्रभु आपु । तेई सब मैं कहत हों, जो भेटे संतापु ॥६७॥

अथ प्रश्न—सन जीवनको कोन प्रभु, जीव लहे मुख कोच । लाह बडो काहा निहर को, कहो बिलछन सोव ॥६८॥

अथ उत्तर—प्रभुसो जाकी सृष्टि सब मुख ताहीके सेव । न्याहो बडो ताकी भगत निहर सरन तिहि देव ॥६९॥

अथ प्रश्न—सो प्रभु कोन कोन हे, ताको कैसो रूप ? नाम कहो क्यो पाटये, ताकि भगत अनूप ॥७०॥

अथ उत्तर—ब्रह्मा विष्णु महेश जे, मच्छ कच्छ वाराह । नरहर वामन राम हे बुद्ध कल्की ताह ॥७१॥ प्रभुके रूप अनेक हे, कला अश गुणभेद । अशी पुरुषोत्तम रहे, नेति कहत निहि वेद ॥७२॥

अथ प्रश्न—कला अश आवेश गुण, ताके रूप हे कोन ? सो मोहे कहो बिल्डकें उत्तम अधम गौन ॥७३॥

अथ उत्तर—ब्रह्मा विष्णु महेश जे, ते तीनों गुण रूप । रज सत्त्व तम प्रकृति, कारण स्रष्ट अनूप ॥७४॥

रजगुन ब्रह्मा सृष्टि कर, सत्त्व विष्णु प्रतिपाल । तमोविष्ट सब सृष्टिको काल होत शशि भाल ॥७५॥ नरहरि वामन राम हे यह अश अवतार । आवेश—अवतार श्रीफरश्याम मुनि सार ॥७६॥ मच्छ कच्छ वाराह पुनि, बुद्ध कल्की—अवतार । अरु चोदह अवतार भये, कला पाच हरिसार ॥७७॥ वेदमर्यादाके लिये, अरु भगवन—सुख—हेत । कला अशी प्रकट मुद्रुमि (?) नाम रूप चित चेत ॥७८॥ वेद कहे ताही बेंतें, अनंत रूप अरु नाम । तन तव रूप धर्यो हरि जब जब भक्तही काम ॥७९॥ अदभुत क—आदि देव करी, आत्मके तैरूप । ए श्रीहरि कौनै तबही, गीता क्यो अनूप ॥८०॥ सकल भूत क्षर रूप हे, अक्षर व्यापक पाय । अक्षरतें जो अधिक हे, सो पुरुषोत्तमराय ॥८१॥ सत् ओ चेतनता अरु, अरु आनन्द निधान । यह वृत्तयो जाहा व्याकृत हे, पुरुषोत्तम भगवान ॥८२॥ क्षरमें सत् प्रकट हे, अक्षर सत्—चैतन्य । पुरुषोत्तममे सब प्रकट, यहै भवन अति ध य ॥८३॥ सो पुरुषोत्तम भक्तहित, श्रीस्वामिनी—अनुराग । श्रीब्रजमें प्रगटे प्रगट, नन्दययोदा भाग ॥८४॥ ओर सकल अवतार जे, कला अश गुण पाये । पूरन पुरुषोत्तम प्रगटे, प्रगटे सो वन आये ॥८५॥ कृष्णचंद्रको रूप गुण, जान्यो निधे जी व । हेत तव शुक्लदेवजी, कहे परीक्षित सोम ॥८६॥ यहै वात गीता विषे, पारथ सो कही आपु । विश्वरूप दिवाय के, मेन्यो सब सत्तापु ॥ ८७ ॥ यह वात जयदेवजी कहीं गीतसे गाए । दश नाहुत वृत्त कृष्णजी, कौ प्रनाम कर पाय ॥ ८८ ॥ ताते सब परिणर कर, सनके प्रभु गोपाल । उगरी की सेवा सुखद, ओर सवें जजाल ॥ ८९ ॥ घडो लाम हरिनी भगत, अलि दुर्लभ सो आय (हि) । आको हे हरिकी कृपा, सोहै पावे ताय (हि) ॥९०॥ जहा जायहे डर तहा, गडे कह न काल । निधेके नर जानियो, निना सरन गोपाल ॥९१॥ सुरा नाहि तिहु लोकमें, मये काल बस जाहि । विना श्रीगिरिधर दु खहरन, ओर न दूजो आहि ॥९२॥ श्रुति आगम इतिहास स्मृति सोधे सवे पुराण । श्रीपुरुषोत्तमभवन निनु, जीयही सुख न बिधान ॥९३॥ कोउ कहे ज्ञाना बडो, कोउ सूर महेश । कोउ गणेश देखी कहत, तिनको ज्ञान न लेश ॥९४॥ या विधि कहत से नारदी, श्रुतिमार्गमगधिक । हरिसम कोऊ नाहिन, कोउ न इनसो अधिक ॥९५॥ श्रियता पित्रको तन भई, जब सेये हरिचरन । ब्रह्मा ह भग्यो नालमें, सुख पाय्यो धहीं

रारन ॥९६॥ पचवक्त्र पाचो मुखन, फइत हो जानत नाहि । सो हरि पूरन प्रकट, रहत सदा वज्रमाहि ॥९७॥ चतुरानन चहों वेद करि, फिर फिर कहत हे नेत । सो हरि प्रगट भक्तहित, अइ यशोदा ऐत ॥९८॥ ध्यास कही जाने गुनन, शेषहि कहत अनन्त । सहस जीम नित नये गुनन, तिनहु न पायो अन्त ॥९९॥ वेदहु करि नहि पाइयो, नहीं यज्ञ नहि दान । नहि ज्ञान पैउये न वन, पईये भक्तविधान ॥१००॥ भक्तहेत विपपान किय, भक्तहेत सकटार । भक्तहेत तृणानर्त हयो, बधवाए करि आर (?) ॥१०१॥

दर्दीशतक.

दामोदरलीला—धन्याश्री राग ॥ तुम तो अतिनिष्ठुर नन्दरानी ॥ चोद लोऊको स्वामी ताकी कलुक न राखी कानी ॥१॥ तनरु दधिफे कारन हरिको ऊखल बधन कीनी ॥ अतिहि विस्थानो दोस रोसत अमुवन चागो भीन्वो ॥२॥ बडी वेपतें लालन पायो वज्रकी जीवन प्राण ॥ दर्दीदास प्रभु भक्तके घर हे ताकी यह पहेचान ॥३॥

उराइनेके पद—राग धनाश्री यशुमति केसी सुत तैं जायो ॥ चोरी करतो फिरे लगाय दूढे भवन परायो ॥१॥ धीकेपर दधि धर्या अछूतो माट फोरके साथो ॥ परमें बदर बहोन घुसाये नाखन सबे छुटायो ॥२॥ तु वरजत नहीं अपने वालक केसे सहे निन हान ॥ हनि बोले यह ग्वालन छुठी बाक्यो कछो न मान ॥३॥ मोय पकर ले गई घर अपने तुमपैं होत अयान ॥ अपनी मन मुसकाय रहे तज दर्दीदासके प्राण ॥४॥

घर भोजनके पद—राग धनाश्री जेमत श्याम राम एक साथ ॥ खात खवावत करि परस्पर ले छे अपने हाथ ॥१॥ व्यजन भीठे खाटे खारे सीखरन मेवा मात ॥ रोटी पुरी बीटी लुचड जेवत मनन अघात ॥२॥ दु मिरचको मुखमें आयो नेनन जलभर जात ॥ भीठो दूध छे मात पिवावत हँसके कठ लगात ॥३॥ यह सुख देखत नद सुदित मन कहि न जात कछु बात ॥ ददादाम आस छुटनकी दीजे गोकुलनाथ ॥४॥

छानके पद—राग सारंग ॥ गहवर वन छाक आई चद्रमगा सखी लाई पठइ जसोदा मात प्रेमसों सँवारी ॥ देव श्याम गये दोर नेहसो करी निहोर रूखतर घयो डहा कहत लज वारी ॥१॥ सखाको बुलाय पास सवन सों करत हास आन सब लेहो अक परम रुचिकारी ॥ चाटत हरि अपने हाथ मुखनी कछु कहि न जात दर्दीदास छुटन पाय जाय बलिहारी ॥२॥

राग मलार ॥ वज्रपर श्याम घटा जुरि आई ॥ छाक पत्राई जसोदा मैया लेहो कुवर कन्हाई ॥१॥ ग्वाठ मडलीं कर तहा बैठे अतिही सघन बर द्याही ॥ चाटत श्याम सननको हितसों जेवत रुचि उपचाई ॥ न्हेनी न्हेनी वृदन बरखन छाम्यो पवन चलत सुखदाई ॥ गाय बुलाय कीनी इक ठोरी दर्दीदास मन आई ॥३॥

अचवन बीरीके पद—राग धनाथी ॥ भोजन कीनो श्रीगोपाल ॥ यमुना जलसो
अचवन कीनो बीरी देत ब्रजवाल ॥१॥ करत आरती जसोदा मैया वारत मुक्तामाल ॥ दर्दादास
गिरिधरको श्रीमुख देखत भयो निहाल ॥२॥

राग सारंग ॥ भोजन कर उठे ब्रज नाथ ॥ अचवनको यमुनाजल लीनो श्याम पगबारे
हाथ ॥१॥ ब्रजनारी बीरी ले आई फूली अंग न मात ॥ हरि बांटत सब ग्वाळ बालको आपही खात
अघात ॥२॥ मात गेहिणी आरती वारत होत प्रफुल्लित गात ॥ दर्दादास यह शोभा निरखत
नक्षत्र भयो सनाथ ॥३॥ पद ॥ गिरिधर चनमें करत बिहार ॥ छाक आरोगे अचवन कीनो बीरी
आई ब्रजनार ॥१॥ पके पान सुपारी काथो लोंग ओर घनसार ॥ बांट खात लाल अपने कर
दर्दादास बरिहार ॥२॥

पनघटके पद—राग धनाथी ॥ पनघट टाढो हे नदलाल ॥ कोन जतन कर भरं मध
निया सग लायो ब्रजवाल ॥१॥ माल तोरत बांह मरोरत और बजाये गाल ॥ भार लुट्टिया
गाँगर फोरत करी देत वेहाल ॥२॥ एक गामको वास सगरीरी करिये कोन उपाय ॥ दर्दादास
यह बात बूझिये देउ उराहनो माय ॥३॥

हिलगके पद—राग आसावरी ॥ जा दिनतें यह दोटा निरख्यो तपेँ फलु न सुहायरी ॥
चित्त चोर्यो घर काज न भाये देखन जिय अकुलायरी ॥१॥ भई बामरी गुरुजन दोरुत ओर
सताये मायरी ॥ लोक खज कुल फान ठोडके मिलुं श्यामकुं धायरी ॥२॥ अब तो जिय एसी
बनि आई सोस रहेके जायरी ॥ दर्दादासके स्वामी मिलें तें तनके ताप नसायरी ॥३॥

अनुभवमञ्जरी.

[भक्तवत्सलकवि श्रीदयारामभारद्वज.]

(११ वर्षीया नरमा भंडना १४ २४: ५०.)

इकदा श्रीनवनीताप्रियाजी मो उर लपटाने; शांली भोजन करत दद करुना रस साने
॥१॥ इकदा श्रीवल्लभाधीश महाप्रभु करुना कर, मोको दीनो दरस सरस तन में माग्यो वर
॥२॥ नाथ यसो मो हृदय निरतर अपनो जानो, सब अपनो पदपत्र सय मो उर परसानो
॥३॥ श्रीमुख बोले बसे सदा हेम तेरे हियमें, मेरो हे तू सतत धरे चिता जिन जियमें ॥४॥
रे सब कुलको उद्धार सु हमहि करेंगे, अब तोको नहि जन्म बहुरि सब दुःख हरेंगे ॥५॥
श्रीगोस्वामी विठ्ठलेश मोहि दरसन दीनो, दूर करि माया जाल पैंच अपने दिग लीनो ॥६॥
श्रीजी सहित दद शांली मोय बहुरि गुसाई, मेरी पक्ष करि माननाथपे रूपा कराई ॥७॥ एक
बेर मो संग चले हारि मित्रकी नौद, अंगसों अंग लुवाय परस्पर दें गट्वांही ॥८॥ दयो दयाको
रूप कोड कीर्तन अस गावो, सुनि कदि गोकुलनाथ न गायक समझन पावो ॥९॥ दयो कृपाको

रूप आहि यों श्रीमुख बोले, को जाने को कारन सो यह वाक्य खोले ॥५०॥ इकदा श्रीकृष्णों
 मोकर गहि कमलनयन हरि, मो सह बैठे सयन मोहि वृषी समझ न पारि ॥५१॥ यह काको
 अधिकार होइ तब में कहि जानी, भयो परम आनंद आप करुना सब मानी ॥५२॥ कछु
 दूरहीतें पद माग्यो में देन वधायाँ, इकदा मेरी पीठ थापि कहि जा भव तार्यो ॥५३॥ इकदा
 कहि रघुनाथ सु हम तू आहि नरमदा, इकदा भेटि कछो जाय मन नयन करमदा ॥५४॥
 इकदा मो उरपर बैठे महाप्रभु करुना कर, सबे हमारे कियो होत कहि तू दुःख मन धर ॥५५॥
 तिलक अपने भालहि तें छे भाल मोय दिय, बहु हित करि अपनाय रीति पद परस सिखे पिय
 ॥५६॥ इकदा श्रीगोवर्धनधर मोपें पय माग्यो, कनक कटोरा भर प्यायो में अति अनुराग्यो
 ॥५७॥ इकदा श्रीप्रभु रसिकराय रसना मोय दाखी, एक बेर श्रीकृष्णताप कर यों मोय भाखी
 ॥५८॥ इकदा श्रीरणछोडराय मंजुल दे शांखी, मोसुं करि करपल्लवी प्रमन मित्रता दाखी ॥५९॥
 कहत कहत अमि वचन पधारे मो दिंग न्यामी, आवो नंदनंदनकी स्त्री कहि अंतर्धामी ॥६०॥
 इकदा श्रीगिरिधरन चरन मोपें परसाये, करि करुना निज जानि, नाथ मम कनियां आये ॥६१॥
 लपटे द्वे गल बांही प्यार प्रीतम मोय कीनो, अब तुम बहुत भये चौखे श्रीमुख बर दीनो ॥६२॥
 इकदा श्रीराधा चंद्रावली पोटे पेखे, चरन जुगल बंधत में श्रीजीको देखे ॥६३॥ अपने और
 प्रिया जुग पद संग संग मिढाये, अति हित उपज्यो मेरे हूँ कहि बदन लुवाये ॥६४॥ एसी महा
 रसरूप शांखी मोको प्रभु दीनी, सो सब श्रीगुरुदेव आपको सेवक चीनी ॥६५॥ इकदा
 श्रीवल्लभनंदन मम ऊर पद थायो, जुगल पाय परसाये प्रिय वच प्रिया अलाय्यो ॥६६॥ इकदा
 दरसन दिये कृपा करि श्रीवल्लभवर, अति हित करि कहि सदा मुखी रहे पीठ थापि कर ॥६७॥
 एक समे श्रीगोपीनाथ प्रभु दरस दिखायो, अति मृदु अरन चरन पावन हों परसन पायो
 ॥६८॥ और पुरुष यों कही तुमारे गुरु ए आही, तामें कहि हां हां यामें कछु संसय नाही
 ॥६९॥ हें गुरु तब हम भेट वचाइ आप यों बोले, में कहि कैतक कौन वचाये अंतक गोले
 ॥७०॥ आप कहें तुव भाग्य कही में यों क्यों कहिये? सबे राखी कृपा जीय बल कछुहु न
 छहिये ॥७१॥ में कही मो बलसैं भले सबबल तुम जानूं, यह करुना मोहि करो कृतिबल
 कबहु न मानूं ॥७२॥ तब प्रसन्न हँसि कही आप मल रहस्य जानी, बहुत कृपा फिर करी हारि
 कही मनहर बानी ॥७३॥ इकदा श्रीगुरु लाल मंत्र उपदेसही कौनो, अद्याक्षर फरभूत होयगो यह
 बर दीनो ॥७४॥ इकदा श्रीरनछोडराय मोय दरसन दाखे, हियकर धरि तू मेरो द्वे श्रीमुख यों
 भाखे ॥७५॥ इकदा श्रीजी अति सुंदर मोय दरसन दीने, सिंहासन तें मो समुख अति हितभांने
 ॥७६॥ निजपद नृपुर निकसि गयो प्रभु मो कर दीनो, दे पहिराय दइ आय समें समझ लीनो
 ॥७७॥ गायो कछु इक ख्याल आप अस्ताद मुनाइ, बहुर कही मोय वृज में तुक नद बनाइ
 ॥७८॥ प्यारसु प्यारे लालजु मेरी कनियां आये, हँसि हँसि बातें करी नाथ में कंठ लगाये

॥७९॥ जलपात्र सहित भोजनकों हरि में पधारये, श्रीभंग परसत भये सुख सो जाय न गायें
॥८०॥ इकदा संकट जानि लालजी दरस दिखाये, कनियां आये गल लपटाये पद परसाये
॥८१॥ इकदा श्रीशेषशायी प्रभु दरसन दीने, मेरी सम्मुख देख्यो अति करुणारस भीने ॥८२॥
जय जय करि हू समीप गयो श्रीकर सिर धार्यो, तू हे हमारी श्रीमुख कहि यो ताप निवार्यो
॥८३॥ दीनो वरहम अति प्रसन्न श्रीमुख भाख हँ, अबतू देखि समयपर पर चोकस दाखत हँ ॥८४॥

[आनन्द अथनी ओक गीत अति उमोष्ठ्याणा अमरवर्षीय नारायण्युदास परमानन्ददास शास्त्र-
पद्य आशी, तेभा ४० भो ७६ आ प्रभावे वधारे छे—नददासहो नाम तिहारो यों भोमुख बोले, एही
नाम द्वे चार भगवदासों हे सोले ॥४०॥ वगी ४७ भी ६३ वधारे छे—इकदा श्रीमहाप्रभुजी
निजान छहि दिने दरसन, हितसों लियो ल्हाय हरे मोरो ब्दे परसन ॥४७॥]

—ॐ—

उत्तमोत्तम साधन.

[वक्ता—आयुष्मान् गा. श्रीदीक्षित भगवान् सुंवाइ.]

श्रीमदाचार्यचरणसरोरुहाश्रयी भागवान् वैष्णववृन्द ।

आज में आप लोगोंके समक्ष पूज्य पितृचरणोंके पादपद्मोंमें प्रणाम करके “ भगवत्प्रतिमं
उत्तमोत्तम साधनभक्ति है ” इस विषयपर कुछ कहना चाहता हूं । श्रीमदभागवत एकादश-
स्कंधमें लिखा है कि:—

न साध्यति मा योगो न साख्यं धर्म उद्धव । न स्वाध्यायस्तपःत्यागो यथा भक्तिर्ममोर्जिता ॥

भक्त्याहमेकया ब्राह्मः श्रद्धया मा प्रियः सताम् । भक्तिः पुनाति मज्जिष्ठान्धपाकानपि सम्भवात् ॥

अर्थात्—हे उद्धव ! मुझे योग भी साध्य नहीं कर सका; और न सांख्य, और न
धर्म, और स्वाध्याय भी नहीं, न तप, न त्याग, किन्तु मेरी अतितीव्र भक्ति जिस रीतसे मुझे
साध्य कर सकी है.

सगुरुओं का प्रिय आमा ऐसा मैं एक भक्तिसेही प्राप्त होता हूं । और मेरेमें हे निष्ठा,
जाकी वैसी जो भक्ति हे तो भक्ति अपचक्रो भी जन्मत पवित्र कर सकती है, अर्थात् भगवन्निष्ठा
भक्ति जन्मतः चाण्डालकीभी पवित्र कर सकती है ।

श्रीअम्बरिष के यहां एक दिन दुर्वास ऋषि आये । तब राजाने ऋषिको आदरसंकार
करके भोजनके लिये निमन्त्रण दीया । द्वादशीका दिन था । आपका नियम है कि एकादशीका
ग्न करके द्वादशीके दिन जो पाण्डा न करे सो नत निष्कट हो जाय । द्वादशीकी सवा दो
घड़ी मात्रही अवशिष्ट थी, राजा बड़े विचारमें पड़ गये । बहुत विचार करते करते उनके मनमें
यह आई कि केवल जलसे ही पाण्डा कर छ, क्यों जो ब्राह्मणोंने जलका पान अनशनके बरोबर
माना है । इस लिये जलके मक्षणमें कुछ दोष नहीं । यह बात जब निश्चय हुई तब राजाने
तुलसी चरणामृत लेकर पाण्डा किया । राजा दुर्वास के लिये — — — — —

तो वे ऋषिही ठहरें। उनको रस्तामें ही खर पड़ गइ। अत्यंत ही क्रोधान्वित हो करके राजाके पास गये। लोग भी कहते हैं कि इनका क्रोध क्या है जाने दुर्वासा? जो कोई बहुत क्रोधी उसको सब लोग मरुतीमें दुर्वासा कहके ही बुलते हैं। तो यह तो साक्षात् दुर्वासा ठहरे। एकदम क्रोधित होकर अपनी शिखासे वृत्तिका नामकी शक्ति निम्नाङ्के भक्त राजर्षि श्रीअम्बरीष पर फेंकी। इधर वृत्तिकाको फेंकी और उसी वस्तु श्रीसुदर्शन चक्रने आ कर वृत्तिकाको भस्म कर दी, और दुर्वासा ऋषिके पीछे जाने लगे। ब्राह्मणदेव पत्राये कि यह आपत्ति क्या गले लग्यी? दुर्वासा ऋषि भी दोड़े और सुदर्शनजी भी दोड़े। ऋषि दोड़ते दोड़ते ब्रह्माजीके पास गये, और हाथ जोड़ कर कहने लगे कि, महाराज! इस आपत्तिसे तो आप मुझे मुक्त करो! ब्रह्माजीने कहा कि भाई, इस आपत्तिसे बचानेकी मेरी सामर्थ्य नहीं है। वहासे भगके महादेवजी के पास गये, ब्रह्माजीका उत्तर था वही महादेवजीका उत्तर मिला। अब तो श्रीकृष्ण के पास दुर्वासा गये। श्रीकृष्णने भी यही उत्तर दीया। यह यह है। यद्यपि उसके बहुत श्रेक है, परन्तु उसमें “भगवत्-प्राप्तिमें उत्तमोत्तम साधन भक्ति है” इस विषयका एक श्लोक है सो यह है कि—

मयि निर्वद्वद्दया. साधनं समदर्शिनं । वरीकुर्वन्ति मा भक्त्या सत् स्त्रिय सत्पति यथा ॥

अर्थात्—मुझमें जिसका हृदय पृथ गया है ऐसे जो समदर्शी सत्पुरुष, भक्तिसे मुझे बर कर लेते हैं जैसे भली बी भली पतिको वशमें कर लेती है, तब फिर भगवानने आज्ञा की कि, तुमने जिसका अपराध किया है, उससे क्षमा मागो। तब दुर्वासाने अम्बरीषके पास जाकर पांव पकड़ लिये, तब राजाने भी सुदर्शन की स्तुति करके ब्राह्मणका चक्रसे छूटकारा करवाया।

वैष्णव वृन्द! इस श्लोकसे भी आप लोगोंको मादम हुआ होगा कि भगवत्प्राप्तिमें भक्तिही उत्तमोत्तम और एकदम सरल साधन है। भगवत् समसकलमें भक्ताग्रणी प्रह्लादजीने भी दैत्य पुत्रोंको उपदेश दिया है कि—

नालं द्विजव देवत्वं ऋषिर्न वा मुरामजाः । प्रीणनाय मुकुन्दस्य न वृत्त न बहुजता ॥

न दानं न तपो नेत्या न शौचं न व्रतानि च । प्रीयतेऽमलया भक्त्या हारित्याद्विदम्बनम् ॥

अर्थात्—हे दैत्यपुत्रों, श्रीमुकुन्द भगवानको प्रमन करनेमें ब्राह्मणत्व नहीं चाहिये, देव नही चाहिये, ऋषिव नही चाहिये, चारित्र्य नहीं चाहिये और कोई महामहोपाध्याय हो, उसकी बहुजनासे प्रभु प्रसन्न हो यह भी नहीं। और अमुक कुल्के हो उसपर श्रीकृष्ण प्रसन्न होते है यह भी नहीं, और यह कहते हो कि इनने हजारों वरस तपस्या की है इनके उपर भगवान प्रसन्न होगे यह भी नहीं, ये सब व्रत करते हैं, भाई! चडे घर्मागा है, इनके उपर, तो भगवान कहते है यह भी नहीं, थन कहते हैं कि, शुद्ध भक्ति है उसीसे भगवान प्रसन्न होते है और सब तो फर्जाता केवल विदम्बन मात्र है।

वैष्णववृन्द ! इन श्लोकोंमें माध्यम हुआ होगा कि 'भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम सरल ! तथा अच्छा साधन जो हो तो भक्ति ही है।'

द्वैत कण्ठकवनचन्दनद्रुम परमभक्ताप्रगी श्रीप्रह्लादजीने भी स्तुतिमें कहा है कि "मैं मानता हूँ कि परम पुरुषोत्तम भगवानको धन, अभिजन, नाम, साकुलरूप, तप, शास्त्रका श्रवण वर्चस तेज प्रताप सामर्थ्य शौर्य पुंस्त्व ज्ञान, योग यह समग्र मिडके श्रीपुरुषोत्तमको प्रसन्न नहीं कर सकते। दृष्टान्तमें जैसे गजेन्द्रको सिर्फ भक्तिसे खुश हुए।

वैष्णववृन्द ! इस लिये भगवान् भक्तिद्वाराही प्रसन्न होते हैं अन्य साधनोंसे नहीं। इस लिये 'भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम और सरल साधन भक्ति है'।

परम भक्त उद्धवको उपदेश देते हुए एकादश स्कन्धमें भगवानने कहा है कि मेरे कहे हुए भक्तियोगसे मेरा निम्न जो भजन करा करे तो उसके सब काम नष्ट हो जाय। क्योंकि मे. उसके हृदयमें आया हूँ इस लिये। इस श्लोकका जो यदि तात्पर्य विचारे तो 'भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम साधन भक्ति है' यही तात्पर्य निकलेगा। इस जगह एक शंका होती है कि एकादश स्कन्धमें भगवानने आज्ञा की है कि "योगाख्यो मया प्रोक्ता षट्पां अथोविधिस्तथा।" अर्थात्—मनुष्योंके श्रेयके लिये मेने कर्म, ज्ञान और भक्ति ये तीन मार्ग प्रकट किये हैं तो अब तो तुम एक भक्तिहीनो भगवत्प्राप्तिमें साधन बताते हो उसका उत्तर यही है कि अपन जो यदि कर्मका विचार करे तो कर्मके छ अंग हैं देव, काल, द्रव्य, कर्त्ता, मंत्र और कर्मका प्रकार, वह शुद्ध होना चाहिये, अब पहले देवकाही विचार करे तो क्या बंध हो रहे है, ऐसा देव है। काल तो कल है उसकी तो बलिझरी ही है। द्रव्य में तो बेजोदेव घों आ रहा है, कर्त्ताका तो पूछो ही क्या ! बहुत थोड़ेही मन्त्रकों स्वस्त्यहित जानते ही और यज्ञका प्रकार जानते होंगे के नहिं यही मुझे शंका है। अब कर्मकी बात हो गई अब लो ज्ञान। ज्ञानमें तो पहलेही ब्रह्मचर्य चाहिये, एक कविका श्लोक है कि जो लोग खायी वायु और पानीही पीकर रहते थे ऐसे जो विधामित्र और पराशर वे भी खीका मुख देखके मोहित हो गये तो जो लोग दाढभात और पेहु, इत्यादि रसोदयोको खाते हैं उनसे जो इन्द्रियनिग्रह हुआ तो विन्ध्याचल पर्वत समुद्रको तर जायगा. इस प्रकारका पाखंड जगतमें फैल रहा है। तब ज्ञान कर्म बटा ही मुश्कील है। भक्तिके लिये तो प्रभुही त्रिमुखसे आज्ञा करते हैं कि चाहे जैसा भी क्यों न दुराचारी हो यह यदि सब दुराचारोंको छोडके यदि मेरा अनन्य भजन करे तो वह सपुरुषही गीना जाय. इस लिये भक्तियोगका दरवाजा तो सदा सर्वदा खुलाही है। यह भक्ति शुद्ध अनन्य अन्याश्रयहित गेनी चाहिये. मनमें तो रुद्धा फिर बा रहे हो क्या दस तेजी के दस मन्दी, और हाथमे त्रिमुखी। तो कैसे भगवत्प्राप्ति होगी ! यदि श्रद्धा भक्ति होगी तो जन्म भगवत्प्राप्ति निश्चयान्नक

अर्थात्—निष्काम होके अथवा सर्व कामना रखके अथवा मोक्षकी कामना रखके जो पर पुरुष है उसका तीव्र भक्तियोगसे यजन करे. इस जगह जो यदि भक्तियोगसे भगवत्प्राप्ति न होती तो—‘तीक्ष्ण भक्तियोगेन यजेत पुरुषं परम् ।’ यह अक्षर न कहने. इस त्रिये कलियुगमें कर्म और ज्ञान दुर्लभ है, इससे भगवत्प्राप्तिमें केवल भक्तिही सरल तथा निष्कण्टक उपाय है ।

सब प्रमाणान्तरसे यह निश्चय किया कि—‘भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम तथा सरल साधन जो कोई हो तो भक्ति ही है.’

अब मैं अपने विषयको ज्यादा न बढ़ाके गीताके चार, पांच श्लोक और श्रीमद्भागवतके एक, दो श्लोक देके इस विषयको सम्पूर्ण कर दूंगा. गीताके एकादशाध्यायमें अर्जुन प्रति भगवानने कहा है कि:—

अर्थात्—हे अर्जुन ! जिस रीतसे तुमने मुझे देखा उस रीतसे मैं न वेदसे न तपस्यासे न दानसे न यज्ञयागादिकसे किन्तु केवल अनन्य भक्तिसे ही मुझे जान सकता है, और मुझे देख सकता है । और मुझमें प्रवेश कर सकता है । इस श्लोकसे आप लोगोंको बराबर माझम हुवा होगा कि जो कोई भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम साधन जगतमें हो तो भक्ति ही है ।

नाहं वेदेन तपसा न दानेन न चेज्यया । शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥

भक्त्या च नान्यथा शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन । ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परत्तप ॥

श्रीमद्भगवद्गीताके अठारह अध्यायमें भगवद्वाक्य है कि:—

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यथास्मि तत्त्वतः । सतो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥

अर्थात्—हे अर्जुन ! मैं जो हूँ मैं जितना हूँ वह भक्तिसँ यथार्थ रीतसे जानके फिर मेरेमें प्रवेश करता है । वैष्णवगण ! इस श्लोकका भी तात्पर्य यही है भक्ति बिना प्रवेशामरुक्ति नहि मिलती । श्रीभगवद्गीताके चौदहमें अध्यायमें लिखा है कि:—

अर्थात्—जो मनुष्य अव्यभिचार-अनन्य भक्तियोगमें मेरी एकेलेकी ही सेवा करता है वह गुणोको तेरके मुझमें ही प्राप्त होता है, अर्थात्—ब्रह्मरूप होनेके योग्य है । वैष्णववृन्द ! इस श्लोकका भी तात्पर्य देखेंगे तो यही नीकलेगा. श्रीमद्भगवद्गीताके अठारहमें अध्यायमें कहा है कि—यह परम शुद्ध मेरे भक्तोंमें जो कोई कहेगा वह मेरी उत्तम भक्ति करके निश्चय मुझे प्राप्त करेगा । यह श्लोककी प्वांनि यह ही नीकलती है । भक्तशिरोमणि श्रीनारदजीने भी सप्तमस्कन्धमें कहा है कि—उस समय मनुष्य सब बन्धनोसे मुक्त हो जाता है; और उस भावकी भावनासे आशयकी और आकृष्टिकी अनुकृति करने लगता है । महान् भक्ति योगसे हृदयके बीज दग्ध हो जाता है और अधोक्षज भगवान्की अर्च्छा तरह प्राप्त होता है । इस श्लोकका भी तात्पर्य यही है कि यदि ‘भगवत्प्राप्तिमें उत्तमोत्तम साधन हो तो भक्ति ही है’ श्रीकपिलदेवजीने भी अपनी माता देवहूतिसे कहा है कि—वह ही आत्यन्तिक भक्तियोग मैंने कहा है जिससे तीनो गुणोको तेरके

जुनको प्राप्त करते हैं इस श्लोकका भी आशय यही है, प्रिय वेणुवर्ण ! श्रीभागवतके एकादश अध्यायमें जनकप्रति नमस्कारने कहा है कि—हे राजन् । जो योगगुणग्राही है और सारभागी है वे मुनयः कलिकी प्रशंसा करते हैं क्योंकि जिसमें कीर्तन भक्तिसँग ही सब काम सिद्ध होता है । गैरगवद् ! कीर्तन भी एक प्रकारकी भक्ति है । नवधार्मिकमें इसकी गणना भी की है इस लिये कलियुगमें तो भाग्यप्राप्तिके लिये निष्कण्ठ उत्तमोत्तम तथा सरल जो कोई मार्ग है, केवल भक्तिमार्ग ही है।

पागल.

(लेखक—श्रीधर प. रत्नलाल शर्मा इन्तजाला, नायडावा.)

(१)

अर्धनिशाकी निस्तब्धताको तोड़ता हुआ यह अर्ध श्रुत शब्द कहासे गणगोचर हुआ ? अहा ! इस वेणुनादने तो हृदयतन्त्रीको भी निनादित कर दिया । ओह ! ये नूपुरोंकी ध्वनि रक्ममें मिश्रित हो दिगन्तको कहाँसे व्याप कर रही है ? यहा पर कोई दृष्टिगोचर तो होता नहीं है, फिर ये मनोहारिणी मधुर सगीतलहरी कौन कहाँसे कर रहा है ? कहीं मैं सोया तो नहीं हूँ ? नहीं, नहीं, ये देखो, दोनों हथियापोलके हाथी भरे सामने हैं, ये कमलचोकका स्फटिकनिर्मित कमल भी स्पष्ट दिखाई दे रहा है । सामने सैमेटी हुई ध्वजा—अपने आधार दण्डसे लिपटी हुई है । ये मेरे दोनों हाथ स्वयं की राफाको दूर करनेको शून्यमें संचार कर ही रहे हैं । यह तो निश्चय है कि मैं न तो स्वभावस्थामें हूँ, और न सुषुप्तिमें । मैं प्रयत्न अपने विलसपर घेरा हुआ हूँ । अरे, यह क्या ? फटा गया वह संगीतालय ? फिर गई वह मुरलीकी मधुरध्वनि ? निश्चय ही यह कोतुक उसी रसरान, श्यामसुन्दर, नटनागरका है । अरे ! वो गया ? जाता कहा है ? गहरा ! गहरा ! मैं आता हूँ ।

(२)

विहारी बीस धावीस वर्षका बलिष्ठ युवा है । अपने कुलधर्मानुसार वह पूर्ण धर्मज्ञ और कर्मशील है । उसे न किसीसे रागद्वेष है और न किसीसे दिक्ता प्रेम । वह प्रेम करता है तो प्राणी मात्रसे, और उदासीन है तो अपने कुटुम्बियों तक से । वह डरता है तो सिर्फ एक सर्वश से और किसीका उसको दैनिक भी भय नहीं है । अहर्निश उसके होठ हिलतेही रहते हैं, पर किसी से बिना कारण बोलता नहीं । उसकी उदासीनता और मोननो देखकर जन साधारण उसे अर्धविक्रिप्त कहते हैं, पर उसमें कोई स्पष्ट चित्तप्रम के चिह्न नहीं दीखते । उसे जो काम दिया जाता है उसे वह पूर्णतया प्रवीणतापूर्वक पूरा करता है ।

(३)

एक दिन सन्ध्यामें जहाँ वार्ता हो रही थी, विहारी भी हमेशाके नियमानुसार वहाँ जा पहुँचा । एक पण्डितजीका प्रवचन पुष्टिमार्गके ऊपर हो रहा था । पण्डितजीने रोद प्रकट करने

हुवे कटा कि यदि कही भाडोना तमाशा हो, या वेश्याका गाना हो, तो लोग उसमें इतने शरीर होते हैं कि पैठनोको जगह नहीं मिलती, पर जहा धर्म के विषयमें कही विचार होता है तो वहा कोइ नहीं जाता । खास कर हमारे पुष्टिमार्गीय भाई और आचार्यतक इधरसे उदासीन हैं । तब ही तो विधवीयोंको हमारे अति उत्तम और सर्वश्रेष्ठ सम्प्रदायको मौज शोम्बका धर्म न इन्ट्रियोनी तृप्तिसे अनाचार बढ़ानेवाला मार्ग कह कर हमारी हँसी करनेका अवसर मिलता है । हमारा धर्म हमे दूसरोंके धर्मोंके विद्वान्वेषण करनेका उपदेश नहीं देता और न में किसी के धर्मपर आयात करना चाहता हूँ । वैसे तो क्या ? हमारे ऐसे उत्तम मार्ग के सभी अनुयायी मार्गके सिद्धान्तानुसार चलनेवाले हैं । कभी नहीं, हमारे वैष्णव समाजमें ही ऐसी कई व्यक्ति हैं कि जिनके आचरण शुद्ध नहीं हैं और बह अनाचार करते हैं फिर भी वगुलामक्त बने फिरते हैं । ऐसे ही कतिपय व्यक्तियोंको देखकर लोगोंको हमारे ऊपर लान्छन लगानेका साहस होता है । जिसने निर्गुण भक्तिका रहस्य हृदयगम कर लिया है वह तो अपनेको सबसे बचाता ही है, क्योंकि यदि वह अपनेको सर्व साधारणके सपर्यसे न बचावे तो उसे अपने साधनमें व्यापात सहना पड़े और देवयोगसे उसकी कही प्रसिद्धि हो जाय तो वह अवश्य प्रपचमें पड़े बगेर नहीं रह सकता । जहा प्रपचमें साधक पडा कि उसको प्रमुखा जो अनुग्रह प्राप्त हो रहा है वह प्राप्त होना बह हो जाता है । ऐसे साधक अपने उत्कर्षके मार्गसे गिरकर पतनके मार्गपर लग जाता है । इसीसे जो सचे वैष्णव है वो कभी अपनेको प्रकट नहीं होने देते । जो दम्भी है वही लोगोंको छानेके लिये वगुलामक्त बने फिरते है । वे अपना सो (यह लोक भले न निगडे) परलोक अवश्य विगाडते ही है और साथही इस मार्गको भी बदनाम करनेके साधन हो जाते हैं । निर्गुण भक्तिकी व्याख्या करना सहज नहीं है, और न वह सरल साध्यही है । यह जनही सिद्ध होती है कि जो उस सचेचित् आनन्दधनका अनुग्रह हो । वह सच्चिदानन्द पूर्ण दयालु है और अपने जनोंपर दया करनेके लिये हमेशा उद्यत है, पर होना चाहिये पात्र । बगेर पात्रकी पूर्ण परीक्षा किये वह कभी वचित नहीं होता । उसकी परीक्षाके साधन भी घटे फटे है । काम, क्रोध, लोभ, मोहादि अनेक गड़ियाँ हैं, इनमें तपनेके बाद जो पात्र पास होता है उसीमें उस धनकी अनुग्रहविन्दु गिरती है । जो वह अलभ्य अमृत उस पात्रमें पड़ता है सो उसमें छेद करनेके लिये अनेक सिद्धियाँ उकता उठती है, और जेसे बनता है वैसे बह सिद्धियाँ उस पात्रमें प्राप्त अमृतकी जगह ग्रहणकर उसको उस अमृतसे वचित रखना चाहती है । यही समय उस पात्रके लिये पूर्ण परीक्षाका है । यदि इस समय पात्र पक्का रहा तो बेड़ा पार है । वगना फिर उसकी उसी अन्धवाली हालत होती है कि जो द्वारसे निकलनेके लिये हाथोंसे दिवालको तोड़ता चला जानेपर जब द्वार निकटमें आने तक देह खुजलाने लगा और द्वारसे आगे चलकर फिर दिवालपर हाथ मारे । तबसे उत्तम और स्वल्प साथ सरल मार्ग श्रीमदाचार्यमहाप्रभुजीने बनाया है । यदि दृष्ट निश्चय रखकर जीव इस मार्गसे चला जाय

और चलि न हो तो ब्रेडा पार है । अहर्निश प्रभुका ध्यान रखते हुवे बिना आसक्ति ससारका कार्य करना, हरेक कार्य कृष्णार्पण ही करना । अपने लिये हुवे कार्यही बन्धनके कार होते है । इस लिये जो भी कुछ किया जाय वह कृष्णार्पण ही । किसी वस्तुमें ममत्व नहीं रख आदि सिद्धान्तोंपर ही यह मार्ग स्थित है ।

जिस व्यक्ति को आप लोग पागल समझते है, मेरी समझमें वही इन सिद्धान्तोंपर चढ़े वाला महात्मा है । यह कहकर उन्होंने बिहारी की तरफ सकेत कर दिया ।

(४)

चहु ओर आज यही चर्चा हो रही है कि बिहारी आज पूर्ण पागल हो गया है । ब. भूवारीके नीचे पड़ा हुआ है और भूवारीके सामने ही टिकटिकी लगा रहा है । उससे चाहे कोई भी कुछ कहेपर जवाब नहीं देता । खाना पीना कुछ भी मुहाता नहीं है । वह सिर्फ रोताही रहता है ।

प्राचीन कीर्तन.

(१)

भ्यासे हुमादे नयना, दरस गिन भ्यासे हुमादे नयना (१)

ज दिन ते मोहन गये भयुरा, ता दिनते नहि सेना-दरस.

वृंदावनकी कुंज गहनमें, राधेसें कर रहे सेना-दरस. (२)

दिन दिन प्रति खोजन नहि लावा

निंद गिन गीती रण देना-दरस. (३)

जमुनाके नीर तीर घेतु अरावे, मोहन गजवत भीना-दरस. (४)

सूरदास प्रभु आन भिवावे, अरु देना सुण देना-दरस. (५)

(२)

आंणडी कामलुगारी डो पहाला तारी आंणडी कामलुगारी.

ये आंणडीये सर्व मज मोहं, मोही सकण मज नारी—डो. (१)

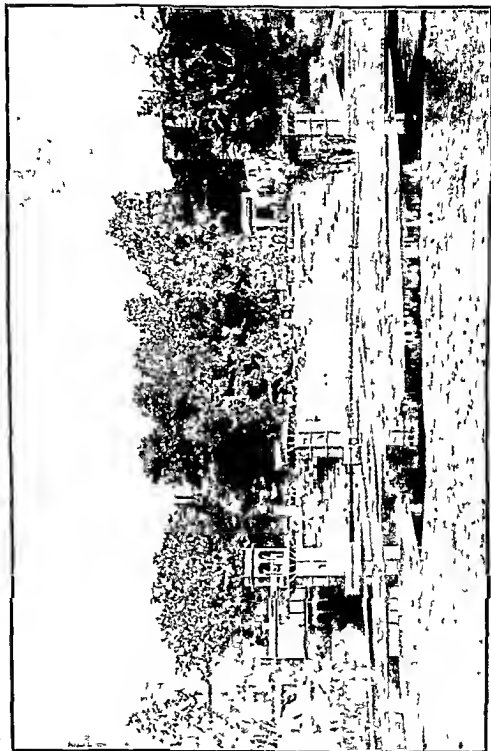
भोर सुकुट भीतांजर सोडीये, कुंडली छणी न्यारी—डो. (२)

जमुनाके नीर तीर घेतु अरावे, जंरी गजवे रंग न्यारी—डो. (३)

सोल सहस्र गोपीजीमां येक्येक कानो तोये कडेवाया प्रसवारी—डो. (४)

पुरुषोत्तम प्रभुकी छणी निरणत, अरबुडमल गलिहारी—डो. (५)

(संयुक्ता-शा. दादासाई क्षीरालास, पीथर.)



શ્રીગોકુલેશવચનસુધા.

૧. એક વૈષ્ણવને ત્યાં સંન્યાસી આવ્યો. વૈષ્ણવે ભોગ સરાવી સંન્યાસીને કહ્યું કે, “ભિક્ષા યો.” ત્યારે સંન્યાસી બોલ્યો, કે હું બ્રાહ્મણ છું, તારા ધરમાં અહીંરનો છોકરો ખાતો હતો, તે ભિક્ષા હું બ્રાહ્મણ નહિ લઉં.

(ભાવ) અલૈકિકમાં લૈકિક શુદ્ધિ થાય તો તે ફક્ત દૂર કરે. બાઅમાં ખાતો હોય તો પ્રત્યક્ષ પ્રમાણને પણ સમજ ન થકે. સર્વ કોષને દેહઅભિમાન, જાતિઅભિમાન અગ્રણ્ય હોવાથી અલૈકિકમાં સમગ્ર જની શકેજ નહિ. અમૃતવસ્તુ અણુલીન છે જ્યાં જ્યાં અમૃતનો આવિર્ભાવ હોય, ત્યાં ત્યાંનો સમગ્ર હોવાતો નથી, જેમકે મધપુડો કોઈ હલકી જાતિના માણસ લાવે છે પણ તેને ગ્રહણ કરવા સર્વ કોષ બાધ ગણતા નથી. વળી સંન્યાસીનો અર્થ એ કે, સં-નિ-અસ. આવાં ત્રણ પદ નિઃસરે છે. ભગવત્સમગ્ર સિવાયનું બધું જેના હૃદયમાંથી જનું રહ્યું છે, તેજ સાચો સંન્યાસી, કે જેને પ્રત્યક્ષપ્રમાણ સ્નેહ હોય, આહિરનો છોકરો તો સાક્ષાદ્ બ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણ છે. તેમાં આહીરનો ભાવ એ આસુર ભાવ ગણાય.

૨. એક ગામમાં ભવેયો આવ્યો, ને વૈષ્ણવનો વેશ કાઢીને પરમાનંદાસનું પદ ગણું. “એ ગેરો મન હરિગો જોયો એરે સખન સો તોયો.” એ રીતે ચાર વખત ગાવાથી દેહ પડી ગઈ.

(ભાવ) ચરણ આવેલો વૈષ્ણવ ભલે સેવા સ્મરણ ન કરી શકતો હોય તો પણ પ્રત્યક્ષ આપવા વિચારે તો એક ફાણમાં આપી દે છે. વેશધારીને પણ પરમાનંદાસનની વાણી પ્રત્યક્ષ રૂપ આપનારી નીવડી, તો અહર્નિશ તે વાણીનું સ્મરણ કેટલે દરજે ફરવ થાય! પરંતુ તે વાણીનું સ્વરૂપ જાણવું જોઈએ. પ્રસુ તો પોતાના ખાસ વૈષ્ણવના વેશથી કેમ ન રીઝે!

૩. એક દિવસે કહ્યું કે ભગવદીયતે કરીને ભગવદીય કહીએ, ધી ભરી કરોડી ધીની કરી જાય, પણ ધાતુની ન કહી જાય. જલનો ધડો જલનો કહ્યો જાય, માટીનો ન કહ્યો જાય. તાજુ વસ્તુ ભરી હોય તાજી પ્રજા નહિ, મૂલ વસ્તુકો નામ કોષ નહી લેય.

(ભાવ) વસ્તુની કૌમન છે પાત્રની કૌમન નથી. વસ્તુમયી પાત્રની કૌમન છે. તેમ વૈષ્ણવમાં જો ભગવદ્ભાવરૂપી ધી (સ્નેહ) ન હોય તો વૈષ્ણવના કોરીજ ગણાય. સ્નેહ હોય તો બધી અપ્રાપ્ત વસ્તુ પણ પ્રાપ્ત કરી શકે છે. સ્નેહ પરાધીન કરવાનું સાધન છે. સ્નેહમાં વળા અવર સ્નેહ મળાને કાર્ય થાય તો તો અલૈકિક ફળસમગ્ર ઉત્તર પ્રાપ્ત થાય છે. સ્વતઃ સ્નેહ જરા ભયવાળો રહે છે. તે જ શુદ્ધ બક્ષિતમાર્ગની સુદમતા છે.

૪. યદ્ ભાર્ગવે કાયર અપ્રયોજક હે. હો ભાર્ગ પેડે જાત હને. વાકે વાધ મિથ્યો. તજ એક ભાષને હાય સાહે. દૂળને કુદાહીસો વાકે પગ કાપવેકી કહી, પરંતુ હાય કૂળે! તેને કહી કે વાકે હાય તો મેરે હાય મે’ હે તાસુ કપાય નહી.

(ભાવ) હૌમત વગેરે એકે કામ યદ્ યદ્ શકેજ નહિ. પોતાને મારવાનો ભય તો હતો નહિ, કેમકે જે હાયથી મારે તે તો તેણે જાણી રાખ્યા હતા, ને ભય ઉત્પન્ન થયો તે શા માટે? આ માર્ગમાં ભયવાળા વસ્તુ ધનઅદાદિક તો પ્રપુને અર્પણ કરી દીધું છે, છતાં તે વાન પર ખ્યાન ન આપે તો ચિન્તારૂપ દુઃખ પ્રાપ્ત થાય છે. પણ સર્વસ્વ શ્રીકૃષ્ણને સમર્પાના અનુ-સંધાન સાથે નિવેશ કરતોજ રહે તો તો તેને કદાચી ચિન્તાજ ન રહે.

૫. રાજા પૃથુએ નવાણું યજ્ઞ કર્યો ને સોમો ન કયો, જો સોમો કરે તો ઇન્દ્રાસન લેવું પડે. છતે સામર્થ્યે ઇન્દ્રાસન ન લીધું. ને ધણું પ્રસન્ન થયા.

(ભાવ) ગમે તેટલું અલૈકિક કાર્ય ભાવનાથી કર્યું હોય પરંતુ અધિકાર (યોગ્યતા) ના વિચારે પોતાનું હિનપણજ રાખે. ઇન્દ્રાસન ગ્રહણ કરે તો પાણુ પડવું પડે. જેથી અધિકાર

અથવા અહંભાવ છેવટને પગથીએથી પણ નીચે પારે છે. હાથી મોટા છતાં રાજ તરફથી મળતો ઉચ્ચો ખોરાક ખાતાં મોઢું મરડે, ને જાણે જે આપણે તો જંગલનાં ગાડ પાલાના ખાનાર છીએ, તેથી શ્રીમદ્વાપ્તુજી આપણ કરે છે કે પ્રાપ્તિ સેવેત નિર્મન. ! જગવદ્ધમ્જીએ પ્રાપ્તિ યાત્ર તે મમતારહિત ભોગવરી.

૬. એક જણે દેવીની માનતા કરી કે મારે ત્યાં દીકરા આવે તો તને જીમતું પકવાન જમાડું. દેવીએ જલસું કે ખીનું બધા પકવાન તો ખાધાં છે પણ જીમતું પકવાન કોઈ વાર ખાવામાં આવ્યું નથી. પછી ખેટા આવ્યો ને કહ્યું કે પકવાન લાવ, ત્યારે તેણે જીમતી કહેવા માંડ્યું કે લીધો લાડુ. લીધો જલેબી, લીધો ઘેજર. બધાં મેં જીમતી બનાવેવાં છે મારે ખાઓ એમ કહી સુપડી વગાડી.

(ભાવ) આપણે પ્રભુને શરણે ગયા ને આપણે ઉદાર પણ થઈએ, પણ પેલાની પેઠે જીમતું મમત્વ. આ ધર, દારા, પુત્ર, કુટુંબ, પૈસા, આ લોક પરલોક બધું જીમતીજ નિવેદન કર્યું તેમ પાછું મમત્વ કરવામાય મીસરીનો હુંક સરખોએ ન સમરખીએ તો જીમનાં ભોજન બરાબરજ કહેવાય.

૭ એકવાર આપ પાલખીમાં ખિરાજ પર્વત પર પધારતા હતા ત્યારે પયોલીએ પુછ્યું ને રાજ, વૈષ્ણવને સાધન તે શું ને ફલ તે શું ? ત્યારે આપણ કરી કે સાક્ષાત્ સમ્બંધ તે ફલ, ને તે વિનાનાં બધા સાધન.

(ભાવ) સાક્ષાત્ સમ્બંધ તો શીવજીમુર્તિને થયો હતો. તેનેજ ફલ કહ્યું છે પણ તે ભાવથી. પણ જે કોઈ તે ફળ પ્રાપ્ત કરવા ધારે તો તેના ભાવનો પણ પ્રભુ સાક્ષાત્ અંગીકાર કરી સંગ ફળ પ્રાપ્ત કરાવે, આ દશાવું દાન જ્યાં સુધી જીવને પ્રાપ્ત ન થયું હોય ત્યાં સુધી સાધનમાં મર્યાદા રહેતું, છેડતું નહિ.

૮. એક સગે સારંગી વાજતી હતી તે વાર જ્યારે હાથમું તાલી દીધી, ત્યારે પંચોલીએ પુછ્યું ને રાજ, કોઈ રાગ નથી જાણતા તેને શો દંડ ? ત્યારે શ્રીજીએ કહ્યું કે જેઓ નથી જાણતા એજ દંડ, એણે પ્રકારે વસ્તુમાત્રું જણાવ્યું ને સદૃશરૂપે ન જાણે તેને તેજ દંડ.

(ભાવ) હમેશાં ઉત્તમ પદાર્થ પરજ પ્રસન્નતા હોય. રામની સાથેજ તાલનો સમ્બંધ હોય ત્યાં રાગ નથી ત્યાં તાલેય નથી તાલ આનંદું સ્વરૂપ છે. આનંદ, આનંદરૂપ પદાર્થોજ રીતે, આનંદ વર્ષા સિવાય આનંદરૂપ કેમ થાય ? તેથીજ આ માર્ગમા સ્વદસમ્બંધ હેતુ છે, આનંદરૂપ પ્રભુથી કોઈ જીવ અજાણો રહે તે દંડ કઈ જોછો ન ગણાય. છે તો એજ દંડ.

૯. એક વાર એક નામ પાછવેંકું આઈ તજ ખેર ખેર કહે ? ને હું રાંક છું હું રાંક છું. તે વારે શ્રીમુખે કહ્યું કે, કહો ? લટત તો નહિ.

(ભાવ) જીવ શરણ આવે ત્યારે વિવાહિત જેટલો આનંદ થવો જોઈએ, લૌકિક વિવાહે પણ રાજ રાજ રહે છે. તો પ્રભુશરણપ્રાપ્તિ વખતેજ પ્રથમજ દીનતા ન ભાખવી જોઈએ પણ શરણ થઈ બધા પ્રકારની સેવા કરતાં છતાંય એમ વિચારે ને હે પ્રભુ ! હું સેવા શું કરી જાણું ? હું તો આપને શ્રમ દઈ છું આ પ્રકારની દીનતાજ દર્શવ છે.

૧૦. એક કે ધરમે વરસ દિન કો અનાજ હતો. તામે અધિક માસ આપો તજ ધનીને કહી કે એક માસ લંધન કરીએ, અી કહે લંધન કરી જત હે, ના, ખાવજે મરીએ, પહેલે લંધન કાએકુ કરીએ, પીછે કોન ખાવ ?

(ભાવ) પ્રાપ્ત થાય તે મમતા રહિત ભોગવતું. લોભ પાપતું મૂળ છે. આગળ પાછળ મારે પ્રભુજ વિચારી રાખે છે. જીવનું વિચાર્યું કર્યું થતું નથી જેથી આપણે પદાર્થનો વિનિયોગ ન સહ પ્રભુને સમર્પણે રહે નિર્વીઢ શા મારે કરવો ? તેમાં વિસજ કરે એજ બૂલ. અણાવ.

વિશ્વધર્મ ભક્તિમાર્ગ.

(ઉપદેશ—ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીવક્ષસલાલજી બાવાસાહુબ, પોરબંદર.)

મહામહોત્સવપ્રસંગ—શ્રીવક્ષસભાગ્યમદાપ્રભુચરણકમલમધુપાયમાન પરમ ભાગ્યવાન વૈષ્ણવ ઇંદ્ર ! આજે આપણે દુનીયાના એક મોટામાં મોટા તત્ત્વવેતા જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્વક્ષભાગ્યાર્થશ્રીનો પ્રાકટ્યમહોત્સવ ઉજવવા અને શ્રીમદનગોદનગ્રાવજના સાનિધ્યમાં એકત્ર થયા છીએ. તે પ્રસંગે તેઓશ્રીની જીવનશીલાનું આયેખન થાય, તેઓશ્રીએ પ્રકટ કરેલા વિશ્વોદ્ધારક સિદ્ધાંતોનો વિચાર કરાય, તેમજ તેઓશ્રીએ ઉપદેશમાં બોધવચનો પોતાના જીવનમાં ઉતારી પોતાના કલ્યાણનો માર્ગ ધરાય તે બાબત દરેક વૈષ્ણવની અભિલાષા હોય એ સ્વાભાવિક છે. આ બધામાથી આજે અમે 'ભગવત્સેવા' એ વિષય ઉપર કે જે વિષય દૈવ જીવને ઉપદેશ કરવા માટેજ આજના જન્મન્તીનાયકનું પ્રાકટ્ય થયું હતું. તે ઉપર કંઈક કહેવા ઇચ્છીએ છીએ.

ઉદ્ધારાર્થ ત્રણ માર્ગો—દેવી જીવોના કલ્યાણ માટે જુતિ રજુતિ, પુરાણ આદિ શાસ્ત્રો ભજવાને તેમજ ભગવદ્ગાથાથી ઋષિ મહર્ષિઓએ પ્રકટ કરેલાં છે. તેમાં કર્મમાર્ગ, જ્ઞાનમાર્ગ અને ભક્તિમાર્ગ એમ ત્રણ માર્ગો ઉદ્ધારને માટે વર્ણન કરવામાં આવેલા છે. તે બાબત શ્રીમદ્-ભાગવતના એકાદશ સ્કંધમાં ઉદ્ભવજના પ્રતિ શ્રીમુખેથી આપા કરેલી છે કે "યોગાત્મયો મયા પ્રોક્તા નૃણાં શ્રેયોવિધિતસ્યા ॥ જ્ઞાનં કર્મ ચ ભક્તિરય નોપાયોન્યોરિત કહિંચિત્" હે ઉદ્ભવ ! મનુષ્યોને પોતાનું શ્રેય સાધવા માટે મેં ત્રણ ઉપાયો શાસ્ત્રોમાં કહેલા છે અને તે જ્ઞાન, કર્મ અને ભક્તિ છે. આ સિવાય અન્ય કોઈ ઉપાય શ્રેય સાધવા માટે નથી

ઉદ્ધાર કયા માર્ગથી ?—પરંતુ આ ત્રણ માર્ગમાથી પણ "ભક્ત્યાદભેદયા પ્રાણઃ અદભેવવિધોર્જન ! જેવું તે મારા સ્વરૂપનું દર્શન કર્યું તેવું તો માત્ર એક ભક્તિથીજ મારા સ્વરૂપનું દર્શન થઈ શકે છે. આ ગીતાવાક્યમાંજ ભક્તિથીજ જીવને ભગવતપ્રાપ્તિ થઈ શકે છે એમ શ્રીકૃષ્ણચન્દ્રે અર્જુનના પ્રતિ આગ્રહ કરેલી છે. તેમજ "નાયમાત્મા પ્રવચનેન લભ્યો ન મેધયા ન બુદ્ધિના શ્રુતેન । યમેવેષ જુહોતે તેન લભ્યઃ તરયેષ આત્મા વિરજ્યતે તત્ત્વં સ્વાત્મ" આ પ્રભુ પ્રવચન કરવાથી, બુદ્ધિથી અથવા બહુ શ્રવણ દરવાથી મળતા નથી, પરંતુ જેનું વરણ કરે છે, તેજ જીવને તેની પ્રાપ્તિ થાય છે. ગીતામાં પણ "નાદં વેદેર્ન તપમા ન દાનેન ચૈજયમા" હે અર્જુન, વેદથી તપથી દાનથી કિંવા યજ્ઞથી મારી પ્રાપ્તિ થઈ શકતી નથી. તેમજ ભાગવતમાં પણ "ન શોધયતિ માં યોગો ન સાખ્યં ધર્મ ઉદ્ભવ ! યોગ, સાંખ્ય આદિ કોઈ પણ મને વશ કરી શકતું નથી પણ માત્ર ભક્તિથીજ વશ થાઉં છું. ઇલાદિ વેદ, ગીતા તથા શ્રીમદ્-ભાગવતનાં વચનોમાં હે ઉદ્ભવ ! વેદાધ્યયન, બલ, દાનાદિ, તથા બુદ્ધિબળ, તપો, બધામાથી કોઈથી પણ 'રસો વૈ મઃ' ઇલાદિશ્રુતિપ્રતિપાદિત રસસ્વરૂપ પરબ્રહ્મની પ્રાપ્તિ થઈ શકતી નથી, પણ કેવળ પ્રેમલક્ષણા ભક્તિથીજ તેની પ્રાપ્તિ થઈ શકે છે એમ પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે. પ્રેમ લક્ષણા ભક્તિજ ભગવતપ્રાપ્તિનું સાધન છે એ વાત ઉપર ભાર મુકતાં શ્રીમદ્વાર્ધચરણ તત્ત્વાર્થ દીપના સર્વનિષ્કૃષ્ણ પ્રકરણમાં આપા કરે છે કે જો કોઈ જીવ જોયો નથી તેમ સાંભળવામાંજો આવ્યો નથી કે જે જીવ ગુણાતીત શ્રીકૃષ્ણનું સેવન કરેતો મર્વયા મુક્તિને પ્રાપ્ત ન થયો હોય; કારણ કે, સાક્ષાત્ ભગવાન ભાગવતમાં આપા કરે છે કે "બ્રહ્મ માં પરમં પ્રાપુઃ" અર્થાત્ ગોપી, ગાય, પક્ષી સુદાં પણ પરબ્રહ્મ એવા અને પ્રાપ્ત થયાં. આદિવા સંદર્ભ ઉપરથી સિદ્ધ થાય

છે કે આ કલિયુગમાં શ્રવમાત્રને પછી તે સ્ત્રી હોય, શુદ્ર હોય કે ગમે તે હોય, દરેકને પોતાના ઉદારનું એક માત્ર સાધન ભગવત્સેવાજ છે.

વિશ્વોદ્ધારક જગદ્ગુરુ—આવે વિશ્વોદ્ધારક માગ પ્રવર્તોવવા માટેજ શ્રીમદ્વલ્લભાધીશ્વરનું પ્રાકટ્ય આજથી સાઠચારસી વર્ષ પૂર્વે રાણપુર ખાસેના ચંપારણ્યમાં થયું હતું. તેથીજ મહાનુભાવોએ પણ ગાન કર્યું છે કે ‘પ્રકટ બ્લે માર્ગ રીતિ બતાઇ, સેવારીત પ્રીત મજ્જનકી, જનહિત જગ પ્રકટાઇ’ એ શબ્દથી આ માર્ગ અમુક જનો માટેજ હોય એમ નથી, પણ આખી માત્રના ઉદ્ધારને માટે આ માર્ગ છે, માટેજ તે પદમાં ‘જન’ એવો સામાન્ય શબ્દ મૂક્યો. જે આચાર્યશ્રીનો પ્રાદુર્ભાવ થયો ન હતો તો વેદમાં જોનો અધિકાર નથી, એવાં સ્ત્રીશ્વરને કલ્યાણનો માર્ગ કોણ બતાવત ? તેથી કરીને આ માર્ગ કેવળ સ્ત્રીશ્વરો માટેજ છે એમ સમજવાનું નથી. કારણ કે “સ્ત્રીઓ વૈશ્યારતયા શુદ્રાસ્તેપિ યાંતિ પરાં ગતિમ્ । દિં પુનઃ પ્રાક્ષણ્યાઃ પુણ્યા બક્તા રાજર્ષયસ્તથા ॥” હે અર્જુન, સ્ત્રીઓ, વૈશ્યો અને શુદ્ર પણ માંડે રાણ રવીકારીને પરાગતિને પ્રાપ્ત થાય છે તો પવિત્ર બ્રાહ્મણો અને રાજર્ષિઓ મારી શરણાગતિનું અવલંબન કરીને પરાગતિને પ્રાપ્ત થાય તેમાં તો કહેલુંજ શું ? આથી સિદ્ધ થાય છે કે આ માર્ગ કેવળ સ્ત્રીશ્વરાદિક માટેજ નથી, પણ સ્ત્રીશ્વરાદિક જેવા વેદાનધિકારી જીવોનો પણ આ માર્ગમા ઉદ્ધાર સમાયેલો છે, એટલે કે અન્ય માર્ગો કરતાં આમાં સ્ત્રીશ્વરાદિકનો પણ ઉદ્ધાર કરવાની વિશિષ્ટતા સમાયેલી છે. શ્રીચંપાઇજીએ પણ ‘રુદ્રરક્ષણપ્રેમાશ્રુત’માં આશા કરી છે કે “રાધાવલ્લભસેવયા તદુચિતપ્રેમ્ણાપદેશરપિ શ્રીમદ્વલ્લભનામધેયસદૃશો ભાવી ન ભૂતોઽસ્ત્યપિ ॥” રાધાવલ્લભ શ્રીકૃષ્ણની સેવા શી રીતે કરવી એ ઉપદેશ કરીને તેમજ શ્રીકૃષ્ણને વિશે પ્રેમ કેમ સાધવો, તે વિષયના ઉપદેશો આપીને તો આપશીએ હલજ કરી છે. તેથી એમ રહેજેજ બોલાઈ જવાય છે કે “આ ભૂતલ ઉપર શ્રીમદ્વલ્લભનામ સમાન કોઇ થયો નથી તેમ થશે નહી, ખરેખર સુદાસજીએ પણ ઉચિતજ ગાન કર્યું છે કે ‘શ્રીવલ્લભનમયન્દ્ર છટા બિન સખ સુગમેણ અધેરા.’” અરવું.

નિઃસાધનોદ્ધાર—જ્યારે જ્યારે જગત્ નિઃસાધન બને છે એટલે કે કાલના બંધે કરીને સાધનો પોતાના ફલે સાધવાને શક્તિમાન રહેતા નથી, સારે સારે સાધનોના યાત્રાદારા ઉપદેશકનો પ્રભુ પોતેજ જગત ઉપર પ્રકટ થાય છે. જેને બીજા શબ્દમાં કહી શકીએ કે અવતાર ધરે છે, અને પોતાના સ્વરૂપબદ્ધથી જીવોનો ઉદ્ધાર કરે છે. જેમકે સારસ્વત કાલમા કર્યું હતું. તે વખતે પણ “અહનયાપૃત” નિશિ શયાનમતિશ્રમેણ લોકે વિદુઃક્યુપતેખ્યતિ ગોદુર્લભ ॥” ઇલાદિ વાક્યોમાં વર્ણવ્યા પ્રમાણે આપું મજ પણ નિઃસાધન હતું. એટલે પ્રભુએ તેવા નિઃસાધન મજનો ઉદ્ધાર કરવા પોતેજ પ્રાકટ્ય લીધું હતું અને તમામ મજનો ઉદ્ધાર કર્યો હતો. તેજ પ્રમાણે આચાર્યશ્રી પ્રકટ થયા તે પહેલાની ધાર્મિક પરિસ્થિતિ પણ ઇતિહાસ જોતાં માલુમ પડે છે કે ધણીજ અસ્થિર બની ગઇ હતી અને લોકો પોતાનું કલ્યાણ સાધવા માટે કયા માર્ગનું અવલંબન કરવું તે વિષયમાં ઘણા ઉઘાટવાળા રહેતા હતા. તે બાબત શ્રીમદાપ્રભુજીએ પણ તે સમયના ધાર્મિક વાતાવરણનો ઉલ્લેખ કરતાં પોતાનાં ‘કૃષ્ણાશ્રવ’ મંચમાં આશા કરેલી છે. “સર્વમાર્ગેષુ નદિયુ ક્લૈશ ચ ખલધર્મિણી, પાપણ્ડપ્રચુરે લોકે કૃષ્ણ એવ ગતિર્મમ.” અર્થાત ખલધર્મમાં કલિકાલને લઇને ફંદીયા પાપડમાંજ કુબી ગયેલી છે અને કર્મ, જ્ઞાન આદિ માર્ગો પોતાનાં ફલસાધક રહ્યા નથી, તેવા સમયમાં જીવે પોતાના ઉદ્ધારનો આધાર કૃષ્ણના આશ્રય ઉપરજ રાખવો જોઇએ, અને તેથીજ આપશીએ પણ આખા જગતને ભગવદ્દર્શનાગતિ જેવા, જેમાં સર્વથા પાતલય નથી તેવા માર્ગનો બોધ આપ્યો. માટેજ આ માર્ગમા પ્રવેશ કરતાં જીવને પ્રથમ ભગવતદર્શના-

ગતિનોજ બોધ આપવામા આવે છે. જેમ ભગવાને સારસ્વત કદમ્બમાં ઉગાદિકૃતી પૂજા વગેરેથી અન્યાયથી બનેલ ધર્મને ધીરોવર્ધનને ધારણ કરીને સમગ્રગ્રંથ કે તમે એક માત્ર ઉપરજ વિશ્વાસ રાખો. ધર્મ તેમ કર્યું તો તે ઉદ્ધારને પ્રાપ્ત થયું. તેજ પ્રમાણે આ સ્વેતસારાદ કદમ્બમા જ્યારે જગત નિસાધન બન્યું હતું તેવા સમયમા પુષ્ટિ જીવે પણ મર્યાદા અને પ્રવાદના જીવે સાથે અચાતા હતા. શ્રીમદાપ્રભુજીએ પ્રાકટ્ય લક્ષને જગતને વિદિત કર્યું કે જો તમે મારે માર્ગે ચાલ્યા આવશો તો હું આ જગતમાંજ અને આ જીવનમાંજ નમોને પ્રત્યુપાસિ કરાવી આપીશ એટલુંજ નહીં પણ પોતાને માર્ગે ચાલનાર ૮૪ વેદ્યુલોને આ જીવનમાંજ પ્રત્યુપાસિ કરાવી આપી છે.

પૂર્ણ પુરુષોત્તમ શ્રીમદાપ્રભુજી—આવું કહીને તે પ્રમાણે કરી બનાવવાની તાકાત નોકિ કુરુષમાં કોઈ પણ પ્રકારે ધરી શક્તી નથી. તેથી આપણને માનવાને કારણ છે કે શ્રીવલ્લભમહા-પ્રભુજીનું પ્રાકટ્ય એ સાક્ષાત્ પુરુષોત્તમનુંજ પ્રાકટ્ય છે, એટલુંજ નહીં પણ ભક્તરાજ કૃષ્ણદાસ આદિને એ વાતનો સાક્ષાત્ અનુભવ થયેલો છે, અને અત્યારે પણ તેનોજ અનન્યાય રાખનારને યદ્ય શકે છે. કૃષ્ણદાસ મેધન અનન્ય યદ્યને શ્રીમદાપ્રભુજીની સેવા બહુ પ્રેમપૂર્વક કરતા હતા. તેથી આપણી તેના ઉપર પ્રસન્ન થયા અને દાષક માગવાનું કહ્યું ત્યારે તેણે ત્રણ વીજો માંગી. (૧) સંપૂર્ણ પુષ્ટિમાર્ગીય સિદ્ધાંતોનું જ્ઞાન થાય. (૨) મારામાથી મુખરતાનો દોષ નાશ. (૩) આપની શરણે આવના પહેલાં જેણે મને વૈષ્ણવ મંત્ર આપ્યો હતો તે શરૂને ઘેર આપ પધારો. શ્રીમદાપ્રભુજીએ ત્રણે વરદાન આપ્યા. બાદ શ્રીમદાપ્રભુજી તેમના શરૂને ઘેર પધારે તે પહેલાં એક દિવસ કૃષ્ણદાસ પોતાના શરૂને ઘેર ગયા ત્યારે શરૂએ પુછ્યું કે મને છોડીને બીજા શરૂ શા માટે ક્યાં ? કૃષ્ણદાસે જવાબ આપ્યો કે મેં બીજા શરૂ ક્યાં નથી, શરૂની કૃપાથી પ્રભુપ્રાપ્તિ થાય છે. તે નિયમ મુજબ આપની કૃપાથી મને શ્રીપુરુષોત્તમનીજ પ્રાપ્તિ થઈ છે. શ્રીમદાપ્રભુજી છે તે પુરુષોત્તમ છે. ત્યારે તેના શરૂએ કૃષ્ણદાસને પુછ્યું કે શ્રીમદાપ્રભુજી પૂર્ણ પુરુષોત્તમ છે તેમાં પ્રમાણ શું ? આ સાલજતાંજ કૃષ્ણદાસ સજગતા અંગારા પોતાના હાથમા લધને બોમ્બા કે શ્રીમદાપ્રભુજી પૂર્ણ પુરુષોત્તમ હોય તો આ અગ્નિ મને ના જાગે અને ન હોય તો જાળે. આમ બોલીને એક ગુર્ત સુધી અગ્નિના સજગતા અંગારા પોતાના હાથમાં રાખ્યા પણ દાઝ્યા નહિ. આ ઉપરથી તેમના શરૂએ તે વાન સાચી માની હતી. તાત્પર્ય એ કે શ્રીમદાપ્રભુજી સાક્ષાત્ પૂર્ણ પુરુષોત્તમ છે તે વાતનો અનુભવ કૃષ્ણદાસ મદાનુભાવે થયો હતો એટલે કે આપણીનું પુરુષોત્તમત્વ નિર્સંદેહ છે. તેમજ નિસાધન જગતનો ઉદ્ધાર કરાવવાનું સામર્થ્ય પૂર્ણ પુરુષોત્તમ સિવાય અન્યમા ધરી શકે નહીં અને આપણીએ નિસાધન જગતનો ઉદ્ધાર કર્યો હતો તેથી પણ આપનું પૂર્ણ પુરુષોત્તમત્વ ગુદ્દ જાણે છે. અને શ્રીયુગાર્ધજીએ પણ 'વસ્તુતઃ કૃષ્ણ એવ' ઇત્યાદિ વાક્યથી તેજ આજ્ઞા કરી અને તેઓ ક્રીએ ઉપરથી ભગવત્સેવાથીજ જીવને ભગ-વતપ્રાપ્તિ યદ્ય શકે છે તેમજ અમે દર્શાવ આપીશું.

શાહુકારના ૭ પુત્રો !

એક શાહુકારને ૭ પુત્ર હતા. તેમનો એક દીકરા જાપનું ધન મેળવવા માટે પોતાની કાયાને કષ્ટ આપીતો હતો અને માનતો હતો કે જો હું મારી સ્થિતિ હુબ્બી જનારું તો માન પિતા ક્યા ખાધને મને ધન આપે, બીજો પુત્ર જાપની દોષન લેવા માટે તેનું પ્યાન ધરતો હતો. ત્રીજો જાપની વસ્તુને છુટ્ટ કરીને માનતો હતો. ચોથો માનતો હતો કે 'આત્મા વે પુત્રનામાસિ' એ વાક્ય અનુસાર હુંજ જાપ છું.' પાંચમો ધનને માટે પિતાના ધન વર્ણવતો હતો, અને છઠ્ઠો પિતાની સેવા કરવી એ પોતાનો ધર્મ સમજી પિતાની સેવા કરતો હતો. આ

છોકરાઓમાંથી બાપની પ્રસન્નતા કેના ઉપર ઉતરી આવે એ આપણે સમજી શકીએ એમ છીએ. ધર્મ સમજી સેવા કરનાર પુત્ર ઉપરજ, કારણ કે સેવા કરનાર સિવાયના પાંચે છોકરાઓ તો માત્ર સ્વાર્થનાજ સગા ગણાય. નિરુપાય પ્રેમ તો ધર્મ સમજીને સેવા કરનારનોજ કહી શકાય. તો તેના પુત્રને પિતા પણ પ્રાણ યજ્ઞ પ્યોરા ગણે અને તેની પિતૃભક્તિને વશ થઈને રહે તો તેમા કંઈ આશ્ચર્ય નજ ગણાય. ખરેખર એ રીતેજ ભગવાનને પ્રસન્ન કરવાના ભગવત્સેવા સિવાયના સાધનો વિષે પણ સમજવું, એટલે કે પોતાની સેવા કરનારનેજ ભગવાનરૂપ નિશ્ચિની પ્રાપ્તિ થઈ શકે છે; અને તેવા પ્રેમપૂર્વક સેવા કરનાર ઉપર ભગવાન પ્રસન્ન પણ થાય છે એટલુંજ નહિ પણ પ્રેમલક્ષણા ભક્તિરૂપી સૂત્રમાં બદ્ધ થઈને ગોપીઓની માફક તેમના વશમા પણ રહે છે. એવના છ અભિલાષીઓ !

તપસ્વી, યોગી, વૈરાગ્યવાન, જ્ઞાની તથા મયોદા ભક્ત આ પાંચને દર્શાવતા બતાવેલાં નેવા કરનાર સિવાયના પાંચ પુત્રોની સમાન ગણવા નોંધ્યે. એટલે કે તપસ્વી યોગી, આ બધાનું આધન કરી શકાય છે. તેથી આ બધામાંથી કોઈને પણ ભગવતપ્રાપ્તિ થઈ શકતી નથી. જેમ કે તપસ્વી તપશ્વર્ધો કરે છે અને કામને કષ્ટ આપે છે. તે માત્ર રાજ્ય મુખને માટે અથવા તો પોતાનો મોક્ષ થાય એટલા માટે, પણ તેમા પ્રભુના મુખનો વિચાર નથી; તો ભગવાન પણ તેને રાજ્ય અથવા મોક્ષ આપી પોતાથી દૂર રાખે છે. તેમજ યોગી પણ પોતાના મોક્ષની ઇચ્છા રાખી ભગવાનનું ધ્યાન કરે છે. પણ ભગવાનનું સુખ કંઈ વિચારતો નથી તેથી તેને પણ અશ્વિમા મહિમા આદિ સિદ્ધિઓ આપીને અથવા તેને પોતાના સ્વરૂપમાં અવસ્થિતિ થવારૂપ મોક્ષ આપી તેને પણ પોતાથી દૂર રાખે છે. તેમજ વૈરાગ્યવાન પણ ભગવાને ઉત્પન્ન કરેલી વસ્તુઓને ઇચ્છા ગણીને મોક્ષની ઇચ્છા ગણે છે એટલે તેને પણ ભગવાનના મુખનો તો વિચાર નથીજ, તેમ જ્ઞાની તો જેમ દર્શાવતા એક છોકરા પોતાનેજ આપ સ્વરૂપ માને છે તેમ પોતાનેજ ભગવાન માને છે એટલે તેને તો સેવ્ય કોણ ? અને સેવક કોણ ? એટલે એને તો ભગવાનના જ્ઞાયા સ્વરૂપનીયે ખબર નથી. તો પછી તેને ભગવાનની પ્રાપ્તિની રીતે થાય ? પાંચમો મયોદા ભક્ત ભગવાનની રત્નિ કરે છે. એટલે કે ભગવાનનું યજ્ઞોગાન કરે છે પણ પ્રેમપૂર્વક સેવા કરતો નથી માટે તેને પણ ભગવાન હાડકાનો હરામ કરીને માને છે, અને કદાચિત મયોદાભક્ત સેવા કરે તો તે પણ પોતાને મોક્ષ મળે તેટલા સારજ કરે છે. માટે તે પણ સ્વાર્થી કહેવાય. આ પુરુષો તપસ્વી, યોગી, વૈરાગ્યવાન, જ્ઞાની, મયોદાભક્ત એ પાંચે જણ કોઈને કોઈ રીતે ને કે ભગવત્સારાધના કરે છે પણ સ્વાર્થને માટે.

ઉત્તમેશ્વર માર્ગ—ઉપરનાં સર્વ કારણો ધ્યાનમાં લઈને જગદ્ગુરુ ભગવાન વહાલાચાર્યશ્રીએ આજ દિવસ સુધી જગત ઉપર પ્રકટ થયેલા કર્મજ્ઞાનાદિ માર્ગોથી એકદમ વિવ્રલક્ષણ એવા પુષ્ટિમાર્ગ પ્રવર્તાવ્યો અને તેમાં જતાવ્યું કે ભક્તિની નેમ પોતાના મોક્ષ માટે ન હોવી નોંધ્યે એ તો એક અવરથ થનારી બાબત છે. પણ જીવમાત્રોના ધર્મજ છે કે તેણે દેહ ધરીને ભગવત્સેવા કરીજ નોંધ્યે. આ બાબત આપણીએ ‘ભગવત્સુપસેવાય તત્સુષ્ટિર્નિન્યયા ભવેત્’ આ વચનામૃતદાસ ઉપદેશેલી છે, અને સાથે સાથે વેદ, ગીતા, ભાગવત આદિમાં રૂપી રીતે રહેલો એવા એ સિદ્ધાંત પણ પ્રકાશિત કરી બતાવ્યો કે સેવા કરવી એટલુંજ નહિ પણ માત્ર ક્રિયાઓનું પર્યવસાન ભગવાનમોજ હોવું નોંધ્યે. બીજા માર્ગો કરતાં પુષ્ટિમાર્ગની એજ વિવ્રલક્ષણતા છે કે આ માર્ગમા માત્ર પ્રભુનુંજ સુખ વિચારાય છે અને તે સિવાયની બાબતોને ગણ્ય માનવામાં આવે છે અને આજ સિદ્ધાંત વેદમાં પણ કહેલો છે કે ‘આત્મનસ્તુ કામાય સર્વ

પ્રિય' ભવતિ " એટલે કે પરમાત્માને માટેજ આ બધું હોવાથી તેને લક્ષનેજ બધું પ્રિય હોવું જોઈએ. જ્યારે કે ખીલ માર્ગોમાં પોતાનો ઉદ્ધાર આગળ મુકવામાં આવે છે અને તેના સાધન તરીકે જ્ઞાન ઉપાસના આદિ કરવામાં આવે છે, આથી અન્ય માર્ગ અને પુષ્ટિમાર્ગ વચ્ચેના મુક્તિમોઢ વૈષ્ણવોએ જુલવા ન જોઈએ. અને એવ શ્રીહરિરાયમહાપ્રભુએ પુષ્ટિમાર્ગનું સ્વરૂપ બતાવતાં આજ્ઞા કરી છે કે 'સાપેક્ષતા સ્વામિસુખે પુષ્ટિમાર્ગઃ સ કથ્યતે !' અર્થાત જે માર્ગમાં માત્ર સ્વામીનુંજ—પ્રભુનુંજ સુખ વિચારતું હોય તેનું નામ પુષ્ટિમાર્ગ છે એટલુંજ નહિ પણ શાસ્ત્રોમાં જેને નિષ્કામ ભક્તિયોગ તથા નિર્ગુણ ભક્તિયોગ કહેવામાં આવે છે તે પણ ખરી રીતે પુષ્ટિભક્તિનેજ લાગુ પડે છે, માટે વૈષ્ણવો ! હું ભગવાનનો અંસ છું અને મારો મુખ્ય ધર્મ મારા અંશી શ્રીકૃષ્ણજીની સેવા કરવી એજ છે એમ સમજીને દરેક ભગવત્સેવામાં પ્રવૃત્ત થવું જોઈએ.

એકમય જીવનની આવશ્યકતા.

આચાર્યચરણ 'ગૃહે સ્થિત્યા સ્વધર્મતઃ અભ્યાર્જતે ભજેતુ કૃષ્ણમ્." આ પ્રકારે ભક્તિવર્ધિનીમાં આજ્ઞા કરે છે તદનુસાર આ માર્ગ સાધુ કે વિરાગી થવાનો ઉપદેશ આપતો નથી. આમાં તો જીવને સદા સૌભાગ્યુક્ત રહેવાના ઉપદેશ આપે છે. આચાર્યચરણોએ પોને તમને પુરોહિતમ સાથે સંબંધ ધરાવી આપ્યો છે તો પછી તમારે ચિંતા કરવાની કશી જરૂર નથી. તમારે તો કાવધી પણ જરાએ કરવાનું નથી. કારણ કે તમે જે પ્રભુની સેવા કરો છો, તે પ્રભુ કાસથી પણ પર છે એટલુંજ નહિ પણ કાલ, કર્મ અને સ્વભાવ એ ત્રણેને નિયમમાં રાખનારા છે કે જે ત્રણ આખી દુનીયાને વશમાં રાખે છે. તેના પણ આપ નિયામક છે. માટે તમારે તો આચાર્યચરણોએ આજ્ઞાઆગ્રહણીયા કરતી સમયે પણ કાઠીમાં હનુમાન ધાટ ઉપર આજ્ઞા કરી કે—સેઅરસ એવ ગોપીશઃ અર્થાત આપણે તો તે ગોપીજનવક્ત્રસનું સેવનજ કરવાનું છે અને તેજ આપણા માટે જે કંઈ પણ કરવાનું છે તે બધુંય કરી લેશે. આ મૌલિક આજ્ઞા કરેલી છે તે મુજબ ભગવત્સેવા કરવી તેથીજ તમોને ભગવત્પ્રાપ્તિ થશે અને ઉચ્ચમાં અમો બ્યાખ્યાનનો ઉપસંહાર કરતાં જણાવીશું કે સાંનિધ્યમાં ભગવત્સેવા અને વિશેષમાં ભગવત્કથા તમો બધા કર્યે જાઓ અને તેમ કરતાં મમે તેવાં દુષ્ણ આવે તે તેને સહન કરો. કારણ કે 'ત્રિદુઃખસહન' ધૈર્ય એ આજ્ઞા પ્રમાણે ધૈર્ય પણ રક્ષણીય છે. આ પ્રકારે જીવન પર્વત અવિચ્છિન્નપણે સેવા અને કથાનો પ્રવાહ ચાલુ રાખી શ્રીમદાચાર્યોક્તનુસાર શ્રીમદાપ્રભુજીની કૃપાથી તમને અઘૌકિક સામર્થ્યદિમાંથી યથાધિકાર રક્ષ મળશે એ અવિચિત્ત છે.

સર્વાત્મભાવનાં પદ્યામણી.

(લેખકઃ—ભગવદ્દીય મીસ્ટ્રી વેલ્લ નયુલાક, રાજકોટ,)

(રાગ લાવણી.)

- | | |
|---|---|
| નિજ આત્માના સર્વ લાવ, સર્વ ભવનમાં દહી દેવા, | |
| સ્થાયીપણુ જો પ્રભુ વિષે થઈ, આત્મ વિષે એ લહી લેવા. | ૧ |
| સર્વ પદ્ધતી એક સમાસે, કામ લાવમાં એ જાણો; | |
| અનેક ઈન્દ્રિય અનેક રૂપમાં, દાતા લોકતા મન આણો. | ૨ |
| નિત્ય નવીને સર્વ ભાવમય, લક્ષ્મીના એ છે સ્વામી; | |
| અનિત્યને જન અન્ય ગણીને, તજતાં નવ દાવે ખામી. | ૩ |

અલૌકિકતા . દેહાદિકમાં, શૃંગાર રસ આધારે એ;	
આધારે આધેય રહે એ, વિકલ્પતા નિવારે એ,	૪
કામથી પૂરણ કામ થાય તે, લોક મતિએ બહો એક;	
નિષ્કામીથી કામ થાય તે, એ વિલક્ષણતા માની લેક.	૫
કામ સમ્બધે કામી થાએ, નિષ્કામે નિષ્કામી થાય;	
સર્વ ભાવ પરિપૂરણ બકતો, નિષ્કામે વિરામી બાય.	૬
રસાત્મા એ, ફલાત્મા એ, ભાવાત્મા રસરૂપે એ;	
અતિ આનંદ એજ આત્મા, અંદભુત રૂપ અનૂપે એ.	૭
કામ ભાવની મતિએ ભજતાં, પ્રાકૃત કામો નાસે છે;	
નિષ્કામીમાં નિષ્કામે ધર્મ, વિચરતાં નહિ ત્રાસે એ.	૮
સર્વ શૃંગારો પ્રભુપણમાં, પતિ ભાવ સમ્બધે જે;	
શૃંગાર રસની ભાવે ભક્તિ, પતિવ્રત પ્રેમે શોધે એ.	૯
દોષનિવૃત્તિ જ્ઞાન ભક્તિથી, જરૂર નેતાં બાએ એ,	
આ નિષ્કામી કમનીય માર્ગે, વગત કામની સૂઝ બાએ.	૧૦
ઉત્તમ ભાવે ભાવન કરતાં, સ્વરૂપ સંગમવાળો થાય;	
લોક વિષય નહિ રસપણા એ, રસાભાસ કારણ કહેવાય;	૧૧
જેમ રસ આગમ રસનું સ્મરણ, તદ્વત કારણ આને બાણ;	
દિવ્ય શૃંગારના દિવ્ય રસગાને, શુદ્ધ થયાનું મનમાં આણ;	૧૨
ભજનાનંદ રસ રસિક પુણે, દેવ શિરોમણિ એ સંજોગી;	
સ્વરૂપાનંદના આનંદ માંહે, મસ્ત રહે છે એ લોગી.	૧૩
દિવ્ય સામગ્રી રસ પરિપૂરણ, એ લોકતા પણ દિવ્યજ હોય;	
અપ્રાકૃત એ વશીકરણત્વ, સ્થાયીપણ ન અવેરે કોય.	૧૪
અણુ જીવોમાં અધુર મતિએ, રસ લેવાને દોડે એ;	
એ રસ તો છે 'રસો વૈ સઃ' માં, નાહક મગડા નેડે એ.	૧૫
એ રસ લોગી એ સંજોગી, અંગે અંગી ને હોએ;	
પ્રવાહ પંચે પામે ન પ્રસિ, પ્રીતમ પ્રીતું હોયે ને.	૧૬
ઉત્તમ જનની ઉત્તમ કૃતિએ, સર્વ ભાવ માંહે ભાવી;	
પ્રતિજન્ય ના હાએ તેને, મહત્કૃપાએ ને પામી.	૧૭
પૂર્ણાનંદની પ્રાપ્તિ અર્થે, રસાત્માને રસ તરફ;	
મર્યાદાના જ્ઞાન અભાવે, અનુરાગમાં નઈ ગળતું;	૧૮
પ્રભુ ઉચ્ચારો નથી પુણિમાં, નાથ, નાથ, હે દરિ;	
લેક વચનો બધી ભાવથી, એજ બાએ તરી તરી.	૧૯
મનુ મતિ તો મંદ ઘણી છે, નહિ અધિકારી એકે અંગ;	
શ્રીધારિકેશની પરમ કૃપાનું, કારણ મતિએ આદ્યું સંગ.	૨૦

શ્રીવાકપતિપાદા વિજયન્તાન્તમામ્ ॥

શુદ્ધાદેવ-સહિતમાર્તંડ.

વર્ષ ૬૦.]

કાર્તિક, શ્રીવશીષ્ઠાબ્દ ૪૫૩.

[અંક ૮.

શ્રીકૃષ્ણઃ ।

“નૂતન-આશા.”

અશિતન્દન અર્પેતી, અરુણાંબરધારિણી, વિશ્વને નવતા વર્ષે દોડીલી નવલી ઉપા. ૧
 છે માવમાં મધુર અદ્ભુત ભરેલી, ને પ્રેમમાં મૃદુલ કન્દલતા દિસંતી;
 શાસ્ત્રાત્વ છે પ્રણયમાં શુચિ-સ્નેહમાં તો, શોભી રહી રસિક પલ્લવતા અહોહો ! ૨
 રાગએ કલિકા રૂપે જનુરાગ પ્રવનને, ફળતા વ્યસને આવા ભાવાત્મક સેર છે. ૩
 એ ભાવના-પ્રચુરને ઉર-મધ્ય પૂરી, બહાલા ! વિતાડ નવ-વર્ષ સુખે નિરોગી,
 શ્રીકૃષ્ણની ચરણ-પંક્તિ-રેણુ, પામ, રચાએનું “શરણ દુર્ગ” મહી પ્રભોદ. ૪
 (ગા. શ્રીમજ્જનાયલાલભદ્રાદયપ્રણીત.)

फलं वेदान्तानां भवति परमेतत्सुखमयं चिन्तिर्णतिं गीताश्रुकवचनसारोऽपि तदिदम् ॥
 इदं जीवातुः श्रीमज्जवत्त्वधृतां गिरिपर त्वदीये लावण्यं नयनयुगले मे विलसतु ॥

નવલી-પ્રભાત.

નવલી પ્રભાત આજે આનન્દ પૂર્ણ કરજે, આરિચ્છ બુદ્ધિ-અગ્નિ, વિકસાવનો રહેજે.
 અર્ચુ સખે ! હૃદયનાં, “પ્રેમામિનન્દનો” ને, આ ધન્ય નવ્ય દિવસે તેન્હો સ્વીકાર કરજે.
 સેવા સ્વધર્મની ને બહાલા સ્વરાષ્ટ્રની એ, કરજે સમાજની એ આ પુણ્ય નવ્ય-વર્ષે.
 મિત્રત્વ-ભાવનાને સુદૃઢ પ્રવૃદ્ધ કરજે, સત્યાગ્રહી જાનીને નવ-વર્ષને દીપવરે.

ગિરિધરલાલ જ. શાહ.

અભિનંદન.

સવૈયા છંદ.

અભિનંદન હો ઇંદ્ર-મિત્રને, નવલવર્ષને વ્હાણે આજ,
 આપ આમસહ ઇચ્છિત વરજો, આહ્વાદક ટાણે આ આજ;
 વિશુદ્ધિ વાસિત સંકલ્પોથી, લાખ ગણી સોહાવજો લાજ,
 પ્રસન્ન હોજો પૂર્ણ તમે પર, વિશ્વવિહારી શ્રી ત્રજરાજ. ૧

પણ પળમાંથી પ્રહર જની જયમ, પ્રહરે. પ્રગટાય,
 દિવસોથી મહિના, મહિનાથી, સંવત્સરનાં સ્વરૂપ ઘડાય;
 એ રીતે ક્રમવાર કદમથી, ધર્મ તરફ હુમ્મેશાં ધાવ,
 નવલવર્ષનાં નવનીત પ્રાશી, ત્રજરાગર તરવે ઉભરાવ. ૨

પરિપુષ્પોનો સાથ તજને, પ્રભુના ઉપર પ્રીતિ ધરો,
 દ્વપાત્રક હરિતો દ્વર રાખી, જ્ઞાનસુધારસ પાન કરો;
 કામા-શાંતિ-શીળ-સદ્વર્ત્તનથી, કાયાના કૌઠાર ભરો,
 અનુશવસિદ્ધિ અહર્નિશ વરતા, વૃધ્ણા વ્હેણુ તમામ તરો. ૩

વિકસિત પદ સમા વદનેથી, કલ્યાણપ્રદ કલરવ ધાવ,
 વૃત્તિ વૃત્તમાં વૈદિક ધ્યેયે, અદ્ભુત સુંદરતા ઉભારાવ;
 શાસ્ત્રપ્રતિપાદિત શ્રેણી પર, ચનગનલા મનમંત્ર સુહાવ,
 સચરાચર વ્યાપકને ચરણે, પ્રભુતાઓ પ્રત્યેક કમાવ. ૪

છંદગી સાથ જકડના રેંજો, પૂર્વજની પદ્ધતિના પાસ,
 વણીચ્છેદક વલણુ બહીને, રખે યતા દાનવના દાસ;
 પ્રમુદિત દગથી પોખ્યા જાજો, કુલાચારન કૌમળ અંગ,
 પુષ્પોદક વ્હેતી પ્રગટાવો, સ્થળે સ્થળે ગોમતી ને ગંગ. ૫

પ્રથા પ્રતિષ્ઠિત પ્રેર્યા જાજો, સંતતિમાં સંસ્કારો શાષ,
 સમચરંગી ક્ષોણે વણુ વણુરયા, બધી રીતેથી હજો બલિષ્ઠ;
 ભગવદ્ પ્રતિ યાચે ને ઉચરે, ભાઈશંકરજી બબ્બ બલાઈ,
 સંવત્ જોગણીયે ઇંકયાત્રી, સો જનને નિવડો સુખદાઈ. ૬

કવિ ભાષ્યશંકરજી વિધારામ પંડિત.

અભિનંદનો—નવીનવર્ષના સુમંજસદિનોમાં જે જે ભગવદીયોએ અમારા ઉપર
 પોતાની શુભ હાર્દ:લાગણી જતાવનારા પત્રો લખ્યા છે, તેને માટે અમે તેમનો
 અંતઃકરણપૂર્વક ઉપકાર માનીએ છીએ:—૧ ભગવત્સેવાપરાયણ પરમ ભગવદીય
 રાયજહાદુર શેઠ હરિશંકરજી આનરજિ મેજસ્ટ્રેટ, હરદા, ૨. શ્રીયુત શેઠ ધરમજી
 માધવજી ઠાકરજી, ૩. શેઠ લક્ષ્મીદાસ લીમજી મટાણી, ૪. રા. રા. નારાયણદાસ
 પરમાનંદદાસ ડભોઈવાલા, ૫. પટેલ મનજી દેવજી, ૬. બક્ષીજી મગનરા. હવિલાલ,

૭. શ્રીયુવ ક્ષેત્રપાલ શર્મા, માલીક સુખમંચારક કું. મયુરા, ૮. રા. રા. છેટાલાલ મન્સુખલાલ શાહ તલાટી, ૯. રા. ગિરધરલાલ જ. શાહ. પરમ ભગવદ્વીય શેઠ રણુ છેડઢાસ વરજીવનદાસ પેટલાદીએ તો શ્રોત્રની પ્રસાદી તુલસી કવરમાં મોકલી તેને માટે તો અમે જેટલો ઉપદાર માનીએ તેટલો થોડો છે. પણ તેજ કવરમાં સુદર્શનજી અને સ્તોત્ર મઝ્યાં આમાં “અન્યાશ્રય નજ થાય” એવું જે શેઠજીએ છપાવ્યું છે તે તો સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતથી તદ્દન વિરુદ્ધજ છે. વૈષ્ણવો કહી ગમે તેવી સ્થિતિમાં પણ પોતાના પ્રાણપ્રેષ્ટ વિના અન્યને! આશ્રય ન જ કરે તો શ્રીસુદર્શનજીની વાત જ ક્યાં રહી? અહીં તો શ્રીગોપાલોપાસના પણ ગૌણ છે ત્યાં શ્રીસુદર્શનજીનાં સ્તોત્રનું સ્થાન જ શું હોય? શ્રીજીના મંદિરના શિખર પરના સુદર્શનજીનો ભાષ જ અલગ છે એટલે ત્યાં અન્યાશ્રય નથી. બાકી શેઠજીએ મોકલેલા સ્તોત્રથી સ્પષ્ટ અન્યાશ્રય થાય જ. પ્રેમમય મરગતી શેઠજીને આ વર્ષે આ લખ કેલે વળગાડી?

પંદર તિથિ.

(લે:—શ્રીશુકદેવ.)

૧. સખી પડવે પૂરણ પ્રીત, બાધી નાયેરે, અલગેલે રમવા રાસ, સખી સાથેરે. (૧)
૨. સખી છીને બાળક રૂપ મનડું મોહુંરે; રસથેલો રમાડે રાસ, ચિત્તડું મોહુંરે. (૨)
૩. સખી ત્રીને ત્રિજીવનનાથ, આવી ઉભારે, ગર્ભતી જળ ભરવા કાજ, રસ્તે થોડ્યારે. (૩)
૪. સખી જોયે ચંચળ ચિત્ત, લાગ્યું ભમવારે; સામગીયો પડેડી હાથ, લાગ્યા રમવારે. (૪)
૫. સખી પાંચમે પૂર્ણાનંદ, પ્રેમે બાંધીરે; જળકીડા કરી ગયા નાથ, મનોરથ સાધીરે. (૫)
૬. સખી છઠે છળીલો પ્રાણ, હરી ગયા મારારે; મને થેડી બનાવી નાથ, પોતે ન્યારારે. (૬)
૭. સખી સાતમે શ્રીધનસ્થામ, રૂપ નિહાળ્યુંરે; નિરખી મંદ હારય સુકુંદ, વિશ્વરૂપ ભાળ્યું. (૭)
૮. સખી આઠમે આનંદકંદ, બંસી બળવેરે; જડચેતન સૌને પ્રાણ, અખી સુણાવેરે. (૮)
૯. સખી નવમીએ નંદ કિશોર, ગયાતા મેલીરે; સૌ સખીયો શોધે નાથ, હતી રસથેલીરે. (૯)
૧૦. સખી દશમે દ્વારિકાધીશ, મહેલમાં માહોરે; રૂઝિમણી સત્યભામા સાથે ઉભય કર તાણેરે. (૧૦)
૧૧. સખી એકાદશી અપવાસ, આવ્યો ભારીરે; સૌ સખીયો હળી મળી સાથ, ભજ્યા મુરારીરે. (૧૧)
૧૨. સખી બારશે બળભદ્રસાથ, રમતા ભાળ્યારે; શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર ગોપ સાથ, પ્રેમે નિહાળ્યારે. (૧૨)
૧૩. સખી તેરશે તારણહાર, કંસને મારીરે; છોડ્યા બંધન પિતૃભાત, તણાં મુરારીરે. (૧૩)
૧૪. સખી ચૌદશે ચતુર્જીવ રૂપ, દર્શન દીધારે; કૃતાર્થ કરી સૌ સાથ, પાવન દીધારે. (૧૪)
૧૫. સખી પૂનમે પ્રાણ છંપન, પ્રીતમ પામ્યારે; મળીયા શ્રીનંદ કુમાર, હુઝાડાં વામ્યારે. (૧૫)
૧૬. પંદર તિથિ પૂર્ણાનંદ તણી, કોઈ ગાયેરે; તે કુટુંબ કળીલા સાથ, પાવન થાયેરે. (૧૬)
૧૭. શુકદેવ જે એ નાથ, શ્રીકૃષ્ણ મુરારિરે; ચાચું દીનતાથી એક, દૈન્ય વિહારીરે. (૧૭)

તવતવડી.

તવતવડી સખિયોને સાથે લઈ, રમવા નિસર્ધા રાધા મજની માંદાંજો,
 જતાં જતાં નંદ કુંવર સ્હામા મળ્યા, પાસે આવી ઝેટપટ ઝાલી ણાંદાંજો.—તવતવડી ૧.
 મલકાતે મુળડે મોહનને રાધા કહે, આ તે કેવી લાલ તમારી રીતજો;
 આ સખિયો સહુ કહેશે જાનને માતને, શાને રાજો અમ શું આવડી પ્રીતજો.—તવતવડી ૨.
 કૃષ્ણ કહે સુણ રાધા કહું છું કાનમાં, તરવ એક પણ જુજવા બેના દેહજો;
 ગોવેદિકથી કીડા કરવા ઉતર્યા. મુખ્ય સ્વરૂપને લઈને છે આ સ્નેહજો.—તવતવડી ૩.
 સુણતાં રાધા સમજ્યા એકજ સાનમાં, રાધા માધવ કહેવાના બે નામજો;
 મનમોહન માધવ છે રાધા રૂપને, રાધા છતે છે છે સુંદર ક્યામજો.—તવતવડી ૪.
 જે સખિયોએ “ગોપમગોપી” સાંભળી, તે સખિયો થઈ રાધા માધવ રૂપજો;
 રાધાવદ્ધલ રસિક શિરોમણિ શ્રીહરિ, વિઠ્ઠલ તેને નમતાં રહે છે ચૂપજો.—તવતવડી. ૫

વિઠ્ઠલદાસ લાલદાસ રોહાવાળા.

શ્રીકૃષ્ણનામપ્રભાવ.

(માઠની ધૂનમાં.)

ફડું પતિતપાવન, અધમ ઉદારણુ, લવજલ તારણુહાર શ્રીકૃષ્ણનું છે નામ;
 સહુ પાપવિનાશક, સંપતિદાયક ક્યામ. (ટેક.)

ભાવ ધરી જે જન શુદ્ધ મનથી કરશે હરિનું સ્મરણ;
 દુઃખ ટળે સુખ સર્વ મળે વળી ટળશે જન્મ ને મરણ. (૧)

મનહર મોહનની મૂરતિ, નીરળી નેત્ર કંઠે જોઈ સ્વરૂપ;
 યમ કૃતાર્થ તે પ્રભુદર્શનથી, પટે નહી લવરૂપ. (૨)

પરમકૃપાળુ વાક્ત શ્રીહરિનાં, લજે લગતે શ્રીશ્યામ;
 નામસ્મરણની ગંગા વહે તેમાં વાક્તો પામે છે વિરામ. (૩)

નામ તણા મહિમા છે મોટો, મુખે કહ્યો નવ જાય;
 બ્રહ્મા નારદ શારદ જેના, શુણ અહર્નિશ ગાય. (૪)

તો પણ તેનો પાર ન પામે, ત્યાં હું શું કહું મતિમંદ;
 લક્ષ્મી કૃપા અને શુરકૃપાથી, શુણ વર્ણવું ગોવિંદ. (૫)

સેવા સ્મરણ ને કૃષ્ણ કીર્તનમાં, માનો અતિ આનંદ;
 ‘ગિરિધર’ કેરી વાક્તિ કરીને, ટાળો લવનો કંદ. (૬)

(પ્રયોજક:—ગિરિધરદાસ જ. શાહ.)

શ્રીલાલવાવા શ્રીગોવિન્દરાયજીનાં મંગલમય પ્રાકટ્યનો ગરબો.

રાગ—(પુનમ ચાંદનીનો,)

આને વૈષ્ણવ જનનો ભોગ્યલાલ નભ શોભતો રે, ભુમિ મજમંડળની મંગલમય દેખાય.
શ્રીચમુનાજી સુંદર તરંગથી ગાજી રહ્યાં રે, શોભે રોમાંચિત હરિદાસ વર્ધ ગિરિરાજ,
પ્રાકટ્ય લાલ કૃપાલ શ્રીવલ્લભવરને બારણે રે. ૧.

સાખી—શ્રીગોકુલના ચન્દ્રમા, શ્રીગોકુલના રાજ, પ્રસન્ન મુખ દર્શાવતાં વિરાજતા મંદારાજ,
ધારી કુલહ ચન્દ્રિકા સાથ દિવ્ય શૃંગારનેરે નિરખે પૂર્વ નયનથી શોભા મજની આજ,
ગોકુલપતિની સુદિ અમૃત વૃદ્ધિ અનુભવેરે, દૈવીજનના મનને અપૂર્વ આનંદ થાય. ૨.

સાખી—શ્રીગિરિવર પૂજન તણા મુખકર કાર્તિક માસ,

ધન્ય સુદી તેરસઢીને પૂરી નિજજન આસ,

સોડે ધન્ય વાર ગુરુનો દૈવી શુભ યોગ છે રે શોભે ધરતી ધટિકા સર્વ રીત કટ્યાણ,
દેવો પુષ્પ તણી વૃદ્ધિ કરતા આકાશથીરે, ગાતા શુણીજન ઉભા મંગલજયને દાર. ૩.

સાખી—દેવ હુંદલિ વાજતાં, ગગન મંડલે નાદ,

નૃત્ય કરે ત્યાં અક્ષરા મનધારી આર્ણાદ,

ત્યાં તો ગાન કરે છે ગન્ધર્વ અતિ હર્ષથી રે, ઋષિવર મુનિવર આશિષ દે છે વારંવાર,
વિપ્રો વેદ મંગ ઉચારે અતિ આનંદમાંરે, કરતા મજવાસી સૌ મંગલ જયજયકાર ૪.

સાખી—ધર ઘર આનંદ ઉલટયો તોરણ બાંધ્યાં દાર,

વૈષ્ણવ મન અતિ મોહમાં હર્ષ ભર્યા નરનાર,

ગોકુલની ગલિયોમાં માનવ સાગર ઉલટયોરે, ઉગ્યો ગોકુલેશ સુદનો પુરણ ચન્દ્ર,
હરખે ગાન દાન ને માન ભર્યા સૌ માનવીરે, આત્યાં ચંદ બાવાને દાર ભર્યા આનંદ. ૫.]

સાખી—મજ પનિતા સિરપર ધરી મંગલ કલશો આજ,

કર શ્રીકૃષ્ણ કુંકુમ અને દૂર્વા મંગલ સાજ,

આવ્યાં હર્ષ ઉમંગે વલ્લભવરને આંગણેરે, દેતાં દિવ્ય વધાઇ શ્રીમાજી મહારાજ,
ગાતાં મંગલ ગીતો જન્મ વધાઇ લાલનીરે, છાયો ભૂમંડળમાં સુવર્ણનો રવિ આજ. ૬.

સાખી—અતુર્થ પંચમ પીઠના વૈષ્ણવ બહુ હરખાય,

અમૃતવાણી સાંભળી દર્શન કરવા બાય,

ઉલટયો આનંદ ઉદધિ શ્રીગોકુલના બારણેરે, ભેની દિવ્ય લહરીયો કામવને ઉભરાય,
શોભે આનંદાદ્રિ સત્ય નામ આને કરીરે, આણું મજમંડલ આ આનંદે મલકાય. ૭.

સાખી—વેદ રત્નને પ્રાણણા, મંગલગીતો નાર,

યશ ગાતા શુણીજન ઘણા, વૈષ્ણવ જયજયકાર,

ગાયો મંગલ શબ્દે હર્ષ નાદને આદરેરે. ગોભે વન્ધ અને ગાગારેલા ગોવાળરે,

દિવ્યા પરિત્યાગિની !

(૧)

તે એક સુખા હતી.

તેનામાં અપૂર્વ સૌંદર્ય હતું. તેના કોમળ પ્રત્યક્ષમાં મૃણાલનું માર્દવ હતું. કિંતુ તેના પતિ અતિદુર્વ્યસની હોઈ, સર્વસફળતાલક્ષ્ય આ માધ્વી પત્નીને ત્યાગ કરી, આને કેટલાંકે દિવસોથી અદૃશ્ય થઈ ગયો હતો. ત્હારથી એ સુખા લૌકિક કુટુંબીજીવનને પરિત્યજી કાલિદીનાં પ્રભુસેવામય ત્યાગિજીવન વિતાડતી હતી.

એ પ્રભુપ્રેમ-ઉન્મત્તો ત્યાગ-અવસ્થામાંએ દિવ્ય પોઠશ શૃંગાર રચની નવનગં વસનો પરિધાન કરતી. નિતમ્બ-સ્પર્શી સ્વકીય કેશાવલિમાં જમ્બુ ભાલતીનાં સુરસિત સુમનો ખોસતી ! લોચે એ સંન્યાસિની હતી !

એના ત્યાગનું અન્ય ત્યારોથી આ જ વૈચર્ય હતું. એના ત્યાગ પ્રાકૃત સાધુ સંન્યાસીઓથી અનેરો હતો. અપ્રાકૃત હતો. યદ્યપિ એણે લૌકિક સર્વસ્વનો ત્યાગ કર્યો હતો, લોચે તેની ત્યાગબુદ્ધિમાં ભગવત્પ્રાપ્તિનું ફળ નહોતું પરંતુ ભગવદ્ભાવશિતલે ત્યાગ હતો એ મેધાવતી જાળાએ આત્માનોએ પરિત્યાગ કર્યો હતો ! ક્ષ્ણકે ક્ષ્ણકે દેહિસાલલાનાં શ્યામલામન્દ વહન્તા નીરને એટી દણિએ નિરખી રહેતી, તેમાં તેને ધનશ્યામનાં દર્શન થતાં. સહસા એ પ્રેમવિર્જિત યદ્ય જઈ કોમળ પુલિન્દ ઉપર જ મૂર્છિત થઈ ઢળી પડતી આત્માનુસંધાનજ વિસરી જતી.

શ્રીકૃષ્ણનાં દર્શનની એને આર્તિ હતી. એ સ્વરૂપસેવા કરતી કરતી આનન્દ કન્દના વિપ્રયોગનો અનુભવ અનુભવતી આના મોટેજ એણે ત્યાગની આની અલૌકિક સાધના સાધી હતી સંયોગમાંએ વિપ્રયોગ પ્રાપ્ત કરવો એ જ એને અભીષ્ટ હતું. શાસ્ત્રકારોએ સંયોગશૃંગારથી વિપ્રલગ્નને શ્રેષ્ઠ માન્યો છે અત એવ એ તરણીએ રસશાસ્ત્ર તરણીએ વિપ્રયોગશૃંગારસ્વરૂપ સ્રીવૃષભાનુભ-કાન્તાને આરાધ્યા હતા.

જ્ઞાકે એ શ્રીકૃષ્ણનો સાક્ષાત્કાર અનુભવતી ત્હારે એના હૃદયમાં નવોદાસનાં તરંગો ઉછળવા લાગતા. મગ્નમે ભાવસર્પા શૃંગારોથી સર્વાંગ અલક્ષ્ય કરતી અને શરદોદુહિત ચન્દ્ર-ચામિનીમાં એ કરમાં વળિા અહીં શ્રદ્ધિજ્વળની અલૌકિક લીલાનાં રસ માધુર્ય-નિર્જસ્તા પદો આલાપતી કિન્તુ પુનઃ પ્રભુપદોક્ષમાં શ્રીકૃષ્ણની અભિલનદશામાં સર્વ શૃંગાર-પરિધાનેનો ત્યાગ કરી પરમ સંન્યાસિની થઈ જતી.

(૨)

એનું આત્મામાં પ્રિયત્વ કેવળ પ્રભુપ્રીત્યર્થજ હતું.

પ્રભુચરણે એણે સર્વસ્વનાં સમર્પણ કર્યા હતાં : ગૃહસ્થિત આત્મભજનધુજનથી નિવૃત્ત થવા એણે કાષાય-વસનની કપના કરી હતી. શ્રીમહાપ્રભુની આજ્ઞાનું એને સંપૂર્ણ ભાન હતું. એણે શ્રીમદ્ભક્તચાર્યચરણનાં ગ્રંથોમાં અવગાહન કર્યું હતું. અતઃ વિશ્વ-વિભ્રમજી કરતા જ્ઞાનમાર્ગીય શુદ્ધ ત્યાગીઓને સંન્યાસીઓને

પોતાના કાપાય વસ્ત્રનું તેમનાં ભગવાં વસ્ત્રોથી પાર્થક્રય સગર્વ દર્શાવતી શ્રીમહા પ્રભુની નિમ્ન આજ્ઞા ઉચારતી કે:—

સ્વીયવન્ધનિવૃત્ત્યર્થં વેપઃ સોઽત્ર ન ચાન્યથા ।

કોઈ મૂઢ એ આદર્શ સંન્યાસિનીને પ્રશ્ન કરતો કે તમારા ત્યાગનો ઉદ્દેશ શો ! ત્હારે એ શાંત મૃદુ-વચનોથી એટલુંજ કહી દેતી કે:—

વિરહાનુભવાર્થં તુ પરિત્યાગઃ સુસ્વાવહઃ ।

એને મુખરતા દોષની મહાશંકા રહેતી, અતએવ એકાંત કાલિંદીનું નિર્જન તટ તેણે પ્રભુ-ધ્યાન, સ્મરણ સેવા માટે શોધ્યું હતું, તે અદ્યપર પ્રભુવિયોગની આર્તિ અનુભવતી હતી.

એનો ત્યાગ શાસ્ત્રાજ્ઞાથી પર હતો. એના ત્યાગમાં કાપાય વસ્ત્રનું શાસ્ત્રીયત્વે વિધાન નહોતું ! એના ત્યાગની અસ્થિતા અનિર્ધા હતી.

ખચિતજ એ લક્ષના પૂર્ણ પુરુષોત્તમના પ્રેમની ઉત્પાદિની હતી.

(૩)

એને બ્યસનના ચરમફલ-સ્વરૂપે શૃંગારકલ્પદુગ્ધમરસાત્મક શ્રીકૃષ્ણની અપ્રા-કૃત નિત્ય-લીલાઓના અનુભવો પ્રાપ્ત થયા હતા. ત્હારે એ આવા અકથનીય સૌંદર્યપૂર્ણ અનુભવો અનુભવતી ત્હારે તેનું શરીર નિર્લવસમ ગની જતું. દેહજ ભૂમિએ પડી રહેતો અને એનો આત્મા શ્રીકૃષ્ણની લીલામાં વિચરવા લાગતો. એ રમણીનો પરિત્યાગ આતું અગમ્ય ક્ષણ પ્રાપ્ત કરવા અને વિશુ-વિરહને અનુ-ભવવા જ હતો.

લૌકિકવિષય-વિકારવિહીના જાલામાં પ્રભુ-પ્રસાદનું અનિર્વચનીય પાવિત્ર્ય હતું. એની કુટી પાસે કોઈ પણ વિષયાકાન્ત દેહ આવીજ નહોતો શકતો. હુંદો એની દૃષ્ટિથીજ થર થર કંપતા. કિંતુ જાણમાં કોધનો સર્વથા અવાવજ હતો. પ્રાણી માત્રને ત શ્રદ્ધાથીજ જોતી. પોતાના પ્રાણ-ધનશ્રીકૃષ્ણમય એ વિશ્વને નિરખતી. અતઃ એને વિશ્વના કોઈ પણ પદાર્થ તરફ ધૃણા નહોતી. ત્હારે પર-બ્રહ્મ મધુર સૌંદર્યપૂર્ણ અને અલૌકિક આકારવાન છે ત્હારે તેમાંથી ઉત્પન્ન થયેલી સૃષ્ટિમાં માધુર્ય સૌંદર્ય અલૌકિકતા કેમ ન સંભવે ? એનું વેદાન્ત આતુંજ અદ્વૈત, શુદ્ધ અદ્વૈતનું હતું. બ્રહ્મની નિરાકારતા એને ખુંચતી, એ નિર્ગુણ આનન્દ-મગ્ન સાકાર પ્રભુની ઉપાસિકા હતી. તેમજ વિરહથી આર્તા હતી. તેણે તેનું સ્વરૂપ ગંભીર હતું. અફુલ્લ હતું. ખરેખર એ દિવ્ય પરિત્યાગિની હતી. આનન્દકન્દનાં તીવ્રતર વિરહની વિરહિણી હતી. એ વિરહદશામાં પ્રભુશુભાનુવાદનુંજ અવલંબન કરતી હતી. અન્યથા એનું જીવન અસ્તિત્વ અશક્ય હતું. અતઃ એના ત્યાગ-સંગીતમાં વિયોગવ્યાધિવિદીર્ણહૃદયનાં આકંઠ સંભગતાં ! તે અપૂર્વ (પુષ્ટિ) પરિત્યાગિની હતી. દુર્લભ્ય પરિત્યાગઃ પ્રેમ્યા સિચ્યતિ નાન્યથા ॥

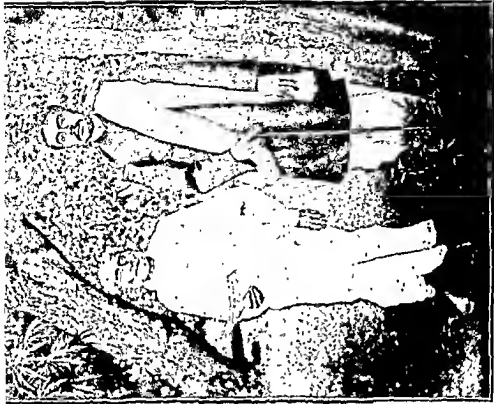
“પરાગ”



नि. ली. श्रीगोपबन्धालजी

महाराष्ट्र

नित्यलीलास्य गोस्वामी
श्रीसिद्धिभक्तकृतो महाकाव्य



શ્રીસુવોધિનીજી.

(લેખાડક ૧ લો.)

(લેખક:—૨૧. રા. હરિશંકર ઝાંકરજી શાસ્ત્રી, મીમાંસાશાસ્ત્રી, વેદાન્તવિદ્યાર્થ, M. R. A. S.

પુરાણશબ્દનો અર્થ.

યો वै मूला तदमृतम्, यदन्यतन्मर्त्यम् । (छन्दोग્યશ્રુતિ: ।)

સમ્પૂર્ણ સંસ્કૃત વાદમયમાં શ્રીમદ્ભાગવત અદ્વિતીય અન્થરત્ન છે. શ્રીમદ્-ભાગવતની પુરાણમાં ગણના થાય છે. સામાન્ય રીતે પુરાણશબ્દ ઉપરથી સૃષ્ટિકર્મ, મન્વરન્તરકથા, વંશચર્ચન, ભગવચ્ચરિત્રો વગેરેથી યુક્ત અન્યનોજ બોધ થાય છે. વાસ્તવિક રીતે પુરાણશબ્દ આવા સંકુચિત અર્થવાળો નથી, ઇતિહાસપુરાણાભ્યાં વેદ સમુપહંચેત્ । વિમેલ્યન્પશ્રુતાદેવો મામયં પ્રહરિમ્યતિ ઇત્યાદિ વાક્યોથી વેદાર્થનું ઉપળંડણુ (વિસ્તાર) કરવા માટે જ પુરાણો છે. વેદાર્થનો વિસ્તાર આ એક જ પ્રયોજન હોવાથી પુરાણોની મહત્તા વેદાર્થને સમજાવવામાં જ છે. પ્રાચીન સભ્યતા અને રાજ્યો તથા ભક્તોના ચરિત્રનું વર્ણન કરનારા પુરાણો છે, આટલું જ ને લોકો માને છે, તેઓ મોટી ભૂલ કરે છે.

પુરાણો શાસ્ત્ર છે.

શ્રીમદ્ભાગવતુ તત્ત્વાર્થદીપનિગન્ધના શાસ્ત્રાર્થપ્રકરણની સમાપ્તિમાં આજ્ઞા કરે છે કે:—

अर्धोऽयमेव निखिलैरपि वेदनाम्नै रामायणैः साहित्यभारतपञ्चांगैः ।

अन्यैश्च शास्त्रवचनैः सह तत्त्वसूत्रैर्निर्गोक्ते सद्दयं हरिणा सदैव ॥

આ રથળે અન્યૈશ્ચ શાસ્ત્રવચનૈઃ શબ્દોનો અર્થ. પુરાણ કરવામાં આગ્યો છે. શાસ્ત્ર એટલે ધર્મનું શાસન કરનાર, અર્થાત્ ધર્માધર્મનો વિવેક કરનાર. વેદનો અર્થ અત્યન્ત ગમ્ભીર હોવાથી વેદાર્થ કેવલશબ્દોની જેમતાણુથી થઇ શકતો નથી. નિરુક્ત, કટપસ્ત્રો, યોગશલક્ષણી (પૂર્વોત્તરમીમાંસા) ભગવદ્ગીતા અને સ્વમાધિભાષાને અનુસરતોજ વેદાર્થ કરવાનો છે. વેદનો પૂર્વકાણ્ડ અને ઉત્તરકાણ્ડ ધર્મ અને જ્ઞાનનુંજ પ્રતિપાદન કરે છે, તેથી વેદનો સ્વતંત્ર અર્થ કરીને કાલનિર્ણય, ઇતિહાસ કે સભ્યતાના સમ્બન્ધમાં વેદની શ્રુતિઓ ટાંકવામાં આવે છે, તે સર્વથા અયોગ્ય છે, એટલુંજ નહિ, પણ વેદનું પ્રયોજન અને ભર્મ સમજ્યા વિનાજ

૧. અન્યાનિ શાસ્ત્રાણિ પુરાણરૂપાણિ ન પ્રકાશ. ૨. આપણા સમ્પ્રદાયમાં પૂર્વોત્તરમીમાંસાનું એકશાસ્ત્ર સ્વીકાર્યું નથી, અન્યથા વ્યાસસૂત્રાવિરોધેનૈવ તદ્દગીવરણમ્ ઇત્યાદિ પંક્તિઓની વેષ-ધોપત્તિ પ્રાપ્ત થાય. યોગશલક્ષણી શબ્દ આ રથળે શાસ્ત્રરૂપના અર્થમાંજ લેવો. ૩. સમાધિભાષા શબ્દ પુરાણાન્તરનુજે ઉપલક્ષણ છે. અન્યથા અન્યૈશ્ચ શાસ્ત્રવચનૈઃ ઇત્યાદિ વાક્યો અર્થ થાય. ૪. સંબંધ, વિષય, અધિકારી અને પ્રયોજન એ ચારે સમજવા.

અકષણતાવડવ જેવું છે. વેદનો અર્થ શાબ્દિક મારામારીને લીધે અન્યથા ન થાય તે માટેજ સગવાનું વેદવ્યાસે વેદનો વ્યાસ, તદુપજુંહણાથે પુરાણો અને તત્ત્વસૂત્રોની રચના કરી અને સ્વશિષ્ય જૈમિનિદ્વારા ધર્મસૂત્રો રચાવ્યાં. વેદનો અર્થ કરતાં પહેલાં જો આટલું ધ્યાનમાં હોય તોજ પુરાણોના સમ્બન્ધમાં અત્યારે જે અત્યંત ગર્હિત દૃષ્ટનાઓ કરવામાં આવે છે, તેની અયોગ્યતા બરાબર સમજી શકાય સર્વજ્ઞ પુરાણો પ્રભુના તે તે સ્વરૂપનું વર્ણન કરે છે. જેમ જ્ઞાનના અંગરૂપે સૂર્યાદિરૂપને ધારણ કરનારા પ્રભુનું વર્ણન ઉપનિષદોમાં મળે છે, તેમજ પ્રભુના જુદાં જુદાં સ્વરૂપોનું વર્ણન જુદાં જુદાં પુરાણો કરે છે. પુરાણેષુ સર્વેષુ તત્ત્વદ્રૂપો હસ્તિયા એમ શ્રીમદ્દ્વાપ્રભુજી પણ આજ્ઞા કરે છે. સર્વજ્ઞ પુરાણો પ્રભુના માહાત્મ્યનુંજ પ્રતિપાદન કરે છે. અને દુર્ગા, ગણપતિ પ્રભૃતિનું મહત્ત્વ જણાવતાં પુરાણો પણ આવશ્યકેવતા-રૂપે હોવાથી વિશિષ્ટ (શ્રીકૃષ્ણ) ના શેષત્વે (અંગત્વે) છે. અથવા સર્વજ્ઞ રૂપો પ્રભુનાંજ સ્વરૂપો છે. સાધનરૂપે અને કૃણરૂપે પ્રભુ પોતેજ છે. આ રીતે પુરાણો દેવલ ધર્મધર્મનોજ નિર્ણય વેદને અનુસરીને કરતા હોવાથી શાસ્ત્રોજ છે.

શાસ્ત્રશબ્દનો અર્થ.

જ્ઞાન (સુ) ધાતુ ઉપરથી શાસ્ત્રશબ્દ સિદ્ધ થાય છે. આ ધાતુનો અર્થ અનુશિષ્ટિ થાય છે અનુશિષ્ટિ આજ્ઞા. અર્થાત્ ધર્મધર્મનું શિક્ષણ આપે તે શાસ્ત્ર શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતામાં સત્માષ્ટાક્ષં પ્રમાણં તે કાર્યાકાર્યવ્યવસ્થિતૌ (૧૬-૨૪) કર્તવ્યાકર્તવ્યની વ્યવસ્થા સમજાવનારૂં સાધન શાસ્ત્રશબ્દથી વ્યવહૃત થયું છે. સર્વ વિદ્વાનો “શાસ્ત્ર” શબ્દનો અર્થ અને વેદ તદુપજીવી સ્મૃતિ પુરાણાદિ કરે છે. બ્યારે ટેટલાક પાશ્ચાત્ય મતને અનુસરનારા શાસ્ત્રશબ્દની શક્તિને સંકુચિત કરીને Systematics science વ્યવસ્થિત વિજ્ઞાન, વ્યવસ્થિતકલા કે વ્યવસ્થિત વિદ્યા ઇત્યાદિ અર્થ કરે છે. આ પ્રકારનો અર્થ અત્યંત સંકુચિત થઈ જાય છે. વાસ્તવિક રીતે તો Scriptures ગ્રંથથીજ શરૂઓ ઝાળખાય છે. પરંતુ તેમાંયે દેવલ ધર્મગ્રંથોનોજ જોધ થતો હોવાથી વિવેકનો સમાવેશ થતો નથી તેથી કર્તવ્યાકર્તવ્યવિવેકજ્ઞાનજ શાસ્ત્રશબ્દનો અર્થ થઈ શકે.

યદ્યપિ, આ સિવાય શાસ્ત્રશબ્દ, આજ્ઞા (મ. જા. ૫-૧૪૮-૨૦), જ્ઞાન (શિશુ. ૫-૪૭), વિદ્યાની શાખા (રુ. ૧-૧૬) ઇત્યાદિ અર્થમાં પણ વપરાય છે.

૧. શાસ્ત્રોનો ઉડો અભ્યાસ કરનારા વિદ્વાનો સારી પેઠે જાણે છે, કે બ્યાજકાત્ર વેદ અને પુરાણોના સમ્બન્ધમાં જે શંકાઓ આસ્તિક જનતાની લાગણીને દુષ્પ દેવા માટે કરવામા આવે છે, તે સર્વજ્ઞ શંકાઓનું સમાધાન હજારો વર્ષ પૂર્વે જૈમિન્યાદિ મહર્ષિઓએ સત્તરાર્ધિ ન્યાયોશીએ અને અન્યાન્ય શાસ્ત્રધારોએ કરેલું છે. અત્યારે તો તેની તેજ (જેમનું સમાધાન થઈ ચુક્યું છે) શંકાઓ આગળ ધરીને દેવલ જગમનનજ કરવામા આવે છે. ઉડો અભ્યાસ કર્યાનો દેવલ દમ્ભજ છે. જે શાસ્ત્રોનો ઉડો અભ્યાસજ આ લોકોએ કર્યો હોય તો સમાહિત શંકાઓજ સામે ન ધરે. અખણિત અને શાસ્ત્રોના પ્રયોજનને અનુસરતીજ શંકાઓ થાય. કિન્તુ તેમ થતું નથી.

તથાપિ, સુખ્ય અર્થ તો અનુશિષ્ટિજ છે. અને તેની પરિભાષા ગીતામાં જણાવ્યા મુજબ કાર્યાકાર્યની વ્યવસ્થાનું સાધન શાસ્ત્રશબ્દવાચ્ય છે, એમજ સ્વીકારવી. શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજ આજ્ઞા કરે છે, કે શાસ્ત્ર રાજાની જેમ આજ્ઞા કરે છે. તેથી જો તેનો (શાસ્ત્રનો) વિરોધ પ્રાપ્ત થતો હોય તો અપરાધ પણ બોધિત થાય છે.

રાજાજામાટે પણ વિચારવાનું હોય છે જ. રાજા પણ અયોગ્ય આજ્ઞા કરે તો તેને પણ બાધપ્રસક્તિ થાય છે, એમ શાસ્ત્રોનો ઉદ્દેશ છે. અર્થાત્ જ વિવેક પુરઃસરજ રાજાના પણ હોવી જ જોઈએ. અન્યથા જલદખાનું દળદળ્યનું રાજા દળદળ્યોદ્ધે-વાચ્યદળદળ્યનું ઇત્યાદિ પાક્યો વ્યર્થ થાય. શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજ શાસ્ત્રને રાજા-જાવતું કહે છે, તેનું તાત્પર્ય તેના પાલનમાં આવશ્યકત્વનો બોધ કરાવવામાં જ છે, નહિ કે તદ્વિપચક વિચારની અકર્તવ્યતામાં. જેમ રાજાનું પાલન ન થાય તો દંડ થવાનો ભય રહે, તેમજ શાસ્ત્રાનું જે પાલન ન થાય તો પ્રત્યવાથનો ભય રાખવો. આ રીતે વિચારી જોતાં શાસ્ત્રશબ્દ વિવેકપુરઃસર ધર્માધર્મનું શિક્ષણ આપવાના અર્થમાં છે. પુરાણો પણ તાદશ્ય વચ્ચે કરે છે, તેથી તે પણ શાસ્ત્ર-શબ્દવાચ્ય હોઈ શકે.

પુરાણોનું પ્રામાણ્ય.

શ્રીમદ્દ્વાપ્રભુજી પ્રક્રમપ્રકરણને પણ પુરાણમૂલક કહે છે. તત્ત્વાર્થદીપનિબંધના સર્વનિર્ણય પ્રકરણમાં આજ્ઞા કરે છે કે—“પુરાણમૂલક ચાપિ દ્વાશ્રમાચારતોદિતમ્ । અને “પુરાણં વેદવર્ણ્યસિદ્ધં સર્વોપયોગિ તત્ । સર્વોપકરણાનીવ ધર્મસ્ય નરોદ્ધયોઃ ॥ તદજ્ઞાને સર્વમૈર્વ્યં તેન તદ્દૃશ્ય સ્મૃતમ્ । ભાવયુક્તસ્ય ધર્મસ્ય પ્રમિતૌ તત્પ્રયુગ્યતે ॥ આ રીતે પુરાણોનું પ્રામાણ્ય સિદ્ધ થતું હોવાથી લોકજન્યવહાર પણ ધર્મને ઉપકારક કેમ થાય, એ જાણવા માટે પુરાણ જ સાધનરૂપ છે, પ્રમાણરૂપ છે તેથી કહેવામાં આવ્યું છે કે—શ્રુતિસ્મૃતી ઝમે નેત્ર પુરાણ હૃદય સ્મૃતમ્ પ્રશુના નેત્રો મૃતિ અને મૃતિ છે. પુરાણ હૃદય છે. જેમ વ્યાસજીએ વેદનો વ્યાસ કર્યો તેમ કટપલેહે પુરાણોનોયે વિભાગ કર્યો છે. તેમાં કેટલાક સાત્ત્વિક, કેટલાક રાજસ અને તામસ છે. વિશેષ વિસ્તાર સર્વનિર્ણયપ્રકરણના આવરણસંગમાં આપ્યો છે, તેથી અહિંયાં તેનો વિચાર કર્યો નથી. પુરાણોમાં નાના પ્રકારની સંહિતા લાદે, વિવિધ પ્રકારના ધર્મો કહેલા છે. છતાં તે તે સ્વરૂપે સાક્ષાત્ શ્રીકૃષ્ણજી વર્ણવાય છે.

૧. શાસ્ત્રીતિ, રાજવદાક્ષપતિ । एतेन तद्विरोधेऽपराधोऽपि बोधितः । वाच्यप्रकाश. ૨. અદ્વપ્રકરણ પણ પુરાણમૂલક છે, અને આશ્રમાચાર વડે કહેલું છે ૩. જેમ વેદ પૂર્વસિદ્ધ છે, નિત્ય છે, પૂર્વકસ્થાપિત વેદનું દર્શન કરીને તે તે ઋષિઓએ વેદ કહ્યો તેથી ઋષિ મન્ત્રદાતા છે. તેમજ પુરાણ પણ પૂર્વસિદ્ધ જ છે. પુરાણકારે તેનું દર્શન કરીને પુનરુદ્ધાર જ કર્યો છે. જુઓ જુદાદારપચકની કલ્પિત નિશ્ચિતમેતત્ત્વોરો ઇત્યાદિ શ્રુતિ તે પુરાણ સર્વોપયોગિ છે. ઐત અને સ્માર્તનું ઉપકરણ છે. પુરાણનું જ્ઞાન ન દોય તો મૂઠતા આવે. તેથી પુરાણ પ્રશ્નનું હૃદય છે. ભાવયુક્ત ધર્મના જ્ઞાનમાં તેનો ઉપયોગ છે.

૪. આ લેખમાયામાં ક્રમશઃ શ્રીસુગોધિનીજીના ત્રયોવયા વિષયોનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવશે. “શ્રીસુગોધિનીત્રયમાસા”માં સંપૂર્ણ સુગોધિની પ્રકટ થાય છે. નામ નોંધાવો.

યોજના.

પ્રજુના કૃપાપાત્ર દાનવીર વૈષ્ણવો તરફથી મળેલી મદદ માટે નિયમો.
શ્રીવલ્લભચરણાનુરાગી, ભગવદ્ભક્તપરાયણ

આપે “શ્રીમુખોધિની ગ્રન્થમાલા” ની યોજના વાંચીને ઉદારતાપૂર્વક મોકલાવેલી મદદ અમે નીચે જણાવેલી શરતો મુજબ સહર્ષ આભાર સાથે સ્વીકારીશું.

(૧) શ્રીમુખોધિનીગ્રન્થમાલાકાર્યાલયમાં સંપૂર્ણ (યાવત્પ્રાપ્ય) શ્રીમુખોધિનીજીનું ગુજરાતી ભાષાન્તર પ્રકટ કરવામાં આવશે. યોગ્ય મદદ મળેથી હિન્દીમાં પણ પ્રકટ કરી શકાશે.

(૨) જે કોઈ ઉદાર વૈષ્ણવ શ્રીમુખોધિનીજી માટે મદદ આપીને સામ્પ્રદાયિક અન્ય (સંસ્કૃત, ગુજરાતી કે હિન્દી) ગ્રન્થોનું મુદ્રણ કરાવવા ઇચ્છા ધરાવશે, તો તેમની ઇચ્છા મુજબ આ કાર્યાલયમાંથી પ્રત્યક્ષમાં કે પત્રદારા નક્કી થયેલી શરત મુજબ તે કાર્ય પણ પૂર્ણ કરવા આ કાર્યાલય યોજના કરશે. તેના બદલામાં શાસ્ત્રીજીને કે આ કાર્યાલયના કોઈ પણ કાર્યકરને પારિતોષિક કે મહેનતાણું આપવાનું નથી. છપાવતા પુસ્તકની નક્કી થયેલી પ્રતો આપવી પડશે.

(૩) શ્રીમુખોધિનીજીનું ભાષાન્તર અમારા તરફથી પ્રકટ થયેલી યોજનામાં જે નમુનો આપ્યો છે, તે મુજબ છપાશે. તેમાં કોઈ પણ વ્યક્તિની ભલામણથી ફેરફાર થશે નહિ પરંતુ જે કોઈ વિદ્વાન, પ્રામાણિક ભૂલ ખતાવશે, તો તેનો સુધારો કરીને સૂચના કરનાર વ્યક્તિનો આભાર માનીશું.

(૪) આ કાર્યાલયમાં કાર્ય કરનાર વ્યક્તિઓને કોઈ પણ જાતનું પારિતોષિક વેતન આપવામાં આવતું નથી. આવશ્યકતાનુસાર એક પગારદાર મહેતાજીને “ ” શકાશે. પરંતુ, તે નક્કી થયેલા કાર્યકરો પૈકી ન હોવો જોઈએ.

(૫) કાર્યાલયના નિયમ મુજબ નક્કી કરેલી પ્રતોજ પૂન્ય શ્રીગોસ્વામી જાલકેને, યોગ્ય ભવદાનોને તથા કાર્યકરોને દરેક પુસ્તક ભેટ તરીકે મોકલી આપવામાં આવશે. નક્કી કરેલી પ્રતો ઉપરાંત જે કાર્યકરો એકમતથી ઠરાવ કરશે તો વિકેય પુસ્તકોમાંથી પણ ભેટ આપી શકાશે.

(૬) આ કાર્યાલયને આર્થિક મદદ કરનાર પ્રત્યેક વ્યક્તિને કાર્યાલયના લગભગ મધ્ય પુસ્તકો તેમજ આપેલી મદદ લક્ષમાં રાખીને ભેટ આપવામાં આવશે.

(૭) મદદ કરનાર વ્યક્તિની ઇચ્છા હશે, તો તેમજ કરેલી મદદના જેટલાં પુસ્તકો થતાં હશે તેટલાં પુસ્તકો તેમને પહોંચાડવામાં આવશે. પુસ્તકોનું ન્યોછાવર ૧૫ ટકા વળતર દાખીને ગણવામાં આવશે. (તેમને ઘેર પુસ્તકો પહોંચાડવાનું ખર્ચાં ભરે શિર રહેશે.)

(૮) આર્થિક મદદ કરનાર વ્યક્તિનો, જે પુસ્તક માટે મદદ કરી હશે, તે પુસ્તકના ઉપોદ્ઘાતમાં સાક્ષાર સ્વીકારવામાં આવશે.

(૯) જો મદદ કરનાર વ્યક્તિને, પોતાનું કે જેના સ્મારક માટે મદદ કરી છે, તેનું ચિત્ર મૂકવાની ઇચ્છા હશે, તો તેમના ખર્ચ મૂકી શકાશે. તેમજ જો સમ્પૂર્ણ ભાગ માટે મદદ કરશે તો સુખપૃષ્ઠ ઉપર પણ તેમનું નામ છાપી ગકાશે.

(૧૦) દરેક મદદ કરનાર વ્યક્તિને દર વર્ષે હિસાબ છપાવીને મોકલી અપાશે.

(૧૧) મળેલી મદદના નાણાં ઉપર દેખરેખ કરવા માટે વૈષ્ણવોની કમીટી નીમી છે.

(૧૨) નાણાં, નડિયાદ અને વતમનગરમાં કમીટીના વિશ્વાસપાત્ર વૈષ્ણવોની પેઢીમાં કે જેઠામાં રાખવામાં આવે છે.

(૧૩) પ્રત્યેક વૈષ્ણવ આ કાર્યમાં ખનતી મદદ કરી શકે, તે માટે જોછામાં જોછી કેટલી મદદ સ્વીકારવી તે નક્કી કર્યું નથી. પ્રભુની નામમેવાનો લાભ પ્રત્યેક વૈષ્ણવ લઈ શકે છે.

(૧૪) જો નાણાં પાછા લેવાની શરતે કોઈ સાધારણ સ્થિતિના વૈષ્ણવને મદદ કરવાની ઇચ્છા થાય તો પત્રવ્યવહારથી કે પ્રત્યક્ષમાં ખુલાસો કરી શકાશે.

(૧૫) મદદ કરનાર પ્રત્યેક વ્યક્તિને તેની સાથે નક્કી થયેલી ગરતોની કોપી માથે પાકી પહોંચ આપવામાં આવશે.

નડિયાદ, મોટું મંદિર.

વતમનગર.

વૈષ્ણવોનો દાસાનુકામ,
હરિશંકર શાસ્ત્રી,
વ્યવસ્થાપક.

॥ શ્રીચલ્લમો જયતિ ॥

વિદ્વત્કેસરી પૂજ્યપાદ ગાસ્વામી મી ૬ અનિરુદ્ધલાલજી મહારાજશ્રીનું

આજ્ઞાપત્ર.

॥ શ્રીમદનમોદનો જયતિ ॥

॥ શ્રીવાલકૃષ્ણો જયતિ ॥

પુષ્ટિમાર્ગીય વિદ્વન્મંડલીમાં ઉચ્ચતા પ્રાપ્ત કરનાર; વિદ્યા માટે અનન્યજન સાધારણ સ્વાર્થ ત્યાગ કરનાર, અત્યંત ઉત્સાહી અને દૃઢનિશ્ચયી તરીકે પ્રસિદ્ધિ પામેલા, શ્રીમદ્વલ્લભચરણકમલના અનન્ય સેવક, ભગવત્કામનિષ્ઠાત શાસ્ત્રી હરિશંકર જોષીકારજી (શ્રીમાંસાશાસ્ત્રી, વેદાન્તવિશારદ M. R. A. S.) એ શ્રીસુબોધિનીજીનું અત્યંત શુદ્ધ અને સરલ ભાષાન્તર કર્યું છે. અમે ભાષાન્તર વાંચ્યું છે. આ ભાષાન્તર ઘણું જ શુદ્ધ અને સર્વજનોપયોગિ છે. ભાષા અત્યંત સરલ છે, જેથી સ્ત્રીઓ અને બાલકો પણ સમજી શકે. વિવેચન અને કુટુંબોટદ્વારા ઉચ્ચ કક્ષાના પંડિતો પણ આનન્દ મેળવી શકે પડિત અને અદ્યપણ એ ઉભયને જો સમાન રીતે

કોઈ ભાષાન્તર ઉપયોગી હોય તે તે માત્ર આ એક જ છે. આ ભાષાન્તરજ શાસ્ત્રીજીના પાંડિત્યની કસોટી છે. શ્રીમુખોદિની અથમાલામાં સંપૂર્ણ મુખોદિનીજીનું ભાષાન્તર (દશમસ્કંધ) પ્રકટ કરવાની યોજના કરી છે.

આ કાર્ય શાસ્ત્રીજીના ઉત્સાહમાત્રથી શરૂ થાય છે. શાસ્ત્રીજીનું દ્રવ્ય પુસ્તક સંગ્રહમાંજ ઘસઠાઈ જતું હોવાથી, તેઓ આ મંદાકાર્યને પહોંચી શકે તેવી ધનસંપત્તિવાળા નથી માટે અમારી સર્વ વૈષ્ણવોને ખાસ સૂચના છે, કે પ્રત્યેક વૈષ્ણવે આહુક થઇને તેમજ ધનિકોએ છપાવવામાં ધનની મદદ કરીને પ્રભુની આ નામસેવામાં પણ દ્રવ્યનો વિનિયોગ કરવો. નામસેવાની આવી સુંદર તક વારંવાર મલતી નથી. એજ માર્ગશીર્ષ સુદી ૭ ને શુક્રવાર; સં. ૧૯૮૭.

જગત્ તે મિથ્યા હોય ?

(લેખક:—શાહ હાંમતલાલ લોગીલાલ મુ. સાવલી,)

સુંદર શ્રીયમુનાતટ—કૃષ્ણપુર ગામની પૂર્વ દિશાએ અર્ધો માઇલ દૂર શ્રીયમુનાજીનું રયામ-સંલિધ, સુંદર નાદ કરતું, વિરહની ભિંમિએ ઉત્પન્ન કરતું, મેંબીર શાન્તિ બતાવતું, મંદમંદ વહન કરી રહેલું છે. તે વહન અતિમાં ઉઠતા તરંગરૂપી પોતાના શ્રીહરતત્તમજ ગંથા કરી, નિજભક્તોને પ્રશ્નપ્રેરણ કરાવી આપવાનું અભય જાણે ન આપતાં હોય ? આવાં અનેક આનંદમય વિચારો ભક્તના હૃદયમા દર્શનમાત્રથી ઉત્પન્ન થતા હતા. તેમ તીર પ્રાન્તમાં ખીજાવેથી મંદમંદ અળકતી રતનમય કોમળ વાણકા શ્રીમદ્દારાણીજીના રયામસ્વરૂપમા અલૌકિકતાની શ્રદ્ધિ કરી ભક્તના હૃદય હરણ કરી તેમાં લોટવાની ભક્તના હૃદયમાં ભાવના ઉદ્ભવ પમાડતી હતી. તેમા વળી જન્મે બાળુના સામસામા તટો ઉપર સુંદર ધટાદાર કદમ્બના વૃક્ષો, ખોરસલી, આમ્રવૃક્ષ, આસોપાલવ તેમ ઇતર અનેક પ્રકારના નાના નાણુક સુંદર નવપદ્મવિત વૃક્ષો પોતાની લતાઓથી ઝુમી ટૂલાં હતાં. તેમ ગુલાબ, મોઝરો, રાયચંપો, જટમોઝરા, જીર્ણકેવડો તથા શ્રીયમુનાજીના જળમા ખીલી રહેલાં અનેક પ્રકારના કુમુદ વગેરે વનકુલો મંદમંદ દલન—અલનયુક્ત પવનની લહેરો સાથે પોતાનો પરિમલ પ્રસરાવીને આનંદ વધારતા હતા. સામાન્યે ગૌમાતાઓ, વાછરડાં કુણાં કુણા લીલાં નાણુક કુંપરો આનંદથી ચરતા માણુમ પડતાં હતા. નજીક હરણોનાં ખચ્ચાની કુદાકુદ તથા આરસ, મયૂર, શુક્ર, મેના, ક્રમલ વગેરે પક્ષીઓ પોતાનાં મુંદર રરોડાના આલાપ કરી વ્યાં. વ્યાં. કસોલ કરી રહેલા નજરે પડતાં હતા. આવી શ્રીયમુનાજીના તટની લીંપી હરીમાળા રસસામગ્રી-યુક્ત મજબૂમિ જોતા પ્રભુની લીલાનો સાક્ષાત્કાર કરેના હૃદયમાં સ્વાભાવિક જ થતો હતો. સદર શ્રીયમુનાતટ ઉપર શ્રીમદ્દાપ્રભુજીની નિધિસ્વરૂપ બેઠક હતી. તેમાં વૈષ્ણવજન્દ ઉત્થાપન સમયનાં દર્શન કરી ઉચ્ચકાળ હોવાથી જ્યાં જ્યાં વિચરતા હતા. ઉજાટન્દ પૈકી બે મુવકો યાટના એક છેડે શાન્તિથી કંઈ ગહન વિચારમા બેઠેલા જણીતા હતા. તે બંને મુવકોનાં નામો કૃષ્ણદાસ અને હરિપ્રસાદ હતાં. કૃષ્ણદાસ આ પ્રભુલીલારૂપ સુંદર વાટિકા જોવામા તદ્દપ બનેલો હતો. એના હૃદયરૂપ સમુદમા કંઈ અવનવા આનંદતરંગો બીડી રહેલા હતા. અહો પ્રભુ ! તારી આ લીલા જોતાં આ હૃદય પુલકિત બની જાય છે. પ્રભુ શ્રીબાલકૃષ્ણે કદમ્બ ઉપર બેસી સ્નાન કરતાં મજબકતોને નંબ સ્નાન નહિ કરવા આરાં આપવી; મજબકતો સાથે શ્રીયમુનાજીના પરિમલયુક્ત

જલમાં જલકીડા કરવી, "કમલન માર મચાઈ." આ અણસખાના કીર્તનમાં રહેલી ભાવના અનુભવતા રસે પ્રભુ કૃષ્ણના રાસદર્શનની ઉત્કંઠા, ભક્તાધીન યજ્ઞ-મજબકોતે હરે તે કાર્ય કરીને ભક્તની ઇચ્છા પૂરી કરવી, યમુનાતટ ઉપર ગોચારણકીડા તે વખતનું લલિતપ્રિભંગી સ્વરૂપ, દર્શનના વચ્ચે આવતાં હૃદયની વિદ્વલતા, પશુપક્ષીઓની ખોલીના સામા ટટુકા પાડવા, કાનમાં સંભળાતા અનુભવ સુરો, આવા અનેક પ્રકારના પ્રભુસંબંધી બાલકીયાના વિવિધ વિચારમાં કૃષ્ણદાસ પોતાના હૃદયમાં કંઈ અનેશ આનંદ અનુભવી રહેવો હતો, અને તે લીલા-રસ આનંદમાં ધીબર આ સૃષ્ટિનું બાન જૂલો તેનું હૃદય તન્મય લીન હતું, અને નયનમાં આનંદઅશ્રુ વહેતાં હતાં. ખરે, "સર્વના અંતરમાં રહેલો આ શુભ આનંદ તેજ સંબંધી પર છે" અને તે રસાનંદમાં કૃષ્ણદાસ તદ્વત્તા અનુભવી રહેલો હતો, સારે હરિપ્રસાદ આ પ્રભુની સૃષ્ટિલીલાને માયાબળર સમજીને તે સંબંધી પોતાના મગજમાં વિચાર અનુભવતો હતો.

હરિપ્રસાદ—કૃષ્ણદાસ ! શા વિચારમાં ગરકાવ થયા છો ? અરે ભાઈ, આપની આંખોમાં આજે અશ્રુ ક્યાંથી ? કંઈ ગૃહસંસારનો કલેશ સાંભળી આવ્યો કે શું ?

કૃષ્ણદાસ—ક્ષણમાં સાવચેત થયો, પોતાના હૃદયનો રસાભાસ યજ્ઞ જતો જોઈ પગમાં ઘૂરત જવાળ દીધો—“નારે, મારા મિત્ર ! એનું કંઈ નથી. આ તો સ્વાભાવિક પ્રત્યક્ષીલા છે જેને રહ્યો હતો. આ રમણીય રથગ જેતાં તમને કંઈ જાણું રહસ્ય સમજાય છે ?”

હરિપ્રસાદ—હા, આ માયાના બળરૂપી બગીચો જેતાં હું પણ ક્યારેના વિચાર કરતો હતો કે અહા ! માયાએ આ કેવી રચના કરી છે ! આ દેખાતું જગત્ જ્યારે ત્યારે નાશવંતજ છે; છતાં કેવો ભાવ ધરે છે !

કૃષ્ણદાસ—અરે ભાઈ ! તમે આ શું જોલો છો ? આ તમે જો જોલો છો તે માયાવાદનોજ પ્રનાય છે. બાકી તમારા પિતાથી તો ધણા ભગવદીય છે. તેઓના યજ્ઞ તમારામાં કેમ ન આવ્યા ? તે વિચારના જેવું છે. ખરે, નાની વયમાં પોતાના સ્વમાર્ગીય ધર્મનું જ્ઞાન બાલકોને આપવાની માઆપની નિઃકાળજીથી છેવટે આપું પરિશ્રમ આવે છે. મેં તમને પહેલાં ધણી વિષય સ્વમાર્ગીય સંબંધી સમજાવ્યા હતા, પણ તમે હજી કંઈ રહસ્ય સમજતા જ નથી. હું આજે તમારા માટે ઘણો જ દીલગીર થયો છું.

હરિપ્રસાદ—તમે મને સેવા, પ્રેમભક્તિ સંબંધી ધણું રહસ્ય સમજાવ્યું છે. પણ આ સંબંધી મને કંઈ સમજાવ્યું નથી. હા, પ્રભુ એ આપણા સ્વામી ખરો, પણ આ જગત માયા-કૃત છે, એમ હું માનું છું, તે સંબંધી મને સમજાવી મારી ચોક્કા નિર્મૂળ કરશો.

કૃષ્ણદાસ—ભાઈ, તમને આ પ્રત્યક્ષ લીલાનો કંઈ ખ્યાલેષ આવતો નથી ? આ જગતરૂપી બગીચાને તમે માયાકૃત કહો છો તેમાં તમે જુલો છો. જગતની ઠાંધ પણ વસ્તુ-માયાકૃત નથી અને તે કાર્ય કરવા માયા સ્વતંત્ર નથી. માયા શું કરી શકે ? જગતને બનાવનાર જુદો છે. અને આ સર્વ દેખાય છે તે એ પ્રભુની લીલા છે.

હરિપ્રસાદ—જગત્ માયામય હોઈ મિથ્યા છે. કારણ આપણે આપણી આંખોએ વસ્તુ દેખાય છતાં તેની નાશ થતો જોઈએ છીએ. તેનું કેમ ? જેમ મદારી અનેક રંભેરંગી વસ્તુ બતાવે છે, ને આંખો વાલી તે ઉપર ફેરી દેખાડે છે. તે જેમ દેખ્યા છતાં અંતે નાશ પામે છે, અને નજરે જોયલું જોડું પડે છે, તેમ આ દેખાતું સર્વ નાશવંત હોઈ માયામય છે.

કૃષ્ણદાસ—તમે ઠીક પ્રશ્ન કર્યો, પણ સમજનાં ફેર છે. જે વસ્તુઓ આપણા જોવામાં આવે છે તે વસ્તુ (આંખો) જોતી નથી. આપણી દષ્ટિમાં જ રૂપ દેખે છે. જે વસ્તુ જોતી હોય

તો પછી ખરી માનવા આપણું મન શાથી દોડે છે ? તે વિચારો. જે વસ્તુ મદારી ખતાવે છે, તે ખરી છે. વસ્તુ માયાવી નથી, કારણ આંખા જેવી વસ્તુ જગતમાં છેજ. અને તે આંખાને પ્રથમ જેએતો હોવાથી તેને આંખા તરીકે ઓળખી તે ખરો કહો છો કે ખીણું ? વસ્તુ તો ખરી છે પણ તે સમજવામાં આપણી ભૂલ થાય છે. મદારી પોતાની હાથચાલાકી કરી વસ્તુ હોવા છતાં નહીં હોવાનો અને વસ્તુ નહિ હોવા છતાં પોતાની પાસે હોવાના ખરાપણાનો ભાસ કરાવે છે, તે ભાસજ માયારૂપ છે. વસ્તુતઃ વસ્તુ મિથ્યા હોતી નથી, પણ તે ખરી છે. અને ચાલાકી તે મદારીની શક્તિરૂપ છે. તે મદારીને આધીન છે. - તેવીજ રીતે પ્રભુ પોતાની ઇચ્છા થતાં પોતાની સ્વશક્તિથી આ જગતને રચે છે ને તે સ્વશક્તિરૂપી માયા પ્રભુને આધીન હોઇ પોતે કંઈ કરવા સ્વતંત્ર નથી. એટલે આપ માયાએ રચેલું કહો છો તે ખોટું છે પણ આ સર્વજગતનો કર્તા પ્રભુ છે ને તે સત્ય છે.

હુરિમસાદ—જ્યારે નજરે લેએલું ખોટું પડે છે, તો આને ખરૂં શી રીતે કહી શકાય ? એ મારો ભ્રમ દૂર થતોજ નથી. જેની રીતે છીપમા ચાંદી, દોરીમા સર્પની ભ્રાન્તિ થાય છે. પણ વસ્તુને ખરા રૂપમા જોતા ભ્રાન્તિથી ખોટા યતો ભાસે જાનથી નાશ પામે છે, ને ભ્રાન્તિ દૂર થતાં દેખેથી વસ્તુનો નાશ થઈ ફક્ત જ્ઞાન અવશેષ રહે છે, તેવીજ રીતે સર્વ વસ્તુ નાશવંત છે. ફક્ત જ્ઞાન એજ ખરૂં છે. જેમ રજીલું, છીપ, સિંચાળ ખીણું મિથ્યા છે. એવીજ રીતે બ્રહ્મા અવિદ્યાના ભ્રમને લીધે આ જગત દેખાય છે, ખરી રીતે તે સર્વ મિથ્યા છે.

કૃષ્ણદાસ—તમે છીપ, ચાંદી અને દોરીમા સર્પની ભ્રાન્તિ વિશે કહો છો તે અહીં ઘટે તેમ નથી. કારણ છીપમા ચાંદી અને દોરીમા સર્પની ભ્રાન્તિ થાય છે તે ભાસ થતી વસ્તુ પ્રથમ, તમે જોયેલી હોવી જોઇએ, નહિ તો જે વસ્તુ જોઇ નથી તેની ભ્રાન્તિ યદિજ ન જોઇએ તમે જોશો છો સીધું ને રસ્તો વાંકો તેવી તમારી પ્રતિતિ છે. કારણ તમે કહ્યું કે જ્ઞાન થતાં ભ્રમનો નાશ થાય છે, પણ જે વસ્તુજ ખોટી હોય તો પછી ખોટી વસ્તુનું જ્ઞાન હોય નહિ. પછી જ્ઞાન રહ્યું ક્યાં ? વસ્તુ ખોટી હોવા છતાં ખરાપણાનું જે જ્ઞાન થાય છે, એજ સંસાર, માયા, અવિદ્યા. જેમ મૃગજળ ખોટું હોવા છતાં પાણી શોધનારને દૂરથી ખરૂં માલમ પડે છે. વસ્તુતઃ જે જળ હોવાનો ભ્રમ થાય છે તેનું જળ પ્રથમ તેજે પૂર્વે દેખેલું હોવાથીજ તે દેખાતા મૃગજળને ખરૂં માની તે તરફ જાય છે, અને પાસે જઈ જોતાં પોતાના પ્રાણ આપવા જેવું થાય છે. એટલે મૃગજળ ખોટું હોવા છતાં જે ખરા જળનો ભાસ થાય છે તે પોતાની નજરનોજ પૂર સંસ્કારનો દોષ છે, તેથી કરી તેને પૂર્વે જોએલા ખરા જળની સત્યતામાં ખાધ આવતો નથી. આનો થવો આભાસ તે સ્વપ્ન અવસ્થામા પોતાનું માર્ગ નહિ કપાયા છતાં કપાઇ ગયાનો ભાસ થાય છે ને જગત અવસ્થામા તે ભ્રાન્તિ દૂર થાય છે, આને માયા કહી શકાય. આનું નામ વ્યાગોહિકા અવિદ્યા છે. જે ખોટું હોવા છતાં ખરાપણાનો ભાસ થાય તેજ માયાજન્ય સૃષ્ટિ છે. જગત અવસ્થામા જન્મ થાય છે, તે પ્રભુની આજ્ઞાદિકાશક્તિ છે, ને સ્વપ્નમાં જે ભ્રાન્તિ થાય છે તે વ્યાગોહિકા શક્તિ અને ખોટી ભ્રાન્તિ દૂર થતાં જે ખરાપણાનું જ્ઞાન થાય તે વિદ્યાશક્તિ છે. આ પ્રમાણે પ્રભુની વિદ્યા, અવિદ્યા બે શક્તિ છે, અવિદ્યાના બે ભેદ છે. આજ્ઞાદિકા અને વ્યાગોહિકા. આ પ્રભુની શક્તિ છે અને આને બ્રહ્મની સર્વભવનશક્તિ કહેવાય છે તેનું નામ માયા છે. તે માયા બ્રહ્મઆધીન છે. એટલે તમે જગતને માયામય કહો છો પણ તે તેનું કાર્ય નથી. તે માયાજન્ય સૃષ્ટિ હિષર પ્રમાણે અલગ હોઇ તે પ્રભુઆધીન રહી પોતે કાર્ય કરે છે. બ્રહ્મા અવિદ્યાને લીધે તેમાં જગતનો ભાસ થાય એમ કહો છો તે ખોટું છે.

આચાર્યોએ બગીરથ પ્રયત્નો કર્યા છે, તેની અંદર સંપૂર્ણપણે ફેરે પામનાર જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્-વલ્લભાચાર્યજી છે, અને તેથીજ વિદ્વાનો એકે અવાળે પોકાર કરે છે કે શ્રીમદ્વલ્લભનામધેય-ચરિત્રો ભાવી ન મૂલોત્સવિ ! આપશ્રીનો પ્રાદુર્ભાવ સંવત ૧૫૪૫ ના ચૈત્ર વદ ૧૧ ને દિવસે ચંપા-ગ્ધ્યમાં થયો હતો. આપના પિતાશ્રીનું નામ શ્રીવલ્લભજી અને માતૃશ્રીનું નામ ઇલમ્બા જારુજી. ઉપનયન સરકાર પછી આપશ્રીએ યોગ્ય વખતમાં વેદ, ઉપનિષદ્, દર્શન, શાસ્ત્ર વગેરેનો અભ્યાસ કરી પંડિત વર્ગને આપનું ઐશ્વર્યપૂર્ણ જતાવી દીધું. વિદ્યાભ્યાસ કર્યો પછી આપશ્રી દુનિયાની ધાર્મિક સ્થિતિ જોવા નિકળ્યા. રામાનુજ, માધ્વ, નિમ્બાર્ક વગેરે મતોનું નિરીક્ષણ કરવાને દક્ષિણ તરફ પ્રયાણ કર્યું દક્ષિણ તરફ જતા માતૃમ પદ્મ કે વિદ્યાનગરના કૃષ્ણદેવ રાજાએ વિદ્યતપરિચદ્ જોવાવી છે અને સર્વવાદમાં શ્રેષ્ઠવાદ કયો તેની ચર્ચા ચાલે છે ત્યારે આપશ્રી ત્યાં પધાયા અને માયાવાદી પંડિતો સાથે શાસ્ત્રાર્થ કરી શુદ્ધાદિત બ્રહ્મવાદની શ્રેષ્ઠતા સામીત કરી

આપશ્રી એક વખત મળ્યા આપશ્રીને ગાળતા હતા ત્યારે શ્રીકૃષ્ણ ભગવાને પ્રગટ થઈ દેવી જીવેને બ્રહ્મસંબંધ આપી શરણે લેવાની આજ્ઞા કરી, આપશ્રી તેનું વર્ણન પણ સિદ્ધાંતરહસ્ય ગ્રંથમાં આપે છે.

ત્યારપછી આપશ્રીએ દેવી જીવેને શરણે લેવાનું કાર્ય હાથ ધરી લીધું (જે કાર્ય આપના વલ્લભે દ્વારા હજી ચાલુ છે.) આપશ્રીએ દક્ષિણમાં કન્યાકુમારીથી ઉત્તરમાં દિમાલય સુધી અને પૂર્વમાં જગન્નાથથી પશ્ચિમમાં દ્વારકા સુધી ગયું વખત પરિક્ષા કરી, અનેક વેદવિરુદ્ધ મતવાદીઓને હરાવી શુદ્ધાદિત બ્રહ્મવાદના વજ્રમય પાયા જગદુપકારાર્થે ઠેકાણે ઠેકાણે રચાવી દીધા. પરિક્ષા કરતા આપશ્રીને જણાયું કે દુનિયાની અંદર દૂષિત વાતાવરણ ફેલાય ગયું છે. દાર્મિક શોકોએ પોતાથી અને તેટલી જગ ફેલાવી દુનીયાને અર્ધઅર્ધ કરી મૂકી છે, વેદધર્મવિરુદ્ધ અનેક મતપંથો ફેલાયાથી મનુષ્યો જડજીવિના થઈ ગયા છે. ઉપરુક્ત વાતાવરણ આપને દુરાશ લાગ્યું અને તેથીજ વેદાધર્મદર્શી સર્વોત્કૃષ્ટ માર્ગ રચાવવાની જરૂર જણાઈ અને તેનું નામ પુષ્ટિમાર્ગ. ન્યાયના નિષ્પક્ષપાત મુજબ પહેરી જોનારને આ માર્ગની ઉત્તમતા જણાયા વગરે નહિ રહે. પુષ્ટિમાર્ગ શેના ઉપર રચાયેલો છે ? શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીએ વેદા શ્રીકૃષ્ણવાક્યાનિ એ શ્લોકથી તેનું સ્પષ્ટીકરણ કર્યું છે.

પુષ્ટિમાર્ગને અવૈદિક કહેનારાઓ ઉપરુક્ત એકજ શ્લોકથી સમજી શકશે કે પુષ્ટિમાર્ગ એ કોઈ મનસ્વી કલ્પેલો માર્ગ નથી પણ વેદ, ગીતાજી, ભલસૂત્ર અને સમાધિભાષાના પ્રબળ આધાર ઉપર રચાયેલો છે અને વેદધર્મનું સંપૂર્ણપણે રક્ષણ કરનાર પુષ્ટિમાર્ગજી છે. પાવન વર્ષેના ઉમરે આપશ્રીએ ભક્તિમાર્ગીય સંન્યાસ ગ્રહણ કર્યો અને કાશીપુરી પધાયા ત્યાં એક માસ સુધી ઉપવાસ અને આઠ દિવસ મૌનવ્રત ધારણ કરી ૧૫૮૭ ના આષાઢ સુદિ ૨ ને દિવસે આસુરભ્યામોહલીલા કરી આપશ્રીએ આ પ્રમાણે મુખ્ય ગ્રંથો બનાવ્યા છે પૂર્વમીમાંસાભાષ્ય, બ્રહ્મસૂત્રભાષ્ય, તત્ત્વટીપનિબંધ, શ્રીમદ્ભાગવત ઉપર સૂક્ષ્મ ટીકા અને સુમોહિની ટીકા અને પોડશ્ચમંથ વગેરે, પણ આપણા દુર્ભાગ્યની વાત છે કે ઉપરુક્ત સાહિત્યમાનું કેટલુંક સાહિત્ય પૂર્ણ સ્થિતિમાં તેમજ મુદ્રણ જરૂર નથી

આપશ્રીના સ્થિતિકાલ અલૌકિક, આકર્ષક, બોધમદ્, આશ્ચર્યજનક વગેરે અનેકવિધ ઘટનાઓથી ભરપૂર છે આપશ્રીના અદ્વિતીય જીવનની સમીક્ષાચના કરવા ખેતીએ તો તેનું સંપૂર્ણ વર્ણન કરવા ખેસતા અચક્ષતા સ્વીકારવી પડશે. માત્ર તેની ખાખીજ પ્રતીત થાય. આપનું પવિત્ર માનસ, દૈવીકાયો, ભક્તિમય, પ્રેમમય તથા ઉપદેશમય જીવન, ભગવદ્ભક્તોને ઝેરી વાતાવરણમાંથી

દૂર રાખવાને તથા કૃષ્ણચંદ્ર પરમાત્માના ચુલ્કાનની અભિવૃદ્ધિ કરવાને વૈશ્વાનરરૂપે પ્રાગટ્ય શ્રીમદ્ભાગવતના હાર્દ સ્ફોટન માટે શ્રીસુમેધિનીશ્ચુ દાન વગેરે મહાન્ શુભો તથા કામોત્તું દિગ્દર્શન આપની કૃપા વિના કિંચિત્ માત્ર થઇ શકે નહિ. આપશ્રીએ બતાવી આપ્યું કે પ્રુષ્ટિ-માર્ગ એ સંકુચિત દૃષ્ટિથી રચાયેલો નથી, તેનાં આદર્શો વિદ્યાજ છે. તેની જાવનાઓ બહુ હ્રસ્વ છે. તેના આશ્રય હેઠળ પ્રાણી માત્રને આવવાની છટ છે વેદાધ્યયનનો અધિકાર માત્ર ત્રિવર્ણનેજ છે. સારે સ્ત્રી અને શૂદ્ર માટે કાર્ધ ખરૂં મહાપ્રભુજીએ એવો રસ્તો શોધી કાઢ્યો કે જેથી વૈદિક ધર્મવૃં રખાવન ન થાય અને વૈદિક મનોદાઓ સંપૂર્ણપણે જળાપ. આ મહાન્ જગદ્ગુરુના મહાન્ ઉપકારોનો જદ્દો જ્યારે તેમના કથિત માર્ગે સમસ્ત જગત દોરાશે, તેમના આદર્શો જ્યારે સંપૂર્ણપણે સમજશે, અને જ્યારે શ્રીકૃષ્ણભક્તિનો ઢેકણે ઢેકણે પ્રચાર થશે ત્યારેજ વાળી શકશે.

વાલપાઠમાતા.

(લેખક—રા. ભદ્રશંકર જયશંકર શાસ્ત્રી.)

પાઠ ૧૩—વિદ્યા.

ઉપરના સર્વ પાઠોમા આપણે નિતાના કરવાના ખાસ કરી કેમ કરવા, તથા તેમા ભગવદ્-ભાવ શી રીતે પોષવો ! એજ જણાવી ગયા. ભોજનથી પરવારને શાળામા અભ્યાસ કરવા જઈએ, તેમ કરે તોજ વિદ્યા આવડે. વિદ્ય=જણવું તે કપરથી વિદ્યા શબ્દ થયો, એટલે જણી શકાય તેવું જ્ઞાન મેળવું એ વિદ્યા. આ કુનિયામા જણવાનું શુ શુ નથી હોતું ! તે મેળવે નહિ તે પશુસમાન છે. માટે માણસાદ મેળવવાને પણ જણવાની જરૂર છે. આખી છાંદોગી ભર્યા કરી, તોપણ જણવાનો-વિદ્યાનો પાઠ તો આવેજ નહિ, એટલે પોતાની શક્તિ પ્રમાણે જણવાની ક્ષમિજા માણસીએ તો અવરમ કરવી રહી. વિદ્યામા અનેક શુભો છે.

માતા સમી સરલ રક્ષણ એ કરે છે તે તાત દુષ્ટ દિનકારક બોલ દે છે.

કાન્તા સમાન રસપૂર્ણ વિનોદ આપે ને મિત્ર દુષ્ટ રદિ પાસ વિપત્તિ કાપે.

માતા સમાન ગ્હણ કરનારી પિતા સમાન હિત કરનારી, કાન્તા સમાન વિનોદ આપનારી અને મિત્ર સમાન વિપત્તિઓ-કષ્ટોને દૂર કરનારી વિદ્યાજ છે. નીતિશતકમાં બર્તદરિ રાખે કહે છે કે:—

વિદ્યા નામ નરસ્ય રૂપમાર્થિકં મન્થન્નમુત્તં ધનં

વિદ્યા ભોગરૂરી યશઃસુલ્લકરી વિદ્યા ગુરુણાં શુભઃ ।

વિદ્યા વન્નુજનો વિદેશગમને વિદ્યા પરા દેવતા

વિદ્યા રાજસુ પૂજિતા ન હુ ધનં વિદ્યાવિઢીનઃ પથુઃ ॥૬॥

વિદ્યા એ મનુષ્યવૃં અત્યંત રૂપ છે, સારી રીતે જાતું રાખેલું યશ ધન છે. વિદ્યા ભોગ આપનારી, પણ અને સુખ અર્પણ કરનારી છે. વિદ્યા શુભોની પણ શુભ છે, વિદ્યા વિદેશ જતી વખતે જાણુ સમાન છે; વિદ્યા એ ગોટી દેવતા છે; તેમ વિદ્યા ગર્ભઓમાં પૂજાય છે; ધને નહિ, માટે વિદ્યા વિનાનો મનુષ્ય પથુ છે.

આ વિદ્યાના લૌકિકે શુભો દર્શાવ્યા બીજા તેવા અલૌકિકે શુભો પણ તેમાજ રહેલા છે. પ્રમુત્ત જ્ઞાન આપનાર પણ વિદ્યાજ, એ મેળવવાથી પ્રમુક્તબંધી જ્ઞાન થાય. એટલે તેમના

તરફ આપણો પ્રેમ પ્રકટે. વેદ, જ્ઞાન, પુરાણો વિગેરે આપણે વિદ્યા મેળવીએ તોજ નજીક રાખીએ. તે બધી વિદ્યા સંસ્કૃત ભાષામાં છે. તેથી દરેક હિંદુએ અને તેમાં ખાસ ઉચ્ચ વર્ણોએ સંસ્કૃત ભાષાનું જ્ઞાન મેળવવું અતિ જરૂરનું છે. કેટલાક દાહના આપણા યુવકો સંસ્કૃત ભાષાથી ખૂબ દંટાળી નામ છે. સરકારે આપણને રાજકીય ભાષા સાથે સંસ્કૃત ભાષા મેળવવાની ખાસ સમગવડ કરી આપી હતાં આપણા ઉચ્ચ કોમના વિદ્યાર્થીઓ પશુ સંસ્કૃત ભાષા શીખવામાં ગમ-રાય એ કંઈ આપણા માટે ઓણું શરમાવા જેવું છે ? જે સંસ્કૃત ભાષા સર્વ દેશોની ભાષાના મૂલરૂપ છે, જેમાં ધણું ઉંડું રહસ્ય સમાયેલું છે, જે ભાષાને નજીકથી વિદેશી વિદ્વાનો પશુ ધસડાય છે તે ભાષા આપણે ન નજીકથી એ કેવું ? આપણા દેશની મોટા ભાગની ભાષાઓ તો સંસ્કૃત ભાષામાંથી ઉપજેલી છે એટલે સંસ્કૃત ભાષાનું જ્ઞાન મેળવવાથી સર્વ ભાષાઓ સરળ બની નામ છે. તો તેવી આપણી પોતાની મૂલ ભાષાને કેમ વિસારીએ !

વિદ્યાનો ખરો ઉપયોગ તો પ્રજુગાપ્તિમાં કરવાનો છે. જેણે વિદ્યા મેળવી હોય અને પ્રજુ તરફ આરથા ન હોય તો તે વિદ્યાજ ન ગણાય. આત્મા શું ? પરમાત્મા શું ? આપણું કર્તવ્ય શું ? ઇત્યાદિ જ્ઞાન વિદ્યાથી ન થાય તો તે અવિદ્યા-અજ્ઞાન છે. મોટા મોટા મોપડાઓ ઉધણાવી નાંખવા એનાથી કંઈ વિદ્યાની સમાપ્તિ થતી નથી, એ તો વૃથા ભાર ઉઠકવા જેવું છે. સાકરની ગ્રથને વડન કરનાર ગરેડો સાકરના સ્વાદને નથી નજીકથી તેમ બહુ બહેણો હતાં તેનું પરિણામ પ્રજુ પ્રેમ-ભગવદ્વાન ન થાય તો તે મિથ્યા છે. વિદ્યાનો ઉપયોગ માત્ર ધન મેળવવું એમ પશુ ન હોવું જોઈએ. જગતમાં ધણાએ વિદ્યાનો ધન વિનાના ધધ ગયા છે. માટે વિદ્યાનો ખરો ઉપયોગ ધન નહિ; પશુ જ્ઞાન મેળવવું. પ્રજુનું સ્વરૂપ સમજવું, પોતાના સ્વરૂપને નજીક કર્તવ્યની દિશા તરફ વળવું એ છે. આજકાલ અપાતી વિદ્યા એ તો વિદ્યાજ નથી એમ કહીએ તોપશુ યાત્રે. કારણ કે ધણું ખરું તેનું પરિણામ અવિદ્યામાંજ આવેલું જોવામાં આવે છે. ધન મેળવવા માટે અનેક પ્રયત્નો, એકમેકનું તુકશાન કરવા તરફ ઇતિ, છેતરપટી. લાચિ, ફરતો વગેરે શું વિદ્યાનું પરિણામ હોય !! મોટા મોટા વિદ્વાન ગણાતા અધિકારીઓ, પંડિતો, ગૃહસ્થો વગેરેમાં શું શું જોવામાં આવે છે ? ત્યાં પ્રયત્નો છે, લાચિ છે. એ વિદ્યા નથી પરંતુ ખરું જોતાં અવિદ્યાજ છે. વિદ્યાવાન એટલે - "ભાતમવા સર્વમૂલેષુ ચો જાનામિ ય યથિદત્ત ।" ખાણી માનને આતમવત્ સમજી દરેકનાં હિતમાં સર્વનાં સુખમા જે પ્રયત્ન કર્યા કરે. પ્રજુનો પ્રેમ મેળવે, નિરંતર સર્વ ભાવથી પ્રજુનું-પરમાત્માનું ભાન-સેવન કર્યા કરે તે જ પંડિત, તે વિદ્વાન અને તેનીજ વિદ્યા સાદૈય યથ એમ ગણાય.

શુદ્ધિમાને વિચાર કરીને કહ્યું કે, આ આખો ને આખો તથાઈ જાય છે એ તો સર્વનાશ થયો કહેવાય. માટે શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે કે “સર્વનાશો યતુલ્ભો ભર્ષ સ્વજાતિ પશ્વિતઃ” જ્યાં સર્વનાશ થતો હોય ત્યાં બચાવી શકાય તો અર્ધને બચાવી અર્ધને જતું કરવું જોઈએ. તો આ બધેએ તથાઈ જાય છે એ તો ઠીક થતું નથી, આ વાત સાક્ષીને એમાંના એક દોહીને પેલા તથાતાની ચોટલી પકડીને તેનું માથું તરવારથી કાપી નાખ્યું. એટલે અર્ધને જતું કર્યું અને અર્ધને પોતે લીધું. બોલો: આ શુદ્ધિબલ કેવું! આમ અર્થનો અનર્થ કરવામાં કેવું પરિણામ આવે! આનું નામ “ભવ્યા પથ્ય ગવ્યા નહિ” કહેવાય. માટે ભણીને બાળુવું—સમજવું. એટલા ભવ્યા-થીજ કંઈ વિદ્યાતાન કહેવાય નહિ. માટે શુદ્ધિનો ઉપયોગ કરતાયે શીખવું જોઈએ. નીકર અર્થનો અનર્થ યદ જાય; ઉધું દોહી બેસાડે. જેથી અવિદ્યાનો નાશ કરનારી, લૌકિક અને અલૌકિક (પ્રજ્ઞાસંબંધી કાપ) ને સુધારનારી, પ્રજ્ઞ તરફ પ્રેમ કરાવનારી શુભ વિદ્યા મેળવનારી નિરંતર પ્રપાત કરવો એ સર્વ વિદ્યાર્થીઓનું મુખ્ય ઈર્તવ્ય છે.

પાઠ—૧૪ બ્રહ્મચર્ય.

વિદ્યાર્થીઓને બાળુવામાં, શુદ્ધ ખીલવવામાં અને મગજ શક્તિને તીવ્ર બનાવવામાં વધારે ઉપયોગી બ્રહ્મચર્ય છે. શરીરરૂપી ગોદી ઈમારતનો મૂળ પાયો બ્રહ્મચર્ય છે. તે બરાબર ન હોય તો ઈમારત—શરીર ટકી શકે નહિ. બ્રહ્મચર્ય એટલે વીષનું સારી રીતે રક્ષણ કરવું, બદલીય થવું, તે. પ્રથમનાં ઋષિમુનિઓનાં સંતાનેશ જનોઠ પહેરીને બાર વર્ષ પર્વન્ત વનમાં મુનિના આશ્રમમાં અભ્યાસ કરવા માટે બ્રહ્મચર્ય અવસ્થામાં રહેતા, ગુરુની આજ્ઞા પ્રમાણે વર્તતા, તેમની સેવા કરવાં હતા. મોટા મોટા મહાશાસ્ત્રજ્ઞોનાં બાળકો અને શ્રીકૃષ્ણ જેવા પશુ વિદ્યાભ્યાસ કરવાને વનમાં ગુરુના આશ્રમમાં નિવાસ કરીને, બ્રહ્મચર્ય પાળીને, સામાન્ય વિદ્યાર્થી તરીકે રહ્યા હતા. તો ખીલજો રહે તેમાં તો આશ્ચર્ય શું? પણ હાલમાં તો એમાંનું કંઈજ નથી. સંસારી બાવનાઓમાં બાળુવાનું, તેવા ને તેવા વાતાવરણમાં—વાસનાઓમાં ઉછરવાનું હોવાથી બ્રહ્મચર્ય પાળવું એ તો હાલના સમયમાં ઘણુંજ દુષ્ટ યદ પડ્યું છે. બાળકોને તેનું તો લક્ષ્યજ હોતું નથી. દસ દસ વરમનાં નાનાં બાળકોમાં પણ કુસંસ્કાર પડી જાય એ ભારત વર્ષનું કેવું બયંકર જાવી!! બાળકોને બાલઅવસ્થાને લીધે તેનું જ્ઞાન નથી હોતું. પરંતુ કુસંસ્કારોને લીધે કુટેવો પડતા રોગના ભોગ થવાથી પાછળથી ખડખડ પડતાવો થાય છે. પણ પહેલી ટેવા છૂટતી નથી. લગભગ આખા હિન્દુસ્થાનમાં તેમાંએ વિરોધ કરીને ગુજરાતમાં તો તેની દૃઢ યદ ગઈ છે. લોકોના મન એવાં તો ચંચળ યદ ગયા છે કે જરાએ સંઘમ જળતી શકતા નથી, દુરાચાર વધતો જાય છે. એનું કારણ માત્ર બ્રહ્મચર્યનો અભાવ છે. બરમુલાવરયામાં પણ વૃદ્ધાવસ્થાનું પ્રદર્શન કરતાં સેંકડો પુરુષો આપણા ગુજરાતમાં જોવામાં આવે છે એ બ્રહ્મચર્યના અભાવથીજ. અર્યોકપણું, મનની નિર્જાતા, નામદંપણું, ઈર્ષ્યા, દ્વેષ, કુસંપ, એ સડો આપણને બ્રહ્મચર્યના અભાવથીજ લાગ્યો છે. બ્રહ્મચર્યવાન પરાક્રમી બને છે. તે પોતાના પરાક્રમ ઉપરજ નબી શકે છે. એટલે તેને રાગ, દ્વેષ, ઈર્ષ્યા, ભય-વજેર કાંઈ પણ હોતું નથી. જ્યારે આપણે બ્રહ્મચર્ય એ અમૂલ્ય રત્ન છે, પાછું નહિ મળી શકે તેવું અમૂલ્ય ધન છે, એમ સમજીયું. ત્યારેજ તેને સાચવી રાખીયું નીકર નહિજ. બલનો—પરાક્રમનો મુખ્ય આધાર બ્રહ્મચર્ય છે. એમ નિશ્ચય થતાં રત્નમાં વીષ જશે તેવો પણ તમને ખેદ થશે. બાલબ્રહ્મચારી હવેમાન મોટા સમુદ્રને કૂદી ગયા હતા. એ પ્રતાપ

હાલા સુવાનોને યકાવતા હતા? અને સુવાનની પેઠે શૂનતા હતા એ પ્રતાપ કેનો? અહ્યયનનો. અહ્યયનનું સેવન કરવાથી બુદ્ધિ વધે, બલ વધે, સૌમ્ય આવે, લીધવાન, પૈયવાન અને. પરંતુ તમે બાળકો એ અહ્યયનને ભૂલી ગયા છો. એમા તમારો પણ હોય છે, અને શિક્ષણનો પણ મોટો હોય છે. તમે પોતે તે માટે બહુજ બેદરકાર બન્યા છો. આ શું સ્થિતિ સુધારવા જેવી નથી? એનું પરિણામ કયા સુધી આવશે, એનો વિચાર કરત પણ કપારી છૂટી આવે છે. ભારતવર્ષનો ઉદ્ધાર કરવાને જો બહુએ છોડીને એક અહ્યયન ઉપરજ ઉતરી પડીએ તોજ બહુ છે. અહ્યયનના પ્રભાવથી શું શું ન થાય? જો અહ્યયન સેવ્યું તેજો તો આખા જગતને પણ વશ કરી લીધુ. તે સદાએ સ્વતંત્રજ છે. અને ક્રોધની પણ અપેક્ષા રહેતી નથી તેના તેજપુજમાં સર્વનો હાથ ચાંદ જાય છે. જ્યા સુધી બાળકો અહ્યયન પાળતા ચયા નથી ત્યા સુધી ભારત સ્વતંત્ર નહિ બને. ત્યા સુધી પરતંત્રતાની બેડીએ તૂટવાની નથી, ત્યા સુધી ભારત-સંતાનેને પારકાના આપેલા ટૂંકડાપરજ નીભવુ રહ્યું બાળકનો પણ મુખ્ય કારણ છે. બાળકને લીધે આપણને બહુ મોટી હાનિ થઈ છે. પરંતુ એ બાળકને કરતા પણ આપણી ભાવનાઓ, આપણા વિચારો ખરાબ રસ્તે દોરાર્ધ ગયા છે, એ વિશેષ હાનિકારક છે. ધણી ન્યાયોમા કન્યાના અભાવે નાનપણમાં લગ્ન થતા નથી, અને કેટલાક સુધારકો પણ મોટી જિંમરે પુત્ર અને પુત્રી-ઓના લગ્ન કરે છે. પરંતુ તેવું પરિણામ અહ્યયનમાં આવ્યું હોય એમ માની શકાતું નથી. હિન્દુસ્થાનમા ધણીએ કુંવારાઓ ૨૫-૩૦ વરસના હોય છે. તે કંઈ ૬૬ વા બ્રહ્મપંથ બેવામા નથી આવતા. અર્થાત્ જેવી રીતે અહ્યયનનું રક્ષણ થવું જોઈએ તેવી રીતે ચતું નથી, મનની દુર્બલતાને લીધે અનેક રીતે વીચનો હાથ ચાય છે. કુરેવો પડે છે. તેના કરતા તો હબ્બર દરજ્જે બાળકને સારા. આથી કંઈ બાળકને યોગ્ય છે એમ કહેવા નથી માગેનો; પરંતુ બાળકને રીવાજ નાશ કરતા પહેલા ભાવનાઓ અને વિચારો સુધારવાની તથા શી રીતે બાળકને અહ્યયન પાળવાનો શોખ ચાય એવી ભાવના ઉત્પન્ન કરવાની ખાસ જરૂર છે. એટલે આપોઆપ લાળલગ્ન બધે ચાલ જશે. ગાયકવાડ મહારાજાએ બાળકને પ્રતિનિધેક કાપડો ધડ્યો છે, તેથી કંઈ લોકને ફાલદો થયો થયો હોય એમ નથીજ કેમકે લોકોની ભાવનાજ તે તરફ નથી એટલે બધા પ્રયત્નો નિષ્ફળ નીવડવાના. માટે તેમની ભાવનાઓ બદલાય અને અહ્યયનને પોતાનો મુખ્ય શોખ માને સારજ કંઈ બની શકે.

વેદકાળમા જનેાઇ દેવી વખતે અહ્યયનદીક્ષા આપતા તે સમયે ચક્ર બાળકને પૂછે કે, “મહ્યવ્યમાગમ્” તું અહ્યયન પાળાય? ત્યારે બાળક બેસે ઉપાખ્યાય! મહ્યવ્યમાગમિ હું અહ્યયન પાળીશ. જુઓ વેદકાળની ભાવના કેવી છે? જનેાઇ વખતે હાલ પણ આજુ બોલાવાય છે ખરું, પણ ગાત્ર તે બોલવામાંજ હોય છે. કૃતિમા નથી હોતું. પૂર્વે શિષ્ય પોતેજ અહ્યયનનું મહત્ત્વ સમજતો. નાનપણથી ધરતું શિક્ષણજ તેવું મગતું એટલે તેને પોતાનેજ અહ્યયનનો શોખ થતો. હાલ તેમ નથી. હાલ નાનપણમા ન પરજાય તેની લગ્ન છે.

વિદ્યાર્થીઓએ અહ્યયન તરફ પોતાનો પ્રેમ ઉત્પન્ન કરવો. મનની ભાવનાઓને વ્યવ્ય વિધેમા નહિ દોરતા વિદ્યા તરફ, પ્રભુ તરફ દોરવી. વિધેયોનો પ્રેમ-અહ્યયનનો અભાવ એ ફાલિયુક શુભ છે. ચાટે અનંત સુખની કમળ કરનારાઓએ પોતાના વિચારો પ્રભુ તરફ પ્રેરીને ઈત્તમ વિદ્યા પ્રાપ્ત કરવાનો પ્રયત્ન કરવો. આરંભમા જેમા સુખ છે, તે પરિણામે દુખ આપનાર ચાય છે. અને આરંભમા જેમા દુખ દેખાય છે, એ પરિણામે બહુજ આનંદ આવે છે. માટે જેનો પરિણામ આનંદમય છે એનેજ સુવ મનુષ્યો ઉત્તમ માને છે. જેના મૂળમા જળ વિના

મુકાઈ મયાં છે એવું ઝાઝ પડી જાય તેમ વીર્યની રક્ષા કયાં વિનાનું શરીર નિસ્તેજ બની પડી જાય છે. ગુજરાતના આઘ ભક્તકવિ નરસિંહ મહેતા ગાય છે કે, “વાચ કાઈ મન નિર્મળ રાખે ધન્ય ધન્ય તેની જનનીરે” જે લોકો વાણીને નિયમમાં રાખે છે, સત્ય બોલે છે, અદ્વય અને મધુર ભાષણ કરે છે, તથા કાછ-લંગોટ રાખે છે. અર્થાત્ બ્રહ્મચર્ય પાળે છે—પરત્રીનું સેવન કદાપિ કરતા નથી અને મનને નિયમમાં રાખે છે. તે યોદ્ધાને ધન્ય છે તેમને જન્મ આપનાર માતાઓને પણ ધન્ય છે. બ્રહ્મચર્યના અભાવથી મનુષ્યનું અધઃપતન થાય છે. માટે અભ્યાસી વિદ્યાર્થીઓએ શરીરનો પૂર્ણ વિકાસ થતાં સુધી બ્રહ્મચર્યનું સેવન કરવામાં અભિમાન માનવું જોઈએ તોજ આત્માની હિન્નતિ થઈ શકે.

શરણસિદ્ધિ.

(લેખક:—વેલજીભાઈ.)

ગો. લલદાસ—ભાઈ મધુરાદાસ, આજે શી પ્રવૃત્તિમાં છો ?

મધુરાદાસ—આજે તો સંસારની પ્રવૃત્તિમાં છું, કેમ ભાઈ ? કાંઈ કામ છે ?

ગોકુલદાસ—નારે, અમરતો પુછતો હોઈય ? હું તો ત્યારે જોઈ છું ત્યારે તમારી ચિત્ત-વૃત્તિ ને દૃષ્ટિ સંસાર તરફ જ ખેંચાયા કરે છે એ શું શરણુચ્યનું કાર્ય ગણે છે ? વળી તમે તો ભગવદીય કહેવાઓ છો. શીકડોરજની સેવાએ કરતા જણાઓ છો. તમે કાંઈ માયાના વર્ષા છવ તો નથી, છતાંએ તમારું અતઃકરણ માયા તરફ વળે છે, તેના કારણને તમે પોતે ન સમજી શકો ! પોતાનું મુખ કોઈ પોતે ન જોઈ શકે, પણ સામોજ જોઈ શકે. આપણા માર્ગમાં રાત્રે ભગવદ્વાતાઓ થાય છે. ત્યાં શિક્ષાપત્ર વગેરે વાંચીએ વંચાય છે તે સાંભળવાનો હેતુ—માત્ર માર્ગમાં આપણા મનનો નિરોધ થાય તેજ છે, તે છતાં મનનો નિરોધ નથી થતો તેનું કારણ કયિષ્કૃત શ્રવણ મનન નથી થતું, એટલું કરતાં જતાં એ મનની વિદ્યુતતા ને પ્રભુના દર્શન વખતે પણ મન તથા એમની નેત્રની સ્થિરતા ન હોય ત્યાં પ્રભુમાં મન ક્યાંથીજ જોડાય ?

મધુરાદાસ—અમારે તો સેવાએ કરવી ને સંસારની ખટપટ પણ પૂરેપૂરી કરવી જોઈએ. અમે કાંઈ વિરક્ત થયા નથી. અમારે જાણુય કરતું જોઈએ. તમારી પેઠે આખો દિવસ પુત્રકોજ વાંચ્યા કરવા ને ઉપદેશ દેવો તેવું અમારે પંડિત યજ્ઞ જતું નથી. ઝાઝા પુસ્તકો ને માસિકો વાંચવાથી, પ્રભુની સેવાને જાણે નહિ તો સૂગાર વગેરે ત્યાં ક્યાંથીજ આવડે ? ને સામગ્રી કરવાની શી ખબર પડે ?

ગોકુલદાસ—હા ભાઈ, તે તો સાચું. હું તમેને પ્રશ્ન પુછ કે હિત્યાપન એટલે શું ? તેનો ભાવ કહેશો ? તેના જવાબમાં તમે હિત્યાપનના દર્શન એટલુંજ કહેશો. કારણ તમેને યંચનો અભ્યાસ નથી. જ્યાં યંચ ઉપર અરુચિ ત્યાં મેવાના લાગને ને માર્ગના સતિસદ્વાતને શું સમજી શકવાના દતા ? સેવા કરતાં ભાવનાના દર્શન તો નજ થાય. પણ સંસારી નરંગો આવે, સેવા તો ચિત્તનું પ્રવણ થવું એ કહેવાય ને પ્રવણ માટે ભાવને જાણુવા યંચની જરૂર છે. નહિ તો “મુખમે રામ, જગલમે છુરી” જેવું થાય, ભાઈ ખરી સેવા તો એજ કે પ્રથમ વિશ્વપ્રેમ જોઈએ. સર્વથી પ્રભુની હીલા દેખાય. જવા કાર્યમાં દરિદ્રજાજ મનાય. હું તો ખરી સેવા એનેજ માનું છું. પણ જ્યાં શ્રીમદ્વજ્રભાષ્યજીના પ્રધોમાજ અરુચિ, તે માર્ગના સિદ્ધાંતને ક્યાંથી જાણવાના ? કદી તમેને ભગવદ્વાતા યજ્ઞ હોય કે તમારે કદિ સંપ્રદાયિ ગ્રંથો વાંચવા નહિ તો ખેર, તમે ભલે યંચોને રચનમાંએ દામ ન લગાડના, પણ તમે તમારા

સંતાનોને પણ મધ્યા વાચવાની ના કહીને, તેમને તમારા જેવા જ્યાં જ્યાં માટે બનાવે છે ! વૈષ્ણવતાનો ડોળ જે રાખતા હોઈએ તો માત્ર નામનીજ વૈષ્ણવતા છે. અને તો આપણે એમ નહીંએ છીએ કે આજ સુધી પુષ્ટિમાર્ગના અંચરતો તદ્દન પેરી-પટારાઓમાજ ભથો રહેતા લગભગ દસ બાર વરસમા જ કાંઈ અંચપ્રચાર ચલે છે તેનો લાભ આપવાનું વૈષ્ણવોએજ પ્રાપ્ત કર્યો છે. આપણે અંચપ્રકાશક વૈષ્ણવમંડળનું સ્થાપન કરીએ તોપણ કૃતાર્થ થઈએ. પ્રથમ પ્રચાર શ્રીવૃંદાવલ પ્રભુ, ત્યાર પછી પંડિત મદુવાલાજી, ત્યાર પછી રા. રા. મગનલાલ સાચીજી ત્યાર પછી તેલાવાળા, રાવબહાદુર લક્ષ્મીભાઈ, પરમ વૈષ્ણવ હરિદાસ ઝવેરદાસ, તે અરસામા જોસ્વામી શ્રીવિક્રમેશ્વરાચાર્ય અમરેલીવાળા તથા દયાળલા સેઠ તથા વૈષ્ણવ ધીરજભાઈ સાંકળીયા, તથા પટવારીજી રણકેડાદાસભાઈ, જેમણે પણ ઘણો અમ ઉઠાવ્યો છે. તથા શાચીજી વસંતરામ-ભાઈ તથા રા. રા. જેઠાલાલભાઈએ પણ શ્રીમદાપ્રભુજીની કૃપાનું પાન સફળ સાંઝે કર્યું. ભાઈ દીનકેંકર જેમણે ખાલશિક્ષાના બાગ પ બહાર પાડ્યા તથા રસિકવિલાસ તથા શ્રીગોકુલનાચળના હારી વચનામૃતોનો અપૂર્વ લાભ વૈષ્ણવોને આપ્યો છે. તથા દાલ ચાલતું શુદ્ધાદૈત માસિક પણ કાંઈ અનેરી હાથ પાડે છે. જ્યાં વૈષ્ણવો તેને નબાવી સકતા નથી. તે બદ્ધ ખેંદની વાત છે. આખા માર્ગમાં માત્ર એકજ માસિક છે. તે બારતમાની સેવા કરી રહ્યું તેને રથાપી રાખવા મુદ્દરથ વૈષ્ણવોએ લક્ષ્ય એવી સેવા બળવવા વિનંતિ કરી વિરજી હું.

આપણો ઉદ્યમ.

(લેખક—સુધાર પ્રાગજી નાનજી, ધોરાજી, માળિયાવાડ.)

પ્રિય વાચકો, દરેક મનુષ્યને ભગવદ્ધર્મને અનુસરીને ઉદ્યમ કરવાનો હેતુ છે, કારણ જીવ ભગવાનનો અંશ છે ને ભગવાન અંશી છે. જેમ સેવકની ફરજ સ્વામીની સેવા બળવવાની છે તેમ અંશી અંશીની સેવા કરવાની ફરજ છે, સેવકે સ્વામીની આજ્ઞાને અનુસરીનેજ વર્તન રાખવાની જરૂર છે. ભગવાન ગીતાજીમા અનુન પ્રતિ કહે છે કે “તું જે ખાત્ર છે, તું જે પીએ છે, હુંકામા તું જે કરે છે તે મને અર્પણ કર, એ ભગવદ્ધર્મ સુખ આપણે દરેક ઉદ્યમ ભગવત્સેવાનિમિત્તેજ કરવા જેમએ છતાં આપણી રિયતિ વાદી (મદારી) નો કંડીઓ કાપતા હિંદુના જેવી છે. દષ્ટાત કે કાંઈ એક ઉદર ચોરાકની સોપના ઉદ્યમ માટે નીકળ્યો તેને કાંઈ વાદી (મદારી) નો કંડીઓ દૃષ્ટિગોચર થતા તેમા કંઈ ચોરાક હશે તેમ સગજ તેને કાપવા માડ્યો. કંડીઓ કાપતા દરમ્યાન ચોતેજ તેમા રહેલ કાળરૂપ સર્પના ચોરાક રૂપ થયેલ. પ્રિય વાચકો—આપણી પણ એજ રિયતિ છે. આપણે લૌકિક કાર્યોમાં એવા તો રચાપચ્યા રહીએ છીએ કે અનેક જન્મોમા ભટકતાં ભટકતા મહામુશીબને ભગવત્કૃપાથી પ્રાપ્ત થએલ કુર્વલ એવા મનુષ્યદેહ ધ્રુમાની કાળના બદ્ધચરણ બનીએ છીએ જેથી કાળના મુખમાંથી બચવા દરેક પોતાની ફરજ સમજી ભગવત્સુખ વિચારી દરેક કાર્યો ભગવત્કૃપાથી કરવા જેમએ. પરમભક્ત ગોપાળદાસજી વસંતભાગ્યાનમા ગાય છે કે—

ગિરિરાજને આશાસ દીધો ધરી કામલ ચરણ, દરખે તે સામા આવીયા, શ્રીગોવર્ધન ઉદ્ધરણ;

પ્રિય વાચકો, શ્રીગિરિરાજજીની ઉપર સાક્ષાત પ્રભુ મિરાજતા હતા છતાં એમને એવું શુ દુઃખ હતું કે શ્રીમદાપ્રભુજીએ પધારી સાંત્વના કરી ! જવાબમાં કહેવાતું એટલુંજ કે—શ્રીગિરિરાજ ઉપર સાક્ષાત પ્રભુ મિરાજતા હતા છતાં અસંખ્ય મિરાજતા હોઈ શ્રીગિરિરાજજીને એ મહાદુઃખ હતું જે દુઃખ શ્રીમદાપ્રભુજીએ પધારી સેવાપ્રકાર બાંધી નિહત કર્યું. જેથી શ્રીગિરિરાજને શાંતિ

થઈ. આ પ્રકારે ભગવત્સુખ વિચારણું એ પણ દરેક ભગવદીયોની દરજ્જા છે છતાં એ દરજ્જા ખજાવવા માટે કેટલા બેઠકાર રહીએ છીએ ? આપણા પર જે દરજ્જા પડેલી છે તે તુરતજ બળ-વવાનો અમલ થવો જોઈએ. એક ભગવદીય કહી ગયા છે કે—

કાલ કરે સો આજ કર, આજ કરે સો અજ; અવસર બીલો જાત હે ફેર કરેગો કય ?

આ વાતને આપણે શુધ્ધવી તો નજ જોઈએ. લૌકિક વૈદિક કાવ્યો બધાને કરવાના હોય છે. પણ શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતા આરા મુજબ કાપટયશુદ્ધિથીજ કરવાનાં હોય છે. દયારામભાઈ પણ બક્ષિપોષણમાં કહે છે કે—

જન્મત જન્મે છે જન્મણી રાખ હુદે ત્રીકમ શું તાળી,

તેમજ ગીતાજ્ઞના ધોળમાં પણ કહ્યું છે કે—

સંસારમા સરસો રહે, જેનું મન મારી પાસ; સંસારમા લોપે નહી તેને જાણું મારો દાસ-અર્જુન સુજો.

એવાં વાક્યો મુજબ ભગવદીયોએ સંસારમાં જળકમળવન કહેવું જોઈએ અને આખા દિવસમાં અમુક સમય તો ભગવદ્ધર્મમાંજ વીતાવવો જોઈએ. જેટલો સમય ભગવદ્ધર્મમાં વીતે એટલો વખતજ જીવ્યા સમજવું. આ વાત ચોરાસી વૈષ્ણવોની વાર્તાઓ પૈકી મેઢનદાસ તથા વલ્લભદાસની વાર્તા વાંચવાથી સ્પષ્ટ સમજાશે, ઉલ્ટે—

આજ કામ કાલ કામ પરજું કામ કરનો, પહેરે દિન બહોલ કામ કામકે પીઠે મરનો;

જનત કામ સોવત કામ બહિરુખ હોય ચલનો, છોડ કામ સમર રયામ સુર પકડ શ-નો.

આ મહાનુભાવી સૂરદાસજીના પદને સમજી છેત્રી છી ? મુજબ હવે શરણ પડી સદા શ્રીમદ્ગીતાનું સ્મરણ બળન કરવા પ્રતિ પ્રિય વાચકો લક્ષ આપશે એમ હમણું છું.

સ્વદેશી.

(લેખક:—શ્રીપરાગ,)

ગાંધીના સ્વાતંત્ર્યના આરોહનથી કોઇકજ ભારતીય અચાત દરે. દેશના ખૂલે ખૂલે અમલ-યોગની ચાલવગ પ્રસરતી જણાય છે. પરદેશીઓની અન્યાયી સત્તાનતનો નાશ કરવા અને માતૃ-ભૂમિના પરતંત્રતાના બંધનોને છિન્ન લિલ કરવા સંપ્રતિ બહિષ્કારની પ્રવૃત્તિ પણ પ્રગતિને પંથે દ્રુત ગતિથી પ્રધાવન કરી રહી છે. જે દેશમાં મહારાજા પ્રતાપ, જગજનિ શિવાજી મહારાજ સમા નર-શાહીદોનું રામરાજ્ય પ્રવર્તતું હતું અને તે વખતની ભારતીય પ્રજા પણ ધીર, વીર, તેમજ ક્રોધાપણમાં અત્યેક કહેવાતી હતી તેરી ગર્વીશી પ્રજાની આધુનિક દયનીય દશા નિહાળી કયા હૃદયને આઘાત નહિ પહોંચતો હોય વાર ? ખરેખર ! હવે ભારતીયોનાં અક્ષુઓ ઉન્નતિલિલ થઇ ગયા છે. પોતાના પિતામહ, પ્રપિતામહના સમયનું આદર્શ શાસન સ્મૃતિ વડે તરવરવા લાગ્યું છે. હવે પુનઃ તેવું શાસન પ્રસ્થાપિત કરવા અને દેશની ગમેલી સમૃદ્ધિનો પુનઃ સંચય કરવા ભારતીયોએ કાયરતા મૂકી અહિંસાના ખેડથી સામ્રાજ્યવાદની સાથે સ્વાતંત્ર્યનું યુદ્ધ ચેડી દીધું છે. એનું નિરીક્ષણ કરી ભારતમાતા પોતાની શરવીર પ્રજાને હર્ષોક્તિઓથી આજે વધાવી રહી છે. નિહાળો ! નિહાળો !

આપણો પ્રાચીન રાષ્ટ્ર એક વખત અદ્વિતીય હતો. પ્રાચ્ય ભારતની શુશ્રુષિમાં અને ઔષધ-સમૃદ્ધિના વર્ણન, આયોર્વર્તના પ્રાચ્ય કવિઓની કૃતિઓમાં અદ્વાવધિ ઝગમગ રહ્યા છે. ઇલેક્ટ્રિકલ ક્રાંતિથી, બલભૂતિ સમા કવીન્દ્રોએ પોતાના કાવ્યોમાં તથા નાટકોમાં તત્કાલીન

ભારતવર્ષના સૌંદર્યનું તેમજ પાવિત્ર્યનું ચિત્ર આજે દોરેલું આપણે અવલોકી શકીએ છીએ. ગુર્જર કવિવરોએ પણ ભારતની ઐશ્વર્ય અને વિગળ સમૃદ્ધિમાં દિવ્યતા પ્રાપ્ત નગરીનું વર્ણન કરતાં કહ્યું છે કે:—

‘કનક કોટ ચળકારા કરે, મણિમય રત્ન જડમાં ત્યાં હાંમેરે.’

મોગલ સંતતત્તમાં પણ આપણા ભારતવર્ષની આગ્રાદી ટકી રહી હતી. પ્રખ્યાત ઇતિહાસકાર થોર્નટન-સ પ્રાચ્ય ભારત વિષે પોતાના એક ગ્રન્થમાં ઉલ્લેખ કરે છે કે—

“યુરોપીય સભ્યતાના ઉત્પાદક યુનાન અને ઇટાલી બંને જગતી અવસ્થામાં પડ્યાં હતાં તે સમયે ભારતવર્ષ વૈભવ અને સમૃદ્ધિનો કેન્દ્ર બની રહ્યો હતો. ભારતમાં ચારે બાજુએ મોટા મોટા ઉદ્યોગો પ્રચલિત હતા હતા. ભારતીય પ્રજા અદ્વિતીય કાર્યબળ બજાવતી હતી. અવનિ પણ ઉર્વરા હતી. અત્યેવ ત્યાં પાક સારો પાકતો હતો. ખેડૂતોને પણ તેના લાભ સારોજ મળતો હતો. ધનધાન્યથી પરિવૃષ્ટ વસતા હતા. તે સમયે ભારતમાં ધણાજ બાહોશ કલાકારો રહેતા હતા. તેઓ ભારતના કાચા માલથી એવા નક્કારો અને આકર્ષક માલ તૈયાર કરતા હતા કે તેવા માલની માગણી આખું વિશ્વ કરતું હતું. કેટલાયે પાશ્ચાત્ય અને પૌર્વાસ રાષ્ટ્રો તે માલને ધણાજ આદરથી ખરીદતા હતા. ભારતનું સ્વતંત્ર અને વસ એટલાં કોમળ અને સૌંદર્યવાન થતાં હતાં કે તેની પુલકના થરી અશક્ય છે.”

ઉક્ત પ્રકારે એક નિષ્પક્ષ આગ્રહ ઇતિહાસને ભારતની વિપુલ સમૃદ્ધિની શુકત કંઈ પ્રશંસા કરી છે એટલુંજ નહિ પણ તે સમયના ભારતની આગ્રાદીનું નમ્ર ચિત્ર દર્શાવે છે. પદિ આપણેજ ભારતને પ્રશંસીએ તો આપણા ઉપર કદાચ પક્ષપાતનો આરોપ આવવાનો સંભવ રહે પણ એક પાશ્ચાત્ય ઇતિહાસકાર લેખકનું ઉક્ત કથન યાદ પણ રીતે પક્ષપાતિ નજ કહી શકાય. પ્રાચ્ય કાળમાં અનેક ચિદેહી યાત્રીઓ ભારત ભ્રમણ કરવા આવેલા તે બધાઓએ પોતપોતાના ગ્રંથોમાં સ્થળે સ્થળે ભારતવર્ષની સમૃદ્ધિ ગણ છે. મેગસથનીજ ને આર્ટો વિકમથી ૨૫૩ વર્ષ પૂર્વે આવેલો, તેણે પણ ભારતના મરોગાન લક્ષ્યકારી છે. આચાર્યનો સામ્રાજ્યવાદ ખેડતો પાસેથી અને અન્ય પ્રજાઓ પાસેથી કરો ઉપસાવવા ને ત્રાસ વર્તાવે છે તેનું પ્રાચ્ય કાલના સાસનમાં નહોતુંજ. મેગસથનીજ લખે છે કે—

“ભારતની પ્રજા સમૃદ્ધિવાળી હતી. કોઇ પણ પ્રકારનો કર તેમની પાસેથી લેવામાં આવતો નહોતો. કર્મચારીઓ તરફથી પણ કશીયે દબલગીરી કરવામાં નહોતી આવતી. જેઓ જમીન ખેડતા હતા તેઓને પોતાના લાભનો નહોતો અંશ સંભળતે આવેલો પડતો હતો. રાજાઓ કોઇને પણ સારીરિક હંડ નહોતા આપતા.”

આવી સ્વર્ણમયી ભારતભૂમિનું અધપતન ઇર્ષ્ટ છડીઆ કંપનીના આગમનથી પ્રારંભાયું. કંપનીએજ આપણા ભારતમાંથી ધનધાન્યસમૃદ્ધિનું અપહરણ કરી ભારતને કંગાલ બનાવી દીધો. વ્યાપારી વેશે ભારતમાં આવી પોતાની અર્થલોભુપ રાક્ષસી મહરવાઠાંકાને વસ થઇ કંપનીએ ભારતના સર્વ પ્રકારનો શોષણનો ધોગલેખ આદર્યો. કંપનીના બૂલો કંવા કંવા અત્યાચારો કરી ભારતની સમૃદ્ધિને હરતા હતા તેનું વર્ણન કરતાં સર જોન એલે ૨૬-૩-૧૭૯૨ના પત્રમાં ઉલ્લેખે છે કે—

“કંપનીના બૂલો પોતાને સમર્થ અને ધણાજ શક્તિશાલી સમજે છે. કંપનીના માટે કોઇ પણ વસ્તુ ખરીદવી હોય યા વેચવી હોય તો ગામડે ગામડે જઈ ત્યાંના વતનીઓની વિરુદ્ધ માલ ખરીદવા, અને વેચવા તેઓને વિવશ કરે છે. કોઇ ગામડીઓ તેની આગાને માન્ય નથી

કરતો તો તેને સોડીઓથી સારી રીતે માર મારી જેલમાં ઠોસી દેવામાં આવે છે એટલુંજ નહિ તેઓ ઉપર અસહ્ય અત્યાચારો વર્ષોની પાશ્ચાત્યો સિવાય અન્ય કોઇને પણ માલ ન વેચવા તથા અન્ય કોઇની પાસેથી માલ ન ખરીદવાની ફરજ પાડે છે. આથી આંતરિક કંપનીના ભૂત્યો જેઓ પોતાને માટે વેપાર કરવા અત્યાચાર કરી માલ ખરીદે છે તેની પૂરેપૂરી કિંમત દેશના વ્યાપારીઓને આપતા નથી. ક્યારેક ક્યારેક તો એક અર્ધા આપવાનું પણ સૌજન્ય દર્શાવતા નથી. આ પ્રકારના રાક્ષસી અત્યાચારોના કારણે શનૈઃ શનૈઃ બાહરગંજનો તાલુકો જન-સમુદાયથી ખાલી થતો જાય છે. પાશ્ચાત્ય વ્યાપારીઓના ભૂત્યો સ્વચ્છંદતાથી ગરીબ લોકો ઉપર ધણો ત્રાસ વર્તાવે છે. યદિ કોઇ જાગીરદાર તે લોકોની વહારે ધાય તો તેઓને પણ આડતની ધમકી આપવામાં આવે છે. પ્રાચ્ય સમયમાં તો ન્યાયાલયોમાં ન્યાય થતા હતા પણ હવે તો પાશ્ચાત્યોના મહેતાઓજ ન્યાય કરે છે. પ્રત્યેક મહેતાના ઘેર ન્યાયાલય ખોલાય છે. મહેતાઓ પોતેજ ન્યાયાધીશ બની જમીનદારો વિરુદ્ધ હંડ દેવાના ફરમાનો કરતાયે અચકાતા નથી. જમીનદારોની નીતિ કુંપનીને તુકશાનકર્તા છે એવું બોલું બહાનું કરી તેઓ પાનેથી અકારણે રૂપિયા વસૂલ કરવામાં આવે છે. યદિ મહેતા વર્ગનાજ ભૂત્યો મહેતાઓની કોષક વરતુની ચોરી કરે તો પણ જાગીરદારના નોકરો પરજ એ ચોરીનો દક્ષિણ આરોપ મુકી તે ચોરીની દક્ષિત વસૂલ કરી લેવાય છે.”

આવા અત્યાચારો માત્ર બાહરગંજમાંજ નહોતા થતા પણ આખા બંગાળમાં અરે સમસ્ત રાષ્ટ્રમાં પોતાની પરિસ્થિતિએ પહોંચ્યા હતા.

આ ભારત કેવા હિસ્તાહ કલાકારોથી વિભૂષિત હતું તે હું એક આગ્રહ લેખકના શબ્દોમાં પૂર્વે કહી ચુક્યો છું. શ્રીમદ્વલ્લભરાજકુમાર શ્રીમદ્ગુણાધરના વખતમાં પણ આપણા ભારત વર્ષની કળા જળવાઈ રહી હતી. એક વૈષ્ણવે ૪૫-૫૦ વારનો મઘમઘનો ખારીક તાકો ધીનાય-છતા વચ્ચે માટે માત્ર કોઇની નલિકાદારા મોકલ્યા હતા. એટલુંજ નહિ પણ વર્તમાન સમયમાં જ્યાં જ્યાં શ્રીમદાપ્રભુજીના ખાસ ધરવાના પ્રાચીન ધોતી ઉપરથી બિરાજે છે તેના દર્શન કરતા આપણને જણાશે કે પૂર્વે આપણા રાષ્ટ્રમાં શુદ્ધ હાથવણાટ અને હાથકંતામણીના ખારીક વચ્ચે કેવાં અદિતીય યતાં હતાં ? આપણા રાષ્ટ્રના વચ્ચેની ઘણાં અતુલનીમ હતી. વિશુદ્ધતમ હાથ-વણાટનાજ વચ્ચે આપણી પ્રત્યેક ધાર્મિક ક્રિયાઓમાં વપરાતાં હતાં. અંગ્રેજ અશ્વરૂપિત રૂપ મુદ્રિકોના કિંવા સુવર્ણ મુદ્રિકોના પ્રભુસેવામાં સ્વર્ણ સુદાં યજ્ઞ શકતો નહોતો. તે સમયે ભાર-તીયોમાં એટલું અધિક સ્વદેશાભિમાન હતું. આપણા પ્રાચીન કલાકારોના હાથે તૈયાર થયેલું સૂક્ષ્મતમ વસ્ત્ર આજેય માન્ચેસ્ટર કિંવા તેના જેવા અન્ય વિદેશી મથકોમાં પણ તૈયાર નથી થઇ શકતું. ઈનસાઇકલોપીડીયા બ્રિટાનીયામાં લખ્યું છે કે “રૂપ સૌંદર્યસંપન્ન વચ્ચે ભારતમાં એવી દશાએ પહોંચ્યા હતા કે યુરોપની આધુનિક કલા બધી જનના અદ્ભુત મશી-નોની મદદ હોવા છતાં પણ ભારતના રૂઢીચાથી બનેલા કાપડની જરાયે નકલ નથી કરી શકતી.”

આ પ્રમાણે ધણાંયે પાશ્ચાત્ય વિદ્વાનોએ ભારતના કાપડની મુક્તકંઠે પ્રશંસા કરી છે. મા. બેને પોતાના ઇતિહાસમાં લખ્યું છે કે:—

“ભારતના આવા ખારીક મઘમઘના કાપડ માટે યુરોપની કેટલીક વ્યક્તિઓના એવા વિચારો યજ્ઞ ગયા છે કે ભારતના કાપડની વણાટ મનુષ્યકૃત નથી કિન્તુ ઝીણી ઝીણી કોરી મંદીરીકૃત હોવી જોઈએ.”

કેવળ સુનરાકિં કાપડ તેવું નહોતું થતું પણ તે સમયે રેશમી, ગરમ, હીંટ વિ. બધો માલ ભારતનો અદિતીય જનતા હતા. અત્યારે જેવી ભારતીઓને વિદેશી માલની મોહિની લાગેલી છે

અને રથજે રથજે, વિદેશી માલથી ભારતીયો પોતાના ઘરોને તથા ગરીબોને શુદ્ધિ આપે છે તેનાથી નેતાનંત પ્રતિજ્ઞા પરિસ્થિતિ ૧૯૫૬ માં યુરોપની યાદ રહી હતી. ભારતીય મહામયો અને રેશમી તાપડો લંડનમાં અને તેવા પાશ્ચાત્ય દેશોમાં વિપુલ પ્રમાણે પ્રચલિત હતા. આવી યુરોપી પરિસ્થિતિ ૧૯૪૭-૧૯૭૮ માં ડેનીશ ક્રેડે. દુષ્ટ પ્રકારે પોતાના વર્તમાને પત્રમાં લખે છે કે:—

“યુરોપના વતનીઓની પ્રશ્નિ - પૂર્વ તરફ વળી રહી છે. ભારતની ઊંટો અને ઊંચે ૧૫૬ જે પ્રથમ જગીન ઉપર પાશ્ચાત્યમાં આવતા હતા, કિન્તુ હવે આપણી મહિલાઓ પણ એ હિરવા લાગી ગઈ છે. અન્યની તો વાતજ રી ? ખાસ લંડનની સામ્રાજી ચિનાઇ રીલ્ક અને ભારતીય ઊંટો પહેરવી પસંદ કરે છે. આ સમયે ચારે બાજુએ ભારતીય વસ્ત્રો દરિદ્રતા યાદ થાય છે. આપણા બેસવાના ઓશાઓમાં, આપણી ચેમ્બરોમાં, આપણા મુઠમાં લાગેલ પકાન મોઝા, આપણે સુવાની પધારીમાં અને તકીઆમાં એટલુંજ નહિ પણ આપણી ઓઝો અને મકરાઓના વસ્ત્રોમાં કેવળ ચારે બાજુએ ભારતીય વસ્ત્રો નજરે પડે છે. પ્રાચ્ય યુરોપમાં બહુ ૧૫૬ ભારતમાંથી આવે છે.”

કહેવાનું તાત્પર્ય એ છે કે એક સમયે લંડન ઇલાહિ પાશ્ચાત્ય દેશોના બજારો ભારતીય માલ માલથી ઉભરાતા હતાં. ભારતીય માલના વ્યાપારમાં કંપની યુરોપમાં સેકંડે પચાસ ટકા ફા કમાતી હતી. તેણે ભારતીય માલ યુરોપમાં સરતોજ વેચાંતો રહ્યો; આનું વાતાવરણ યુરોપીઓની આંખમાં ખુશ્બી લાગ્યું તે સમયે યુરોપીઓ ભારતીય માલ પર એવા મુલ્ય બંધા હતા સામાન્યવર્ગી કહેાદ કહેા કરી જેઓના કહેા વેડીને પણ ભારતીય માલ વાપરવાની મોહિની હોતો. આથી શક્તા. આવી સ્થિતિ એના આપણી સરકારે ભારતના તેવા અસંખ્ય કક્ષાકારોના તથા પંજના કાંડાઓ કાપી ભારતીય દુગ્ધર ઉદ્યોગોના તેમજ પાવિત્ર્યનો વિનાશ કર્યો છે. એની તિલાંશ આજે સાંખ પૂરે છે.

પરદેશીઓના આગમન પૂર્વે, આપણે ભારત વર્ષે આઠમો બધો બ્રહ્મ નદોતો થયો. યજ્ઞે રથજે કુવાઓ તથા તળાવો છઠ્ઠાતાં હતાં. વિજ્ઞન વનોમાં પણ યાત્રાળુઓની અતુલ્યતા માટે ધર્મપ્રાણ ધનિકો કુવાઓ તથા તળાવો ખોદાવતા હતા. આજે પરદેશીઓના રાજ્યકાળમાં આપણા પવિત્ર જલાસરો, આપણા ધાર્મિકોની ધાર્મિક લાગણી દુષ્પાતી હોવા છતાં આ દેશમાં આવે છે. એટલુંજ નહિ પણ આપણા સંવાવન સ્વતંત્ર સામાજિક રીતરિવાજોમાં પણ સરકાર હવે ડબલગીરી કરવા લાગી ગઈ છે. સરકાર વિદેશી બ્રહ્મ વસ્ત્રોના તથા શિક્ષણોના પ્રચાર કરી ભારતને બોલું અપવિત્ર યજ્ઞે સમજાવે. આવા આવા અનેક કુસાધનો વડે આપણા દેશો ઉપર તરાપ મારી રહી છે. આપણને બ્રહ્મ કરી રહી છે. એટલુંજ નહિ પણ આપણને બસાહારે વિનાશને માંગે ધસડી રહી છે છતાં કેટલાક ભારતીયો સમજૂ પ્રકારે નિશ્ચય ન થતાં સંપ્રતિ દેશાધારના આદિવાસી સહયોગ ન આપતાં તેને વખોડે છે. તેવાઓની મનોદશા ખરેખર દુષ્પાત્ય કહેવાય. હવે ઉદ્ધવાનો જમાનો જતો રહ્યો છે. ઈર્ષ્ય, દંડવાનો સમય આવી પહોંચ્યો છે. દેશની છીનવાઈ ગયેલી સ્વતંત્રતા પ્રાપ્ત કરવા આપણે હવે આ આરંભેલું મુદ્દ પ્રાણના ભોજે ચાલુ રાખવુંજ જોઈશે. કારણ કે સ્વરાજ્ય એ તો આપણો જન્મસિદ્ધ હક્ક છે. સરકારની હમનનીતિથી આપણને કારણે ધર્મ પ્રયોજન નથી. બહેને સરકાર આપણી, લલિત તત્વાઓ ઉપેક્ષીને દેડે, બહેને આપણા ઉપર શિકારી શ્વોનોને છોડી મૂકે તો પણ અદિવાસી પવિત્ર ધ્યેયને મનજીત વગળી રહી દેશાધારના મતમાં હસતે મુખડે પ્રાણની આદિતિ અર્પણ કરવાની આપણી દિવ્ય કરજ આવી પહોંચી છે.

બહેનોની વીરતા પણ કંઈ ઓછી સન્માનનીય નથી જે બહેનો માનુષ્યમિત્ર ઉદ્ધારના અર્થે બીપણ આત્માચારો સહે છે, તેઓને હજારો ધન્યવાદ ઘટે છે. સરકારને આવી મહોન્મત કરવાનું ઉત્તરદાયિત્વ પણ આપણા ઉપરજ છે એ વિચરવાનું નથી. આપણે વિદેશી રંગીમરો ભરી ભરી માલો મંગાવીએ છીએ અને સરકારના ખર્ચસો ભરીએ છીએ તેથીજ તે આવી ઉદ્ધત બની ગઈ છે. ભારતને આગ્રહ કરવા ખાતર વિદેશી માવનો બહિષ્કાર કરવો જોઈએ. એટલું કામ કરીને આપણને અટકવાનું નથી આપણને તો વિદેશી માલના બહિષ્કારના પ્રચાર સાથે સાથે રેંદીયાની પ્રવૃત્તિને પણ વ્યાપક કરવાની છે. ધારો કે અત્યારે આખો રાષ્ટ્ર ખાદી પહેરતો બની જાય તો શું આપણે તેટલી ખાદી પુરી ખાદી રાષ્ટ્રીયું નહિજ, કારણ કે આપણી પાસે તેટલી ખાદીની શિલ્પક નથી. અત્યેવ ખાદીના વિસ્તાર માટે ઘેર ઘેર રેંદીયાના મધુર નાદો ગર્જવા જોઈએ, તકલીએ કંતાવી જોઈએ. વૈષ્ણુ બધુએને તો આ આદેવનથી કરવાની કિંવા મંકાવ કરવાની જગ્યાએ આવરયક્તા નથી કારણ કે વૈષ્ણુ ધર્મના સ્વચ્છતા તથા શુદ્ધતાના આદર્શ સિદ્ધાન્તો રેંદીયા અને ખાદીથી અતિરિક્ત નજ જળવાઈ શકે. પ્રભુની સેવાનિધિમા રત્નચના અને શુદ્ધતા વિના લેશ પણ ચાલી નથી શકતું વિદેશી વસ્ત્રોમા તો ખુદ્ધ બપ્ત થવાનુંજ છે. એ જાણતામાથી અવવાના અહિંસાત્મક રસો માત્ર રેંદીઓ અને ખાદી છે. આ કથનમા હું અણુમાત્ર પણ અત્યુક્તિ નથી કરતો. મારે જાહેર કરવું જોઈએ કે વૈષ્ણુ સમાજે આ રાષ્ટ્રીય આદેવનમા ઔદારસીન્ય ન સેવતા સક્રિય લાગ લેવો જોઈએ. આપણા પૂર્વાચાર્યપાદોએ વિદેશી વસ્ત્રો નહોતા ધરતા કિન્તુ તેઓ સ્વદેશી વસ્ત્રો ધારણ કરતા હતા. પ્રભુની પવિનાદિ મેવાવિધિપ્રકારમા રેંદીયાદિ ફેરવતા હતા. એ નિવિર્વાહ છે કે ભારતની આઝાદી તેમજ શુભગરિમા માત્ર રેંદીયા અને ખાદીનેજ આભારી છે. પૂર્વે ભારતવર્ષની સમૃદ્ધિ એજ રેંદીયા અને ખાદીએ જાગી રાખી હતી, એણેજ સમસ્ત યુરોપને ભારતવર્ષની સૈદ્ધર્મસંધાનુ પાન કરાવ્યું હતું અને એ બન્નેના વિનાશથીજ અત્યારે આપણો રાષ્ટ્ર કંગાવ, દીન, દીન અને મર્ત્યાગી બની ગયો છે. આપણા રાષ્ટ્રના પુનરુદ્ધાર માટે એ પ્રાચ્ય હુન્નર ઉલ્લેખોને સજીવ કરવા પડશે. ઘેર ઘેર રેંદીયા શાળાઓ અને તકલી શાળાઓનું ઉદ્ધાટન કરવું પડશે. ગયેલી સ્વતંત્રતા પુન આપણે સુતરના તાતણેજ મેળવવાની છે “રેંદીઓ અને ખાદી” એ ઉબધ આશીર્વાદના પ્રાણસમા છે. ભવતુ ! !”

આંતર-જીવન પર અભિપ્રાય.

જત લાઈ દીનકિંકર મારફત “ભક્તકવિ શ્રીદયારામભાઈનું આંતરજીવન અથવા દિવ્ય અક્ષરદેહ” નામનું પુસ્તક મળ્યું, તે વાંચી અત્યંત આનંદ થયો. ભક્તકવિ દયારામભાઈએ પુષ્ટિમાર્ગિય વૈષ્ણુ જનતાપર જે ઉપકાર કર્યો છે તે અવર્ણનીય છે. પ્રભુ શુભગાનકારા ભક્તના હૃદયમાં પ્રવેશ કરે છે એ સત્ય મહાનુભાવીઓએ અનુભવ્યું છે, તેથીજ પોતે જે નામનીકા વડે ભવસાગરને તરી ગયા તે નૈકા ચોતાની પાછળ બીજને માટે મુદ્રી નિઝામમા પંચાયો. આ ન્યાયે દયારામભાઈના પદ, ગરબીઓ, તથા વિવિધ પ્રકારના પદસાહિત્યથી લાખો અધિકારી હૃદયને પ્રેરણા મળીએ, જોઈવું શુભગાનનું સાધન પ્રાપ્ત થયું છે, અને શુદ્ધપ્રેમાત્મક ભકિતરસની ઉપલબ્ધિ પણ થઈ છે. એમના કાવ્યને પ્રસિદ્ધિમા લાવવાનો જે સ્વત્વ પ્રયાસ તમે વર્ષો થયા આદરી રજા છો, તેને માટે તમને જેટલો ધન્યવાદ આપીએ એટલો ઓછો છે. અનેક વિદ્વા તથા મુન્દેલીઓ સામે અકગ ધૈર્ય રાખી એ કાર્ય પાછળ મંદી રજા છો તે જોતા પ્રભુએજ

કૃપા કરી એ કાર્ય માટે તમને નિર્મિત કરેલા છે, એવો અને તો નિશ્ચય યામ છે. હજી પણ એ દિશામાં કરવા જેવું બાકીનું કાર્ય પૂરું કરવા પ્રયત્ન તમને સામર્થ્ય બહે એવી મારી તીવ્ર અભિલાષા છે.

દુનીઆ દોરંગી છે, અને અનેક પ્રકૃતિના તથા અનેક સંસ્કારવાળા પુરુષો હોવાથી સર્વની અભિરમિ જિલિ હોય છે; તેથી એક વસ્તુ પર સધળાનો આદર સરળો હોય એ અસંભવિતજ છે; છતાં બહુરતના વસ્તુધરામાં સત્યશીલ અને ઉચ્ચ સંસ્કારવાળા પરીક્ષકો પણ અસ્તિત્વ ધરાવે છે એમાં સંશય નથી. પાશ્ચાત્ય જગત્વાદના આક્રમણનું પરિણામ કેવું ગંભીર આવ્યું છે તે સંસ્કારી પુરુષોથી હવે અનુભવ્યું નથી. આર્થસંસ્કૃતિ ધીમે ધીમે હ્રાસ યતાં હવે એના નામના અસ્તિત્વ માટે પણ હલ્લમા શંકા થયા વિના રહેતી નથી. આવા કટોકટીના સમયમાં પણ ધીર પુરુષનું કર્તવ્ય તો, સમયના આક્રમણને વશ ન થતાં સત્યને વળગી રહેવાનું, તથા નીકર થઈને સત્યનું પ્રતિપાદન કરવાનુંજ છે, સદ્ભાગ્યે આવા પ્રયત્નને પરિણામે ભક્તકવિ દયારામભાઈના જીવન સંબંધમાં જે જે તર્કવિતરકો કાળને પ્રભાવે ઉદ્ભવવા પામ્યા હતા, તેની નિષ્પક્ષપાત રહીને સમીક્ષા કરવાનું સજ્જનોને સાધન મળી ગયું છે, અને આ આન્તરજીવન એ કાર્યમાં વણીજ કિંમતી મદદ આપ્યા વગર રહેશે નહિ એવું માફ નમ્ર મન્તવ્ય છે. દયારામભાઈની કવિતા એમણે પોતે કેવા ઉદ્દેશથી, કેવા વિચારોથી, ને કેવી ભાવનાથી પ્રકટ કરી છે તે જાણવાની કોઈની ખરી ઉત્કંઠા હશે તો તેને આ તમારૂં પુસ્તકે ખરેખર ગણું ઉપકારક થઈ પડશે. વિવિધ દૃષ્ટિબિંદુએ અપાએલા માર્ગો અને તટસ્થ વિદ્વાનોનાં ભાષણોનો એકત્રિત કરવામાં આવેલો સંમૂલ પણ તેવાજ ઉપયોગી લેખારો. વિશેષ શું લખ્યું? દયારામભાઈ ઉપરના તમારા પ્રેમને અંગે જે ઉચ્ચ પ્રકારની સેવા તમે કરી રહ્યા છો, તે સેવાજન તરફ દૃષ્ટિપાત કર્યો વગર એ સેવાજન ફળશ્રેષ્ઠ છે એમ દૃઢ માની એ સેવાનું કાર્ય સતત ચાકુ રાખશો એવી અભિલાષા દર્શાવી વિરમીશ.

પંડોળની યોગ,
નાણાવટ-સુરત,
તા. ૪-૫-૩૧.

લી. શેઠાધીન,
મનમોહનદાસ દલપતરામ
ના ભગતસમજી.

[રા. રા. મનમોહનદાસભાઈ કેળવણી ખાતાના ડે. એ. ઇન્સ્પેક્ટર મોટા અમરગદર હતા, દાલમાં પેન્શન લઈ નિવૃત્ત થયા છે, બી. એ. થયલાઓમાં તેમના જેવા ભાણુક ભગવદીય સંપ્રદાયના અતિવિરલ છે. તેમનો અભિપ્રાય અમે ધણોજ કિંમતી માનીએ છીએ. પ્રકાશક.]

વિદ્વાન્નાં સન્માન.

સં. ૧૯૮૭ના આશ્વિન કૃષ્ણ પ્રતિપદ મંગલવારે સાંજે પૂનાના શ્રીમદ્ભાજનના વાગમાં મુંબઈથી ખાસ પધારેલા શ્રીમાન્ ગોસ્વામી શ્રી ક શ્રીગોકુલનાથજી મહારાજના પ્રમુખપણા નીચે પૂનાના સમસ્ત પ્રૃથિમાર્ગીય વૈષ્ણવો તરફથી પ્રે. મહારાજ ગણપતિરામ શાસ્ત્રી એમ. એ.ને (જેઓ સર્વસિમાંથી રિટાયર્ડ થાય છે) માનપત્ર અર્પણ કરવાના પ્રસંગે પૂનાના દે. ભ. નરસિંહ ચિન્તામણુ કેળકર, પ્રે. અપડિયા, પ્રે. સાહે, પ્રે. ખરી, પ્રે. ચાપેકર, પ્રે. ચન્દ્રાને પ્રે. કેળકર, વેદાન્તવાગીશ પાઠક શાસ્ત્રી, લેફ્ટ જજ વામુદેવરાવ ભાંડારકર, રા. જ. હંજમંતરામ રામનાથ, રા. મ. જ. હોનપં વઘીલ, રા. નારાયણ કેસવ રાગચુરુ વઘીલ, રા. જા. રામનારાયણ અમરચંદ, ઉપરાંત મુંબઈના દેવીદાસ માધવજી કાકરસી, રણજીભદાસ જનજીવન અપડિયા, નટવરલાલ ધીરજલાલ રાંઠેલિયા, લખમીદાસ જ્ઞાનવદાસ, અદ્ભુતનરના ગાંધી વલ્લભદાસ ભગવાનદાસ, નેવાચકર ગોપાલદાસ દામોદરદાસ ઇત્યાદિએ પણ હાજરી આપી શોભામાં વધારો કર્યો હતો.

પ્રારંભમાં કીર્તન થયા બાદ શ્રીમાન્ પ્રમુખને તિલક, માલા ઇત્યાદિ શેઠ હરિગોવિન્દદાસ ઉગરચન્દ, મગનલાલ સોંઠળચન્દ, તથા ધનજીભાઈ દાથીભાઈ તરફથી અર્પણ કરવામાં આવ્યાં હતાં. ત્યારબાદ રા. બ. ચિમનલાલ કિસનદાસે આમંત્રણપત્રિકા વાંચી સંભળાવી. પછી શા. ગોકુલદાસ તુલસીદાસે શ્રીમાન્ અનિરૂદ્ધલાલજી મહારાજનો, શા. રણજીદાસ પેટલાદીનો, અને ચોપડાવાળા મગનલાલ નગીનદાસનો એવી રીતે ત્રણ તાર, અને સાદરાવાળા આસિરચન્દ પોદિદિકેશ એજન્ટ હરિલાલ જ્યકિસનદાસ કોઠારી બી. એ., પૂનાના પ્રો. શેખ, નગરના હરિદાસ ઉત્તમદાસ, મુંબઈના શેઠ જગમોહનદાસ રણજીદાસ બી. એ., સુમન્ધી કિસનદાસ પુરોત્તમદાસ, ભરૂચના એડવોકેટ મણિલાલ ચોકરી અને જગનલાલ નાગેશ્વર, લાડવેશ શાસ્ત્રીજી, સંખેડના મોહનદાસ ગોવર્ધનદાસ, સુરતની મહાસલાના મંત્રી ચિમનલાલ શાસ્ત્રી ઇત્યાદિ ઇત્યાદિના કાગળો વાંચી સંભળાવ્યા હતા. તે પછી રા. બ. લડખીભાઈ દામોદરદાસે માનપત્ર વાંચી સંભળાવ્યું હતું. (આની એક નકલ આ સાથે બીડી છે.)

ત્યારબાદ શ્રીમાન્ પ્રમુખે સમયોચિત સુમધુર ઉપદેશ કર્યા પછી શાસ્ત્રીજીને માનપત્ર સહર્ષ અર્પણ કર્યું હતું. તે પછી શાસ્ત્રીજીએ તેનો ભાવપૂર્ણ ઉત્તર આપ્યો હતો, અને વિશેષમાં જણાવ્યું હતું કે માર્ગે ખર્ચે જીવન આજીવીક શરૂ થાય છે અને સંપ્રદાયની મારાથી જે કંઈ સેવા બનશે તે હું અવરમ કરીશ. સર્વનો ઉપકાર માત્રી તેમણે પોતાનું ભાષણ સમાપ્ત કર્યું હતું. પછી શેઠ દામોદર બૂખણદાસે પ્રમુખશ્રીનો ઉપકાર માનવાની દરખાસ્ત મૂકી હતી જેને પ્રો. વર્માએ તેજદાર બાષામાં અનુમોદન આપ્યું હતું તેમજ શા. વલ્લભદાસ સુતીકાણે પણ અનુમોદન આપી દૂકંમાં ભાષણ કર્યું હતું. ત્યારબાદ ભરૂચવાલા દધરચલાલભાઈની બે કુમારિકાઓ જહન કાન્તા તથા મોતીએ અત્યંત મધુર વિદાયગિરીના ગાનથી સજાતું કાર્ય સમાપ્ત કર્યું હતું. આ સમાપ્તિ પૂનાની વૈષ્ણવ અને ધર્મર જહોનોએ પણ સારી સંખ્યામાં ભાગ લીધો હતો.

માનપત્ર.

વે. શા. સં. મમલાલ ગણપતિરામ શાસ્ત્રી, એમ. એ.

પ્રેસિડેન્ટ, ડેક્કન કોલેજ, પુના.

પરમમાન્ય ભગવન્જીનિષ્ઠાત શાસ્ત્રીજી,

આપ સરકારી નોકરીના નિમિત્તે અહિં વિ. સં. ૧૯૭૧માં આવ્યા અને સોલ વર્ષ રહી નોકરીમાંથી નિવૃત્ત થતાં પૂના છોટી જન્મભૂમિ તરફ જવાનો પ્રસંગ હાલમાં આવ્યો. સોલ વર્ષના આપના સમાગમથી અમને જેટલો આનન્દ થયો છે તેના કરતાં અધિક ખેદ આપના પૂના છોડવાથી આવે થાય છે, આ પ્રસંગે આપના પ્રતિ પ્રેમ બાદર અને આભારની અમારી ભાવનાઓ આ માનપત્રોદ્વારા અમે દર્શાવીએ છીએ.

આપના આટલા વરોના સંતસંગથી અમને જડુ લાભ મળ્યો છે. આપનાં વ્યાખ્યાનો શ્રવણ કર્યા છે, આપની પાસેથી નિત્ય ચીસુગોષિનીજીના કથારસનું પાન કર્યું છે, શુદ્ધપુષ્ટિમાર્ગનું યથાર્થ લોકવેદનિરોધક સ્વરૂપજાણ્યું છે, આપની જ્યેષ્ઠ પુત્રીના વિવાહોત્સવમાં અનન્યાશ્રયનો સાક્ષાત્કાર કર્યો છે જેટલુંજ નહિ પરન્તુ આપનેજ લીધે વૈષ્ણવપરિષદની પંચમ ખેડક પૂનામાં ભરી શક્યા છીએ, અને આપની અત્ર સ્થિતિને લીધેજ પરમપૂજ્ય ગોરવામિ મહારાજોનાં અધ્યયન દર્શનનો અને તેઓશ્રીનાં સુમધુર વચનામૃતના શ્રવણનો લાભ અમે પ્રાપ્ત કરી શક્યા છીએ. સામ્પ્રદાયિક વિદ્વાનોનો અને અનન્ય લોકોનો સમાગમ પણ અત્ર થયો જાય છે તે પણ આપની પૂનામાં સ્થિતિનેજ લીધે.

આપતા સહવાસથી જ્ઞાન ભક્તિ અને ચારિત્ર્યનો વિરલ પણ અસાધ્ય સુભગ સંયોગ અમે જોયો છે, બાલકના જેવી સરલતા, સાધુજનની સાદાઈ, સત્યનિષ્ઠની સત્યપ્રિયતા અને

નિરપૃહતા આપનામા સદગ્ધ દરજ્જા થાય છે. આપની અનન્ય આચાર્યલક્ષિતો તો સમગ્ર સમગ્રદાયમાં સુપ્રસિદ્ધ છે.

શાસ્ત્રીજી, ગયા જે શતકનો આપણા સમગ્રદાયનો અગાનાન્ધકાર દૂર કરવામાં આપનો પરિશ્રમ અવર્ણનીય છે. આ શતકના પ્રારંભભાગજ સામગ્રદાયિક સાહિત્ય પ્રસિદ્ધ કરવાની સત્યવૃત્તિ આદરીને વિશ્વધર્મોમાં આપણા ધર્મનું ઉચ્ચતમ સ્થાન છે એ આપે સિદ્ધ કરી આપ્યું છે. મુંબઈ યુનિવર્સિટિમાં પણ એમ. એ. ના અભ્યાસક્રમમાં આણ્ણભાષ્યને સ્થાન આપવામાં આપનો સ્વયં પ્રયાસ હતો. પૂનામાં સ્થિતિ કરીને આપની પાસેથી આણ્ણભાષ્યાદિ સામગ્રદાયિક ગ્રંથોનું અધ્યયન કરીને શાસ્ત્રિપદને તેમજ પ્રોફેસરપદને અનેક વિદ્વાનો આજે અર્જન કરી રહ્યા છે. આપનો વર્ણુ શ્રીચંપાઇજીનું અને આપની પ્રપતિ દામોદરદાસજીનું સ્મરણ કરાવે છે. સમગ્રદાયના હિતાયે આપે આપનું જીવનજ અર્પણ કર્યું છે એ જાને વિદિત નથી !

આપ પૂનામાં આવ્યા તે પહેલા ગાયત્રીભાષ્ય પ્રસ્થાનરત્નાકર ઇત્યાદિ અપ્રસિદ્ધ ગ્રંથોની પ્રસિદ્ધિ આપેજ કરીજ હતી, શ્રીસુમોધિનીજી માસિકના તો આપ આત્માજી દત્તા, પુણ્ણિકિત-સુદા માસિકના મેરક જણ આપ હતા, તથાપિ આપના અન્ય આવ્યા પછીજ સમગ્રદાયની અરેખરી સેવા કરવાનો અવકાશ આપને પૂનામાં મેળવવાથી સમગ્રદાય આણ્ણભાષ્ય દશમસ્કન્ધ શ્રીસુમોધિનીજીનો અનેક પ્રકરણો ઇત્યાદિ ઇત્યાદિ મહાનુ ગ્રંથો પ્રસિદ્ધ કરીને આપણા સમગ્રદાયનું ગૌરવ આપ વધારી રાક્યા હો. અમારૂં તો સાક્ષાત્ત્વ એ છે કે અમારા પૂનાના શેઠ હરમયન્દ હરદાસના તરફથી ફક્તપ્રકરણીય શ્રીસુમોધિનીજીનો અને શેઠ મનલાલ સાંકલચન્દ તરફથી શ્રીમદ્વચરણકૃત શ્રીટિપ્પણીજીનો પણ અનુવાદ સ્વયં સમયમાં પ્રસિદ્ધ કરવાનું કસ્ટમીને સામગ્રદાયિક નામમેવાનો સુંદર માર્ગ આપે અમને દર્શાવ્યો છે. અત્રેનું શ્રીબાલકૃષ્ણ પુસ્તકાલય પણ આપની સંગતિનું ફલ છે.

સમગ્રદાયમાં હજી નામસેવા બહુજ કરવાની છે, આણ્ણભાષ્યનો તરતવીપનિર્ણયનો અને શ્રીસુમોધિનીજીનો માતૃભાષામાંજ નહિ પરન્તુ ઇતર પણ ભાષામાં અનુવાદ કર્તવ્ય છે, સામગ્રદાયિક પ્રાચીન અપ્રસિદ્ધ ગ્રંથગ્રંથો સાહિત્ય સાથે પ્રસિદ્ધ કરવાના હજી બહુજ બાકી છે, જાત્રાને સ્વમાર્ગેય આકર ગ્રંથોનું પાંક્ત ગ્રાન કરાવવાનું છે, પ્રાચીન શાધયોગ કાર્યમાં તો આપણું કર્તવ્ય આથી પણ અધિક છે, નિજ વ્યયે પ્રતિસાદ આપ મુંબઈમાં શ્રીગીતાજીનું પ્રવચન અને શ્રીસુમોધિનીજીની સરસ કથા તો કરોજ છો તથાપિ અન્ય પ્રાતો પણ તે અલગ્ય લાભ પ્રાપ્ત કરવાની ઉત્કટ અભિલાષા રાખે છે. શ્રીવલ્લભાચાર્યજી આપને સુનીર્વ આયુષ્યનું દાન કરે અને આપ આ ઉત્તમોત્તમ સેવા કરીને કૃતાર્થ થાઓ એજ અમારી અનંતઃકરણપૂર્વક અભિલાષા છે. પૂના, આશ્વિનકૃષ્ણત્રયતિથા.

અમે છીએ, આપના ગુણાનુરાગી પ્રેમાકાંક્ષી-

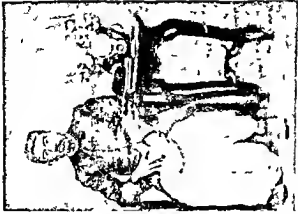
શાહ દરગેવિન્દદાસ ઉગરચન્દ	શાહ કિસનદાસ મનમોહનદાસ	શાહ સમદાસ ગોવર્ધનદાસ
શાહ કૃષ્ણદાસ ગોવર્ધનદાસ	શાહ હરિદાસ વિદ્યુલદાસ	શાહ વલ્લભદાસ સુનીલાલ
શાહ માલીવાલા	શાહ પુરોષોત્તમદાસ ગોકુલદાસ	શાહ કેશવદાસ શુદ્ધાબીદાસ
શાહ લક્ષ્મીભાઈ દામોદરદાસ	શાહ શામદાસ લક્ષ્મણદાસ	શાહ ચિમનલાલ વિદ્યુલદાસ
શાહ ચીમનલાલ કિસનદાસ	શાહ કિસનદાસ ત્રિકમદાસ	શાહ હરિલાલ વલ્લભદાસ
શાહ મનમલાલ સાંકલચન્દ	શાહ પ્રદેહદાસ ગોવર્ધનદાસ	શાહ કનૈયાલાલ રામચન્દ્રદાસ
શાહ મનજીભાઈ દાત્રીભાઈ	શાહ મન્જલાલ સેવકરામ	પટેલ અંબાલાલ હેમાજી
શાહ દામોદરદાસ બૂખણુદાસ	શાહ મનમોહનદાસ સામલદાસ	દગુરામ શંકરલાલ
શાહ ગોકુલદાસ નારાયણુદાસ	શાહ વિદ્યુલદાસ સાંકલચન્દ	પ્રોફેસર વર્મા
શાહ સાંકલચન્દ જનનલાલ	શાહ જીવજીદાસ મોહનદાસ	શાહ ગોકુલદાસ - તુવરીદાસ
શાહ વિદ્યુલદાસ ભગવાનદાસ	શાહ માણેકલાલ ચંદેરનાથ	વગેરે વગેરે



धीयुत ममलाल गणपतिराम शास्त्री. M. A. S. T. D. M. E. A. S.
(हालमांज राजसेवामांयी निवत्त चडने. वानप्रस्थत्व स्वीकारिने संप्रदायसेवा)



શ્રીયુત્ત હરિશંકર ઑંકારજી શાહી
મીમાંસક, વેદાંત વિશારદ M. A. S
(મમદાયમાં સંસ્કૃત માસિક પત્રના પ્રથમ સંપાદક
અને શ્રીસુબોધિનીના સમયે અનુવાદક.)



મોવેમર શ્રીયુત્ત જૈનલાલ ગોવર્ધનદાસ શાહ, M. A
(‘શ્રીયુત્તિમાર્ગીય વેણુ’ મહાસભાના નેતા તરીકે,
ગુજરાતમાં સાંપ્રદાયિક ચેતન લાવનારા અને અનેક
કવિન શુદ્ધાદિત પ્રયોના-સરલ અનુવાદ કરનારા
સાંપ્રદાયિક વિદ્વાન.)

દીક્ષાવિચાર.

બ્રહ્મસંબંધ:—બ્રહ્મસંબંધ કરાવવા બાળનાં શ્રીગોકુલનાયક વગેરે શ્રીગો. બાલકોનાં મૂલ વચનામૃતપર આપણે આગળ વિચાર કરીએ. ચતુર્થ લાલક શ્રીગોકુલનાયક કહે છે કે. (૧) પ્રહ્લ્લંબંધકરણ નામ ઇતન્માર્ગીશાચાર્યદ્વારા મળવલ્લિવેદનમ્. બ્રહ્મસંબંધ કરવું એટલે ખાસ પુષ્ટિમાર્ગિઆચાર્યદ્વારા ભગવાનને નિવેદન એટલે સર્વાર્પણ-અર્હાં ઇતદ્ શબ્દ પુષ્ટિને માટે છે. વળી આગળ કહે છે કે-તેનૈવ સર્વેષાં દેહાનાં સર્વેષાં જીવાનાં ચ સેવાપ્રતિવંધકસર્વદોષનિવૃત્તિ-ર્થવતિ ॥ આ પ્રમાણે પુષ્ટિમાર્ગિ આચાર્યોદ્વારા એટલે શ્રીગો. બાળકોદ્વારા નિવેદન કરવાથી સર્વ દેહોના અને સર્વે જીવોના સેવામાં નડનારા સર્વ દોષો નાશ પામે છે. આ ઉપરના વાક્યનો અર્થ છે. પ્રથમજ શ્રીગોકુલેશ તેનૈવ શબ્દ મુકે છે. તેવ શબ્દ શ્રીપુષ્ટિમાર્ગિ આચાર્યદ્વારા અને એવ શબ્દ નિશ્ચયાત્મક છે. ગતલબ કે શીવસ્થાકુલદ્વારા બ્રહ્મસંબંધ સિવાય બીજી રીતે પાખંડમતની પેડે કાન કુંઠવાથી દોષની નિવૃત્તિ થતી નથી. જેઓ શ્રીકાકેરજી અને શ્રીમહાપ્રભુજી તથા શ્રીગુણજી વળી શ્રીગોકુલનાયક વગેરેનાં વચનામૃતને અથવા હૃદયના હાર્દને સમજે નહિ ને તે પ્રમાણે વર્તે નહિ, બ્રહ્મસંબંધ લે નહિ, તેમને પુષ્ટિમાર્ગમાં ગણવા એ અત્યજને નાગરમાં ધુસાડવા જેવી વાત કહેવાય. જેવી રીતે ધર્મના અસર્કકારીઓ અને નાસ્તિકો તથા ધર્મશાસ્ત્રોની આજ્ઞાઓને છુંદનારાઓ અત્યજોની જોડે રાદીવ્યવહાર તથા જલવહેવાર અને રેશવહેવાર કરી દિંદુધર્મનું સત્તાનાશ વાળવા બેઠા છે, તેવી રીતે શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુણજી શ્રીગોકુલનાયક તેમજ અન્ય શ્રીગોસ્વામિબાળકોનાં હાર્દ વચનામૃતને હવે મુકીને બ્રહ્મસંબંધ ન લે, પુષ્ટિમાર્ગિ મર્મોદ્યો ન પાળે, ખુદ શ્રીગોસ્વામિબાળકોએ બ્રહ્મસંબંધપૂર્વક આપેલી બાળાઓને તોડે, શ્રીભાગવતને તથા શ્રીસુબોધિનીજીને શ્રીકાકેરજીને પણ ન માને એમને પુષ્ટિ-માર્ગમાં ધુસાડવાનો પ્રયત્ન કરનાર બહિર્મુખજી છે એમાં જરાય અતિશયોક્તિ નથી. જેવી રીતે અંદરે એર બરેહું હોય ને ઉપર મોંપર દૂધ ભર્યું હોય એવો પડો આપણે ફેંકી દઈએ છીએ એવી રીતે કરવું રહ્યું. વળી શ્રીગોકુલનાયક આગળ શું કહે છે-યદા સર્વજલશેવાળા તાવદેવ ગુણદોષાદિવર્ણના મન્વતિ । યાવદ્ ગંગાપ્રવેશો ન મન્વતિ ॥ મદ્ગાપ્રવેશાનન્તરે સર્વેષાં જલનાં ગંગાત્વેનૈવ સર્વ પર્મોપયોગિત્વં મન્વતિ । તદ્વત્ યાવત્પર્યંતે ભક્તિમાર્ગ્યાચાર્યઃ કૃતં વિવેદનં ચ મન્વતિ તાવદેવ મળવદ્ભજને તદીયગુણદોષાદિવિચારણં સંમન્વતિ ॥

અર્થ:—જેમ સર્વ જળ ત્યાં સુધીજ દૂષિત ગણાય છે કે જ્યાં સુધી તેમનો ગંગાજીમાં પ્રવેશ એટલે સંબંધ થતો નથી. પણ શ્રીગંગાજીમાં પ્રવેશ થયા પછી સર્વ પ્રકારના જળો ગંગાજળજી બની જાય છે, ને તેનો ગંગાજળ પ્રમાણે સંબંધમર્કોમાં ઉપયોગ થાય છે. તેમ અહીં પુષ્ટિમાર્ગમાં જ્યાં સુધી પુષ્ટિભક્તિમાર્ગિ આચાર્યો વડે નિવેદન જીવ ન કરે ત્યાં સુધી ભગવદ્ભજનમાં તે દૂષિત છે, ત્યાં સુધી તેને દોષનો વિચાર સંભવે છે. (પછી પુષ્ટિભક્તિમાર્ગિ આચાર્યદ્વારા) બ્રહ્મસંબંધ કર્યા પછીજ જીવ નિર્દોષ બની મેવોપયોગી બને છે. હવે આપણે વિચાર કરો કે બ્રહ્મસંબંધ શીવસ્થાકુલદ્વારા લીધા વગરનો જીવ ગમે તેવો પવિત્ર હોય છતા પણ નિર્દોષ ન બને, કારણ કે આ જન્મમાં તે પવિત્ર છે, પણ પૂર્વેના સદજ દોષ તે તો નિવેદનદ્વારાજ નિવૃત્ત થાય તે થતા નથી, તો પછી બ્રહ્મસંબંધ ન લેનારાઓ પુષ્ટિમાર્ગમાં સ્વર્ગે પણ ન ગણાય એ દીવા જેવું રપટ છે. અરે આવાઓ પુષ્ટિમાર્ગમાં છે, એવું જે બોધનાર છે, તેને પોતાનાં વચનનું ઉલ્લંઘન કર્યા બદલ શ્રીગોકુલેશ શાપ આપે એમા નવાઈ નથી.

(૨) પ્રદર્શકો નામ સ્વમાર્ગાચાર્યદ્વારા મળવતિ નિવેદનમ્ ॥

શ્રીહરિયાજીગણ એટલે દ્વિતીય લાલજી શ્રીગોવિંદરાયજીના પુત્ર ને શ્રીહરિરાયજીના પિતૃચરણુ આ વાક્ય છે. એનો અર્થ એવો છે કે-બ્રહ્મસંબંધ એતું નામ કહેવાય કે પુષ્ટિમાર્ગિ આચાર્ય-દ્વારા ભગવાનમા નિવેદન એટલે સર્વસમર્પણ.

મદ્ગતવચો નામ સાક્ષાત્પુરોત્તમવંચકર્ણ ॥ તથ શ્રીમદાચાર્યદ્વારા શરણવચનપૂર્વકમ્ ॥ શ્રીમન્ને-ત્સવજીતું આ વચનામૃત છે. બ્રહ્મસંબંધ એટલે સાક્ષાત્ શ્રીપૂર્ણ પુરોત્તમ સાથે સંબંધ કરવો તે, અને તે શ્રીમદાચાર્યદ્વારા શરણે જઈને સર્વસમર્પણપૂર્વક સંબંધ કરવો તે.

અહીં કોઈ એમ કહેશે કે શ્રીમદાચાર્યદ્વારા એટલે શ્રીમદાધ્યાત્મજીદ્વારા, ના એવો ભાવ નથી, ને એવો ભાવ હોય તો તો શ્રીગુણોપજી કે શ્રીગોવિંદરાયજી અથવા અન્ય પણ કોઈ બાળક બ્રહ્મસંબંધ ન કરાવી શકે. વળી આ વચનામૃત કહેનાર શ્રીવલ્લભજીના સમયમાં શ્રીમદ્દાપ્રભુજી સાક્ષાત્ પ્રકટ પિરાજતા નહોતા, એટલે શ્રીમદ્દાપ્રભુજીને જ માટે 'શ્રીમદાચાર્યદ્વારા' એ શબ્દ નથી. અહીં મને મેં બ્રહ્મસંબંધ હાથે તે વખતનો પ્રસંગ માઠ આવે છે એ પ્રસંગ ઉપરથી "શ્રીમદા-ચાર્યદ્વારા" આ શબ્દનો ચોક્કસ નિકાલ થઈ જશે.

મેં એક મહાતુભાવીને પૂછ્યું કે બ્રહ્મસંબંધ લેતી વખતે શુભ્ગાં શી ભાવના કરવી ? આ ભગવદીયના વચનમા મને વિશ્વાસ હતો ને છે, તેઓ બાપાશ્રીના કૃપાપાત્ર દોષ એમના સત્સંગથી મેં પુષ્ટિમાર્ગમા શરણ રચીઠાવું. આ ભગવદીયે કહ્યું કે બ્રહ્મસંબંધ લેતી વખતે બ્રહ્મ-સંબંધ આપનાર શ્રીગોસ્વામી બાળક સાક્ષાત્ શ્રીમદ્દાપ્રભુજી છે. એ ભાવના રાખવી નેહએ. ને છે પણ શ્રીમદ્દાપ્રભુજી. હવે આ વાક્યથી હું બ્રહ્મસંબંધ લેતી વખતે શુભ્ગેવર્તુ' સ્વરૂપ સમજી ગયો, પણ મારા વિચારો એવી આગળ દોડ્યા. ને બ્રહ્મસંબંધ લેતી વખતે જ શ્રીગુરુદેવ શ્રીમદ્દાપ્રભુજી સાક્ષાત્સ્વરૂપ છે, તો સદા કેમ નહિ ? કારણ કે તે તો સદાજ સોતું છે, હીરા તે સદાજ હીરા છે. એકજ વસ્તુ હાથે હાથે બિલ બિલ હોય એ તો ન મનાય. આ વિચારના નિર્ણયમા એવું પરિણામ આવ્યું કે શ્રીગુરુદેવ એ સદાજ સદા આચાર્યશ્રીમદ્દાપ્રભુજી સ્વરૂપ છે, સ્વયં રચાવિરાજાવત્સાહાત્મયાય નમઃ ॥ આ નામનું સત્ત્વ દટ બની ગયું. આજ ભાવના પ્રમાણે શ્રીમદાચાર્યદ્વારા શબ્દ શ્રીવલ્લભજીએ છે એમ સમજાવું. બ્રહ્મસંબંધસંસ્કાર પ્રાપ્ત કરતાં શ્રીગુરુદેવ સાક્ષાત્ શ્રીમદ્દાપ્રભુજી છે એ ભાવના રાખવાથી સંસ્કાર ફળસ્વ નિવડે છે. અરે !! સદાજ સદા શ્રીગુરુદેવ સાક્ષાત્ શ્રીમદ્દાપ્રભુજી છે એવી ભાવના તો ઉત્પૃષ્ટમાં ઉત્પૃષ્ટ છે, એવી ભાવના રાખનારને એ અગ્નિકુવળું સ્વરૂપ તેજ પ્રકારના એટલે શ્રીમદ્દાપ્રભુજીના સાક્ષાત્કાર જેવા અનુભવ પણ આવે. આ વાત અનુભવગમ્ય છે વચનગમ્ય થવી મુશ્કેલ છે. અતુર તેજ કહેવાય કે જે સાનગાં સમજી જાય, ને એકડે સીખતતાં દસ સુધી પહોંચી જાય.

(૪) વિવેદનં તુ સ્વતંત્ર્યમિચન ॥ જત એ શ્રીમદાચાર્યવચનાનો નાચવગાંવત્પ્રતિમહાંગીકારઃ ॥ શ્રીગોકુલોત્સવજીતું આ વચનામૃત છે. આની પૂર્વે શ્રીગુણોપજીને સંબંધ છે. શ્રીગુણોપજી નવ રતની દીકામા કહે છે કે સદા સર્વદા તાદરશી બાળો સાથે સમર્પણ એટલે નિવેદન વિચારવું. હવે નિવેદન એટલે શું ? તો અહીં શ્રીગોકુલોત્સવજી કહે છે કે નિવેદન તેજ કે શ્રીમદ્દાપ્રભુજીના વંશદ્વારા ધ્યેયને સર્વસમર્પણ કરવું.

બીજે કોઈ રસે નિવેદન કરે તેનો પુષ્ટિમાર્ગમાં અંગીકાર નથી, આ વાક્ય તો એમજ કહે છે કે શ્રીવલ્લભકૃપાદ્વારા શરણ ન રચીકરે તે પુષ્ટિમાર્ગમાં નથી, (૧) એકબીજામાં માહોમાહે કાન ડુંકરી બ્રહ્મસંબંધ થયુ એમ માની લેનારા સાંપ્રદાયિક નથી એ વસ્તુ આથી સ્પષ્ટ થાય છે. વળી

જેઓ તેવાઓના કૃદમાં ક્ષાણ શ્રીવલ્લભકુલદ્વારા શરણ સ્વીકાર્યો છતાં તે શરણ તરછોડી પાખંડી બની જાય છે, તેઓ પણ પુણિમાર્ગમાં પ્રવેશ કે અંગીકાર નથી કરાણ કે શરણ સ્વીકારવા છતાં તેને શ્રીવલ્લભકુળના શરણમાં અવિશ્વાસ આળે એટલે તે પુણિમાર્ગથી વિખુટા પડી ગયા. જ્યાં સુધી ગંગાજી સાથે સંબંધ હોય છે ત્યાં સુધીજ ગંગાજીનું જળ ગંગાજી છે, પણ ગંગાના જળને ગંગાજીમાંથી લઇ કોઇ બીજી નદીમાં રેડીએ તો ગંગાજીની મરી સામાન્ય જળ બની જાય અથવા ગંગાજીને ખાળમાં રેડીએ તો ખાળનું જળ ગણાય ને તે અસ્પૃશ્ય બની જાય છે. તેમ શ્રીવલ્લભકુલદ્વારા અલસસંબંધ કરવા છતાં જેઓ શ્રીવલ્લભકુલ સાથેનો સંબંધ તોડી આવા પાખંડીઓ નેડે અવદાર રાખે અથવા લગ્ન જાય તેઓ પણ ત્યાજ્ય છે. ખાળકુંડીમાં પડેલું ગંગાજીના માહાત્મ્ય વગરનું છે. દુઃસંગથી તેનું આધિર્ભવિત્વ નાશ પામે છે અને આવી રીતે બનવાથી પૂજી તેનાથી સદા પ્રવાહનાજ કામ થાય છે, ને પુણિમાર્ગથી તદ્દન દૂર જ પડે છે.

પત્રદ્વારા અલસસંબંધ—પત્રદ્વારા પણ અલસસંબંધ થઇ શકે છે. વાચકવર્ગને વૈષ્ણવધર્મ પતાઢાદ્વારા ખબર છે કે લગવદીય નાના બા ઉતેલીઆવાળા ક્રીળનાને જામનગરવાળા ગોસ્વામી શ્રીઅનિરુદ્ધલાલજીએ મહારાજશ્રીએ પત્રદ્વારા અલસસંબંધ આપ્યું છે છતાં તેઓ ઉત્કૃષ્ટદશ ભોગવે છે. ગુરદેવની તો એમણે જાણી પણ નથી કરી. પણ અહીં પત્ર જેને અલસસંબંધ આપવાનું હોય તેનેજ અને તે શ્રીગોસ્વામીજીનાલગ્ન લખે. સેંકડો વર્ષપર ગમે તેના પર ગમે તેણે લખેવા પત્રને ઉપયોગ આજે ગમે તેને માટે અલસસંબંધમાં ન કરી શકાય. કપોલકૃપિત વાઙ્મયોના બચાવ માટે શ્રીગોસ્વામીજીનાલગ્નના પવિત્ર પત્રોનો ફરી દુરુપયોગ ન થાય. એ પણ આશ્ચર્ય પામવા જેવું છે, શ્રીગોકુલેશ સાક્ષાત આજે નિત્યસીધાની લાપામાં નિત્યસીધામાંથી પત્ર લખતા હોય તો તે આપણે એમનું હાથનું અલસસંબંધ માન્ય રાખીએ પણ આ તો ગમે તેને અલસસંબંધ આપવા માટે શ્રીગોકુલેશે લખેલો પત્ર હશે. તેના ગમે તેને પોતાના વાઙ્મયમાં ધુસાડવા ઉપયોગમાં લે એ પાખંડીની પરિસીમા છે. એવા પત્રદ્વારા અલસસંબંધ લેનારનો બચાવ કરવો એ પણ ખરી ધૃષ્ટતાજ છે એમ કેમ ન માનવું ?

જે પત્રને આધારે પોતાના પાખંડ મતનું રક્ષણ કરી રહ્યા છે અથવા ચલાવી રહ્યા, તે શ્રીગોકુલનાયજીનો કહેવાતો પત્ર હું રણ કરું છું, અહીં પૂણ અર્થના અનર્થ કેવા કર્યો છે ? વા અવળો ઉપયોગ કેવા કર્યો છે તે આપણે તપાસીએ. આ પત્ર ઉપરથી શ્રીગોકુલેશજીની ચતુરાઈ આપણને સમજાઇ જશે. મરકરીમાં પ્રેમજ્વાળાં માટે શ્રીગોકુલેશ હસતા ત્યારે તેઓ સાચું અને પ્રસન્ન થઈ હસે છે એમ માની લેતા, તેમ આ પત્રનો પણ અર્થનો અનર્થ થયો છે:—

સ્વસ્તિ શ્રીવલ્લભાના મટકલ્યાણકૃદમાણદેવદાસદવાલદાસદવામદાસસિંધુજીનારદમજ્જયરામપરમેશ્વરદાસ હીરમણિપ્રયતિશ્વાશિષઃ । 'શમિદ માવત્કમાસાસ્મદે । અપરચ । સદા શ્રીગોવર્દનેશઃ સ્મર્તવ્યઃ । કિંચ શ્રીમદાચાર્યસંબંધિભ્યઃ સાક્ષાન્નામપ્રહ્ણેન પત્રદ્વારા સ્વપ્રદ્વારા વા સેવકદ્વારા નામપ્રહ્ણેન માર્ગસંબંધાદવશ્યં ભગવદંગીકારો ભવત્યેવ નામ સંદેહઃ ॥ તેન યેમાં પત્રદ્વારા નામપ્રહ્ણે સન્દેહસ્તે તથા ધોધનીપાઃ યથા યેમાં સંદેહ હતિયતઃ । તદનન્તરં તદ્વૃત્તાતો છેલનીય ॥ કિમર્થિકં માર્ગસ્વરૂપવિત્તુ ॥

ઉપરના પત્રમાં શ્રીમદાચાર્યસંબંધિભ્યઃ સાક્ષાન્નામપ્રહ્ણેન પત્રદ્વારા સ્વપ્રદ્વારા વા સેવકદ્વારા નામપ્રહ્ણેન માર્ગસંબંધાદવશ્યં ભગવદંગીકારો ભવત્યેવ નામ સંદેહઃ ॥

અહીં આપણે પ્રથમ નામપ્રહ્ણણનો અર્થ સમજીએ, જે શ્રીગોકુલનાયજી સિદ્ધાંતરહસ્યની ટીકામાં પ્રહ્ણસંબંધકરણ નામ ઇતન્માર્ગાચાર્યદ્વારા ભગવાનિવેદનમ્ । તેમૈવ.....સર્વ દોષાનિશ્ચિત્તિર્મવતિ ।

અહારસંબંધનો અર્થ અહીં ભગવાનને નિવેદન કરવું એવા આપે છે, ભગવાનનું નામ મહત્વ કરવું એમ નથી આપના. માટે નામ નિવેદન ને નામમહત્વમાં કંઈક તાત્પર્ય હોવું જોઈએ. આપણે નાના બાળકને અહારસંબંધ એકદમ નથી આપવાતા પણ પ્રથમ નામમહત્વ એટલે નામ પમાડીએ છીએ. આ નામમહત્વ એટલે મધુ વખત અષ્ટાક્ષર જપાવી માળા પહેરાવવી તે. નામમહત્વ એટલે પ્રભુનું નામ મહત્વ કરવું, એટલે માત્ર અષ્ટાક્ષર મંત્ર લેવો. આ અષ્ટાક્ષરમંત્ર સેવામાં પત્રદારા, સ્વપ્નદારા કે સેવકદારા લેવામાં વાધો ન હોય, આ બાબતમાં તો શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ પણ નામ મહત્વ કરાવવાની (અષ્ટાક્ષર આપવાની) આજ્ઞા શેઠ કાશીવાળા પુરુષોત્તમદાસ, નરેન્દ્રાવાળા ચોપાળદાસ અને આજ્ઞા હરિવંશજી વગેરેને આપી હતી, પણ તે છતાં પાછળથી અહારસંબંધ શીવસંબંધકદારા કરતા, જે નામમહત્વ સેવકદારા જ કરાવવાનો અર્થ અહારસંબંધ કરાવવું એવોજ હોય તો જાણે જાવન ચોરાસીમાં આપણે વાંચીએ છીએ કે અમુક વૈષ્ણવે અમુક વૈષ્ણવને અહારસંબંધ માટે પત્ર લખી આપી શીવસંબંધ કે શ્રીમદ્દાપ્રભુજી પાસે મોકલ્યો. જે વૈષ્ણવનેજ અહારસંબંધ આપવાની સત્તા કે ચોખ્ખતા હોય તો ગોતેજ અહારસંબંધ આપે, પત્ર લખી આપી શ્રીમદ્દાપ્રભુજી પાસે કે શ્રીગુરુસંબંધ પાસે અહારસંબંધ કરાવવા શા માટે મોકલે? માટે નામમહત્વ એટલે અષ્ટાક્ષરમંત્ર લેવો, નહિ કે અહારસંબંધ. પછી કહે છે કે માર્ગસંબંધાદ્યદર્શ મગવદંત્રીકારો મત્સ્યેષ ન સંવેદ: અહીં કહે છે કે માર્ગસંબંધાદ્ય. એટલે નામમહત્વ કરવાથી માર્ગનો સંબંધ થાય છે. નામમહત્વ એટલે અષ્ટાક્ષર મંત્ર લેવાથી પ્રભુ તરફ જવાનો માર્ગ તેના સંબંધ થાય છે. જેમ આપણે રસ્તા ન દોડી હોય તો કોઈ આપણને જતાવે કે આ માર્ગ છે. આ વખતે આપણે રસ્તા પર પગ મુકીએ તો માર્ગનો સંબંધ કયો કહેવાય. એ રસ્તે રસ્તે જઈએ એટલે ઇચ્છિત રથને પહોંચીએ. એટલે નામમહત્વ એટલે અષ્ટાક્ષર લીધા પછી અષ્ટાક્ષર જપીએ ને અષ્ટાક્ષર લીધા પછીની ખાળા ચોખ્ખ મર્પદાઓ પાળીએ, તો મગવદંત્રીકારો મત્સ્યેષ. પછી અહારસંબંધ થાય છે.

આપણા માર્ગમાં તો અહારસંબંધ કરવું એજ ભગવદંત્રીકાર છે, માટે ઉપરનો સંસ્કૃત શબ્દનો અર્થ અહારસંબંધ નહીજ થાય છે, મત્સ્યજી કે જે નામમહત્વ એટલે અષ્ટાક્ષર લે છે, તેને અહારસંબંધ લેવાનું નહીજ થાય છે. અષ્ટાક્ષર મંત્ર લેવો એ અહારસંબંધની વધાઈ છે. વધાઈ તો સ્વપ્નદારા, પત્રદારા કે સેવકદારા પણ મોકલી-શકાય. પણ વધાઈનું ફળ તો અહારસંબંધ છે. વધાઈ મળ્યા એટલે ફળ નહીજ છે. માટે એવ શબ્દ વાક્યમાં વાપર્યો છે, અષ્ટાક્ષર મંત્ર એટલે નામમહત્વરૂપ વધાઈ મળ્યા એટલે વધાઈનું ફળ ભગવદંત્રીકાર એટલે અહારસંબંધ જરૂર યશે એમાં સંદેહ નથી. આપણે જાણીએ છીએ કે, આપણા માર્ગમાં નામમહત્વ એટલે અષ્ટાક્ષર લેવો એ પણ મોટી મહત્તાવાળી વસ્તુ છે. વૈષ્ણવને ત્યાં બાળક જન્મે કે થોડી મુદત પછી તરતજ નામમહત્વ કરાવવું જોઈએ, કારણ કે વખતે બાળપણમાં આદ્યું જન્મ તો તેના છતાં પ્રભુના નામ સાથે સંબંધ થવાથી જીવ જન્મમાં પણ અહારસંબંધની સવડ મળે છે. આમ બાળક જન્મ્યું હોય ને કોઈ શ્રીગોસ્વામિબાળક પાસે ન હોય તો અષ્ટાક્ષર તેને વૈષ્ણવ આપી શકે ને તે પણ તાદશી વૈષ્ણવ હોય તોજ આપી શકે. સેવક કહેવાનું કારણ એજ છે, કે જે શ્રીમદ્દાપ્રભુજીના સેવક હોય તેણે શ્રીમદ્દાપ્રભુજીના લક્ષિતમાર્ગની સર્વ મર્પદાઓ પાળવીજ જોઈએ. સેવક તેજ કે યુવની આજ્ઞા પ્રમાણે વર્તે; શ્રીમદ્દાપ્રભુજીની આજ્ઞાઓ પ્રમાણે જરાબર વર્તનારજ નામમહત્વ એટલે એટલે અષ્ટાક્ષર પણ આપી શકે, અને તેવો સેવક તાદશીજ હોય. સ્વપ્નદારા આજ્ઞા પ્રમાણે કરે છે છતાં અહારસંબંધ પછીથી થાય છે, એવા દાખલા, પણ આપણા

માર્ગમાં છે. સંભળવાળા દામોદરદાસને પ્રભુએજ સ્વપ્નદ્વારા આજ્ઞા કરી હતી કે, આ પત્ર વાંચે તેને શરણે જાજે. આ આજ્ઞા એ નામગ્રહણ છે, ને એ નામગ્રહણથી પાછળથી એ પત્ર વાંચીને ખરાબર સંમગ્નતાના શ્રીમહાપ્રભુશ્રી અહસંબંધ લઈ શરણ રીકાડે તે ભગવદંગીકાર છે. સ્વપ્નદ્વારા શરણની આજ્ઞા પ્રભુએ કરી એટલે અહસંબંધની સવડ નહીજ થશે એમ નહીજ છે. એમાં સંદેહ નથી એમ શ્રીગોકુલેશ પત્રમા કહે છે.

પત્રદ્વારા પણ નામગ્રહણ કરાવાય છે, જે સાક્ષાત પાસે જઈને અહસંબંધ કરવાની સવડ ન હોય તોજ આમ પત્રદ્વારા નામગ્રહણ કરાવાય છે, અથવા અહસંબંધ પણ અપાય છે. હવે વિચારવાનું એ છે કે અહસંબંધ એકવાર કર્યા પછી બીજાવાર ન થઈ શકે. પણ પત્રદ્વારા અહસંબંધ કરાવું હોય ને ફરી શ્રીગુરુદેવનો સમાગમ થાય તો સાક્ષાત બીજાવાર સંતિધાનમા અહસંબંધ લઈ શકાય.

સેવકદ્વારા નામગ્રહણ એટલે અષ્ટાક્ષર લેવામા પણ શ્રીવક્ષભકુળ પાસે લેવાની અનુકૂળતા કે સવડ ન હોય તોજ સેવકદ્વારા લેવું જોઈએ. સવડ શ્રીવક્ષભકુલદ્વારા હોય છતાં કોઈ વૈષ્ણવ આપે તો તેમાં તો મોટો અપરાધી બને છે, નરોડા શ્રીયુસાંધિજિરાજતા હતા છતાં ગોપાળદાસે નામગ્રહણ કરાવવાની હડ કરી તો પરિણામ કેવું વિપરીત આવ્યું? તે આપણે જાણીએ છીએ. તો શ્રીવક્ષભકુળદ્વારા સંપ્રણે સવડ છતાં મહદ બની જવાની આંકાંક્ષાથી વા પૂજ્યતાની આકાંક્ષાથી અથવા સેવકો વડે પોતાની ખરાબ વાસનાઓ પૂરી કરવા અહસંબંધ આપવું એ મહાપાપનીઓનું કામ છે.

વળી અહસંબંધ ન કર્યું હોય તે તો તદ્દન નગરે રહે તેના કરતાં પાખંડી પણ શુરુ કરે એ સમજી શકાય પણ શ્રીવક્ષભકુળ પાસે અહસંબંધ લીધું હોય તેવા વૈષ્ણવની શ્રીયુસાંધિજિ બાળકની માળા ઉતરાવી પોતે અહસંબંધ આપી નવી માળા ખેરાવે આ શ્રીગોકુલેશની કઈ આજ્ઞા પ્રમાણે? હું તો આવી વાતો સંભળીને સમસતી બનું છું, ને આવા અર્થનો અનર્થ કરનારા ને તદ્દન પુષ્પિકાકિતમાર્ગથી વિપરીત કામ કરનારાઓની તથા તેવાઓનો પક્ષ કરનારાઓની શ્રીગોકુલેશજી શી વચે કરશે એજ હું નથી સમજી શકતો !!

વળી પત્રમા દશમ સ્કંધે શ્રીભાગવતજીનો દાખલો આપે છે, તો શ્રાદ્ધની બાબતમા શ્રીભાગવતજીના સપ્તમ સ્કંધનો શ્લોક નહિ માનવાનો કે નહિ આચરવાનો, ને આ શ્લોક ફાવતો આવ્યો એટલે પકડી પડવાનો આ ક્યાનો ન્યાય? શું શ્રીભાગવતજીના ફાવના શ્લોકો માનવાના છે ને ન ફાવના એટલે જરા અધરા પડે તે નથી માનવાના? આ ન્યાય એવો હશે કે ફાવે તે સહેલું સહેલું શ્રીભાગવતજીનું પાળવું ને જરા અવરૂં કે પોતાની હાજતોમાં નડે એવું હોય તો મુકી દેવું? વળી શ્રીભાગવતજીના આ શ્લોકમા તો સ્વર્ગ સમુત્તીર્થ શબ્દ આપે છે, વર્તર્થ પણ નહિ કહેતાં પણ સમુત્તીર્થ શબ્દ કહે છે તેમા પણ તારતમ્ય છે. પોતે સંસાર સાગરમાંથી તદ્દન પાર ઉતરી જઈને બીજાને ઉતારે છે, એવો ભાવ એમાં છે. શું તેઓ તદ્દન સંસાર સાગર તરી ગયેલા છે કે બીજાને તેઓ તારી શકે? શું આ અનર્થશીવ કાર્યોના બચાવ માટે સહવસ્તુનો ઉપયોગ નથી થતો?

જે શ્રીગોકુલેશ ખાસ દુર્ગામાર્ગવાચાર્યદ્વારા મગવન્નિવેદનમ્ આપે અહસંબંધ કરવાનો, અર્થ આપે તે વળી બીજાવાર સેવકદ્વારા અહસંબંધ કરવાની હિમાયત કરે પણ ખરા? નજી કરે. માત્ર તાદશી વૈષ્ણવ હોય તો નામગ્રહણ એટલે અષ્ટાક્ષર આપી શકે એવું તો કહે છે. ત્યારે

અવળો અર્થ સમજી લીધો ને કાવતું બંધ બેસાડી દીધું. વળી તેનેવ.....સર્વદોષનિહતિર્મવતિ ॥ આથી તો ઉપલી વાત શ્રીવૃક્ષભક્તિદ્વારા અહસંબંધ કરવાની દૃઢ યાચ છે. તેમજ એટલે શ્રીવૃક્ષભક્તિદ્વારા અહસંબંધ કરવાથી સર્વદોષનિવૃત્તિ યાચ છે. જો સેવકદ્વારા, પણ અહસંબંધ એટલે ભગવન્નિવેદન થઈ રાકતું હોત તો એતન્માર્ગ્યાચાર્યદ્વારાની પાસે જા સેવકદ્વારા એવો શબ્દ મુકતાં શ્રીગોકુલનાથજીને પરિચય પડત ? ના, ના, જેમણે ખૂબ દીકાઓ ને અંશે લખ્યા તેમને સેવકદ્વારા એટલો શબ્દ લખતાં શીઠ્ઠરતને પરિચય ન જ પડત !!!

આચાર્યશ્રીઓદ્વારાજ અહસંબંધ લેવાની વાણી તો દીકામાં હોવાથી તદ્દન નિશ્ચયાત્મક છે. વળી ઘણી દીકાઓ એકઠી કરતાં આવુંજ સિદ્ધ થાય છે, તેથી તે વધારે પ્રમાણભૂત છે. અને શ્રીગોકુલેશનો પત્ર તો તેઓ પાસે એકજ છે. અને કદાચ ખરે હોય તો આ શ્રીગોકુલેશના પત્રને પ્રમાણીભૂત માની તે પ્રમાણે વર્તવું, ને અને બીજાં ભક્તિમાર્ગીય મર્પાદા પાળવાનાં શ્રીગોકુલેશનાં વાક્યો પ્રમાણભૂત ન માનવાં, આ પણ કલ્પિત વાક્યાની કલ્પિત અનન્યતા ને ન્યાયવૃત્તિને ધન્ય છે !!!

દીનકરિકર.

હૃદયના નાદ !

(૧) આ સર્વ અહંતામમતાર્થ સંસાર મિથ્યા મૃગજલસમાન છે. તેમાં હુબતા આ હૃદ્ય હવને પ્રભુ પોતાની કૃપારથી નાવદારા બચાવે છે.

(૨) આ જીવ પ્રભુનો દાસ છે અને પ્રભુસેવા એ જીવનનું સાધન તથા ફળ છે.

(૩) લૌકિકમાં જેમ સ્ત્રીને પતિસંબંધી સુખમાં મન રાખી ફૂલ કરવું અનુકૂળ નિવડે છે, તેમ આ જીવ તો અલૌકિક શ્રીપ્રભુના મુખારવિંદસ્વરૂપ શ્રીવૃક્ષભક્તિદ્વારા સાક્ષાત્ શ્રીપસોદાત્સંગ લાભિત પ્રભુ શ્રીકૃષ્ણ સાથે સંબંધ હોવાથી વિશેષ નિશ્ચિંત છે અને મજેસો અણક્ષરમંત્ર એ જીવનનું ઔપધ છે.

(૪) પ્રભુ સર્વ કરવાને સમર્થ છે, માટે ચિંતાનો સર્વથા ત્યાગ કરવો એમાં એવ છે. કારણ જીવ કંઈ પણ કરવાને અસમર્થ હોઈ ચિંતા કરવી નિષ્ફળ છે.

(૫) શ્રીકૃષ્ણ સર્વ શુભ કરશેજ એ નિશ્ચય છે.

(૬) મારું સર્વસ્વ ધન શ્રીપ્રભુજ છે. શ્રીકૃષ્ણ પસોદાત્સંગ લાભિત પ્રભુ મારા હૃદ્ય છે.

(૭) હૃદયમાં દ્વેષભાવ તેમ ક્રોધ પણ વરણ પ્રત્યેનો અભાવ એજ પ્રભુથી વિમુખતા છે. સર્વ વરણ પ્રભુમય અનુભવી રહેવું એજ પ્રભુનિદેશનું દાર છે.

ફક્ત રસેશ પ્રભુ શ્રીકૃષ્ણજ સાચો આનંદ છે. તે આ નિઃસાધન જીવને પ્રભુકૃપાએ મળશેજ તેવો વિશ્વાસ છે. તે ધીર તરફ હૃદયમાં અદર્શિત વિરદાશિ પ્રભુ બન્યું તો રાખે એટલું યાચું છું.

“દીનદારા,”

ગાંડા ભક્ત !

(લેખક:—રા. “શારદ” સુ. દડી.)

એ હતો તો જુના જમાનાના, નહોતી એમનામાં સાહિત્યભરી વાણી કે નહોતાં એમનામાં આ ફુનીઆનાં ડહાપણો ! પણ હા, એકજ વાત તેમનામાં હતી, અને તે એ કે શ્રીકૃષ્ણજીની સેવા, આ ઉપરાંત કોઈ વૈષ્ણવની પોતાનાંથી જનતી સેવા કરતા, આ સિવાય ભાગ્યેજ એમના એકધારી જીવનમાં આ ફુનીઆનો બ્યવહારપ્રસંગ આડે આવતો. બાલપણથીજ માતપિતા તરફથી શ્રીકૃષ્ણજી અને શ્રીકૃષ્ણજીની સેવાનું જ્ઞાનજ વારસામાં મળેલું હતું. લોકો તેમને ગાંડાભક્ત ના નામે ઓળખતા અને આ સાવખોડું પણ નહોતું ધણી વખત કોઈ દુઃખી વૈષ્ણવને જોઈ તેમની પાસેની ગમે તેવી કીમતી વસ્તુ આપવામાં પણ પાછું વાળી ભાગ્યેજ જોતા. ધણી વખત બને છે તેમ નીચ લોકો ભક્ત તરફ દ્રેષ્યી જોતા, પણ આથી આપણા ભક્તને જરાયે હરખ શોક નહોતો થતો. આ સિવાય બીજી તેમના વિશાળ હૃદયની ઉચ્ચતા વધારે જગજહેર હતી. ગમે તેવા દુઃખીમાને તેમના ઝુંપડામાં રથાન હતું. એમના શ્રીકૃષ્ણ દાસ્યથી અને “ભાષ” પ્રભુ બધું હીકજ કરશે, એવા આશ્વાસનથી ઘણાં નિરાશ થયેલાં દુઃખી હૃદયોને આરાના ઓપ ચઢના પણ આ બધાય વચ્ચે કઈ દુઃખ હોય તો ફક્ત તેમની ગરીબાઈનું. ભક્તને પૈસા સંબંધી ધણી વખત ખૂબજ અડચણો વેડવી પડતી. આજે ભક્તરાજ એવીજ કોઈ ચિંતાથી ઉદાસ દેખાતા હતા. જે કે નિત્ય પ્રમાણે મુખ પર તો આનંદની રેખાઓ દેખાતી હતી. છતાં પણ એ આનંદની પાછળ જોઈ કોઈ ઉંડી વિચારમંજતાએ ઘેરા ઘાંચો ના હોય ! તેમ ઉંડી નજરથી જોનારને લાગ્યા વિના ના રહે.

“ગાંડા ભક્તનું ઘર આ” બહાર ખડકી તરફથી આવજ આવ્યો. બધી ચિંતા ભૂલી ભક્ત સફળતા બોલ્યા “હા, ભાષ ! આવા શું કામ છે !” સેવક પોતેજ ગાંડા ભક્ત

“ભક્તરાજ, પ્રણામ અને જયશ્રીકૃષ્ણ”

“ભાષ જયશ્રીકૃષ્ણ” સ્મિત દાસ્યથી આવનાર વ્યક્તિને નવરાવી નાંખતાં ભક્ત બોલ્યા. “બોલો, શી આરા છે ?”

“ભક્તરાજ ! ફુનીઆના દુઃખીને તમારા ઝુંપડામાં રથાન મહે છે માનીને આપની પાસે એક ચાચના કરવા આવ્યો છું.”

“જડબાગ્ય મારાં, બોલો તમારું હું શું રહેં કરી શકું ?” આવનારના કપાળમાંનું તિલક જોતાં ભક્ત બોલ્યા.

“પ્રભુ” આવનાર વ્યક્તિનો કંઠે દુઃખની લાગણીથી ગળગળો થઈ જતા કહેવા લાગ્યો— દીકરીનાં લગ્ન છે, હું પણ હતો તો હીક હીક પણ છેલાં કેટલાં વરસથી વેપાર રોજગારમાં નુકસાની જવાથી વિટંબનામાં આવી પડ્યો છું. ગરીબાઈ ઘર કરી મારી પાસે રહી છે. ઘણું કરગર્યું પણ દીકરીનો સાસરો લગ્ન લેવાની હક લઈ બેઠો છે.” આવા સંજોગમાં મારા માટે બેજ રસ્તા ખુલા છે, કાં પો ગમે ત્યાંથી રૂપીઆ મેળવવા અગર તો મ.....” દુઃખના લારથી અને ભવિષ્યની ચિંતાથી બાકીના શબ્દો આવનાર વ્યક્તિ ન ઉચ્ચારી શકી.

“કોઈ જાતની શીકર નહિ. ભાષ પ્રભુ બધું હીકજ કરશે” મોં પર અતરસો જરાય લાવ દેખાડ્યા વિના એના એજ સ્મિત દાસ્યથી જોઈ કશું ન હોય તેમ પ્રત્યુત્તર વાળ્યો.

જે જમાનાની આ વાત છે એ જમાનામાં આજના જેવી ખેંકા નહોતી, કચેરીઓ નહોતી આપણા લક્ષ્મણનું તો એક જ કંઈ બધું હતું. દાણકારનું તરીકે તેમને દરબારમાંથી માસિક વેતન મળતું અને એમાં પોતે આનંદ માની શીદાકારણને અંતરના લાડ લગાવી જીવન સાર્યક કરતાં! આવતી કાલેજ દરબારમાં ભરવાના રૂ. ૧૧૦૦) પોતાના હાથે ગણી ભંડન સેવામાં ન્હાયા હતા. એ યાદ આવતાં પોતાના ધર્મભાઈનું કાર્ય કરી શકશે એ વિચારે ભક્ત મલકાયા પછી આવતી કાલે પોતાનું શું? એ વિચારે દાણગુઝાયા, દાણબારઆંખ મીચી, જાણે વિચાર કરી એક નિશ્ચય પર આવ્યા હોય તેમ જણાયા. “કંઈ નહિ. માઈ તો થઈ પડશે. પછી મારા ધર્મભાઈ પર આવેલું આટલું સંકટ દૂર ન કરી શકું” એ મારી કેવી અધમતા ” આમ બદખલી રાજભોજ સરાપી આરતી અને શીદાકારણને અનુસર કરી બહાર આવ્યા. અતિથિને પ્રસાદ લેવરાવી લઈ નિવૃત્ત થયા બાદ રૂપીઆ અગીઆર સોની ભરેલી થેલી અતિથિના હાથમાં આપી, બોલ્યા “જાઓ જલ્દીથી પ્રભુ તમારું શુભ કાર્ય પાર પડે.”

“ ભક્તરાજ આવનાર બ્યકિત ઉપકારથી આશીર્વાદ થતી બોલી પછી આવતી કાલે તમારું શું ”?

“ ગાંડા. ” માતા નાના બાલકને રમકડું આપી સમજાવે તેમ સમજાવતા બોલ્યા, “ એ તને શું ચિંતા ? પ્રભુ બધું હીકજ કરશે ”

કાંઈ વિજયી થોડો વિજયના હાથથી સમરાંગણ તરફ નેષ્ટ રહે એ અદાથી નેષ્ટ રહ્યા.

આજે આખા મધુપુરમાં એક જ વાત ચાલી રહી છે. ચોરે ચોરે અને દરેક જાણીતા સ્થળોએ ગાંડાભક્તે રૂપીઆ ૮ આપવાથી રાણાએ તેમને કેદખાનામાં નાખ્યાની વાત લોકો ઉદાસ બનીને કરી રહ્યા છે ! નીચ સુદિના ભક્તનું છુદ્ડ નેવામાંજ રાજ એવા કેટલાક કેષી થોકો આનંદથી આંખો નચાવી વાતો કરવા લાગ્યા કે:- “ એ તો ભક્ત બધાય એના ” એમ માની આનંદ પામે છે.

ત્રીમજ દિવસે હજુરીઆ મારફત ગાંડા ભક્તે રૂપીઆ ઠાને રા માટે આપ્યા, એ સાંભળીને રાજાજીનું અંતર ઉમંગમાંથી ભરાઈ ગયું. મારી પ્રજા આક્રમી બધી ધર્મોભિમાની છે એમ જાણી પોતાને કૃતકૃત્ય જાણવા લાગ્યા. ભક્તને પોતાની પાસે બોલાવી મારી મારી કહેવા લાગ્યા—

“ ગાંડાભક્ત કયું મનમાં લાવશે નહિ ” “ અને તો આ કુનીઆના વિલાસ અને લાલ-સામાં ઉછરેલા જીવે. આપના હૃદયની ઉચ્ચતા શી રીતે ઝોળખી શકાય ? ”

“ કંઈ નહિ રાજન ” “ એમાં તમે શું કરો ? પ્રભુ જે કરે એ હીકજ કરે. ” ત્રણ દિવસના કેદખાતામાં સખત ઉપવાસ નેચ્યા છતાં એના એજ હાસ્યથી જવાબ આપતા ભક્ત બોલ્યા.

“ અને ભક્ત ” રાજાજી આ ધર્મ ગ્રેમી ભક્ત તરફ આનંદથી નેત્રાં બોલ્યા. “ આગળથી મને કીધું હોત કે આવા કામમાં મેં રૂપીઆ વાપર્યાં છે. તો આ કુઃખ વેડણ પડત ” !

“ રાણાજી, એમાં મેં શી ભેટી ઘાડ મારી હતી કે તમારા આગળ કહી બતાવું ? પોતાના એક કુખી ધર્મભાઈ પ્રત્યે મેં સહજ માથા ખતાવી એ તો મારી ફરજ છે ” “ હવે જવાની રમ્મ છે ? ” રાજાએ આગ આપી.

ભક્તે હાથે ભેર ઘેર આપી સેવામાં ન્હાયા ! આજે પણ મધુપુરના લોકો ગાંડાભક્તે પોતાના ધર્મભાઈને માટે વેડેલું સંકટ સંભારી વૈષ્ણવ હૃદયની ઉચ્ચતા માટે મગર અને છે.

॥ श्रीगोकुलेन्दुर्जयति ॥

॥ श्लोक ॥

स्वरित श्रीमत्सदानंदो रसात्मा पुरुषोत्तम ।

श्रीवल्लभाचार्यसुतो गोविन्दो जीवतात् चिरम् ॥१॥

श्रीदेवकीनंदननंदनप्रभोः श्रीगोकुलेन्दोऽधरणानुरागिनः ॥

श्रीवल्लभाचार्य तवात्मजः श्रीगोविन्दरायो भवतात् चिरायुः ॥२॥

॥ सौरठा ॥

श्रीमद्वल्लभलाल भये तिहारे लालजी,

मुन भक्तन प्रतिपाल भक्ति बधाई दीजिये ॥१॥

वल्लभलाल रसाळ लाल बधाई सुनत ही ॥

निज जन भये निहाळ पुष्टिभक्ति दृढ करिहोये ॥२॥

निज भक्तन रिशवाल श्रीवल्लभ वल्लभ सदा ॥

जियो तुम्हारे लाल, सेवो गोकुलचन्द को ॥३॥

रचयिता उपाध्याय काशीनाथ भट्ट-धीकानेरवासी ।

दीदा—गोकुलेन्दु सेवन निरत वल्लभाचार्य बुल चन्द ॥ श्रीदेवकीनंदन सुवन
वल्लभलालहि वन्द ॥१॥ प्रगटे तिन्के मेह महि लाल भुवन विल्यात ॥ ता पर रच
फविता कहूँ सो सब श्रवन सुहात ॥२॥

छप्य—बखत नखत नव ग्रह रु लग्न शुभ संवत आयो । सज्जन वैष्णव संत
साधुजन मन हरखायो ॥ प्रवृत्त दृश्य विचित्ररूप पावन अति पायो । पुष्टिमार्ग मो
पुष्ट दुष्ट मत बुन्द विलायो ॥ पुनि तात मात शृण तीन तें ऊकण होय आनंद छये ॥
जय वल्लभलाल कृपाल ग्रह प्रगट लाल बाबा भये ॥१॥

(२)

आनंद अतिही अमंद अवनि मंडळ महीं मच्यो ॥ दे आशीष अनेक वेद विप्रन
मिल बच्यो ॥ प्रेम पूर्ण अनुराग राग रंग वज बहु रच्यो ॥ कीरति कलित वस्त्रान दान
याचक जन जच्यो ॥ अभिराम कामवन गाम विच घामरमंगल छये ॥ श्रीवल्लभलाल
रसाळ गृह प्रगट लाल बाबा भये ॥२॥

रचयिता कविरस्त भट्ट भाऊलाल शर्मा-धीकानेरनिवासी ।

શ્રીગોવિંદલાલ ખાવાશ્રીનું ઘોળ.

આજે આનંદનો દિન છે રે, મારે હૈયે હરણ ન માય હો બેની
 ગોકુળમાં આવી વધામણીરે, શ્રીગોવિંદલાલ ખાવા પ્રગટ્યા હો બેની. ૧
 દૈવી તે જીવને તારવારે, ભૂતલ પરીયો દેહ હો બેની,
 કારતક માસ સોહામણીરે, વાર ભલો શુભાર હો બેની. ૨
 ગોકુળમાં વાળંત્ર વાગીયારે વૈષ્ણવની બીકાલીક હો બેની,
 ગોકુળમાં શ્રી બેઠક શોભતીરે, આનંદ ઓઝવ થાય હો બેની. ૩
 મંગલ કીરતન ગવાય છેરે, કુમકુમ કેસર છીરકાય હો બેની;
 કામવનમાં આનંદ સમુદ્ર ઉમગ્યોરે, ગોકુલમાં રસની રેલમ રેલ હો બેની. ૪
 નયણે આ મુખ નીરખીયુંરે, તેના ભાગ્યતણો નહીં પાર હો બેની,
 દાસી જસોમતીની વિનંતિરે, રાખો ચરણની પાસ હો બેની. ૫

[આ ઘોળ દેવગઢખારીઆવાળા બક્ષી મગનલાલભાઈનાં પુત્રી અ. સૌ. બહેન જસોદાબે રચેલું છે.]

શ્યામ-ગીત.

(ઢાળ—સીતારામનાં સન્તાન)

પ્રભુભક્તનાં શુભામ, ટાળે દુઃખડાં તમામ;
 ઝીલો હો ! શ્યામ-ગીત સ્નેહથી.

સાખી—કરે કસોટી ભક્તની, આખી દુઃખ હુંગેશ;
 વળગ્યો રૂહે તહેને છતાં, બહાલો લાગે વિશેષ.
 રાગે શ્યામ ઉરધામ, બળે ભાવથી તમામ;
 ઝીલો હો ! શ્યામ-ગીત સ્નેહથી.

સાખી—ખાધી ભાણ વિદુરની, આખ્યાં શવરી-જોર;
 સુદામાના સ્નેહથી, ખાધા તાંડુલ જોર.
 કર્યો ન વામ કામ, બળે ભાવથી તમામ;
 ઝીલો હો ! શ્યામ-ગીત સ્નેહથી.

સાખી—દ્રૌપદીની પત રાખવા, પૂર્યાં ચીર અનેક;
 કૌરવ કપટી તો સુવા, ભજજો રાખી ટેક.
 એની દષ્ટિ મુખ-ધામ, બળે ભાવથી તમામ;
 ઝીલો હો ! શ્યામ-ગીત સ્નેહથી.

સાખી—મીરાં ને મહેતા તણી, કાખ્યાં કટ કરોડ;
 ભવની ભાવટ ભાગ્યે, પૂરશે પ્રભુજી કોડ.
 જીતો નિન્દગી-સંઘામ, બળે ભાવથી તમામ;
 ઝીલો હો ! શ્યામ-ગીત સ્નેહથી.

મૂળજલાર્ધ પીતામ્બરદાસ શ

૧ હા પ્રભુ!! આ સર્વ તારું છે, અને હું તારો દાસ છું, તારે શરણે આવેલો છું તારી પ્રેરણા પ્રમાણે વર્તવું જોઈએ એ પ્રમાણે અનુસંધાન રાખવું.

૨ અસત્ય જોલવું નહિં. તેમજ જેમાં પ્રભુનું નામ ન આવે તેવું વાક્ય જોલવું નહિં. લૌકિક વ્યવહારથી જોલવું પડે તેમાં જરૂર જેટલું જ જોલવું. તૃથા આલાપ, કોઈની નિંદા કે એવી અન્ય વાર્તાઓથી વેગળા રહેવું.

૩ અહર્નિશ પ્રભુનાં નામનું સ્મરણ કરવું. મનમાં કોઈ વખત પણ જોડા વિચાર કરવા નહિં. જોડી ઇચ્છાઓ તેમજ તરંગો ઉઠવા દેવા નહિં. પ્રભુ ગિરાજવા લાયક હૃદય બનાવવા માટે, તેને પવિત્ર રાખવાની જરૂર છે. કારણ કે કોઈ જોડો માણસ આપણે ઘેર આવનાર હોય ત્યારે તેને રહેવા માટે સ્વચ્છતા સંબંધી કેટલી કાળજી રહે છે, તો ઇશના પણ ઇશ ગિરાજવા લાયક શુદ્ધ અને પવિત્ર અંતઃકરણની જરૂર છે. અને જોડા વિચારોથી અંતઃકરણ મલિન થાય છે. તેથી તેમાં પ્રભુનો આવેશ ઠદિ પણ થતો નથી.

૪ લૌકિક ઘર ધન સ્થિતિ સંબંધી ચિંતા કોઈ વખત કરવી નહિં, કારણ કે પ્રભુ સર્વસમર્થ છે. તેનું કર્તૃ થાય છે, તો વધા ચિંતા કરવાથી કાંઈ અર્થ સરતો નથી. ઉલટું પ્રભુની સેવામાં સ્મરણમાં, વિશ્લેષ પડે છે, અને તેથી જેને માટે ચિંતા કરીએ તે સિદ્ધ થતું નથી, અને બન્ને ગાંઠાની હાનિ થાય છે.

૫ પ્રભુ સર્વના સ્વામી એટલે માલીક-કર્તા છે. તેથી સર્વને સુખ આપવાવાળા છે. તેમાં પોતાના લક્ષ્યને જરા પણ વિસારતા નથી.

૬ હુઃખની વેળાએ સદા ધીરજ રાખવી કેમકે જેમ લૌકિક સુખ અસ્થિર છે, તેમ હુઃખ પણ અસ્થિર છે, તો તેની અવધિ પૂરી થનાં ચાક્યું જશે. હુઃખ એ પણ માણસની ઉત્તતિમાં સહાયક છે. કારણ કે એક ને એક ગાંઠામાં (સુખમાં) રહેલાને કસોટી વગર ઉત્તતિ થઈ શકતી નથી.

૭ હુઃખેશાં વિવેક અને ધીરજ રાખવી અને પ્રભુનો આશ્રય કદી પણ મનથી છોડવો નહિં. પ્રભુ સર્વ કરવાને સમર્થ છે, તો તેના આશ્રયે જે રહે છે તેનું અનિષ્ટ કદી પણ કરતા નથી. કદાચ પરીક્ષાર્થ અથવા અનિષ્ટ નિવૃત્તિને અર્થે કાંઈ વિપરીતપ્રવૃત્તાવે! તો તેવા સમયમાં પણ પ્રભુ મારાં લલ્લાને માટે કરે છે એવું અનુસંધાન રાખી પ્રભુનો જ આશ્રય રાખી રહ રહેવું. તો ભગવાન કે જેનું નામ હરિ છે તો તે લક્ષ્મીના હુઃખોને નિશ્ચય હરશે જ.

૮ હુઃખેશાં સત્સંગ કરવો એટલે જે સદા શરીરથી તેમજ મનથી પવિત્ર હોય, અસત્ય અથવા મિથ્યા ભાવણ કરતા ના હોય, પ્રભુમાં પ્રીતિ હોય, પ્રભુસેવામાં તથા કીર્તનકથામાં તત્પર હોય, સકળ વિદ્યમાં સમાન ભાવવાળા હોય, સામાનું હુઃખ દેખી જેનું અંતઃકરણ જોદ પામતું હોય, પ્રભુ ઇચ્છાથી સત્ય માર્ગે જે પ્રાપ્ત થાય તેમાં સંતોષવાળા હોય તેવાઓનો જ સંગ કરવો.

જીવ, સાવધાન ।

(લે. શાહ હીમતલાલ લોગીલાલ, મુ. સાવલી.)

- ૧ કોચ એ આંકાશરૂપ છે અને કોષાવેશ થાય તો હૃદયમાં પથ્થરાપથી શુદ્ધિ કરવી. હૃદયને નમ્ર બનાવી કાણુ રાખવો. વિચાર કરી બોલવું. વ્યવહાર કાર્ય સિવાય વૃથા બોલવું નહિ.
- ૨ કામ ક્રોધને પ્રભુતામથી પ્રભળવો. (બાળવો.)
- ૩ ક્રોધ એજ જીવનનો યત્ન છે. શાંતિ, ને સહનથીક્રતા એ ગોટામાં મોટું તપ, યોગ છે. કામ, ક્રોધ, લોભ અને મોહ એ અહંકારનું ચૂળ છે અને અહંકાર જન્મમરણનું કારણ છે.
- ૪ “ ક્ષમાશીલ ” બનવા પ્રયત્ન કરવો. હૃદયમાં પ્રભુનામ દહ કરવું. દયા અને ક્ષમા એ મુલ્યો સામાનું હૃદય આકર્ષે છે અને તે ક્રોધનું ઔષધ છે.
- ૫ પોતાની ભૂલ કણસવી એ દરેક મનુષ્યની ફરજ છે. તેમણી ઉપા મુલ્યો આવે છે. ભૂલ યામ તો પશ્ચાત્તાપ કરવો. પશ્ચાત્તાપ એજ પાપપુંજને નાશ કરનારો યજ્ઞચાંદ્ર છે. ફરીથી ભૂલ ન યામ તે માટે સાવધાન રહેવું.
- ૬ દરેકનું હૃદય પ્રેમથી ભરવું, પ્રેમ વિનાનું જીવન નકામું છે. જીવ માત્ર ઉપર સમભાવ રાખવો. સામા જીવનું (આત્મા) દુઃખ વિચારવું.
- ૭ પ્રેમ એજ જીવન વિકાસનું સાધન છે.

પ્રાર્થના.

(લે—શ્રીયુત લાક્ષ્મીલાલભાઈ મુખ્યાય.)

- નરે ઉત્તમ શ્રીવંશ કૃષ્ણ, આપ ચરણમાં નામું શીશ;
- શેષે શેષ ભય મૃત્યુનો, વધી પડ્યો છે ઉ જગદીશ. ૧
- તન તપાસી જોતાં જીવાની, જતી રહી થયો વૃદ્ધાવેશ;
- મન મુગ્ધ વપુરંગ ઉડ્યાથી, રથાગ મટી થયા ધોળા કેશ. ૨
- દાહ બળી થઈ દૃષ્ટિ ટુંકી, પાણી ટપકી તેજ ધટે;
- સરસ શેણા શ્રવણ હતા તે, બહેરાયે અઢીયા ન મટે. ૩
- ગોલક જેવા લાગ ગરવીલા, તેમાં હાલે દાંત ને દાહ;
- વિયોગ થયો તે વારે ખાધું, અન્ન પચવતાં છે દુઃખ ગાહ. ૪
- દમવા માંડ્યું દશે દિશાધી, સૌ વ્યાધિએ વાસ કર્યો;
- દાખે પ્રાણ અપાન ઉદાન બળ, ઉદે બિર્ધે ગાત કરી ઠર્યો. ૫
- સરસ શક્તિ જે હતી શરીરે, વળી પગમાં તે થઈ ગઈ લીન;
- દેવતા ડગી ધન્દ્રિનું દેવત, કેમ હુંડીને ઠરે અધીન. ૬
- તકનીની લોહપે વળગ્યું, તે મન, વશ વર્ત્યું કેમ;
- પ્રાણિય દીન જાણી આપનો, જવા દેશે ના આંખે તોગ. ૭
- ડહાપણ દાખી દંભ કર્યો બહુ, લાવમાં કહેવાયો હું ભક્ત;
- વાંચપતિ વિકૃતિશ વ્યાસનો, ત્રણાણ કાળ સાવ્યવજો દક્ષ. ૮
- લાડમ પેટા અદેયદાની એ, આહો ત્યમ એક પળે કરે;
- ખાલી ભરીને ભર્યું ખાલવો, કૃપા પચારે ફરી ભરે. ૯

॥ શ્રીશારદામ્ના વિજયતેતરામ્ ॥

શ્રીમં પરમહંસપરિભ્રાજકાચાર્યવર્યપદવાક્યપ્રમાણપારાતરપારીણયમનિયમાસનપ્રાણાયામપ્રયા-
દારધારણાધ્યાનસમાધ્યષ્ટાંગયોગાનુષ્ઠાનનિદ્રતપશ્ચર્યાચરણચક્રવર્તનાદિવિચ્છિન્નગુરુપરમ્પરાપ્રાપ્તમતસ્થા-
પનાચાર્ય-સાંલ્ક્યત્રયીપ્રતિષ્ઠાદક્ષવૈદિન્નમર્ગપ્રવર્તક-નિશ્ચિલનિગમાગમસારદ્વય-શ્રીમ મુખન્વસામ્રાજ્ય-
પ્રતિષ્ઠાપનાચાર્ય શ્રીમદ્રાજાધિરાજગુરુમૃમડલાચાર્ય-ચાતુર્વર્ણ્યશિક્ષકગોમતીતીરવાસશ્રીમદ્વારકાપુરવરા-
ધીશ્વરપદ્મિમાત્રાય-શ્રીમચ્છારદાપીઠાધીશ્વર શ્રીમન્માઘવતીર્યસ્વાગિર્યકરમ્મલમજ્ઞાતશ્રીમદ્રાજરાજેશ્વરા
ધ્રમસ્વામિનાં-પરમપ્રિયશિષ્યમેષ્ટિપ્રીવદ્યશ્રીરાજમહારાજસામન્તમૂપાઢ્યદિત્રાક્ષણીદિચાતુર્વર્ણ્યપ્રજાજનાન્,
પ્ર યત્નહૈક્યાનુસન્ધાનનિયતનારાયણેસ્મરણસંમૂચિતશિષ્યસમુહસન્નુતરામ્ જગદ્ગુરુણા મહેશ્વરાપ-
રાવતારશ્રીમચ્છંકરભગવત્ પાદાચાર્યાણામાદિમૈકાતિકસ્થાનદ્વારકાસ્થશ્રીમચ્છારદાપીઠગોચરાભીક્ષિતન-
વધિકશ્રેયોનિદાનમિતિ સાર્વજનીનમેતત્.

આથી આજ્ઞા કરવામાં આવે છે કે કામવનવાળા શ્રીગોકુલેશની ગાંડીવાળા
શ્રીવલ્લભવશભૂપલુ શ્રીમદ્ગોસ્વામીપ્રવર શ્રીવલ્લભલાલજી મહારાજની પ્રશસ્ય ઇચ્છાથી
સવર્તે ૧૯૭૭ ના આશ્વિન શુક્લ દશમી (વિજ્યાદશમી) એકાદશી, દ્વાદશી, એ
ત્રીતે ત્રણ દિન શ્રીમુખમ્મા શ્રીમાધવભાગમા શ્રીસનાતનધર્મ પ્રાન્તીય મહાસંમેલન
ભગ્વાનું નક્કી થયું છે તે શુભ પ્રમંથે ઉપર્યુક્ત સંમેલનમાં ઉત્સાહપૂર્વક ભાગ લેવો
અને સર્વ પ્રકારની સહાયતા કરવી ઇષ્ટ છે. હાલના સમયમા સર્વ સનાતનીય હિન્દુ
પ્રજાએ તથા સર્વ સમપ્રદાયના આચાર્યોએ ઐક્ય કરી હિન્દુથી ઇતર ધર્મીઓ
તરફથી થતા હુમલાઓ અને તેનાથી થતી અસર સામે સનાતન હિન્દુ ધર્મનું
સંરક્ષણ કરવું જોઈએ એ પ્રથમ કર્તવ્ય છે-એ સૂચવવા માટે આ આજ્ઞાપત્રિકા
પ્રસિદ્ધ કરવામાં આવી છે ઇતિ સિવમ્ સ્નારી મુકામ-અમદાવાદ, સાકર બજાર
તા. ૧૦-૧૦-૧૭

આજ્ઞા,

શ્રીભગવદ્ભાષ્યકારાવતારકાન્ધ ૨૪૮૭ } કેશવસાસ મગનસાસ ત્રિવેદી.
દ્વિતીય ભાગપદ કૃષ્ણ ૧૦ આપાઠાદિ સં. ૧૮૭૪ } કાર્યાધિકારી સં. શ્રીશારદાપીઠ
ઉપરનું આજ્ઞાપત્ર છપાવતું હતું, છતાં મિ. ત્રિવેદી અને તેના ખામ મિત્ર
તેનો ઇન્કાર કરતા હતા, તેથી અહીં અસત્ સુજળ છાપીએ છીએ. શ્રીવલ્લભવંશના
સનાતનધર્મીય આચાર્યત્વનો સ્વીકાર થતો શારદાપીઠવાળા ચક્રલાભીના શકરાચાર્ય
પણ કહે છે તેટલુંજ ક્ષેત્ર જોવાનું છે તંત્રી.

ચર્ચાપત્ર.

ધીધુત તન્ત્રીજી, નીચેનું ચર્ચાપત્ર પ્રગટ કરશેજી !

બપોરે વળત રૂબરૂમાં મળ્યા છતાંય કંઈ સંતોષકારક ઉત્તર ન મળવાથી આપના હસ્તક તન્ત્ર આવતાંજ આ પત્ર 'હેલીજ' તકે પાઠવીએ

અમ્હે' ખાસ અંકમાં ત્રણ કૃતિઓ મોકલેલી "નવધાલકિત" "પુણિજન" અને "પ્રણિપાત" એને ચાંદની મોઢ જે લેવાઈ તે આપ ખાસ અંકમાં વાંચી લેશેજી.

લાઈ દીનકિંકર અરેખર સાહિત્યસંલિખા દીન કિંકરજી બાસે છે ! હજી એમનામાં લેખો સુધારવાની સાહિત્યની દૃષ્ટિએ શક્તિ આવી હોય એ અમને અમાન્ય છે. અને એવા એક અર્ધદશ સાહિત્યકારને આ માસિકનું તન્ત્ર સોંપવાનું પત્રકું લરાય એ અનિષ્ટ ખરું ! અમારા લખાણોમાં શબ્દાન્તર કે વાક્યાન્તર કરવાનો હક્ક કોઈ પણ તન્ત્રાને સંભવે નહિ. અને એ લાઈ એમની 'રસાજલિ'નો આધાર દરેકમાં દેખે તો તે તન્ત્રમ ધર્ષ જાય અને અને તન્ત્રી પદેથી વાનપ્રસ્થ થઈ પડે !

અમારો લેખ એટલે 'રસાજલિ' નું અનુકરણ નહિ કિન્તુ કવિ ન્દાનાલાલના અપવાગવનું અનુસરણ ! અને હીક હીક લેખો કે શાળે ખાસ અંકમાં નજ લેવાય ! વિશિષ્ટ અંકમાં ઉત્કૃષ્ટ સામગ્રી સિવાય છતર શોભેજ કેમ ! તો એ માટે હીક હીક શબ્દો કાં વાપરવા નિંદ્રિતા વાપરવા !

કૃપયા અમારો મૂળ લેખ 'નવધાલકિનો' ફરીથી એજ રિયતિમાં પ્રગટ થાય તો સર્વોત્તમ ખાનીએ !

પ્રત્યુત્તરની આશાએ વિરમતા અને છીએ,

રમણ શાસ્ત્રી અને હિન્દુકુમાર શહેરાવાળા.

[આ સભ્યે મને તો કાંઈ ખબર નથી. કાંઈકયમથી આવા કોઈ લેખો મારા હાથમાં આવ્યા નથી. ચર્ચાપત્રીએને વિનંતિ છે કે હવેથી આવો કડકો અનુભવ નહિ થાય. પ્રત્યેથી લેખો પાઠવજે. તન્ત્રીજી]

નાઠો એ ચોર.

(લાજા બોલે છે ચોર, બાકા ! બોલે છે ચોર.)

નાઠો એ ચોર, બોલે નાઠો એ ચોર; લઈને મ્હારી ગોરસી નાઠો એ ચોર. નાઠો. વિનવતી ઊભી તોય સુલે ના નહોર, લઈને ચોંધી ગોરસી નાઠો એ ચોર. નાઠો. પોતે છે ચોર તોયે રાખે છે ઢોર, બોલે ગઈ તો કાનુકાનો તોર. નાઠો. ધકકું દિલ થાયે માવડીનો ચોર, લઈને મોંધી ગોરસી નાઠો એ ચોર. નાઠો. નમ્મું શું જોર એનું નમ્મું શું જોર ? આવી આવી ગોરમી ચોરે છે ચોર. નાઠો. ચોરું છે ચિત્ત એલું બાંધે છે દોર, રાધાના કાગળની એ તો છે દોર. નાઠો એ ચોર, બોલે ! નાઠો એ ચોર; લઈને મ્હારી ગોરસી નાઠો એ ચોર

મૂળજીસાઈ પૂતિતામ્બરદાસ શાહ.

શ્રીભક્તિમાર્ગીય-પુસ્તકાલય.

૧. ઉદ્દેશો—આધુનિક કલ્પિત વાતાવરણના પ્રવાહમાંથી બચવા ધર્મોનુરાગી-વૈષ્ણવ સમાજ સામ્પ્રદાયિક સિદ્ધાન્તોથી ભરેલું સાહિત્ય વાંચી, વિચારી અને સ્વતંત્રી પણ પોતાના જીવનમાં ઉતારી તે કાર્ય પોતાની, પોતાની જાણી પ્રગતી, અને ધર્મ-મુક્ત યતાં પોતાના ધર્મબંધુઓની કષ્ટકે પ્રગતિ કરી કર્તવ્યપથ પર લાવવા રચનાત્મક કાર્યદ્વારા યોગ્ય-પ્રયાસ કરે તે આ પુસ્તકાલયનો પ્રધાન ઉદ્દેશ છે.

૨. મુખ્ય ઝેવી વૈષ્ણવોની કેન્દ્ર નગરીમાં એક પણ સામ્પ્રદાયિક-ધાર્મિક વ્યવસ્થિત પુસ્તકાલય (લાયબ્રેરી) નહિ હોવાથી કેટલાક ધર્મોનુરાગી-જીવંત વૈષ્ણવોને ધાર્મિક સાહિત્ય વાંચવા મળી શકતું નથી. તેથી તેઓ સમ્પ્રદાયના પરમાદર્શ એવં વિશ્વમાન્ય સિદ્ધાન્તોથી અનભિચાર (અગ્રાત) રહી આજુ પ્રવાહમાં ધસકાય છે. અને અન્યને પણ (પોતાની ધાર્મિક અગ્નિતાથી) ધસકે છે. તેવાઓને સામ્પ્રદાયિક સાહિત્ય વ્યવસ્થિત રીતે વાંચવા મળતું રહે અને તેથી તેઓ પ્રવાહમાં નહિ તથાતાં પોતાનો ધાર્મિક આદર્શ શું છે? સમ્પ્રદાયના સંસ્થાપક શ્રીમદ્દક્ષબાધીશ્વરથી લઈને અદ્યપિ પર્વન્તના આચાર્યવર્ણોના સિદ્ધાન્તો શું નિરૂપણ કરે છે? વિગેરે યોગ્ય રીતે (વૈષ્ણવી-જનતા) બણી શકે તે આ પુસ્તકાલયનો દ્વિતીય ઉદ્દેશ છે.

૩. નિયમો—આ પુસ્તકાલયનું નામ 'શ્રીભક્તિમાર્ગીય-પુસ્તકાલય' રહેશે.

૪. આ પુસ્તકાલયના વ્યવસ્થાપક ગિરિધરજીવ જ. શાહ છે.

૫. આ પુસ્તકાલયનો લાભ લેનાર બંધિન પામેથી સમાસદ તરીકે દાખલ રીના માત્ર આઠ આના લઈ સલાસદોના રજીસ્ટરમાં તેમનું નામ દાખલ કરવામાં આવશે.

૬. સમાસદે પ્રથમ રૂપિયા ત્રણ અથવા તેથી વધુ ડીપોઝીટ (અનામત) તરીકે અને પાસ જુકનો એક આનો વ્યવસ્થાપકને આપવાથી એક જુક લઘાઈ નામ અને ડેકાણું ભરીને આપશે. (વ્યવસ્થાપકની સહી વિનાની જુક ખોટી સમજવી.)

૭. સદ્યજ્ઞાં છાપેલાં (મુદ્રિક) પુસ્તકો, માસિકો, ત્રૈમાસિક કે દ્વિમાસિક અથવા સાપ્તાહિકો કે અન્ય વર્તમાનપત્રો વિગેરે પુસ્તકાલયના સલાસદોને ઘેર વાંચવા આપવામાં આવશે.

૮. ઘેર વાંચવા આપવાનું સાહિત્ય પુસ્તકાલયના વ્યવસ્થાપક એક ધરણજીમાં (વાચવા આપેલા સાહિત્યનું રજીસ્ટર નોંધ જુકમાં) લખી લેવા આવનારની સહી લઈને આપશે.

૯. ઘેર વાચવા આપેલ પુસ્તક આઠ દિવસમાં, માસિક ત્રૈમાસિક કે દ્વિમાસિક ચાર દિવસમાં અને વર્તમાનપત્રો સાહિત્ય બીજે દિવસે અથવા જરૂર હોય તો તેથી વધુ વહેવા પાછાં આપી જવાં (બહારગામના સલાસદોને નિયત કરેલાં દિવસોથી અગમ દિવસો સમજવા વર્તમાનપત્રો સાહિત્ય બહારગામ મોકલવામાં આવશે નહિ.) પુસ્તક કે માસિકો સાહિત્યની બીજને જરૂર નહિ હોય તો એકવાર લઈ ગયેલને ફરીને આપવામાં આવશે.

૧૦. છાપેલાં પુસ્તકો, માસિકો અથવા વર્તમાનપત્રો વિગેરે સાહિત્ય સમાસદ ફક્ત પોતાને માટે લઈ જાય. બીજને માટે નહિ જેઓ સમાસદ નહિ હોય તેમને પુસ્તકો સાહિત્ય સલાસદના નામ ઉપર આપવામાં આવશે નહિ.

૧૧. પુસ્તકો વિગેરે જુકપોસ્ટથી મંગાવનાર બહારગામના સલાસદોએ ટપાલ તથા રજીસ્ટરનું ખર્ચ અમાઉથી આપવું પડશે. આવી રીતે મોકલવામાં આવેલ પુસ્તકો વિગેરે ચૂમ થાય કે અબ્યવસ્થિત-થાય તો તે સદ્યજ્ઞાં નુકશાનીનું જોખમ તેને શિર રહેશે અને તેમજ તેની પુરેપુરી કિંમત ભરી આપવી પડશે. અથવા નવું લાવી આપવું પડશે.

૧૦. પુસ્તકાલયના પુસ્તકો વિગેરે ખદારમામના સંભાસરોને છુટ પોરટથી મોકલવામાં આવશે.
૧૧. સંભાસરો પુસ્તકાદિ ને સાહિત્ય લઘુ ન્યય તે સંભાળ પૂર્વક રાખવું અને હોય તેવી
તમામાં પાછું ન આવે ત્યાં સુધીની તમામ જોખમદારી તેમની છે. પુસ્તકો વિગેરે ફાટશે,
પડશે અથવા શૂન્ય થશે તો તેની પૂરેપૂરી કિંમત ભરી આપવી પડશે અથવા નવું લાવી
પડું પડશે.

૧૨. દરતલિખિત (અમુદિત) પુસ્તકો, ન મળી શકતા પુસ્તકો, ન છપાતાં પુસ્તકો કે
। મુશીબતે મળતાં પુસ્તકો અથવા તેવુંજ અન્ય સાહિત્ય વ્યવસ્થાપકની હચ્છા સિવાય
પવા આપવામાં આવશે નહિ. વાચવાની છુટાસાવાળા સંભાસરોને પુસ્તકાલયના નિયત કરેલાં
પથમાં વાંચવા આપવામાં આવશે. તદનંતર તેમનાથી જાણુતાં કે અજાણુતાં કેંઈપણ તુકરાનું
। તો તેનું જોખમ તેને શિર છે.

૧૩. ઘેર વાંચવા જોઈતાં પુસ્તકો વિગેરે સુધારના (રટા. ટા) ૮ થી ૯ અને સાંજના
ટા. ટા) ૬ થી ૭ ના સમયે પુસ્તકાલયમાંથી જ મળશે.

૧૪. ઉપરોક્ત નિયમોને ખ્યાનમાં રાખી દરેક સંભાસરોએ પુસ્તકાલયનો લાભ લેવો.

૧૫. ઉપરોક્ત નિયમોમાં સુધારો વધારો કરવાની વ્યવસ્થાપકને સત્તા રહેશે.

પુસ્તકાલય પરત્વેનો પગવ્યવહાર નીચેને એટ્રેસે કરવો.

શ્રીભક્તિમાર્ગીય-પુસ્તકાલય, વ્યવસ્થાપક ગિરિધરલાલ જ. શાહ.

૨. શ્રીશાસ્ત્રજ્ઞાવાનું મંદિર (ભુચેશ્વર) મુંબઈ નં. ૨

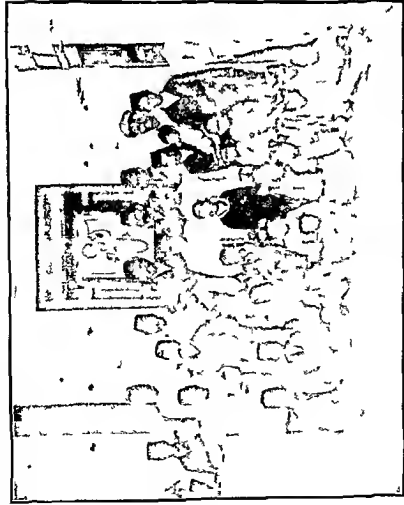
આડથી કીંમતે ચાલુ છે.

શ્રીહરિરાયજીનું દિવ્ય જીવન ચરિત્ર શિક્ષાપત્રો સાથે ન્યો. રૂ. ૨) છે તે રૂ. ૧૧ થી આપવાનું
। તુર્મીસ સુધી ચાલુ રાખ્યું છે. જીવનચરિત્ર આદ્યજીવ અને ચમત્કારી છે. વી. પી. મંગાવવા
રતાં રહેવે પાસંભથી ઘણા આદરો એકઠા થઈને મંગાવે તો જાડું લાભ થાય. પોરટથી પણ ઘણા
પેઠા મંગાવે તો વી. પી. ખર્ચ ખચી ન્યય. ધોળપદ સાગર-દહે જૂજ જ નકલો છે. ખીજી આવૃત્તિ
મળ્યાં નીકળવાની નથી. સાગ્રસાતલો પેળનું પુસ્તક માત્ર રૂ. ૧૧ માં અનદદ સારું છે આ ઉપરાંત-

શ્રી ભક્તિમાર્ગીય સસ્તી મથકમાળાના મથકો.

- | | | |
|---|--------|-------|
| (૧) શ્રીગોકુલેશના હારમ પ્રસંગો અને વચનામૃતો લાજ ૧ તો | ૧-૦-૦ | ૦-૪-૦ |
| (૨) શ્રીગોકુલેશના હારમ પ્રસંગો અને વચનામૃતો લાજ ૨ તો | ૧-૦-૦ | ૦-૪-૦ |
| (૩) રસિક વિકાસ | ૧-૦-૦ | ૦-૩-૦ |
| (૪) શ્રીહરિરાયજીનું જીવનચરિત્ર શિક્ષાપત્રો સાથે ૨-૦-૦ હાથ | ૧-૪-૦ | ૦-૬-૦ |
| (૫) ધાર્મિક અને સામાજિક લક્ષગીત સાગર ૧-૦-૦ હાથ | ૦-૧૨-૦ | ૦-૪-૦ |
| (૬) દીનતાને આશ્રયતાં પદ | ૦-૧-૩ | ૦-૦-૬ |

લખો-આ કાર્યાલયમાં.



उमरगामवाला परम भगवदीय श्रेष्ठ हरिभाई, सफुडुव

Photo R V Sh II)

S. A. 944 P. Ahmedabad



गोलोकवासी परम भगवदीय ऋषुगपा



परम भगवदीय शेठ स्वजीभाई रतमजी, धमणी.
(जिमेने पदरसी रुपीआ खर्चीने, धोलपदलागरना
पहेला भागनी दे हजार प्रताना प्रचार कर्यो.)



परम भगवदीय श्रीरगरीजी.

શ્રીરજારીજી.

સં. ૧૬૫૬ ની સાલના અરસાની વાત છે. મારી ઉંમર લગભગ ૯ વર્ષની હતી. ગુજરાતમાં બચ્ચંદ્ર કુબાલ મેં ધારીને અનેક પ્રાણીઓનો પોતાના અનંત ઉદરમાં સમાવી દેતો હતો. અમદાવાદમાં અસંખ્ય પશુઓ આવ્યાં હતાં ! ગોમાતાનો ત્રાસ તો દેખી શકતો ન હતો. ગામડાના નિવાસી ધણી મનુષ્યો પણ ઉદરપૂરણાર્થે આ પુણ્યપ્રાણી શહેર-અમદાવાદમાં આવ્યાં હતાં. રથો રથો આ વખાના માથો ગરીબો અને ગોમાતાઓ માટે ઉત્તમ સવડ અમદાવાદના દાનવીર સદ્ગૃહસ્થોએ કરી હતી. નિત્યલીલાસથ દયાલુ ગૌરનામી શ્રીક શ્રીમજ્જાપણ મહારાજશ્રીએ પણ આવા સેંકડો કુબાલપીડિતોને-અનાથોને આશ્રય આપ્યો હતો. દરરોજ તેમને ખાવાને માટે મહાપ્રસાદ અને તે ઉપરાંત બદાર રસોઇ પણ તૈયાર કરાવીને સવડ કરી હતી. આખી ડોસીવાડાની પોળ દરરોજ ગરીબોથી ભરાઇ જતી હતી ! આ જ અરસામાં માત્ર એક ધીતીયું પહેરીને એક વ્યક્તિ “રજારી મું, બણેલો મું, બે સોપડા નદીમાં” એમ પોકાર કરતી અમદાવાદમાં પર્વટન કરતી હતી. તે કાંઈને પોતાનું નામદામ જણાવે નહિ, પોતાની કાંઈ પણ ઓળખાણેય ન આપે. કાંઈ પૂછે તો ‘નદીમાં’ એટલે જ જવાબ દે. તે અમદાવાદના બધા મંદિરોમાં જાય. માતા, મહાદેવ, હનુમાન વગેરે કાંઈને પણ છોડે નહિ ! માત્ર એટલું કહે કે, મારી ગામળો છોપનિયામાં રેવા નદીમાં ડૂબી ગઇ તે પછી આ દયા થઇ છે. પણ પોતે કાણ છે ? તો ‘રજારી’ એજ તેમનો જનાબ. બીજું કંઈ વધુ બોલેજ નહિ. એમ અમદાવાદમાં ફરે, કાંઈ પ્રસાદ લેવા રેવા રજારીજી આવતા હતા.

એટલામાં નિત્યલીલાસથ તૃતીયપીઠાધીશ્વર ગો. શ્રીક શ્રીઆદ્યકૃષ્ણદાસજી મહારાજશ્રીની તેમના ઉપર કાંઈ અજ્ઞાન કૃપા થઇ ગઇ. આપશ્રી તેમને પોતાની સાથે કાંકરાડી લઇ ગયા. તે પછી ત્યાં એના તેઓ સ્થિત થઇ રહ્યા કે હવે ક્વચિત જ બદાર નિકળે છે. આપશ્રીએ રજારીજીને દીક્ષા આપીને વૈષ્ણવ જનાબ ત્યારથી એમની વૈષ્ણવતા અજોડ બની છે. ભારત-વર્ષનાં તમામ તીર્થસ્થળો-ધાર્મિક રજારીજી ફરે છે, એની નામાવલિ સાંભળવા માટે કાંઈ નહિ તો અર્થો કલાક જેમણે. તેમાંએ તેમની ભાષા સમજવી જેમણે. તેઓ અમદાવાદમાં બિરાજતાં સ્વરૂપોને ‘નટલો શામળો’ કહે. શ્રીનાથજીને ‘શ્રીનાથો’ કહે છે. એમનો ચન્દ્રકાશ જ નમારો છે. એકદમ કાંઈ ન સમજાય. ગાઢ પરિચયમાં આવ્યા પછી જ તેમની સાથે વાર્તાલાપનો આનંદ આવે. તેઓ જાણે છે બધું, પણ જરૂર જોડલા જ શબ્દોનો ઉપયોગ બાપમાં કરે છે. જેમકે, ખાવું, આવવું, લઇ આવવું વગેરેમાં ‘ભડકવું’ એનો જ ઉપયોગ થાય. કાંઈ રજારીજીને કહે કે શેઠે કહ્યું છે કે આમ કરો તો ઘુરન જ તેમ કરી નાખે ! એક વખતે કાંઈ દુષ્ટે તેમને તેની રીતે કહી દીધું એટલે રાજસાગરમાં ફીટી પડ્યા ! ત્યારથી નિત્યલીલાસથ મહારાજશ્રીએ એક માણસ-તેમની તહેનાતમાં રોકેલો છે.

રજારીજીએ અદ્યર પુરાણો સાંભળ્યા છે. આપશ્રીએ કાંકરાડીના એક પૌરાણિકને તેને માટે ખાસ રોક્યા હતા. એ પુરાણોની બધી વાતો રજારીજીને હજી પણ સાબરે છે. એ પુરાણી-જીએ રજારીજી માટે ફકાદાર કરીને દોઢ વર્ષ સુધી દિવસભર કયા સંબંધથી તેથી સંબંધથીના રોજમાં આખરે તેઓ પરલોકવાસી થતાં તેમની પાછળ રજારીજીએ સદ્ગૃહસ્થોદાય તેમના કુટુંબનું પોષણ કર્યું અને એક આકર્ષક મકાન દેવવામાના મહુમ સદ્ગૃહસ્થને કહીને તેમના દબ્બથી બંધવી આપ્યું. રજારીજી પોતે તો જગીયામાં ‘સુંતરવિયાસ’માંજ રહે છે. દરેક ફરજ તથા

પ્રધાન્યી વગેરેનાં વૃક્ષો તેમાં તેઓ લાવ્યા છે. આ જગીઆ પાછળ હળરો રૂપીઆ ખરચાયા છે. વનરૂપિણે શ્રુતિમાં વૈષ્ણવ કહે છે અને તેની સેવામાં રખારીજી અઢીનિંસા તૈયાર રહે છે. મેવામાં પશુ રખારીજીનું માન અપૂર્વ છે. સર્વવંશતિલક સદ્ગત મહારાજા તો તેમને ઉભા થઈને માન આપતા હતા. અત્યારે પણ તેમનો માન મરતજો થોડો નથી. મુંબાઈના ધનાઢ્ય વૈષ્ણવો તો તેમનો પડતો ખોલ ઝીલી લે છે. આ લેખ પછી જે શિક્ષાલેખ છાપ્યો છે, તે વાચતા જણાશે કે રખારીજીએ શ્રીકાંકરોલીની કેવી સેવા બજાવી છે? એ શિક્ષાલેખ પછી પણ હળરો રૂપીઆની સેવા પોતાના ગુરુધરની તેમણે કરાવી છે. રખારીજીને નિજ સુરુદેવ પ્રતિ, જે ભાવ છે તે ખીજે સ્થળે લાગે અનુભવાય છે. રખારીજી તો કહે છે કે નિત્યલીલાસય શ્રીઆલ-કૃષ્ણ ગ્રન્થ તો મારા જેવા પતિતના ઉદ્ધારને માટેજ, મારે માટેજ આ ભૂતલ પર પધાયો હતા. અત્યારે પણ આપશ્રીના લ્લેષ કુમાર શ્રીકાંકરોલીનરેશની કૃપા રખારીજી ઉપર થોડી નથી. શ્રીકાંકરોલીના ઘરની સેવા કરનારાઓમાં રખારીજીનું નામ કાયમ રહી જશે.

રખારીજી બધાને પૂછે કે “ભણેલા સો ?” તેઓ જવાબ ન આપે તો પોતે કહેશે કે હું ભણેલો છું. (જે આંગળા ખતાવીને) જે સોપડા, નદીમાં ” બધા સાથે, પછી તો તે રાત્રી હોય કે ગમે તે હોય, આટલોજ વાર્તાલાપ તેઓ પ્રારંભમાં કરે. કાશી જતી વખતે રખારીજી ફરફલાસમા શ્રીમાનંદી સાથે હતા. પ્રયાગનું રેશન આવ્યું. જે આવે તેને ઉપરનો ગ્રન્થ કરે. અને જે આંગળા ખતાવે ! ત્યાં તો કાષ્ઠ ગુજરાતી સમજે નહિ એટલે આહવાળાતે જ્યારે તેમણે ઉપર ગુજબ કહ્યું એટલે જે ખાસા ભરીને આપવા માંડી ! તેવીજ મળદ ફલકુલ વેચનારાઓ આવ્યાં ત્યારે ઘણા કાશીમા શ્રાદ્ધકુમહાસલા વખતે, (રખારીજીને જ્વર હોવાથી શાલ ઓઢવાની આદા હતી તેથી) શાલ ઓઢીને રખારીજી શ્રીમાનો સાથે મહાસમામા આવ્યા. (આમ તો રખારીજી એક ધોતિયાં સિવાય કાષ્ઠ પણ બાદમાં કંઈ પણ પહેરતા નથી.) કાશીના પંડિતો તો એમને કાષ્ઠ ધુરંધર પંડિત સમજીને એકદમ સદુષ્ટી પહેલે નખરે ખેસાડ્યા ! પછી એકાદ પંડિતે તેમની માથે સંસ્કૃતમાં વાત કરવા માંડી ! વંદિતા ! કુચલ્લા ! ક વા નિવાસ : ? રખારીજી કહે કે “ નદીમાં ” અહીં અજબ રક્ષા યાત, પણ મેં સંસ્કૃતમા પેલા પંડિતજીને સમજાવી દીધું કે આજે આ પંડિતજી (રખારીજી) ઘણાજ ખીમાર છે, તેથી જરોજર જવાબ નહિ આપે.

રખારીજીનું સ્તોત્ર પણ અજબ છે ! મંદિરમાં સ્વરૂપો પાસે તથા શ્રીવલ્લભવંશ પાસે આ પ્રમાણે તેઓ સ્તોત્ર ભણે છે:— “ કેમ જોલતા નથી ? કેમ ચાલતા નથી ? કેમ કાંકના ઘરમા પેહી રલા સો ? કેમ તેહરતા નથી ? મહોં આથો તો ધકડીને લઇ જઇશ. ચાલો મારી હારે મારવાડમાં. પહેલું દૂધ તમને પાઉં અને પછી દૂધ હું પીશ. તમેય રખારી સો ને હુંએ રખારી છું.” વગેરે બોલે છે. શ્રીવલ્લભીયસદ્ધિમાં રખારીજી એક અદ્વૈત, અજબ અને વિલક્ષણ વૈષ્ણવ છે. કાંકરોલી જે જગ તે જરૂર તેમનાં દર્શન કરે, તેમની ગોસેવા નિહાળે, તેમની વનરૂપિણી સેવા જુએ, અને ગુરુધરની ટહેલ જોઇને આશ્ચર્યમંત્ર બને; એવી નમ્ર વિનંતિ કરી દાલ તો વિરખીશ.

શિલાલેખ.

યહ મુંદર નિવાસં વાગ ઔર વાકે ફિરતો કોટ, વાગકે બીચમેં મુંદર મહલ હૈં, વહ મહેલ ધીમદ ગોસ્વામિનીજી શ્રી ૧૦૮ શ્રીમુંદરવતી વહજીકે નામહું વંધાયો દે. જોર બોંગમેં બાસપદાનકે મહે ચમાનકો જૂલ હૈં, સો શ્રીદ્વારકાનાયજીકે જૂલ્લેકે લીયે હૈં જોર શ્રીમદ-

गोस्वामिबालननके जूलेवेके लीये हैं, दुसरेके लीये नहिं है जो दुसरो कोइ जूलेगो तो वह याके धर्ममूं बहिर्मुख होयगो ओर नरकको भागी होयगो

श्रीके निराजवेके लिये सोनेको सिंहासन ओर चादीको सिंहासन सोनेकी आरती ओर श्रीके अरागेवेको थाल ओर सोनेकी शारी, बटा ओर सोनेकी गाय दो (२) ओर हाथी दो ओर घोडा दो ओर सिंह दो सोनेरी भरत कामको मखमलको चंदरवा, पिठवाई, राडपाट ओर चोकी सुधा, ओर चिबुकको हीरो, श्रीठाकुरजीके श्रीकंठको कठो मोतीको छीलामणीको तामें पदक (१) बीचमें पना फिरते हीरा जडाठं है ओर नरुनेसर एक आजूबाजू मोती बीचमें हीरा जडाठं हैं, सोनाकी वेषु बेतर सोनाको हार १ ओर नखलो चादीको बडो बंगलो श्रीठाकुरजी वीराजवेको तथा चादीके थाल तीनमें चादीके सीलेने भरे हुवे है ओर भी याके सिवाय छोटी बडी बहुत सी चीज स्वारीजीने बनवायेके श्रीद्वारकानाथजीके भेट कर दीयो है या देखमें जो वस्तु लिखी है सो नित्य श्रीद्वारकानाथजीको ही अंगीकार करायवेकी है यह सन उपर लिखी गई सन चीजेके मालीक श्रीमद्गोस्वामि श्री १०८ श्रीबालकृष्णलालजी ओर विनके लाउजी श्रीनजभूषणलालजी ओर श्रीविठ्ठलनाथजी ओर विनके श्रीभाभीजी महाराज श्री सौन्दर्यवती बहुजी है ओर धर्मीचामें कुंठ १ बावडी १ ये दोनोंको जल बगीचाकु पायवेरे लिये हैं ओर सन लोकनके पीवेके अिये हैं ओर नहायवेके लिये सरल मनार्द है ।

या उपरांत स्वारीजीने श्रीगौमाताजीके लिये जल पीवेकी प्याउ बघाई है ओर श्रीगौमाताके लिये रु. १६००० अके सोल हजार श्रीद्वारकानाथजी के दरिखानामें श्रीकृष्णभंडारमें जमा कराये हैं या रुपैयाको व्याज दर महीना रु. ६० अके साठ होयगो सो ये व्याजके रुपैयामें सु रोज रु. २ अके दोको सामग्री श्रीद्वारकानाथजीके नित्य अरोगवायके महाप्रसादके लड्डवा नग अके आठ होय सो ये श्रीद्वारकानाथजीकी गौमातानकू स्वारीजी अपनी हयाती तक अपने हाथसु खवावें ओर विनकी गेरहाजरीमें बट मटाप्रसाद श्रीके मंदिरके अधिकारीजी जो होय सो अपनी हाजरीमें स्वारीजीकी आडीसू नित्य श्रीमंदिरके गोवर्धनपूजाके चोखमें गौवनकु बूझायके खवावें ये अधिकारीजीके सामने खवावें खवायेवेमें ओर कोईके भरोसों राखनो नहि श्रीगौमातानकुं उपर लिखे लड्डवा ८ अके आठ खवाये आप उपर लिखे हुवे रु. १६००० सोले हजारकी रकम श्रीगौमाताके लिये जमा कराई है विनकी व्यवस्था श्रीगौस्वामी महाराज श्री १०८ श्रीबालकृष्णलालजी महाराज तथा विनके बहुजी महाराज श्रीसुन्दरवती बहुजीको अस्तु पुण्य है बासू भी कोई पण काल कोई बघ न कर सके । श्रीद्वारकानाथजीकी गादीपर जो कोई गोस्वामिबालक विराजतें होय वह विनकी तरफसु यावतचंद्रदियाकर परीयत बाही रीतसु चलाने उपर लीखी हुइ गउमातानकी बातमें श्रीमद्गोस्वामि १०८ श्रीबालकृष्णलालजी महाराजने अपनं श्रीहस्तकी महोर करके लेख स्वारीजीकुं गउमातानके लीये कर दीयो है वह लेख श्रीद्वारकानाथजी

के मंदीरके नगरखाने के दरवाजे पर लगायो है श्रीद्वारकानाथजीके मंदीरके जो अधिकारी होय वे यह रीतसूं ये लेखके अनुसार संपूर्ण रीतसूं चरेंगे सो गल्लेके मार्गपर जायगे अगर मदान्ध होय के अगर गर्व करके फोड़ गउको लडुवा बंध करके अदबी में दानो ओर चारो वढावे सो ठीक नहीं कारण श्रीको अयोग्यके गायनकृ प्रसादी खवावनी वह बहुत लाभकारी है ये काममें कोइपण तरहको फेरफार कीसीको करनेको हुकम नहि है पन काम बंध उरेंगे तो प्रभुको अपराधी होके गउमातनको वाहुं ओर वह काम बंध करेवें समती देयवेवारनेहुं वगपरम्परा महत् आप लगेओ ओर वह कुभीपाक नकमें जायें श्रीसुंदरनिवास वाग बंधवायो ओर श्रीद्वारकानाथजी कं संवत १९७५ के बैशाख वदी ७ अशुवारके दीन वागमें पधरायके मनोरथ कियो सो सब मिलके कुल खर्च रवारीनी के हस्तक रु. १५१००० एक लाख एकवन हजार भयो है यह काममे उदेपुरके महाराणाश्री १००८ श्रीफतेहसिंहजी साहन ओर विनके भतीजा महाराजश्री १०५ श्री हिम्मतसिंहजी साहन इन दोनोने मिलके सेनामें अच्छी मदद दीनी ओर दोनोने श्रीद्वारकानाथजी के यावतचन्द्रदिवाकर परयत भेट कर दीयो है ओर वैष्णवोंने बहुत अच्छी मदद दीनी है यह सब काम रवारीजीने अपने तनमन धनसे करके श्री द्वारकानाथजीको भेट कर दीयो है यासू सन मिलकतपर श्रीद्वारकानाथजी सिवाय दूसरे कीसीको हक नहि है कोइ तरहसे कीसी बातसे कीसीका कोइ उजर नही है यह लेख रवारजीने अपनी राजी खुशीसे कर दीयो है यमि कोइ बातकी न्यूनाधिस्ता लीखी हो सो बातकी रवारीजीने माफी मागी है सं. १९७६ के आशु शुद्ध ५ बुध ता. २७-११-३० ह.

श्रीभद्रगोपुत्रभां—अनेक धर्मशास्त्राणि छ. तेभा प्रसीक तो नदन भासी पडी रहे छ छपा तेनो सङ्ग्रहीत यतो नथी. तावमा श्रीगोपुत्रता निरासी विद्वान् मुष्पाछ श्रीगोपुत्रेश छेदाक विद्यार्थीजोने सेवाना अनवसरमा संस्कृत भाषानुं ज्ञान आपे छ, तथा संप्रदायना प्रथो सज्जवे छ. आमा के विद्यार्थी जोने अतरसादिनी सबड नथी देता तो ते पक्ष पडिव गोपुत्रेश छ भेजरी आपवा प्रधास करे छ. मात्र तेभने जेक स्यातनी नइर छ. आ सरेया अने नएर जेछ छ, अने ते सुतर कार्य करे छ. अनवधीम रोड वडासास करनहास नापाने विनति छ के जेहाइ स्यात धर्मशास्त्राभापी आ सरेया भाटे आप. नीछ पक्ष धर्मशास्त्रावाजा सुंवाधना सङ्ग्रहदेवने विनति छ. विशेष आ सरेया भाटे नीछ पक्ष महती नइर छ. यथाशक्ति शुद्धावता कृतार्ताज्ये आ सरेया पतनवहाइ करे-भोगोपुत्रेश शर्मा साखी, श्रीपुष्टि अलखार्थम, मु गोपुत्र (छ. मधुता)

अरेवानी जेठकभां—सेवा करान पइम अनवधीम अनवधास वडासास छजे छ के—“अभने अभने भण्णे छ के, दोनी भाषुस अरेवानी श्रीभद्राप्रसुछनी जेठकना नामपी पराड करीने शुभसात-काठियावाड, मुआध वगेरे सरेया करे छ, अने पैसा छपारने छ. आवा केछ भाषुसने अदापी गेहकथो नथी, तेभने के पैसा कभरावतासके जेक पाछ पक्ष अडां गेहकी नथी. यदि आवा दोनीजोपी सोपधान रहेवानी नइर छ.”

गोपीतलावनी जेठक—ने मुष्पा शास्त्रावस भाभनताव नामनाके जेठकने नागे वैष्णवो पारोपी पैसा छपारवानुं अने साभज्युं छ. ते जेक जाडो छने निकज्यो छ. तेने जेहाइ वर्ष यहुं, पत्तो नथी. पञ्च तेखे जेक पाछ पक्ष अडां गेहकी नथी. भाटे केछजे गोपी तलावनी जेठकने नागे जेक पाछ पक्ष अडां भाषुसने आपनी नति छी. डा. नरहरास देवराज, डे. गोपी तलाव, पोर-वरावा (काठियावाड).

ભગવદીય રવજીભાઈ.

મુઆમના વૈષ્ણુઓમાં “ રવજી ભગત ” (ખાખા) નામે પ્રખ્યાત શેઠ રવજીભાઈને ભાગ્યેજ ઝાળખાવવાની જરૂર હોય. કોલસાના વ્યાપારમાં તેમણે દ્રવ્ય સંપાદન કયો પછી જે ટહેલ કરવા માંડી છે તે અદ્ભુત છે. મુઆમના બધા મંદિરોમાં શ્રીની સેવા તથા ગોમાતાની સેવામાં તેમણે જે તનુજ અને વિતન સેવા કરી છે અને કરે છે તે ભાગ્યેજ કોઈ કરી શકશે. ઉપરાંત મોટા મંદિરમાં મહાપ્રસાદ વાંટનાર તરીકે તો તેમને કોઈ નહિજ બૂલે. જે તે સ્થળે ‘ રવજી ભગત ’ મહાપ્રસાદ વાંટતા ન હોય તો તે સ્થળ સતું લાગે! આવા શુદ્ધ આદર્શ વૈષ્ણવ જીવન-વાળા શેઠ રવજીભાઈએ નામસેવામાં પણ ખૂબ ફાળો આપ્યો છે. ધોળપદસાગરની બેદનર પ્રતોના તેમણે પ્રચાર કર્યો છે. તેમાં નીચે મુજબ મોટી રકમ તેમણે ખર્ચેલી છે. વૈષ્ણુઓ તેમને ઉપકાર કદી નહિ બૂલે. અને હું તો આવી સેવામાં નિમિત્ત બનાવવા અદ્ય તેમને કલ્પીજ છું.

ખર્ચ—૩. ૪૬૫-૦-૦ કામળો રાચવ ગ્વેજ ૪૫ રતવી, ૧-૬-૦ કામળો વખારમાથી પ્રેસમા ગયા તેની મજૂરી રૂ. ૫૧૭-૪-૦ છાપખાનાનું ખીમ નં. ૨૧, રૂ. ૨૮૪-૧૪-૦ ખાઈ-કરને ખાઈ-કરના ખીલ નં. ૪૭, રૂ. ૧૭-૪-૦ ખેલોક નં. ૩ ખર્તાવ્યા તેના રૂ. ૨૯-૧૪-૦ ચિત્રો ચાર છપાવ્યા તેના, રૂ. ૨) વેરાવળથી શ્રીગોકુલાધીસજી મહારાજનો ફોટો આવ્યો તેના રૂ. ૧૩૪૭-૧૦-૦ કુલ ખર્ચ.

અઢારસો દિવસનો નફો!

જ	ઉ
૩૦૮૦-૧૨-૦ લવાજમના.	૧૧૮૮-૦-૦ છપામણ ખર્ચ.
૧૬૪-૦-૦ મહેર ખજારના.	૭૨૧-૦-૦ ચિત્રો તથા ખેલોક.
૪૮-૦-૦ સદાપતાના.	૪૫૧-૦-૦ ટપાલ ખર્ચ.
૪૫-૦-૦ પી. પી. ખર્ચના.	૩૩૭-૦-૦ કામળો.
૩૩૩૭-૧૨-૦	૨૭૮-૧૧-૦ બંધામણ, વળામણ તથા અંકે ખીડવાના.
	૧૪૪-૦-૦ ધર ભાડું.
	૨૫-૦-૦ વતમાન પત્રો ખરીદી.
	૩૭-૦-૦ પરચુરણ ખર્ચ.
	૩૧૮૧-૧૧-૦
	૧૫૬-૧-૦ સીલોક.
	૩૩૩૭-૧૨-૦

આ નફો ઉપરાંત મુઆમના કેટલાક આદકોના ખીમ વર્ષ, ત્રીમ વર્ષ તેમજ ચોથા વર્ષના લવાજમો વસુલ થતાં ગયા વર્ષની ચારમો રૂપીઆની જોટ પુરાઈ ગઈ છે, અને તેમાંની પણ ગણત રહી છે. ઉપર મુજબ જે નફો આવ્યો તે નાણાં અને ‘ ધોળપદસાગર ’ તથા અન્ય પ્રસિદ્ધ પ્રકટ કરવામાં શક્યા છે. અમદાવાદમાં એક કાર્યોલય સ્થાપવું પડ્યું છે. ખીલું ખર્ચ વધારવું પડ્યું છે.

દિનકિંકરથી ચેતો—ચાલુ વર્ષની મારી ગેરહાજરી દરમ્યાન આ કાર્યોલયને એકદમ તુકચાનીના ખાડામાં ભાઈ દીનકિંકરે ઉતારી દીધું છે. લવાજમો આદકોને નામે જમા કર્યો નથી. જેના લવાજમની પહોંચ પોતે જાણી છે, તેનું લવાજમ એપ્રિલમાં જમાજ કરીધું નથી. હીસાબમાં ચોટાળો છે. ફક્ત હીસાબ નપાડું છું. આખરે લાચારીએ મારે તેમની સામે ફોજદારી પગલાં

પરાયણ બદેનના ગોલોલ્લાસથી સંપ્રદાયને મોટી ખોટ ગઈ છે. એઓ તે પ્રભુની નિત્યલીલાનો અર્થ & આનંદ લેતા ન હશે, પણ લોક દષ્ટિએ આપણને ખેદ થાય.

દેવગઢ બારીઆમાં એક મરહુમ વૈષ્ણવનું તત્ત્વજ્ઞાનનું અવસાન—અનેના મરહુમ વૈષ્ણવ ગાંધી ચક્રવાલ અચૂતલાલ ભાવણ સુની ૬ના રોજ બજવત્થારણ થયાથી અહીંના વૈષ્ણવોને તેમની બારે ખોટ પડી છે. તેઓ લગભગ સાઠ વરસની વયમાં પાત્રીસ વરસથી મરહુમ લઈને લૈકિકમાં હંમેશા રૂપીયાના વેપાર વજનમાં ગુણાયેલા હોવા છતાં ફક્ત બે દિવસની બીમારીમાં ચોતાની અંતર્ધર્મ દયામાં સુદી ૬ની સવારમાં વૈષ્ણવોને જોલાઈ ચોતાને ત્યાં આજને આજ સામગ્રી પહોંચી શીને હાંદિલા હુલાવવાનો મનોરથ આદર્યો અને સાંજે સગ દમ લેવા છતાં ચોતે નાહી, નતે શીને હાંદિલા હુલાવી, ઝોરથી નીચે આજ્ઞા, અને સર્વ મરહુમ વૈષ્ણવ તથા વૈષ્ણવોને ત્યાં મહાપ્રસાદ લેવાથી પહેલામણી કરી ચોતાના દ્રવ્યમાંથી વ્યાસક્તિ આપને દિવસે મળવાથી વૈષ્ણવો મહાપ્રસાદથી આવે તેમને સામગ્રી અર્થે અમુક રકમ તેમજ અવેના મંદિરમાં અમુક ઉત્સવ ઉપર મનોરથ કરવા અર્થે તેમજ શીશોહુલમાં શાળામાં વગેરે કરવા તથા ગુરુશ્રીને ભેટ ચોતાની સાવચેતીમાં કરી. છતાં રોજ રાતના સાડા દસ વાગે દેહ છોડી પરલોકને પ્રાપ્ત થયા છે. ઘડા લેવાનું એ છે કે નાનપણથી સેવા સત્સંગ કરેલા હોવાથી લૈકિક બધાકારમાં અનંદ પચેલા હોવા છતાં જલ્દમજલ્દ સંસારમાંથી એકદમ ચિત્તને નિરોધ દોષ પ્રભુપ્રાપ્તિ થવાનો આ એક સચોટ દાખલો છે. એમના પુત્ર પુરુષોત્તમદાસ પણ તેવા દોષ પિતાને પાંચે ચાલી ધર્મમાર્ગમાં પરાયણ રહે છે. ઇશ્વરે ધીમે ધીમે પદ—છત્ર અર્થે નર વે જાએ, છત્ર રેન દિન—હરિ નામ લીધા હે, અત સમે રૂપા કર મુરે તો હું ન જમકે હાય અર્થે હે, કહે હરિનાથ હરિને મીલવેકા પહેરે હી છત્ર કાળ કીધા હે, માલ સમે પહેચામ લીધા, ધર પાછે છુટે તો શીર કહા રહો દે.

ગોલોલ્લાસ—અપ્પા દિલ્લીરી થાય છે કે અવેના, શીનહર ગોપાળલાલના મંદિરના બિરિનારા બાણજી બદે આવર્ષનનાં પ્રભુજી ગયા માસથી રૂપી હુકમારના રોજ રાત્રેકેટ સુધીને બજવદામવાસી થયા છે. આ રીતે માનરોએ એક વયોરૂઢ સંબીતવિશાલ અને અનુભવી ભગવદીયને શ્રમામાં છે. અહીં સાપ્રદાયિક સેવાપદ્ધતિના નિષ્પાતો રચવી આજળીને રાંધે બહુય તેરલાન છે, તેવામાંથી આ એકની ચોટ પડતા અહીં વૈષ્ણવોમાં ગમગીની ફેલાયેલી. પુરુષોત્તમ માત્ર આખા ઉત્સવાદિમાં કરી પણ અગ્રણ્ય વિના તેઓ સેવાનો લાભ લઈ રાખા. તેવા માસ પૂર્ણ થયા કે તરતજ મૂંઝૂંમૂંના આધિથી તેઓ પીડાવા લાગ્યા. આપ વધતેજ અર્થે, છત્રો અને વૈષ્ણવી એપરેશન માટે સલાહ પડી, અને તેઓ અગ્રેથી રાત્રેકેટ બિરિપટલમાં ગયા. એપરેશન થયું. સફળ થયું પરંતુ વજાવરયાને અગે યક્તિના અસાધ્ય પ્રતીતિ નબળી થઈ ચાલી, અને ત્યાંજ સત્સંગ્યારણ પાવવા પ્રભુની કૃપા કહો કે મીઠ્ઠાકેસલાલજી બાવા ત્યાં બિરાજતા હતા તેઓની કૃપાથી અતિમ સ્થિતિ સારી રીતે સુધરી અને મીથમુનાજી વગેરે અરમ-ત્યાપ્રદાયિક રીતવા પાગ્યા. તેઓ પાછળ એક પુત્રને મૂકી ગયા છે, જે પણ પિતા પારોથી મળેલા સંસ્કારોને લીધાવે છે. “શુદ્ધાદૈવ”ના તેઓ આરંભથી આઠકે તેમજ આઠકે હતા.

પરમ ભગવદીય મહિલાલલાઈ (દેવગઢ બારીઆવાળા)થી કોઈક વૈષ્ણવ અજ્ઞાત હશે. તેમણે અચાનક નતપુરામાં શ્રીનિરિશાળ :પારે (દરદાસવર્ધના ચરણમાં) ફાળુ બગુર દેહનો ત્યાગ કરી દીધો મહિલાલલાઈ એટલે ચૂંદરયામને રવીદાર ન કરતા, એકદમ સંન્યાસી જેવું તપસવી ત્યાગી જીવન ગાળતા એક મર્મોદી વૈષ્ણવ તેઓ વૈષ્ણવેલી સેવામાં તે વનતોડ મહેનત કરી મર્યા રહેલા હતા, તેઓ વિદ્વાન ન હતા, પણ જદ્દુત અને સાપ્રદાયિક સિદ્ધાંતોના જલ્દમાર અને ગાંધી હતા. તે લપસત સારા વક્તા હતા. મહુશવાળા આયુષ્માન ગેઠ મીપુરુષોત્તમલાલ બાવાની સેવામાં તત્પર હતા. તેમણે ‘પ્રેમ પત્રિકા’ નામની માસિક પત્રિકા પણ પ્રકટ કરી હતી, પણ તે ચાલી નહિ. છવટે તે ચાત્રમાં વૈષ્ણવોની અજ્ઞાત રહેલ કરતા. તેમનું અનિચ્છ શુદ્ધ હર્ષ. શ્રીનિરિશાળમાં પણ રોપવાની સેવા, મળ્યા મનોરથોની સેવા આદિમાં દેહના કમળી પરચાન કરતા ન હતા. એ ઉજુ કાલમાં મજની વેઠકા અને મંદિરોના ગુલાબના ફૂલો પહેલાંકારાની તનુલ સેવામાં તેમણે લાંબાવા ઈનાબાના તાપની કે જૂઝ તરચની પણ પરવા ન કરી. આવા એક સેવાભાવનાવાળા ભગવદીયની ખોટ કરી નહિન પૂરાય.

छपाय छे

नाम नोधावो !!

श्रीसुबोधिनीश्रुतौ संपूर्णअनुवाद

विवेचन साथे.

रसिकेश्वर श्रीकृष्णजी आवात्मक लीलाओंनु पान करतु होय, श्रीमद्भागवतनु महत्त्व लखतु होय, दार्शनिक विषयोंनु स्पष्टीकरण समजतु होय तो आनन्द नाम नोधावो. सम्पूर्ण श्रीसुबोधिनीश्रुतु सरस आध्यात्मिक अने विषय पद्योंनु स्पष्टीकरण करना अ अकेल अनुवाद छे अथ पूज्यपाद गोस्वामी श्री ६ अनिरुद्धाचार्य महाराज आरा कर छे अथवा विद्वान् अ उल्लेख समान रीते आ आध्यात्मिक अने उपकारक छे.

आह्वाने नाम नोधाववाना स्थणोः—

१. श्रीगुह्यभार्गीय युस्तकाव्य-नडियाद. २. सरैया भखिलात्र त्रिभुवनदास पीताम्बरदास वडवाकुवा-नडियाद ३. ज्योषी दामोदर लक्ष्मीराम मोटी हवेडी-जमनगर. ४. शुद्धादित कार्यालय, राजभंडेलानी पोण-अमदावाद.

श्रीकृष्णाय नमः ।

यो वै भूमा तदमृतम्, यदन्यत्तन्मर्त्यम् । (छान्दोग्यश्रुतिः)

विद्ययाऽमृतमश्नुते (ईशोपनिषद्श्रुतिः)

विज्ञापनम् ।

छात्राग्रय प्राचीन संस्कृत साहित्य, एव राष्ट्रीयभाषा हिन्दी में श्रीसुबोधिनीजी एवं श्रीहरिरायजी-आदिके ग्रन्थों का अनुवाद.

श्रीपीयूषपत्रिका.

नामके मासिक पत्रिका विद्वत्सेवरी पूज्यपाद गोस्वामी श्री ६ श्रीअनिरुद्धाचार्यजी महाराज एवं विद्वद्भक्त गोस्वामी श्री ६ श्रीवज्ररत्नगडजी महाराजके संक्षेपकृत्यमें प्रकट हो गई। विद्वज्जनों एवं सर्वसाधारणको इससे अवर्णनीय लाभ हुआ और होगा। सर्वसाधारण के हितार्थ वार्षिक मूल्य केवल तीन रुपया है। आज ही ग्राहकश्रेणीमें नाम लिखवाईये।

मिलनेका पता—हीरालाल शास्त्री, खडायना संस्कृत पाठशाला-नडियाद; हरिशङ्कर शास्त्री, बडामंदिर-नडियाद, शुद्धादित कार्यालय-अमदावाद.

हरिशङ्कर शास्त्री.

मोमांसाशास्त्री, वेदान्त विचारद M. R. A. S. व्यवस्थापक,

શક્તિ માટે સૌથી સરસ !!

અમૃત ગુટીકા !!

વીર્યવીકારના તમામ દરેક જઠમુળથી દુર કરી બદન તાકાતથી ભરપૂર અને પ્રકૃષ્ઠીન થાય છે. દરેક પ્રકારની તન-મનની નીચળતા દુર કરી, નિસ્તેજ ચહેરાને ક્રાંતિવાન અને આનંદી બનાવે છે. મગજની કમજોરી, બદનને કુખ્યાવો, માંદગી પછીની નબળાઈ, અસ્વી, અપચો ઇત્યાદિ અનેક ચારીરિક વિકારો દુર કરી નસોની શીથીલતાને મદાદે છે. દરેક રૂબા એક સરખો ગુણુ આપે છે.

કીંમત ૩૨ ટીકડીઓની ટથુબના રૂ. ૨.

જેનસઅસ્થમોલ [મીક્ચર તથા ગોળીઓ]

દમથી હેરાન થતા દરદીને ઘુરત રાહત યાપ છે. ૩૬ કંઈ પણ ત્રાસ વખત નીકળે છે અને ઉધ સારી રીતે આવે છે. સરદીની ખાંસીમાં તાત્કાલીક ગુણુ યાપ છે. નીરાશ થયેલા દરદીને અજમાવી જોવાની ખાસ બલામણુ છે.

કીંમત મીક્ચરનો રૂ. ૧૫ ગોળીનો રૂ. ૧) બને સાથે મંબાવવાથી રૂ. ૨૫.

દરેક દવાનું ટપાલખર્ચ ભુદ્. રજીસ્ટર ટ્રેડમાર્ક "જેનસ" નં. ૩૦૨ તપાસીને ખરીદ કરજો. દરેક ડેકાણે વેચાય છે. જે. એન. શેઠના પોસ્ટ નડિયાદ (ગુજરાત).

કેાણ છે એવો કે જેને ફાયદો નહિ થયો હોય ?

તરત ફાયદો આપનારી ૪૦ વર્ષથી કસોટી પર ચઢેલી.



દ્રાક્ષાસવ

બધ્યાએને જળવાન જોશભેર, મુંદર અને મુઠ્ઠી બનાવવા હોય તો મુખસંચારક કું. નું ગળ્યું ખાણમુધા પિવાયો. કિંમત એક શીશી એકના ૦૫૫) આના.

આ શરીરમાં શક્તિ વધારે છે, કબજાઆત, અશક્તિ, ઉધરસ, ઉધ ન આવવી તથા ધડપણમાં થતાં કષ્ટાધી બચાવે છે. ૧૬, માટી શીશીની રૂ. ૨) નાનીની રૂ. ૧).

મળવાનું ડેકાણું-મુખ સંચારક કું., મથુરા.

સત્યવતં સત્યપરં ત્રિસત્યં સત્યસ્ય યોનિં નિહિતં ચ સત્યે ।
સત્યસ્ય સત્યં ઋતસત્યનેત્રં સત્યાત્મકં ત્વાં શરણં પ્રપદ્યે ॥

“શ્રીભક્તિમાર્ગીય—સાહિત્યમન્દિર”

(વૈષ્ણવધર્મના સઘળાં પુસ્તકો અને સુંદર ચિત્રાદિ સાહિત્ય મેળવવાનું અચુક સ્થાન)

‘વૈષ્ણવી જનતાને નમ્ર સૂચના’

અગ્હારે ત્યાંથી વૈષ્ણવ ધર્મના સંસ્કૃત, હિન્દી—બર્ન, મરાઠી, ગુજરાતી અને ઈંગ્લીશ વિગેરે દરેક ભાષામાં છપાયેલા (મુદ્રિત થયેલા પુસ્તકો તથા શ્રીનાથજી આદિ સાતે સ્વરૂપ અને શ્રીની વિવિધ પ્રકારની દિવ્ય કૌશલ્યોનું દિગ્દર્શન કરાવતાં સુંદર અને મનોરંજક વિવિધરંગી ચિત્રો તથા શ્રીમુસાંજીજી, શ્રીગોકુલેશ તથા બિરાજમાન પૂ. પા. ગો. બાલકેના રંગબેરંગી સુંદર ક્રેટાઓ અને ચિત્રો તથા નવાં વેશના રંગબેરંગી ફેન્સી કાર્ડો, અભિનન્દનપત્રો, કેલેન્ડરો, બ્લોટીંગપેપરો તથા પોસ્ટકાર્ડો, ગીતાગોવિંદો, વિગેરે થોડા ન્યોબલવર્ધી મળશે.

તદુપરાંત ચિત્રો છપીઓની સોનેરી, નકશીદાર કે સાદી ફેબો મઠાવી આપવાનું અને પુસ્તકો, માસિકો વિગેરેને કાગળનું, કાપડનું, રેશમી કે સોનેરી ખાઈડીંગ (છલ્લ) થોડા કિંમતે કરાવી આપવામાં આવશે વિશેષ માટે લખો અથવા રૂબરૂ મળો.

“શ્રીભક્તિમાર્ગીય—પુસ્તકાલય.”

(વાચન—વિભાગ)

મુખ્ય તથા આલુઆલુના પરાઓના અને બહારગામના વૈષ્ણવો પણ ધાર્મિક સાહિત્ય ધેરુએકાં વાંચવા મેળવી શકે તેને માટે ઉપરોક્ત ફી (મફત) પુસ્તકાલયની થોડા વ્યવસ્થા કરવામાં આવી છે. પુસ્તકાલયનો લાભ ત્હેના ઉદ્દેશો અને નિયમોને અનુસરી કોઈ પણ ધર્મજીવાસુ લઈ શકે છે. વિશેષમાં એકેસે લખો આ મળે—

મળવાનો સમય—	} ગિરિધરલાલ જ. શાહ, યુકસેલર. વ્યવસ્થાપક— ‘ભક્તિમાર્ગીય—સાહિત્ય મન્દિર.’ કે. શ્રીલાલભાવાનું મન્દિર, હુવેશ્વર; મુંબઈ નં. ૨.
સવારના ૭ થી ૧૨ (રટા. ટા.)	
સાંજના ૪ થી ૮ „	

તા. કઃ—પુસ્તકાદિ સાહિત્યનો ઓર્ડર આપતી વખતે પોતાનું નામ તથા એડરેસ વિગેરે સંપૂર્ણ જણાવવું. ૨. એક રૂપીયાની અંદરની કિંમતના પુસ્તકો મંગાવનારે તેટલી કિંમત ઉપરાંત માર્ગવ્યય સહિત પોસ્ટરટાપ મોકલવા. ૩. પ્રાપ્તિતર માટે જવાબી કાર્ડ આ પોસ્ટરટાપ બીજા. ૪. કંઈપણ સાહિત્ય સેમ્પલ તરીકે મફત મોકલવામાં આવશે નહિ.

, નિવેદક—ગિરિધરલાલ જગજીવનદાસ શાહ.

ખાસ સૂચના—આ માસિકપત્રનું લવાજમ પણ ઉપરનાં ટેકાણે ભરી સકાશે.

હિસ્ટરિયાઈ વાતરોગ દર્શન.

શ્લોક ૨૦ હિસ્ટરિયા, મૂર્છા, ચક્રી, ફેફર, ગાડપણ અને બકવાદ રોગની અમોરકન છેલી શોધ મુજબ પાશ્ચાત્ય, યુનાની અને આયુર્વેદિક સિદ્ધાંતો, સમજુતી અને સાદા ઉપ-ચારોનું પુસ્તક વાંચેથી ધણી રાહત મળશે. કીમત ૧-૪-૦ પૌ. જુદું, દેશીનામું. નવા વ્યવહાર પ્રમાણે રચના ના. શાળા માટે નવું મંજુર કી. ૦૩ પૌ. ૦)૦

હિસ્ટરિયા રોગનીજ રામબાણ,

૧ પેટ'ટ દવા વાસુકુતાજ છે ઉપરના દરદોમા ૨૪ કલાકમા દ્રાવદો મળે છે. સિયોન, આફ્રિકા, ધરાન અને રચન સુધીના દરદોમા વાપરી સુખી થયા છે. મેડીકલ સરજનો હુટથી મંગાવે છે. દવા મુદ્દિનાની, કીમત ૨ ૫) પૌ. જુદું.

છગનલાલ લલ્લુભાઈ નામાવાળા, પેલેસ શાહના નાકે—વડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંગ્રહણી (ગળણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિદ્વાન વૈદ ડોક્ટરોની દવા ખાત્ર કંટાળેલા સંગ્રહણી (ગળતી), મુખાધના આગ, અતિસાર અને આતરડના કષયથી ખીઝત નિરાશાજનક દર્દિને આશીર્વાદરૂપ થક પડેલી વીસ વર્સના અનુભવની રામબાણ દવા માટે રજૂ મળેલા સવાલપત્ર મંગાવો. પત્રવ્યવહાર નીચેના સરનામે કરવો —

માસ્તર કે. જી. પટેલ એન્ડ સન્સ, ૨૫ રપેરીઆલીસ્ટ-માણસાવાળા.

હુડ મેળાપ —૨૨ રવિવારે, અમદાવાદ—કાલુપુર દાડીગરાની પોળમા તંજુગરાની ખડખી ધર નં. ૩૫૧.

અમારે બાલાનેદ બચ્ચાએને હુદ પુદ આનેદી અને સુંદર બનાવે છે. કી. ૦-૧૨-૦ પૌ. જુદું.

અમ્પાયુ કરનાર દુરાચારના દોષ કેખાડનાર દીધાયુ લાવનાર સહાચારના ગુણ સમજાવનાર

કામશાસ્ત્ર

આ પુસ્તક વાચવાથી જાતી જુવાનીને ટકાવવાનું શિક્ષણ લાયક છે. સરીરની પાપમાલી થવાનું મૂળ નજર પર આવશે અને તે પ્રાપ્તમાલીથી દૂર રહી સુખી થવાનો રસ્તો મુજબ.

કીમત કે ચોરસ કાંઈ પણ નહિ, માત્ર તમારે પૂર્વ સરનામું મોકલી મંગાવો

વૈદ્યશાસ્ત્રી મણીશંકર ગોવિંદજી

આતંકનિગ્રહ ઔપધાસય—જામનગર, કાઠીયાવાડ ૩.

આત્મ જીવન અથવા દિવ્ય અક્ષર દેહ.

લેખકો—સદગત મૂલચંદ ગુપ્તસીંહાસ તેવીવાલા બી. એ. એલએલ. બી. એડવોકેટ હાઇકોર્ટ મુંબઈ, તથા પ્રેમીસર જેઠાલાલ ગોવર્ધનદાસ શાહ એમ. એ. અમદાવાદ, ઉપરાત સુપ્રસિદ્ધ તત્ત્વજ્ઞાની સાક્ષર દિ. બ. શીશુત નર્મદાશંકર દેવશંકર મહેતા, બી. એ. નો હૃદયવેધક ઉપાધ્યાય.

કાવ્યોનો ઉદ્દેશ શો ? કવિશ્રીના તે વિશેના વિચારો, કવિશ્રીના કાવ્યોનું વર્ગીકરણ, કવિશ્રીના કાવ્યોમા નરવરતું તત્ત્વજ્ઞાન, જીવ, જગત, જલ્લ વિશેના તેમના વિચારો, સંસાર બંધનોમાથી છૂટવાના ઇલાજો, દીનતા ઉપાસના, અનન્યતા, શરણાગતિ, ભક્તિ વગેરે વિષયો પર કવિશ્રીના સચોટ વિચારો, સૂચારુ રસનું સ્વરૂપ, કવિશ્રીનું મુખ્ય લક્ષ્ય, જીવન સૂત્રો, કવિશ્રીની અન્ય કવિઆ સાથે ઊંડા, કવિનું સાક્ષર જીવન. આટલા વિષયોપર અસરકારક વેગવાળા કવમયી સવિસ્તર પ્રકરણો લખાયા છે. કવિશ્રીની ત્રિરંગી બે છમીઓ તથા કવિશ્રીના દરતાક્ષર વગેરે સામેલ છે.

તે ઉપરાત કવિશ્રીની જીવંતીઓ પર વચાચલા નિબંધો તથા વ્યાખ્યાનોનો મહાન સંગ્રહ જેમા મહાન વિદ્વાન આચાર્યો તથા વિદ્યમાન લગભગ સઘળા સાક્ષરોએ કવિશ્રીને અર્પેની સુવાસિત કુસુમાન્જલિ મહેકી રહેતી છે. ગુજરાતી સાહિત્યમા આ ગ્રંથ અનુદ્ધ બન્યો છે પચસો પૃષ્ઠ, પાકું પુસ્તક કીમત બે રૂપીઆ આ માસિકના ગ્રાહકોએ માત્ર દોઢ રૂપીએ મળશે.

મુંબઈ યુનિવર્સિટીમાં એમ. એ. ના અભ્યાસક્રમમા ટેકસ્ટબુક તરીકે મંજૂર થયેલો,

શ્રીદયારામકૃત કાવ્યમણિમાલા ભાગ ૧ લો.

(આવૃત્તિ બીજી) સુધારા વધારા સાથે છપાઈ તૈયાર થઈ ગયો છે.

આ ગ્રંથમા અત્યાર સુધીમા પ્રકટ નહિ થયેલા કવિરત્ન ભક્ત શ્રીદયારામભાઈના ઉત્તમોત્તમ અપ્રસિદ્ધ ગ્રંથો તથા કાવ્યોનો નીચે પ્રમાણે દિપ્તિપુલ્ક સાથે સમાવેશ કર્યો છે.

સમગ્રદાયસાર—(તત્ત્વજ્ઞાનનો મહાન ગ્રંથ) રામાનુજ, નિંબાઈ, મંવે અને શંકર વગેરેના સંગ્રહોના તત્ત્વજ્ઞાનનું રહસ્ય જલુજ સચોટ રીતે સમજાવ્યું છે.

અર્જામિલાખ્યાન—ભગવન્નામ લેવાનો અદ્વિતીય અમતકાર જોવો હોય તો આ ગ્રંથ જરૂર વાંચો.

કલેશકુહાર—આવા સમયમા દરેક મનુષ્ય ચિંતાના સમુદ્રમા નરકાર યાપ એ સ્વાભાવિક છે. “ચિંતા ચિતા સમાન છે.” અમો ખાતરી કદીએ છીએ કે આ ગ્રંથ વાંચ્યા પછી જીંદગીભર તમને ચિંતા યજ્ઞે નહિ.

કાલજ્ઞાનસારોશ—પોતાનો કાલ ક્યારે આવશે એ કોઈ જાણતું નથી. અને બધા મૂકલતમા રહે છે. આ ગ્રંથ એવો અદ્વિતીય છે કે પોતાનો કાલ ક્યારે આવશે તેનો જલ્દીથી નિશ્ચય થઈ શકે છે. બીજા પદો—બીજા અનેક જ્ઞાન, નીતિ અને ભક્તિના પદોનો મહાન સંગ્રહ. આટલો મોટો ગ્રંથ છતાં કીમત માત્ર રૂ. ૧) એકરૂપ રાખવામા આવી છે. પાના ૩૦૦ પાકું બાઈડિંગ, કવીશ્રીની પ્રાચીન રંગીન છબી સાથે. આ માસિકના ગ્રાહકોને માત્ર રૂ. ૦૧૧ બાર આનામા મળશે.

મળવાનું ઠેકાણું:—પ્રકાશક નારાયણદાસ પરમાનંદદાસ શાહ (હોમીવાલા)

૬. પાંજગપોળ ઓશીસ સામે, પાંજરાપોળની ચાવી, મુંબઈ નં. ૪

તન-મનની મહેનત કરનારાં !

તાકત તાઝગીથી બરપુર

‘ઝંડુ’ દ્રાક્ષાસવ

મૃદિકારિષ્ટ-શારંગધર મ. અ. ૧૦

ઘરમાં હંમેશાં તૈયાર રાખો

તાકત તાકત-તાઝગી મેળવવા

શરદી મટાડનાર

થાડ ઉતારનાર

ઉંધ લાવનાર

હસ્ત સાફ લાવનાર

ભુખ લગાડનાર

તાકત આપનાર

તાઝગી બદનાર

કામ, ખાંસી, મૂર્ખા અને સાધારણ

નબળાઓમાં તાકત આરામ આપનાર

લગ્નજીવનદાર દવા

‘ઝંડુ’ દ્રાક્ષાસવ

સવાર સાંજ જમ્યા પછી લેવો

ઝંડુ ફાર્માસ્યુટીકલ વર્ક્સ લી૦-મુંબઈ નં. ૧૪

અમદાવાદના એજન્ટ-ભોગીલાલ બ્રધર્સ; ૧૧૪, રીચીરોડ

રતલ આધીના તેર આના; રતલ એકનો રૂપિયો દોઢ; રતલ દોઢના રૂપિયા બે

મકટ થઈ ગયો !

અપૂર્વ ગુજરાતી સાંપ્રદાયિક ગ્રંથ !

ઉપદેશમીમાંસા.

પોરબંદરવાળા નિત્યનીધારથ ગોસ્વામી શ્રી: શ્રીજીવનેશાચાર્યજી મદદારને આ સરલમા સરલ મનનીય ગુજરાતી સાંપ્રદાયિક ગ્રંથની રચના કરી છે. દશદિગંતવિગ્રથી શ્રીપુરુષોત્તમજી મદદારજીનીના “ઉપદેશવિવેચકસંકલિતરામવાદ” ગ્રંથનો સંપૂર્ણ ભાવાય આ ગ્રંથમા છે તે ઉપરાંત

બ્રહ્મસંબંધમાં થતી તમામ શંકાઓ

આ ગ્રંથમા રજુ કરીને તેનું અપૂર્ણ સંતોષજનક સમાધાન કર્યું છે. આ પુસ્તક વાંચ્યા પછી બ્રહ્મસંબંધ દીક્ષા વિશે એક પણ શંકા રહેશે નહિ એવું ખાતરીથી કહી શકાય તેમ છે. લુપ્ત લુપ્ત સત્તાવન વિષયો આ ગ્રંથમાં છે. આ ગ્રંથ ઘણા વર્ષથી મળતો નહતો તે સુપ્રસિદ્ધ સાંપ્રદાયિક વિદ્વાન શ્રી. શ્રી. દરિયુજી વીરજીભાઈએ એક નાની પણ સચોટ પ્રસ્તાવના લખીને હમણાજ પ્રકટ કરાવ્યો છે, મૂલ્ય આઠે આના.

કેઠાણુ:—શ્રીલાલબાવાનું મંદિર.

બુલેશ્વર, મુંબાઈ નં. ૨ તથા તેજ મંદિરમા.

સાંપ્રદાયિક ગ્રંથો વેચનારા શ્રી. શ્રી. ગિરધરલાલ જી. શાહ પાસેથી મળશે.

ગુણાનુવાદ કેમ ગાશે ?

શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, બીન, દીલરૂબા, હાર્મોનીયમ વગેરે વાજત્રીમાં સાંપ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાતુ આલું સાધન સંપ્રદાયમાં એકેય નથી. મંગળાદી શયન પર્યંતના મુખ્ય કીર્તનો, વધાઈ અને ધમાર એ બધાંનાં ૮૦ રાગોનાં ખાસ નોટેશનો આજ ગ્રંથમાં છે. યજ્ઞાવલ્ક્ય શિખનાર માટે તાલના બોલ પણ છાપ્યા છે, ગુજરાતી ભાવામાં સવિત્તર સમજણ પાડી છે. નોંધાવર બે રૂપીઆ, પોસ્ટેજ પાંચ આના.

ડૉ. ભગવાનદાસ નારાયણદાસ કેઠડાવાળા.

સુ. ધ. ધુકા. (જી. અમદાવાદ)

‘શુદ્ધાદૈત’ જૂના અંકો.

પહેલું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાધેલા, નો. ર. ૨-૮-૦ છે, અને બીજા પરચુરણ અંકોની કીમત અંક દીઠ માત્ર બે આના છે.

બીજું વર્ષ—પૂરા અંકો નથી. પરચુરણ અંકો સીસીકમા હશે તેના અંક દીઠ બે આના છે.

ત્રીજું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાધેલા ર. ૩-૦-૦ એક જ ફાઇલ છે. પરચુરણ અંકોના અંક દીઠ બે આના છે.

ચોથું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા, માત્ર દોઢ રૂપીઆમાં, પરચુરણ અંકો અંક દીઠ માત્ર બે આના.

પાંચમું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા, બે રૂપીઆમાં. પરચુરણ અંકો અંક દીઠ બે આના.

છઠ્ઠું વર્ષ આલે છે. લખેા કાર્યોવધમા..

નવું સાહિત્ય પ્રગટ થશે.

૧. રસાલય તથા ગૂઠ રસ ગ્રન્થ—‘શુદ્ધાદૈત’માં પ્રકટ થઇ ગયલા આ બન્ને મનનીય ગ્રંથો સાથે બહાર પડી ચુક્યા છે. નોંધાવર માત્ર ત્રણ આના, ૮ ખ. ૦૧ આનો.

૨. ભાવભાવના—(ભા. ૧૯૦) શ્રીકારિકેશ્વરજીવિત આ ગ્રંથ એક અદર્શિય વિચારણીય મહાગ્રંથ છે. થોડા જ સમયમાં પ્રકટ થશે નોંધાવર પડીથી જાણવાશે.

૩. પંદરમેા અધ્યાય—શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાનો પંદરમો અધ્યાય કે જે ઉત્તમોત્તમ ગૂઠ જ્ઞાનથી ભરેલો છે તે સુદર વિવેચનો સાથે દરેક રસીક પર રાકરાચાર્યજી આદિ આચાર્યોના મતો અતાવેલા છે. થોડા જ સમયમાં પ્રકટ થશે. નો માત્ર દોઢ આનો. ૮ ખ. ૦૧ આનો.

૪. આટલું તો કરજો જ—નિત્યનિયમના આ ગ્રંથની ૩૦ હજાર પ્રત તો પ્રકટ થઇ ચુકી. માગણીથી સુધારા વધારા સાથે ફરી છપાય છે. નોંધાવર માત્ર ૧- આનો, ૮ ખ. ૦૧ આનો.

૫. ‘સંકિર્તિપાવલ્લ’—કવિશ્રી દયારામભાઈનો આ અપૂર્વ ગ્રંથ, સમગ્રજી સાથે, ૩૦ ૧ આનો, ૮ ખ. ૦૧ આનો.

૬. ભક્તવાણી—મહારાજા વિદ્યાજી શ્રી. ઇચ્છારામ ભટ્ટજી સમયસમય ઉપર કહેલા ઉત્તમોત્તમ મનનીય પ્રસંગો. પ્રકટ થશે નો ત્રણ આના, ૮ ખ. એક આનો.

૭. શ્રીગોકુલેશવરનામૃત—શ્રીગોકુલનાથજીના વચનામૃતોનો મહાન સંગ્રહ, પ્રકટ થશે. નોંધાવર પડીથી.

૮. ચોરાશી પ્રશ્નના પ્રત્યુત્તરો—છપાય છે. વાચવાલાયક ગ્રંથ. નોંધાવર પડીથી.

પંચાવન પાઠનો ગુટકો.

પહેલી આદતિ ખપી જવાથી બીજી આદતિ થોડા સુધારા વધારા સાથે છપાવી મદગુરી વણી હોવાથી આ સાદસ ખેલું છે. મૂલ ત્રણ આના, ૮ પાલ અર્થ એક આનો.

૬. ૧૭૪૮, રાજમહેતા થોડા—અમદાવાદ.

शुद्धद्वैत



श्रीमदखण्डभूमण्डलार्च्यचक्रचूडामणिश्रीशुद्धद्वैतसम्प्रदायस्थापकजगद्गुरु
 श्रीमद्वल्लभाचार्यचरणप्रतिष्ठापितप्रधानपीठश्रीनाथद्वाराश्रीश्वर
 गोस्वामिकुलकमलदिवाकर विश्वामुखाकर महोदारचरित्र
 गोस्वामी श्री १०५
 श्रीदामोदरलालजी महोदय.

॥ श्री हरिः ॥

ધાર્મિક આન્દોલન.

—૭૬૪૩૩૩—

વર્ણશ્રમ સ્વરાજ્યસંઘનું મહા વેશન.



ભારતના સર્વ સંપ્રદાયોના આચાર્યશ્રીઓનો અદ્ભુત સહકાર-વિદ્વાનોની અસાધારણ ઉપસ્થિતિ-અત્યંતજેનો કહેવાતો સત્યાગ્રહ-તેની પાછળ રહેલો ભેદ-શાંતિથી ચાલેલું કામકાજ-સુધારકોનો સખ્ત પરાજય-સનાતન આર્ય સંસ્કૃતિનો પૂર્ણ વિજય અને પુષ્ટમાર્ગીય આચાર્યશ્રીનો મહાન્ સત્કાર.

ધર્મપ્રાણુ દિવ્યદેશ-ભારતવર્ષ એટલે જગન્નિયતાની દિવ્ય પવિત્ર સૃષ્ટિનો મહાન્ આદર્શ! ભારતભૂમિ એટલે નિખતાવ્યાપિત આધ્યાત્મિક જ્ઞાનગ્યોતિ પ્રકટાવનાગ વિશ્વવંદ્ય મહર્ષિઓની જન્મદાત્રી માતા! આર્ષોવત એટલે જેના સર્વ રજ કણોમાથી પણ મધુર ધર્મ-સ્વ નિકળી રણો હોય તેવા પુનિત દેશ! આવા મહાન્ જગદ્ગંધ દેશના ગુણગાન કરનાર કોણુ સમર્થ છે? જેના પ્રિયાય ઉત્સર્ગમા સર્વોદારપ્રયત્નાત્મા પ્રભુએ અનેકવાર પ્રાદુર્ભાવ પામીને હુણ દાનવોનો સહાર કયો હતો? જેની નિર્દોષ તીર્થસ્થલીમા અતિમાનુષ્ય તપ આચરતા મહર્ષિ-મુનિઓ તથા ભક્તિમદ્ધાકિની વડેવગવના સતો અને ભક્તશિરોમણિઓને માટે પ્રભુએ અનેકવાર પ્રાકટ્ય લઇને તેમને અમદ આનંદનું દાન કર્યું છે, તે આજ ભારતદેશ છે! જગતમાના અચાનતિમિરનો ખૂણાખાચરામાથી પણ નાચ કરનાર મહાન્ તત્ત્વવેત્તાઓની ખાસ આર્ષભૂમિનુ ગૌરવ અખંડિત અને અવર્જનીય જ છે. આ ગૌરવને પ્રાપ્ત કરવા માટે અનેક દેશો સદીઓ સુધી મથગે પણ તેના લેઇને હજુ નહિજ પ્રાપ્ત કરી શકે.

સર્વશિરોમણિ-આર્ષોવર્તનું ગૌરવ માત્ર ધર્મથીજ હતુ, અને રહેશે. ભારતસંતાનોની નસેનમમો રહેના સ્વધર્મોભિમાનના પગથાણુઓએ દેશના ગૌરવને સુરક્ષિત રાખ્યુ છે ભારત-નિવાસીઓની પ્રવૃત્તિ, પછી તે વ્યાવહારિક હો કે પારમાર્થિક હો, પરતુ તે ધર્મના પવિત્ર જાધનની અરહેલનાને થોડે અંશે પણ સહન કરી શકતી નથી. ભારતની પ્રવૃત્તિઓમાથી જો ધર્મનું પૃથક્કરણ કરવામા આવે તો તે દરેક પ્રવૃત્તિઓ નિજેનન યધને દેશના ગૌરવને દાનિ પહેચાડનાર જ દેખાય આ સત્વનો પ્રકાશ દેશના ધર્મદાસ સ્થને સ્થને અનુભવાય છે. ભારતવાસીઓનાં નાનામા નાના ગાળકાએ પણ ધર્મરૂપ પ્રાણના રક્ષણ માટે ભૌતિક પ્રહોનું બલિદાન આપ્યુ છે કોમ પણ દેશનો ધર્મદાસ ધર્મના અવર્જન માટે ભારતની માફક સંખ્યાબધ દહાતો પુરા પાડ્યા સમર્થ નથી એ જ ભારતનું સર્વાંગિક ગૌરવ, એ જ ભારતનું સ્વધર્મોભિમાનમા સર્વદેશશિરોમણિપણુ છે.

સનાતન ધર્મનું સ્વરૂપ—જે ધર્મને લખને આધારીવર્ત ઇતિહાસમાં ઉચ્ચ સ્થાનને ફરી શક્યો છે, તે ધર્મનું સ્વરૂપ આલેખવાની આવશ્યકતા છે. સનાતન ધર્મ એટલે પ્રાચીનમાં પ્રાચીન ધર્મ, વેદ એ લેખવાળાશ્વસ છે, નિત્ય છે, જ્ઞાનમય છે એમાં જેનું નિરૂપણ થયેલું હોય તે સનાતન ધર્મ. વેદ પણ મંત્ર અને શ્રાદ્ધાણુ એમ બે ભાગમાં વહેંચાઈ ગયેલા છે, એટલે તે સર્વને સંપૂર્ણ માન આપવાની દરેક ધર્માભિમાનીઓની ફરજ છે. વેદના અમુક અંગને પ્રમાણ માનવું અને અમુક અંગને પ્રમાણ તરીકે ન સ્વીકારવું એમ નહીં. વેદના બધાં અંગોને એકસરખાં જ ગણીને ધર્મનિર્ણય કરવાનો છે. સ્વતઃપ્રમાણ વેદનું પ્રામાણ્ય સ્વીકાર્યા પછી તેનાં ઉપબંધલુપ્ત પુરાણો અને ઇતિહાસો, અંગપ્રત્યંગો, શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતા, ઐતરેય બ્રાહ્મણ પ્રસ્થાનો તેમ જ તન્મૂલ સ્મૃતિ અથવા પણ ધર્મજ્ઞાનમાં સંપૂર્ણ આદરણીય છે. આધારીવર્તના સ્વરૂપ આ ગચ્છેને જ્યાં સુધી આલૈકિક જ નહિથી અવલોકવામાં ન આવે ત્યાં સુધી સનાતન ધર્મનું સ્વરૂપ ગ્રમજનું મુરદેવ છે. વેદાદિ પ્રમાણ સિદ્ધાંતો અથવા ધર્મનું સ્વરૂપ પ્રતિષ્ઠાપન કરવામાં આવેલું હોય તે સનાતન ધર્મ. સ્વરૂપમાં કહીએ તો વેદાદિપ્રમાણોથી સરજાતા વડે પ્રતિષ્ઠાપન થતો હોય તે સનાતન ધર્મ.

ધર્મ અને યુક્તિવાદ—ધર્મનું જ્ઞાન દહતર થવામાં માન વેદાદિ પ્રમાણોનું પરિચીલન હેતુજન છે, એ નિઃસંદિગ્ધ થયા પછી યુક્તિવાદ તરફ દષ્ટિ કરીશું. યુક્તિવાદ ધર્મજ્ઞાનમાં કેટલેક આંશે સદાયક છે, તેની પછી કોઈ ના કહે તેમ નથી; પરંતુ તે યુક્તિવાદ મદર્પિ મનુષ્ય જ શાસ્ત્રોમાં કહીએ તો વેદશાસ્ત્રથી અવિરુદ્ધ બોધાયે. વસ્તુતઃ યુક્તિવાદ અને ધર્મ વચ્ચે શું સંબંધ હોયો બોધાયે તેનો વિચાર કરતાં સદંજ જણાય છે કે, ધર્મ સ્વરૂપ માત્ર યુક્તિવાદના આધારે કદાપિ જાણવામાં આવતું નથી. ધર્મ એ અલૌકિક છે એનાં સ્વરૂપનું જ્ઞાન યુક્તિવાદથી ચર્ચ શકે તેમ નથી; શાસ્ત્રશ્રદ્ધા અને વેદાદિમાં વિશ્વાસ જ ધર્મના તાર્કિક જ્ઞાનને મારે બસ છે, તે હોય તો જ યુક્તિવાદનું ફલ છે, નહિ તો યુક્તિવાદ નિષ્ફળ જ છે. વેદ અને પુરાણો કહે છે કે: નૈવા તર્કજ યતિતત્ત્વમેવા, અલૌકિકાણુ યે ભાવા ન તોલ્યકેળ યોગયેલ. તેમજ વેદાદિમાં ચર્ચા સંશયોનું વેદાનુકૂલ યુક્તિથી સમાધાન કરનારા શ્રીબ્રાહ્મણ લખવાનું પણ નિરૂપણ કરે છે કે: તર્કપ્રતિષ્ઠાનાત્. એ ઉપરથી સદંજ જણાય છે કે ધર્મનો આલૌકિક ભાગ ત્યાંથી શરૂ થાય છે કે જ્યાં મનુષ્યબુદ્ધિના યુક્તિવાદો વિરામ પામે છે. કેવળ યુક્તિવાદને સ્વતઃપ્રમાણ શાસ્ત્રની પેઠે સનાતન ધર્મમાં વિશેષ અવકાશ નથી; માત્ર શાસ્ત્રાનુકૂલ, કહો કે શાસ્ત્રાનુગામી જ યુક્તિવાદ જ ગ્રાહ્ય છે એમ આપણા પૂજ્યપાદ મદર્પિએનું મતેવ્ય છે. યુક્તિવાદને શાસ્ત્રસન્માન અવકાશ આપનારાં આર્પ અથવાનાં વાક્યો અર્થશાસ્ત્રને અવગણે છે, ધર્મશાસ્ત્રને નહિ. અર્થશાસ્ત્રાણુ ધર્મવર્તમાનશાસ્ત્રમિતિ સ્થિતિ: એ મદર્પિયુક્તિ પ્રમાણે અર્થશાસ્ત્રની દુર્બળતા સિદ્ધ જ છે. યુક્તિવાદ ધર્મના મર્મને સ્વાતંત્ર્યથી સ્પર્શ કરવાનું લેશ પણ સામર્થ્ય ધરાવતો નથી. યુક્તિવાદ શાસ્ત્રનાં બધાં ઉપર જ પોતાનાં ગૌરવનો મુખ્ય આધાર માને છે. શાસ્ત્ર તો સ્વતઃ પ્રમાણ હોવાથી સ્વાતંત્ર્ય યુક્તિવાદની કવચિત્ અપેક્ષા રાખે છે, અને યુક્તિવાદ વિના ધર્મના મર્મનો સ્પર્શ કરાવવાનું અસાધ્યજનું બધું પણ ધરાવે છે. કેવળ યુક્તિવાદ ઉપર આધાર રાખનારા ધર્મો ચિરસ્થાયી નથી રહ્યા, એ ઇતિહાસસિદ્ધ જ છે. સનાતન ધર્મ આવા મમયમાં પણ છે પ્રકાશ પ્રસારી રહ્યો છે, તેનું ખાસ કારણ બે તપાસીશું તો જણાશે કે તેના મૂળો યુક્તિવાદની દ્વાર જગતમાં ન હોયને વેદાદિશાસ્ત્રની રસાલભૂમિમાં સુદૃઢ રીતે સુસ્થાપિત છે.

ધાર્મિક પ્રવૃત્તિનિવૃત્તિની રૂપરેખા—ઉપર પ્રમાણે શાસ્ત્ર અને તદનુકૂલ તર્કોના આધારે જ સનાતન ધર્મના નેતાઓની પ્રવૃત્તિનિવૃત્તિ થયેલી છે, અને તેનું પદ સુદમ નિર્વ-

જેન અન્ને કરાવવાની આવશ્યકતા છે. ઇતિહાસ કહે છે કે ભારત, નિવૃત્તિપ્રિય હતું. તેની દષ્ટિ અંતર્ગત હતી. બાહ્ય ભૌતિક ઉન્નતિની તેને જરૂર ન હતી. નિવૃત્તિના ગર્ભમાંથી ઉદ્ભવેલા પરમ સુખરૂપ બાહ્ય સાથે ખેલવાના અભાસવાળું પ્રાચીન ભારત, ખદારથી સુખના આભાસ-વડે આંજી નાખનારા કુળમાં પરિણત થનારા પ્રવૃત્તિના સંતાનોને તે આહતું ન હતું 'તેની તે વેળાની પ્રવૃત્તિનિવૃત્તિઓનાં સ્વરૂપો જુદાં હતાં. ભૌતિક સુખને લક્ષ્યબિંદુ બનાવીને તે મારેતી જે અનેક હીલચાલો, કરવામાં આવે છે, તેને જ પ્રવૃત્તિસંઘા આધુનિકો અર્પે છે. પ્રાચીન મમ થમાં તેમ ન હતું. પ્રાચીન ભારતની પ્રવૃત્તિ આધ્યાત્મિક હતી. એ આધ્યાત્મિક પ્રવૃત્તિથી યતી થતી ઉન્નતિની પાછળ ભૌતિક ઉન્નતિ ધસધાનને આવતી હતી. દેશના અર્થકારરૂપ એ ઋષિ-ઓની વાણી ઉપર પછુ એટલી બધી પ્રજુતા હતી કે સ્વતઃ પ્રકટતી વાણીને અર્થ સ્વયં અનુ-સરતો, નહિ કે લૌકિકવત્ અર્થને વાણી અનુસરતી; તે ઋષિઓની આધ્યાત્મિક પ્રવૃત્તિને ભૌતિક પ્રવૃત્તિજન્ય ઉન્નતિ અનુસરતી આવે એમાં, આશ્ચર્ય શું ? સંક્ષેપમાં હાલમાં હાલમાં જેને નિવૃત્તિશબ્દથી જોખખવામાં આવે છે, તેને પ્રાચીન મદર્પિઓ આધ્યાત્મિક પ્રવૃત્તિને નામે જોખખતા; અને એવી પ્રવૃત્તિથી ઉદ્ભવતી ફક્તદાને નિવૃત્તિસંઘા અર્પતા. આર્થવર્તનના અર્થકારોની આ પ્રાચીન પ્રવૃત્તિ નિવૃત્તિથી જે ધર્મ પ્રકટ થયો છે, તેનું જ વર્ણન ઉપર છે.

સમયપરિવર્તન—ઉપર્યુક્ત ધાર્મિક પ્રવૃત્તિ અને નિવૃત્તિનું ક્રમશઃ પરિવર્તન થતું ગયું ત્યારે દેશમાં અવનતિએ પોતાનું સામ્રાજ્ય ચોતરફ વિસ્તારવા માંડ્યું. એ અવનતિ દેવીએ ધાર્મિક લાગણીથી રહિત થતા જનસમાજને ધર્મો, દ્વેષ, કુસંપ આદિ પોતાના સંતાનોના અધિકાર હેઠળ મુકી દીધા, કહો કે કુળના એક મદાત્ સાગરમાં એને ધ્રુવેથી દીવો. અગાનાધકારમાં એથી રીતે અથડાતા દેશમાં ધણા સમયસુધી ધાર્મિક અવ્યવસ્થા ચાલુ રહી. ધાર્મિક નિષંચલ બ્રાહ્મણો અને ક્ષત્રિયોની સ્વાધીનતા તીએ હતું. પરંતુ કાલવશાત્ તે નિષંચલ ધર્મરક્ષક જાતિ-ઓથી સ્વાધીન રાખી શકાયું નહિ; તેથી ઉત્તરોત્તર ધર્મનું પરિપતન થતુ ગયું. સનાતનધર્મના ઉત્તમોત્તમ અંશેના રહસ્યો, સામે ગમે તેવી રીતે આલેપો થયા. કહો કે સનાતન ધર્મને તોટી પાડવાને ચોતરફથી હુમલાઓ થયા હાયા. આ સમયે દેશમાં સનાતન પૈદિક ધર્મનું રક્ષણ કરનાર કોઈ મહાધુરધર નેતાની આવશ્યકતા હતી, કહો કે તે મારે પ્રજાનાં પ્રાકટયનીજ જરૂર હતી. કારણકે ગીતામાં પોતે પ્રતિજ્ઞા કરી છે કે જ્યારે જ્યારે ધર્મની હાનિ થશે ત્યારે ત્યાં હું પ્રકટ થઈશ. એવી રીતની પ્રતિજ્ઞા પૂરી કરવા-માટે પ્રજાએ સ્વાશે કરીને અનેક આત્મચોંટું સ્વરૂપ ધરીને સનાતન ધર્મનું સંરક્ષણ કર્યું. વેદાદિ શાસ્ત્રમાં ધર્મનાં જે જે રહસ્યો બતાવ્યાં છે, તે તે રહસ્યોને તેવા તેવા સમય, દેશકાળ અને અધિકારીઓને જોઈને પ્રકટ કર્યાં અને એક વાર ફરીને સનાતન ધર્મને ઉચ્ચ દશામાં લાવી મુક્યો. આ સમય પછુ વ્યતીત થયો, હવે આગળના સર્વ સમયને જુલાવી દે તેવા સમય આવ્યો છે. ધર્મનાં સ્વરૂપોના લોપ કરનારા અને ધાર્મિક મર્યાદાને નહિ ઇચ્છનારાઓનો સમૂહ દેશમાં વધવા લાગ્યો છે. ખદારથી અને અંદરથી સનાતન ધર્મ ઉપર પ્રકાર થવા લાગ્યા છે. કેટલાકો જ્યારે પ્રકટ રીતે હુમલો કરે છે કે સારે કેટલાકો કહો કે પહિલ-વચ્ચો ધર્મની અંદર પેળીને ધર્મથી 'યુક્ત જનસમાજનો વિશ્વાસ મેળવીને ધાર્મિક પ્રજાને ધર્મચુત કરવાનો પ્રયાસ કરવા લાગ્યા છે. આવા ચિકટ સમયમાં ધર્મના સદાપ્રદીઓને માથે સ્વર્ણમન્થલ ધર્મણ ત્રાપેતો મળતો મળતો એ કથનાનુસાર ધર્મરક્ષણનો પ્રસંગ આવ્યો છે. એક રાષ્ટ્રનો નિર્ણય કરવા મારેનો જેટલા પ્રપ્રયો થાય છે; તેટલા, કહો કે તેથી પછુ વિશેષ પ્રપ્રયો ધર્મના નાશ માટે થયા હાયા છે. પરંતુ વાહરે

આખો દેશ ઉદ્યોગહીન, અર્થહીન, કંગાલ થઈ ગયો. ઠરોડા ખેતર ખાલુકાઓને ખેળામાં લઈને ભારતમાના રહી રહી છે ! આ બધી દયાના બવાબદાર અંગ્રેજ કેળવણી પામેલા દેશનેતાઓના સમૂહ છે. હવે તેઓની આંખો ઉઘડી છે. હવે ખાદીનો જ ઉપયોગ કરવાની આગ પોકારવા માઠી છે. આર્થિક સંસ્કૃતિમાં વસોઈમાં મુખ્યસ્થાન ખાદીનેજ હોય, પણ યુગેપીય સભ્યતાના ચળકાટમાં પતંગીયાંતી પેટે પ્રાણપાપું કરનારા એ નબ્બ શિક્ષિતોને ખાદી ક્યાં મળતી હતી ? ખાદી પહેરનારા ધાર્મિકોને તો તેઓ હસતા હતા પણ બૂખમરાથી તેમની આંખો ઉઘડી ગઈ અને હવે ખાદીવાનો સ્વાગ ખૂબ બજાવવા માંડ્યો છે. આ એકજ ઉદાહરણ બસ છે. બે એક બાળ એટલે આ શરીર ઠાંકવા જેની જાળમાં આર્થિક સંસ્કૃતિને ઉરાડી મેલીને પાશ્ચાત્ય સુધારાના યુગમાં બન્યા તો કેવા હીન દયામાં આવ્યા ? આ એક માત્ર બદારના પોપાકનું ત્યાગથી જ આ દશા થઈ તો ઇવનપ્રાણ જેવા ધર્મના અનાદરથી કેવી હીન તેમજ ભયંકર દશા થશે તેનો વિચાર કરવો રતો. વર્ણોશ્રમવ્યવસ્થા બે તોડવામાં આવશે, પાતિતત્વના આદર્શોને પગલે છુંદવામાં આવશે, સ્પર્શસ્પર્શ અને ખાનપાનની વિવેક નહિ રહે તો સમાજ કેવા દુખના ગંધાત્મક રીચકમાં સડશે કે જેનો ખાલ પણ રૂવાડા ઉભા કરે છે ! જેમ માત્ર કુવેદશી વસોના ત્યાગથી હીન દશા સાંપડી અને વિદેશીને બહિષ્કાર કરવા માટે હવે પ્રાણપાપું કરવાનો મમય આવ્યો, તો આપણી સંસ્કૃતિઓને કેસવરો દીધા પછી શા દાસ થશે ? પછી ખાદીના, ઉપદેશની જેમ વર્ણોશ્રમના વખાણ થશે કે ? પાતિતત્વની પીછાણ થશે કે ? નીતિ અને ધર્મના આદર્શોનો આદર કરવામાં આવશે કે ? અત્યારે તો આ દેખાતી વસ્તુસ્થિતિને પણ કોઈ નહિ જ લુએ. “દાપોજ પાછા વગવાના” છે ! હમણા તો સ્વાસ્થ્યની મધસાળની લાજને પોનાની સંસ્કૃતિરૂપ પ્રાણપાપું કાઢી બીન, આત્મચિંતાથી યદને વિદેશીઓની સભ્યતાના ગુણાગ જ બનવાના છે. આ પ્રવાહને કોણ અટકાવી શકશે ? તો પણ ધર્મપ્રાણ આચાર્યશ્રીઓ અને વિદ્વાનોએ સામયિક પ્રવૃત્તિ કરે જ જુટકો છે.

ધર્મ માટે સર્વસ્વ્યાગ કરનાર તપસ્વી—સમયનો પ્રખય પ્રવાહ, અને તેના ભયાનક પરિણામના આલ દ્રશ્ય સમર્થ વિદ્વાન શીશુન લક્ષમણ ચાસ્ત્રીએ પરિચિતિને અનુભવ કર્યો. એમનામાં રહેલું શુદ્ધ બ્રાહ્મણ વર્ચસ્વ ધર્મદયાનો ચિતાર બેઠતે રામાચિત થઈ ગયું. એમણે ધર્મ રક્ષણ માટે કમર હમી. દ્રવ્યોપાર્જન માટેના પ્રયાસો કાયમને માટે છોડી દીધા. જ્ઞાન, અધ્યાત્મ, ભોજ, વાક્ય વગેરેનો સાથ સંપૂર્ણ રીતે ત્યજ્યો. કેવલ હૃદયમાં ધર્મરક્ષણની ધગશ જાળવી રહી ! જુલા, તૃપા, નિદ્રા વગેરેની પણ પરવા ન કરી. છતિદાસમાં કી નદિ સાંભળેલું, આધુનિક દષ્ટિએ તદ્દન અમંભાવિત એવું માદગાર બ્રાહ્મણમંદાસરમેનન કાશીમાં થયું. સર્વ સંગ્રામોના મદાન આચાર્યોને એક જ તીર્થસ્થળમાં, એક જ સખામંડપમાં એક જ રંગમંડપમાં પધરાવીને ભારતના ધાર્મિક છતિદાસમાં એક અનૈક દાખલો બેમાડી દીધો. ઉપદાસ કરનાગ સુધારકોના હાંત પણ ખાટા થઈ ગયા. તેઓ શરમને લીધે કાશીમાં ગ્દો પણ બતાવતા ન હતા. એ માદગાર સમ્મેલનનો ધાર્મિક વ્યગત્તમ થોડો પ્રભાવ પડ્યો ન હતો. આ સંમેલનનો અર્થ યશ શીલરમણ ચાસ્ત્રીજીને જ થતો છે. એ સંમેલન પછી તો સ્થિતિનું ઝડપથી પરિવર્તન થઈ ગયું. સુધારક ગણાતા દેશનાથકોએ સાર્વજનિક સંસ્થાઓમાં તથા દેશની બિવસ્થાપિકા સભાઓમાં સનાતન ધર્મ પર ગુસ્સ તેમજ બહેરમાં પણ છુરી ફેરવવા માઠી ધર્મહાસ કરનારા કાનનો ધડવા માડ્યા. તેમાંનો એક ચાલક એ ઉપનામના સંધાસનો યવના-યવનપૂર્ણ ખરડો તો પાસ પણ થઈ ગયો. આથી સનાતન ગ્રામ બગભગી ઉઠી. ચાસ્ત્રીજી તો આથી

ખૂબ ખિન્ન થયા. તેમણે તો હવે જોખ જ લાઇ લીધો. અવિરત પ્રયામ કરવા માડ્યો. ધર્મહાસ કરનારી ચાલુ પ્રવૃત્તિ સામે જે શસ્ત્રો રક્ષણ કરવા યોગ્ય છે તેના સંગ્રહ કરીને ઉપયોગ કરવામાં પાછી પાતી ન કરી. તેમણે ‘અખિલ ભારતવર્ષીય વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘ’ નામની સંસ્થા રચાવીને રચનાત્મક કાર્યક્રમ પ્રારંભી દીધો. મહામહોપાધ્યાયની સરકારી પદવી સરકારને પાછી ખેંચી આપી. રથે રથે અવિશ્વાન પ્રયાસ કરીને ‘સંઘ’ શાખાઓ તથા પ્રચાર કાર્ય મારફતે સુકૃષ્ણ સેવની સનાતની જનતાના કાનમાં ડુંડુબિના નાદો કરવા માડ્યા. આથી વિદ્વાનો તથા આચાર્યશ્રીઓ પણ જનગૃહ તથા અને તેમની સાથે પૂજ્ય સહકાર કર્યો. છેલ્લા સમયમાં મહારાષ્ટ્રના એક જ ધર્મવીર મહંત સંત સંતોષ મહારાજની સહાયતાથી મહારાષ્ટ્રમાં ખૂબ ચર્ચાટન કરીને જનગૃહિનો સંચાર કર્યો. શાસ્ત્રીજીના નિઃસ્વાર્થ ત્યાગમય જીવનની અને ધાર્મિક પ્રવૃત્તિની ભારે અસર થઇ. એથી જલગામમાં ‘સંઘ’નું ખાસ અધિવેશન રાખવામાં આવ્યું. એની સફલતા માટે તકમાત્ર તૈયારી પણ કરવા માહી.

રાહ જીવે છે. આવા વિપત્તિના સમયમાં પણ જો આપશ્રી ન પધારો તો અમારો ધર્મ સુરક્ષિત કેમ રહે ?”

શ્રીવદમણ શાસ્ત્રીજી તથા સંતોજી મંદારજી પૌષ વદ ૧૩ ગુરુવારના પત્રથી લખે છે કે:-
“જનતાપર પ્રભાવ પાડવાનું કાર્ય તો આપના જેવા આચાર્યશ્રીઓના પધારવાથી જ બની શકે છે. અમે સેંકડો પ્રયાસ કરીએ તો પણ તેથી કંઈ સિદ્ધ ન જ થાય. આપનાં સાન્નિધ્ય અને કટાક્ષ પાત્રથી જનસમૂહના મનમાં અતિ આદર ઉદ્ભવશે. આપશ્રીના પધારવાથી અહીં મંદારાશ્રીય તથા ગુજરાતી જનસમૂહ સમુદ્ગતી પેડે પ્રસરી જશે. જો આપશ્રી નહિ પધારો તો અમે અત્યંત દુઃખી થઈશું અને સનાતન ધર્મનું રક્ષણ પણ હુઈટ બનશે....આપના જેવા આચાર્યશ્રીઓએ તો કલેશ તથા શ્રમ સહન કરીને આ ધર્મરક્ષણ કાર્ય કરવા પધારવું આવશ્યક છે. અમારી આ પ્રાર્થના નિષ્ફળ નહિ જ ન્વય સમય હવે થોડો છે માટે તારફાર જવાબની રાહ જોઈએ છીએ.”

શ્રીનાથદ્વારાના સંયોગો—ઉપરના નારો તથા પત્રો વખતે શ્રીનાથદ્વારામાં જુદા જ સંયોગો હતા. શ્રીમાન્ બાવાસાહેબના નાનાં શીબેડીજીનાં શુભ લગ્ન થયે થોડો જ સમય વીત્યો હતો. ઉપરાંત પૌષ સુદ છઠ્ઠાના રોજ શ્રીમાન્ બાવાસાહેબનો જન્મદિનનો પ્રસ્નાવ હતો. મને તો અત્યુર્ધવચમપીડાધીશ્વરનો કામવનથી તાર મચો કે, કાર્તિક વદ ૧૩ ના રોજ હું શ્રીનાથદ્વારા પહોંચીશ, માટે ત્યાં જલ્દી આવવું. હું દીપોત્સવાક પ્રકટ કરીને, પી. પી. કરીને, કાર્તિકાક પ્રકટ કરીને સંપત મહેનતના કારણે તાવમાં તવાતો હતો. કાંઈ આરામની જરૂર હતી. પણ શ્રીનાથદ્વારા જવાનું કોને ન ગમે ? હું તુરત જ કાર્તિક વદ ૧૧ ના રોજ રાત્રે અમદાવાદથી ગુજરાત ગેલમાં ઉપડ્યો. લગ્ન પ્રમગે શ્રીનાથદ્વારામાં ખૂબ ધામધૂમ થઈ રહી હતી, પ્રસ્નાવમાંથી પણ સમય કાઢીને વ્યાખ્યાનોની શેજના કરવામાં આવી હતી. લગભગ બે બે કલાક સુધી સભાનો કાર્યક્રમ ચાલતો હતો. અપ્રદાયિક વિદ્વાનો—પંડિત શ્રીમાનાયકાશ્ત્રીજી, પંડિત શીખાલ-શાસ્ત્રીજી, પં. શ્રીકેશમણિજી, પં. જટારકેશજી, પં. મંગનાથશાસ્ત્રીજી આદિના વ્યાખ્યાનો યથા. ચાર દિન સુધી આ સભા ચાલી. શીત્લીધર્મીધીશ્વર અને તેઓશ્રીના અનુજ ગા. શ્રીવિદ્યનાથજી બાવાસાહેબના વ્યાખ્યાનો યથા. શ્રીમાન્ બાવાસાહેબ શીદમોદરલાલજી મહોદયના પ્રવચને તો ઘણીજ અસર કરી. શ્રીનાથદ્વારામાં આવું જાહેર વ્યાખ્યાન આપશ્રીનું પહેલું જ હતું એમ ત્યાંની પ્રજા કહેવા લાગી. હિન્દુ પ્રજા ઉપરાંત વડોરા તથા જૈન કોમના શ્રોતાઓ પણ શ્રીમા-નતા ભાષણથી ધણા જ ખુશી થયા અને પોતાના પવિત્ર નગરના યુવરાજ અને એક ધર્મોચાર્યાના આવા વિદ્વાતા અને વિચારોથી પૂર્ણ ગંભીર ઉદ્ગારો સાંભળીને મગ્ન બનવા લાગ્યા. લગ્ન માર્ગશીર્ષ સુદ ૧ ના હતાં. હું તો લગ્ન પ્રસંગ પછી શ્રીનાથદ્વારા છોડી જવાનો હતો. કારણ આપશ્રી કામવનથી શ્રીનાથદ્વારા પધારી શક્યા નહતા. છતાં પરમ લગવડીય શેડ રજુકાંડાસજીના સંજ્ઞા હુકમથી રોકાઈ ગયો. વળી માર્ગશીર્ષ સુદ ૧૫ પૂર્ણિમાને રોજ ફર વર્ષે હપ્તનભોગ થાય છે, તેનાં ફરજની પછી લાલચ હતી. પછી તો આવ્યો શ્રીગુરુજીનો મહોત્સવ, તેનો લાલ કેમ ત્યજાય ? એટલામાં શ્રીમાન્ બાવાસાહેબનો પૌષ સુદ ૬ નો જન્મદિન આવ્યો. એટલે તો “એકે દારકા” કરી પડી રહ્યો. એટલામાં તો ઉપરના તારો તથા પત્રોની હારની હાર ચઢ થઈ ગઈ. પ્રસ્તાવો અને ઉત્સવો એકઠા થવાથી જે પરિથમ આપ શ્રીમાનને પડ્યો હતો, તેમ આ એક નવી જવાબદારીએ આવીને ઘેરો લાવ્યો ! આવા સંયોગમાં શ્રીનાથદ્વારા છોડાય તેમ હતું જ નહિ. છતાં ધર્મપ્રાણ પંડિતોનો મહાન યોગદાન અને જે ધર્મરક્ષણ માટે શ્રીમાનનું પ્રાકટ્ય આ શૂભ ઉપર થયું છે, તે કાર્ય જ અમારે આવી પડે ત્યાર પછી કેમ બેસી રહેવાય ?

પડિતોની નમ્ર વિનંતિઓ પર વિનંતિઓ તથા તારો આવવા લાગ્યા. આખરે જન્મદિવસ પણ શ્રીનાથદ્વારા ન કરનાં જલગામ જવાનો નિશ્ચય કરી નાખ્યો. આ વાત તો શ્રીનાથદ્વારામાં એકદમ પ્રસરી ગઈ. અધિકારી વર્ગે તથા કર્મચારી ગણે તો પોતાની ઉન્નતિ તથા કદર થવામા આ અણુકાર્યું વિદ્ય આવી ગયું જણીને પોતાના ભાગ્યને કૃપાકંઠે આપવા લાગ્યો. કારણ કે જન્મદિનના અંગે જે દરબાર ભણાય છે તેમા યોગ્યતા મુજબ પગારમાં વધારો થાય છે, સરપાવ તથા શેઠક રકમોથી કદર પણ થાય છે એટલે એમને તો ખેદ જ થાય. તેમણે વૈષ્ણવોની વાત શી ? દિવસોથી “જન્મ દિન લાલકો ફિર આયો” એ વધાઈનો સુમધુર નાદ હૃદયમાંથી નિકળતો હતો, તેવામાં એકદમ એ આનંદરસ ઝરતો નાદ, ધ્વનિ બંધ થઈ ગયો ! એટલે વૈષ્ણવોની આશા તો નિષ્ફળ જ થઈ ગઈ. ધણો જ કચવાટ કરવા લાગ્યા. જન્મદિનનો અતૈકિક આનંદ પોતાને નહિ મળે તેથી તેમનો ઉત્સાહ જ લાગી ગયો. વૈષ્ણવોના મુખો ઉપર તો આનિની છાયા છવાઈ રહી. સમય સમયપર વિનંતિઓ શીમાનું ચંદ્ર, જન્મદિનને દેવે વડું સમય તો હતો જ નહિ. હાથમા આવેલું અમૃત કોઈ જુઠાંની જડું હોય તેવો અનુભવ વૈષ્ણવોને થયો. જન્મદિનનો આનંદ છોડીને શ્રીમાનું જલગામ પધારે તેમા કોઈ પણ શય ન હતું. આખરે લકિતની ઉચ્છ્વાસુ પોતાનો અમલકાર બતાવી દીધો. ભગવાન્ની નિષ્કુરતાને પીગળાવી નાખી ! અકિતવશ પ્રભુ જન્મદિનનો આનંદ આપ્યા વિના કેમ છટકી જાય ? આખરે બધાની હાદ્ લાગણીને યશ થયે જ છુટકો ! શીમાને પણ જન્મદિન શ્રીનાથદ્વારામા જ કયો જન્મદિનની રાત્રે જ શીમાનું તો માવણી જકચન પધાર્યો અને લા જ પોદયા. કારણ કે પોણ મુઠ હ ના રોજ સવારની દશ વાગ્યાની ટૂંંગા તો કેમ કરવાનું હતું !

સામાયક સ્થિતિની લીધણી—એક વાત તો રહી જ ગઈ, સં. ૧૯૮૬ નો પાપ માસ એટલે છ. સન ૧૯૩૧ નો જાનેવારી મહીનો. આપણી વિધિવિધિવાત રાષ્ટ્રીય લડતની પરાક્રમ્યો પહેલેલો માસ ! હમ્મરો દેશભક્તો જીવના જીવતા જ નરકવાસ કરતાએ ખરીબ દારાવાસમા અમાનુષ ત્રાસને શશ્વુથીયે બેરી રહ્યા હતા ! હમ્મરો બાલકો, સ્ત્રીઓ, વૃદ્ધો, યુવકો એ મહાનુ જ્ઞાતવ્યબુદ્ધમા મોટા જમ જેવા અધિકારીઓની લાવિઓ ખાધને, પોતાના રક્તથી લોહીનરથી જીમિતી તુપાને ફર કરતા હતા. રાજકીય લડતે ઉમ રૂપ લીધું હતું. ભીન્ડી સરકાર જરા પણ નમવા તૈયાર ન હતી. રાષ્ટ્રીય મહાસભાએ તો આ છેલ્લી લડતમા મર્ચરિય હોમા દેવાનો નિશ્ચય જ કરી નાખ્યો હતો. આવા વિકટ સમયમા યરમાંથી બહાર પણ કોણ નીકળે ? તેમણે વળી આ તો સનાતન ધર્મનો પ્રશ્ન રહ્યો. સ્વતંત્રતાપ્રાપ્તિની ધૂનમા પોતાના પાંચક પિતા મમ્મ ધર્મના આદર્શોને ઊંધી આંખે જોઈને, તેમને પોતાની કાર્ય-મિદિમા નડતર સમાન માનીને મીટાવવાની જોશભેર ચળવળ કરનારા દેશનેતાઓ સામે આ સમયે કેમ થવાય ? સમગ્ર દેશમા તેમની જ જાણે આજુ બાજની હોય એમ હતું. તેમા મુના-ઈમા સનાતન ધર્મીય સભામા જે ધાંધલ ચર્ચ હતી, તેને કોઈ વિસરી ગયું ન હતું. આ વાતાવરણથી જનગામ નહિ જ જવાની સવાહ શીમાનું મળી હતી શ્રીનાથદ્વારાના બધા વિચાર-શીલોએ એજ વિનંતિ કરી હતી. વિદ્યાવિભાગના નેતા ચાચીજી રમાનાયજી તો ધણું જ ગજ-રાતા હતા. જલગામમા શું થશે ? “વધુશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘ”ના અધિવેશનમા કેવા તોફાનો થશે ? દેશની સ્વતંત્રતાની લડત લડનારાઓ સામે થવામા અભારે કેવું જોખમ સમાયક્ષું છે ? આવા અનેક દાદ્યનિક તરંગો ઉઠતા હતા. એ ઉપર પરિમિત જીવજીવિના તકી કોઈ વિચિત્ર પરિણામના બીજજી રૂપને જોઈને ગમરાઈ જતા હતા. પણ શીમાનું આત્મજનની વાન જ કાંઈ

ઐર છે. આપના આદર્શો અને હૃદય જ ઝાંઝ ઐરસ છે ! એક અભાગ્યારી દુસ્તન ઉપર પણ મહાન વેરની ભાવના આપના હૃદયમાં કદી હિંમતની નથી. આપના નિષ્કલ્મષ સરલ હૃદયથી એક વિરોધી પણ વધ યથ જન્ય છે. કાશીમાં શું હતું ? ત્યાં કાઈ વાતાવરણ સ્વચ્છ કે અચ્છ હતું તો નહતું જ ! કાશીમાં શ્રીમાન્ પધાર્થો ત્યારે ત્યાં પણ ઘણા વિચારણીય વિદ્વાનોએ સભામાં ભાગ નહિ લેવાની યોજાવેલે વિનંતિ કરી હતી. પણ ત્યાં તો રાત્રે અને પ્રકાશમય યજ્ઞકિરણોથી શ્રીમાને સર્વ-આચાર્યતારાગણમાં એક શીતરશ્મિ અંદની માફક દર્શન આપીને બધાની અટકળે ખોટી પાટી હતી. કાશીની ધાંધળું મહામળા સમયે જે ગૌરવ શ્રીમાને પ્રાપ્ત કર્યું તે સાપ્રદાયિક ગૌરવના ધૃતિદાસમાં અદિતીય રીતે ચિરસ્મરણીય બન્યું છે. આ પ્રકટ પ્રતાપના પ્રત્યક્ષ અનુભવ પછી ગમે તેવી વિકટ સ્થિતિને પણ શ્રીમાન્ કાળમાં લાવવા એક મહાન સમર્થ મહાપુરુષ છે એ વાનમ્મા સંદેહ થવો જ ન જોઈએ. તો પણ જીવજીવિત અને સ્તેદ એ બનેના મિત્રણથી માદા-ત્મ્યજ્ઞાન તિરોદિત થાય અને 'સ્નેહ રત્ન પાપસંગ એ દવિકુલચર કાળીદાસના વાક્યનો પણ માક્ષાત્કાર સંભવે; એ જ પુષ્ટિમાર્ગની લોકોત્તર વિશ્વજીવતા છે. એટલે અન્ય વ્યક્તિ ! સ્નેહવચ્ચ કે લોકિક છદ્ધિએ શ્રીમાનના પ્રત્યક્ષ પ્રતાપજનને પણ ભૂવે એ જ સીધાવૈશિષ્ઠ્ય ગણાય ! શ્રીમાન્ તો થોડા જ એવી સનાદને આધીન થવાના હતા ? આપથીએ તો જગતમાં પધારવાનો નિર્ણય કરી દીધો. તારથી ખબર આપી અને અગાઉથી "એડવાન્સ પાર્ટી" મોકલી દીધી.

જલગામ તરફ રવાના:—સં. ૧૯૮૭ ના પૈપ સ્ક. ૭ ને યનિવારે ૧૦ વાગ્યાની ટ્રેનમાં માવળી જંદલનથી વિદાય થયા. રત્તામાં કાંઈ ગણવા જેવું અન્યું નહતું. મંદસોર ઉપર એક વૈષ્ણવ રા. મુનલી દર્શનાર્થે આવ્યા વૈષ્ણવોને ખબર નહતી, તેથી રેશન પર ક્યાંથી આવી શકે ! રાત્રે રતયામ આવ્યું રતયામ રાત્રે ૧૦ વાગ્યે છોડ્યું. 'બધા નિદ્રાવશ હતા. એટલામાં રાત્રે કોરેક વાગ્યાના સુમારે જ્યજ્યના જનનભેદી ખનિથી બધા જગૃત થઈ ગયા. જોયું તો ઇંદોર રેશન આવી અંતુ હતું સેંકડો વૈષ્ણવો દર્શનાર્થે જ્યજ્યનો ખનિ કરી રહ્યા હતા. શ્રીમાનને ડામામાંથી બહાર પધારીને દર્શન આપે છે તેટલામાં તો એકદમ ડામા પર બીડ તૂટી પડી. દર્શન પછી ચાલુસ્પર્શ મારેની આંધીરના તો વૈષ્ણવોની જોવા લાગ્યા હોય ! એવી તો ધક્કામુક્કો રાત્રે યથ જન્ય કે જાણે સ્ત્રી, વૃદ્ધ અને બાલકોની તો દુર્દશા જ આટલી ! સ્વર્ણમેવોડો બિચાગ ચુ કરે ! એટ તો ફેંકવા મારી. ગાડી ઉપડવાની તૈયારી થઈ-ગાડી ઉપડી ત્યાં સુધી આ બીડ અને જેટના પૈનાની ફેંકફેંકે આવું જ હતી ! તેમાં એકાદ ઢણ (એ પૈસા) તો માદા તથા પ્રાથવેટ સેકેટરી ગેડ રજીડાડાસ પેટવાદીનાં માથા ક્યાં છે કે પાછા તેની ખબર લેવા આવી પરોએ ત્યારે તો તેની ઐરજ લીજત આવતી ! આખરે વૈષ્ણવોના પ્રેમસાગરના મહાન તરંગો વચ્ચે બદાનોકાની જેમ આ બાગ્ગરથ ધમધમાટ કરતો આજગ વધ્યો. સ્કવારે ખંડવા પહોંચ્યા. શેડ પુરોત્તમદાસ તથા મુખ્યાલ રનિવાવઆધની આગેવાની નીચે વૈષ્ણવ સહુદાય રેશનપર ઢાબર હતા. વધારામાં હરદાથી પરમ ભગવદીય રાય-બદાદુર શેડ હરિચંકરજી ઐનરરિ 'મેજસ્ટ્રેટ પણ શ્રીમાનના દર્શનાર્થે આવી પહોંચ્યા હતા. અહીં તો ગાડી ઘણીજ રોકાઈ. એકસપ્રેસ આવે દોઢ કલાક મોટી હતી. આખરે ગાડી આવી અને નાની ગાડી જલ્દીને જ. આઈ. પી. રેલ્વેની મોટી ગાડીપર સવાર થઈ ગયા. થોડાજ સમયમાં જુહાપુર આવ્યું. અહીંની બીડે તો ઇંદોર છુધારી હીધું. ચરણુસ્પર્શ અને બંદનું દાય અહુનમ હતું. સ્વર્ણમેવોડોને બદાખત સારો હતો છતાં વૈષ્ણવો તેમની અવરથાને તોડી નાખવામાં ભક્તિભાવની પરિસીમાં માને એટલે

ભગ્ન ધર્મધ્વજ શ્રીમાન આચાર્યચરણે દરકાન્યા પછી 'તેનું' રહસ્ય ધર્મપ્રાણ શ્રી. લક્ષ્મણ શાંત્રીએ સમર્પણું હતું. તેમણે કહ્યું કે, આ ધ્વજમાં શ્રીરોષણી ભગવાન બિરાજે છે. બ્રહ્માજી ચાર વેદોનું રક્ષણ કરી રહ્યા છે. 'જગદ'ના શ્રીમદ્ભક્તી પ્રભુના ચરણ મેલી રહ્યાં છે. આ પ્રભુ પાસે એક ગોમાતા આવી છે. એ ધર્મવિધ્વંસક અસુરોના આધ્યાયારોથી પીડિત ભારતની ધાર્મિક પ્રજાની પ્રતિનિધિ છે. મૂર્ધિપ્તવૃષભાજન એ શ્રીમદ્ભાગવતના દશમસ્કંધનું રહસ્ય આ ચિત્રમાં છે. ગોમાતા ભગવાનને વિનવે છે કે હવે અસુરોના બારથી મુક્ત કરો. આ પ્રાચીન પરિસ્થિતિ અભારના યુગ ઉપર પણ રોશની ફેંકી રહી છે! તે પછી સ્વાગતસભાપતિ શ્રીસંતોજી મહારાજે પશુ ચિત્રેચન કીધું. આ ધ્વજ આચાર્યશ્રીના શ્રીદસ્તાવીર્યથી રચાવેલ યજ્ઞ છે. એનાં રક્ષણ માટે સર્વસ્વનો ભાગ આપવા તૈયાર રહેવાનું છે. તે પછી એક ઉત્સાહી જ્ઞેશ્વર વક્તા શ્રીકમલનયનાચાર્યજી શાંત્રીજીએ ગર્જના કીધી, કે "જેમ શ્રીસંક્રાંતિયાર્ષ, ગમાનુગ્રયાર્ષ આદિ મહાનુભાવોએ ધર્મ-ધ્વજ ઉઠાવીને સનાતન ધર્મને ડોકો વગાડ્યો તેમ આજના આપણા સભાપતિશ્રીએ આ ધ્વજ ફરકાવી છે! આ જલપ્રામ હંડકારણ છે. ભગવાન શ્રીરામચંદ્રજીના સમયમાં કુબ્જર તપસ્યા કરનાર મહર્ષિઓની આ તપોભૂમિ હતી. છતાં એ મહર્ષિઓને સંતાપનારા રાક્ષસો પણ આ ભૂમિમાં હતા. એ રાક્ષસોના ત્રાસથી બચાવવાની મહર્ષિઓની પ્રાર્થના સાંભળીને ભગવાને ચૈત્ર દાનવ રાક્ષસોનો સંહાર કરીને આ ભૂમિને નિષ્કંટક કરી હતી. ફરી અહીં મુસલમાનો આવ્યા હતાં શ્રીશિવાજીએ તેમનો સંહાર કરી નાંખ્યો. આ ઉપરાંત ધર્મધ્વજના ગીતો પણ ગવાયા હતા, એવી રીતે સભામંડપ ઉત્તેજક બાપણોથી ઉમળની ગયો હતો. ધ્વજમા બિરાજતા સાંસ્કૃતિક પ્રભુપાસે રાજસ તામસ વાતાવરણ પ્રસરતું હતું! શ્રીમાન બાપાસાહેબશ્રી આ કેમ સહન થાય? આપશ્રીએ પોતાની સ્વતંત્રસિદ્ધ શાત, સાત્ત્વિક સુમધુર સૈદ્ધીથી એક નાનું પણ છટાદાર અને અતિબોધક વ્યાખ્યાન કર્યું; અને મંડપમાની તામસ ઉત્ત્રતાને બદલે શાન ભક્તિરમ ભર્યો પવિત્ર પવન સચેરી રચ્યો. જનસમૂહનાં હૃદયોમા કોઇ દિવ્યભાવના ઉત્પન્ન થઈ. આ રહ્યું તે બાપણ:-

ઉપરિષ્ઠત વિદ્વદ્વન્દ, મહિલાવન્દ અને સમ્યવન્દ! વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યસંધના અધિવેશનને અને આજનો આ સમારોહ છે. અહીં એ સંધનો આ સમારોહ કેમ ગયો? વર્ણાશ્રમ અને સ્વરાજ્ય; એ બન્નેનો સંધ કેવો? આદિ વિષયો ઉપર પછીથી કહીશ. હાલ તો આ ધર્મધ્વજના વિષયમાં કાંઈક કહેવાનો છું. આ દેશ ધર્મપ્રાણ છે. ધર્મ એજ ભાગતનું સર્વસ્વ છે. 'ભારતીય જીવનની વિશિષ્ટતા એ ધર્મ જ છે. ધર્મનું રક્ષણ ભાગતવર્ષ કરે છે અને ભારતવર્ષનું રક્ષણ ધર્મ કરે છે. અધર્મનો ત્રાસ કાંઈ આજે આ દેશમા પહેલોજ પ્રસર્યો નથી. ધર્મ પણ વારંવાર યજ્ઞ થઈ જાય છે. ધર્મનું સ્વરૂપ પ્રકટ-પ્રત્યક્ષ તો હોતુ પણ નથી. જ્યારે ધર્મ પોતાનું સ્વરૂપ યજ્ઞ કરી દે છે, સંકેતી લે છે ત્યારે અધર્મનું વાતાવરણ જાગે છે. અધર્મથી ત્રાસ પામીને જનસમૂહ ધર્મના પણ રક્ષણદાર પ્રભુ-ધર્મીને ચરણે જાય છે. જગતી અતિનૃપાવાળો માણસ જેમ કોઈ જલપૂર્ણ તળાવને ચરણે જાય તેમ કુબ્જી પ્રજા આજે ધર્મ પ્રભુને ચરણે જાય છે. આ ધ્વજમાં તે જ વાત બતાવી છે. જુઓ, ભગવાન રોષણીના ચરણમા પૃથ્વી અને બ્રહ્માદિક દેવો આવ્યા છે. ધર્મના ચાર પાદ (પગ) છે. તેમાં હવે કલિયુગમા તો માત્ર એક જ પાદ રહ્યો છે અને તે પણ શિથિલ-અવસ્થામાં. એ માદનું ઉત્થાન ચાય, ધર્મ સુરક્ષિત રહે તે માટે સર્વ સંધશક્તિએ એકત્ર થઈને સતત પ્રયત્નો કરવા પડશે. શ્રીનાગયજુનાં પવિત્ર ચિત્રથી અંકિત આ ધ્વજ બતાવે છે કે પૃથ્વી અસુરભારથી દગાઈ ગઈ હતી. તેણે પોતાનું આધિદેવિક ગોમાતાનું સ્વરૂપ પ્રદર્શ કર્યું. વળી સર્વ દેશોમાં સુખ દેવ બ્રહ્માજી હોવાથી તેમને

અગ્રેમર બનાવીને મદાદેવજી વગેરે શ્રીનારાયણ પાસે આપ્યા. આ વાત કહેવાઈ છે, છતાં “પિતૃષ્ય યેષણું મેધ્યત્વાય” એ મીમાંસા-આચાર્યી ફરીને કહ્યું હું નારાયણ એટલે, નારતું, જલતું—અપન—સ્થાન; એવો અર્થ છે. આ ગામતું નામ પણ જલગામ જ છે ! (ત્રયંક તાળીઓ !) અહીં દેવોની પેઠે આપણને શેષશાયી પ્રત્યક્ષ નથી. પણ સર્વના હૃદયમાં બિરાજતા એ પ્રભુતું ચિત્ર આ ધ્વજમાં છે ! તે જલમાં સ્નેહના નારાયણની જેમ આજે આપણે જલગામમાં આ રાષ્ટ્રધ્વજમાં બિરાજતા શ્રીનારાયણની પ્રાર્થના જેમ ન કરીએ ? જેમ ત્યાં પૃથ્વી આદિનો ભાર દૂર કરવા આતા આપી તેમ અહીં પણ અલક્ષ્ય રીતે પ્રભુ ધર્મરક્ષણ કરવાની આતા કરી રવા છે. આ ઉપરાંત મને તો આ રહસ્યથી પણ એક વિલક્ષણ રહસ્ય ભાસે છે ! શ્રીવિષ્ણુના ચરણરવિંદમાં અનેક ચિહ્ન છે તેમાં એક ચિહ્ન ધ્વજતું પણ છે. આ ધ્વજ તો અહીં ફરડી રહેલો પવિત્ર ધર્મધ્વજ જ છે એવી ભાવના જ હોવી જોઈએ. (જોરભેર તાળીઓ !) એ મદાન ધર્મધ્વજને સંભાળી રહેલા એક ત્રયંક કાયાવાળા સ્વામી શિવાનંદજીએ એ ધ્વજ આ મમયે સભાપતિ આચાર્યશ્રીના પુનિત કરકમલમાં આર્પી દીધો !) એ જંડાને તો પ્રભુના ચરણરૂપ ગણીને પૂજ્યો જોઈએ. એ વાત નિઃસંદિગ્ધ જ છે. એ અમુકના સરણમાં રહીશું, એ ચરણની છાયાનો આશ્રય કરીશું તો આપણે નિર્ભય છીએ. જેમ છદ્દાદિકની સ્તુતિ સાંભળીને લગવાને અવનાર લઇને, કાલનેમિ, કંસ વગેરેનો સંહાર કર્યો તેમ અત્યારે પણ એ જ પ્રભુ સદાયક છે. અમાગે ઉદ્દેશ કોઈતું ખૂટ હમ્ભવાનો નથી. આ પવિત્ર ધ્વજ નીચે આપણા પ્રતિદંદીઓ પ્રતિસ્પર્ધીઓ આવે તો તે પણ નિર્ભય જ રહેશે. કોઈના નાસની ઇચ્છા આપણા હૃદયમાં ન જ હોવી જોઈએ. આપણે તો માત્ર પ્રભુની પ્રાર્થના કરીએ કે; એમની કૃપાને નાશ થાય અને પ્રભુ તેમને સુમતિતું દાન કરે. (કરતધ્વનિ !)

મદાન લગ્ય બુદ્ધસ-સરવરા.

આશીન આર્યસંસ્કૃતિનો વિજયધ્વજ એ ધાર્મિક સંસ્કૃતિના ઉદારક જગદ્ગુરુ શ્રીવ્રજનાચાર્યજીના વંશજ અને મુખ્યપીઠસ્થિત એક વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રીના મુખ્યારક હાથથી કરકાવ્યા બાદ એક લગ્ય સરવસ નગર-પર્વટનાથ અને ઉત્સાહ-અભિલુપ્તિ માટે યોગ્યતામાં આવ્યું સરવસને મોખરે શરણાઈ વગાડતા વાજવાળા હતા તે પછી એજ મદાન આર્ષક દિવ્ય ધર્મધ્વજ ઉઠાવીને લગ્યરેડ સ્વામી શિવાનંદજી ચાલતા હતા. તે પછી પંડિતો અને ધર્મપરાયણ જન સમૂહ ગોહવાયો હતો. મધ્યમાં શ્રી. લક્ષ્મણસાસ્ત્રીજી ‘શ્રીકૃષ્ણ ગોવિન્દ દરે મુરારે, હે નાથ નારાયણ વાસુદેવ !’ એ શ્લોકથી લગવન્નામનો ધ્વનિ કરતા તથા અસંખ્ય જનસમુદાય એ પવિત્ર નાપોઆરો ઝીંકીને ગચનમાતા અપવિત્ર વાતાવરણનો નાશ કરતા હતા. આસુર વાતાવરણ તો સૂર્યોદય થતા અંધકારની જેમ કોણ જાણે ક્યાં લપાઈ ગયું હતું ! “જગદ્ગુરુ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીની જય” “શ્રીનાથજીની જય” “શ્રીદારિકાધીશજી જય” “શ્રીદામોદરલાલજીની જય” “સનાતન ધર્મજી જય” ના મદાધ્વનિના મનાતનેધર્મીય જનતા ગમ્યત છે અને સ્વધર્મ માટે પ્રાણપણ કરવા તૈયાર છે એમ જાણવતી હતી મહજ અંધારે થતા અનેક આસતી બત્તીઓ પણ દાગર યર્ષ ગણ. સરવસમાં અલુચી પાછળ શ્રીમાન સભાપતિ મહોદય પોતાની મોટરમાં બિરાજ્યા હતા. સરવસનાં રક્ષણાર્થ મજબૂત સ્વધર્મસેવકાએ ચોતરફ પહેરો રાખ્યો હતો. સભાપતિની મોટર પર તો અસાધારણ જનસમૂહ દર્શનાર્થ ધમતો હતો, તેથી અહીં તો વ્યવસ્થા જ મુશ્કેલ પડી હતી. શ્રીમાન ગાયે આવેલા લોકોની સીપાદીઓએ પોતાનું સર્વ જળ ખર્ચીને મોટર પરનો ધસારો કાળજી લીધો હતો. સ્થલે સ્થલે સરવસના

સન્માનાય દરવાજાઓ તથા મુદ્રાલેખો હતા ! આ પ્રમાણે જનનાદ કરતું સરવસ આખા ગામમાં ફરીને ઠેકાણે આવી પહોંચ્યું હતું. આ ધાર્મિક વિજયનાદ ન સાંખનારી ઘંટાકણું જેવી કોઈ બંધિતઓ રસ્તામાં રાષ્ટ્રીય નેતાઓની જનતા પોઝરો કરતી, પણ તેમના પોઝારના પડમાં પણ તે સમયે પવિત્ર ધ્વનિ વાળી જનતાનાં હૃદયો ઝીંકી ચકનાં ન હતાં. એ રીતે પહેલા દિવસનો કાર્યક્રમ સુખશાંતિથી પૂર્ણ થયો હતો. શ્રીમાનને રેલ્વેનો શ્રમ ઉત્તરગેરો વગેરે હતાં પણ અધિવેશનને પાર ઉતારવાની વિચારણામાં ક્વિસે પણ નિદ્રા ન લીધી અને રાત્રે પણ ફરી વિચાર ચાલ્યો. શ્રીમાને તો જમની દરકારજ ન કરી. ધર્મરક્ષણાર્થે ગમે તેવો ત્રાસ પણ સહી લીધો.

જલગામમાં અદ્ભુત જનસમૂહ—સંમેલનને અગે આટેલી મોટી જનસંખ્યા યશે એનો સ્વપ્ને પણ ખ્યાલ ન હતો. દંડીની મોસમ હતી છતાં તે સમયે શીતતાએ સાત રૂપ ધરીને જનતાને કેટલીક સવડ પણ ફરી આવી હતી. ‘સંઘ’ની શાખા-પ્રશાખાઓના લગલગ પાંચીસો પ્રતિનિધિ આવ્યા હતા. નેપાલ, બંગાલ, ગિહાર, પંજાબ, રા. પી., મદ્રાસ, કર્નાટક, રજપૂતાના, રૂઝવાલ-કાશિયાવાલ, આસામ, સિન્ધ, આદિ વિભાગોમાંથી અનેક ધાર્મિક સજ્જનો અને વિદ્વાનો હાજર થયા. ઉપરાંત અન્ય દર્શનકર્તાઓની બીડતું તો પૂછવું શું ? જણે માનવ મદાસાગર પૂર્ણ ભરતીએ ચડ્યો હતો. આજુ જલગામ ‘નરગામ’ના રૂપમાં ફેરવાઈ ગયું હતું. જનસમૂહની શ્રદ્ધાનો તો પાર પણ ન ગમે. બધા આચાર્યશ્રીઓને વંદન કરી આવે ! શુદ્ધાદિતે સંપ્રદાયના સુખ્ય પીકના આચાર્યશ્રી પહેલવહેલાજ પધારેલા એટલે શ્રીમાનના બંગલા પાસે તો ચોવીસે કલાક મેદિની જગેલી રહેતી હતી. મદારાષ્ટ્રની (દક્ષિણી) ગ્રામ્ય જનતાને ખબરે પણ ન હતી કે આ તે કયા સંપ્રદાયના આચાર્યશ્રી છે ? ટેટલાકે તો ગોલે કે “શ્રીનાથદ્વારા-મઝે શંકરાચાર્ય આદે.” તો પણ તેમની શ્રદ્ધાની બલિહારી છે ! શ્રીરૂળ લઈ લઈને આવે. શ્રીમાન આચાર્યશ્રી એકજ વખત ચરણરૂપસં આપવાનો નિયમ અહીં ભળવી શક્યા નહિ. લગલગ કલાક બે કલાકે ચરણરૂપસં આપમાં પડતાં ! વળી તેઓ ચરણરૂપસં પણ અજળ રીતથી કહે ! બન્ને આખો અને માથું ચરણને લગાડે સારે જ તેમને સંતોષ થાય. સ્ત્રીપુરુષને ‘એક સરખો જ ભાવ હતો. શ્રીશકમણ્ણસાસ્ત્રી અને શ્રી સંતોજી મદારાજને તો આ માનવસાગરનું કેમ સ્વાગત કરવું તેનો જ વિચાર થતો હતો ! એ જગે મદાનુભાવોએ દિવસોથી કુષા, તુષા, નિદ્રાનો ત્યાગ કર્યો હતો. વિદ્વાનોના આદર માટે જીવતોડ મહેનત કરી રહ્યા હતા. ધર્મનિક શેડ જયપ્રીસન રામવિલાસજીનું જીર્ણોદ્ધાર કરીને લેલ માણસનું કંપાઉડ અને તેમાંનાં બધાં મકાનો તંબુઓ સ્વાગત માટે તૈયાર હતા ! જણે જલગામની રૂપથી કરતું નરગામ જ ના વસ્તું હોય એવો દેખાવ થઈ ગયો હતો. તે ઉપરાંત ગામના મકાનો, રસ્તો વગેરે પણ શેડમાં હતાં. ચારસો સ્વયંસેવકો હતા. ઉગ્રાણ, જુહાનપુર, ચાલીસગાંવ, મહાવીર વ્યાયામશાળા, ખજૂરબ વ્યાયામ શાળા આદિના સ્વયંસેવકોનો બંદોબસ્ત તારીફ લાયક હતો. જુહાનપુરના સ્વયંસેવકો તો વૈજ્ઞેવો હતા. અધિવેશનની આ મહત્તા, આ ગૌરવ, આ ભવ્યતા વિરોધીઓના હૃદયમાં આજ સળગાવતી હતી. મહાધનુનો ખસ કરવા જેમ અસુર આવતા તેમ ટેટલાકે દેવીઓએ આવીને ધર્મનિષ્ઠ અંત્યજને બહેકાવવા માંડ્યા હતા. રાત્રે જાહેર રસ્તાઓમાં પણ લાપણો કરીને સંમેલનવિરુદ્ધ તેમને ઉરકેરવાનું કામ ચાલુ કર્યું હતું.

અનિર્વર્ણનીય-મહાસમ્મેલન.

પૈંપ સદે દ સોમવારનો દિવસ તો મદારાષ્ટ્રના ધાર્મિક ઇતિહાસમાં ચાદગાર રહી જશે. વીસ હજાર સંખ્યાનો જનસમૂહ ભાગ લઈ ચકે તેવો મદાર ‘વિશાલ મંડપ તૈયાર કરવામાં

સંધનો ઉદ્દેશ—વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંધનો ઉદ્દેશ એ છે કે જન્મથી જ વર્ણભવરથા તથા આશ્રમવ્યવસ્થા માનીને, પ્રાચીન વૈદિક ધ્યેયનું રક્ષણ થાય તેવા સુરાજ્યને સિદ્ધ કરવું અભ્યારે આરે બાલુ પરથી ધર્મનો નાશ થઇ રહ્યો છે હવે તે તરફ બેઠકારી બતાનાશે તો ધર્મનો નાશ મહીપમા જ છે આ અગ્રેજ સરકારે જે દિવસથી રહ્યો અને કોલેજે મારફત આસુરી કેળવણી આપવા માટી છે તે જ દિવસથી ભારત વર્ષના જનસમૂહના હૃદયમા યુરોપનો અનીશ્વર યજ્ઞવાલ્ક્ય ઉત્પન્ન થવા લાગ્યો છે આ આસુરી તાલીમ લઈને અનેક પ્રકારના કુતકો જનસમૂહ રતો થયો છે તેમજ તેવા કેળવાયલા ગણાતા સાર્વજનિક સંસ્થાઓમા ધુસી જઈને ધર્મનાશને યિ દેશને લપ્પ જવા માગે છે સ્વચ્છદ આનંદાન, પુનર્વત્સ, વણાન્તરલક્ષ વેદ તીર્થોદિનો તેરસ્કાર વગેરે યુરોપીય સંસ્કૃતિની સ્થાપના કરવા આપણા જ દેશીઓ તૈયાર થયા છે તેઓ માંવા સ્વધર્મનાશક સ્વરાજ્યની ચાલેના રાખી રહ્યા છે આવા લોકોની અધાર્મિક પ્રવૃત્તિને ઠાકવા માટે જ આ સંધની પ્રવૃત્તિ છે આપણી સંસ્કૃતિનો નાશ કરીને મેગવેલુ સ્વરાજ્ય તે વરાજ્ય નહિ રહે, પણ યુરોપીયન રાજ્ય જ ધર્મ સંધનો ઉદ્દેશ હાલના પાર્લામેન્ટરી સ્વરાજ્યમા માનતો નથી ગાંધીજી પોતે પણ પાર્લામેન્ટની વ્યવસ્થાથી અસંતુષ્ટ છે જો કે મોતીલાલ નહેરુ ગિરે તો ભારત વષને યુરોપ બનાવવા ચાહે છે પણ આ સંધ તો રામરાજ્યને ચાહે છે નહિ જાનના સ્વચ્છોને માનતો નથી. અહીં તો શત્રુ યુગોત્પન્ન ધર્મનિક પ્રગળાવક એ જ જાગ જોઈએ આનું નામજ ખડે સ્વરાજ્ય છે આનો અર્થ એ પણ નથી કે આ વર્ણુની ઇદારનાને આ રામરાજ્યમા સ્થાન નહિ મળે સનાતન ધર્મનો મુખ્ય સિદ્ધાંત જ એ છે કે કોતપોતાના ધર્મમા રહી સિદ્ધિ મેગવરી એવે મુસનમાનો કે દ્વિશ્વિયનોના ધર્મમા ડબન : નાનો ઉદ્દેશ તો હોયજ નહિ મુસનમાન હિન્દુ ન બની શકે એ હિન્દુ મુગમા બની શકે એટલે ધર્મવિદેપના મુળજ ઉખટી જશે આવો વિધા સનાતન આદર્શ જગત્મા ના છે : મુસનમાનો તથા ઈસામજીએ બીજાએ વગાવવા માટે દેવા જીભો કયા છે ?

કોંગ્રેસ અને સંધ—આજમાન સ્વરાજ્યપ્રાપ્તિ માટે કોંગ્રેસ દેશત કષ્ટ સહન કરી રહ્યો છે કોંગ્રેસે પણ વિરોધી બદિષ્કાર તથા સ્વચ્છી પ્રચારના શસ્ત્રો લીધા છે પણ તેનું કોય અર્થ નથી છે આ સંધ તો ધર્મવૃદ્ધિથી જીએ છે અને વિદેશી માત્રમા અપવિત્ર થીએ છે તેને અકવાનીએ ના પાડે છે આ વિષય પર ‘સંધ’ પ્રયાસ પણ કરે છે આ આદર્શ કોંગ્રેસની કાર્યક્ષેત્રને મદદગાર જ ગણાય તેજ કોંગ્રેસની બીજા ધર્મથી અવિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ સામે આ મંચને કાંઈ વિરોધ નથી જ પણ કોંગ્રેસને ધર્મવિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ હાથ ધરતી હોય તે તેનો વિરોધ તો મધે જ કરવો રહેશે.

ચાલુ નાજમતા—આચાર્યજી અને પડિતવૃન્દ યાદ રાખો કે આ વખતે વાતો માત્રથી ધર્મરક્ષા થઈ શકે તેમ નથી સરકારે શિક્ષણને પોતાના પગમાં ફસાવ્યું છે તેમાથી આપણે આવી પ્રયત્ને મુક્ત કરી એ આપણ સૌથી મહેલુ કામ છે, અને તે ક જી કામ છે, એકની કેળવણી જ નહિ પણ અમારા અધિમુનિસમન ધર્મોર્થ કામ મોક્ષ રૂપ ચાર પુરુષાર્થ પણ તરમરે સર મરેના જે માટે જગતના ભાષણોથી અને કામળપર લખેલા ઈરાવથી કાંઈ પ્રયત્નિદિ થવાની નથી બાદ વિધવાના સમય કરતા પણ અધિક જોરથી અભ્યારે યુરોપી રાજ્ય સંસ્થાના આપ લોકો ધાર્મિક સ્વાતંત્ર્ય નષ્ટ થઈ રહ્યું છે બળથી નહિ પણ કળથી વેદેશીઓએ આપણા ધર્મના સ્વાતંત્ર્યને નષ્ટ કરી દીધું છે રાજ્યની સ્વનાજ એવા પ્રકારની કે કે જોના સંજ્ઞામા આવના પૂર્વજોના અથાપેલા સામાજિક રાજકીય વગેરે માર્ગો તથા વ્યવસ્થાને

शुद्धादित



आर्यसमृद्धि-सनातन धर्मक रक्षणार्थं महान् स्वार्यन्त्यागी
 और
 अविदुभान्तपर्याय स्वराज्य सचक स्थापनार्थे अग्रणी नेता
 धर्ममाण विद्वद्भर श्रीयुत् लक्ष्मणशास्त्रीजी दाविड.

૧ સંધનો ઉદ્દેશ—વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંધનો ઉદ્દેશ એ છે કે જનમથી જ વર્ણવ્યવસ્થા તથા આશ્રમવ્યવસ્થા માનીને, પ્રાચીન વૈદિક ધર્મનું રક્ષણ થાય તેવા સુરાજ્યને સિદ્ધ કરવું. અસારે ચારે બાજુ પરથી ધર્મનો નાશ થઈ રહ્યો છે. હવે તે તરફ ખેંદરકારી જતાવાશે તો ધર્મનો નાશ મહીપમા જ છે. આ અગ્રેજ સરકારે જે દિવસથી રફ્ફો અને કોલેજો મારફત આસુરી કેળવણી આપવા માંડી છે તે જ દિવસથી ભારત વર્ષના જનસમૂહના હૃદયમા યુરોપનો અનીશ્વર જડવાદ ઉત્પન્ન થવા લાગ્યો છે. આ આસુરી તાલીમ લઈને અનેક પ્રકારના કુતર્કો જનસમૂહ કરતો થયો છે. તેમજ તેવા કેળવાયવા ગણાતા સાર્વજનિક સંસ્થાઓમા ધુસી જઈને ધર્મનાશને પથે દેશને લઈ જવા માગે છે. સ્વચ્છંદ આનંદપાન, પુનર્વર્ણ, વર્ણાન્તરવશ વેદ તીર્થદિનો નિસ્સ્કાર વગેરે યુરોપીય સંસ્કૃતિની સ્થાપના કરવા આપણા જ દેશીઓ તૈયાર થયા છે. તેઓ આવા સ્વધર્મનાશક અરાજ્યની આદના રાખી રહ્યા છે આવા લોકોની અધાર્મિક પ્રવૃત્તિને રોકવા માટે જ આ સંધની પ્રવૃત્તિ છે આપણી સંસ્કૃતિનો નાશ કરીને મેળવેલુ સ્વરાજ્ય તે અરાજ્ય નહિ રહે, પણ યુરોપીયન રાજ્ય જ થશે સંધનો ઉદ્દેશ હાવના પાંચામેન્ટરી સ્વરાજ્યમા માનતો નથી આધીછ પોતે પણ પાંચામેન્ટરી વ્યવસ્થાથી અસંતુષ્ટ છે જે કે માત્રીના નહેરુ ત્રેરે તો ભારત વર્ષને યુરોપ બનાવવા ચાહે છે પણ આ સંધ તો રામરાજ્યને ચાહે છે. કાઉન્સીલના રમઝાઓને માનતો નથી અહીં તો ક્ષત્રિય કુટુંબના ધર્મનિષ પ્રમુખાવક એક જ રાગ જોઈએ. જાનું નામજ અર્થ સ્વરાજ્ય છે આનો અર્થ એ પણ નથી કે ચાર વર્ણની મહોરનાને આ રામરાજ્યમા ધ્યાન નહિ મળે સનાતન ધર્મનો મુખ્ય મિદ્ધાત જ એ છે કે, પોતપોતાના ધર્મમા રહીને સિદ્ધિ મેળવવી એટલે મુસલમાનો કે ક્રિશ્ચિયનોના ધર્મમા કબજા કરવાનો ઉદ્દેશ તો હોયજ નહિ મુસલમાન હિન્દુ ન બની શકે અને હિન્દુ મુસલમાન બની ન શકે. એટલે ધર્મવિદ્વેષના મળજ ઉબડી જશે આવા વિચાર સનાતન આદર્શ જનમમા ચાહે ! મુસલમાનો તથા ખ્રિસ્તીઓએ બીજાઓને વરલાનવા માટે કેરા જુઓ કયો છે ?

૨ કોંગ્રેસ અને સંધ—આજકાલ સ્વરાજ્યપ્રાપ્તિ માટે કોંગ્રેસ દેહાત દષ્ટ સંદન કરી રહ્યો છે કોંગ્રેસે પણ વિદેશી બહિષ્કાર તથા સ્વદેશી પ્રચારના રાસ્તો લીધા છે. પણ તેનું ધ્યેય અર્થ છે. આ સંધ તો ધર્મદ્વિષ્ટી જુએ છે અને વિદેશી શાસનમા અપચિન બીજો છે તેને અટકવાનીએ ના પાડે છે. આ વિષય પર ‘સંધ’ પ્રવાસ પણ કરે છે આ આદર્શ કોંગ્રેસની કાર્યક્ષેત્રને મદદગાર જ ગણાય તેમ કોંગ્રેસની બીજા ધર્મથી અવિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ સામે આ સંધને કાંઈ વિરોધ નથી જ. પણ કોંગ્રેસને ધર્મવિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ હાથ ધરતી હોય તે તેનો વિરોધ તો મંથે જ કરવો રહેલો

૩ આત્મ મોજસત્તા—આચાર્યજી અને પંડિતજી ! યાદ મળે કે આ વખતે વાતો માત્રથી ધમરક્ષા થઈ શકે તેમ નથી સરકારે ચિદાજીને પોતાના પંચમા ફરાબ્ધ છે. તેમથી આપણે ભાવી પ્રજાને મુક્ત કરવી એ આપણુ સૌથી પહેલું કામ છે, અને તે ક’ણુ ધર્મ છે, એટલી કેળવણી જ નહિ પણ અગારા ઋષિમુનિર્જાત ધર્માર્થ દામ મોક્ષ રૂપ ચાર પુરુષાર્થ પણ તરફારે સગ કરેના છે. માટે કેરા મોદાના બાપજોથી અને કાગળપર લખેલા ઠરાવથી કાંઈ કાર્યસિદ્ધિ થવાની નથી ‘મોદ વિધાનના સમય કરતા પણ અધિક જોરથી અત્યારે યુરોપી રાજ્ય રચનાથી આપ લોકોનું ધાર્મિક સ્વાતંત્ર્ય નષ્ટ થઈ રહ્યું છે બળથી નહિ પણ દળથી વિદેશીઓએ આપણા ધર્મના સ્વાતંત્ર્યને નષ્ટ કરી દીધું છે. રાજ્યની રચનાજ એવા પ્રકારની છે કે જેના સંબધમા આવના પૂર્વજોના સ્થાપેલા સામાજિક રાજકીય વગેરે માંડો તથા વ્યવસ્થાને

शुद्धादित २



आयममृति-सनातन धर्मचे रक्षणार्थे महान् स्वायंत्यागी
 और
 अखिलभारतवर्षीय स्वराज्य मघवे स्थापनार्थे अग्रणी नेता
 धर्ममाण विठ्ठल श्रीयुक् लक्ष्मणशास्त्रीजी द्राविड.

गुच्छादित



अखिलभारतवर्षीयधर्माश्रम स्वराज्यमघषे पर स्थापक
और

अलगायक दसुयमहाधियेशनवे स्वागत मभापति

श्रीसन्तोजी महाराज, (कुकरमुंडा)

આપણને અણુમત્રો ઉપજે છે. ધર્મપ્રેમી સુસજ્જમાનો પણ એ વિદેશી રાજ્યની કળમાં કચ્છાતાં ખિલાઈત જડમળથી ઉખરી ગઈ. એજ દશા ચીન જાપાનની થઈ. એ વિદેશીઓની આસુરી માયાવી વ્યામોહક યુક્તિ અદ્ભુત રીતે બાન બ્રૂણવનાંરી છે.

અહીં ભારતમાં પણ વિદેશીઓના વ્યાસંજયી ઋષિમુનિઓની આદર્શભૂત ચાતુર્વૃક્ષાત્મક સમાજરચના અને રાજકીય વિલામ નાશ પામી રહ્યા છે. તેમને પુનર્જીવિત કરવા છે. જદુ-મનની રાજ્યકારભારની માયાવી ભાજ ઓર છે. મતાધિકાર ક્યા નૈતિક સિદ્ધાન્ત પર આપવામાં આવ્યો છે, તેની તો કોઈ તપાસ કરો. ત્રણ ત્રણ વર્ષે ચૂટણી, કોઈ પણ નૈતિક ધોરણ વિનાની મતદારી અને ઉમેદવારી! આવી રીતે ચાલતો કારભાર તે પણ ઓરજ તરેહનો હોય એમાં શી નરાઈ. એનો પરિણામો દાખલો એ સારડા કાપ્પો છે. સુધારકોના મતાધિક્યથી એ કાપ્પો થયો. સનાતનીઓ કમર કસે તો એ એસેમ્બલીમાં એ કાપ્પો રદ કરાવે કહ્યું નથી. આજ દશા રાજનૈતિક તથા સામાજિક પ્રસ્તાવોની છે. જો દેશની રાજકીય સમા અચિયર, તો તેથી શું થિયર કિતકાય થાય? પાશ્ચાત્ય પ્રજાઓ આમજ ચગડાવે ચડી છે.

આપણા દેશની વ્યવસ્થા આપણા ચિયર મનાતને અધિ કૃત નિયમો જે અપૌરુષેય વેદપર રિયત છે, તે પ્રમાણે યપેલી છે. અમારી આ ધર્મવ્યવસ્થાનો નાશ કરનાર આસુરી રાજવિલામ છે, વિદેશી ભોડો નથી, તેથી એ આસુરી રાજકીય વિલામનો જ નાશ કરવાની જરૂર છે. આચાર શ્રીકુમારિલ ભટ્ટાચાર્ય વગેરેએ જેગ પોતાના તપોબળથી બોદ આક્રમણને પાછું હટાવી દીધું, તે પ્રમાણે કાર્ય કર્યા આ અધિવેશન કર્યું છે.

• વેદવેદાંગનિષ્ણાત પંડિતોનો દાસ થતો ભય છે તથા પ્રાચીન વિદ્યાનો પુનરુદ્ધાર પણ કરવાનું કાર્ય ઉજુ થયું છે. વિદ્યાપીઠની રચના કેવી હોવી જોઈએ, તે વિષે મારા નમ વિચાર આપની આમજ મુકું છું. સનાતન ધર્મ જાતિ અને તે તે જાતિના સિદ્ધાન્તિજ કર્ત્તવ્યોના વિવેકપર આરા આપી રહ્યો છે. શિક્ષણ યયાધિકાર હોવું જોઈએ. કેવળ શિક્ષવિલા કળા જ નહિ, પણ પ્રાચીન ગ્રન્થોના પઠનપાઠન પર પણ ધ્યાન અપાવું જોઈએ. સનાતન ધર્મ પર દશ કરનારાઓનાં લોકવચ્ચ લખાણે ઝેરી જહાર પડે છે, તેથી તેના ખંડનનું કામ પણ જોરથી અને બહોળા વિસ્તારમા યવું જરૂરું છે. સનાતની સમાજ ધોર નિદ્રામાં પડ્યો છે. સર્વની જડ પુરોહિતો તો અત્યંતમા ડુબ્યા છે. તેથી સર્વનો ત્યાગ કરી આ જાગરો ભગીરથ પ્રયત્ન કરવો પડશે. મંદિર મડ અને ધર્મોદા ખાતાઓના મહત્તો વહીવટદારો વગેરે પૈસા સાથે પ્રમાદમાં પડ્યા છે, તેમને પણ ધર્મના કામમાં ઉપયોગી જનાવવા પડશે. એ જાગત આ સધે દેખરેખ રાખવી પડશે. નહિ તો સુધરેલ જગાડકોની આખ્યો ધર્મદાષની મિલકત કાપદાંચો કરી કળજે કરવા પર લાગેલી છે, આચાર્યપીઠોની પણ એજ દશાનો ભય છે. તેથી તેમણે પણ કમર કસી ધર્મરક્ષાર્થ આ સંઘ સાથે કામ કરવું જોઈએ. આ પ્રમાણે આ અધિવેશનને અનેક કાર્ય કરવાનાં છે તેમાં જન ધનની પણ ભારે જરૂર છે. આ અધિવેશન કોઇ સંસ્થાનો નાશ કરવાને થયું નથી. પણ ધર્મશિયિજતા છોડી સનાતનીઓ યયાચકિત અદ્વાપૂર્વક આચારપરિપાલન કરે તેવા યત્ન કરવાને આ સંઘ થયો છે.

સામયિક આંદોલનોનો આદર—આ સમયે ભારતવાસીઓ ધણ જ, કષ્ટમજ જીવન પીતાગી રહ્યા છે. આવા વખતમાં એકસાથેમાં અટકવું ચાલ તેવું કાર્ય સંધ નહિ કરે એ નિશ્ચ

છે. આ વખતે જે આદિલન ચાલે છે, મુબાઈ, ધારાસણા, બારડોલી, ખેડા વગેરે સ્થળે જન-સમૂહો જે તનમનધનનો મહાન ભોજ આપ્યો છે તેને માટે ધણી ભાધઓ ધન્યવાદ અર્પી રહ્યા છે. સરકારને પણ યાગવલ્લય મદર્શિતું આ વાક્ય અને અર્પણ કરીએ છીએ:—“પ્રજાને પીડવાના સંતાપથી પેદા થયેલો અગ્નિ, રાજાના કુલને રાજલક્ષ્મીને, રાજાના પ્રાણને બાળી નાખ્યા સિવાય પાછો ફરતો નથી.” આ સ્લોક સરકાર માટે એક લખચિહ્નરૂપ યર્થ પડેલો જોઈએ. આ વખતે આ સંધ સનાતની જનસમૂહને જોરજોરથી દુઝુલિનાદ કરીને કહે છે કે સ્વદેશી વસ્ત્રો જ સનાતનીઓ પહેરે, મીઠાના પણ કપડાં ન પહેરતાં શુદ્ધ ખાદીના જેડીયાથી કાંતેલાં અને શાળોમાં વણેલાં કપડાંનો જ સ્વીકાર કરે.

આ અધિવેશન માટે જે બંધુઓએ સહાયતા કરી છે તે બધાને ચતુઃ ધન્યવાદ થતો છે.
 નમો ब्रह्मण्यदेवाय गौब्राह्मणहिताय च ॥ जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः ॥

તર્કપંચાનનની ગર્જના.

તે પછી આ. બા. વર્ણોચ્ચ સ્વરાજ્યસંઘના પ્રમુખ વર્ષના પ્રમુખ મીમાન્ પંચાનનજી તર્કરત્ન મહોદયે પરિષદમાં ભાષણ કરતાં જણાવ્યું કે:—

માનનીય ધર્માનુચી સભાસદ ગણુ! કરુણામય ભજવાને જેવી અનુકંપા ભારતવર્ષ પર પ્રારંભથીજ રાખી છે તેવા સૌભાગ્યમય સમય આજ પણ જોવામાં આવે છે. કાલ સ્વભાનથી દિવસ રાત્રિ અને શિયાળો ઉનાળો જે રીતે થોડા સ્થાન બેઠે પ્રમાણે ભાવમાં ન્યૂનાધિક થાય છે તેજ રીતે ભગવાને હિંદુસ્થાનમા એ પ્રકૃતિસિદ્ધ સ્વભાવ બનાવી રાખેલ છે. અહીં જે પણ અશુભ આવે છે તે શુભ કળ દેવાવાળું બની જાય છે, એ વાત પુરાણાદિ પ્રાચીન ધર્મિ-દાસો જોવાથી જાણવામાં આવી જાય છે. ધર્મથી શુભ થાય છે અને અધર્મથી અશુભ થાય છે. એ ધર્મ શ્રુતિ સ્મૃતિદ્વારા જ પ્રમાણિત થઈ શકે છે.

પ્રાચીન સમયમા વેન નામના રાજાએ ધર્મનાથ દરીને વર્ણસંકરના ફેલાવવાનો આરંભ કરી દીધો હતો. હિંદુ તે વખતે તેના ચરીત્રું મચન કરવાથી ઉત્પન્ન થયેલા ૧૫ મહારાજો દેવળ ધર્મનીજ રક્ષા કરી નહિ પણ તેને-ધર્મને વિશેષ યથસ્તરી બનાવ્યો. વેનનું તે અનુસ આચરણ ભારતવર્ષની સ્વાભાવિક પરંપરાનુસાર કરવાને આરંભ શુભકારક જ નિષ્પણું જેવી પછી બૌદ્ધ વિશ્વવંતો સમય આવ્યો, જેણે પ્રથમ તો વર્ણોચ્ચ ધર્મને ઉખેડવાજ માન કર્યો પરંતુ આગળ ચાલતા તેજ તેની શક્તિ કારણ બન્યું. કારણ તે વખતે મહાયુગ વારસાધન, સખર સ્વામી, કુમારિલ ભટ્ટ, ઉદયનાચાર્ય અને વિશેષ કરી પૂન્યપાદ શ્રીસંકરામાયજીનો ધર્મ તત્ત્વ પ્રકાશન પ્રભાવ તે હુમ યતા ધર્મને રક્ષીને અધિક સુદૃઢ બનાવવામાં સદાયક થયો

યદિ બૌદ્ધવિશ્વવંતો ન હોતે તો આપણને એવા મહાત્માના વમનામૃતથી નિર્ગળ પ્રધાન ધાર્મિક વિવેચનોતો લાભ મેળવીને સમયની બગડેલી તત્ત્વો મુકાબલો કરવાનું જો પ્રાપ્ત થાત નહિ. આ સંબંધમાં આ બે ઉદારદરજી બસ થયે. એથી સમજશે કે ભારતવર્ષ પર આવેલું અધર્મમૂલક અશુભ તેને માટે શુભનુંજ કારણ બની જાય છે. એવુંજ શુભ વસ્ત્ર આ વખતે પણ દર્શિઓચર થાય છે.

આપ લોક પ્રત્યક્ષ જોઈ રહ્યા છે કે વિદેશી શિક્ષણથી વર્ણોત્તમ ધર્મનો મોટો સંહાર થઈ રહ્યો છે. રાજનૈતિક પરાધીનતા હટાવવાને માટે સ્વરાજ્યપ્રતિપાદક અહિંસામૂલક અસહ-કારનું જે વર્ણોત્તમધર્મીનુસાર વિધાન અને વ્યવહાર ઋષિઓ દ્વારા બનેલ છે તેનો પણ લોક ત્યાગ કરી રહ્યા છે. અમારા ધર્મશાસ્ત્રનો સિદ્ધાંત છે કે ભારતવર્ષનું પૃથ્વીનું સર્વ શ્રેષ્ઠ સ્થાન અને શુભ કાર્યભૂમિ છે. એના વિરુદ્ધ આચરણ કરીને જે ભારતીયો મ્હેન્ટોનો સંસર્ગ કરે છે, મ્હેન્ટ દેશમાં જાય છે અથવા જે શાલણ મ્હેન્ટ ભાષા શીખે છે તેને મહાન દોષભાગી યતું પડે છે. યદિ હિંદુસ્થાનીઓ આ પ્રમાણે બચી ન જાય તો મ્હેન્ટોનો માત્ર જમીનપર અધિકાર રહેવા છતાં પણ હિંદુસ્થાનીઓનું “સ્વરાજ્ય” કદાપિ નહિ થાત અને સાથે સહકાર કરવાને કોણ પ્રવૃત્ત થાત! આજકાલની જેટલી વિદેશી વ્યવસાયની ચીજો છે તે તમામ અમારા શાસ્ત્રની આગા પ્રમાણે હમેશા ત્યાગ કરવા યોગ્ય છે. હાકકાથી સાફ કરેલી ખાંડ, દારૂ મળેલી દવાઓ, ચરબીવાળું કાપડ, બીરકુટ વગેરે મ્હેન્ટોનું અન્ન, માટીથી બનાવેલા ચીની વાસણ જે એકવાર મોઢું-સગાડવાથી એક થઈ જાય છે તે, ફોસફરસની બનેલી દીવાસળી, વિદેશી મીઠું અને સ્વાભાવિક રીતેજ અગ્રદ માદક દ્રવ્યો વગેરે વાતો અમારૂં શાસ્ત્ર ક્યાં બતાવે છે? એવી શાસ્ત્રવિરુદ્ધ વિદેશી વસ્તુઓ ખરીદીને કોણ નરકમાં જવા માગે? નો શાસ્ત્ર-પર શ્રદ્ધા રહત તો! આ રીતે સનાતન ધર્મનું પાલન થાત તો વિદેશીઓનો વ્યવસાય અહીંજ જામીજ સકત નહિ.

માટે આપણે ન વિદેશીઓથી મિત્રતા કરવી કે ન વિરોધ કરવો, કારણ એક પ્રકારથી તેઓનો સંસર્ગ થઈ જાય છે માટે જેને સંસર્ગ થઈ જાય છે તેણે તે ત્યાગીને આપણા હિંદુઓ માટે આપણા શાસ્ત્રપર નજર કરવી જોઈએ. શાસ્ત્રની રક્ત્યત્રિવાઓ હૃદયંજમ કરવી જોઈએ, હુમ વિવાઓનો પુનરુદ્ધાર કરવો જોઈએ અને યથાધિકાર અધ્યાત્મગાન માટે યતન કરવો જોઈએ અર્થાત્ આપણે યથાવિધિ નો સનાતન ધર્મનું પાલન કરીએ તો સ્વરાજ્ય આપણને એની મેલે પ્રાપ્ત થાય તેમ છે.

સારખાદ સહાનુભૂતિના તારો અને પત્રોનો મોટો ચોકડો લઇને સંમેલનના મંત્રી ધીધુન દત્તાત્રય જોધી બી. એ. એલ. એલ. બી. રંગમૂર્તિ ઉપર આવ્યા. તાર અને પત્રો મેકલનારાઓનાં નામો જ માત્ર વાંચી શક્યા. તદનંતર એક જ સમયે ભુલાભુલ વિદ્વાનોએ ચારે આચાર્યશ્રીઓને પુણ્યવાર ધરાવીને સ્વાગત કર્યું ત્યારપછી સર્વ આચાર્યશ્રીઓને ક્રમવાર સંમેલનને પ્રાથમિક શુભ આશીર્વાદમક વ્યાખ્યાનો કર્યાં.

શ્રીશંકરાચાર્યજીએ કહ્યું કે:—“પરિસ્થિતિ લયંકર છે. ધર્મશુદ્ધિમાં દલતા રહી નથી હિંદુઓમાં માર્ગ સ્પષ્ટતા નથી. “પિતૃપોતાના કર્મમાં રહીને જ સિદ્ધિ મેળવી શકાય” એ શાસ્ત્ર-વચન કોણ સાંભળે છે? સ્વતંત્રતા માટેના વ્યર્થ પ્રયાસો થઈ રહ્યા છે, ધર્મરહિત સ્વતંત્રતાથી તો ભારતવર્ષનું પતન જ થશે. ભારતવર્ષની અન્નેક પ્રતિષ્ઠા ધર્મથી જ છે. ધર્મનો આદર્શથી બ્રહ્મ બનીને, પૂર્વજોની કીર્તિને બટો લગાડી, અધાર્મિકતાને ખરીદી શું લદાણ લેવાના છે? હવે તો ધર્મનિષ્ઠ જનતાએ સંધનક્રમ ધર્મરક્ષા કરવી રહી. એ યતનમાં બધા યસસ્વી બનો.”

શ્રીરામાનુજાચાર્યજી સંસ્કૃતમાં બોલ્યા કે:—“અત્યારે તો લોકોને સ્વધર્મનો ત્યાગ જ કરી નાખવો છે, અને દુઃખ વહોરવો છે. નો ધર્મમાં બધા આવે તો વિપત્તિનું નામોનિશાનજ

ન રહે. સમાજની આ અવોગતિનું કારણ આધુનિક અંગ્રેજી શિક્ષણ છે. બાળકોને હુવામાં ધકેલવામાં આવે અને તેથી જેમ તેનો સર્વનાશ થાય તેમ આધુનિક શિક્ષાલયોમાં બાળકોને મોકલાય છે, અને ધર્મહીન દશા અનુભવાય છે. જે સત્તાએ આ રિયતિ કરી છે, તેના હાથનાં વિદેશી કપડાં પહેરતાં પણ શરમ આવતી નથી. વસ્ત્ર તો હીક પણ તે દેશના અપવિત્ર બિરકુટ બાઇને પોતાનું અંતર પણ બદલ કરાય છે. આને માટે યુનાઇટેડ આપણે જ છીએ. અંગ્રેજો કેટલા સ્વાભિમાની છે ? બાળક જન્મવાનું હોય છે ત્યારે અહીંથી વિલાપતમાં ચાલ્યા જાય છે. જ્યારે આપણા દેશીઓની મૂર્ખતા જુઓ. તેઓ પોતાના બાળકો વિલાપતમાં જન્મે એમ ઇચ્છે છે ! વિદેશીઓએ નિજ બાલુબલથી આ દેશની સત્તા મેળવી નથી, પણ છગકપટથી મેળવી છે. એ જ છગકપટમાં દસાયલા દેશીઓ આપણા ઘરને ઉજાડ કરવા મથી રણા છે ! ચારે વર્ણ વિરાટના જુદાજુદા અંગરૂપ છે, પોતપોતાના ગુણકર્મોનુસાર વર્તે તો ઉદાર જ છે. આમાં ઉચ્ચ નીચતાનો ટોટો જ ક્યાં રહેલો ? “અનાચારથી બધા ચાકાલ બની જાય છે” એમ રૂપક કહ્યું છે. માટે પોતપોતાનો ધર્મ નભાવીને દેશની પ્રતિષ્ઠા સિદ્ધ કરો, ઉઠો, જાગૃત થાઓ.”

પ્રતિવાદિભયંકરાચાર્યજીએ વિવેચન કરતાં જણાવ્યું કે:—“અહીં પ્રારંભમાં અમારી પાસેથી આશીર્વાદની ઇચ્છા રાખવામાં આવી છે. અમારા આશીર્વાદથી બધાનું કલ્યાણ થાય એવું સામર્થ્ય રહ્યું નથી કાંઈ જમાનો તેવો હશે, પણ અત્યારે તો ‘મુખ પરાયા અનથી કાણું’ કહ્યું, હાથ પરાયા દાનથી સળગાવ્યા તો એ શક્તિ ક્યાંથી આવવાની હતી ?” હવે તો આપણે બધાએ મળીને પરમેશ્વરને પ્રાર્થના કરવાની છે. કારણ કે સમયસમય પર અવતાર લાક્ષણિક ધર્મોના રક્ષણકાર તે જ બને છે ! આપણી પ્રાર્થના તે જરૂર સાંભળશે, એવો આપણા હૃદયમાં વિશ્વાસ હોવો જોઈએ. આપણે બધાએ ધર્મનિહ થવું ધરે. ધર્મોનુરાગી બનીને, એકસંપ જનગણને પ્રાચીન મર્મોદાનુસાર આશરું રહ્યું. તો સ્વરાજ્ય પાસે જ છે.”

સભાપતિ શ્રીમાન્ આચાર્યશ્રીના આશીર્વાદ.

આચાર્યવર્ધ ગા. શ્રી ૬ શ્રીદામોદરલાલજી મહેશ્વરે જીવંદ અવાજે એકે નાનું, પણ છટકારા વિવેચન બધા આચાર્યોના બ્યાખ્યાન પછી કર્યું. આપશ્રીએ રંગશૂભિ ઉપર ઉભા થઈને બાવણુ શરૂ કર્યું તેથી સભામાં શાંતિ પ્રસરી ગઈ. એ ટુંકું બાવણુ આ પ્રકારે છે.

યાદશોડસિ હરે કૃષ્ણ ! તાદશાય નમોનમઃ ॥ યાદશોડસિ હરે કૃષ્ણ તાદશો માંચ પાલ્ય ॥

બધા ઉપસ્થિત આચાર્યજીએ આ વિષયમાં ખૂબ કહ્યું છે. પોતપોતાના હાલ ઉદ્યોગો વ્યક્ત કરીને આશીર્વાદો પણ આપ્યા છે. પ્રસ્તુત પરિસ્થિતિમાં શું કરવું છે તેનું પણ પ્રતિપ્રાદન થઈ ગયું. કલિયુગમાં સંઘસંક્રિતનું પ્રાણસ્થ છે. સર્વ આચાર્યો મળીને જે કહે, જે કામ પ્રારંભે તેમાં ભગવાન શક્તિ પ્રેરે છે. મારામાં તો આશીર્વાદ આપવાનું સામર્થ્ય નથી. મારા કરતાં ધણી વયોદ્ધ એવા આચાર્યોએ અહીં ઉપસ્થિત થઈ આશીર્વાદ આપી દીધા છે જ, તો હું શું આશીર્વાદ આપું ? અમારા એ આશીર્વાદ માત્ર જ નહિ, પણ અહીં પ્રત્યક્ષ બિરાજતા વેદભગવાનને શરણે આપણે રહેવાનું છે, માટે પ્રવચન તેને વંદન કરો ! [એમ બોલીને શ્રીમાને સ્વર્ણસિંહાસન પર મધ્યમાં બિરાજતા વેદભગવાન પાસે જ્યારે સિર ઝુકાવ્યું ત્યારે તો સભામાં ઝાંઈ અનેકો પ્રભાવ પડ્યો અને ‘ધન્ય દો, ધન્ય હેદર એ અવજાથી આપો મંકપ યાજી

હોયો! કરતક પ્વનિથી ઉત્સાહ તથા દિવ્ય શક્તિના ફેલાવાનો પુરાવો આપના જનસમાજે શ્રીમાનતા અને વેદભગવાનના 'જન્મનાદ' કરી મૂક્યા!] એ જ વેદભગવાનના આશીર્વાદથી બધું કામ પાર ઉતરશે કારણ કે વેદભગવાન અનાદિસિદ્ધ છે. એ વેદ શ્રીકૃષ્ણના નિઃશ્વાસરૂપ છે. શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન જ કામિક, વાચિક અને માનસિક આદીર્વાદ આપે તો કૃતાર્થતા છે. કાષ્ઠ પુછે કે આ સંધમાં વર્ણોશ્રમ અને સ્વરાજ્ય બે એક કેમ થઈ જવાં? એ બનેનો સંબંધ શો? ધર્મ તો એક વૃષરૂપ છે અને કલિયુગમાં માત્ર તેનો એક જ પાદ, તે પણ શિથિલ અવસ્થામાં છે પણ દળદર દાયે શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન તેની રક્ષા કરે છે. વર્ણોશ્રમ પણ ધર્મનું એક અંગ છે. એની રક્ષા સ્વરાજ્યથી જ થઈ શકે. પરિક્ષિત રાજા જેવા સમ્રાટોની સત્તામાં એ ધર્મ સ્પર્શિત હતો. તે વખતે તો માત્ર એક જ મહારાજા પરિક્ષિત હતો. અહીં તો અત્યાર અનેક આચાર્યો, પંડિતો આદિ આવેલા છે. તો જરૂર વર્ણોશ્રમરક્ષા થશે જ. જો વર્ણોશ્રમને દશાવીને કેવળ 'સ્વરાજ્ય' સિદ્ધિ કરવામાં આવશે તો તે 'સ્વરાજ્ય'નો અર્થ શો? પોતાનું સ્વત્ત્વ ભારતીયત્વ નષ્ટ કરીને સ્વરાજ્ય મેળવ્યું તો શું? સ્વરૂપ તો નાશ પામ્યું ત્યાં સ્વ-પોતાનું રાજ્ય કેમાં રહ્યું? એ તો કાષ્ઠ વિદેશી કે વિધર્મીઓનાં રાજ્ય જેવું જ થાય. ભારતીય સંસ્કૃતિનો નાશ થવા પછીનું સ્વરાજ્ય કામનું શું છે? પોતે જે યજ્ઞ પર-દ્રુમશાખાની ઉપર ફલની ઇચ્છાથી ચડ્યા, તે જ શાખાને છેલ્લાની મૂર્ખતા કરનારને શું ફલની પ્રાપ્તિ થઈ શકશે? ના, કદી નહિ. આજકાલ 'સ્વરાજ્ય'ના પોકારો થઈ રહ્યા છે, પણ સ્વરાજ્યનો અર્થ શો? સ્વ એટલે મનુષ્યો, તેમનું રાજ્ય તે સ્વરાજ્ય, એ જ અર્થ કે બીજો છે? તો હવે મનુષ્ય એટલે શું? તો એ જ પ્વનિ નિકળશે કે જે પોતાના પરંપરાજન ધર્મનું રક્ષણ કરે. સૌકિંકની સાથે અસૌકિક તરફ નજર રાખે. આ દુન્યવી સુખમાં જ માત્ર ન મોહાતાં ધર્મનું રક્ષણ કરીને અસૌકિક શ્રેય સિદ્ધ કરે એનું નામ મનુષ્ય. એ ધર્મનો જ જ્યાં નાશ થયો ત્યાં મનુષ્યતા-ઇ-સાન્ન્યત કેમાં રહેવાની હતી? ધર્મેજ દીના: વયુધિ: સમાના: । ધર્મથી દીન થતાં પશુના જ પ્રાપ્ત થશે. જો પશુના પ્રાપ્ત થઈ તો પશુને પશુ પર શાસન કરવાનો કોશી દહ્ક નથી અને તેનું શાસન ચાલતું પશુ નથી. ધર્મ વિના સુખસાંતિ જ નથી. મનુષ્યતાનું લક્ષણ એ જ છે કે ધર્મરક્ષણપૂર્વક શાસન કરતું એ માણસાઇ ગણાય. આનું જ નામ ખડે સ્વરાજ્ય છે. ભગવાન પુન:પુન: ધર્મરક્ષણાર્થે પ્રકટ થાય છે, અને ધર્મરક્ષણ કરીને, ધર્મદ્રોહી સિંધુપાલ વગેરેનો સંહાર પણ કરે છે. એ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર સર્વની ધર્મશ્રદ્ધા રિધર અને જગતની બનાવે એ જ પ્રાર્થના છે." (તાગાઓ)

સભાપતિનું વરણ.

તે 'જહી સભાપતિની વરણીનું કાર્ય કાર્ય કરવામાં આવતાં શ્રીગિરિધરજીના આજ્ઞાને સંજેશ્વરપીઠાચાર્ય શંકરાચાર્ય ઉઠીને ચાલના થયા । આખી સભાને આ રુપું નહિ. કારણ કે હવે કાર્યક્રમ બહુ ન હતો. તેમજ સર્વ આચાર્યોના સહયોગની જનના ઉપર અસર પણ થઈ જ થાય. ખેર, પ્રજાએ એ બનેને એવી માત્ર પ્રેરી દગે! પણ ઉદાર વિચારના શ્રીરામાનુજાચાર્ય શ્રીપદ્મિરિપીઠાધિપતિ પતિરાજ સ્વામી તો બિરાજમાન રહ્યા. એ દહ અને સમર્થ વિદ્વાનના રત્નપૂર્ણ જ્યવહાર વિશે હવે પછી ઉદ્દેશ્ય કરીશું. મદામદોપાધ્યાય પંડિત શ્રીગિરિધર શર્મા રંજનમિ ઉપર આવ્યા. પ્રચંડ પ્વનિથી તેમજ આ અધિવેશનનું મુકાન જગદ્ગુરુશ્રીવલ્લભાચાર્યજીના મુખ્યપીઠારિધન આચાર્યવર્ષ ગો. શ્રીદામોદરદાસજી મરોદ્ધવના કરકમલમાં સોંપવાની રરખાસન રણ કરી. આ વખતે એ વિદ્વાન વક્તાએ એક હાસ્યદાર વ્યાખ્યાન પણ કર્યું. તેમાંના

આ ઉદ્ધારો તો તેમના નોધવા લાયક છે:-આર્થ સંરક્ષિત, વૈદિક સંસ્કૃતિના છેલ્લા મહાન ઉદ્ધારક શ્રીવલ્લભાચાર્યજી યથા કે જેઓ શ્રીએ બારત વર્ષમા ભક્તિ-મંદાકિની ગંગાનો પ્રવાહ ફેલાવી દીધો. જેઓશ્રીનું પ્રધાનપીઠ શ્રીનાથદ્વારા છે. તે સ્થાનને આપણા સભાપતિશ્રીના શ્રીપિતૃ-ચરણ આચાર્યશ્રી અલંકૃત કરે છે. આપણા સભાપતિશ્રી તો યુવરાજ છે. જેમ કોઇ સમ્રાટ દિગ્વિજય માટે પોતાના યુવરાજને મોકલે તેમ વર્ણાશ્રમના રથસ્યાર્થ શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વર-આચાર્ય-સમ્રાટે-પોતાના યુવરાજશ્રીને દિગ્વિજયાર્થ મોકલ્યા છે. હવે આપણે નિર્ભયપણે એમના સભા-પતિત્વનીયે કાર્ય કરવાનું છે ! ” સભાપતિનું વરણ કરનારા કરાવને દરેક પ્રાતના પ્રતિનિધિઓએ અનુમોદન આપ્યા પછી તે દરાવ તાળાઓ અને હથોત્સાહપૂર્ણ જળનાદના ખનિ સાથે પસાર થતાં શ્રીમાન સભાપતિ મહોદયે આરંભિક બાપણ કરતાં જણાવ્યું કે:-

આધુનિક પરિસ્થિતિ કેવી છે તે સર્વના ધ્યાનમાં છે. આ સ્થિતિમા આવો મહાન કાર્યભાર ઉઠાવવાની તાકાત મારામા નથી. અધિવેશને મારું સભાપતિ તરફિનું જે વરણ કર્યું તે ઠીક છે, પણ તે વહન કરવાનું સામર્થ્ય પણ નોંધ્યે ! શૌનકાદિક ષડ કરતા હતા, માત્ર નિમિત્ત રૂપ હતા. યજ્ઞમાન તો નિમિત્તજ છે. કાર્ય તો અન્ય ઋત્વિજાદિ કરે છે આવા મહાધરુનો ભાર ઉઠાવવો એ પણ અટોભાગ્યજ ગણ્યામ ! વસ્તુતઃ હું સભાપતિ નથી. સામ્યા સભાપતિ તો અહીં બિરાજતા વેદ ભગવાનજ છે. તેજ કૃપા કરીને મારા પર જે સભાપતિનો ભાર સ્થાપિત થયો છે તે ઉઠાવી લેશે. આ ભાર તે જડ પદાર્થનો ભાર નથી. અસૌક્રિક ભાર ઉઠાવ્યા વિના ચાલેજ નહિ. અહીં પધારેલા યાવન્માત્ર આચાર્યશ્રીઓ એ ભાર ઉઠાવવાની શક્તિને પ્રેરશેજ. અને પ્રત્યક્ષ બિરાજતા વેદભગવાનને સાદૃશ્ય દંડવત્ કરીને પ્રાર્થના કરે છું કે, આ સ્થાનનું ગૌરવ તેઓ રક્ષણ કરી રાખે. (“ નમો ઘજપથવેવાય ” એ શ્લોકનો ઉચ્ચાર કરીને વેદ ભગવાનને જ્યારે સભાપતિશ્રીએ સાદૃશ્ય દંડવત્ પ્રણામ કર્યો ત્યારે તો આખી સભાના હૃદયો મદ્દાજગથી ધ્રુવકાષ્ઠ મર્માં ! વયોત્તર આચાર્યો અને વિદ્વાનોની આખો અશ્રુભાંતી યર્ધ ગર્ધ !) ત્યાર બાદ સભાપતિશ્રીએ આચાર્ય અને વિદ્વાન ત્રાલજોને હસ્ત નેહીને આ સ્થાન મદ્દણ કરવા આગ માગી. આ વખતે સભાપતિશ્રીના મૂળ પૂર્વજ આચાર્યશ્રીનો શ્રીસુમોધિનીજનો શ્લોક-માત્રા ચચ્છન્તુ સિદ્ધે કાનમા શુંજ રહ્યો ! આ નમ્રતા, આ વિવેક, આ દિગ્વ ગુણની આખી એક સમર્થ રાજસત્તાધારી આચાર્યશ્રીમાં, એક કરોડ અનુયાયીઓ જેઓશ્રીને પોતાના હૃદયસમ્રાટ માને તેમનામાં કદી સંભવે ? આ વિચારે તો સભાને આશ્ચર્યમા કુબાલી દીધી ! વયોત્તર શ્રીરામાનુજાચાર્યજી તો મહાગૃહ કંઠે સંસ્કૃતમાં બોલ્યા કે; “ આ યુગ તો શ્રીવલ્લભયુગ છે, વલ્લભ એટલે પ્રિય. તેથી સર્વ લોકના તમે પ્રિય છો. બધાએ તમને સભાપતિ ખનાવ્યા છે. સર્વને પ્રિય થાઓ તેવી રીતે આ સ્થાનને દીર્ઘાવો. ” વળી નાથદ્વારાધીશ છે. નાથદ્વારા એટલે પ્રભુને મળવાનું દ્વાર, એ અથ તો પ્રસિદ્ધ છે, પણ નનઅથનદ્વારા-એટલે આ વિના ધીજી દ્વાર નથી. એ પણ સુન્દર અર્થ તેમાંથી જ નિકળે છે. ” ચતિરાજના શબ્દોએ ભારે અસર કરી. આવા સોહાર્દપૂર્ણ બ્યવહારો આચાર્યશ્રીઓ વચ્ચે ચાલતા હોય તો ધર્મનો ઉદય થતાં કદી વાર નજ લાગે એવા ઉદ્ધારો નિકળતા લાગ્યા.

ત્યાર બાદ સભાપતિશ્રીએ પોતાનું સંસ્કૃત બાપણ શુભંદ અવાજે કર્યું,

॥ श्रीहरिः

श्रीमद्वेदव्यासविष्णुस्वामिसम्प्रदायसमुद्धारसम्भृतश्रीपुरुषोत्तमवदनावतारसर्वात्रायसञ्चारवैष्णवान्नायप्रा-
चुर्यप्रचारश्रीनिन्वमङ्गलाचार्यसाम्प्रदायिकापित्तसाम्प्रदायसनाखण्डभूमण्डलाचार्यजगद्गुरुमहाप्रभु-
श्रीमदाचार्य इति विद्यानगरनरपतिश्रीकृष्णदेवसम्पित्तविरदावलीनिराजमानश्रीजगद्गुरु १०८
श्रीमद्रङ्गभाचार्यचरणप्रधानपीठस्थगोस्वामितिलकाल्मजविद्यामुधाकरश्री १०५ श्रीमद्रोस्वामि
चिरञ्जीवश्रीदामोदरलाल्मजीमहोदयानां जलप्राप्तेऽधिवेष्टितास्त्रिभारतवर्षीय-
वर्णाश्रमस्वराज्यसंघमहाधिवेशने सभापतीनां (प्रेसिडेन्ट)

भाषणम्

नमो भगवते तस्मै कृष्णायाऽद्भुतकर्मणे रूपनामविभेदेन जगत् क्रीडति यो यतः॥१॥
नमो नमस्तेऽस्तुतभाय सात्त्वतां विदूरकाष्ठाय मुहुः कुयोर्गिनाम् ।

निगस्तसाम्यातिशयेन राधसा स्वधामानि ब्रह्मणि रंस्यते नमः ॥ २ ॥

अधि ! महानुभावा धर्माचार्या, महारा जा, निखिलग्रात्र निष्णातधियः सुधियः, धर्मकनिष्ठा
श्रेष्ठिनः, धर्मानुयायिनः सामान्यसभासदश्च

धर्मरक्षा प्रधानमुद्देश्यम्

विदितमैवैतद्भवतां यदिद् भारतं वर्षं धर्मप्राणो देश तत्रापि दाक्षिणात्यसमीपगोऽयं
भूभागस्तु धर्मरक्षणाय बद्धपरिकरो बहो- कालात् प्रसिद्धतम । अत्र हि भारते स्वभावत एव धर्म-
जीवना ग्राहणा धर्मरक्षणैकत्रता । क्षत्रिया धर्मकजीवनां विशः धर्मानुयायिनश्च शूद्रादयः । किं
वृत्ताऽत्रयाः स्त्रियोपि स्वधर्मपरिरक्षणपरित्यक्तजीवित । भवन्तीति सुविदितचरमेव सर्वेषां नः ।

इदमपि तु सर्वेषां नो न परोक्षमेव यदिह चराचरगुरुर्मगवान् पुराणपुरुष- श्रीकृष्णोऽपि
धर्मश्वार्थमेव युगे युगे वृत्तावतारो भवति ।

अद्य वयमपि सर्वे धर्मरक्षाविचारार्थमेव विषयाऽपि बहूनि कथानि नानादिगन्तवासिनः
योऽस्याहमन्ताऽऽगताः स्य- धर्मरक्षैवाम्प्राप्तं- एषाम्मुद्देश्यमिति- न- कस्यापि- गतेहृदये- । स्वधर्म-
साम्प्रदायपरिरक्षणदीक्षिता देवगुरुवो बृहस्पतिर्भरद्वाजप्रभृतयश्चाऽस्माकं पूर्वजाचार्या अभूवन् ।
अहमपि भवद्भिः स्वधर्मपरिरक्षणनिन्दारयैरिह महासभायामस्या समापतिपदे वृत्तोऽपिप्रापितश्च धर्म-
रक्षाशयैः साहसमेतदुद्धोऽमुमुक्षो भवामि

इदमपि तु न विस्मर्तव्य यदिह महति दुःसाध्ये कर्मणि सर्वेषां नः श्रीगोवर्धनोद्धरणचरण-
नलिनमेव शरणं भविष्यतीति मे बलीयान् विश्वासः । स एवाऽस्मभ्यं कार्यशक्तिं वितरन्विति मे
प्रथमतस्तत्तत्तत्तयोः प्रार्थना ॥

अयि भो सभासद । विविधेष्वपि धर्मेषु सर्वधर्मभूमिभूतोऽयं वर्णाश्रमधर्मो विशेषधर्म इति विशेषतया रक्षणीयो भवति । अस्मिन्नरक्षिते मन्ये सर्वेऽपि धर्मा अरक्षिता एव भवेयुः ।

केचिद् वैदेशिकदर्शार्थादक्षिता विविधतरङ्गाणुले वैदेशिकभावमहागतं आमूलचूडमेव दुःकृता वर्णाश्रमधर्ममिमं छलेन बलेन राजनीत्या च सुस्पष्टमेव नाशयितुं गृहीतव्रता भवन्ति सज्जाताधेति प्रदीयतां चतुर्दिशं दृष्टिः । तैः सहाऽयमस्माकमभियोगः । ततश्च यावता बलेन तैरयमस्माकं प्रियो धर्मो नाशयितुमभिकाङ्क्ष्यते तावतैव ततोऽप्यधिकेन वा बलेनास्माभिरप्येतस्य सर्जनहितस्य वर्णाश्रमधर्मस्य रणक्षाय बद्धपरिकरैर्भवितव्यम् । यतो हि स्वधर्मो रक्षितः सर्वेषां रक्षको भवति ।

स्वराज्यमप्याकाङ्क्षते

अयि सन्या । केचन पुनः स्वराज्यप्रप्तिमेव संप्रति भारतीयानां प्रधानं ध्येयं गणयति । अस्माकमपि नाऽत्र काचन विप्रतिपत्तिः । कामयामहे वयमपि स्वराज्यम् । किन्तु स्वधर्मवर्णाश्रमधर्म वा विनाऽयं तु केवलं स्वराज्यं न काङ्क्ष्यतेऽस्माभिः । को वा बुद्धिमान् धर्मरहिते स्वराज्ये कामनां कुर्यात् ? धर्मरहितं हि प्राप्तमपि स्वराज्यं क्षिप्तमस्ति च भवति । धर्ममात्रराहितानामेतेषां विधर्मणा-भेतत्स्वराज्यमतिधर्मरहितं कस्मात्स्थिरमिव च कदाचन भवतीति सुस्पष्टमेव समाचारपत्रवाचिनां विज्ञानम् ।

सुराज्यं हि सुखकरं भवति न तु स्वराज्यमात्रम् । भारतीयानां रावणस्याऽपि स्वराज्यमासीत् । वेनस्याऽपि स्वराज्यमेवासीत् । को नाम विज्ञो रावणस्य वेनस्य च राज्यं भारतीयानां स्वराज्यं नासीदिति वदेत् ? स्वराज्ये सत्यपि तयोः सुराज्यं नासीदिति वक्तव्यम् ; अत एव तत्र महान् क्लेश आसीत् । विद्रव्यं च समाजस्य महानमृत् । तस्माद्विज्ञैः सुराज्यमेवाऽपेक्ष्यते न तु केवलं स्वराज्यम् ।

सौराज्यं च धर्मेणैव भवितुमर्हति । धर्मेण सर्वोऽपि जनो मर्यादासु तिष्ठति । बद्धजनमर्यादा च स्वराज्यं सुराज्यं सुखकरमकेशकर च भवतीति विदितमेव प्रेक्षवताम् ।

तस्मात्संघोऽयं इयमपि वाञ्छति ।

वर्णाश्रमस्वराज्यसंघश्चाऽयं वर्णाश्रमधर्मं स्वराज्यं च कामयत इति नात्रैवाऽस्येदं ज्ञातव्यम् । अत्र हि वर्णाश्रमधर्मं स्वराज्यं चोभयमपि कामयमाना जनाः सपीभवन्ति । संघो हि बल भवति । पुरा हि तपो बलमासीत् । ततो यजिर्वल्मभूत् ततः पूजा । संप्रति तु संघो बलमास्ति । यद्यपि सर्वदैव समूहोऽपि बडमासीत्, किन्तु संप्रति कल्पे तु विशेषतः सधे शक्तिः ।

तदर्थमनैक्यं दूरीकरणीयम् ।

वर्णाश्रमधर्मं स्वराज्यं चोभयमपि वाञ्छतामस्माकमाविप्रमाचाऽन्यजात् चातुवर्ण्यानां संघो महान् विघते । ततश्च बलवन्तो वयं भवामः । किन्तु भारतीयैवस्मासु परस्परं सौहार्दस्य शुभकामनायां ऐकमत्यस्य चाऽभाव इति संघवन्तोऽपि वयं दुर्बला एव सज्जाताः स्मः । वयं हि परस्परं भैकैकस्य वञ्चयामहेऽपमानयामो द्विष्यध्व । गवेपयानः प्रकाशयामधेकैकस्य दूषणानि ।

तेन च परपरमेव भेदोऽविश्वासश्च प्रसूतो विद्यते । एकोऽपरस्य भिद्यते न विश्वसिति तत एवारुधमपि कार्यं सर्वदा विनश्यति । ततश्च प्रथमतस्तु देशदेशान्तरागतेषु मे साप्रहमावे मिदमेव यदितः परं सर्वैरिदं व्रतमिव स्वीकरणीयं यदयं सर्वेपि परस्परस्य भ्रातरः परस्परं वर्णा स्वराज्यकार्यं एकैकस्य साहाय्यं विधास्यामः । परस्परं सद्भावेन प्रतिष्ठां रक्षन्तो प्राणप वर्णाश्रमस्वराज्यकार्यं निर्वह्यामः ।

राजशासनेपि सनातनधर्मसम्भ्यैरधिकाराः प्राप्तव्याः

ब्राह्मणादीनां पूर्वजातैर्ये महापुरुषैस्तपसा बलेन विधया धनादिभिश्च येऽधिकाराः पूर्वमर्जितेभ्यः च यथाकथञ्चिदद्यावधि परम्परया ब्राह्मणादयः कुत्रकुत्रचिदधिष्ठिता अपि सन्ति, सम् तेऽधिकारेषु परेऽनधिकारिणस्तिष्ठन्ति, वदन्ति च ते भारतीया एतत्पदमधिष्ठातुमनाधिष्ठता इति ततश्चेतः परं पुनरापि तं एयाधिकारा अस्माभिः परहस्तेभ्य आच्छिद्य स्वहस्ते करणीयाः भारतं ब्रह्मणैः पुनरापि विधास्यानेषु महत्पदमादातव्यम् । अस्माकं शत्रुवैः शासनविभागप्रधानस्थान एवमनीयानि । अस्मदीयैर्वर्णिकूपवरैः पुनरापि व्यवहारव्यापारधनादिविभागाः स्वायत्तीकरणीया भारतीये । शत्रादिबुद्धसमुद्भवैरपि कलारथानेषु स्वधर्ममनतिरुक्त्य प्रधानपदं स्वीकृतव्यम् ।

आन्दोलनं कर्तव्यम्.

यद्यपि तपः सन्तोषश्चोभयमपि सर्वथा श्रेयस्कर्म । किन्तु येन तपसा धर्महानिरात्मना भवेत् तत्तपः श्रेयस्कर्म भवति । सन्तोषोऽपि तथा । महापर्वसिद्धौ महातपा अतिसंतुष्टश्चासीत् किन्तु यदा बलौन्मत्तेनाभिमानिना राज्ञा विध्वान्निरेण तद्धर्मनाशमायाहितं च विधातुमारब्धं त तेनाप्यगत्या तत्प्रतीकारो विहित एव ।

न वयं कस्मा अपि द्विभः । न च कस्याप्यपकारं कर्तुमामिकांक्षामः । किन्तु स्वाप प्रतीकारं समाजधर्महितरक्षणं तु वाञ्छाम एव ।

परस्यापि द्वेषस्त्याज्यः

अद्यावधि केनापि वर्णाश्रमरक्षणकामेन विदुषा केनापि किमापि प्राप्तुमिच्छता म व्याघातो न कृतः, तदाधिकारे स्थितैरप्यस्माभिः 'सर्वः स्वार्थं समीहते' इति नीतिमदलः धर्मत्यागिनामप्युपेक्षैव कृता । एवमपि ये शिरसि दण्डनिपातनमिव बलदेवात्मदधीनमपि वा श्रमधर्मं त्याजयितुमीहन्ते यतन्ते च तदर्थं, तत्प्रतीकारस्त्ववश्यमस्मात्कार्यम् । आत्मनाशे धर्मं च सन्तोष उपेक्षा वा नैव श्रेयस्करीति संघर्षोऽस्माभिमिति चेत् धर्मरक्षणस्य समाजाहितस्यामा कारलम्बनस्य चोपाया अवश्यं परिग्राह्याः ।

केचित्तु धर्ममुपेक्ष्य विनाश्य वा स्वराज्याभिलाषिणः प्रधानराजव्यवहारसभासु [पसेम्ब सामान्यराजसभासु [कौन्सिल] नगरपरिष्कार (म्युनिसिपल कमेटी) परिषत्सु च, एवमेव स्वदे

राष्ट्रीयसभासु च प्रविश्य प्रधानाधिकारान् लब्ध्वा स्वसभानैः सम्यैरतिसन्धाय बलादेव भारतीयानां धर्मं त्याजयितुमीहन्ते, प्रतिवर्षं च गवनवान् धर्मविष्वंसकान् प्रस्तावानुपस्थापयन्ति, बलादेव च भारतीयानां सर्वथाऽनभिवाञ्छितानपि तान्प्रस्तावान्प्रमाणयन्ति व्यवहारयन्ति कारयितुमिच्छन्ति च । येन धर्मविप्लवः समाजविप्लवो राज्यविप्लवश्च समये समये भवति । ततश्चाप्युपाया विधेया एव ।

सनातनधार्मिकैरेसेम्बलीप्रभृतिषु स्वस्थानं रक्षणायम्.

भारतीयानां पण्डितानामग्रे राजनीतिविषयकोऽयं प्रश्न उपस्थायापि विनश्यति । अस्मिन्कोणे पुरातनपण्डितैः कदाचनाऽपि दृष्टिर्न निक्षिप्यते स्म । कदाचन केषांचन दृष्टिर्गच्छायपि किन्तु ते प्रज्ञामात्रवादिनो ब्रह्मज्ञा इवोत्तरं प्रयच्छन्ति यत् प्रधानराजसभादिषु केषनाधिकारं लभन्तां मा लभन्तां वा किमस्माकं पण्डितानां ततः प्रयोजनमिति ।

अहो कियती हानिः ? कथं वा भयङ्करः परिणामः ? येन हि वयं जीवामः, यदि भारतीयानां जीवितं तमेव धर्मं वैदेशिकैः संधायऽऽत्मीया एव धर्मवितोषिनो विध्वंसयन्ति तथापि वयं न निद्रां मुञ्चामः । वयं सुखं स्वपिमः, परे तु धर्मविष्वंसका यथायर्थं भारतीयानेव जनान् प्रलेभ्य वंचयिष्या च स्वस्य राजसम्यपदप्राप्तये सम्मतिं (वोट्) प्राप्नुवन्ति । तत्र गत्वा चास्माकं प्रियं धर्मं यथेच्छं नाशयन्ति ।

वोट्दासृषु सत्त्वमात्मीयं रक्षणीयम् ।

ततश्चात्रापि प्रथममुपायः सत्त्वरं परिग्राह्योऽस्माभिः । संघरास्तत्र तत्र (एसेम्बलीकॉमिटे-
- ७३) गत्वा प्रतिच्छन्नधर्मनाशकानां तेषां तत्स्वरूपं प्रकाशनीयम् । निवारणायध-
- तेभ्यः पदप्राप्तये सम्मतिप्रदातारः । सर्वत्र प्रदेशेषु च वर्णाश्रमधर्मरक्षिण्यः सभाः स्थापनीयाः । प्रचारणी-
- याश्च सर्वत्र धर्मोपदेष्टारः । प्रधानराजसभासु नगरपरिष्कारपरिषदसु राष्ट्रीयसभासु (कांग्रेस)
- चास्माकं विशिष्टा विद्वांसो धर्माग्रहवन्तः प्रवेशनीयाः । सुघोरं चान्दोलनं विघातव्यम् ।
- सम्यतापूर्वकेण च धर्मान्दोलनेन राजभाक्तिः प्रदर्शिता भवति, सामर्थ्यमावर्जितं भवति, स्वत्वं च
- रक्षितं भवति ।

निःसर्गो निर्बलश्च पुरुषः प्रजासु राज्ञि चापमानभाजनं भवति । यदा हि भवन्तोऽपि धर्मरक्षार्थं चतुर्दिशं सुघोरमान्दोलनं विघास्यन्ति तदा राज्ये राजजने च भवतामपि प्रतिष्ठा स्यादेव । भवतां च वाञ्छितं सिद्धं स्यादेव । निर्बलस्य कोपि सहायो न भवति । विना कोलहलं माताऽपि पुत्रं स्तनं न पाययति ।

• तस्माद्-धर्मरक्षणार्थं स्वस्याधिकारप्राप्त्यर्थं च संघस्य विद्वद्भिः संमन्त्र्य ते त उपाया अवश्यं परिग्राह्याः । धर्मोपदेशश्च सर्वत्र दातव्यः । उपायचतुरं च जनं भगवान् श्रीकृष्णोऽप्यनु-

गृह्णाति । भगवदनुग्रहेण चावश्यमेव समीहितसिद्धिर्भविव्यतीति तदनुग्रहार्थं वयमपि तत्करण-
सरोजयोः प्रार्थना निवेदयतो निरमामो बहुपुञ्जवान् । हरिः ॐ शम् ।

किरातहणाऽऽन्धपुलिन्दपुच्छसा आभीरकङ्का ययना. ससादयः ।

येऽन्ये च पापा यदुपाभयाश्रयाः शुष्यन्ति तस्मै प्रभविष्यवे नमः ॥

स्वयं समुत्तीर्य मुदुस्तरं समन् भगवन् भीममदभ्रसौहृदाः ।

भवत्पद्माम्भोरुहनावमत्र ते निधाय याता सदनुग्रहो भवान् ॥

हीन्दी अनुवाद.

हमारे भारतवर्षीय आचार्य महानुभाव ! सुशत्रिय महाराजा ! धर्मप्राण विद्वदगण ! एवं सामान्य समासद लोक !

इतिहासके द्वारा अब ये बात सर्वत्र प्रसिद्ध हो चुकी है कि यह एक भारतवर्ष ही धर्म-
प्राण देश है । धर्म ही इस देशका सामर्थ्य है ! जिस तरह मनुष्यको अपने प्राणपर किसी
प्रकाशकी भी आघात आनेका सन्देह हो तो वह अपने सब सामर्थ्यको इकट्ठा करके उस आपत्तिका
उपाय करनेके लिए तत्पर हो जाता है इसी तरहसे यह भारतवर्ष भी जब सब इसके धर्मपर
किसीने भी आघात पहुँचाया है या पहुँचानेका प्रयत्न भी किया है तो उस समय इस भारतवर्षने
अपनी सब ताकतको इकट्ठी करके उसका मन तरहसे उपाय किया है । इस लिए मान्य होता है
कि यह वर्णाश्रमधर्म इस देशका प्राण है ।

विशेषकर राजपूताना और यह दक्षिण प्रदेश तो अपने धर्मकी रक्षा करनेमें सुप्रसिद्ध है।
चिन्ताछोड़ते आजतक यहाँके ब्राह्मण लोग धर्मकथन होते चले आ रहे हैं । यहाँके क्षत्रिय धर्मरक्षा
मन की लिए बैठे रहते आए हैं । यहाँके वैश्यधर्म अपने जीवनको धर्ममय बनाते चले आ रहे
हैं । कि बहुना यहाँके शूद्र और अन्यजाति भी वर्णाश्रमधर्मके अनुयायी होने चले आ रहे हैं ।
और हमें विशेष तो इस बातका गर्व है कि भारतवर्षकी और विशेषकर दक्षिण प्रदेशकी स्त्रियाँ
भी अपने देह प्राण और सुखोंका परित्याग मुखसे कर दिया है किन्तु धर्मका परित्याग कभी नहीं
किया । और तो क्या कहें यह बात भी आप लोगोंको विदित ही है कि इस एक भारतवर्षमें ही
चगचरगुर श्रीकृष्णभगवान भी इस वर्णाश्रमधर्मकी रक्षा करनेके लिए ही बारबार अवतार
धारण करते हैं ।

आज अपने सब लोग भी जो अनेक कष्टोंका सहन करते हुए नाना देशोंसे यहाँ आकर
इस ध्यानपर एकत्रित हुए हैं उसका भी एक यही प्रयोजन है कि किसी प्रकारसे इस वर्णाश्रम-
धर्मकी रक्षा करना उचित है । स्वधर्मकी किसी तरह भी रक्षा करना यह हम सबका प्रधान
कर्तव्य है । आज धर्मरक्षार्थ ही सबके हृदयमें उसाह भरा हुआ है ।

भाव एवं ऐकमत्य का अभाव है। हम आपसमें एक दूसरे का अपमान करते हैं, एक दूसरे को ठगना चाहते हैं और एक दूसरे से द्वेष रखते हैं। और तो क्या कहें हम आपसमें एक दूसरे के दोष ढूँढ़ने लगते हैं और उनको प्रकाशित करने में अपना हित मानते हैं। इसका यह फल हुआ है कि एकदशावासियों और भाई भायों में हमारे यहां भेद और अविश्वास घेर कर चुका है। उस आपस के भेद और अविश्वास की धुराई से हमारे प्रारम्भ किए हुए अनेक महत्त्व के कार्य भी कभी कभी मध्य में ही नष्ट होजाते हैं।

इस लिए प्रथम तो अनेक कष्टोंको सहन करके भी अपने धर्मकी रक्षा करनेके विचारसे भिन्न भिन्न देशोंसे आए हुए संघके सदस्य महानुभावोंसे मेरा यह साग्रह आवेदन है कि जो हो चुका उसे जाने दीजिए किन्तु अब आजसे ही आप लोग एक मतकी तरह स्वीकार करें कि हम सब आपसमें एक दूसरेके भाई हैं और इस लिए एक गृहकार्यकी तरह इस वर्णाश्रम स्वराज्य सपरूप गृहकार्यमें हम सब एक दूसरेकी सहाय करते रहेंगे।

परस्परमें सद्भाव रखते हुये एक दूसरेकी प्रतिष्ठाको अपनी मानकर उसकी रक्षा करते समूहबल एवं व्यक्तिबल दोनोंसे ही वर्णाश्रम-स्वराज्य संघके कार्यको प्रतिदिन उन्नत बनाते रहेंगे।

हमारे पूर्वज ब्राह्मणादि चतुर्वर्ण जात जिन महापुरुषोंने अपनी तपस्या अपने बल अपनी ही रिया और अपने धनादिसे जो जो अधिकार पूर्व समयमें प्राप्त किए थे, और अब भी जिन अधिकारोंपर कहीं कहीं किसी तरहसे भी सही, हमारे ब्राह्मणादि भारतीय ही परम्परासे आज तक अधिष्ठित चले आ रहे हैं। किन्तु खेद है कि हमारे आपसके भेद और अविश्वाससे उन अधिकारोंके प्रधान स्थानोंपर तत्कालीनोंके अनाधिकारी विदेशी और विषमगी लोग सब तरहसे स्थित हो चुके हैं। और छटबलसे हमारे ही अधिकारोंको छीनकर वे लोग फिर यह कहते भी हैं कि भारतीय लोग इन अधिकारोंपर स्थित होनेके अधिकारी अभी नहीं हैं।

अब हमें उचित है कि अपने धर्मको न छोड़ते हुए फिरसे अपने अपने अधिकार उनके हाथसे अपने हाथमें लें। भारतीय ब्राह्मण लोग अपने प्राचीन विद्याभ्यानेंके प्रधानपदोंपर फिरसे स्थित हों। हमारे सत्रिय वीर फिरसे शासन विभागकी बागडोर अपने हाथमें ग्रहण करें। भारत-वर्षीय वणिजप्रवर्गको चाहिए कि अपने बल एवं उद्योगसे फिर भी उन्हीं अपने व्यापार और धनादिके अपना स्थानोंपर अपना अधिकार जमावें। और हमारे भारतीय शूद्रादि सत्तनोंका भी यह कर्तव्य है कि अपनी प्राचीन मर्यादाको न छोड़ते हुए अपने कलारथोंके प्रधानपदोंको पुनरपि त्वहस्तगत करें।

कितने ही प्राचीन मर्यादाके सन्तोषी पुरुष कभी कभी यह भी कहने लगते हैं कि भारतीयोंका तो सन्तोष और तप ही सर्वश्व है उससे सब कार्य सिद्ध हो सकते हैं। ठीक है जिस समय हमारा आत्मा हमारे पास था और हमारा धर्म बलपूर्ण था उस समय तप और सन्तोष

श्रेयस्कर थे किन्तु आजकल हमारा आत्मा दूसरोंके हाथमें है और हमारे धर्मका नाश दिनों दिन होता चला जा रहा है ऐसे समय आत्मनाश और धर्महानि सहनेवाले तप और सन्तोष श्रेयस्कर नहीं हो सकते ।

महर्षि वसिष्ठ बड़े सन्तोषी और तपस्वी थे किन्तु जब बलौन्मत्त अभिमानी विश्वामित्रने उनके धर्मकी हानि और आत्मस्वातंत्र्यका नाश करना चाहा तब उन्हें भी अगत्या उसका उपाय करना ही पड़ा ।

विधर्मी लोग ही नहीं किन्तु कितने ही हमारे भाई भारतीय होकर विधर्मियोंके वेप भाषा भावोंके जालमें फँसकर उनकी नकल करते करते जो बैसे ही हो चुके हैं वे भी शासन और व्यवहार-स्थानोंपर प्रतिष्ठित होकर हमारी आत्मवृत्ता और धर्मका नाश करनेपर कमर कैसे बँडे हैं । उसका भी हमें अवश्य कोई न कोई उपाय करना ही पड़ेगा ।

हमारे हृदयमें किसी के प्रति द्वेष नहीं है और न हम किसीका अपकार करना चाहते हैं किन्तु जो आपदाएँ हमारे ऊपर आई हुई हैं किंवा आने वाली हैं उनका उपाय तो हमें अवश्य करना चाहिए ।

आजसे २ वर्ष पूर्वतक हमारे किसी भी सनातनधर्मी विद्वान्ने किसी विभागके कुछभी प्रासिके मार्गमें किसी तरहका भी विघात नहीं किया था । 'सर्व' स्वार्थ समीहिते ' इस न्यायसे कि वा धर्मरक्षार्थ स्वराज्याणि भी सनातन धर्मियोंका स्वार्थ ही है, ये समझ कर भी धर्मरक्षाका अधिकार रखते हुए भी हम लोगोंने धर्मत्यागियोंकी उपेक्षाही की ।

इस तरह उपेक्षा करते रहते भी जो लोग सिरपर दण्ड मारते चले आ रहे हैं, हमारे अधीन धर्मका भी नाश करानेके लिए राजपुलका भी आश्रय ले रहे हैं उनका तो प्रतीकार हमें करना ही होगा । आत्मनाश और धर्मनाश के समय भी सन्तोष किंवा उपेक्षा करना उचित नहीं है इस लिए हमें भी अपना संपन्नत तैयार करके धर्मरक्षा समाजहितरक्षा एवं अपने अधिकार-प्राप्तिके उपायोंका स्वीकार तो अवश्य करना चाहिए ।

यह बातें अत्य स्पष्ट हो चुकी हैं कि कितनेही धर्मकी उपेक्षा किंवा उसका नाश करके खाली स्वराज्य चाहनेवाले ऐसेम्बली कौंसिल और म्यूनिसिपिअ बोर्डोंमें अपूर्ण अधिकारोंकी भी प्राप्त कर और अपने समान अधिकारवाले विधर्मियोंके साथ एकमत हो कर जबरदस्ती सनातन धर्मियोंके धर्मका नाश राज्यबलसे करानेके लिए विशाल उद्योग कर रहे हैं ।

प्रतिवर्ष कान्सिल ऐसेम्बली और म्यूनिसिपल कर्माटियों में नवीन नवीन धर्मविध्वंसक प्रस्तावोंको उपस्थापित कर रहे हैं और उन्हें मनमानी रीतिसे पास भी करा लेते हैं और इस तरह हमारे धर्मका नाश कर रहे हैं । इसका तो उपाय हमें करनाही पड़ेगा ।

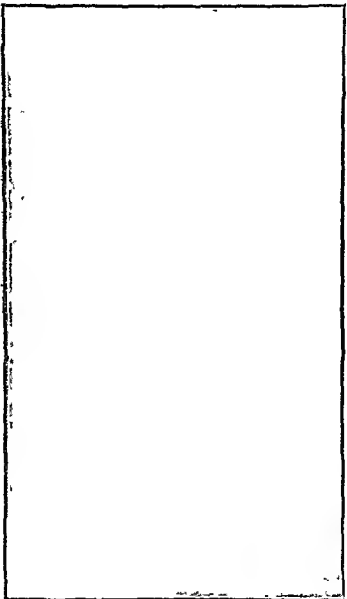
स्वराज्य हमें भी चाहिए इस लिए हम स्वराज्यप्राप्तिके मार्गमें विघ्न करना सर्वथा नहीं चाहते। प्रत्युत विदेशीय वस्तु बाह्यकार और स्वदेशीय वस्तु स्वीकारके द्वारा जो कि पवित्रता-रक्षा और धर्मरक्षाका सहायक है उसमें भी सहयोग देनेके लिए तैयार है। किन्तु हमारा धर्म-रक्षा प्रधान उद्देश्य है इस लिए धर्मनाराके उपयोगका प्रत्युपाय तो हमें अवश्य करना ही होगा। इस लिए अब राज्यशासन विभागमें भी प्रवेश करना यह भी इस परिषद्का उद्देश्याज्ञ होना उचित है।

राजनीतिविषयक यह प्रश्न आजतक तो हमारे प्राचीन पण्डितोंके साम्हने उपस्थित हो हो कर भी नष्ट होता रहा। पुराने विद्वानोंने इस कोने पर अभी अपनी दृष्टि डाली ही नहीं। प्रत्युत कभी २ घटिपात करते हुए भी ब्रह्मज्ञानियों की तरह 'ऐसेम्बली प्रभृति राजसभाओंमें कोई भी जाओ, हम पण्डितोंको इन बातोंसे क्या मतलब?' इस तरह उपेक्षा ही करी।

किन्तु इस उपेक्षासे बड़ी हानि हुई है। बड़ा भयंकर परिणाम आया है। जिस धर्मको भारतीय लोग अपने प्राण समजते आ रहे थे, जिसके लिए कौटिल्यः भारतीय धर्मगुरुोंने युद्धमें मुखसे प्राण खो दिये थे उसी हमारे सनातन धर्मका नारा हमारे ही भाई विदेशियोंकी चालमें गाकर कर रहे हैं और हम सोये हुए की तरह बेखबर रहे आये, अब इन सब आपत्तियोंका भी उपाय करना चाहिए।

हमें अपनी सनातनधर्मजनताके अनेक सच सत्यार करने चाहियें और उनके द्वारा ऐसेम्बली कौन्सिल म्युनिसिपल कमेटी प्रभृति चाहे स्वदेशीय चाहे विदेशीय हो दोनों गन्यरासन विभागों में प्रवेश कर अपनी धर्मरक्षा के लिए वहाँ स्थान-प्राप्ति करना चाहिए।

जो लोग अपनी ही जनता से वोट ले ले के वहाँ जाते हैं और अपने धर्मपर आघात कर रहे हैं उन लोगों का वह प्रच्छन्न स्वरूप और धर्मनाराका कार्य सामान्य धार्मिक जनता के आगे प्रकट करना चाहिए। जो लोग उन्हें भोलेपन से भारतहितैषी समझकर उनकी सदस्यता के लिए सम्मति (वोट) देते हैं उन्हें इसके रहस्य को समझा कर इस अनर्थ से मुक्त करने चाहिए। देश देश में सर्वत्र वर्णाश्रम धर्मरक्षिणी सभाओं का स्थापन करना उचित है। चारों तरफ धर्मोपदेशकों को भेजने चाहियें। प्रधान राज (कौन्सिल) सभा राष्ट्रीय सभा (कांग्रेस) और नगरपरिष्कारिणी सभा (म्युनिसिपल) प्रभृति शासनविभागोंमें भी धर्माप्रही उभय भाषा-भिन्न हमारे विद्वानों को भेजने चाहिए। इस विषय में विपुल आन्दोलन करना चाहिए। सम्भवता पूर्वक यदि राजनीतिका भी आन्दोलन किया जाय तो उसमें किसी प्रकार का दोष नहीं है, प्रयुक्त उससे राजभक्ति का प्रदर्शन होता है, जनता में सामर्थ्य है यह विदित होता है, और अपने स्वयं का रक्षण होता है।



अविबल भारवपिप्य-वर्णाश्रम स्वराज्य सद्धमा चतुर्थ महाधिवेदन-जलगात्र.

(समाप्तपुष्पके रत्नमञ्जरी अर्पुर्ष ड्डग)

—प्राप्तपुष्पके—

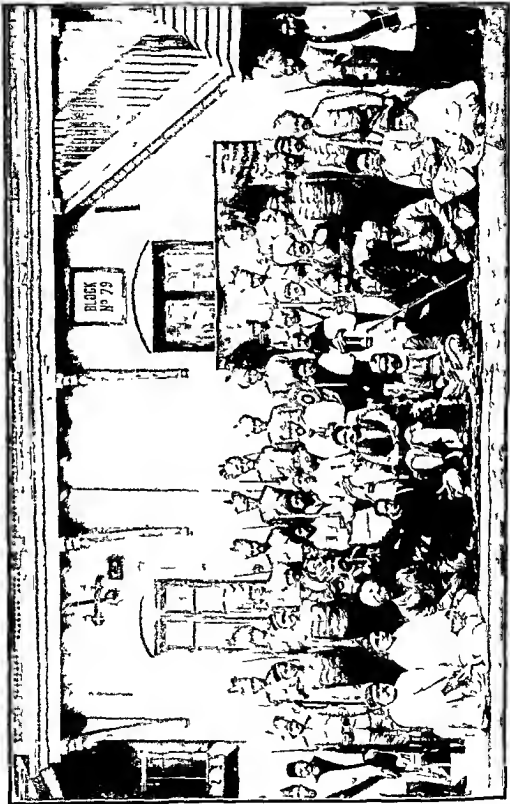
वीचमे

—अद्विजपाश्र्वमे—

श्रीमान् सभापति मदीय

श्रीचन्द्र मन्त्रागम

१ श्रीपद्मिनीमन्त्रागम



જિસ પુરુષ મેં કોઈ સત્ત્વ નહીં અતઃ એવ-જો નિર્બલ હૈં ઉસકા આદર ન તો પ્રજામેં
પર રાજવર્ગમેં હી હોતા હૈં । સસત્ત્વ ઔર સવલ પુરુષ કા હી માન પ્રજા ઔર રાજા કે યહોં
પ્રાપ્ત કરી શકતા હૈં । જિસ સનાતનધર્મી જનતા મીં ધર્મરક્ષા કે લિયે મર્યાદિત ઔર વિપુલ આન્દોલન
પ્રગટ કરીશો ઉસ રોગઃ ઉસકા મીં ભારતીય પ્રજા ઔર રાજા દોનોં મેં આદર હોગા ઔર ઉસી સમય
હમારે લેગોંકી વાંચ્છિતપ્રાપ્તિ હો સકેગી ।

ઇસ લિયે હમારા વક્તવ્ય યહ હૈં કિ અપને ધર્મ કી રક્ષા કે લિયે ઔર અપને અધિકારોં કી
રક્ષા કે લિયે ઇંસી પ્રકાર સંઘ બનાકર હમેં ડન સર્વ ઉપાયોં કા પ્રહણ કરના ઉચિત હૈં

ધર્મરક્ષણાર્થ જન ઉચિત ઉપાયોં કા પરિગ્રહ હોગા ઉસ સમય શ્રીકૃષ્ણ મહાવાન મીં
હમારે ઉપર અવરૂપ કૃપા કરેગે । મહાવદનુપ્રહ સે હમારે ઇચ્છિત કાર્ય મેં અવરૂપ સિદ્ધિ હોગી
‘દત્તા’ કહકર મેં મહાવાન શ્રીકૃષ્ણકે ચરણરૂપલ મેં પ્રાર્થનાપુષ્પાન્નલિ નિવેદન કરતા હુઆ અપને
વક્તવ્ય કો સમ્પૂર્ણ કરતા હૂં । હારે. ઓમ્ શમ્ !

કિરાતહ્ણાન્ધપુલ્લિન્દપુન્કસા આભીરકઙ્કા યવનાઃ રુસાદયઃ ।

યેડ્યે ચ પાપા યદુપાત્રયાત્રયાઃ શુવ્યન્તિ તસ્મે પ્રમવિશ્ણવે નમઃ ॥

સ્વયં સમુત્તીર્યં સુદુસ્તરં ધુમન્ ભવાર્ણવ મ્હીમમદ્ભસૌહદા ।

મત્પદાન્મોરુહનાવનત્ર તે નિધાય યાતા. સદનુપ્રહો મવાન્ ॥

સભાપતિ શ્રીદામોદરસાતજી મહોદયનું ભાષણ.

શુભશતીમાં સાર.

મહાનુભાવ ધર્માચાર્યો, મહારાજાઓ અને સકલરાજાનિષ્ઠાત વિદ્વાનો તથા ધર્મનિષ્ઠ
ગૃહસ્થો ! આપ જાણતાજ હશે કે આ ભરતખંડ ધર્મપ્રાણ દેશ છે તેમાં પણ હિંસાજનક રહેલી
ભૂમિના મનુષ્યો તો બહુ કાળથી ધર્મરક્ષણાર્થે કેડ ખાંધીને તત્પરજ છે એમ પ્રસિદ્ધ છે. આ
ભારતની અંદર સ્વાભાવિક રીતે, બાહ્યજો ધર્મનિષ્ઠ પોતાનું ધન માને છે, ક્ષત્રિયો ધર્મરક્ષણનેજ
પોતાનું મત માને છે, વૈશ્યો ધર્મનિષ્ઠ પોતાનું જીવન-માને છે અને શૂદ્રો વગેરે પણ ધર્મના
અનુયાયીઓ જ છે. કિંબલુના આ દેશની સ્ત્રીઓએ પણ પોતાના ધર્મના રક્ષણાર્થે જીવનનો
પરિમાગ કરેલો છે એ આપણે બધા સારી રીતે જાણીએ છીએ. આ પણ આપણે સર્વેને
અજાણ્યું નથી કે આ જગતના ચરાચરચુરુચુરુપુરુષ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણે પણ ધર્મના રક્ષણને
માટેજ યુગે યુગે અવતાર ધારણ કર્યા છે.

આજે આપણે પણ સર્વે જુદા જુદા પ્રતિભાંથી ધણું કષ્ટો સહીને ઉત્પ્રાદપૂર્વક ધર્મરક્ષણ
વિચાર અર્થે અહીં એકત્ર થયા છીએ. સ્વધર્મની રક્ષા કરવી એજ આપણો પ્રધાન ઉદ્દેશ
હોવો જોઈએ એ નિઃસંદેહ છે. પોતાના ધર્મસાક્ષાત્કરણ રક્ષણ કરવાની દીક્ષાવાળા દેવચરુઓ
ગૃહસ્થપતિ ભરદ્વાજ વગેરે અમારા પૂર્વીચાર્યો થઈ ગયેલા છે. તમો કે જોઓ સ્વધર્મના રક્ષણની
આકાંક્ષાવાળા છો તેઓએ મને આ મહાસભાના સભાપતિપદ ઉપર અધિષ્ઠાપિત કરેલ છે તે
સાદસ કેવલ હું શ્રીગોવર્ધનધરણના ચરણના આશ્રયથી સંતોષિત છું, અને મને દૈવ વિશ્વાસ છે
તેજ ભક્તવાન મને કાર્યસક્તિ પ્રદાન કરશે.

સભ્યો ! વિવિધ પ્રકારના ધર્મોમા પણ સર્વ ધર્મના મૂળરૂપ વર્ણોશ્રમ ધર્મ છે તે વિશેષ ધર્મ છે માટે ખાસ કરીને રક્ષણ કરવા લાયક છે. આ ધર્મનું જો રક્ષણ કરવામાં ન આવે તો હું માનું છું કે બીજા તમામ ધર્મ પણ રક્ષણ વિનાના યથ જાય.

કેટલાક વિદેશી શિક્ષાદીક્ષાવાળા વિવિધ તરંગથી બાકુળ અને વિદેશી ભાવમા નખથી તે શિખ સુધી ખુલેલા આ વર્ણોશ્રમ ધર્મને કપટથી, દર્ઘાથી, રાજનીતિથી નાશ કરવાને માટે મત લઈ બેઠેલા છે, એ તમો જ્યાં જુઓ ત્યાં સ્પષ્ટ જ છે, તેઓની સાથેજ આપણે પનારો પડ્યો છે. એટલા માટે એટલા બળથી તેઓ આપણા પ્રિય ધર્મનો નાશ કરવાને ઇચ્છે છે તેટલાજ અથવા તેથી પણ વધારે બલથી આપણે પણ સર્વજનહિતકારક વર્ણોશ્રમધર્મના રક્ષણને માટે કમર કરીને ઊભા રહેવું જોઈએ, કારણ કે સ્વધર્મનું રક્ષણ કરવાથી તે ધર્મજ સર્વનું રક્ષણ કરશે.

કેટલાક વળી હાલમા સ્વરાજ્યપ્રાપ્તિનેજ ભારતવાસીઓનું મુખ્ય ધ્યેય માને છે, એમાં અમારે અડચણ નથી. અમે પણ સ્વરાજ્ય ઇચ્છીએ છીએ, પરંતુ સ્વર્મ અથવા વર્ણોશ્રમ ધર્મનો નાશ કરીને કેવળ સ્વરાજ્યની ઇચ્છા નથી રાખતા. કયો એવો જુદિમાન પુરુષ ધર્મરહિત સ્વરાજ્યની કામના કરે ? ધર્મરહિત સ્વરાજ્ય મળ્યું હોય તોય તે કલેશકારક અને અસ્થિર નિવડે છે. કેવળ ધર્મરહિત અને વિધર્મીઓનું સ્વરાજ્ય એ અતિ ધર્મકલેશકર અને અસ્થિર જેવું થાય છે. એ સમાચારપત્રો વાચનારથી અજાણ્ય નથી.

સુરાજ્યજ સુખકર છે પણ એકલું સ્વરાજ્ય નથી. ભારતવર્ષમા રાવણનું પણ સ્વરાજ્ય હતું વેનનું પણ સ્વરાજ્ય હતું અને એવો કયો ઝાલો માણસ એ બંનેના રાજ્યને સ્વરાજ્ય ન કહી શકે ? અલબત્ત એ સ્વરાજ્ય હતું પણ સુરાજ્ય ન હોતું એટલા માટે એ રાજ્યોમા મોટો કલેશ હતો અને સમાજમા મોટો વિસ્ફોટ હતો તેથી જુદિમાન પુરુષો સુરાજ્યને માગે છે નહિ કે સ્વરાજ્યને. સુરાજ્ય ધર્મ વડેજ મેળવી શકાય છે. ધર્મથીજ સર્વ લોકમર્પણમાં રહે છે. જે લોકો ધર્મની મર્પણમા બંધાયેલા હોય તેઓનું સ્વરાજ્ય એજ સ્વરાજ્ય છે અને એ સુખકર અને અકલેશકર થાય છે એ સર્વ જોનારને જાણીતું છે.

આ વર્ણોશ્રમ સ્વરાજ્યસંધ વર્ણોશ્રમધર્મવાળા સ્વરાજ્યને ઇચ્છે છે એ એના નામ પરથી સમજી શકાય એવું છે, અને આમા વર્ણોશ્રમ ધર્મ અને સ્વરાજ્યની ઇચ્છાવાળા જનો એકત્ર થાય છે, કારણ કે સંધ એ બળ છે. પૂર્વે તપ યગ્નજી હતું, તત્પશ્ચાત્ત એ બળ હતું, પછી પૂજા એ બળ હતું અને હાલમા સંધ એજ બળ છે. જો કે હમેશાં સમૂહ એ બળ છે એ વાત ખરું પરંતુ આ કળિયુગમા સંધશક્તિ એ વિશેષ બળ છે.

વર્ણોશ્રમ ધર્મ અને સ્વરાજ્ય બંનેને એક સાથે ઇચ્છવાવાળા અમારા લોકોના સંધર્મ ચાતુર્વર્ણ અત્યંત પ્રાણજીવી લઈને અર્ચન સુધી સામેલ છે. આ રીતે અમારા લોકોનું જાણ પણ બહુવ્યાપક છે, કિંતુ અમારા ભારતીયોમા પરસ્પર શુભ કામના તથા સૌહાર્દની એકમતિ ન હોવાના કારણે આપણે સંધશક્તિશાળી દેવા છતાં અત્યંત દુર્બળ તથા ફીણ જેવા યથ જ્યાં છીએ. આપણા લોકોમાં એ પણ વિકાર આવી ગયો છે કે એક બીજાને ઠગીએ છીએ અપમાન કરીએ છીએ અને ઇધ્વીને વધારીએ છીએ. એક બીજાના દોષ શોધવા તથા પ્રકટ કરવા જ લાગી ગયા છીએ.

એથી લોકોમા પરસ્પર સેક તથા અવિશ્વાસ વધતો જાય છે. એક બીજામાં એક ઉત્પત્તિ દરીએ છીએ પરંતુ વિશ્વાસને હૃદયમા સ્થાન દેતા નથી. આ પ્રકારે ચર કરેલું કાર્ય સર્વદા નિષ્ફળ

યદ્ય જન્ય છે. માટે સર્વ પ્રથમ દેશદેશાન્તરથી આવેલા મહાનુભાવોને માફ સામ્રદ્ય નિવેદન છે કે હવેથી આપ આ મતનો સ્વીકાર કરો કે સૌ એક બીજાના લાઈ છીએ અને વર્ણોશ્રમ સ્વરાજ્યના કાર્યમાં એક સાથે મળી એક બીજાને સહાયતા કરો. પરસ્પર સહલાયથી પ્રતિષ્ઠિત તથા આશુ-પણથી રક્ષિત વર્ણોશ્રમ સ્વરાજ્યના કાર્યનો હું અભિલાષી છું.

આજ સુધી કોઈ વિદ્વાને વર્ણોશ્રમધર્મની રક્ષાની ઇચ્છાને વશ થઈને કોઈના ઉદ્દેશની સિદ્ધિના માર્ગમાં બાધા પડેલાઈ નથી સર્વે સ્વાર્થ ઇર્ષમીદેવોની નીતિ મુજબ તેના તે તે અધિકારોપર અધિષ્ઠિત રહેવા છતાં પણ અમે લોકોએ તેની ઉપેક્ષાજ કરી છે. પરંતુ તે પછી પણ જે લોક દંડનિપાતની માફક જળજળસ્તીથી અથવા વર્ણોશ્રમધર્મને નષ્ટ કરવા ચાહે છે અને તે માટે યત્ન પણ કરે છે તો તેના પ્રતીકાર માટે આપણે અવશ્ય તત્પર થવું જોઈએ. આત્મનાશ તથા ધર્મનાશને વખતે સંતોષ તથા બેદરકારી રાખવા કદાપિ ઉચિત તથા શ્રેયસ્કર નહિ કહેવાય. એ માટે આપણે સમગ્ર યજ્ઞને અવશ્ય ધર્મરક્ષણ તથા સમાજહિતરક્ષણના ઉપાય કરવા જોઈએ. કોઈ લોક જે ધર્મનો નાશ કરીને સ્વરાજ્ય લેવા ચાહે છે તે એસેમ્બલી, કોંગ્રેસિસ અને મ્યુનિસિપાલિટીમાં પ્રવેશ કરીને પોતાની ટોળાઓ બાંધીને બળાતકારે ધર્મનો નાશ કરવા ઇચ્છે છે ધર્મવિશ્વંસક લોક પ્રતિવર્ષ નવો નવો ધર્મવિરોધી ઠરાવ રજુ કરી કરે છે અને 'હિંદીઓની ઇચ્છાથી તદ્દન અતિરૂપ તે ઠરાવોપર જળજળસ્તી પોતાનો મત પણ આપી દે છે તેમ તેઓની ઇચ્છા હોય છે કે તેને આચરણમાં પણ મુકેલા. પરંતુ આવી વાતોથીજ સમગ્ર સમયે ધર્મવિશ્વંસ, સમાજવિનશ વગેરેની સંભાવના રહે છે, આ બાબતમાં આ કારણથી પણ યત્ન કરવો અત્યાવશ્યક છે.

ભારતીય પડિત જનો સમગ્ર રાજનીતિ સંબંધે અગ્ર ઉભો થવા છતાં પણ તે નષ્ટ થઈ જાય છે. પુરાના પડિતો આ તરફ ધ્યાન દુલ્લ દેતા નથી અને જો કદાચિત્ કોઈ રીતે કોઈની દૃષ્ટિમાં વાત પણ આવી અજ તો તે કદાચાનીની માફક એવો ઉત્તર આપતા જેવાય છે કે “એસેમ્બલી-ધારાસભામાં કોઈ કોઈ પ્રકારનો અધિકાર પ્રાપ્ત કરે અથવા ન કરે એમાં અમારે પડિતોને શું પ્રયોજન ”

એથી કેટલી દાનિ તથા કેટલું ભયંકર પરિણામ થઈ કહ્યું છે? જેના આધારથી અમે લોકો જીવતા છીએ, જે અમારા ભારતીયોનું જીવન કહેવાય છે તે “ધર્મ” વિદેશીઓ તથા આપણાજ પોતાના ધર્મવિરોધી માણસોદ્વાર નષ્ટજાઈ કાર્ણ રહ્યો છે, તો પણ આપણી નિદ્રા નથી ટુટતી આપણા લોક સુષ્પમા નિદ્રા લાઇ રહ્યા છે, બીજી તરફ ધર્મવિરોધી લોક ભારતીયોને પ્રભોભન આપીને છેતરીને મત લઈ રાજસભાઓમાં પ્રવેશ કરે છે અને અધિકાર જમાવે છે. આ જાળને તે લોક અમારા ધર્મનો મરજી મુજબ નાશ કરે છે માટે આ દશમાં આપણે ઉપયુક્ત માર્ગનું શીઘ્ર અવલંબન કરવું જોઈએ એસેમ્બલી કોંગ્રેસ પ્રજ્ઞાતિમાં સંધ બાંધીને ધુસવું અને તે ધર્મનાશકોનું સ્વરૂપ સર્વની સામે પ્રકટ કરી દેવું જોઈએ એવા લોકોને મત ન આપવા માટે અજને સમજાવવી જોઈએ. સર્વ પ્રદેશમાં વર્ણોશ્રમ સ્વરાજ્યસંબંધી શાખા સ્થાપન કરવી જોઈએ, સર્વત્ર ધર્મોપદેશક મોકલવા જોઈએ, કોંગ્રેસ, ધારાસભા, મ્યુનિસિપાલિટી વગેરેમાં આપણા વિસિષ્ટ ધાર્મિક વિદ્વાનોને કાબલ કરવા જોઈએ, અને ઉગ્રમાં ઉગ્ર આદેશન કરવું જોઈએ

નિસત્વ તથા નિર્જળ પુરુષ અગ્ર તથા રાજ્ય જાળેના અપમાનને માત્ર થાય છે. જે વખતે આપ લોકો આરે તરફથી અતિ ઘોર આદેશન ઉદ્ધારવો તે વખતે રાજ્યજનોમાં પણ આપની પ્રતિષ્ઠા થશે અને લક્ષસિદ્ધિમાં વિલંબ નહિ થાય નિર્જળની સદાયના કોઈ કરતું નથી. કોણ-

હલ કયાંવિના મા પશુ પોતાના પુત્રને દૂધ પીવડાવતી નથી. માટે ધર્મરક્ષણાર્થે તથા પોતાનાં અધિકારીની રક્ષાને સાર વિદ્યાનુ સંભળ્યો સંધ્યાદે યદ્ય વિચારપૂર્વક અવશ્ય પ્રબળ ઉલ્લેખ કરે અને સર્વત્ર ધર્મોપદેશ કરે. ઉલ્લાસી પુરુષોપર ભગવાનની પશુ અતુકંપા યશે. ભગવાનની કૃપાથી મનની કચ્છા સુખ્ય સિદ્ધિપશુ અવશ્ય યશેજ. તે ભગવાનની કૃપા પ્રાપ્ત કરવાને માટે તે દેવદેવેશના ચરણકમળોમાં પ્રાર્થનાપૂર્વક સાદર પ્રણામ કરીને માઈ વક્તવ્ય સમાપ્ત કરે છું.

સભાપતિશ્રીના આશ્ચર્યના પછી વિષયવિચારિણી સભાતું અધિવેશન રાત્રે નવ વાગે રાખીને, પહેલી બેઠક સુખશાંતિ અને ઉત્સાહ સાથે સંપૂર્ણ થયેલી જાહેર થઈ. આ વખતે સાંજના સાત તો વાગીજ ગયા હતા. તો પશુ શ્રીમાન સભાપતિ બરાબર સમય ઉપરજ ૯ વાગે પધાર્યા. હજુ મંડપમાં ગણતરીનાજ સભ્યો આવ્યા હતા. શ્રીમાન સમયસર પધાર્યાનું સાંભળતાંજ બેઠકમાં ટપોટપ બધા આવવા લાગ્યા. જોતજોતામાં મંડપમાં તો ગીરદી થવા લાગી. જે ન આવવા જોઈએ તે પશુ તમારો ત્વેવા જાણે આવ્યા હોય તેમ અંદરે ભરાઈ ગયા. આ ગરબચરથા થવાથી સભાપતિશ્રીએ કાપકાનો પૂરા અમલ કરવા માંડ્યો ! પોતાના સીપાલીએને મંડપની વ્યવસ્થા સોંપી દીધી. જેઓ સભાસદ ન હતા, તેમને મંડપમાંથી બહાર જવા દુકમ કીધા. માત્ર જેમને હજી હતો તેમનેજ મંડપની અંદર રાખ્યા. આથી શાંતિ પ્રસરી ગઈ ! પછી મોટી રાત સુધી વિષયવિચારિણી સમિતિનું કાર્ય ચાલ્યું. બીજે દિવસે વિદ્યાર્થિયદત્ત અધિવેશન સેવારમાં ૮ વાગે હતું, તેથી સમિતિ કાર્ય અધૂરું રાખીને ઉઠી ગઈ. આજે રાત્રે અંતરજોનાં હૃદયોમાં ઝેર રેડવાનો ખૂબ પ્રવાસ ચાલી રહ્યો હતો. જાહેર સભાઓદ્વારા અંતરજોને ઉશ્કેરીને સંમેલનના સભામંડપમાં ઘૂસી જવાનો અને તે સુસદ પાર ન પડે તો સુખ્ય દાર ઉપર સત્યાગ્રહ કરવાનો ચેતરો રચ્યો. આ વાતની ખબરે રાત્રે જ પડી હતી. પશુ પ્રશ્ન ઉપર શ્રદ્ધા રાખનારાઓ કાંઈ ચોડા જ ડરી જાય છે ?

બીજો દિવસ—અંતરજસત્યાગ્રહ !

જે કલાકે નિદ્રા લીધા પછી પ્રભાત થતાં પયારી છોડતી પડી ! જલગામમાં તો જનસંખ્યા ખૂબ વધી ગઈ હતી. જુહાનપુર આગિના વેખ્યુલા મોટી સંખ્યામાં આવી પહોંચ્યા હતા. શ્રીમાનના દર્શન અને ચરણપર્યંત માટે તો મોટી ફેાજ આવી પહોંચી હતી, ઉપરાંત મંડપના ઉત્તર દાર પાસે પચાસેક અંતરજોની એક ટુકડી આવી ગયાના અને તે દાર બંધ કયાંના, તેમજ દાર બંધ થતાં જ તેની પાસે દારને ઘેરા લાલીને રામનામ જપવાના તમારો કરતા અંતરજોની વાત આવી ગઈ ! હવે હું કરવું તે માટે વિચાર ચાલ્યો. જલગામના અંતરજોને તો પડીજ ન હતી. કેંગ્રેસના રોજના આઠ આનાના રોજગારે આવેલા બહાર ગામના દરેક ટેડાઓનુંજ આ કારસ્તાન કે તરફટળ હતું. હિન્દુસ્થાનના કમનસીબે જાતપાત તોડકે મંડળવાળા બ્રહ્મચારીઓમાંના કોઇને કોઇ દરેક ગામમાં હોય છે ! આ ગામના તેવા કેટલાકો પરદા પાછળ રહીને દોરી ખેંચતા હતા ! જલગામના અંતરજો તો ધર્મકોઈ કરવા તૈયાર જ ન હતા. આ તરફ અધિવેશનની લગ્યતા કેંગ્રેસની બેઠકને પશુ આંખી પાડતી હતી. આ ઉકળાટ પેલા કહેવાતા સુધારકોથી કેમ સંખ્યાય ? પહેલાં તો આ અધિવેશને જ તોડી નાંખવું એવા નિશ્ચય પર તેઓ આવેલા, અને તેવાં ભાષણો પશુ કરેલાં હતાં ! પશુ એ વાત તો ગાંઠડતા પ્રબલિત અગ્નિ સાથે બેલ કરવા જેવી હતી. તેથી ગામના અબજ અંતરજોને હથિયાર બનાવીને બીજા સુસદ પાર પાડવી હતી. અધિવેશનના મંત્રી પાસે તેઓ આવે છે તેવી ખબર મળતાં એક રા. મેર નામના શિક્ષિત મુઠરફ મારશલ લખી મોકલ્યું કે— આ સંઘમાં લગલ થયા માટેનું

જે પ્રતિષ્ઠાપત્ર છે તે ઉપર અંસજો સદી કરી આપે અને જે સ્થાન પર મંડપમાં અમે બેસાડીએ ત્યાં બેસે તો આ અધિવેશનમાં ખુદીથી આવી શકે છે." પણ પેલા બદારનાઓને તોફાન જ કરવું હતું. કોઈ વાતનો નિવેડો આવવા દેવો જ ન હતો, તેથી "અંસજોને દાખલ કરવામાં નહિ આવે" એવું પાટીયું મંડપની દહની બદાર જ લગાડી દેવામાં આવ્યું. આખરે તેઓએ ઉપર જણાવ્યા મુજબ સલામદ (!) શરૂ કર્યો. ઘણાઓએ આ વખતે પોલીસની સહાયતા લેવાનું કહ્યું, પણ તે માર્ગે જવાની ધમકાણુ શ્રીલેદમણુ સાક્ષીએ નાજ પાડી. સલામદ શરૂ થઈ ગયો. આ બાકુતી સત્યાગ્રહીઓને ત્યાંથી ઉચકીને બીજે સ્થળે મૂકી દેવા એ એક પદ્ધતિમાં અને તેવું હતું, પણ "નાગાથી બાદશાહ આધા" એ કહેવન મુજબ દક્ષિણ દરવાજામાંથી બધા આચાર્યશ્રીઓ તથા વિદ્વાનો મંડપમાં ગયા. અને વિદ્વત્પરિષદનું કાર્ય તો શરૂ પણ કરી દીધું! એક દારપર અંત્યજો અને તમાશખીનોતી ઠકુ જાગી હતી. સમય ઘણો વીતતાં અંત્યજોને ખાવા માટે ચણા અને પીવા માટે પાણી પૂરું પાડ્યું હતું. કોઈને કુદરતી હાજતે ઉઠવાની પણ મનાઈ હતી! તેમના નેનાઓને તો ખૂબ ધામધૂમ કરવી હતી, જનસમૂહની સહાનુભૂતિ ખેંચવી હતી! પણ આવા બાકુતીઓ કોઈ સંસારીઓએ કહેવાય? આ પેંતરે તેમનો મુદ્દસે ચાલ્યો નહિ. એટલે વેશ બદલી બીજે બારણેથી કંપાડકાં પેગની ખજાર પડતાં જ આ જમીનના મીલકતીએ પોલીસને ખજાર આપી દીધી. તે પરથી આ પ્રાધવિષ્ટ માત્રીનીની જમીનમાં પેસવા બદલ બદારગામના તોફાની બાકુતીઓને પોલીસે ગિરફતાર કરવા માંડ્યા એટલે ત્રામના અંત્યજો તો જીવ લાંબાને, મુઠ્ઠી વાળીને નાસી ગયા! બાકુતી સત્યાગ્રહનો આ રીતે ફેશતો થયો. આ વાતની ખજાર છાપાઓમાં તો અજબરીતે ચિતરવામાં આવી હતી. પૂના અને મુંબઈના વર્તમાનપત્રોના પ્રતિનિધિઓ ત્યાં રિપોર્ટ લેવા બેસતા હતા, પણ છત્રી આબે આંધળા હોય તેમ અજબજી રિપોર્ટ લખના હતા. આજના છાપાઓ એટલે જેમાં સોએ નવાણું દેકા બૂઝા ગપગોળા આવતા હોય હોય તે, અને બે દમડી કિંમતના વિચારોનું ભુંભું ભરનારા એડીટરચાર્યોના બીદામણાં ચિત્રામણો! તો પણ ઘણાં પત્રોએ એટલું તો લખ્યું કે આ સત્યાગ્રહની ચોડી પણ અસર સંમેલન પર થઈ નહતી. જ્યારે સત્યાગ્રહ શરૂ થયાની વાત બંગલામાં સાંભળી ત્યારે તો હૃદય ફૂડી ઉઠ્યું હતું! શ્રીનાથદાસથી નિકળતાં બલિષ્ઠના જે વિન-રૂપનો બેયલાં હતાં તે પ્રત્યક્ષ કરવાનો હું સમય આવી પણ ગયો! પણ મંડપ પાસે જતાં સત્યાગ્રહ પાછળ રહેવું બળ અને તરકટ દુરતજ પ્રત્યક્ષ થયાં. શ્રીમાનુ સલાપતિ પણ ત્યાં પધાર્યો. કોઈ જાનવું વિદ્વત્ આવ્યું નહિ. શ્રીમાનુના પ્રતાપબળથી વિન્યા પામે પણ ન ફરકી શકે એવો અનુભવ નવો તો હતો જ નહિ. છતાં આવા વિકટ સમયમાં તેના આદ્યારથી જીવશુદ્ધિમાં માદાત્મ્યજાનની જ્યોતિ વધુ પ્રદીપ્ત બને છે.

યાદગાર અધિવેશન—સવારમાં વિદ્વત્સંમેલન થયું તે બપોર સુધી ચાલ્યું. વિવિધવિચારિણી સમિતિ પણ થઈ. ઉપસ્થિત થયેલા અત્યંત સત્યાગ્રહ વિશે ખૂબ બેદાપોહ થયો. સારાશ્વ દેરાવેતો નિર્ણય કરીને બધા બેદાપોહ દેહકાર્યો સત્યાગ્રહ છોડી ગયા. આજે બપોરે ત્રણ વાગે 'સંઘ' ના મહાધિવેશનની બીજી બેઠક હતી. પહેલા દિવસ કરતાંજે આજે માનવેસમૂહ તો વિશેષ ઉભરાતો હતો. સલામંડપ તો નાનો પડ્યો અને આસપાસના મંડપના આવરણોને ફાડી તોડીને મંડપની બદાર પણ જનસમૂહ મંડપની અંદરનું દરય જેવા લાગ્યો. આજે બીજા આચાર્યો અધિવેશનમાં ન આવ્યા તેથી ભારે ચર્ચા થઈ હતી. પણ આજનો દિવસ તો યાદગાર બન્યો હતો. આજનું દરય તો કાચીની મદાસલાને પણ બૂલાવી દે તેવું હતું! લગભગ ૨૦

હજાર સંખ્યાની જનતા ઉપરિચિત થઈ હતી. બાહુતી અંત્યજનોના દંભ અને પાખંડમય અરણ્ય રુદ્ધને કોઈની સહાયુક્તિ મેળવી ન હતી. મસલત સમિતિએ પસાર કરેલા ઠરાવો એક પછી એક રજુ થયા, અને વિદ્વાન પંડિતો અને ધર્મનિષ્ઠ સદ્ગૃહસ્થોના સંપૂર્ણ અનુમોદનથી પસાર પણ થવા લાગ્યા. આ ઠરાવો ઉપરનાં લાપજો અઝગ ગ્રેરક હોઈ ધાર્મિક જુરસો ઉત્પન્ન કરતા હતા. આ જ સમયે વિધાયતમાં ગોળમેજી પરિષદ ચાલુ હતી તેથી એ પરિષદને એતવણીરૂપે પહેલો ઠરાવ મૂકાયો; અને નીચે મુજબ તાર વિધાયતમાં વડા પ્રધાનને તથા બીજા ગોળમેજી સભ્યોને કરવામાં આવ્યો. એ તાર આ પ્રેમારે છે—

THE PRIME MINISTER,

LONDON (England.)

At the meeting of the All-India Varnashram Swarajya Sangh held at Jalgaon, Khandesh District, Bombay Presidency.

It was resolved that in the new Constitution which is to be framed as the result of the Round Table Conference, it should be provided that there shall be no interference by Legislation or otherwise in matter affecting Hindu Religions or Religion and Socio-Religions beliefs Practices and Culture of the Sanatan Hindus and that such provision shall be unalterable. *

Please put this Resolution before the Round Table Conference and be good enough to get this provision introduced into the new constitution.

From

Goswami Shri Damodaraji Maharaj,

Chief Acharya Vallabha Sampraday of Nathdwara
President,

All India Varnashram Swarajya Sangh Conference.

Copies to

Secretary of State for India,

Maharaja of Durbhanga

Maharaja of Dholpur.

Dated, 30-12-1930. 6 p. m.

બીજો ઠરાવ સોલાપુરમાં કાસીની સજા પામેલા સદ્ગૃહસ્થો માટેનો હતો, પણ આ સરકાર પાસેથી એવી દયાની આશા જ હવે તો ફેગટ ગણાય. ત્રીજો ઠરાવ એકસો (૧૦૦) કાર્યકર્તા ધર્મેશ્વર ઉભા કરવા માટેનો હતો. “સ્વાધીન્યવનવાળા, સહચારસંપન્ન, સર્વથા નિરવાર્ય, ઉત્તમોત્તમ ત્યાગી” આવા કાર્યકર્તા જોઈતા હતા. આ વિશેષજુવાળા તો ભાગ્યેજ નિકળ્યા આવે. સભામાં બ્યારે નામ નોંધાવા માડ્યા ત્યારે તો જાહેરમાં નામ આવે એવી આશાએ ધણીઓ પોતાના નામ પોકારવા માડ્યા, પણ સલાપતિશ્રીએ કપરી કસોટી કરી; ઉભા થઈને જજીવું કે જેને નામ નોંધાવવું હોય તે પાછળથી કાર્યાક્ષમા નોંધાવે, અહીં ઘોઘાટ ન કરે. જેવું કે પાછળથી

લયંકરાચાર્યજીએ હાજરી આપી! સારથી બીથ માટે જ્યારે ઠરાવ આવ્યો ત્યારે તો શંકરા-
ચાર્યજીના એક પંડિત કે જેઓ વારંવાર વ્યાખ્યાનપીઠ ઉપર આવીને, કાંઈને કાંઈ ગર્જના
કરીને, જનસમૂહને હાસ્યમાં ગરકાવ કરતા હતા, તેમણે તો કહ્યું કે “હું તો મારા નાના
ભાઈનાં લક્ષ નાનપણમાં જ કરવાનો છું; જો કે હું કે બીટીય સરકાર મને શું કરે છે?” આથી
ખૂબ હસાહસ થઈ અને તાળીઓના વિપુલ અવાજે થયા! જે તરીકે ગંભીર આવી! આજે
અત્યંતજરૂરને લગતો ઠરાવ આવ્યો ત્યારે તેણે જનસમાજનું ખૂબ ધ્યાન ખેંચ્યું. આ ઠરાવ
શાસ્ત્રીજી રમાનાયજીએ મૂક્યો, અને તેને અનુમોદન મારે આપવાનું હતું, મારા તો ખાસ
વિષય હતા, કારણ કે આ સવાલ જ્યારથી ગાંધીજીએ ઉઠાવ્યો છે ત્યારથીજ હું એ વિષે લખી
રહો છું. એ વિષેની વિગતો જ્યારે મેં મૂકી ત્યારે સભા આશ્ચર્યચકિત થઈ ગઈ. સભાપતિશ્રીએ
પણ શ્રીમુખે પાચ મિનિટનાં વ્યાખ્યાન માટે મને શાખાશ્રી આપી ત્યારે તો હું કૃતાર્થજ થયો
આ ઠરાવે ઘણી ચક્રચાર ઉત્પન્ન કરી, પણ તે પસાર થયો. બીજા પણ ઠરાવો પસાર થયા.
છેવટે ઉપકારાદિ વિધિ થયા પછી અધિવેશન પૂર્ણ થયું.

વિદ્યાર્પિયદામા ખૂબ ચર્ચા ચાલી. આમાં આવીને જેને જે કાંઈ સવાલ કરવા હોય તેને
માટે પૂર્ણ છૂટ હતી. ખૂબ શાસ્ત્રાર્થો થયા. શ્રી. લક્ષ્મણ શાસ્ત્રીજીના વાચસ્પતિસભા વક્તા અને
વિદ્વાન પંડિત રાજેશ્વર શાસ્ત્રીજીએ તથા અન્ય પંડિતોએ શંકાઓનું સમાધાન અત્યંત રીતે
કર્ણુ હતું. આવતા વર્ષનું મહાધિવેશન કલકત્તામાં ભરવાનું આયોજન સ્વીકારાયું હતું.

પરાર થયેલા અગત્યના ઠરાવો.

ઠરાવ ૧ હોય—ગોળમેજી સભાદ્વારા જે બાવી શાસનવ્યવસ્થા કરવામાં આવે એમાં એવું
વિધાન થવું જોઈએ કે હિંદુઓની ધાર્મિક અને સામાજિક વ્યવસ્થા તથા વ્યવહારમાં કોઈ
પ્રકારનો હસ્તક્ષેપ કરવામાં નહિ આવે. આ આશયનો ઠરાવ તાર હિંદી પ્રધાન મારશલ પણ
પ્રધાનને મોકલી દેવા જેથી તેઓ તેને ગોળમેજી સભામાં રજુ કરે.

ઉપરનો ઠરાવ રા. રા. હીરાલાલ સોલીસીટરે રજુ કર્યો અને ટેકા મળ્યા બાદ સર્વાનુમતે
પસાર થતાં બીજો ઠરાવ રા. માધવરાવ ગોડબોલેએ રજુ કર્યો; અને તે પસાર થયો.

ઠરાવ ૨ જે—અ. ભા. વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંધનું આ અધિવેશન શ્રીમાન વાઇસરોય
મહેશ્વરને નિવેદન કરે છે કે ચોલાપુર જિલ્લામાં મહાપા વગેરે જે ૪ વ્યક્તિઓને ફારસીની શિક્ષા
થઈ છે તેના પર આપ નામઠારે કૃપા કરી ફારસીની શિક્ષા રદ કરવી.

ઠરાવ ૩ જે—આ અધિવેશનની સમક્ષિમાં એ આવશ્યક જણાય છે કે અ. ભા.
વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યસંધના ઉદ્દેશને પાર પાડવાને માટે ઓછામાં ઓછા ૧૦૦ સ્વાધીન જીવન-
લાળા, સ્વચ્છતાસંપન્ન, સર્વશા નિઃસ્વાર્થ ઉત્સાહી તથા શ્રી કાર્યકર્તાઓને સારૂ અગ્રીય બનાવ
પાઠી કાર્યકર્તાઓની વ્યવસ્થા તુરત કરવી જોઈએ, અને એને માટે એક ઉપસમિતિ સ્થાપી
જોઈએ કે જે આ કાર્યને શીઘ્ર પૂર્ણ કરે.

ઉપરનો ત્રીજો ઠરાવ શ્રી. લક્ષ્મણ શાસ્ત્રીએ રજુ કર્યો અને પસાર થયા પછી ચોથો ઠરાવ
મહામંત્રી સ્વામીજી દયાનંદજીએ રજુ કરતાં, શ્રી. ગિરિધરશાસ્ત્રીના અનુમોદનથી પસાર થયો.

ઠરાવ ૪ થો—સંધના કાર્યને માટે દ્રબની સગવડ અર્થે માનનીય વ્યક્તિઓનું એક
ઉપદેશન હિંદુસ્થાનના મુખ્ય મુખ્ય સ્થાનોમાં ફરીને આવશ્યકતા પ્રમાણે દ્રવ્યસંગ્રહ કરી શકે
એવો પ્રયત્ન થવો જોઈએ. ધનસંગ્રહને માટે કમમાં કમ એવા લોકોની પ્રતિભા લેવી જોઈએ
કે જે નિયમિત રકમ એક વખતી અંદર એકત્ર કરવાનો જોગ પોતપોતાના ઉપર ઉઠાવે અને
સાખાસભાઓને પણ તેની યોગ્યતાનુસાર કાર્ય સોંપવું જોઈએ.

ખીજો સામાન કેમ ઉપાડી શકાય ? સદ્ભાગ્યે એક હમાલ મળી મયો. વાહણમાં ચંદ્ર ઢંકાઈ રહેલો એટલે અંધારાનું સામાન્ય હતું ! તેમજ વળી રોશનના તાર અને રેલ્વેલાઇનવાળા રસ્તામાં ચાલવાનું હતું. એક ભોમીઓ પણ સાથે હતો. આ દોઢ માઇલની વિકટ મુસાફરી તો કદી નહિ બૂલાય ! અસારસુધી જે મોજ ઉડાવી હતી, તે અહીં નિકળી ગઈ. એમ અચકાતાં ઠોકર ખાતા જ્યારે માલગાડી પાસે મથા ત્યારે ત્યાં ઉમેલી માલગાડીઓમાં ખડવા જનારી કંઈ તે શોધતાં પણ સમય નીકળી ગયો. આખરે માલગાડીનો પતો લાગ્યો અને ગાર્ડના ડબ્બામાં એસવાની જગા મળી ગઈ ! આ ડબ્બો શોધવા માટે ઈજન પાસેથી ઠેઠ છેડવા ડબ્બા સુધી લારલાદેલી સ્થિતિમાં કવાયદ કરતાં જે ડબ્બો લાધ્યો તે પણ ખોચરાના સાલનો હતો એટલે એસવાના કે સામાન મૂકવાના નીચેના પાટિયાં પણ ટુટી ગયાં હતા ! એટલે રેલનાં પૈડાં કેમ ફરે છે અને નીચેના લોખંડના પાટા અને પથરાયલા પથરાનો દેખાવ કેવો યાદ છે તેનો અનુભવ ભેવાની જરૂર હતી તે પૂરી પડી ! જેમ તેમ કરીને સવારે નવ વાગે ખડવા પહોંચ્યા. હવે તો હાથમાં એક જ કલાક હતો. માલગાડીમાંથી ઉતરીને સામાન ઉડાવીને ખડવા રોશન તરફ આ સંધ ચાલ્યો. રોશન-પાસે આવતાં નાની અને મોટી લાર્બન પાસેપાસે યઈ જાય છે. મોટી લાર્બન પર ઈજન ચાલતું હતું તેથી હું નાની લાર્બન તરફ ચાલતો હતો. પણ પાછળથી અંગ્રેજ મુસાફરોની સ્પેસલ નાની લાર્બન પર જોયમેર આવી રહી હતી. હું તે લાર્બનની વચ્ચે હતો. મારા હાથમાં કીમાન્ટી જેખમની ચેડી-કલમદાન હતી. પેથી ટ્રેન-વાળા ઈજન ક્લંપવરે સીડીઓ પર સીડીઓ લગાવી, પણ મેં ઈજનોના પોંપાટમાં સાંભળી જ નહિ. રોશનનું પેટદેશ મેં તદ્દન નજીક આવેલું જોતા જ મેં પેથી નાની લાર્બન ઊંડી કે પાછળથી ધમધમાટ કરતી સ્પેસલ માઠી પસાર યઈ ગઈ ! આખાદ બચાવ થયો ! સિમ્લ આપનારે કહ્યું કે તમને આજે ઇશ્વર જ બચાવ્યા છે ! પણ તેને કયા ખજર હતી કે, બધી બાબતમાં અંગીકૃત જીવના રક્ષણદારની હાથમાં રહેનારને ખીજો કયો નવો ઇશ્વર આવીને બચાવવાનો હતો ? એક કલાકમાં કીમાને રોશન પર જ નિવ્ય કાર્ય કરી લીધું ! વૈષ્ણવો તો દર્શનાર્થ આવેલા હતા જ. પણ નાગપુરની પેડે તેમના મનોરથો મનમાં જ રહી ગયા ! જરાયર અગીયાર વાગે ખડવા ઊડ્યું. રાત્રે રતલામ આવ્યું, અને સવારે ચિતોડ યઈને પૌષ વદ ૧૦ મંગલવારે સવારે ૮ વાગે માવવી રોશન પર આવી પહોંચ્યા. કીમાન મોટરમાં બિરાછને તાબડોતો ખીજની સેવામાં પધાર્યા.

શીનાયદારામાં પધાર્યા પછી એક જાહેર સભા ભરવામાં આવી. વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘની શાખા અહીં સ્થાપી. જલગામમાં જે કાર્યક્રમ થયેલો અને જાહેર વનમાન પત્રોમાં જે ગપગોળા ઉડેલા તે વિષે લંગ્રજીથી ખુલાસો કરવા અને આચાર્યતા મેં જલગામ અધિવેશનનો બબ્બતાનો થોડો શાબ્દિક ચિતાર આલેખ્યો. ત્યારબાદ અહીં પણ 'સંઘ'ને શીનાયદારાના અધિકાકારીઓ તરફથી સારી મદદ મળી અને ઘણા સહાયકો થયા. જલગામમાંના વૈષ્ણવ સદ્ગૃહસ્થોએ પણ 'સંઘ'ને યથાશક્તિ મદદ કરી એ રીતે સહાયત્વે 'સંઘ'ને મદદ કરવાનું કાર્ય પેતાને તથા જ પ્રારબ્ધ ત્યારબાદ કાકરોલીમાં શીવતીર્થપીઠાધીશ્વર ગોસ્વામી શ્રી શ્રીજગદ્ગુણલાલજી મદદારાને પણ 'સંઘ'ની શાખા સ્થાપી અને પોતે ઉદારતાપૂર્ણ મદદ સંઘને કરી. એ રીતે 'સંઘ'માં સક્રિય મદદ સંપ્રદાયે કેટલી કરી તેનો હું કતિહાસ અહીં આલેખ્યો છે. શીનાયદારા મહારસંકાતિ કરી, હવે એકના દિવસ પાસે આવ્યાથી વર્ષતંત્રમગ્ની કરીને અમદાવાદ જવાનો નિર્ણય કયો. લગભગ અઢી માસે માધ સુદમાં હું અમદાવાદ આવ્યો.

સાંપ્રદાયિક ગ્રંથો.

ધોળાગર-ભાગ-૧. નિત્યપા - ૧૦ સંસ્કૃત ગ્રંથો, શ્રીવલ્લભાખ્યાન, શ્રીચમુનાજીનાં ૪૦ પદો, નિત્યલીલા, શ્રીનંદલાસપ્રકૃત રાસ. આખ્યાનો, જમરગીત, મુળપુરવ, નિત્ય ૫૬ (જન્માવવાથી પોદાડવાનાં) જન્માષ્ટમી વધાઈઓ, દીનતા આશ્રયનાં પદો, શીભાગવતનાં ૧૬ ધોળા, શક્તિપોષણ, શીનાથળનાં ધોળા, ધ્રુમહાપ્રભુજી, શ્રીગુસાંઈજી, સાતગાળક શ્રીવલ્લભકુલ આદિનાં ૪૦૦ ધોળા. આલો સાતસો પાનાનો સરતામાં સરતો ગ્રંથ સંપ્રદાયમાં પહેલો છે. અક્ષરો મોટા, સુંદર છપાઈ, આકર્ષક બંધાઈ છે, છતાં મૂલ્ય સવા રૂપીઓ. ટ. ખ. સાત આના.

૧. શ્રીસર્વોત્તમસ્તોત્ર—અડીસો પાનાં, અનેક ચિત્રો, એક એક નામપર એક એક કીર્તન, નામાવલિ, ધોળા અને શ્રીગોકુલનાથજી અને શ્રીરધુનાથજી તથા શ્રીગોપેશજીની સંસ્કૃત દીકાઓનો સવિસ્તાર અનુવાદ. છતાં મૂલ્ય અડી આના, ટ. ખ. દોઢ આનો.

૨. પુષ્ટિમાર્ગનો ઇતિહાસ—શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુસાંઈજી, શ્રીગોકુલનાથજી તથા શ્રીવલ્લભકુલના અસરકારક ઇતિહાસો, તેમાંએ મહાનુભાવ રસભાનજી તથા શ્રીમતી તાજની વાનીં તે વાચ્યાજ કરશે. આવા મોટા પુસ્તકનું નોજાવર માત્ર ૭ આના, ટ. ખ. એક આનો.

૩. શ્રીગોકુલેશજીનો માંસાપ્રસંગ—શ્રીગુસાંઈજીના મોથા લાલજીએ જહાંગીરના જુમ્હે સામે જે અદિસક 'ધર્મપુદ વર્ષો સુધી ચલાવ્યું તેનું' જલહલતી ભાષામાં વર્ણુન, યુક્તિઓથી સમગ્રવેળું તિલકનું રહસ્ય, સચિત્ર પુસ્તક છતાં નોજાવર માત્ર દોઢ આનો.

૪. શ્રીપુરુષોત્તમજીનું ચરિત્ર—નવ લાખ શ્લોક લખનાગ મહાનુ વિદ્વાન ગોસ્વામી શ્રીપુરુષોત્તમજીનું ઐતિહાસિક ચરિત્ર તથા શિવ મોટા કે વિષ્ણુ એ વિશે કવિ શ્રીદયારામભાઈનો ગ્રંથ છે. વિષ્ણુદોહીઓને તમાઓ મારનાર આ ગ્રંથની નોજાવર માત્ર ચાર આના.

૫. જપલંક મહાત્યાગ—પંચમપીઠાધીશ્વર શ્રીગોવિન્દપ્રભુએ જપપુર નરેશના જુમ્મે સામે ચલાવેલી લડતનો ઇતિહાસ વાંચી રહ્યું આવશે, ખુશી થશે, દસશે, સચિત્ર છતાં નોજાવર ચાર આના. ટ. ખ. ૧૧ આનો.

૬. વૈષ્ણવ નરેશ—હિન્દમાંના પુષ્ટિમાર્ગીય રાજમહારાજઓનાં અદ્ભુત કૃતિઓ, સચિત્ર, મૂલ્ય ત્રણ આના. ટ. ખ. ૧૧ આનો.

૭. આરજુનું તે કંઈજો—ટુંકામાં ટુંકા નિત્ય નિયમ ૩૦ ત્રીસ દગ્ગર નકલો વેચાઈ ગઈ છે. નોજાવર એક આનો. ટ. ખ. ૧૧.

૮. ન્યાયમૂર્તિના ચુકાદો—મુંબાઈના ન્યાયમૂર્તિ રાંગજીકરે જમવદીય શેઠ પ્રામજી સુરજીએ પાંડેલા કેસમાં આપેલો અગત્યનો ચુકાદો વાંચીને સુધારકોની પોલ પારખી શકશે અને પુષ્ટિમાર્ગની મહેજજલાલી જોઈ શકશે. મૂલ્ય બે આનો. ટ. ખ. એક આનો.

૯. પંચાવન પાઠનો ગુટકો-પૃષ્ઠ ૨૫૬—નિત્ય નિયમના પંચાવન પાઠોનો આ ગુટકો જે પહેલાં ૪૨ પાઠનો હતો તે) મોટા અક્ષરમાં દમણાં ફરી છપાવ્યો છે. મૂલ્ય માત્ર ત્રણ આના. ટ. ખ. એક આનો.

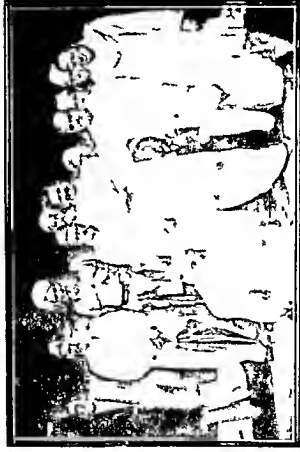
૧૦. શ્રીનટનરલાલનાં ધોળા—રાજનગરવાળા ચિ. જો. શ્રીરણજીડલાલવાવાસાહેબનાં નિત્યલીલારથ આ રી. વહજીએ રચેલાં છે. મૂલ્ય બે આના. ટ. ખ. અઘોં આનો.

જધા ગ્રંથોમાં ટપાલ ખર્ચ જુડે.

ટેકાણું—વસંતરામ હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રી.

૧૭૪૮, રાજમહેતાની ધોળા, અમદાવાદ ન

शुद्धादित



धारापुरीनी गुफामां संदृष्टव्यो तथा निज परिकर साथे श्रीमान

Photo Seth Hansraaj

शुद्धादित

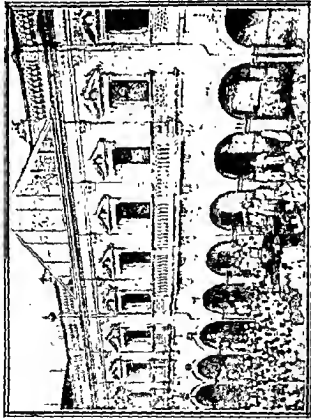


Photo: Seth Hanarajbhai

सर्वाथम स्वराज्य लयना सभापति तरीके सुवाईमां करेछु आंदोलन, मापयवानो यादगार सभाजु हर्य.

Saraya Art P. Ahmedabad.



દરેક ધર્મ, સંપ્રદાય અને સંસ્થાઓની સમાન અને તટસ્થ રીતે સેવા બળવી રહું છે. હાજર રહેલા બીજા ધણીઓએ પણ દરબારશ્રીએ કરેલી પ્રદર્શનાને અનુમોદન આપ્યું હતું.

બાદ અમારા પ્રતિનિધિએ મહારાજશ્રી સાથે તેઓશ્રીની પધરામણીનો હેતુ, સ્વદેશી વગેરે બાબતોના સંબંધમાં વાતચીત કરી હતી, જે અમે સવાલજવાબના આકારમાં હેઠળ રજૂ કરીએ છીએ—

સવાલ—હાલમાં આપશ્રીની અન્નેની પધરામણીનો હેતુ શો છે ?

જવાબ—અમારો અહીં આવવાનો હેતુ વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘની કારોબારી કમીટીની બેઠકમાં હાજરી આપવાનો, વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યસંઘનું ડેપુટીશન ગોઠવવાનો અને સંસ્કૃત ધ્વનિ-વર્સિટી સ્થાપવાની હીલચાલ કરવાનો છે. અમારા અહીં આવવાના હેતુ વિશે જે ખોટી અફવા ફેલાઈ છે કે અમે કોંગ્રેસને તોડવા માટે પ્રચાર કરવા આવ્યા છીએ તે વાત બીવકુલ ખોટી છે. એ વાત ખરી છે કે અમારો વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘ ધર્મમાં બાધક હોય તેનો વિરોધ કરવાનો છે, પરંતુ જ્યાં સુધી અમારા ધર્મમાં દબલગીરી થતી ન હોય ત્યાં સુધી અમારે કોઈની સાથે-કોઈ વિરોધ નથી. અમે કોંગ્રેસને તોડવા માટેના કાર્યોનો પ્રચાર કરવા માટે અન્ને નથી આવ્યા પણ ધર્મની રક્ષા કરવા માટે આવ્યા છીએ. ધાર્મિક બાબતોમાં દબલગીરી સામે જ અમારો વિરોધ છે. બાકી જે બાબતોમાં ધાર્મિક વિરોધ ન હોય તે સર્વ બાબતોમાં સહકાર કરવા આવ્યા છીએ. અને એ વાત અમે અહીં સ્પષ્ટ કરવા ઇચ્છીએ છીએ.

મંદિરો અને સ્વદેશી.

સવાલ—મંદિરોમાં સ્વદેશી પ્રચાર વિશે આપ શું કહો છો ?

જવાબ—અમારા મંદિરોમાં સ્વદેશીનો પ્રચાર સારો છે. પરંતુ અમારી સંસ્થા ધર્મની સંસ્થા હોવાથી બહારથી કોઈ ગૃહસ્થ કાંઈ ભેટ લાવે અને તે વિદેશી પણ હોય તો તેના પર અમે દબાણ કરી ચક્રીએ નહિ. પરંતુ અમે અમારા મંદિરમાં તો સ્વદેશી વસ્ત્રોજ ખરીદીએ છીએ. પરંતુ કોઈ પરદેશી કાપડ લાવે તો અટકાવી શકીએ નહિ.

સવાલ—આપશ્રી આપના ભક્તોને સ્વદેશી ચીજોજ ભેટ લાવવાનું ફરમાન ન કરી શકે ?

જવાબ—અમે તેમના પર તે જાતનું દબાણ ન કરી ચક્રીએ કે ફરજ ન પાડી શકીએ પરંતુ તેઓને સમજાવીએ તો ખરાજ અને તેમ તો કરીએ છીએ.

ગૃહ-ઉદ્યોગને ઉત્તેજન આપવાની હીમાયત.

હું તો ગૃહ-ઉદ્યોગને ઉત્તેજન આપવાનો હીમાયતી છું. જુહાનપુરમાં મેં તો સાચાકામ સામે વિરોધ પ્રદર્શિત કર્યો હતો. કારણ કે સંઘા કામ માણુમ જાતને નુકસાનકારક છે. એકલા ચરખાજ નહિ, પરંતુ દરેક ગૃહ-ઉદ્યોગને ઉત્તેજને આપણે આપવું જોઈએ.

વહીવટસંપ્રદાયમાં સ્વદેશીનો આગ્રહ.

અમારા વહીવટસંપ્રદાયમાં તો સ્વદેશી માટે પરપરાથી બારે આગ્રહ છે. આ સ્વદેશીની ભાવના એટલી બધી તો અમારામાં બારે છે કે દેવસેવામાં અમે ખેડા હોઈએ તે વખતે અમે પરભાષા પણ વાપરતા નથી. અમે પણ જ્યાં સુધી સ્વદેશી વસ્ત્રો હોય ત્યાં સુધી અમે તે વસ્ત્રોજ વાપરીએ છીએ.

પ્રભુ માટે સ્વદેશી પરદેશીનો ભેદ નથી.

અમારા મંદિરોમાં સ્વદેશીની બાબતમાં આવી ભાવના પ્રસરેલી છે પરંતુ અમારા પ્રથ્થ માટે તો ઉત્તમોત્તમ વસ્ત્ર અમે અંગીકાર કરીએ છીએ. તેમાં સ્વદેશી પરદેશીનો ભેદ રાખતા નથી. કારણ કે પરમેશ્વરને તો સ્વદેશી-પરદેશી સમાન છે. આમ છતાં પણ શ્રીહાકુરજી માટે

ઓલ ઈંડીયા વણીશ્રમ સ્વરાજ્યસંઘ.

કાર્યવાહક સમિતિની બેઠક-સાત કલાક ચાલેલું કામકાજ.
સંસ્કૃત યુનિવર્સિટીની સ્થાપના વિષેનો સવાલ-રાઉડેબલ
કોનફરન્સમાં પ્રતિનિધિ મોકલવાની ચર્ચા.

કરોડે સનાતની હોંદુઓની તથા ભારતવર્ષના સમસ્ત ધર્મીયાર્થોની બહોળી લાગવજ ધરાવનારી અખિલ ભારતવર્ષીય વણીશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘની કાર્યવાહક સમિતિની બેઠક શુધવારે સાંજે ચાર વાગે અહીં વાલકેશ્વરમાં શ્રીકૃષ્ણકુંજ નામના બંગલામાં મળી હતી. તેમાં લાગ લેવા માટે જગદ્ગુરુ શ્રીવલ્લભાચાર્યજીના પ્રધાન પીઠપર બીરાજતા સુપ્રસિદ્ધ આચાર્યવર્ધ પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ૧૦૮ શ્રીદામોદરલાલજી મહોદય શ્રીનાથદાસપી અહીં પધાર્યા છે. એએશી સંઘના સભાપતિ હોવાથી પ્રમુખસ્થાને બીરાજ્યા હતા તે ઉપરાંત મુજબના મરાઠુર ધર્મીયાર્થ પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ગોકુલનાથજી મહારાજ પધાર્યા હતા. બનારસથી જાણીતા સ્વામીજી શ્રી. દયાનંદજી અને સુપ્રસિદ્ધ પંડિત દેવનાથકાચાર્યજી પણ મંત્રી તરીકે હાજર હતા. તે ઉપરાંત પંડિત શ્રા. રમાપતિમિશ્રજી, યુનાવાળા આપટ યાચીજી, શ્રી એનાપુરે ચાચીજી, અમદાવાદવાળા રા. વસંત-રામ ચાચીજી તથા કોપામ્પલ શ્રીયુત નાણાવડી સોલીરીટર તથા સુરતવાલા પ્રોફેસર દૂરગાલ એમ. એ. વગેરે આવ્યા હતા.

સંસ્કૃત યુનિવર્સિટી માટે ડેપુટેશન મોકલવાનો ઠરાવ જનગામ ખાતે થયો હતો તે પર વિચાર ચલાવતાં હાલના કરોડીના મામલાપર વિચાર કરતાં મુખ્યની આર્થિક સંકડામણુ જોતાં હાલમા ડેપુટેશન મારફત મુખ્યમાં ફંડ ભરાવવાનું કામ મુલતી રાખવાનો ઠરાવ થયો હતો. જો કે હોંદના રાજ્યપ્રધાનજીએ ડેપુટેશનને આમંત્રણ આપેલું છે, પણ પચાસ લાખની આદ્યાહી રકમ આવા સમયમાં એકડી કરવાનો અશ મુશ્કેલી ભરેલો લાગવાથી હાલ દુરત મુખ્યના ધર્મિક ધનાઢ્ય શ્રીમંતોપર ફંડનો થોડો પણ બોળે નહીં નાખવાનું કમીટીએ થોડા ધાર્ડ હતું, અને સંઘના વિશાળ ધાર્મિક આદર્શના પ્રચાર અર્થે મુખ્ય ઈલાકામા સભાઓ દ્વારા આદોલન કરવાનો ઠરાવ થયો હતો.

તે ઉપરાંત રાઉડેબલ કોનફરન્સમા પ્રતિનિધિઓ મોકલવા વિષેની ચર્ચા ચાલતા હોંદના જાણીતા ધર્મગ્રંથીઓની એક વગત્રાળી કમીટી નીમવામા આવી હતી. કરોડોની સંખ્યા ધરાવનારી સનાતનધર્મગ્રંથી હોંદુ જનતામાંથી થોડા સંખ્યાના પ્રતિનિધિઓનો સ્વીકાર બીટીશ ગવર્નમેંટ કરે તે માટે આદોલન કરવા, ઠરાવ્યું હતું. વણીશ્રમ સ્વરાજ્ય સંઘ સ્વરાજ્ય માટે પૂર્ણ સહમત છે, પણ તેમાં હોંદુ ધર્મના રક્ષણ માટે જે ઘટતા ચાપતા ઈલાને લેવા જોઈએ તે લેવા માગે છે. કારણકે સ્વરાજ્ય માટેના આદોલનો કરતાં આપણે આર્થ સંસ્કૃતિનો નાશ કરી બેસીએ અને વીલાયતી મોહમા ન કસાઈએ તે જોવાનું છે.

આ ઉપરાંત દરેક સનાતની સંસ્થાઓના સંગઠન વિરે પણ જિહાવોહ થયો હતો અને મુખ્યમાં વિશાળ સભાઓ ભરીને ધર્મના રક્ષણપૂર્વક આર્થ સંસ્કૃતિના રક્ષણપૂર્વક સ્વરાજ્ય પ્રાપ્ત કરવાના કેવા માર્ગ હોય તેના આદર્શો રજુ કરવાનું ઠરાવ્યું હતું. છેવટે સામા પાંચસો માણલ દૂરથી મોટો ખર્ચ કરીને અહીં પધારવા માટે સભાપતિશ્રીનો ઉપકાર માન્યો હતો અને

એએત્રીએ બહારગામથી આવેલા પ્રતિનિધિએને ધન્યવાદ આપીને રાત્રે ૧૦૧ વાગે સભા ખરખારન કરી હતી.

માધવખાગમાં મંજીવર સભા.

કાર્યવાહક સમિતિની બેઠક પછી મુંબાઈમાં જાહેર સભાઓ ભરવાનો કાર્યક્રમ ચરૂ થયો. ચેત્ર વદ ૧૦ ને રવિવારે માધવખાગના ભવ્ય ચોજાનામાં સભા ભરવામાં આવી, જેનાં દરેયો આ પુસ્તકમાં છાપ્યાં પશુ છે. આજે પ્રારંભમાં સંધના મંત્રી મંડળના એક ઉત્સાહી કાર્યકર્તા અને કુરંધર શ્રીરામાનુજય વૈષ્ણવ વિદ્વાન શ્રીદેવનાયકાચાર્યજી તથા મહામંત્રી સ્વામીજી દયાનંદજી બી. એ. સંધના ઉદ્દેશો ઉપર લંબાણુથી બોલ્યા. સભા સમજી શાડી કે સંધ કેમ ઉત્તમ કાર્ય કરી રહ્યો છે અને કરવા માગે છે ? આ શાંત, વિરોધીઓ ઉપરના હુમલાઓથી-રહિત અને સ્વધર્મનું રહસ્ય સમજવનારું બ્યાખ્યાન ધણું જ હતુંદમંદ નિવડ્યું તે પછી શ્રીમાને નીચે મુજબ પ્રવચન કર્યું.

સભાપતિ ગો. શ્રીદામોદરલાલજી મહોદયનું ભાષણ.

• સભ્યદંદ એવં વિદ્વદ્વંદ ! આજનો કાર્યક્રમ શો છે તે સર્વને વિદિત જ છે. વર્ણાશ્રમ સ્વરાજ્યસંધ જેવી મદાસંસ્થા યા ઉદ્દેશથી સ્થપાયલી છે અને તે કેવાં લોકોપયોગી કાર્યો કરી રહી છે અને કરવા માગે છે તે અહીંની જનતાને સમજવવા માટે જ આ સભા ભરવામાં આવી છે. સમય ધણો યથ મયો છે. જનતા હવે સભા છોડવાને ઉત્સુક બની ગયલી દેખાય છે. તેમાં એ અહીંની પ્રજિતિવાળા અશાંત જનતા પાસેથી વધુ ધૈર્યની આશા રાખી ન જ શકાય. કાથી આદિ સ્થલોમાં તો પત્નીસ હજારની સંખ્યા પશુ સાંતિથી ધૈર્ય રાખીને બ્યાખ્યાન સંભળતી હતી. ધર્મનું પાલન સાધારણ નથી. આ દેશમાં એવા ધાર્મિક જનો યથા છે કે જેમણે ધર્મ માટે વહેલી આગમાં પોતાનું જીવન હોમી દીધું છે. આપા ધાર્મિક નરોને જ છતિ-દાસ સ્મરે છે. તેથી દેશની જનતા ધર્મપ્રધાન હતી અને રહેશે. (તાગાઓ.) બીજા દેશો માત્ર ઉલોમ-બ્યાપારમાં જ મગ્યા રહીને દુન્યવી સુખ માટે જ તથાસી રહે છે. તેમનામાં ધર્મરચિ દશે કે કેમ તેની ચંકા છે. પણ ભારતવર્ષ તો ધર્મપ્રધાન દેશ છે. આ દેશ કેવલ ઐદિક સુખ માટે જ સ્વચકિતો સર્વ વ્યય કરશે જ નહિ.

આજે વિદ્વાન વક્તાઓ કહી ચુક્યા કે ધર્મ વિના દેશોર્જનિ નથી. ખોચત જ નથી, નથી. ને નથી જ. આ જ વિષય હું ફરીને કહીશ કે દેશોર્જનિત પણ વર્ણાશ્રમધર્મથી જ છે. (તાગાઓ.) ધર્મ વિનાનું જીવન તે જીવન જ ન ગણાય. એ તો પશુજીવન ચરૂ. ધર્મમર્ષાદા છોડીને ઉત્ત-તિની આશા બ્યર્થ જ છે. બીજા દેશો આપણી વર્ણાશ્રમની બ્યવસ્થાની તારીફ કરી રહ્યા છે. આપણા દેશનું ધાર્મિક સંગઠન જગતને આશ્ચર્યચકિત કરી રહ્યું છે. આપણા કેટલાક દેશીઓ હવે તેને તોડવા માગે છે. જેમકે આ દેશને માથે ચારદા એકટ દોકાચો છે. એ કાયદો સમજાવે છે કે લગ્ન જલદી કરવાથી નિર્જલ પ્રજા થશે, માટે મોટી ઉંમરે પરણાવો. કેવી બેબુદા દલીલ છે ? લગ્નની બાવનાને કેવી કચરી નાંખવામાં આવી છે ? આપણે ત્યાં લગ્ન જલદી થાય છે. તે લગ્ન યથા પછી કન્યા જ્યાં સુધી ગભધારણ કરવાને લાયક ન થાય ત્યાં સુધી પતિના ગૃહમાં મોકલવામાં આવતી નથી. હવે લગ્ન યથા પછી આ એવી જ ભાવના રાખે છે કે, મારો આજ પતિ છે, સંસાર ચકટનો આથી છે. એમ પાતિવ્રત્યના અંકુરો જામે છે. તેવા જ સંસ્કારો પતિના હૃદયમાં પશુ થાય છે, આ જીવન એક આદર્શ જીવન બને છે. આપણાં શાસ્ત્રો કહી અદિત-કારક આશા ફરમાવતાં નથી. પણ તેનું રહસ્ય કોને સમજવું છે ? આપણા દેશનું ધન પાતિ-વ્રત્ય છે, અને તે આપણાં શાસ્ત્રો જે આશા કરે છે તે પ્રમાણે વર્તવાથી જ દદ થાય છે.

મોટી ઉમરનાં લગ્નો પાતિમત્સ્યનો નાશ કરનારાં છે. આવા કાયદા અને ચળવળો સામે આ સંઘની પ્રવૃત્તિ છે. તે પછી સભાપતિનો ઉપકાર માનીને સભા બરખાસ્ત કરવામાં આવી.

શ્રીમદ્વાચાર્યમહોત્સવં.

ચેત્ર વદ ૧૧ એટલે તો ભગ્યોદ્ધારક જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યચરણોનો પ્રાદુર્ભાવ મહોત્સવ. આજે તો વૈષ્ણવોના આનંદની સીમાજ ન હોય. દરેક વૈષ્ણવ ગૃહમાં જન્માષ્ટમીથીએ અધિકે આનંદ પ્રસરે. મંદિરોની તો વાતજ શી ? આજે મુંબાઈમાં મોટા મંદિરમાં પણ સભા હતી. તે સાંજના હતી અને માધવજાગૃતી મહાસભા રાત્રે આઠ વાગે રાખી હતી. આજની સભામાં મોટા મંદિરવાળા ગો. શીગોકુલનાથજી મહારાજશ્રીના દ્વિતીય આત્મજ શ્રીદીક્ષિત ભગવાન વક્તા હતા. પણ મોટા મંદિરની સભા કાંઈ વધારે ચાલી, તેથી તેઓશ્રી માધવજાગૃતિમાં સમયસર પધારી ચક્રા નહિ. શ્રીમાન્ સભાપતિ તો બરોબર નિશ્ચિત સમયેજ પધાર્યા. ઘુસ્તજ સભાનો કાર્યક્રમ શરૂ થયો. વધાઈઓ ગવાઈ અને એક વિવાર્ધીએ ગઢલ ગાઈ. તે પછી મને બોલવાની આજ્ઞા થઈ. પ્રારંભમાં સભા બોલાવવાનો ઉદ્દેશ કહીને, શ્રીવલ્લભાધીશ્વરના વિશેષદારક આદ્યોનો પરિચય કરાવ્યો અને આપશ્રીના પ્રાકટ્ય-સમયની દેશની રિથિતિની ભાષકરતા અને તે સમયે નાશ પામતી આર્ય સંસ્કૃતિનું રક્ષણ કરવામાં બતાવેલી ઈશ્વરતા વિશે એક ટુંકું વિવેચન કર્યું. તેટલામાં શ્રીદીક્ષિત ભગવાન્ પધાર્યા, એટલે જે વ્યાખ્યાન પૂર્ણ કરી દીધું. આજના મહોત્સવ ઉપર શ્રીવલ્લભવંશના વચનામૃતોનીજ પિપાસા હોય.

શ્રીદીક્ષિત ભગવાને તો આજે કાંઈ અદ્ભુત વિષય કહ્યો. “ભક્તિમાર્ગમાં સ્ત્રીઓનું પ્રાધાન્ય શા માટે ?” એ ઉપર આપશ્રીએ અર્ધ કલાક સુધી મનનીય વ્યાખ્યાન કર્યું. પણ ઘોંઘાટ ધણે હોવાથી તે બરોબર સંભળાયું નહિ. તેમાંએ આપશ્રીનો અવાજ આજે કાંઈક બેસી ગયેલો હતો. ત્યારબાદ સભાપતિ ગો. શ્રીદામોદરલાલજી મહેશ્વરે એ જ વિષય ઉપર શુભંદ અવાજે પ્રવચન કર્યું.

શ્રીમાન્ સભાપતિનું વ્યાખ્યાન.

આજનો વિષય ભક્તિમાર્ગમાં સ્ત્રીઓનું પ્રાધાન્ય કેમ છે ? એ છે. ભારતવર્ષમાં અનેક આચાર્યો થયા છે. બધા આચાર્યોએ પુરુષોનીજ સુક્તિ વર્ણવી છે. કારણ કે વેદ તો દિવની ‘તેમાંએ પુરુષદેહનીજ સુક્તિ કહે છે. આ કારણથી શ્રીમદ્વાચાર્યચરણે પ્રકટ થયેને ‘પુષ્ટિમાર્ગ’ કહ્યો. ‘પુષ્ટિ’ એટલે અનુગ્રહ કૃપા. આ માર્ગમાં સ્વકૃતિની જીવના પોતાનાં સાધનોની દરકાર નથી અને તે સાધનોથી આ માર્ગ સિદ્ધ થતો નથી. અહીં તો અનુગ્રહ થતાંજ સર્વદલની પ્રાપ્તિ થાય છે. આ ‘પુષ્ટિમાર્ગ’માં સ્ત્રીઓનું પ્રાધાન્ય કેમ ?” આ પ્રશ્ન છે. આપણે શાસ્ત્રદષ્ટિએ સમજી શકીએ છીએ કે પુરુષ તો શાસ્ત્રોગા કહેલાં કર્મો કરી શકે છે. પુરુષો માટે કર્મ, જ્ઞાન અને ભક્તિના ત્રણ મહાન્ માર્ગો શાસ્ત્રમાં બતાવેલા છે. પણ સ્ત્રીએ શું કરવું ? સ્ત્રી કાંઈ એ ત્રણે માર્ગમાંથી એકેયનું અવલંબન કરી ચક્રતી નથી. નાનો બાલક જેમ પોતાની મેલે ખાઈ શકતો નથી, તેમ સ્ત્રીઓ પોતાની સ્વતંત્રતાથી કાંઈ કરી ચક્રતી નથી. શાસ્ત્ર મુજબ તો તે માત્ર પતિકૃત સાધનોપર જ આધાર રાખે છે. અને સ્ત્રીજન્મમાં મોક્ષ તો સર્વથા નથી. તેથી સ્ત્રી શસ્ત્રોના ઉદ્ધાર માટે શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યચરણપ્રકટ થયા છે. આપશ્રીનું નામ તો “સ્ત્રીચદ્રાદુદ્ધૃતિક્ષમ” છે. બળવાન કે શક્તિ-સામર્થ્ય-વાળો તો નોકરી વગેરે સાધન કરી શકે, સ્ત્રીશસ્ત્રો પ્રચુપ્તપ્રાપ્તિનાં શાં સાધનો કરે ? આવા નિઃસાધનોનો ઉદ્ધાર અનુમદમાર્ગદારા શ્રીમદ્વાચાર્યચરણે કર્યો છે. વળી શાસ્ત્રોમાં શ્રીગોપીજનોનેજ ભક્તિમાર્ગમાં મુખ્ય માન્યાં છે. લોકિકમાં પણ તેમની મુખ્યતા છે. પુરુષ તો માત્ર શ્રેયસ્ક છે, પણ વિકાસ તો સ્ત્રીદ્વારાજ થાય છે. પુરુષ શક્તિનો વિકાસ પણ

સીઓના હાથમાં છે. સાંખ્યમાં તો પુરુષ માત્ર ચેતન અર્થાં બલગ રહે છે, અને બધું કાર્ય પ્રકૃતિ જ કરે છે. હવે આપણે જોઈએ છીએ કે, પ્રેરણા ગમે તે કરે, પણ જે કાર્ય કરે તે જ સુખ્ય ગણાય છે. તેથી શાસ્ત્ર અને લોકદૃષ્ટિએ સીઓની સુખ્યતા છે તો ભક્તિમાર્ગમાં તેમનું પ્રાધાન્ય કેમ નહિ ?

ગોપીજનો પુષ્ટિમાર્ગમાં ગુરુરૂપે મનાય છે. તેઓ કેાક સામાન્ય સીઓ ન હતાં, પણ શ્રુતિ રૂપા હતાં. વેદની યાનોપદેશિકા ઋચાઓ તે જ ધીગોપીજનો હતાં ! વળી ઋષિરૂપા હતાં. શ્રીમદ્ ભાગવતમાં તેમની વિષયવાસનાનું એક પણ પ્રમાણ મળતું નથી. તેઓ ઋષિમુનિ ન કરી શકે એવો સર્વસ્વનો ત્યાગ કરી દેહ વસ્ત્રનું પણ બાન રાખ્યા વિના પ્રજુના ચરણારવિંદને પ્રાપ્ત થયેલાં હતાં. માટેજ તેઓનું સ્થાન પુષ્ટિમાર્ગમાં ઉચ્ચ છે. સંન્યાસ એટલે સારી રીતે ત્યાગ, માત્ર મુઠ મુંઝવી ભગવા પહેરવા અને અંતરમાં તમામ વાસનાઓ એવવી એ મંન્યાસ નથી. ઉદવજીને ભગવાન પોતાના સમાન ગણતા તે ઉદવજી પણ પોતાને ગોપીજનોની પગની રમથી પવિત્ર થયેલા માને છે. રાગ પરિહીતને ધીશુકચ્છ બહુ માનથી સંબોધના, પણ બ્યારે પરિહીતે ગોપીજનોના આરિય વિશે શંકા ઉડાવી ત્યારે શ્રીશુકદેવજીએ તું ચષ્ઠથી સંબોધી તિરસ્કાર કરેલો છે. આધુનિક સમયમાં કેટલાક શ્રીકૃષ્ણ તથા ગોપીજનો ઉપર બલિચારનો આરોપ મૂકે છે. તેઓનું ભયંકર અચાન તથા કમળાવાળો જેમ સર્વત્ર પીડું છુએ તેના જેવું છે. લોકમાં કુમારિકાઓ અને સીઓ ગણપતિ, ગારી અને શંકર, સૂર્ય તથા અગ્નિની પૂજા કરે છે તો શું ગણપતિ શંકર સૂર્ય અને અગ્નિમાં પુરુષત્વ નથી કે ? જો છે તો શું પૂજન કરનારી સીઓ તથા કુમારિકાઓને બલિચારી ગણવી ? હમેશાં શંકરની તો સિંજની પૂજા થાય છે, તે શું બલિચાર છે ? અર્થાત્ આ આરોપ તદ્દન ખોટો છે, પ્રજુ તેવાઓને પણ રૂપા કરી સદ્ગુદિ અર્પે.

ઘાટકોપરમાં વૈષ્ણવોની ગંજલવર સભા.

નવયુવકોનાં હૃદયોમાં સળગતા સવાલો.

વૈષ્ણવ ધર્મ શેમાં સમાયલો છે ?

શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વરકૃમાર અને વૈષ્ણવ વિદ્વાનોએ આપેલા સચોટ જવાબો.

ઘાટકોપરમાં અનેરો આનંદ.

(તા. ૨૨-૪-૩૧ના “સાજ વર્તમાન” પરથી.)

ઘાટકોપર, ૧૪મી એપ્રિલ—આજનો દિવસ ઘાટકોપરના ધાર્મિક જીવનમાં એક યાદગાર દિવસ તરીકે ઇતિહાસમાં નોંધાયેલ રહેશે. ઘાટકોપર જેમરાજકીય હાલતનું એક મહાન કેન્દ્ર છે તેમ આર્થ સંસ્કૃતિનું રક્ષણ ચલાનારા અનેક ધર્મનિષ્ઠ સનાતની વૈષ્ણવોની બેઠાળા વસ્તી ધરાવનારું છે. આવા ક્રાંતિના સમયમાં ધાર્મિક ઉપદેશો બાગ્યેજ થાય છે અને તેમાંએ ધર્મીયાર્થો તો જવશ્વેજ ઉપદેશ આપવા બહાર પડે છે. મહુમ ધર્મનિષ્ઠ ચતુર્ભુજ જીવજીદાસના ગંગાસ્વરૂપ ધર્મપત્ની બહેન મહિજીદેને અહીં ધીનવતીનલાલજીનું એક મંદિર સ્થાપ્યા પછી ઘાટકોપરમાં

ધર્મચર્યા વારંવાર થતી રહે છે. એક કરોડ પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવોના પરમપૂજ્ય અને પવિત્ર ૨ શ્રીનાથદારાની ગાદીવાલા ઉત્તમ વિદ્વાન્ આચાર્ય પૂજ્યપાદ ગોસ્વામીશ્રી ૧૦૮ શ્રીદમોદરલા મહોદય મુખ્યમાં પધારતાં અહીંના વૈષ્ણવ સદ્ગૃહસ્થો તરફથી ધર્મનિષ રા. રા. જ્ઞાન પુરુષોત્તમદાસ મહેતાએ ધાટકોપરના ધાર્મિક જનસમૂહને સદુપદેશ આપના માટે શ્રીમાન્ આચાર્ય શ્રીને અગ્રદ્યુતી વિનંતિ કરી હતી અને કૃપા કરીને તેઓ શ્રીમાને તેનો સ્વીકાર કર્યો. શ્રીનાથદારાના પીઠાધિપતિ બાએજ બહારગામ પધારે છે અને ધાટકોપર જેવાં નાનાં ગામોને તેમના ઉપદેશામૃતનો લાભ મળવો એ તો એક દુર્લભ ઘટનાજ ગણાય.

અસાધારણ સન્મીન.

આચાર્યશ્રીને માન આપવા માટે મોટા પાયા પર તૈયારી થઈ હતી. સ્થળે સ્થળે માર્ગ તોરણો શોભી રહ્યા હતા. સભાસ્થાન તો વિવિધ ઉપદેશોના સંસ્કૃત તેમજ અન્યે ભાષ વાક્યોવાળા તોરણો તેમજ ડુલહારના તોરણોથી તેમજ અનેક વીજળીના ઢીવાઓથી અદ્ભુત રીતે અલંકૃત કર્યું હતું. આચાર્યશ્રીને ખીરાજવા માટેનું વાસપીઠ તો મલમલતા કુલોનાં તોરણે ખુબ શણગારી દીધું હતું. આંદોની આકર્ષક ખુરસી રાખવામા આવી હતી. બરોબર નવ. મોટરમાં આચાર્યશ્રી પધારતાં બંદુકના અવાજોથી તેમજ હોંદુ મહાસલાના નેશનલ રકો બેંડના મુંદર સ્વરોથી અને ભાટીયા વોલંટીયર કોરે પુષ્પથી વધાવી લઈને જયનાદથી મ ગજવી મુક્યો હતો. શ્રીમાનને હાસ્તેરા પહેરાવીને પછીથી એક લખ સરપસ કાઢવામાં આ હતું. ઠેર ઠેર રસ્તાઓમાં મહારાજશ્રી પર પુષ્પવૃષ્ટિ થઈ રહી. તે બજારમાં ફરીને શ્રીનવની લાલજના મંદિરના લખ યોગાનમાં સભાસ્થાનમા આવ્યું હતું. વિશાલ સ્થાન પણ જનસમૂહ ખુબ ભરાઈ ગયું હતું. મહારાજશ્રી સાથે એમના વિદ્યાવિભાગના મુખ્ય નેતા શ્રીકુન રમાનાથ શાસ્ત્રીજી પણ આવ્યા હતા. ઉપરાંત મહારાજશ્રીના ખાનગી મંત્રી શેઠ રણછોડદાસ વરજીવનદ શ્રીક તથા 'શુદ્ધા ત'ના તંત્રી વસંતરામ શાસ્ત્રી પણ હાજર થયા હતા. ધાટકોપરના વૈષ્ણ સિવાય ખીજ કોમના ગૃહસ્થોએ મોટા પ્રમાણમાં હાજરી આપી હતી.

આચાર્યશ્રીએ પ્રમુખસ્થાન લીધા પછી મંદિરના મુખ્યાલ શ્રી. જમનાદાસ નાનજીએ પ્રસ પુષ્પમાળા શ્રીમાનને પહેરાવી હતી. તેમજ શ્રીનવનીલાલજના મંદિર તરફથી શેઠ હરગોવિંદ જીવજીદાસ અને છોટાલાલ કાનજીએ તથા સ્વાગતસમિતિ તરફથી શેઠ જીવજીદાસ ભાણજી આચાર્યશ્રીનું સ્વાગત કર્યું હતું. તે પછી અહીંના વૈષ્ણવ યુવક પર્ગના આગેવાન શેઠ જમનાદ એજી કપાશીએ સમિતિ તરફથી આચાર્યશ્રીનું સન્માન કરતાં જણાવ્યું હતું કે—

યુવક દ્વયનો પડયો.

હું સમિતિ તરફથી પૂજ્યપાદ આચાર્યશ્રીનું સન્માન કરું છું. (તાળીઓ) આજ કાલ એ આશ્વેષો કરવામાં આવે છે કે ધર્મચર્યા ઉપદેશ આપના નથી, પણ આચાર્યશ્રીએ અહીં પધારી ઉપદેશ આપવાનું કહ્યુંયો આશ્વેષ ઉઘાડી દીધો છે. (જોશભર તાળીઓ) આજનો વિ પહેલેથીજ નક્કી કરી દીધેલો છે. 'ભક્તિ' વિષય પર આચાર્યશ્રી આજે બોલવાના છે. પણ તે પહેલાં એક વાતનો ખુલાસો કરું છું. હું વૈષ્ણવ કુર્તુબનો છું. તેમજ અનેક યુવકો વૈષ્ણ કુર્તુબના છે. અમને બધાને વૈષ્ણવ ધર્મના આદર્શોનો શુદ્ધ ખ્યાલ આવ્યો નથી. હું પુછું છું વૈષ્ણવ ધર્મનો ખ્યાલ શો ? અમારા વડીલો તો અમને નહાવા ધોવામાંજ તેમજ રસોડાને ના અડકવામાંજ વૈષ્ણવ ધર્મ સમાઈ ગયેલો સમજાવે છે. આજે વૈષ્ણવ યુવકો આ વિષે ખુલાસે

સાંભળવા ઇચ્છે છે. હું આચાર્યશ્રીનો સ્વાગતસમિતિ તરફથી ઉપદેશ આપવાનું કથુબવા બદલ ઉપકાર માની બેસી જવાની રજા લઉં છું.

પ્રશ્નનો આશય શો ?

આચાર્યશ્રીએ મંગલામરણ કરીને જણાવ્યું કે સમ્પર્ક તથા સ્પર્શ, આજનો વ્યાખ્યાનનો વિષય 'ભક્તિ' એ રાખેલો હતો, છતાં અહીં વૈષ્ણવ ધર્મ વિશે પ્રશ્ન કરવામાં આવ્યો છે. એટલે પ્રશ્નનો મુદ્દો બરાબર રજુ કરવાની જરૂર જણાય છે. ખરૂં બોનાં 'ભક્તિ' અને વૈષ્ણવ ધર્મ એ બંને જુદા નથી. 'ભક્તિ' ની પણ ઘણી કક્ષાઓ છે. ધીરે ધીરે ઉચી ઉચી સીડીએ મઠી ચઢાય છે. નાના બાળકોને પહેલાં અશ્વરો ધુટવાનું શીખવાય છે. તે પછી તે ઉંચી અભ્યાસ કરીને ઉન્નત બને છે. તેમ 'ભક્તિ' ની સર્વ કક્ષાઓનું વર્ણન કર્યા પછી ચંકાને સ્થાન નજર રહે. સ્વાગતના વ્યાખ્યાનકર્તાએ જે પ્રશ્ન કર્યો છે તેની છલાવટ થવી જોઈએ. તેમનો આશય શો છે ? રસોમાં કે નહાવા ધોવામાં ધર્મ એમ જે કહેવાયું છે તેનો મુદ્દો શો છે ? પ્રશ્નકર્તાએ પોતાનો પ્રશ્ન વિશેષ ખુલાસાવાર રજુ કરવો ધરે છે.

ગાંધી યુગ અને વૈષ્ણવ યુગકો,

અગ્રે પ્રશ્નકર્તા શેઠ જમનાદાસ કપાડીએ જણાવ્યું કે—અમારા વડીલો એમજ કહે છે કે જે ચાર વખત નહાવું અને કોઈનું ખાવું નહી, કોઈનું પાણી પીવું નહી એવું નામ ધર્મ છે. શું ધર્મ એટલે ખાવાપીવામાં બાધ માનવી અને વારંવાર નહાવું ધોવું એજ કે કાંઈ બીજું ? શું એ આમારોમાં જ ધર્મ સમાપ્ત થયેલો છે ? આવા ખાનપાનના બાધમાં ધર્મ સમાવશે છે એવા વડીલોના સંસ્કારોથી હવે યુવકોની શ્રદ્ધા કમી થતી જાય છે. આ ગાંધીયુગમાં કેવળ સંકુચિત વિચારોથી હવે યુવક વર્ગ આકર્ષાશે નહી. વેપારમાં કાળાધોળા કરવાથી ધર્મ જતો નથી, પણ ખાનપાન કે નહાવાપીવામાં બાધ થવાથી ધર્મ નાશ પામે છે એ વિશે સ્પષ્ટ ખુલાસો થવાની જરૂર છે.

આચાર્યશ્રીનો સંગીન જ ૧૫.

ઉપરના પ્રશ્નનો જવાબ આપતાં આચાર્યશ્રીએ જણાવ્યું કે પ્રશ્નકર્તાનો આશય હાલમાં જે જનસમૂહની પ્રવૃત્તિ ચાલુ છે તે ધર્મ સાથે કેટલો સંબંધ ધરાવે છે તે વિશે છે. આપણા દેહમાં પણ ભિન્ન ભિન્ન રિયતિ છે. દરેક વસ્તુ ત્રણ દૃષ્ટિએ જોઈ શકાય એવો શ્રીવલ્લભાચાર્યચરણનો સિદ્ધાન્ત છે. ૧ આધિભૌતિક, ૨ આધ્યાત્મિક અને ૩ આધિદેવિક. આ ત્રણ શક્તિઓ છે. આપણા દેહમાં પણ આ ત્રણ રિયતિ છે. આપણો દેહ આધિભૌતિક છે, આત્મા આધ્યાત્મિક છે અને પ્રયુ આધિદેવિક છે. આ ત્રણે વસ્તુનું રક્ષણ કરવું રહ્યું. ચરીરમાં માંસનીજ શુદ્ધિ કામ ન આવે, રહિર પણ રહેવું જ જોઈએ. એ રીતે ચાત્રાવ નિયમે મુજબ ઉક્ત સર્વ વસ્તુની શુદ્ધતા જોઈએ.

પ્રશ્નને પ્રાપ્ત કરવાના માર્ગ ત્રણ છે. કર્મ, જ્ઞાન અને ભક્તિ. કર્મમાર્ગ એટલે કર્મ કરવું એમ નહિ, કારણ કે તેવો અર્થ લેતાં તો કોઈને મારી નાખવું એ પણ કર્મ જની જાય. તેથી એમ સમજવું કે શાસ્ત્રોક્ત જે ક્રમો છે તેજ કર્મ ગણાવ. બીજા નહી. જે કર્મથી અધોગતિ થાય તે કર્મ ન કહેવાય. તેથી જ કલિવચ્ચમાં યગવાગદિમાં થતો પદ્યવધ બંધ કરવાનું કહ્યું છે, અને યગ જપયગ છે એમ ગીતામાં પ્રયુ શ્રીમુખે આગા કરે છે. જપયગ એટલે ગોમુખીમાં હાથ તાપીને માળાના મણકા ફેરવવા એ નથી, પણ ભજવાનમાં પોતાનું મન કેન્દ્રિત કરી દેવું, એ જપયગ છે. (તાળાએલ) ઈશ્વરમાં મન લગાવવું એજ અરો માનસિક જપયગ છે. જપ કરતાં પ્રયુમાં મન લાગે છે. જેમ કોઈનું ચિત્ર જોવાથી તેનામાં મન કેન્દ્રિત થાય છે, તેમ, અહર્નિશ

શુશ્રુઘાનથી પ્રભુ હૃદયમાં બિરાજે છે અને મનોવૃત્તિ તે તરફ ઝુકે છે. તેજ ખરે જપ છે. કેટલીક વખતે રથૂલ બાબત સૂક્ષ્મ કરતાં વધી જાય છે તેથીજ કર્મયોગ પણ મુખ્ય ગણાય છે. ચિત્તની વૃત્તિઓ અચ્ચલ હોય છે તેને જપમગરૂપ કર્મયોગથી વશ કરી શકાય છે અને ભક્તિમાર્ગમાં તો કર્મમાત્ર ઇશ્વરાપહ્નુશુદ્ધિથીજ થાય છે. તેથીજ કર્મ પણ નિસ્સ્વાર્થ બને છે. એવી વૃત્તિથી કર્મ થાય તોજ તેનું ઉત્તમોત્તમ ફળ પ્રાપ્ત થાય છે. સર્વ રચણે ઇશ્વરશુદ્ધિથી જુઓ. જે કંઈ કરે તે ભગવદર્થ કરે. ખાઓ, પીઓ, પહેરો ઓઢો, નાસિકાથી સુગંધ, નેત્રથી જુઓ, એ બધાં કર્મ નિષ્કામ ભાવે ભગવદપહ્નુશુદ્ધિથી કરો. આ આધ્યાત્મિક વ્યવસ્થા છે.

હાલમાં શાસ્ત્રીય આચારોના પ્રત્યેક થાય છે, પણ શાસ્ત્રોનો અભ્યાસ કેટલા કરે છે ? શાસ્ત્રની બાબત પુછો તો તેનો અભ્યાસ કરીને પુછો. ધર્મનું સ્વરૂપ મહન છે. આપણા બહારના આચારવિચારોમાં ધર્મ છે. જુઓ, આપણે બોજન ન કરીએ તો શક્તિ ઘટી જાય છે, અને બોજન કરવાથી શક્તિ પ્રાપ્ત થાય છે, અને શરીરમાં વીજળીક બળ આવે છે. તે બળ જમીન પર ભેસવાથી જમીનમાં ચાલું જાય છે. તેથી આપણે ત્યાં લાકડાના પાટલા પર ભેસવાની રીત છે. તેમ સ્પર્શસ્પર્શમાં પણ ઉત્તમ વિજ્ઞાન છે. હવે મોટા મોટા ડાકતરો એકદમ હાથ મીઠાવી લેવાની પણ ના પાડતા થયા છે. બધાને એકાકાર કરવાથી ફાયદો નથી. વીજળીના તાર જુદા રહીને કેવો સુદર પ્રકાશ આપે છે ? તેમજ આપણે અલગ રહીને પણ એક ઉત્તમ કાર્ય કરીએ.

અંત્યજ્ઞેના ધણી ઉપકારો છે. તેમના તરફ રૂ દષ્ટિ રાખી શકાયજ નહીં. આપણે તો સર્વ પ્રાણી માત્ર તરફ તેથી દષ્ટિ ન રાખી શકીએ તો પછી અંત્યજ્ઞેની તો વાતજ શી ? કેટલાકો અંત્યજ્ઞે મનુષ્યજ નથી તેવો વતોવ કરતા હશે તો તે યોગ્ય નથી. જ્યાં એકજ કુલે હોય ત્યાં તેમને માટે પાણીના બદોબસત કરી આપવાનું ધર્મશાસ્ત્રનું ફરમાન છે. તેમ તે આપણા મંદિરોમાં ચાલ્યા જાય એ પણ ઉચિત નથી. ભગવાનનાં વિરાટ શરીરમાં મુખરૂપ બાહ્યજો છે. અંત્યજ્ઞે શુદ્ધરચાને છે. શુદ્ધાનું કાર્ય મુખ કરે તો સંનિપાતની ઉલટી યથ કહેવાય. તેથી પોત-પોતાના કર્મમાં રહેવાથી યેય છે. આપણે બહારથી ભલે વિગત દેખાઈએ, પણ સમષ્ટિમાં એકજ છીએ. મન દેહથી અલગ નથી. દેહની અપવિત્રતાની અસર મનપર થાય છે.

શાસ્ત્રીજી રમાનાથજી.

આચાર્યજીનું બાપ્ત્યાન થતા શાસ્ત્રીજી રમાનાથજીને આગ્રહ થવાથી તેમણે છઠાદાર હાંતી ભાષામાં વિવેચન કરીને, શાસ્ત્રને ઠોકરે મારીને મનઃકરિપત આચાર્યવચારો રચાવવાથી કેવી ગેરવ્યવસ્થા થાય છે તેનો આભેદુજ ચિતાર આપ્યો હતો અને ધર્મ અને અધર્મની વ્યવસ્થામાં તો શાસ્ત્રો વિના બીજા કાંઈ ઇલાજ નથી એવું ભાર દબે જણાવ્યું હતું.

વસંતરામ શાસ્ત્રી.

તે પછી આગ્રહ થતા વસંતરામ શાસ્ત્રીએ વિવેચન કરતાં જણાવ્યું કે શેઠ જમનાદાસ કપાલીની પ્રશ્ન નવો નથી. વૈષ્ણવ યુવક હૃદયોમાં સળગી રહેલા સવાલોનું તે પ્રતિબિંબજ છે. ગાંધીજી તો એક મહાન ભક્ત છે. મીઠાના કાપડો તોડવા માટે નીકળ્યા ત્યારે ‘ અબકી ટેક હમારી ’ એ શ્રીસુરદાસજીનું પદ ગાતા નીકળ્યા હતા. આજના યુવકો તે વાત જીવનમાં મુકવા તૈયાર નથી. ગાંધી યુગમાં ‘ ભક્તિ ’ ને મુખ્ય રચાન હોયજ, એમ સમજીનેજ આજનો વિષય રાખ્યો હતો, પણ ચર્ચા ધણી સુદર યથ. સુરહેવ પધારે ત્યારે આવા ઉભરાઓ કાલવનાજ ધરે. વૈષ્ણવ ધર્મ બેધારી તલવાર છે. આચાર્યજીનું કડક પાલન કરીને વેપાર ધંધામાં જુડું બોલે અને કાપડને ગરદન મારે તો તે વૈષ્ણવ નથી, તેમ નીનિનું પાલન કરીને આચાર્યવિચારોનો શંકુભંગ કરે તો તે પણ વૈષ્ણવ નથી. અહીં તો બધી તરફથી વૈષ્ણવતા જળવળી રહી.

‘શ્રીયુત પ્રભુદાસ લાધોલાલ મોદી.

શ્રીયુત પ્રભુદાસ લાધોલાલ મોદીએ લાગણી ભર્યું જીવનસાધાર વિવેચન કરતાં જણાવ્યું કે આપણા સંસાર ઉપર ધર્મની સત્તા મોટી છે. તેનું કારણ એ છે કે સંસારની ચક્રવર્તીમાં આધાર મોટે ભાગે ધર્મ ઉપર રહેલો છે. મનુ આદિ આપણા ધર્મશાસ્ત્રોમાં દરેક વર્ણના લોકો માટે જુદા જુદા આશ્રમોના નિયમો દર્શાવવામાં આવેલા છે. એ નિયમોને આધારે જ આપણું સંસારી બંધારણ ચલાવ્યું છે, પણ આપણા લોકોની અંદર અધર્મશક્તિ મિથ્યા વહેતી અને ધોર અજ્ઞાનતાને લીધે પાખંડ વધતું ચલ્યું છે. તે પાખંડ દૂર કરવાનો વખત હવે આવી લાગ્યો છે. દેશની મુક્તિ માટેનાં યુદ્ધમાં મહાત્મા ગાંધીજીએ ધર્મભાવના દાખલ કરી છે અને આપણે આપણી પૂર્વની સંસ્કૃતિઓ જાળવી રાખી આગળ વધીશું તોજ આપણું કલ્યાણ થશે ની. પ્રભુદાસે એ પછી કેટલુંક વિવેચન કરી ગોસ્વામી શ્રીધામોદરલાલજીને યોગ્ય દિશાએ વૈષ્ણવોને દોરવાની વિનંતિ કરી હતી અને પાખંડ અને ખરાબ રૂઢિઓનો નાશ કરી આર્ય સંસ્કૃતિનું વૈષ્ણવ ધર્મના મહાન આચાર્ય શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીના ખરેખરા સિદ્ધાંતોનું પાલન કરવાની મજબૂત હિમાયત કરી, આચાર્યશ્રી તથા પંડિતોનો આભાર માનવાની દરખાસ્ત મુકી હતી જેને કપોળ ન્યાતના પ્રમુખ શેઠ જીવજીદાસ લાણીજીએ ટેકા આપતા કહ્યું કે મહારાજશ્રીએ આટલે લાંબા મોટી રાત્રિના અહીં પધારી ધાટકોપરના વૈષ્ણવોપર ખારે આભાર કર્યો છે. તેઓનાં વચનામૃતનો આપણને અમૂલ્ય લાભ મળ્યો છે તે માટે તેઓશ્રીનો નેટલો આભાર માનીએ તેટલો ઓછો છે.

ઉપસંહાર.

છેવટે આચાર્યશ્રી તથા બંને વિદ્વાનેને હારતોરા અર્પણ કરીને આચાર્યશ્રીને શ્રીનવતીતલાલજીનું મંદિર જોવા પધરાવ્યા હતા. તેઓશ્રી મંદિર જોઈને ધણી પ્રસન્ન થયા હતા અને ગોલોકવાસી શેઠ અગ્રજીજી જીવજીદાસના ધર્મપરાયણ ધર્મપત્ની ગં. સ્વ. મણિખંડેન તેમજ ગોલોકવાસી શેઠ નારજીદાસ દેવીદાસનાં ધર્મપરાયણ પત્ની ગંગાસ્વરૂપ સંતોકબાઈને મંદિરની સુંદર વ્યવસ્થા માટે ધન્યવાદ આપી આશીર્વાદ આપ્યા હતા.

શ્રીમાન્ બાવાસાહેબના ધન્યવાદ તથા આશીર્વાદને પ્રણામ મસ્તકે ગ્રહણ કરીને, એક સહૃદય વૈષ્ણવને યોગ્ય દીનતાથી ગં. સ્વ. મણિખંડેન તથા ગં. સ્વ. સંતોકબાઈને વિનંતિ કરી કે; આ મંદિર કે તેની આ વ્યવસ્થાને માટે અમને કાંઈ પણ ધન્યવાદ થતો નથી. મંદિરની આ બચ્ચતા અને આકર્ષક સુંદરતા તેમ જ સુખ્યવસ્થા માટે જો કોઈને સુધર આપવામાં આવે તો અમારાં મહારાણીસ્વરૂપ શ્રીમાતાજી ગોસ્વામિની શ્રીભાગીરથી માતાજી મહારાજ અને તેઓશ્રીના કુમાર ચતુર્થપંચમપીઠાધીધર ગોસ્વામી શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહારાજશ્રીને જ ધટે છે. આજે ધાટકોપરના વૈષ્ણવોને સ્વપ્નમાં પણ ન મળે તેવા જે અજીધાર્યો આનંદ મળ્યો તેમ બીજી વખતે જે કાંઈ અલૌકિક આનંદ મળે છે તે પણ એઓશ્રીની કૃપાથી જ મળે છે એમ અને માનીએ છીએ. ” તે પછી સ્વયંસેવકોના બેન્ડની સહામી તથા ‘જયનાદ’ વચ્ચે મોટી રાત્રે શ્રીમાન્ મોદરમાં ગુણાધ પધાર્યા હતા.

કાવસજી જહાંગીર હોલમાં જાહેર સભા.

આપણાં સાપ્રદાયિક બાળ્યનો માત્ર આપણાં મંદિરોમાં અથવા તે વંગા બીજા કોઈ ધર્મસ્થાનોમાં થતાં હતાં ! પણ જે સ્થાન જાહેર કહેવાય છે, જે સ્થાનોમાં આજકાલના રાષ્ટ્રીય નેતાઓ ગઈગયા કરવામાં ગૌરવ સમજે છે, જે સ્થાનમાં સભા થતી હોય તો ત્યાં રંગમંચ

એસવામાં અને બોલવામાં માન મલ્યું મનાય છે તે જાહેર સ્થાનોમાં ધાર્મિક વ્યાખ્યાનો થાય એ તો યુગનો પલ્લોજ ગણાય. પણ હા, તે યુગપલ્લો મહાસમર્થ આચાર્યસત્રાટ શ્રીદામોદર દાસજી બાવાસાહેબે કરી દીધો છે. મુંબાઈમાં ટાઉન હોલમાં આપશ્રીએ સભા કરીને એક ઐતિહાસિક દૃષ્ટાંત ધાર્મિક ઇતિહાસમાં આલેખાવી દીધું છે. એ સભાનું દરમિયાન તો મુંબાઈ કદી નહિ બૂલે. ત્યારપછી જેટલીવાર આપશ્રી મુંબાઈ પધાર્યા તેટલીવાર જાહેર સ્થાનોમાં સભામાં બાપજી કરવા માટે સદૈવ ઉત્સાહિતજ રહ્યા છે. મુંબાઈમાંજ નહિ પણ અમદાવાદ આદિના ટાઉન હોલમાં પણ પહેલી પહેલ આપશ્રીએજ કરી છે. આ વખતે પણ વૈજ્યવર્ણપરિપક્વા મંત્રીઓ શ. ત્રીકમદાસ ચક્રભાર્તી તથા શ. નારાયણ દયાલે એવી સભા કાવસજી જહાંગીર હોલમાં ગોઠવી. એક વડ ૧૩ ને બુધવારે સાંજે એ હોલ આગળનું દરમિયાન અદ્ભુત હતું. મોટરો તથા ગાડીઓ તથા વૈજ્યવર્ણ સમૂહથી હોલ ઘેરાઈ ગયો હતો. મુંબાઈના ધનાઢ્ય શ્રીમંતો મોટી સંખ્યામાં હાજર થયા હતા. સભારચનાની કાંઈ અદ્ભુત શોભા બની હતી. આજે મુંબાઈમાં ગિરાજતા બધા શ્રીવક્ષભવંશ્ય શ્રીગોસ્વામી આચાર્યશ્રીઓ આ સભામાં પધાર્યા હતા.

આરંભમાં મુંબાઈના આગેવાન વૈજ્યવર્ણ વ્યાપારી તથા એક કેળવણીના વિદ્વાન શેઠ મયુરાદાસ મટાણીએ જણાવ્યું કે, વંદાયલા હસ્તપત્રો પ્રમાણે શ્રીમાન્ બાવાસાહેબ આજે આ જાહેર હોલમાં વ્યાખ્યાન આપનાર છે. જાહેર સ્થળોમાં ધાર્મિક વ્યાખ્યાનો આપવાની પહેલ આપશ્રીએ જ કરેલી છે. આજે પણ કૃપા કરીને “સર્વત્રેષુ ભક્તિમાર્ગ” એ વિષય ઉપર કહેશે. ત્યાર બાદ શ્રીમાન્ બાવાસાહેબે મંગલાચરણ કરીને જણાવ્યું કે:—

આજે યાવન્માન સાધનોમાં ઉત્કૃષ્ટ સાધન ભક્તિમાર્ગજ છે તે વિશે કહ્યું છું. પ્રજાને મળવાનાં અનેક સાધનો છે. વેદ તો તવચા મ્લ વિગિજ્ઞાઘાવ કહીને તપને સાધન બતાવે છે. વળી ટેટલાક અંશોમાં યજ્ઞાયાગાદિ પણ પ્રાપ્તિમાં સાધન છે એમ પણ વેદજ કહે છે. મનુસ્મૃતિ તો આ લોકમાં કર્મની જ મુખ્યતા કહે છે. પુરાણોમાં ધણા સાધનો વર્ણવ્યાં છે, પણ બધાથી મુખ્ય સાધન તો ભક્તિજ છે એમ કહ્યું છે. કર્મ, જ્ઞાન અને ભક્તિ; એ ત્રણમાં મુખ્યતા ભક્તિની જ છે, છાત્રોના પ્રમાણે તો મુખ્ય ભક્તિજ છે એમ કહે છે, પણ આજકાલના તકના જમાનામાં સવાલ થશે કે તેજ મુખ્ય કેમ છે ? એવો સવાલ થશે તેને માટે યુક્તિવાદથી એ વાત સિદ્ધ કરીશ.

સૂક્ષ્મ વિચાર—ભક્તિની ઉત્કૃષ્ટતા કેમ છે તે જાણો. વેદમાં બતાવેલા કર્મ જ્ઞાન, અને ભક્તિનાં સ્વરૂપ શાં છે તે હું બતાવું છું. કર્મ તો કેવલ કૃતિસાધ્ય છે. આ પાંચમહાભૂતિક દેહથી જ થઈ શકે છે. જ્ઞાન ઉદ્વિગ્નસાધ્ય છે, સૂક્ષ્મ છે. ભક્તિ મન:સાધ્ય છે. હવે જુઓ કે ઉત્કૃષ્ટ કોણ છે ? જેનું રૂપ જેમ વધુ સૂક્ષ્મ તેમ તેનામાં વધુ શક્તિ હોય છે. તેમ જેનું રૂપ વધુ સૂક્ષ્મ તેમ તેનામાં શક્તિ યોદી હોય છે. અતિ સૂક્ષ્મ પદાર્થમાં તો શક્તિ ટેટલી તેની ઈશિતા માપજ ન હોય, જેમ વધારે શક્તિ તેમ વધારે કામ આપે છે. હવે જુઓ કે બધાથી વધારે તાકાત શેમાં છે ? હું આપણા દેહમાં-વધારે તાકાત છે કે, ઉદ્વિગ્નમાં કે મનમાં ? એ ત્રણેમાં વધારે શક્તિ શેમાં છે ? વિગાનચાત્રીઓ પણ કહી શકશે કે, લોહું, સોનું, અને રેડીયમ; એ બધામાં સૂક્ષ્મ કોણ અને તાકાત-સામર્થ્ય શેમાં વધારે છે ? તો સાદું કહેશે કે સૂક્ષ્મ રેડીયમ જેટલી શક્તિ કોષનામાં નથી. જેમ શક્તિ વધારે તેમ તેનું મૂલ્ય પણ વધારે અંકાય. જેમ વધારે સૂક્ષ્મ તેમ તે અતિશય વ્યાપક બને. સૂક્ષ્મની ગતિ રોકાતાં વાર ન લાગે. ટાંકણી કે ખીસા યગમાં પેસી જાય, પણ જાડી લાડી પગમાં પેસીજ ન શકે ! તેવી જ રીતે દેહ સૂક્ષ્મ છે, ઉદ્વિગ્ન

તેથી સૂક્ષ્મ છે અને મન તો અતિસૂક્ષ્મ છે. દેહમાં, કેટલી તાકાત ? ઇન્દ્રિયોમાં કેટલી શક્તિ ? મનમાં કેટલું સામર્થ્ય ? જેમ ૧૦ હોર્સના પાવરવાળા ઇન્જિનમાં, ૨૦ હોર્સ પાવરવાળા ઇન્જિન વગેરેમાં ઘટતી વધતી તાકાત હોય છે તેમ અહીં પણ સમજવું રહ્યું. દેહની તાકાત તો અમુક હદમાં ફેલાય છે. આપણા હાથપગ કાંઈ એક નાનીથી કોટડીમાં પણ બધે રથને ફેલાવી શકાશે નહિ. ઇન્દ્રિયોમાં આંખ, કાન, નાક વગેરેની શક્તિ વધારે છે, કેમકે તે સૂક્ષ્મ છે. દૂરથી આંખ જોઈ શકે, કાન સાંભળી શકે, નાક સુગંધ લઈ શકે. આ ઇન્દ્રિયોથી પણ કર્મ જ્ઞાનભક્તિદ્વારા ભગવાનને પ્રાપ્ત કરવાનો જ હેતુ છે. છતાં એ ઇન્દ્રિયોને તો અંતરાય પણ નડે. દૃષ્ટિમાં આંખ આવે, કાનનાક બહેરા મર્ધ બન્ય, પણ મન, તે તો અતિસૂક્ષ્મ છે. તેથી જ તેની શક્તિની હદ નથી. અરે ઇન્દ્રિયોથી તો પ્રાણુની ગતિ સૂક્ષ્મ છે. એક કાચના શીશામાં મરવા પડેલા માણસને નાંખીને અનુભવ કરતાં તેના પ્રાણુ ક્યાંથી ગયા તેના વિચાર અંગ્રેજોને મધ પડ્યો હતો. તો મનની તો વાતજ શી કરવી ? તો દેહથી સિદ્ધ થતા કર્મો-પ્રવચાગાદિમા તાકાત પણ થોડી જ છે. ઇન્દ્રિયોથી પ્રાપ્ત થતા જ્ઞાનમાં મણુ શક્તિ વધારે ક્યાંથી હોય ? અને મન જેવા પ્રજ્ઞ પદાર્થોથી મેળવાતી ભક્તિની શક્તિ કાણુ વર્ણવી શકે ? (તાળાઓ).

ભક્તિની ઉત્તમતા—દેહથી ચતાં સાધનો કર્મજોર હોય છે, તેમાં શક્તિ અમુક જ પ્રમાણમાં હોય છે. ઇન્દ્રિયોથી ચતું જ્ઞાન પણ વિશેષ બળ નજ ધરાવી શકે. અને ભક્તિ અને પ્રેમ, અને તે દેહ કે ઇન્દ્રિયોથી સિદ્ધ થતો નથી. પ્રેમ તો તો માત્ર મનનો જ ધર્મ છે, મન વિશાળ અને સૂક્ષ્મ છે. શ્રવણકર્મનાદિ નવધાભક્તિ તો બીજી ઇન્દ્રિયોથી થઈ શકે છે, પ્રેમભક્તિ તો મનના જ હાથમાં છે. પ્રભુનું સ્વરૂપ અતિસૂક્ષ્મમા સૂક્ષ્મ છે. તો તે પ્રભુને પ્રાપ્ત કરવા માટે મન જેવું અતિસૂક્ષ્મ સાધન જોઈએ. પ્રેમ પણ સૂક્ષ્મ છે તેથી પ્રભુને મેળવી શકે છે. એ પ્રેમયક્ષણ ભક્તિ પણ એ પ્રકારની છે, એક તો જીવંતિથી સિદ્ધ થાય છે અને બીજી ભક્તિ પ્રભુના અનુગ્રહથી મેળવી શકાય છે. જીવંતિવાળી ભક્તિ રમથીયા ગાડા જેવી ધીમી છે અને અનુગ્રહસાધ્ય ભક્તિ તો વિમાનની પેઠે એકદમ ઉચ્ચે લઇ જાય છે. અહીં આ વિષય પૂર્ણ થાય છે.

પ્રેમભક્તિની પરાકાષ્ઠા ! જેમ આપણે પ્રભુને મળવા ઇચ્છીએ હોય તેમ પ્રશ્નર ભક્ત-જીવને મળવા તલસે એ પ્રશ્નરૂપિસાધ્ય અનુમદાત્મક ભક્તિ કહેવાય. વધુ તો શું પણ પ્રભુ ભક્તને સેવવા તૈયાર થાય. આતું જ નામ ભક્તિની પરાકાષ્ઠા છે. આ વખતે પ્રશ્નરના ધર્મો જીવમાં આવે છે. શ્રીનંદશોદાજી શું કરતા હતા ? મર્તો ઘનુ ત્રિવમાળો વિમર્દિ એમ ભગવતી શ્રુતિ કહે છે, તેનું રહસ્ય એ છે કે જનનું ભરણપોષણ કરનાર પ્રભુ છે છતાં ભક્તોવડે તેમનું ભરણપોષણ થાય છે, શ્રીનંદશોદા એ પ્રભુનું પાલન-પોષણ કરે છે, આ બાલભાવનાની સેવાનું રહસ્ય છે. શ્રીયશોદાજી પ્રભુને ધમકાવે છે અને પ્રભુ ભયનીન બને છે. વાતસંસ્પર્શેદમાં પ્રશ્નરના ધર્મ-શિક્ષા કરવારૂપ ધર્મ-શ્રીયશોદાજીમાં આવ્યા અને કરવારૂપ ધર્મ જીવ ધર્મ પ્રભુમાં ગયો. આમ અદ્વાયદેહી થઈ ગઈ. (હર્ષભેર તાળાઓ.) ગોવાળીઆઓ પોતાનું ઉચ્છિષ્ટ પ્રભુને ખવરાવે છે અને પ્રભુ તે આરામે છે. શ્રીગોપીજીન કહે છે કે મજા મજાવ અમારી સેવા કરેડ પ્રભુ ભક્તપરાધીન થઈને તેમ કરે છે.

ઉપરનાં વિવેચન પછી ધામુભોધિનીજનાં રહસ્યનું વર્ણન કરતાં શ્રોતાઓમાં ભક્તિરસ ઉલકાષ્ઠ ગયો હતો, અને વ્યાખ્યાનની કાંઈ અનેરી અસર જુમી હતી. તે પછી શ્રીમાને વ્યાખ્યાન પૂર્ણ કર્યું હતું.

ત્યારબાદ બુદ્ધ-મંદિરાધીશ્વર પૂજ્યપાદ આચાર્યવર્ષ ગોસ્વામી શ્રીગોકુલનાથજી મહારાજશ્રીએ કરતલપત્રનિ વચ્ચે એક હડાદાર વ્યાખ્યાન કર્યું—

“આજના વ્યાખ્યાનથી મને પ્રજ્ઞા આનંદ થાય છે. આપશ્રી જે સ્થાનપર બિરાજે છે તે સ્થાન સમ્રાટશાસન શિરોમણિરૂપ છે. વળી એ સ્થાનનું જૈરવ આપશ્રી આવા ઉપદેશોદારા, ધર્મ-રક્ષણાર્થ બદ્ધપરિકર યજ્ઞને જાળવી રહ્યા છે. (તાળીઓ) તેથી વિશેષ આનંદ થાય છે.” ત્યારબાદ આધુનિક આક્ષેપકતાઓને સંજ્ઞા જવાબ આપીને આપશ્રીએ વ્યાખ્યાન પૂર્ણ કર્યું હતું. છેવટે શેઠ દેવીદાસ માધવજી ઠાકરશી જે. પી. એ ઉપકાર માનીને સભા બરખાસ કરી હતી.

વીલે પારલેમાં સભા—તા. ૧૬ મીને ચુરવારે રાત્રે વીલે પારલેમાં સભા રાખી હતી. ત્યાં એક સંસ્કૃત પાઠશાળા સ્થાપીને બ્રાહ્મણગણકોને વિદ્યાદાનની સત્ક કરવા માટે ખૂબ ચલ કરી રહેલા વિદ્વાન્ બ્રાહ્મણ મોહનલાલ દવેએ આ યોજના કરી હતી. અહીં પણ રાત્રે ૮-વાગે સભા યજ્ઞ, અને મ. મ. પંડિત શ્રીચિરિધર શર્મા આદિનાં વ્યાખ્યાનો પછી શ્રીમાને પણ ચોક્કસ પ્રાસંગિક પ્રવચન કર્યું.

માધવમાગની બીજી મંળવર સભા.

ઐત વદ અમાવાસ્યાના રોજ માધવગામમાં બીજી મંળવર સભા મળી હતી. આજે મુખ્ય-હના બધા ધનાઢ્ય શ્રીમતેએ હાજરી આપી હતી. ચર્યાચારમાં શેઠ દેવીદાસ માધવજી ઠાકરશીએ ઉપક્રમ કરતા શ્રીમાને વિનંતિ કરી હતી કે, અમારા વૈષ્ણવોમાં એક ગ્રમ છે કે, આપણને કંઈ વર્ણોત્તમધર્મ સાથે સેવા દેવા નથી. તો તે વિને સ્પષ્ટાકરણ આજ બીજીએ જ આપશ્રી કરો તેની વિનંતિ છે. આ વિનંતિ સુજળ શ્રીમાને એજ વિષય ઉપર વ્યાખ્યાન કર્યું.

ઉપરિચિત સમ્પદાંદ, આજનો આ વિષય વર્ણોત્તમધર્મ સાથે પુષ્ટિમાર્ગનો શો સંબંધ છે તે છે. પુષ્ટિ એટલે અનુગ્રહ તેનું વિવેચન ખૂબ કરી ચુક્યો છું. અનુગ્રહમાર્ગમાં વર્ણોત્તમની શી જરૂર છે ? જગત્કૃતિસાધ્ય છે, તેમાં કાંઈ જરૂર નથી. જગત્કૃતિસાધ્યમાં વર્ણોત્તમની જરૂર છે પ્રમાણમાં તો જરૂર છે. એક મહેલ છે, તેમાં અવધિરહિત આનંદ છે. તેની પ્રાપ્તિ થવા માટે અનુગ્રહજ મુખ્ય પણ મહેત્તમાં જવા માટે દાર-સીડીઓ હોય છે. લીફટથી જતદી જવાય છે, વેદાંતમાં ભગવાનને પશ્ચિરૂપ કલા છે, જે એરોપ્લેનની પેઠે સીધું જવાય છે. તેમાં આત માટે પ્રાથમિક ઉદ્દેશની જરૂર છે. અનુગ્રહમાર્ગમાં પ્રાપ્ત્ય રસરૂપ પ્રભુજ છે, રસ પાત્ર વિના ફરી શકનો નથી, અહીં સાધારણ પાત્ર નથી, તેના પાત્ર તો મુતિજ છે. અર્થાત્ પ્રમેયજ છે. પ્રમેય ઉત્તમ પણ તેની સાથે પ્રમાણની જરૂર છેજ, તે કેમ ? વાસ્તવિક છે. જ્ઞાંસુધી પ્રમેય સિદ્ધ નથી; પ્રમાણથી અગ્રાજ જાણ છે, તો અનુગ્રહથીજ ગાલ છે. ચાલો કિસ્સો છે, એક છોકરો ઇચ્છે કે વિદ્વાન્ બની જાઉં, પણ તેમ થતું નથી, વિદ્યાભ્યાસથી જ થવાય છે. સર્વધર્મોનું, ધર્મમાત્રનો ત્યાગ નથી થઈ શકતો. દેહ છે ત્યાં સુધી એક પ્રકારના ધર્મો છે, પણ તે મર્યાદા છે. જો તેનો ઉપયોગ થાય છે, તેથી અવનતિજ થાય છે. ચક્રિત મર્યાદિત કરવામાજ ઋષિમહર્ષિઓએ આદિક રમ્યું છે. એનું સૂક્ષ્મ દષ્ટિએ નિરીક્ષણ કરો ત્યારેજ તત્ત્વ સમગ્રરો. ધાર્મિક જનતાએ બીજી નકલ કરવાની નથી. વર્ણોત્તમધર્મ એ કિશાનું કામ કરે છે, તેથી વર્ણોત્તમધર્મથી ભણ થતું એ લક્ષ્યપુત થવા જેવું છે. ચરણગતિ પણ ચાલોજ કહે છે, તેથી ધર્મચાત્રનો ત્યાગ ન જ કરવો. જો કે ઉત્તમ કક્ષામાં-પુષ્ટિમાર્ગમાં તેની બહુ જરૂર નથી, એ તો હું કહું છું. પણ તેમાં પડોચયું અનુગ્રહ સાધ્યજ છે. ત્યાં પહેાચ્યા વિના વર્ણોત્તમમર્યાદા પામેજ છુટકો છે. તેમાંએ આક્રમણકાલમાં કીશાનું રક્ષણ કરવું રહ્યું. તેના માધીક શ્રીકૃષ્ણ વર્ણોત્તમ કિશાનું રક્ષણ કરો એવી પ્રાર્થના છે, તે પછી



यशमदन

Photo R V Shroff



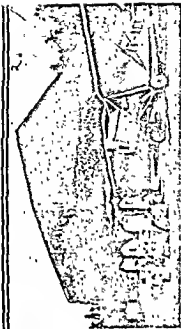
म. म. अनन्तकृष्ण शास्त्री.



पंडितधर्म श्रीदेवनायकाचार्यजी



दानवीर शैठ लच्छीरामजी.



પાદગાર વિમાનયાત્રા,

નવ વડે ૧૪ વા ત્રામાન્ દરરોજ સાંજના શ્રીગોપીગીત ઉપરના શ્રીસુભોધિનીજી ઉપર એકાદ કલાક વચનામૃત કરતા હતા. મોટા મંદિરનો અગીયો તે વખતે શ્રાતાઓથી ઉમરાણ જતો હતો. ધણીએ અભ્યાસીઓ તો હાથમાં ગ્રંથ લઈને જનજી અભ્યાસ જ કરતા ન હોયને શું ! તેમ જવણ કરતા હતા. શ્રીમાને મુખામમાં પહેલાં ધણી વાર શ્રીસુભોધિનીજી શ્રીવાક-પતિવાકસુધાનું પાન કરાવ્યું છે તેમ શ્રીનાથદ્વારા આદિમાં પણ ધણી વાર પ્રવચન કર્યું છે. પણ આ વખતે તો કોઈ એર જ રસવર્ષી કરી હતી આવો મોટો જનસમૂહ સાત રીતે ઐકીયતે શ્રીમાનના મુખારવિન્દગાથી પ્રકટ થતાં શ્રીઅનંતારપારવિન્દના મકરરંદરસનું પાન કરતો હતો. આપશ્રીએ તો આ વખતે અદ્ભુત કૃપા કરી હતી. મુખમાં મુખ રહસ્ય પ્રકટ રીતે વર્ણન કરના હતા. એવી રીતે પ્રતિદિન કથારસોદધિ ઉમડતો હતો. તેટલામાં વેશાખ સુદ ૧ પ્રતિપદના રોજ આગ્રા કરી કે, વેશાખ સુદ બીજાના રોજ કથા નહિ યાય; પણ અસાધ્ય તૃતીયાના રોજ થશે. વૈજ્યેશ્વરી તો આ નિર્ન સદેન કરવા તૈયાર ન હતા, પણ જ્યારે એક મુરો ત્યારે આશ્ચર્યમાં ગરકાવે બની ગયા.

અક્ષયનૃતીયાનો ઉત્સવ આવી પહોંચ્યો. હતો શ્રીમાનની પ્રજ્ઞા ઇચ્છા ધર્મ કે રસેશ શ્રીજીએ પ્રેરણા કરી કે શું થયું કે આપશ્રી વેશાખ સુદ બીજાના રોજ બપોરે ૧૧ વાગે મુખામથી ૧૨ માહાજ દૂર આવેલા જુહુ પધાયાં. જુહુ પાસે જ વિમાન [એરોપ્લેન] નું રેશન છે. શ્રીમાન આજે વિમાનમાં શ્રીનાથદ્વારા પધારવાના હતા ! ભગવદીય ધર્મપરાયણ શેઠ વસંતદાસ અવરુજી ગિવજી જે. પી તથા શેઠ દેવજીભાઈ પણ શ્રીમાનને વિદા કરવા આવ્યા હતા. આ એક વિસફલ સાહસ હતું. આ સાહસ માટે વાતસંવદ્દિવાળા ઠઠી રજા નજ આપે. મુખામમાં જુદ વર્ગે તો આ સાહસ ન કરવા પ્રાર્થના પણ કરી હતી. કેમકે વિદાયતમાં થયેલો ૧૦૧ નંબરના જર્મી વિમાનનો અકસ્માત ડાહ બૂધી ગયું નહતું. નવયુવક વર્ગે તો શ્રીમાનના આ સાહસથી રાજરાજ થતો હતો. બેરોબર ૧૧-૨૦ મિનિટે પ્રાઇવેટ સેક્રેટરી ગેઠ રજીડાડાસ પેટલાદી તથા 'શ્રીમાન' વિમાનમાં બિરાજ્યા અને વિમાન ચાલુ કરવામાં આવ્યું. આ વખતના ફોટાઓ શેઠ વસંતદાસ ના સંતુષ્ટ શેઠ ક.કુલાશ્રમે લીધેલા છે. તે પરથી આ પુસ્તકમાં છાપ્યા છે. પહેલા નંબરના ફોટામાં શ્રીમાન વિમાન તરફ જવા પધારે છે. સાહેબ જેવી હેટ (ટોપી) વાલા શેઠ રજીડાડાસમાં છે. નં. બીજાના ફોટામાં શ્રીમાન વિમાન પાસે પધાયાં તેનું દરખ છે. નં. ત્રણમાં વિમાનની અંદર બિરાજવાનો પોષાક ધરી રજા છે. નં ૪ માં વિમાનની અંદર બિરાજતી વખતનો દેખાવ છે. નં ૫ માં વિમાન ઉડતી વખતનો દેખાવ છે. નં. ૬ વિમાન આકાશના અનંત અવકાશમાં દૃષ્ટિપથથી સુદૂર ચલાવ્યું તેનું ચિત્ર છે. તે પછી બેરોબર જે કલાકે શ્રીમાન અમદાવાદ પધાયાં. વિમાન બેરોબર દરિયા કિનારે આશ્વું જતું હતું. અંભાત સુધી તો સમુદ્રતટેજ આશ્વું પછીથી સીધું અમદાવાદ આવ્યું. અમદાવાદના એરા ૧૮ ઉપર વિમાન ઉતર્યું ત્યાંથી મુદરથેને ટેલીફોન કરીને બોલાવ્યા. પરમ ભગવદીય શેઠ બાલાભાઈ તથા બીજા મુદરથે આવી પહોંચ્યા. દોઢ કલાક લગભગ નીકળી ગયો. તે પછી પાંદું એરોપ્લેન ઉડ્યું તે ૧૧ કલાકે શ્રીનાથદ્વારા તરફ જઈ પહોંચ્યું. વિમાન અગાધવાર (પાઇલેટ) એક કાગેલજ લઈકરી

માટે બહુજ સાવધાન રહેવાનું હતું. શ્રીનાથદ્વારા તાર ગયો હતો, શ્રીમાન્ તિલકાધિતશ્રી તો મોટરમાં બિરાજીને લાલ બાગમાં પધાર્યો હતા. વિમાન જેવાને દૂરદૂરથી અસંખ્ય જનસમૂહ એકઠો થયો હતો. લાલબાગનું મેદાન નાનું પણ એટલે જુદાવન 'બાગમાં' વિમાન ઉતારવામાં આવ્યું. શ્રીમાને શ્રીપિતૃચરણરવિન્દમાં હંડવત પ્રણામ કર્યો. શ્રીમાન્ શયનાર્તિમાં સેવામાં પધાર્યો. મેવાડના પ્રતિદ્વાસમાં આ વીસમી સદીની નવીનતા સુવર્ણીકારે આલેખાઈ ગઈ. અશ્વત્થતૃતીયાનો મહોત્સવ કરી, શ્રીને ચંદનાદિ સમર્પિતિ ભોજન પછી લગભગ ૭ જે વાગે શ્રીમાન્ પાછા વિમાનમાં પધાર્યો. આ જગીત વિમાનને ઉડવા ચોગ્ય ન હતી તેથી શેઠ રણુછોડદાસ ભાષ્ટને શ્રીનાથદ્વારાજ ઊંચવા પડ્યા. મુખાઈ પાછા ફરતી વખતે તો સવા કલાકે વિમાન અમદાવાદ આવી પહોંચ્યું. અમદાવાદમાં તો આજે સેંકડો વૈષ્ણવો કે'પ ઉપર ઉભા થઈ ગયા હતા. દર્શનચરણસ્પર્શમાં લગભગ કલાક નિકળી ગયા. અમદાવાદથી શેઠ જયંતિલાલ આચૃતલાલ દામોદરદાસને શ્રીમાને સાથે લીધા. બસઅર બે કલાકે વિમાન મુંબઈ (ભુલુ) આવી પહોંચ્યું અને સાંજે તો મોટા મંદિરના બગીચામાં શ્રીમાને શ્રીસુખેાધીની કથારસનું પાન કરાવ્યું.

ગોરાઈ વગોણા—શ્રીમાન્ના આ ઐતિહાસિક સાદસને નવીન જનસમૂહે વધારી લીધું. વૃદ્ધચર્ચ આશ્ચર્યચકિત થઈને શ્રીમાન્નના સામર્થ્યનો અનુભવ કરવા લાગ્યો. પણ પેલા નિંદા-ખોરાને તમે ખોરાક મળી ગયો. જે જગાના પ્રમાણે ન ચાલે તો કહેશે કે, આ વિમાનોના જમાનામાં (વીસમી સદીમાં) ધર્મચરુઓ ૧૬ મી સદી જેવા જ રહ્યા! જે હવે આવાં સાદસ કરે તો કહેશે કે પૈસાનો ધુમાડો કર્યો. ખરી રીતે જોતાં વિમાનયાત્રામાં શ્રીમાન્ને આરસો રૂપીઆથી વધુ ખર્ચ થયું નથી. તે શ્રીજીની સેવા પાસે તુચ્છમાં તુચ્છ મણાય. બીજી ગપ મારી કે, મહારાજશ્રીએ અઠાર હજાર રૂપીઆ અર્ચ્યાને વિમાન ખરીદ્યું. આ બધી ગણતો જવાબજ નહોતી. એ નિંદાખોર ક્રીમાએ નિંદા-વિષ્ણમાં જ મળતું પડે છે એટલે બિચારને બીજું શું મળે ? અરૂં જોતાં આપશ્રીએ વિમાન ખરીદેલું જ નહોતું. વળી ગપ ઉઠી કે ઉદેપુર રાજ્યે શ્રીમાન્ સામે પગલાં લીધાં, આ બધી ઉડાઉ ગપજ છ, એ અહીં

ધાર્મિક જનતા અને ગોળમેળ.

શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વર વાઘસિરાયની મુલાકાતે.

ધર્મ અને રાજસત્તા—ધર્મ એ ભારતમાંનું જીવન-સર્વસ્વ છે. જગત્ની સંસ્કૃતિઓમાં આર્ય સંસ્કૃતિનું જે ભવ્ય રથાન છે તેનું કારણ ધર્મજ છે. હિન્દમાં ધર્મી સાર્વભૌમ રાજસત્તાઓ રથપાછ અને કાલના અનંત યમમાં સપાઈ ગઈ. પણ એ રાજસત્તાઓએ હિન્દના પ્રાણરૂપ ધર્મનું અખંડ ગૌરવ જાળવવામાજ પોતાનું ચિરસ્થાયિત્વ અને કલ્યાણ માન્યુ હતું. આર્ય સંસ્કૃતિના કોઈપણ અંગને અંશુ પાડવા માટે કોઈ પણ રાજસત્તાએ રાસત્તાનો દુરુપયોગ કર્યો નથી. ભારતીય સમાજોએ નો જગ-મૂર્ધન્ય આર્ય સંસ્કૃતિના મદામંદિરને આંગણે પોતાના રાજમુકુટ હંમેશાં નમતા જ રાખ્યા છે. વિદેશી અને વિધર્મી રાજસત્તાઓએ પણ એનું જ અનુકરણ કરવામાં પોતાની સહીસલામતી સમજ લીધી છે. છતાં જે રાજસત્તાઓએ સત્તાપદથી અંધ બનીને હિન્દના મહાન્ પવિત્ર અને ઓજસ્વી આત્મા સાને ઘોડી પણ અટક્યાળા કરી છે તે રાજસત્તાઓએ પોતાનાં જ અસ્તિત્વ પર, પોતાની જાહોજશ્શાવી અને સુખધર્મી ઉપર કુકારાધાત જ કર્યો છે. એ પ્રજાસિત સત્ત્વ દત્તિદાસની સુવર્ણભૂમિકાપર અત્યારે પણ પ્રકાશી રહેલું છે. આર્યસંસ્કૃતિની લોકોત્તર ભવ્ય ભૂમિકા લેશ પણ ઝાંખી પડી નથી અને પાસે નહિ જ.

રાજકારણમાં ધર્મ—રાજસત્તા, ધર્મ અને સમાજ એ ત્રણેય વસ્તુ એવી સંગઠિત થયેલી છે, તેને અલગ કરતાં રાષ્ટ્ર જેવી કોઈ વસ્તુ જ રહેવી અમંભવિત થઈ પડે. બીજા દેશો ભલે તે ત્રણેનાં પૃથક્કરણ કરીને પોતાના રાજકીય જીવનનો નિર્વાહ કરવાનું જણાવે, પણ આ ધર્મભૂમિમાં તેપ થયું જ મુશ્કેલ છે. આર્ય સંસ્કૃતિની અનંતકાલીન ભવ્યતા અને સર્વોચ્ચતાનું કારણ ઉકત ત્રણ વસ્તુઓનાં સંગઠનમા સમાયલું છે. ધર્મ અને સમાજની ઉચ્ચતા જાળવવાની જોખમદારી રાજસત્તાપર રહેલી છે અને એમ કરીને જ કોઈપણ રાજસત્તા પોતાનાં અસ્તિત્વને પણ સુરક્ષિત રાખી શકે છે. એ ત્રણે વસ્તુઓના સંગઠનમાં લેશ પણ વૈમનસ્ય પેના યાય તો ભારતીય જીવનમાંથી રસકસ કાઢમનો આત્મો નાશ અને સ્થલે સ્થલે દુઃખના દાવાનળોજ સળગી રહે. આનો અનુભવ અત્યારે આપણે સારી પેઠે કરી રહેલા છીએ. રાજસત્તાના કવિષત ખ્યાલમાં સમાજ અને ધર્મની સંસ્કૃતિ સાથે અટક્યાળા કરીને આપણે ઉન્નતિના સ્વપ્ના પણ જોઈ શકવાના નથી. ભૂતકાલ તેમજ સાક્ષી છે અને વર્તમાન તો ચેતાવી રહ્યો છે. ભવિષ્ય તો પ્રભુ જ જાણે છે. આપણે તો ભવિષ્યમા ભયચિહ્નો જ જોવાં રતા!

રાજસત્તાનું પુનર્વિધાન—દાંલમા હિન્દથી ૭-૦૦ સાત લગર માઇલ દૂર રાજકીય પુનર્વિધાન થઈ રહ્યું છે. દેશમાં ક્રાંતિયુગના રણદુર્દશિ વાગી રહ્યા છે. જડવાદનું વાતાવરણ જોશમેર ધસમસી રહ્યું છે. વિદેશી શિક્ષાના ચોમેર પ્રસરતા અજાકટમાં અંબલથી આંખો પોતાના વ્યક્તિત્વને, દેશની સંસ્કૃતિની સર્વોચ્ચતાને નિહાળવા અસમર્થ બનવા લાગી છે. દેશ, ધર્મ અને સમાજના રક્ષણને બદલે જાણે અજાણે ભક્ષણ થતું હોય તેમજ ભણકારા યાય છે. હિન્દમાં પ્રાણરૂપ ધર્મની તો ડગલે પગલે અવહેવના જ થતી જાય છે. ધર્મ અને ઇશ્વર; એ જન્મે જીવનની વિચિત્રતાનું રક્ષણ કરનારા અજેડ દુર્ગ છે, તેને ઉન્નતિની આડે આવનારા પ્રતિબંધક

લોક વિલિંગ્ડન ત્યારે મુનાઈના ગવર્નર હતા ત્યારે પણ મહાપ્રલેશ્વરમા આચાર્યશ્રી મર્યા હતા ફરીથી આ મુલાકાત પણ સંતોષજનક રીતે થઈ હતી. આચાર્યશ્રી સાથે સીમલામાં મોટા સ્ટાફ હતા. પ્રાઇવેટ સેક્રેટરી તરીકે શેઠ રણછોડદાસ હરજીવનદાસ પેટલાદીએ ધર્મીય કુશલતા સાથે કાર્ય બજાવ્યું હતું. તે ઉપરાંત એ. ડી. સી. લાલા હરસવશપરાય તથા શ્રીનાથદારાના કમાન્ડર ઇન્ ચીફ તથા વસંતરામ શાસ્ત્રી વગેરે હતા.

સીમલાથી આચાર્યશ્રી તા. ૧૦ મીએ દીલ્હી પધાર્યા હતા અને જે લાખ પ્રેક્ષકો ભેગા ભાગ લે છે, તેવી રામચીલામાં તેના નેનાઓની વિનિતથી સભાપતિ ગોસ્વામી શ્રીદામોદરલાલજીએ એક સચોટ વ્યાખ્યાન આપ્યું હતું આ પ્રમાણે ધર્મને માટે તનમન અને ધનનો ભોગ આપીને જે શ્રમ આચાર્યશ્રીઓએ લીધો છે તેને માટે સનાતની પ્રજા તેમની ઋણી બની છે. આથી પણ વિશેષ ઉત્સાહથી તેઓશ્રી ધર્મરક્ષણાર્થે બદ્ધપરિશ્ર અને એજ આભિલાષ છે.



નાંધી લો !

ઉત્સાહી બનો !

સાહિત્યવિલાસી વૈભવ વાંચકો માટે

ખાસ નવી સંગવડ

વારંવાર ઉઠતી ફરિયાદો !

પુટિમાર્ગમાં જ્યાં ગણચાંગાંઠયા જ પુસ્તકો મળતાં હતાં, ત્યાં હાલમાં એટલા બધા અંધો પ્રકટ થઈ ગયા છે કે એક જીવંતીમાં તો તેનો અભ્યાસ કરવાનું ન જ બની શકે. પણ આ છુટું છવાયું પ્રકટ થયેલું સાહિત્ય એકજ સ્થળે મળી શકે અને સાહિત્યવિલાસીઓ તથા પુસ્તકાલય સ્થાપનારાઓને પણ સરળતા થાય તેને માટે અમે આ વ્યવસ્થા કરી છે.

પુટિમાર્ગીય સંસ્કૃત, ગ્રંથ, હીંદી, ગુજરાતી અને અંગ્રેજી બધા અંધો આ જ સંસ્થા વ્યાજબી નોંધાવર લઈને મોકલી આપે છે. નહિ મળતાં પુસ્તકો પણ મેળવીને મોકલાય છે. એકવાર ખાતરી કરી લો. ખ્યાલ રાખો કે આ સંસ્થા વ્યાપાર કરવા માટે નથી ઠાક કરતી. સ્વૈચ્છિક મંજાવી લો.

ડૉ. શ્રીપુટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય,

સુ. નડિયાદ, (જી. એસ),

એક કરોડ વૈષ્ણવોનું

આ એક જ

શું?

હિન્દી તથા ગુજરાતી ભાષામાં પ્રકટ થતું

અપ્રતિમ સચિત્ર માસિક

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તણ્ડ

(વાર્ષિક લવાજમ માત્ર બે રૂપીઆ)

ઉત્તમોત્તમ સામ્રદાયિક સરકૃત્ર થયો તથા તેના અનુવાદો, પ્રાચીન
અપ્રસિદ્ધ કીર્તનો, ભાવનાઓ, પ્રાચીન સાંપ્રદાયિક ભાષા થયો
ઉપરાત સુદર ત્રિરંગી ચિત્રો.

આવું માસિક સંપ્રદાયમાં એક જ છે.

જલદી ગ્રાહક થાઓ.

તંત્રી—વસંતરામ હરિકૃષ્ણ શાસ્ત્રી,

ધર નંબર ૧૭૪૮, રાજમહેતાની પોળ,

અમદાવાદ નં. ૧.

તમારા બાળકોને વારસામાં શું આપશો ?

ધર્મના ઉદયમાં શ્રીવૈષ્ણવયુગ્મમંડળ તરફથી છપાએલા નાના બાલકો પૃથુ સમજ્યા તેવાં સરળ ભાષામાં લખાએલાં નીચેના પુસ્તકો આપશો તોજ ઉન્નતિ છે.

પુસ્તકો.	પ્રથમ કીંમત.	ઘટાડેલી કીંમત.
શ્રીવૈષ્ણવઆલ્લપોથી	૦-૨-૦	૦-૧-૬
પ્રથમપાઠાવથી	૦-૪-૦	૦-૨-૦
રાજા આશકરજી	...	૦-૧-૩
શ્રીવૈષ્ણવચરિત્ર	...	૦-૨-૦
શ્રીનારાયણદાસ બ્રહ્મચારી	...	અમૂલ્ય
શ્રીપદ્મનાભદાસજી	...	૦-૧-૩

તા. ક.—ઘટાડેલી કીંમત ઉપરાંત પાઠશાળાઓ વગેરે માટે ૫૦ થી વધુ કોર્પોરેશનનારને કૃપીકાન આપવામાં આવશે. લખા:—

મણિલાલ ત્રિભુવનદાસ સરૈયા, મંત્રી: શ્રીવૈષ્ણવયુગ્મમંડળ-નડીઆદ

અઢીસો પાનાનું સર્વોત્તમ સ્તોત્ર.

કીંમત ઘટાડીને અઢી આના કર્યા, ટપાલ અર્થ દોઢ આનો છે.

મૂલપાઠ, જપપાઠ, વધાઈ, ધોળ, એક એક નામપર શ્રીગોવિન્દદાસજી એક એક ભાવપૂર્ણ પદ મળી ૧૧૬ પદો, શ્રીદ્રારિકેશજીના એક સો પચીસ પદો, આ પ્રાચીન સાહિત્ય ઉપરાંત શ્રીગોકુલનાથજી, શ્રીરઘુનાથજી તેમજ શ્રીઆચાર્યોપેશજી એ ત્રણે મહાનુભાવીઓની સંસ્કૃત ટીકાઓનું સવિસ્તર ગુજરાતી ભાષાંતર, પાંચ મુદર ચિત્રો. આનું સાહિત્ય ઠી ગઢાર પડ્યું નથી, ઉચ્ચ કાશળો. સો નકલના પંદર રૂપીઆ.

કીર્તનકુસુમાકર.

(કીર્તીનેનો મહાન સંગ્રહ.)

પ્રભુને જગાવવાથી પોદાડવા સુધીના નિત્યકીર્તનો, તેમજે વર્ષોગતુ શીતંગ્રહ, ઉજ્જ્વલ, ઉત્સવોની પ્રજ્વલિત સાથે મહાન સંગ્રહ. તે ઉપરાંત વસંત ધમાર તથા ખારમાસી ઉત્સવના પદો, દીનતા આશ્રયનો મહાન સંગ્રહ, ધોળ પદો, નિત્યપાઠો.

ખીજા પુસ્તકોની જરૂર નહિ પડે. અક્ષરો ગોઠા છે. ઉપરનો સંગ્રહ સંપ્રદાયમાં પડેલો છે. અપ્રાસદ પદોનો તો લંડાર છે. થોડાજ સમયમાં બહાર પડશે. નોંધાવર દવે પછી

વસંતરામ શાસ્ત્રી.

૧૭૪૮, રામમહેતાની ધોળ—અમદાવાદ.

विद्यया तारुण्येन श्रीमद्भगवत्पुत्रो विद्योदहारक सिद्धांतो

अस्माकं कर्तुं सवित्र भासिक

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તેડ.

પુસ્તક ૬૬] માર્ગશીર્ષ, સં. ૧૯૮૮. [અંક ૬.

દેવદીપોત્સવાંકનો સત્કાર.

ગયા વરોના ખામ અંગે સાચે ચિત્તોના ખામતમા અંગે પછી જોતા ગત દેવદીપોત્સવાંક રાખવાએ વધારી લીધો કે એ માત્ર મનેની સાર્થકતા માત્ર હું. ભક્તિભાવથી અધોવતી અણુમા અણુ વસ્તુને પ્રભુ નદાનગા મહાન માત્રી તે છે તે પછી ભગવતો કેમ ન મને કે તે એમની મહત્તા છે. ખાત્રી રીસાઓ પોતાના, કાપોલપની ગેરવ્યવસ્થા, અધોધુધી, નાણાંની ઉચાપન વગેરેમા અને એ ખાસ અંક લખવા- ૭પાવવાની મહુનનમા ગતદિરસના ઉભારા થયા છે-પણ એ અંગેનો સત્કાર થયો એ જ સેવોપલુ કારણ છે.

ટપાવ ખાત્રી ખર્ચોજ અનુ છે એટલે આરકોએ લગભગ અમદાવાદમા કોઈની મારફત વાતાવનુ. અથવા તો પોતે ભરી જનું. કાપોલપ ગમ્મ મહેતાની પોગમા છે, પણ ને એગી હોવાથી તોતજાણ માતાની ધારેનો અંગે પૂંડાગી મળે પછી નીચેના જાહેર ઠેકાણે લવાજમ ભરી ગકામે-

૧. ગુમરાની પંચ એશીમ, કે પાનપુવા, આરરસા, રીંગીરો ૨. વાસ્તુ ભામ જગનનાથ દેસાઈની દુકાને, કે ૧૦ રીંગીરો ૩. ગાંધી પ્રાણલાલ અમૃતરાલ, દીકરા મોહી પાસે, કે રીંગીરોની મોળ અહાર જગજા દાયની દુકાનાની દારમા

૧ ૧૯૮૮, ૨ જાન્યુઆરી પોષ } તરી અને પ્રકાશક
અમદાવાદ, } વર્ગતરામ હાઈસ્કૂલ શાસ્ત્રી.

પાર્થિક લવાજમ એ કપીઆ (ટપાવ અર્થ સાથે)

नाम नोधावो !!

शुद्धोधिनीज्जनो संपूर्ण अनुवाद

विवेचन साथे.

सिक्कर श्रीगुरुजी कावात्मक वीणाओतुं पान करुं होय, श्रीमहाराजवतनुं महत्त्व होय, दार्शनिक विषयोंतुं स्पष्टीकरयुं समग्रतुं होय तो आग्नेय नाम नोधावो. श्रीगुरुजीधनीज्जनो सरस कावा-तर अने विषय पदार्थोंतुं स्पष्टीकरयुं करतार आ अनुवाद छे अम पूज्यपाद गोस्वामी श्री ६ अनिरुद्धदासजी महाराज आगा करे पय विद्वान् अे उलयने समान रीते आ कावा-तर अने उपकारक छे.

आखंडेने नाम नोधावयाना स्थणोः—

१. श्रीपुष्टिभार्गीय पुस्तकालय-नडियाद. २. सरैया भस्मिलास त्रिभुवनदास
रदास चडवाडुवा-नडियाद. ३. जेपी दामोदर लक्ष्मीराम मोटी डबेडी-
गर. ४. शुद्धाद्वैत कार्यालय, रावलभंडेलानी पोण-अमदावाद.

श्रीगुरुणाय नमः ।

यो वै भूमा तदमृतम्, यदन्यत्तन्मर्त्यम् । (छान्दोग्यश्रुतिः)

विद्ययाऽमृतमश्नुते (ईशोपनिषद्श्रुतिः)

विज्ञापनम् ।

लुप्तप्राय प्राचीन संस्कृत साहित्य, एव राष्ट्रीयभाषा हिन्दी में श्रीशुद्धोधिनीजी एवं यजी-आदिके ग्रन्थों का अनुवाद.

श्रीपीयूषपत्रिका.

नामक मासिक पत्रिका विद्वत्केसरी पूज्यपाद गोस्वामी श्री ६ श्रीअनिरुद्धाचार्यजी एवं विद्वत्जन गोस्वामी श्री ६ श्रीमजरनलालजी महाराजके संरक्षकत्वमें प्रकट हो गई। एवं सर्वसाधारणको इससे अवर्णनीय लाभ हुआ और होगा। सर्वसाधारण के हितार्थ मूल्य केवल तीन रुपया है। आज ही ग्राहकधेणीमें नाम लिखवाईये ।

मिलनेका पता—हीरालाल शास्त्री, खडायता संस्कृत पाठशाला-नडियाद, हरिशङ्कर बडामदिर-नडियाद, शुद्धाद्वैत कार्यालय-अमदावाद

નબળાં શરીરને બળવાન, કાંતિમય બનાવવાના મનોરથ પૂર્ણ કરવા માટે
અમોઝે આપને પ્રથમથીજ સારખું છે કે:-



(સ્ફુર્તિદાયક કુધાવર્ધક બાલકારક)

શિશુઓની કંઠમા આપને બળવાન અને
વન્દસ્થ રહેવાની હચ્છા હોય તો આજેજ
આશુરી દ્રાક્ષથી બનાવેલા મધુર, રવાદદ, લદ્દે
બનાવેલ મુખ મચારક દ્રાક્ષાસવ મંગીરી તેનું
સેવન કરો. જેથી શરીરમાં રક્ત માસ વધે છે.
અદેશપર રોનક અને સુખી આવે છે. કબજ-
યા દૂર કરી દસ્ત સાફ લાગે છે. શરીરમાં નવું
ચેતન આવી કામમાં મન લાગે છે. એક વખત
સેવન કરી પરીક્ષા કરી જુઓ. કિં. નાની
ખાટલીને રા. ૧) મોટી ખાટલીના રા. ૨)
નમુના. મક્ત મોકલવામાં આવે છે, દરેક દવા વેચનારાઓ પાસે મળશે.

(અષ્ટવર્ગ ઔષધી મીશ્રીત.)

આ અવલેહ રોગી, નીરોગી, બાળક, જી-
સ્ત્રી, પુરુષ દરેકના માટે દરેક વખતે એકસાથે
ઉપયોગી છે.

આધુનિક વધારનાર અને નવું જીવન આપ-
નાર છે, આનાજ સેવનથી મહર્ષી અવન અરિએ
પુનઃ યુવાવસ્થા પ્રાપ્ત કરી હતી. વીર્ય વિકાર,
નબળાઈ, ખાંસી, રવાસ, અને ફેફસાની કમ-
બેસી માટે રામબાણ છે. આનાથી રમુતિ, કાંતિ
વધે છે. ઉદિઓમાં બળ આવી મસ્તિષ્ક દુષ્ટિ
વધારે છે. કિં. તોલા ૨૦ ને ૩૫. ૧૫).

મળવાનું ટેકાણું:-સુખ સંચારક કંપની, -મથુરા.

અણુધાર્યા વખતે સારા ડોક્ટરની જરૂરત પૂરી પાડનાર દરેક કંઠમાં
ઉપયોગી ૪૧ વર્ષોથી અચલિત સંસાર પ્રસિદ્ધ અનુપાન વગરની

મશાહુર દવા



કફ, ખાંસી, દમ, ગૂળ, સંઝહણી, આઠા, કોલેરા, પેટનો દુઃખાવો,
અતિસાર, મોળ આવવી, ઉલટી ચંચી, મુંઝારો. વગેરે જોવાજ રોગો
તાત્કાલીક નાબુદ કરનારી ખાસ દવા છે.

કિં. ખા. એકના ૮ આના.

ટેકાણું:-સુખસંચારક કંપની-મથુરા.

॥ श्रीगुरुण ॥

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये ।
सत्यस्य सत्यं ऋतसत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपद्ये ॥

“श्रीभक्तिमार्गीय—साहित्यमन्दिर”

(वैष्णवधर्मना सधणां, पुस्तकोऽने सुन्दर चित्रादि साहित्य भेगववानुं अशुक स्थान)

‘वैष्णवी जन्ताने नम्र सूर्यना’

अम्हारे त्यांथी वैष्णव धर्मना संस्कृत, हिन्दी—मराठी, गुजराती अने
ईंग्लीश विगेरे दरेक भाषाभां छपायेवां (मुद्रित यथेवां पुस्तको तथा श्रीनाथश्र आदि
साते स्वरूप अने श्रीनी विविध प्रकारनी दिव्य क्रीडाओंतुं दिग्दर्शन करावतां सुन्दर अने
भनोदंजक विविधरंगी चित्रे तथा श्रीयसोभूषण, श्रीगोकुलेश तथा निराजमान पू. पा.
जो. आलकोना रंगभेरेगी सुन्दर क्रीडाओं अने चित्रे तथा नवां वर्षना रंगभेरेगी
इन्सी कोडी, अलिनन्दनपत्रा, केलेन्दो, क्लोडीभेडे तथा चेक्रेडायरी, गीताडायरी, विगेरे
योअ न्योअवरथी भणशे.

तदुपरांत चित्रे छपीओनी सोनेरी, नकशीदार के सादी इमे भडावी आपवानुं
अने पुस्तको, भासिके विगेरेने आगगनुं, कापडनुं, रेशमी के सोनेरी भाईगी (छद्द)
योअ किंभते कडावी आपवाभां आवशे विशेष भाटे लभो अथवा इअइ भलो.

“श्रीभक्तिमार्गीय—पुस्तकालय.”

(वाचन—विभाग)

मुंअछ तथा आलुआलुना परांओना अने जदारगामना वैष्णवे पशु धार्मिक
साहित्य घेरणेवां वांचवा भेगवी सके तेने भाटे छपरोकेत क्री (भक्त) पुस्तकालयनी योग्य
व्यवस्था करवाभां आवी छे. पुस्तकालयने लाब लेनां छेदो अने नियमोने अनुसर
कोछ पशु धर्मछावासु लक्ष सके छे. विशेषमां ओइसे लब्धो या भणोः—

भणवानो समयः—	}	गिरिधरदास ज. शाहु, लुकेसेलर.
सवारना छ थी १२ (रटा. टा.)		व्यवस्थापकः—
सांजना ४ थी ८		‘सक्तिमार्गीय—साहित्य मन्दिर.’

हे. श्रीदासजावानुं मन्दिर, लुकेसेलर, मुंअछ नं. २.

ता. कः—पुस्तकादि साहित्यने ओइरे आपती वणते पोतातुं नाम तथा ओइरेस
विगेरे संपूज्य ज्ञावतुं. २. ओक इपीयानी अंदरनी किंमतना पुस्तको भंजानारे तेदवी
किंमत छपरांत मार्गव्यय सहित पोस्ट रटांप मोडलवा. ३. प्रत्युतर भाटे जवाबी कोडी या
पोस्टरटांप जीवडा. ४. छंछपल्य साहित्य सेर्गल तरीके भक्त मोडलवामां आवशे नहि.

निवेदक—गिरिधरदास जगज्जननदास शाहु.

भास सयना—आ भासिकेपत्रनुं लवान्ज पशु छपराता टेकावे लरी सकाशे.

હિસ્ટરિયા ઇ વાતરોગ દર્શન.

ખેલક ૩૦ હિસ્ટરિયા, મૂર્છા, ચક્રી, ફેફર, ગાંઠપણ અને બકવાદ રોગની અમોરકન છેલી શોધ મુજબ પાશ્ચાત્ય, યુનાની અને આયુર્વેદિક સિદ્ધાંતો, સમજુતી અને સાદા ઉપ-ચારોનું પુસ્તક વાચેથી ઘણી રહિત મળશે. કીંમત ૧-૪-૦ પૌ. જુહુ, દેશીનામું. નવા વ્યવહાર પ્રમાણે રચના બ. રાણા માટે નવું મજુર કી. ૦૨૦ પૌ ૦)૨.

હિસ્ટરિયા રોગનીજ રામબાણુ,

પેટન્ટ દવા વાયુમુક્તાજ છે. ઉપરના દરદોમા ૨૪ કલાકમા કાયદો મળે છે. સિલોન, આફ્રિકા, ધરાન અને રચુન સુધીના દરદોમા વાપરી સુખી થયા છે. મેડીકલ સરજનેા છુટથી મંગાવે છે. દવા મદિનાની, કીંમત રૂ. ૫) પૌ. જુહુ

છગનલાલ લલુભાઈ નામાવાળા પેલેસ રોડના નાકે—પડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંગ્રહણી (ગળણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિદ્વાન વૈદ ડોક્ટરોની દવા ખાત્ર કંઈએલા સંગ્રહણી (ગળણી), મુંખામના ઝાઝા, અતિસાર અને આતરડના ક્ષયથી ખીમત નિરાશાજનક દર્દને આશીર્વાદશ્ચ થઇ પડેલી ગ્રીસ વરસના અનુભવની રામબાણુ દવા માટે રચ્ય મળેા યા સવાલપત્ર મંગાવેા. પત્રવ્યવહાર તીચેના સંજ્ઞામે કરવેા —

માસ્તર કે. જે. પટેલ એન્ડ સન્સ, રમુ રપેસીઆલીરટ-માણુસાવાળા.

જુહુ મેળાપ—દર રવિવારે, અમદાવાદ—કાલુપુર દાડીચરાની પોળમા તંજુમરાની ખડકી પર નં. ૩૫૧.

અમારે ખાલાનદ બચ્ચાએને હુદ પુદ આનદી અને સુંદર બનાવે છે. કી. ૦-૨૨-૦ પૌ. જુહુ.

અદખાયુ કરનાર દુરાચારના દોષ દેખાડનાર દીધાયુ લાયનાર સદાચારના
શુભ રામજીવનાર

કામરસાસ્ત્ર

આ પુસ્તક વાચવાથી જતી જીવાનીને દંકાવવાનું સિદ્ધાયુ લાય લાગશે. શરીરની પાયમાલી થવાનું મૂળ નજર પર આવશે અને તે પાયમાલીથી દૂર રહી સુખી થવાનો રસ્તો મુકશે.

કિંમત કે પોસ્ટ કાર્ડ પણ નહિ, માત્ર તમારું પુર્ક સરનામું મોકલી મંગાવે

વૈદશાસ્ત્રી મણીશંકર ગોવિંદજી

આતંકનિગ્રહ ઔપધ્યાસય-જમનગર, કાઠીયાવાડ ૩.

નોંધી લો !

ઉત્સાહી બનો !

સાહિત્યવિભારી વૈષ્ણવ વાંચકો માટે

ખાસ નવી સુગવડ

વારંવાર ઉઠતી રૂચિયાદો !

પુષ્ટિમાર્ગમાં જ્યાં ગણ્યગાંઠયા જ પુસ્તકો મળતા હતાં, ત્યાં હાલમાં એટલા બધા થયો પ્રકટ થઈ ગયા છે કે એક જીવનમાં તે તેનો અભ્યાસ કરવાનું ન જ બાની શકે. પણ આ છુટું છવાયું પ્રકટ થયેલું સાહિત્ય એક જ સ્થળે મળી શકે અને સાહિત્યવિભારીઓ તથા પુસ્તકાલય સ્થાપનારાઓને પણ સંરક્ષતા થાય તેને માટે અમે આ વ્યવસ્થા કરી છે.

પુષ્ટિમાર્ગીય સંસ્કૃત, મજ, હિંદી, ગુજરાતી અને અંગ્રેજી બધા ત્રયો આ જ સંસ્થા વ્યાજબી નોંધાવર લઈને મોકલી આપે છે નહિ મળતા પુસ્તકો પણ મેળવીને મોકલાય છે. એવાર ખાતરી કરી લો. જ્યાં સુધી શક્ય છે આ સંસ્થા વ્યાપાર કરવા માટે નથી કાર્ય કરતી સૂચીપત્ર મળાવી લો.

કે. શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય,

સુ. નકિયાદ, (જી. ખેડા),

અનેક રોગની એક જ દવા !!

જીવન ધારા !!

ખાંસ, ઉંઘ, સુક, શરદી, સળ, અજીર્ણ દાઘ-પગ-માથું તથા બદનનો દુખાવો, દાંત-ઢાંતની પીડા, સંધીના તાવ, પાણીવીકાર, ઝરી ડંબ, પ્રમેદ, પ્રદર, અસક્તી, ખાસી, હમ, શ્વાસ, ગડગડ, ધા, લોહી નીકળવું, હરસ, મોઢાની તથા ખાજકવાની દુરગંધ, ચાચ-માકડની પીડા ઇત્યાદિ અનેક રોગોની ખાતરીખૂંક દવા.

કી. મોટી બા. રૂ. ૧૫ અડધી બા. રૂ. ૧ નાની બા. રૂ. ૦૫.

જેનસ મહીલા જીવન !!

સ્ત્રીઓના સર્વ રોગોને દૂર કરનાર અતુલકારીક દવા છે. રક્તસ્પંધાની તકલીફ, સુસારોગનો ખાસ, વેત યા રક્ત પ્રદર, કમ્બાનક, પેટ તથા પેટુ-કમરનો તથા આખા શરીરનો જીર્ણવર, બદન ફીકું, જેઝેની, દુખાવો, ઇત્યાદિ અનેક અડચણો દૂર કરી બદન તાકાદથી ભરપૂર અને ગર્ભ ધારણ કરવા લાયક બનાવે છે. કિંમત રૂ. ૨) બે.

દરેક દવાનું ટપાલ ખર્ચ લુદ. રજીસ્ટ્રેડ ડ્રાગ્સ "જેનસ" નં. ૩૦૨ તપાસીને ખરીદ કરજો દરેક ડેકાણે વેચાય છે. જે. એન. શેઠના પોસ્ટ નકિયાદ (ગુજરાત).

તન-મનની મહેનત કરનારાં !

તાકત તાઝગીથી લરપુર

‘ઝંડુ’ ડ્રાક્ષાસવ

મૃદિકારિષ્ટ-શારંગધર મ. અ. ૧૦

ઘરમાં હંમેશાં તૈયાર રાખો

તાકત તાકત-તાઝગી મેળવવા

શરદી મટાડનાર

ધાક ઉતારનાર

ઉંઘ લાવનાર

કસ્ટ સાફ લાવનાર

ભુખ લગાડનાર

તાકત આપનાર

તાઝગી બક્ષનાર

ક્ષય, ખાંસ, મૂળં અને સાધારણ

નબળાઈમાં તાકત આરામ આપનાર

લઝઝતદાર દવા

‘ઝંડુ’ ડ્રાક્ષાસવ

સવાર સાંજ નમ્યા પછી લ્યો

ઝંડુ ફાર્માસ્યુટીકલ વર્કસ લીમિટેડ-મુંબઈ નં. ૧૪

અમદાવાદના એન્ટ-ભોગીલાલ બ્રધર્સ; ૧૧૪, રીચીરોડ

સ્તન આધીના તેર આના; સ્તન એકનો રૂપિયા દોઢ; સ્તન દોઢના રૂપિયા બે

પ્રકટ થઈ ગયો !

અપૂર્વ ગુજરાતી સાંપ્રદાયિક ગ્રંથ !

ઉપદેશસીમાંસા.

ચોરખંદરવાળા નિત્યનીસારથ ચોરખામી શ્રી કીશ્વરજીનાચાર્યજી મહારાજે આ સરસમા સરવ મનનીય ગુજરાતી સાંપ્રદાયિક ગ્રંથની રચના કરી છે. દસદિગંતવિગ્નથી શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજશ્રીના “ઉપદેશવિષયકશંકાનિરાસવાદ” ગ્રંથનો સંપૂર્ણ ભાવાર્થ આ ગ્રંથમા છે તે ઉપરાંત

બ્રહ્મસંબંધમાં થતી તમામ શંકાઓ

આ ગ્રંથમા રજુ કરીને તેનું અપૂર્ણ સંતોષજનક સમાધાન કર્યું છે. આ પુસ્તક વાંચ્યા પછી બ્રહ્મસંબંધ દીક્ષા વિશે એક પણ શંકા રહેશે નહિ એવું ખાતરીથી કહી શકાય તેમ છે. જુદા જુદા સત્તાવન વિષયો આ ગ્રંથમા છે. આ ગ્રંથ ઘણા વર્ષથી મળતો નહતો તે સુપ્રસિદ્ધ સાંપ્રદાયિક વિદ્વાન રા. રા. દરિદ્રકૃષ્ણ વીરજીભાઈએ એક નાની પણ સચોટ પ્રસ્તાવના લખીને હમણાજ પ્રકટ કરાવ્યો છે, મૂલ્ય આઠે આના.

આ ઉપરાંત વૈષ્ણવ દિવે માટે (યજ્ઞોપવીત ધારણ કરનારા માટે) સવારથી સાંજ સુધીનો વૈદિક નિત્યનિયમ બતાવનારા બે પુસ્તકો વૈષ્ણવ દિવનદિક દર્શીમા તથા ગુજરાતીમાં તૈયાર છે.

દર્શી મૂલ્ય—આઠે આના.

ગુજરાતી મૂલ્ય—એક રૂપીઆ.

ટેકાણુ:—શ્રીલાલબાવાનું મંદિર.

બુલેશ્વર, સુખાઈ નં ૨ તથા તેજ મંદિરમાં.

સાંપ્રદાયિક ગ્રંથો વેચનારા રા. રા. ગિરધરલાલ જી. શાહ પાસેથી મળશે.

ગુણાનુવાદ કેમ ગાશે ?

શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, ખીન, દીલરૂખા, હાર્મોનીયમ વગેરે વાજીત્રોમાં સાંપ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાનું આવું સાધન સંપ્રદાયમાં એકેય નથી. મંગળાચી શયન પર્યંતના સુખ્ય કીર્તનો, વધાઈ અને ધમાર એ બધાંના ૮૦ રાગોના ખાસ નોટશેનો આજ ગ્રંથમાં છે. ચળાવજ શિખનાર માટે તાલના બોલ પણ છાપ્યા છે, ગુજરાતી ભાષામાં સર્વિસ્તર સમજાવું પાડી છે. નોટાવર બે રૂપીઆ, પોસ્ટેજ પાંચ આના

ડૉ. ભગવાનદાસ નારાયણદાસ ડાહ્યાવાળા.

સુ. ધેધુકા. (જી. અમદાવાદ.)

‘શુદ્ધાદૈત’ જૂના અંકો.

પહેલું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાધેલા, નો. રૂ. ૨-૮-૦ છે, અને બીજા પરચુરણ અંકોની કીમત અંક દોઢ માત્ર બે આના છે.

બીજું વર્ષ—પૂરા અંકો નથી. પરચુરણ અંકો સંવિક્રમા દરેક તેના અંક દોઢ બે આના છે.

ત્રીજું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાધેલા રૂ. ૩-૦-૦ એક જ દાખલ છે. પરચુરણ અંકોના અંક દોઢ બે આના છે.

ચોથું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા, માત્ર દોઢ રૂપીઆમાં. પરચુરણ અંકો અંક દોઢ માત્ર બે આના.

પાંચમું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા, બે રૂપીઆમાં. પરચુરણ અંકો અંક દોઢ બે આના.

છઠ્ઠું વર્ષ આવે છે. લખો કાર્યલયમાં..

નવું સાહિત્ય પ્રગટ થશે.

૧. રસાલય તથા મૂઢ રસ ગ્રન્થ—‘શુદ્ધાદૈત’માં પ્રકટ થઈ ગયેલા આ બન્ને મનનીય ગ્રંથો સાથે બહાર પડી ચુક્યા છે. નોંધાવર માત્ર ત્રણ આના, ટ. ખ. ના આનો.

૨. ભાવભાવના—(ભા. ૧લો) શ્રીહારિકેસરજીત આ ગ્રંથ એક અદ્વનિર્ણય વિચારણીય મહાગ્રંથ છે. થોડા જ સમયમાં પ્રકટ થશે. નોંધાવર પાંચીસ જણાવાશે.

૩. પંદરમો અધ્યાય—ધીમહામગવદ્ગીતાનો પંદરમો અધ્યાય કે જે ઉત્તમોત્તમ મૂઢ જ્ઞાનથી ભરેલો છે તે સુંદર વિવેચનો સાથે. દરેક રસોદ પર શંકરાચાર્યજી આદિ આચાર્યોના મતો બતાવેલા છે. થોડા જ સમયમાં પ્રકટ થશે. નો. માત્ર દોઢ આનો. ટ. ખ. ના આનો.

૪. આટલું તો કર્યું જ—નિતનિયમના આ ગ્રંથની ૩૦ હજાર પ્રત તો પ્રકટ થઈ ચુકી. માગણીથી સુધારા વધારા સાથે ફરી છપાય છે. નોંધાવર માત્ર ૧ આનો, ટ. ખ. ના આનો.

૫. ‘લક્ષ્મીપોષણ’—કવિશ્રી જ્યારામભાઈનો આ અપૂર્વ ગ્રંથ, સમજણ સાથે, કાં. ૧ આનો, ટ. ખ. ના આનો.

૬. ભક્તવાણુ—કકિરવાળા વિદ્વાન્ શ્રી. છગ્ગરામ ભટ્ટજીએ સમયસમય ઉપર કહેલા ઉત્તમોત્તમ મનનીય પ્રસંગો. પ્રકટ થશે. નો. ત્રણ આના, ટ. ખ. એક આનો.

૭. શ્રીગોકુલેશવરનામૃત—શ્રીગોકુલનાથજીના વચનાવૃત્તોનો મહાન સંગ્રહ, પ્રકટ થશે. નોંધાવર પાંચીસ.

૮. ચોરાશી પ્રગનના પ્રત્યુત્તરો—ઝપાય છે. વાચવાવાચક ગ્રંથ. નોંધાવર પાંચીસ

પંચાવન પાઠનો ગુટકો.

પહેલી આવૃત્તિ ખપી જવાથી બીજી આવૃત્તિ મોટા સુધારા વધારા સાથે છપાવી માગણી થણી દેવાથી આ સાદસ બેઠું છે. મૂલ ત્રણ આના, ટપાવ ખર્ચ એક આનો.

દે. ૧૯૪૮, ગબ્બમહેતા ગોળ—અમદાવાદ.

સંન્યાસીએ વેદશાસ્ત્રવિરુદ્ધ સિદ્ધાંત રાખીને જીતાવીને એનાં મનને જમ ઉપજાવ્યો તે વિષેનું કારણ હવે જાતાવીએ છીએ.

લક્ષ્મણનાથ સંન્યાસી, જેણે વેદશાસ્ત્રને જાણીને સુદીને પોતાની સુક્તિથી વૈષ્ણવ સંપ્રદાય ઉપર પ્રતિભામાં દુષણ દેખાડ્યું છે. તે આ પ્રમાણે કે પ્રાચીનશાસ્ત્ર મનુસ્મૃતિ છે, ગદ્યા વર્ણને વર્ણશ્રમધર્મમાં ચાલવાનું મનુએ કહ્યું છે. તેથી વર્ણ-શ્રમધર્મથીજ સર્વે વર્ણનો મોક્ષ છે. એ મનુસ્મૃતિમાં વૈષ્ણવી દીક્ષાનાં આચરણ કોઈ કંઠાણે કહેલાં નથી, તેથી એ દીક્ષા કલિયુગમાં લોકોએ મનઃકલ્પિત નવી ચલાવી છે. માટે શાસ્ત્રપ્રમાણ નથી. એ રીતે બીજા પ્રમાણમાં જતાં છું છે. એ રીતે બીજા પણ કેટલાંક દુષણ પ્રતિભામાં જતાં છે ત ઉપરથી એનું કેમાય છે કે એજ ઉપ-દેશ સંન્યાસીએ રાખીને જતાવીને રાખીને એનાં મનને વૈષ્ણવ સંપ્રદાયમાં જમ ઉપ-જાવ્યો છે. પણ એ રાખીને શાસ્ત્રનું શ્રવણ યજ્ઞ નહિ હોય તેથી રાખી શું જાણે કે મનુસ્મૃતિમાં વેદના ક્રીયા કાંડનું પ્રકરણ છે? અને વર્ણશ્રમધર્મ થકી સર્વે જાતનો મોક્ષ કહેલો છે કે નથી કહ્યો? ઇત્યાદિ 'સર્વ' વાતથી રાખી અજાણ હશે, તેથી સંન્યાસીની વાત ખરી માનીને સંન્યાસીએ લખી આપેલા પ્રશ્ન પ્રમાણે વૈષ્ણવ સંપ્રદાય ઉપર એ પ્રશ્ન કરવાની આજ્ઞા આપી. તેનો ઉત્તર શ્રીગોકુલચંદ્રમાણી ગાદીના રીકેટ શ્રીવલ્લભ મહારાજના લાલણ શ્રીમદ્ગોસ્વામી શ્રીગોવિંદરાયણ મહારાજે વેદશાસ્ત્રનાં વચનસહિત ટુંકમાં લખી આપ્યા છે, તથા રામાનુજ મતના સઘળા આચાર્યોએ પણ લખી આપ્યા છે. પણ રાખી શાસ્ત્રમાં જાણીતા નહિ તેથી સંન્યાસીએ તેના ઉત્તર વિષે રાખીને ન જાણે કે શું સમજાવ્યું હશે? તેથી રાખી-ણે તે ઉત્તરની વાત કાન ઉપર ન લીધી, અને સંન્યાસીના કદા પ્રમાણે તેઓને તથા ગદી પ્રજાને ચાલવાનો આગ્રહ ક્રીયા કે જેની મરણ એ પ્રમાણે ચાલવાની ન હોય તેણે ગમ મૂકી અન્યથ જરૂર. એ રીતે રાખીને શાસ્ત્રવિરુદ્ધ આગ્રહ જોઈને શ્રીગોવિંદરાયણ મહારાજ પોતાના સેવ્ય શ્રીગોકુલચંદ્રમાણી તથા તેમની સાથે શ્રીમદનમોહનણ પણ શ્રીબીકાનેરના રાખીને આગ્રહથકી શ્રીબીકાનેર હાલમાં પધાર્યા છે. આ સમયમાં ધન્ય છે કે શ્રીગોવિંદરાયણ મહારાજને કે વેદધર્મનું રક્ષણ કરવા સાદુ લાજો રૂપીયાની પોતાની મીલકત છોડી દીધી, પણ પોતાનો વેદોક્તધર્મ ન છોડ્યો.

વૈષ્ણવ ધર્મ વેદમાં સ્મૃતિયોમાં ગીતાણ તથા ભાગવતાદિ શાસ્ત્રોમાં પ્રસિદ્ધ રીતે વિસ્તારથી કહેલો છે, અને પ્રાણીય દ્વિત્રિય વૈશ્ય શૂદ્ર અને આંડાલ ઇત્યાદિક સર્વે જાત વાળાનો મોક્ષ એજ ધર્મથી કહેવ છે. વર્ણશ્રમધર્મથી મનુસ્મૃતિમાં અને વેદાદિ સર્વ શાસ્ત્રમાં એક પ્રાણીયદેહવાળા સંન્યાસીને અનંત જન્મે કરીને મોક્ષ કહ્યો છે. બીજા કોઈ જાતને એ વર્ણશ્રમધર્મથકી મોક્ષ કહ્યો નથી. તેમ વર્ણશ્રમના ધર્મ ફક્ત એક સત્યયુગમાંજ 'સદુથી' બની શક્યા. ત્રેતા-યુગથી એ ધર્મનો લોપ થવા લાગ્યો. એ રીતે ભારતાદિકના ઇતિહાસોમાં કહેલું છે. અને ત્રેતાયુગમાં એ ધર્મ કોઈથી ન બની શક્યા તો કલિયુગમાં ક્યાંથી બની શકે? કદાચ કોઈએક પાણે તો તેને એ ધર્મથી મોક્ષ તો શાસ્ત્રમાં કહેલોજ

નથી. પિતૃલોકની પ્રાપ્તિ કહી છે અને તે લોકથી પુણ્ય ક્ષીણ થતાં તેનો પાછો જન્મ થાય છે. એ રીતે સર્વ શાસ્ત્રમાં કહ્યું છે. તે છતાં સંન્યાસીએ એ ધર્મને પ્રશ્નમાં મોક્ષકર્તા બતાવ્યો છે, એ કેટલી વિરુદ્ધતા વેદશાસ્ત્રથી બતાવી છે? અને વેદ-શાસ્ત્રમાં શિવજીનું પ્રાકટ્ય લગવાનથી બતાવેલું છે અને શિવજીની ગણના લગવાનના સક્રિયમાં કરેલી છે. શિવજીના સ્વામી જે લગવાન, તેને મૂકીને એકલા શિવજીની ઉપાસના કરવી શ્રેષ્ઠ છે એમ સંન્યાસી બતાવે છે. એ વાર્તા પણ વેદશાસ્ત્રથી કેટલી વિરુદ્ધ છે? એ સર્વે શાસ્ત્રની વાત બંધાવે રાજાજી સાંભળશે ત્યારે એને પોતાને વૈષ્ણવ માર્ગની બળ પડશે કે વૈષ્ણવ માર્ગમાં અને સંન્યાસીના બતાવેલા માર્ગમાં કેટલો તફાવત છે? સંન્યાસીના પ્રશ્નના ઉત્તર અમે વેદશાસ્ત્રના પ્રમાણના સ્લોકસહિત લખીને આપ્યા છે. તેનો અર્થ મનુષ્યાધારમાં લખેલો છે. કદાચ એ પ્રશ્નનો ઉત્તર સંસ્કૃતમાં લખત તો રાજાજી મોટે ભાગે રાજાજી પોતે વાંચીને સમજી શકત નહિ અને સંન્યાસી રાજાજીને તેનો ઉત્તર ચાહે તેમ સમજતી દેત, અને સંસ્કૃત ગ્રંથ સારા વિદ્વાન્ પંડિતની સહાયતા વગર કોઈ પુરુષથી સમજાઈ શકત નહિ. એટલા સાડે રાજવંશી પુરુષોને સમજવા સાડે મનુષ્યાધારમાં કરેલો છે, અને શુન્દરાતી ભાષા બલુનારા પુરુષોને સાડે શુન્દરાતીમાં કરીને છપાવેલો છે. એ સંન્યાસીએ શાસ્ત્રવિરુદ્ધ પ્રશ્ન કર્યો તેથી એના મતમાં અમને સંદેહ ઉત્પન્ન થયો, તેથી પ્રશ્નના ઉત્તર લખ્યા પછી એના મત ઉપર અમે થોડાએક પ્રશ્ન કરેલા છે. જો એનો મત વેદથી સાચો હશે તો અમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર વેદશાસ્ત્રના પ્રમાણ સહિત સર્વે રાજવંશીઓને સમજાવવા સાડે ભાષામાં છપાવીને પ્રકટ કરશે અને વેદથી અપ્રમાણ હશે તો ટારો દઈ બેસી રહેશે! એજ એની પરીક્ષા સર્વ પુરુષોએ સમજી લવી.

ગ્રંથપ્રસ્તાવના.-કર્મમાર્ગીઓનો બળાપો.

૧. કર્મમાર્ગી લોકો શાસ્ત્ર વિષે અજાણ એવા જે વૈષ્ણવો તેના મનને આ રીતે ભ્રમ ઉપજાવે છે કે વૈષ્ણવ માર્ગ વેદ તથા સ્મૃતિમાં નથી. એ માર્ગ કલિયુગમાં લોકોએ મનઃકલ્પિત નવો ચલાવેલો છે. એ માર્ગ શુદ્ધાદિક હીન જાતવાળાને આચરણ કરવા યોગ્ય છે. બ્રાહ્મણોને આચરણ કરવા લાયક નથી. બ્રાહ્મણોને તો સૂર્ય પિતૃ તથા ગાયત્રી ઉપાસના વેદ તથા સ્મૃતિઓમાં કરવી કહી છે અને ભસ્મ તથા રુદ્રાક્ષની માલા ધારણ કરવા કહ્યાં છે, ઉભું તિલક તુલસીની માલા અને શંકચક્રાદિ સુદ્રા ધારણ કરવાનું બ્રાહ્મણને વેદમાં કહ્યું નથી, એ રીતે વેદ શાસ્ત્રથી ઉલટો સિદ્ધાંત વૈષ્ણવ માર્ગના અજાણ પુરુષોને બતાવીને સર્વ દેવતાના સ્વામી એવા જે લગવાન તેમની ભક્તિ કરવા થકી વિમુખ કરે છે. એજ સિદ્ધાંત સંન્યાસીએ પ્રશ્નોમાં બતાવેલો છે.

કર્મમાર્ગ કેને માટે છે?

વેદશાસ્ત્રમાં કર્મમાર્ગને કનિષ્ઠ માર્ગમાં ગણેલો છે. લગવજ્ઞાન અને ભક્તિ-માર્ગને શ્રેષ્ઠ માર્ગ ગણેલો છે. એજ માર્ગ થકી સર્વે વર્ણનો મોક્ષ કહેલો છે. કર્મ માર્ગ થકી પિતૃસ્થાનની પ્રાપ્તિ કહી છે અને ત્યાંથી પુણ્ય ક્ષીણ થયે તે જીવનો

પૃથ્વીમાં જન્મ કહેલો છે. એ સર્વ વાત અમે પ્રશ્નના ઉત્તરમાં વેદના પ્રમાણસહિત બતાવી છે, પણ વેદાદિકમાં કર્મમાર્ગ કયા જીવો સારૂ કહ્યો છે ? તે કહીએ છીએ.

સૃષ્ટિની ઉત્પત્તિના પ્રસંગમાં બ્રહ્માજીના અંગ થકી પહેલાં આસુરી, પછી દેવી સૃષ્ટિ અકસ્માત નીકળી છે, એ રીતે જે પ્રકારના જીવ નીકળ્યા કહ્યા છે. તેમાં આસુરીને અવિદ્યાસહિત પાપી સંસાર આપી છે. માટે એ જીવાને પ્રથમ થકી ભગવાનનું સેવન કરવાનો અધિકાર નથી, તેથી તેઓને પિતૃલોકની પ્રાપ્તિ થવા સારૂ સૂર્ય અંગ પિતૃ એવા દેવતાઓની ઉપાસના વેદમાં બતાવી છે. દેવી જીવોને ભગવાનનું સેવન કરવાનો અધિકાર પ્રથમથી છે, તેઓને સારૂ ભગવાનનું સેવન રમરમ વેદમાં બતાવ્યું છે. પણ પૂર્વના કનિષ્ઠ સંસ્કાર થકી કર્મમાર્ગી લોકોને એ વાતની સમજણ પડતી નથી. માટે ભગવાનની ભક્તિ વેદમાં શ્રેષ્ઠ કહી છે, તો પણ તે મૂકીને સૂર્ય દેવતાની ભક્તિને શ્રેષ્ઠ બોલે છે. એવા જીવોને કર્મજાતની સંસાર શાસ્ત્રમાં આપેલી છે, શાસ્ત્રાર્થ એટલે શું ?

તેમાંજે વળી એ લોકોનો શાસ્ત્રાર્થ વદના એક પ્રકરણને પકડીને છે, માટે વેદના બીજાં ઘણાં પ્રકરણોથી તે શાસ્ત્રાર્થ વિરુદ્ધ પડે છે. એવા શાસ્ત્રાર્થને અધહસ્તિ-ન્યાયની સંસાર શાસ્ત્રમાં આપેલી છે. અધહસ્તિન્યાય એ કેન્ડેટલાએક આંધળાઓએ હાથીના બુદ્ધા બુદ્ધા અંગ ઉપર હાથ ફેરવ્યો. જે અંગ ઉપર હાથ ફેરવ્યા તે તે અંગ જેવો હાથી છે એમ તે આંધળા કહેવા લાગ્યા, પણ બધા અંગ મક્કીને એક હાથી તે વાતને તેઓ ભણુતા નથી માટે એક પણ પકડીને વેદાર્થ કરવો તે અધહસ્તિન્યાયવત્ કહેવાય છે. વેદનાં બધાં પ્રકરણો સાથે મેળવીને વેદનો અર્થ કરવો એવો અર્થ જે કરે તેને દેખતો પુરુષ શાસ્ત્રમાં કહેલો છે.

૨. શ્રીમદ્ભગવાચાર્યજીના માર્ગમાં વેદના સર્વપણો સાથે મેળવીને શાસ્ત્રાર્થ કરવાની રીત છે. તેજ પ્રમાણે અમે પ્રશ્નોના ઉત્તર લખેલા છે, માટે આ પુસ્તકને જે કોઈ વૈષ્ણવ પોતાના ઘરમાં સંગ્રહ કરશે તેના મનને અન્યમાર્ગી લોકો કદિ બ્રમ ઉપજાવી શકશે નહિ. અને બીજા માર્ગનાં ફલનું તથા ભક્તિમાર્ગના ફલનું તેઓને જ્ઞાન થશે માટે આ પુસ્તક સર્વ વૈષ્ણવોએ જરૂર સંગ્રહ કરવા જેવું છે.

૩. આ પુસ્તક બીજાંથી છપાવેલું છે. પણ જેવા ભેંધએ તેવા મોહટા અક્ષર મહેલા નથી. કાના માત્રાની ભૂલ થઈ હશે. તે સુઝ પુરુષોએ સંગ્રહ બેસાડીને વાંચવું. જ્યાં અર્થ ફેરફાર છાપેલો છે, તેનું સુદ્ધિપત્રક આ પુસ્તકમાં ટાંકેલું છે, ત્યાં ભેંધ, અને તે ઉપરથી પુસ્તકમાં જ્યાં ચૂક હોય ત્યાં શાહીથી ઠીક કરવું એજ વિનંતિ.

૪. આ પુસ્તકમાં વેદના અર્થ લખ્યા છે, પણ વચન લખ્યાં નથી. કેમકે આ પુસ્તક શૂદ્રના વાસવામાં આવશે માટે એ વચનનો સંગ્રહ અમે એક લુદા પુસ્તકમાં કરેલો છે. તેની યોગ્યતા જેને હશે તે પત્ર લખશે તો તેને મોકલીશું.

૫. આ પુસ્તક સુરતના મોટા મંદિરમાં લાલાજી શ્રીરણજીરાવદંજી હસ્તક મલશે. જેની મરજી જે ગામ મંગાવવાની હશે તેણે પત્ર લખવો અને પોસ્ટ ચાર્જના ખાર આના અને પુસ્તકનો ગરજ મોકલશે તો તેને કોઈ પણ દેશમાં મોકલીશું.

॥ श्री हरिः ॥

चासठ प्रश्नोना प्रत्युत्तरो.

भંગલાચરણ.

અથ અંથમારણે ભંગલાચરણમાં પરબ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણને સાષ્ટાંગ ઢંડવત કરીએ છીએ. શ્રીભાગવત એકાદશ સ્કંધના પાંચમા અધ્યાયમાં નવ યોગેશ્વરે શ્રીકૃષ્ણનું સ્વરૂપ કહ્યું છે, તે શ્લોક:—

ध्येयं सदा परिभक्त्वनमभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिवविरंचिनुतं शरण्यम् ॥

भृत्यातिहन् प्रणतपालभवाग्धिपोतं वंदे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥१॥

હે કૃષ્ણ ! તમારાં ચરણકમલ ભક્તોને સદા ધ્યાન કરવા યોગ્ય છે. જે ધ્યાન અચ્ચારે ઇન્દ્રિયોનાં જે વિદ્ય છે, તેને તુરત દૂર કરે છે, અને મનવાંછિત કૃષ્ણને આપે છે. તીર્થાદિકને પવિત્ર કરવાવાળાં છે. શિવબ્રહ્માદિક દેવતાઓને આશ્રયરૂપ છે, અને તે સર્વને નમન કરવા યોગ્ય છે. ભક્તોનાં સર્વ દુઃખ દૂર કરીને પાલન કરવાવાળાં છે. આ સંસારસમુદ્ર તરવાને નૌકારૂપ છે. એવાં જે તમારા ચરણકમલ તેને અમે નમન કરીએ છીએ. હવે આ વૈષ્ણવ સંપ્રદાયના આચાર્યશ્રી તેમને સાષ્ટાંગ ઢંડવત કરીએ છીએ. ભાગવત દશમ સ્કંધ પૂર્વાર્ધમાં ગર્ભસ્તુતિ પ્રહ્લાદિ દેવતાએ કરી છે, તે શ્લોક:—

स्वयं समुत्तीर्य मुहुस्तरं गुमन् भवार्णवं भीममद्भ्रसौहृदाः ॥

भवत्पदांभोरुहनावमत्र ते निधाय याताः सदनुग्रहो भवान् ॥૨॥

પ્રહ્લાદ કહે છે હે શ્રીકૃષ્ણ ! આપની ભક્તિના મૂતાપથી મોટા પુરુષો પૂર્વ-કાળમાં આ સંસારસમુદ્રને ગાયત્રી ખુરી પ્રમાણે કરીને ચરણકમલના આશ્રયરૂપી નૌકાથી પાર ઉતરી ગયા, અને સર્વે પ્રાણી માત્રના હિતને સાડ આશ્રયરૂપ નૌકા એટલે વહાણરૂપી સંપ્રદાય અહીં મૂકી ગયા. તે સંપ્રદાયરૂપી વહાણ ચક્રી આપની કૃપાથી તેમો આશ્રય કરનારા પણ આ ભયાનક સમુદ્રની પાર ઉતરી જાય છે. એ રીતે વૈષ્ણવમાર્ગપ્રવર્તક આચાર્યોનું સ્વરૂપ કહ્યું છે. આ સંપ્રદાય વિના જીનત વર્ણાશ્રમાદિક સંપ્રદાયોના મર્મવાળાઓને તે સંપ્રદાય ચક્રી તેમની ગતિ પ્રહ્લાદ કહે આ શ્લોકમાં કહે છે:—

येऽन्येऽरविंदाक्ष विमुक्तमानिनस्त्वग्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः ॥

आरुह्य कृच्छ्रेण परं पदं ततः पतंत्यवोऽनादृत्युष्मदंक्षयः ॥૩॥

હે ભગવાન ! તમારી ભક્તિના સંપ્રદાય વિનાનાં જે જીનત જ્ઞાનવર્ણાશ્રમાદિ સાધન કરનારા જે પુરુષો છે, તે જ્ઞાનાદિક સાધન-ચક્રી મોતાને મુક્ત થયલા માને છે, પણ તમારા ચરણકમલના આશ્રય વગર તે મુક્તિસ્થાન ચક્રી પાછા પડે છે એટલે પાછા જન્મ પામે છે. ભક્તિ વગર તે કદી મુક્ત થતા નથી. એ રીતે

બધુવ સંપ્રદાય વગર ળીત્ત સાધનોના સંપ્રદાયથી ભગવાનના સ્થાનની પ્રાપ્તિ થતી નથી. એ આ શ્લોકમાં પ્રજ્ઞાણને વેદનો સિદ્ધાંત બતાવ્યો છે. તે યકી વૈષ્ણવસંપ્રદાયપ્રવર્તક આચાર્યોની કૃપાથી મોક્ષાદિક મહે છે. તેથી અમે તેમને સાદાંગ દંડવત કરીએ છીએ. હવે ધનુસ્કંધ ભાગવતના ત્રીજા અધ્યાયમાં ધર્મરાજે પોતાના યમદૂતોને ધર્મનું સ્વરૂપ કહ્યું છે, તે શ્લોક:—

ધર્મો હુ સાક્ષાત્ ભગવત્પ્રજ્ઞાતિં ન વૈ વિદ્મ્યસ્યો નાપિ દેવાઃ ॥

નસિદ્ધમુલ્યા અમુરા મનુષ્યાઃ કુતરચ વિદ્યાધરચારણાદયઃ ? ॥૪૥॥

ધર્મ જે છે તે સાક્ષાત્ ભગવાનનો કહેલો છે, તેથી ધર્મનું બરાબર સ્વરૂપ એક ભગવાનજ નાહો છે. દેવતા, તથા ઋષિઓ, મનુષ્યો, દૈત્યો, કોઈ નહોતા નથી. તો વિદ્યાધર ચારણ ક્યાંથી નાહો ? એ રીતે ધર્મનું સ્વરૂપ દેવતા તથા ઋષિઓને નાહવામાં આવતું નથી, એ રીતે કહ્યું છે. તો અમારા સરખા શાસ્ત્રોમાં બ્યુત્પન્ન નહિ તેને ક્યાંથી નાહવામાં આવે ? તથાપિ શ્રીશુરના પ્રતાપ યકી યથાશ્રુત યથાશુદ્ધિ અમે કહીએ છીએ તેથી એમાં જે અજ્ઞાનપણથી કહેવાયું હોય તે અમારા સ્વામી શ્રીકૃષ્ણચંદ્ર અને સુરા લક્ષ્મણન અમને ક્ષમા કરી.

દેવનેકો દુર્બોધ વેદ અન્યકો સુબોધ કેસે ? તથાપિ શ્રીશુરબુદ્ધ અરણ હૃદય ધારિકે, યથાશ્રુત યથામતિ પ્રભોત્તરકે ગતિ દીજે પતિ કૃષ્ણ વેદતા વેદપારકે. યા મેં જહાં બ્યક્તીક હોય, ક્ષમા કીજે પ્રભુ સોય, હમ તો હેં અરુપ છવ, કહા જાને સારકે. શ્રીમદ્ભગવાચાર્યપદાથય નૌકા હમે મહાભયાનક સિધુ દીછયે તારકે.

અથ પ્રશ્નો તથા ઉત્તરોના પ્રારંભ કરીએ છીએ.

પ્રશ્ન પહેલો:—સંપ્રદાય એટલે શું ?

૧ પ્રશ્ન—સંપ્રદાયશબ્દસ્ય કોર્થઃ ? સંપ્રદાય શબ્દનો શો અર્થ છે.

ઉત્તર: સંપ્રદાયશબ્દનો રૂઢ અર્થ તો એ છે કે સદિના આરંભ યકી આજ પર્વત આદી આવેલી જે રીત, તે રીતનું નામ સંપ્રદાય છે. તે રીત-સદિને કહેતાશ પ્રજ્ઞાણ છે. તેમજ સદિના આરંભમાં વેદ કહેલો છે. તે વેદમાં વર્ણ આશ્રમના ધર્મ તથા કર્મમાર્ગ, જ્ઞાનમાર્ગ, ભક્તિમાર્ગ, યોગમાર્ગ એ પાંચ માર્ગની રીત કહી છે. તેમાંથી પોતપોતાની રુચિ પ્રમાણે તથા યોગ્યતા પ્રમાણે સદિના પુરુષોએ એક માર્ગનું પ્રહણ કર્યું છે, એ રીતે એ પાંચ માર્ગની રીત પરંપરાથી આજ પર્વત સદિમાં આદી આવે છે તેથી વેદમાં જેટલા માર્ગ પ્રજ્ઞાણને કહ્યા છે, તેટલા સંપ્રદાય સદિમાં છે. એ રીતે સંપ્રદાયશબ્દને જાહેરપણે આવે છે. પણ પ્રજ્ઞાણને વેદના કહેતાર ભગવાન છે, તે એકાદશસ્કંધ ભાગવતમાં ભગવાને પોતે ઉદ્ભવજીને કહ્યું છે તે શ્લોક:—

કાલેન નષ્ટા મણ્યે વાણીયં વેદસંહિતા । મયાદૌ વ્રજ્જાણે મોક્તા

ધર્મો યસ્માં મદાન્પકઃ ? તેન મોક્તા ચ પુત્રાય મનં પૂર્વજાય રા ॥

પ્રલયકાળમાં આ વેદવાણી અંતર્યામિન ઘણી હતી તે ઉત્પત્તિકાળમાં એ વેદ-
વાણી એ પ્રધાને કહી. કેમકે ધર્મ છે, તે મારો આત્મા છે. એ ધર્મચક્રી મારી
પ્રાપ્તિ જીવોને થાય છે. એ વેદવાણી પ્રધાને પોતાના મન્વાદિક પુત્રોને કહી છે,
એ પુત્રો થકી એ વેદવાણી સર્વ સૃષ્ટિમાં પ્રવૃત્ત થઈ છે. એ રીતે વેદના કહેનારા
ભગવાન છે, અને સર્વ ધર્મનું મૂળ પોતે છે. તેથી બધા સંપ્રદાયનું મૂલ ભગવાન
છે. એ વાત આ શ્લોકમાં નિશ્ચય કરીને કહી છે. એ રીતે વેદમાં પણ કશું છે.
તેથી ભગવાનને પ્રાપ્ત થવાનો જે સંપ્રદાય છે, તેજ સંપ્રદાય મુખ્ય છે. બીજા
સંપ્રદાયો ગૌણ છે, તે ગૌણ એટલે ઉત્તરતા છે, એ રીતે સંપ્રદાય શબ્દના રૂઢ
અર્થથી પણ એજ વાત સિદ્ધ થઈ.

વેદાદિમાં ઘણા સંપ્રદાયો શા માટે ?

એ દેકાણે દેકાં એવો પ્રશ્ન કરશે કે વેદમાં મુખ્ય અને ગૌણ એ રીતે જે
સંપ્રદાય છે કે એક સંપ્રદાય છે ? એ જે સંપ્રદાય કહેશે તો તે જે સંપ્રદાય
પ્રકટ થવાનું કારણ શું ? તે બતાવો.

એ પ્રશ્નનો ઉત્તર કે વેદમાં વર્ણાશ્રમધર્મનો માર્ગ અને કર્મમાર્ગ, જ્ઞાન-
માર્ગ, યોગમાર્ગ, ભક્તિમાર્ગ; એ પાંચ માર્ગના સંપ્રદાયની રીત જુદી જુદી કહી
છે, અને એ પાંચ સંપ્રદાયનાં ફલ પણ જુદાં જુદાં વેદપુરાણોમાં કહેલાં છે. તેથી
પાંચ સંપ્રદાય ભગવાને પ્રથમજી દ્વારા જુદા જુદા પ્રકટ કરાવ્યા છે. કેમકે એ
પાંચ સંપ્રદાયના ફલનું પ્રકલ્પ કરનારા જીવ તે પણ જુદી જુદી પ્રકારના પ્રજા
થકી પ્રકટ કરાવ્યા છે, તે વાત તૃતીય સ્કંધ ભાગવતના ખારમા અધ્યાયમાં સૃષ્ટિની
ઉત્પત્તિના પ્રસંગમાં કહી છે તે શ્લોક:-

સસર્જાગ્રેન્થતામિથમય તામિથમાદિકૃત્ ॥ મહામોહંચ મોહં ચ તમશ્ચાજ્ઞાનવૃત્તયઃ ॥૧॥
દ્રષ્ટ્વા પાપીયસીં સૃષ્ટિં નાત્માનં વહ્વમન્યત ॥ યગવદ્ધ્યાનપૂતેન મનસાન્યાં તતોષ્મજત્ ॥૨॥

ભિન્ન ભિન્ન સૃષ્ટિના પ્રકારો.

ચોક્કાતુર, કોષ્ઠી, વિપરી, અહંકારી, અજ્ઞાની એ પાંચ પ્રકારની અવિદ્યાસ-
હિત એવી પાપી સૃષ્ટિ પ્રધાને પોતાના અંગમાંથી નીકળેલી ભ્રમ, પછી ભગવાનનું
ધ્યાન કરીને પોતાના મનને પવિત્ર કરીને તે શુદ્ધ મન થકી ફરી સૃષ્ટિ કરતા
થયા. તેમાંથી નારદાદિક ભગવાનના ભક્ત મહાજ્ઞાની જીવ નીકળ્યા. એ રીતે વિદ્યા
સહિત દેવી જીવ પ્રકટ થયા અને અવિદ્યાસહિત આમુરી જીવ પ્રકટ થયા. એ
રીતે જે પ્રકારની સૃષ્ટિ પ્રધાથી નીકળી છે. એ જે પ્રકારની સૃષ્ટિની પ્રકૃતિમાં
સાત્ત્વિક, રાજસ, તામસ, એ ત્રણ શુષ્ણ ભગવાને મૂકેલા છે. તેથી જે પ્રકારની સૃષ્ટિ
ત્રણ શુષ્ણની પ્રકૃતિથી છ પ્રકારની થઈ. એ રીતે સૃષ્ટિ બહુ પ્રકારની સજી છે.
તેથી એ બધાની રચિ જુદી જુદી પ્રકારની છે, અને સાધન કરવામાં અધિકાર
જુદા જુદા છે. તેમ સર્વેને જુદાં જુદાં ફલ આપવાની ભગવાનની ઇચ્છા છે, તેથી

સંપ્રદાય પણ પ્રજાજીવી જુદા જુદા પ્રકટ કરાવ્યા છે. એ રીતે જુદા જુદા સંપ્રદાયનું કારણ સદિની ઉત્પત્તિથી તથા તે સંપ્રદાયનાં સાધન તથા ફલ વેદશાસ્ત્ર માં જુદા કહેલાં છે તેથી સિદ્ધ થાય છે.

પણ સર્વ શાસ્ત્રમાં સદુચી ઉત્તમ ફલરૂપ ભગવાનની પ્રાપ્તિ જતાવી છે. એ ઉપરાંત બીજા સર્વે ફલ ગોણુ જતાવે છે, તેથી ભગવાનને પ્રાપ્ત થવાનો સંપ્રદાય ઉત્તમ છે. એ વાત બધા શાસત્રી સિદ્ધ છે. આસુરી જીવ છે, તેનો અધિકાર પ્રથમથી ભગવાનની ભક્તિ કરવામાં નથી અને તે જીવોની પ્રીત પણ ધન, સ્ત્રી, પુત્ર, રાજ્ય, સ્વર્ગ ઇત્યાદિકમાં છે, તેથી વર્ણશ્રમકર્મના દેવતા જે ચંદ્ર, અગ્નિ, સૂરજ, પિતૃ ઇત્યાદિકની ઉપાસના એમને જતાવી, તેથી વર્ણશ્રમનાં કર્મોના સંપ્રદાય અવિદ્યાસહિત જીવોને સ્વર્ગાદિક સ્થાનની પ્રાપ્તિ થવા સારૂ કહ્યો છે. એથી વેદમાં તથા મનુસ્મૃતિમાં સુક્તિ કહી નથી. એ વર્ણશ્રમી સ્વર્ગમાંથી પુણ્ય ફળીયું થવાથી પૃથ્વીમાં જન્મ પામે છે. તેથી એ વર્ણશ્રમી આ સંપ્રદાયથી કદી મુક્ત થતા નથી દેવી સૃષ્ટિ જ્ઞાનસહિત સજી છે, તેથી એની રુચિ ભગવાન ઉપર છે, તથા મુક્ત થવા ઉપર છે, એને સારૂ જ્ઞાન તથા વાકિત તથા યોગ એ ત્રણ માર્ગ. સંપ્રદાય પ્રજાજીવે કહ્યા છે, પણ દેવી જીવોમાં સાત્ત્વિક, રાજસ, તામસ; એ ત્રણ શુણના સ્વભાવવાળા જીવ સંજ્યા છે, તેથી શુદ્ધ સાત્ત્વિક શુણવાળાઓની રુચિ એક ભગવાન ઉપર જ છે, તેને સારૂ ભગવાનની ભક્તિ કરવાનો સંપ્રદાય પ્રજાજીવે કહ્યો છે, અને સાત્ત્વિક, રાજસ, મિશ્ર શુણની પ્રકૃતિનાં જે દેવી જીવ છે, તેને સંસાર થકી મુક્ત થવા ઉપરજ રુચિ છે તેમને સારૂ જ્ઞાન તથા યોગ એ માર્ગના સંપ્રદાય પ્રજાજીવે કહ્યા છે. એ રીતે જુદા જુદા પ્રકારના જીવોની રુચિ પ્રમાણે તેઓને ફલ મલવા સારૂ બધા સંપ્રદાય જુદા જુદા કહ્યાં છે.

એમાં કોઈ એવી આશંકા લાવશે કે દેવી અને આસુરી બે પ્રકારની સૃષ્ટિ ભગવાને શા સારૂ કરી અને સર્વેને એવું જુદું જુદું ફળ આપવાની ઇચ્છા કેમ કરી? એવો પ્રશ્ન કોઈ કરશે તો તેનો ઉત્તર કહીએ છીએ. બે સર્વે જીવ જ્ઞાનીજ ઉત્પન્ન કરતા તો તે આ સૃષ્ટિમાંથી તરત બધાનો મોક્ષ થઈ જાત. ત્યારે પ્રજાકંઠમાંથી સૃષ્ટિ સદુ ખાલી પડી જાત. ત્યારે સૃષ્ટિ કરી, તે ન કર્યા જેવી થઈ જાત. તેથી અજ્ઞાની સૃષ્ટિ પણ કરી, એને ધીરે ધીરે મુક્ત કરવાની ભગવાનની ઇચ્છા છે. તેમાં કારણ એ છે કે પ્રજાજીવું આશુષ ન્યાં સુધી છે, ત્યાં સુધી આ સૃષ્ટિની સ્થિતિ પૃથ્વી ઉપર રાખવી છે. તેથી સૃષ્ટિમાં બે ભેદ કર્યા. એ એનું કારણ વેદશાસ્ત્ર થકી સિદ્ધ થાય છે તેથી ભગવાનની ભક્તિના સંપ્રદાય વગર બીજા સંપ્રદાય સર્વે ગોણુ છે, અને તુચ્છ ફલ આપવાવાળા છે. તથા એ સર્વે સંપ્રદાયો સાધના મનુષ્યોએ કેમ ચલાવ્યા છે તે વાત ભગવાને ઉદ્ધવજીને કહી છે, તે એકાદશસ્કંધના યૌદ્ધમા અધ્યાય વિષે જતાવી છે.

शुद्धाद्वैत-सङ्कितमार्तः.

पृष्ठ ६०]

भाग्यश्रीपद, श्रीरत्नसागर ४५३.

[अंक ८.

प्राचीन कीर्तन.

(संग्रहकर्ता:—भगवद्गीय वेलजीभाई नथुभाई.)

चलो री बहिनं गोरस बेचन क्यों एती करत अवार ॥ मोय ग्रह काज योही पर्यो हे,
 छोटेंगी फिर करूं सवार ॥१॥ कोन पेंडो परही सूधो, नाहि मिळे नटवार ॥ ताजको प्रभू तुरत
 दिखायो आयो कहि ठाडी रहे अवार ॥२॥ पद ॥१॥ एडी टेडी शुफत जात हँसत हँसत नवेली
 कहां ते आई ॥ में बरसानेकी छाला, रानी कौरतजुकी जाई ॥१॥ काहुतें काहु बेर नांही
 सुनी हे । राजा शृगभानजुकी नवाई ॥ ना जानु तुं कोहे राम-रंगभीनो, रसीयो नैन मन
 हरलाई ॥२॥ अरी मृगछोनीसी बाल में नंदको छाल, जसुदा जीवन सुखदाई ॥ तेरी निकाई
 नांही त्रिभुवनमें जगन्नाथ जिन जग हूँदे सो रखो तेरे रूप लुभाई ॥३॥ पद ॥२॥ एसो निदुर
 दानी सधैं मागत दान ॥ पराई बेटी चळत पेंडे करत ताई अचगरी कहान ॥१॥ काहुकी न
 राखत फान । कहत तेरी नीकी उठान ॥ हित हरिवंश कहत छडली, चवाई करत लगत तेरी
 मीठी बान ॥२॥ पद ॥३॥ में कहा चचाव करूं जानत सच ब्रज ॥ तोही नंदको बहुत सयानो,
 खोलत पट छुवत उरज ॥१॥ मो सरिली मिथ्य नां कोउ देवेंगी सुधी समज ॥ मेहा तुं मत जाने
 काहुने काही तेरी करज ॥२॥ पद ॥४॥ एसी चतुराई ठान काहेकुं निकसत मेर ॥ मेर कहा
 सोई बाबाकी हम निकसे कहूं पहेल पहेल ॥१॥ यह पेंडो सच चलिवेको काहेकुं तु रोक्त
 छेले ॥ कही रसखान सूधो चळ जैयो देहुं उरानो नदमहेल ॥२॥ पद ॥५॥ अरि गोपाल
 गोरसकी तोही शक परीरी ॥ देखत तरसत सरसत मनमन, रोमरोम प्रति अंग महिरी ॥१॥
 दोर दोर मटुकी मुख मांडत कर नांही छंडत उरज अरिरी ॥ शामदास प्रभु तुंही रसीयो तेरी
 लीय कहु लखी न परीरी ॥१॥ पद ॥६॥ आजु अचानक देख्यो लख ॥ खलखल चन्यो जात
 आलीरी, मेने कही जानी तेरी कल ॥१॥ करत सेन सुपर जाही पर मेरी देवेंगी जु बल ॥ कही
 द्वारकेय दिखाय अंगुठा लेले गोरस तुंही भल ॥२॥ पद ॥१॥ गारी सावेगो मेरी गैवार ॥ एसी
 कोन सिखई तोही पकरत आय पराई नार ॥१॥ जा जा गोरसके पियैया तु कोन हे रोमनहार ॥
 एती बरजोरी ना कीजे मोहन, सिख दई तोही सतवार ॥२॥ सीज मटुकियां सटक पटकी बयो

વહો ગોરસ ચલી પનાર ॥ કહિ રસસ્થાન આજ મોઈ જાન દે ફલ આઝંગી હોં મુકારા ॥૩॥
 છોટીં સી વઠેન વેઠો મુરાર ॥ મેં જાન્યો હે કોટ પંચી નિકટ દેલ્યો નંદકુમાર ॥૧॥ મેરે સિર
 ગોરસકી મટુકી દટિ પરિ વાહી ચિત્તવાર ॥ નેક જાઈ કહિ ગોરસ દેરી પિછે ચલિ જા ધૂંધટ
 માર ॥૨॥ શામદાસ પ્રભુ વ્હે રંગ રસિઆ મટુકી લીની સીસ ઉતાર ॥૩॥ પદ ॥૧॥ સલિરી એસે
 કહોનાં કહત કલ્હુ સમજત ઓરા ॥ મેહું નિપટ મોરો હુંહી વરી મોરી સૂષો દેત ના કરૂં વરસોરા ॥૧॥
 મેં ગોરસકી કહુત રસિયા યાતે માગત હાથ જોર ॥ મુરારી દાસ મો માગી ન મિછેરી, તો દેહું
 મટુકીયાં અવાર ફોર ॥૨॥ પદ ॥૧૦॥

શ્રીવલ્લભ એકરૂપ દ્વે દરસેં ॥ ગોવર્ધન પર્વતકે હત ચાંદની ઉત અગ વરસે ॥૧॥ હત તો
 રાજત ત્યામ ધટા જુરિ જિમિ દામિની આકરસે ॥ મંદ મંદ મુક્ત્યાત મનોહર ફર કપોલ દે
 પરસે ॥૨॥ યહ સોમાકી ઉપમા નહીં નીરવ દુહન મન હરસે ॥ માધોદાસ દાસ હિતકારન માન-
 દેવી વ્રજ સરસે ॥૩॥ (યહ પદ અડેલ્યું ભગવદીય માધવદાસજીને લિખ્યો હૈ.)

વાલવોધ.

(લેખક:—દેસાઈ ભગવતીપ્રસાદ ગોવિંદલાલ.)

નત્વા હરિં સદાનન્દં સર્વસિદ્ધાંતસંગ્રહમ્ ।

વાલમવોધનાર્થાય વદામિ સુવિનેશિતમ્ ॥

સદા આનન્દરૂપ હરિને નમન કરીને, સારી રીતે વિશેષે કરીને નિશ્ચય કરેલા સર્વ
 સિદ્ધાંતના સંગ્રહને, આજકાલે બોધ થાય તેને માટે કહું છું.

ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે શ્રીમદ્ભાગવતપ્રભુએ પહેલવહેલાં સદાનન્દ હરિ ભગવાનને નમન
 કર્યું છે. આ શ્લોકમાં શંકા ઉપરિચિત થાય કે “સિદ્ધાંતમુક્તાવલી” “જલમેદ” માં અનુક્રમે
 “નત્વા હરિ” “નમસ્કલ હરિ” એમ કહેલ છે; પણ અંત “સદાનન્દ હરિ.” કહેવાનો
 આશય શો હશે? આ શંકાના નિવારણમાં આશ્ચર્યચરજો! કહે છે કે, આ બાલબોધ અંથ
 શ્રીમદ્ભાગવતપ્રભુએ અન્યના પુરુષાર્થો સમજાવવાને માટે રચ્યો છે. તેથી પુણિમાર્ગીય જીવ તે
 અન્યના પુરુષાર્થો વાચતા પણ પોતાના જે “સદાનન્દ પ્રભુ” તેને ન બૂલે તે માટે “સદાનન્દ
 હરિ” કહેલ છે. એટલે કે ભક્તિમાર્ગીય જીવનના તે પુરુષાર્થો નથી. અને તેની સાથે એટલો
 બધો સંબંધ પણ નથી. તેનો સંબંધ તો “સદાનન્દ” હરિ સાથેજ છે. એટલે તેણે સદાનન્દને
 ન ચૂકવા એજ શ્રીમદ્ભાગવતપ્રભુનો આશય છે.

“સદાનન્દનો” સિદ્ધાંત પ્રમાણે એવો આશય છે કે જલ એટલે સાચો અને જ્ઞાનન્દ એટલે
 ભજનાનન્દ બન્ને મળીને સાચો ભજનાનન્દ એમ થાય છે. તેમજ પ્રભુ આનન્દધન છે. માયા-
 વાદી વગેરે કહે છે કે પ્રભુ નિરાકાર છે. ત્યારે બાપણા ભક્તિમાર્ગમાં આપણે શીષ્યશ્રી
 પ્રભુને નિરાકાર તેમજ સાકાર પણ કહીએ છીએ. આમાં શંકા થશે કે કાંઈ પ્રભુ સાકાર અને
 નિરાકાર બન્ને હોય? તેને માટે સિદ્ધાંત કહે છે કે પ્રભુને નિરાકાર કહેવાનું કારણ એ છે કે

પ્રભુને આપણા જેવો પ્રાકૃત આકાર નથી. તેમજ પ્રાકૃત મનુષ્યની અંદર આપણે જોઈ શકીએ છીએ કે; પહેલવહેલાં માણસ જન્મે છે પછી અસ્તિત્વમાં આવે છે. પછી વધે છે. યુવાન અવસ્થામાં આવે છે, ધસાય છે, વૃદ્ધ થાય છે, અને પછી તેનો આકાર પણ હ્રુમ યદ્દ નામ છે. એ પ્રમાણે ૭ વિકારો પ્રાકૃત દેહમાં થાય છે. ત્યારે તેમાંનો એક પણ વિકાર અપ્રાકૃત પ્રભુની અંદર નથી. તેથીજ તેને નિરાકાર કહેવા છે. -

ત્યાર પછી પ્રભુને સાકાર કહેવાનું કારણ એ છે કે પ્રભુ આનન્દરૂપ છે. પ્રભુના દરેક અવયવો આનન્દરૂપ છે. તેને માટે શ્રુતિ રશ્મિતિ કહે છે કે જ્ઞાનન્દનાત્રકરવાદમુલોદરાદિઃ ॥ પ્રભુના ધીહસ્ત, ચરણ, અને મુખારવિન્દ વગેરે સર્વ આનન્દરૂપજ છે. તેમજ કહે છે કે વ્રજવાદે જ્ઞાનન્દ એવ આકારસમર્પકઃ પ્રજ્ઞાવાદમાં આનન્દજ આકાર આપનાર છે. એ પ્રમાણે પ્રભુ આનન્દમય છે. જેમ એક સાકારની પુતલી બનાવી હોય તો તેનો કયો ભાગ સાકાર વિનાનો હોય ? તેજ પ્રમાણે પ્રભુનો કયો ભાગ આનન્દ વિનાનો હોય બધા ? તેમજ શ્રીમદ્દાપ્રમુખજી કૃષ્ણાશ્રય ગ્રંથમાં બધા શાસ્ત્રોનો સાર કાઢીને કહ્યું છે કે પ્રાકૃતાઃ સકલા દેવાં ગણિતાનન્દકં વૃહલ્ પૂર્ણાનન્દો હરિસ્ત્વસ્માલ્લ ક્ષણ એવ ગતિર્મમ ॥ બધા દેવો પ્રાકૃત છે, અક્ષર બ્રહ્મા (પ્રભુનું ધામ) ગણિતાનન્દ છે. એટલે તેના આનન્દની ગણતરી યદ્દ શકે એમ છે. હરિ તો પૂર્ણાનન્દ છે. તેથી કૃષ્ણજ મારી ગતિ હો. આમાં પ્રભુને પૂર્ણાનન્દ કહેવાનું કારણ એ છે કે પ્રભુ અગણિતાનન્દ છે. તેના આનન્દની ગણતરી યદ્દ શકતીજ નથી તેને માટે ઉપનિષદમાં બે ઠેકાણે એક મનુષ્યથી આરંભી અક્ષર બ્રહ્મા સુધી આનન્દની ગણતરી કરેલ છે, તે આ પ્રમાણે છે-એક માણસ યુવાન, સુંદર, પુષ્ટ, ચક્રવર્તી હોય તેના ધરમાં પણ કોઈ પણ જાતની કમી ન હોય, કહોને કે બધે વાતે આનન્દી હોય, તો તેના આનન્દનો પારજ ન હોય. (૨) એ મનુષ્યના ૧૦૦ (સો) આનન્દ બેળા મળીને મનુષ્ય મન્ધર્વ અથવા નિષ્કામ ઓત્રિયોનો આનન્દ થાય છે (૩) મનુષ્ય મન્ધર્વ અથવા નિષ્કામ ઓત્રિયોના ૧૦૦ આનન્દ બેળા થાય ત્યારે દેવમન્ધર્વનો આનન્દ થાય છે. (૪) તેના ૧૦૦ આનન્દ બેળા થાય ત્યારે પિતૃઓનો આનન્દ થાય છે. (૫) તેના ૧૦૦ આનન્દ બેળા થાય ત્યારે અજનનજ દેવોનો આનન્દ થાય છે. (૬) તેના ૧૦૦ આનન્દ બેળા થાય ત્યારે કમદેવનો એક આનન્દ થાય છે. (૭) કમદેવના ૧૦૦ આનન્દ બેળા મળે ત્યારે દેવોનો આનન્દ થાય છે. (૮) તેના ૧૦૦ આનન્દ બેળા થાય ત્યારે ઇન્દ્રનો એક આનન્દ થાય છે. (૯) તેના ૧૦૦ આનન્દ બેળા થાય ત્યારે બૃહસ્પતિનો એક આનન્દ થાય છે. (૧૦) બૃહસ્પતિના ૧૦૦ આનન્દ બેળા થાય ત્યારે પ્રજાપતિનો એક આનન્દ થાય છે. પ્રજાપતિના ૧૦૦ આનન્દ બેળા મળે ત્યારે અક્ષર બ્રહ્માનો એક આનન્દ થાય છે. ત્યારે મનુષ્ય એ અક્ષર બ્રહ્માને પામી પછી અજમય પુરુષને પછી પ્રાણમયને, મનોમય અને પછી વિદ્યાનમયને પામે છે. અને પછી આનન્દમય પ્રભુને પામે છે. એ આનન્દમયની ગણતરી યદ્દ શકતીજ નથી કારણ કે શ્રુતિ કહે છે કે; યતો વાચો નિવર્તન્તે અપ્રાપ્ય મનસા સદ્દ મનસહિન વાણી ત્યાં પહોંચી શકતીજ નથી. એટલે મન અને વાણી ત્યાં પહોંચતાજ નથી. તેથી વેદમાં અક્ષરબ્રહ્મા પર્યંત આનન્દની ગણતરી ક્યાં પછી નેતિ નેતિ કહે છે. હવે નીચે અજમય વગેરે કહ્યું તે શું તે જાણવું જોઈએ. અજમય એટલે જગત્ પ્રાણમય એટલે જીવ, મનોમય એટલે વેદનામાત્રક સૃષ્ટિ અને વિદ્યાનમય એટલે અક્ષર બ્રહ્મા અને આનન્દમય એટલે રસેશ્વરીશ્રીકૃષ્ણ રસો વૈ સઃ પ્રસુરસ રૂપ છે. અરે પ્રભુ એકલાજ રસરૂપ છે એટલુંજ નહિ પણ તેની દરેક લીલા પણ રસ (આનન્દ) રૂપ છે. આ ઉપરથી એની એક શંકા યશે કે પ્રભુની દરેક લીલા કયાં રસરૂપ હતી ? અમુકજ રસરૂપ હતી એવી શંકા યશે.

કારણ કે શ્રીકૃષ્ણે પૂતના [(આવવા) નો નાશ કર્યો ધેનુક (દેહાધ્વાસ) નો નાશ કર્યો 'કાલીયનાગને નાધ્યા, કુખ્જ ઉપર પ્રસન્નતા દેખાડી. દ્વારકાની અંદર ગૃહસ્થાશ્રમ ધર્મ આપ્યો તેમજ નલકુબર મણિગ્રીવ વગેરેનો ઉદ્ધાર કર્યો એ લીલાઓ આનન્દમય ક્યાં હતી ?

આને માટે શ્રીમદ્ભાગવતના દશમસ્કંધના પહેલા જ ચાર અધ્યાયો જે જન્મપ્રકરણના છે તે વાચવાથી એટલે તેનું રહસ્ય ઉપર ઉપરથી વાંચી જવાથી સમજાય તેમ નથી. પણ તેની ઉપર જે શ્રીમદ્ભાગવતની સુખોદિનીજ વાંચવાથી સ્પષ્ટ રીતે સમજાશે કે પ્રભુ શ્રીકૃષ્ણઅન્દ સાથે ચાર વ્યૂહોનું પ્રાકટય હતું. સંકર્ષણ, પ્રભુન્ન, અનિરુદ્ધ અને વાસુદેવ આ ચાર વ્યૂહોને પ્રભુએ જુદી જુદી લીલા કરવા સાથે રાખ્યા હતા. જ્યાં કોઇને હજીવાનું જેમકે પૂતના, બકાસુર ધેનુક, અધારુર વગેરેનો વધ કરવો એ સંકર્ષણ વ્યૂહનું કામ હતું. જ્યાં વ્યવહાર બતાવવો હોય જેમકે કુખ્જ તેમજ દ્વારકામાં ગૃહસ્થાશ્રમી થયું હોય ત્યારે પ્રભુન્ન વ્યૂહથી તે કામ થાય છે જ્યાં ધર્મરક્ષાનું કામ કરવું હોય જેમકે નલકુબર મણિગ્રીવ વગેરેનો જ્યારે ઉદ્ધાર કરવો હોય ત્યારે પ્રભુ અનિરુદ્ધ વ્યૂહથી કામ લેય છે અને જ્યારે મોક્ષ આપવાનું એટલે પૂતના વગેરેના વધ પછી તેમને મુક્તિ આપવાનું કામ વાસુદેવ વ્યૂહથી થયું છે. પણ સાક્ષાત્ શોકવેદાતીત પુરુષોત્તમનું કાર્ય તો જ્યાં રસ પ્રકટ કરવો હોય જેમકે શુરારાસમાં રસેશ થી કૃષ્ણજ છે, આ પ્રમાણે પ્રભુ તેમજ તેમની લીલા આનન્દરૂપ છે. તેથી પણ શ્રીમદ્ભાગવતને આનન્દરૂપ હરિને નમન કર્યું છે.

આ પ્રમાણે ઘણે દેહાણે શ્રીમદ્ભાગવતને પહેલ વહેલાં શ્રીબાલબોધ, શ્રીસિદ્ધાંતમુક્તાવલી, જલમેદ વગેરે દેહાણે નમનજ કર્યું છે. તેનું કારણ કહે છે કે લક્ષ્મીજ જેમનાં કલન છે એવા પ્રભુને જીવ શું આપી શકવાનો હતો વાર? તેમજ પ્રભુ જેટલા નમનથી રનેહયુક્ત થાય છે તેટલા બીજા કોઇ પણ સાધનથી નથી થતા. માટે પહેલવહેલા નમન કર્યું છે.

હવે આ શ્લોકમાં કહ્યું છે કે “વાલપ્રવેષનાર્થોઽ” આમાં બાલક કોને કહેવા? આમાં બાલકો એને કહેવા કે જેને જે બાળતમું જ્ઞાન ન હોય તેને. જેમકે એક માણસને એક કલા આવડે છે અને તેજ કલા બીજા માણસને નથી આવડતી. આમાં જેને આવડે છે તે મોટો અને નથી આવડતી તે નહાનો કહેવાય. બીજું એક ૧૦ વર્ષનો બાલક હોકરો હોય તેને અમુક જાતનો ઉલોગ આવડે છે અને તેજ ઉલોગ (૫૦) પચાસ વર્ષના માણસને નથી આવડતો આમાં પણ (૧૦) દશ વર્ષનાને મોટો કહેવો અને (૫૦) વર્ષનાને નાનો કહેવો એ આશય શ્રીમદ્ભાગવતનો છે.

જુઓને આપણે બધા સિદ્ધાંતના સારથી અજાન છીએ તેથીજ આપણને ઉદેશી શ્રીમદ્ભાગવતને બાલક કહેલ છે. ઉપરના લખાણમાં મારી નાની શુદ્ધિ પ્રમાણે ઘણી ભૂલો હશે. તે વેળાથી સુધારીને વાંચી મને ક્ષમા આપશે એજ વિનંતિ કરી છું આ લખાણથી વિરમું છું.^૧

જગત તે મિથ્યા હોય ?

(લેખક:—રા. રા. હિંમતલાલ ભોગીલાલ શાહ, સુ. સાવલી.)

(ગતોક્તી ચાલુ.)

કૃષ્ણદાસ—ભાઈ ઘટ અને દેહનો તમે નાશ માની છો, પણ તેવું નથી. વસ્તુતઃ આ દેહ તથા સંધ્યું જગત એ પ્રભુના સદંશમાંથી બનેલું હોઇ અલ્પકાર્ય હોવાથી સત્ય છે તેથી ઘટ અને દેહનો નાશ થતો નથી. પણ તે પોતપોતાના મૂળ કારણતત્ત્વમાં બળી જાય છે. દેહમાં જીવાત્મા હોય ત્યાં સુધી હલનચલન સર્વ ક્રિયા થાય છે, આ દેહમાંથી જીવાત્મા જતાં દેહ પંચતત્ત્વમાં ભળે છે. અને ઘટ ભાંગી જતાં મૃત્તિકા રૂપ મૂળ તત્ત્વમાં ભળે છે. તેથી કંઈ પોતાનું અસલ તત્ત્વ કંઈ નાશ પામતું નથી. એટલે જેમ મૃત્તિકાઓ ઘટ અને ઘટમાં મૃત્તિકા રહેલી છે, તેવીજ રીતે આ જગતમાં અલ્પ અને અલ્પમાં જગત રહેલું છે. નામરૂપાદિ એ પશુ સૃષ્ટિ કાર્યની અંદરજ છે.

હરિપ્રસાદ—અલ્પ નિર્ગુણ અને નિર્ધર્મક છે તો પછી આ જગત તેનું કાર્ય કેમ ?

કૃષ્ણદાસ—નિર્ગુણ એટલે પ્રાકૃત ધર્મોથી રહિત શુદ્ધ આનંદમય અલ્પ નિર્ધર્મક નથી. પણ અલ્પ સર્વધર્મયુક્ત છે તે તે વિરુદ્ધધર્મોત્ત્રય છે. અલ્પ નિર્ધર્મક હોય તો જ્ઞાન શી રીતે સંભવે ? અલ્પના તમામ ગુણો આનંદમય અને અધૈાકિક હોઇ તે સર્ગી અને સાકાર છે. તે મહાનુભાવ મહાન અને અણુમાં અણુ જેવું છે. હાથ નથી છતાં વસ્તુ મૂકી શકે છે અને પગ નથી છતાં દોડે છે. એવા અનેક ગુણયુક્ત હોઇ અલ્પ વિરુદ્ધધર્મોત્ત્રય છે.

હરિપ્રસાદ—તમારા કહેવા મુજબ જગતનો કર્તા અલ્પ છે એમ કહાય માનીએ પણ જગત કાર્યરૂપે બહાર પડ્યા પછી પાછું કારણ રૂપમાં શી રીતે આવી શકે ? ઘટ જાણે માટીનો બનેલો હોવાથી તે ભાગી જતાં માટી રૂપ રહે છે, એ ઠીક છે, પણ આ જગત કાર્ય અસલ રૂપમાં કેવી રીતે જાણ શકે ! જેમ હાથનું દહીં જળ્યા પછી અસલ રૂપમાં જઈ શકતું નથી તેમ આના સંબંધમાં કેમ ન માનવું ?

કૃષ્ણદાસ—દરેક વસ્તુના એ પરિણામ હોય છે, એક અવિકૃત અને બીજું વિકૃત પરિણામ. અવિકૃત એટલે મૂળ કારણજ સર્વ કાર્યરૂપ થાય છતાં પણ કારણમાં કોઈપણ પ્રકારનો વિકાર ન થાય કે ફેરફાર ન થાય અને અસપ્ત સ્થિતિમાં આવે તેને અવિકૃત પરિણામ કહે છે. અને વિકૃત એટલે તમો કહો છો તે પ્રમાણે કોઈ વસ્તુને ફેરફાર થયા પછી કાર્ય મૂળ કારણમાં ન આવે તેને વિકૃત પરિણામ કહે છે. જેમ સુર્વજીના કુડકામાંથી અનેક કુડાળ આલેશ્ય જનાવ્યા છતાં તે કાર્ય મટી અસલ કારણમાં આવી શકે છે. તેવીજ રીતે આ જગત કાર્ય એ પોતાના અસલ કારણ અલ્પમાં આવી શકતું હોવાથી કાર્ય કારણને બાધ આવતો નથી, કે જગત અને અલ્પની સત્યતામાં કંઈ ન્યૂનતા આવતી નથી. આને અવિકૃત પરિણામ કહે છે. સુર્વજીમાં કુડાળ અને કુડાલમાં સુર્વજી, પાણીમાં ખરફ અને ખરફમાં પાણી, માટીમાં ઘટ અને ઘટમાં મૃત્તિકા કાર્ય કારણરૂપે પ્રથમથી રહેલા છે. તેવીજ રીતે અલ્પમાં જગત અને જગતમાં અલ્પ કારણરૂપે રહેલું છે એટલે કાર્ય અને કારણ એક હોઇ તેને સમવાયિકારણ કહે છે.

હરિપ્રસાદ—મૃત્તિકા કારણ અને ઘટ કાર્ય એ બન્ને સમવાયિકારણ હોવા છતાં અને કુંભાર, ચક્ર, દંડ એ અંગજૂત કારણો હોઇ જેમ ઘટ બનાવવામાં તે નિમિત્તકારણ કર્તા (કુંભાર) ની જરૂર પડે છે તેમ જગત અને અલ્પ સમવાયિકારણ માનીએ તો પણ તેને ઘટ માફક

લુહું નિમિત્ત કારણ હોયું જોઈએ ને તે નિમિત્ત કારણ એટલે કર્તા સિવાય જગત નવું કાર્ય બનવું અશક્ય છે.

કૃષ્ણપ્રસાદ—તમારું કહેવું ખરું છે, જેમ ઘટ કુંડલ આભરણાદિક તેમ છતર કાર્ય બનવા ને લૌકિક નિમિત્ત કારણ અને સમવાયિકારણ લુહાં હોય છે. એટલે કર્તા લુહો હોય છે. એ ખરું પણ બ્રહ્મ અને જગતના સંબંધમાં તેવું નથી, કારણ બ્રહ્મ એ અચિંત્ય અને અનંત-શક્તિયુક્ત છે. તેથીજ તેના શ્રેણીનું વર્ણન કરતાં શ્રુતિ નેતિ, નેતિ બોલી અટકી જાય છે. કારણ બ્રહ્મ ઝીણું મજબૂર સમાન નાનામાં નાનું અને હાથી જેવું મોટામાં મોટું હોઈ અનેકશુદ્ધયુક્ત છે. એટલે બ્રહ્મની સ્વમજ્જા ચતા તે બની શકે છે. ઘટ કુંડલની માફક તેને નિમિત્ત કારણોની જરૂર નથી. પોતેજ નિમિત્ત કારણ (કર્તા) તેમ સમવાયિકારણ પણ પોતેજ છે એટલે જગત અને બ્રહ્મ વચ્ચે અભિજાતા હોઈ જગતનું કાર્ય કારણ અને કર્તા પણ પોતેજ છે.

હરિપ્રસાદ—ઘટ અને મુતિકાનો દાખલો આપી આપ જગત અને બ્રહ્મની અભિજાતા બતાવો છો. પણ મારું માનવું માટીમાં બીજાં તરવો મળવાથી જેમ ઘટ ઉત્પન્ન થાય છે. તેવીજ રીતે કુદરતી તરવો બેમાં મળવાથી જગત આપોઆપ ઉત્પન્ન થાય છે. એટલે જગત અનિર્વચનીય છે, એ ખરું, પણ તે મિથ્યા છે. ફક્ત બ્રહ્મ એક ખરું છે.

કૃષ્ણદાસ—જે વસ્તુ સત્ય હોય તેનો નાશ પણ ન થાય અને મિથ્યા માનતા હોય તો તેને અનિર્વચનીય શી રીતે કહી શકો ? આપ જગતને અનિર્વચનીય કહો છો તો તેની સત્યતાજ કહી શકો. આપ બ્રહ્મને માનો છો અને જગત એ બ્રહ્મનું કાર્ય છે. બ્રહ્મ સત્ય વસ્તુમાંથી તે ઉત્પન્ન થયું છે. હવે જો તેને અસત્ય માનશો તો બ્રહ્મ પણ અસત્ય કંઈ ? માટે જગતને મિથ્યા કહી શકાય નહીં. એ પ્રશ્નકૃત્ય હોઈ સત્ય છે અને જીવ ઉપાધિએ રચાએલો સંસાર મિથ્યા છે.

હરિદાસ—જગત અને સંસાર એકજ છે. તેને આપ લુહાં કેમ બતાવો છો ?

કૃષ્ણદાસ—અહીંજ તમે બૂલતા લાગો છો. જગત અને સંસાર વચ્ચે મોટો ફાસો છે. જગત એ બ્રહ્મકૃત્ય છે, અને સંસાર એ જીવે અવિવારણી ઉપાધિથીજ રચેલો છે. તેને જગતની સત્યતા સાથે કંઈ સંબંધ ન હોઈ સંસાર જીવકૃત હોવાથી મિથ્યા છે.

હરિદાસ—જગતને બ્રહ્મકૃત કહો છો એ કીક પણ જ્યારે જગત અને જીવ એનું કૃત છે તો પછી જીવના જેવી ઉપાધિ એને કેમ ન લાગે ? કારણ ? કાર્ય કરનારજ ઉપાધિપાત્ર થાય પછી સંસાર જીવ કૃત કેમ કહો છો ?

કૃષ્ણદાસ—બ્રહ્મમાંથી જીવ, જગત ઉત્પન્ન થયું છે. (સદૃશ ધર્મમાંથી જગત અને સત્ય-ચિત્ત ધર્મમાંથી જીવ) જીવમાં આનંદ તિરોહિત છે. જીવ અવિદ્યાએ કંઈ પોતાના સ્વરૂપની વિસ્મૃતિ પામી જવાથી અને દેહ તથા સંસારનેજ ખરો સમજી તેમાં યંચાયા કરે છે અને હું અને મારું આ વાસનાથી જન્મ-મરણરૂપ સંસાર થાય છે. જેમ સૂર્યપ્રકાશથી અંધકાર દૂર થઈ સર્વ વસ્તુ પ્રકટરૂપે દેખાય છે. તેમ જીવને પોતાના આત્મસ્વરૂપનું જ્ઞાન થતાં અવિદ્યાનો નાશ થાય છે ને પોતાના ખરા સ્વરૂપને જાણે છે. ત્યારે સંસાર માયા રાહિતો આપોઆપ નાશ થાય છે. માયા જેવી ઉપાધિ બ્રહ્મને લાગે તો તેને સ્વનંતતા રહી ક્યાં ? એટલે આણું કંઈ બ્રહ્મના સંબંધમાં નથી. પોતે તો સ્વઆનંદી છે. જેમ કરોડીયો બળ કાઢી તેમાં રમણ કરે છે. પણ તેમાં તે લપટાતો નથી. તેમ સંસાર માયા સાથે બ્રહ્મને કંઈ સંબંધ નથી. કારણ બ્રહ્મ આનંદસ્વરૂપ છે. પોતે સર્વ કરવાને સમર્થ છે. આ પ્રમાણે જગત કાર્ય અને સંસારમાં એક હોઈ જગત સત્ય છે અને સંસાર એજ મિથ્યા છે.

હારમસાદ—ધારો કે જગત સત્ય છે પણ તેવું જગત કાર્ય કરવાનું બ્રહ્મને શું પ્રયોજન ? બ્રહ્મ તો સ્વઆનંદી છે ?

કૃષ્ણપ્રસાદ—બ્રહ્મ પોતે સ્વઆનંદી હોવા છતાં પોતાને બદ્ધરૂપ થઈ જગદ્ગુરૂપ બનવાની ઇચ્છા થતાં, જીવ, જગત રૂપે થયા. આપણે એકલા બેસી રહીએ તે કરતાં થાંચ મનુષ્યો વગેરે બેસવાથી વધારે આનંદ લાગે છે. અને આપણું મન કેવું પ્રવૃત્તિત રહે છે ? તેનો તમો અનુભવ કરશો તો જરૂર આ રહસ્ય સમજાશે. બ્રહ્મ જો કે સ્વઆનંદી છે પણ પોતાને જીવો સાથે લીલા કરવાની તેમ પોતાનું માહાત્મ્ય જણાવવાની ઇચ્છા થતાં પોતાના ખીચોના રૂપી જીવ જગતને ઉત્પન્ન કરી તેમાં પોતે રમણુ કરે છે. પોતાની આવિર્ભાવશક્તિદ્વારા જગતને પ્રકટ કરે છે અને તિરોભાવશક્તિથી લય કરે છે. સુવર્ણનાં કડાં કુંડળ વગેરે અનેક આભરણુ કરવામાં આવે છે છતાં તેને એકરૂપ કરતાં સુવર્ણરૂપ બને છે. ને તેવી કરી સુવર્ણુ કારણ કે કુંડળકાર્યમાં કંઈ ન્યૂનતા આવતી નથી તેમ જગત કાર્યરૂપી થયાં છતાં બ્રહ્મને પોતાની સ્વતંત્રતા કે સત્યતામાં કંઈ ન્યૂનતા આવતી નથી. જેમ કરાળીઓ પોતે જાળ કાઢી તેની રચના કરે છે અને તેની ઇચ્છા થતાં તે પોતે ગળા જાય છે. તેવીજ રીતે બ્રહ્મ પોતાની રમણુ કરવાની ઇચ્છા થતા જીવ, જગતને ઉત્પન્ન કરે છે અને પાછું પોતાનામાં લય પામી રહે છે.

હારમસાદ—શું ત્યારે આ જગત બ્રહ્મમાં પ્રથમથીજ વિદ્યમાન છે ?

કૃષ્ણપ્રસાદ—હા, જગત એ પ્રભુએ બનાવેલું ક્રીડાભાગ છે. પ્રભુને લીલા કરવાનું સ્થાન છે. અને તે પ્રથમથીજ વિદ્યમાન છે. જેમ ઘટ બનાવનાર મૃત્તિકાનેજ લે છે, ઘટ બનાવનાર તંતુઓને મદદલુ કરે છે, દહીંની ઇચ્છા રાખનાર દૂધને મેળવે છે, કુંડળ બનાવનાર સુવર્ણુ લે છે. એટલે સુવર્ણુ મૃત્તિકા વિગેરે કારણમા ગુપ્ત રીતે કાર્ય અવસ્થા પહેલા કાર્ય વિદ્યમાનજ હોય છે, તે કર્તાનો વ્યવહાર થયા બાદ ટુર્તજ કાર્યરૂપે સ્પષ્ટ જણાવા લાગે છે. તે પહેલા કારણમાં લીન હોય છે. જેમ લાકડામાં અગ્નિ, તણમાં તેલ, દુધમાં દહીં અને તેમાં ધૂન પ્રથમથીજ વિદ્યમાન હોવા છતાં કાર્યના અભાવે તેમાં ગુપ્ત વસ્તુ રહેલી છે. તેવીજ રીતે કારણ બ્રહ્મમાં કાર્યરૂપ જગત અઆકૃત અવસ્થામાં તિરોહિત હોય છે. તે બ્રહ્મની ઇચ્છા થતાં આવિર્ભાવશક્તિદ્વારા કાર્યરૂપે જગત પ્રકટ કરે છે. એટલે આ સર્વ બ્રહ્મમાં પ્રથમથીજ વિદ્યમાન છે. પરંતુતઃ જગતનો નાશ તથા મિથ્યા કહેવામાં આવે છે તે મૂર્ખતા છે. પૈશુ ખરી રીતે જગત એ ભગવતકાર્ય હોવાથી બ્રહ્મથી અભિન્ન છે અને તે આવિર્ભાવતિરોભાવાત્મક હોવાથી જગત નિત્ય અને સત્ય છે.

ઉપરાંતહાર—એક બ્રહ્મજ્ઞ સ્વેચ્છાથી નાના પ્રકારે જગદ્ગુરૂપે થયું. અહીં જોય નીચ થવામાં પોતાની ઇચ્છાજ કારણ છે. આમાં ધર્મિરૂપે બ્રહ્મ આનંદમય, ઇચ્છારૂપ નિજ ધર્મથી પરિણામ પામે છે. કાળ એ ભગવાનની એજા છે અને એનાથી સમગ્ર વિશ્વ એજાને પામે છે. એ કાળથી વાયુ વાય છે, સૂર્ય તપે છે, મેઘ વરસે છે. જગત બ્રહ્મમાંથી ઉત્પન્ન થયું છે અને જગતનું કારણ બ્રહ્મ છે. આથી જગત અને બ્રહ્મ વચ્ચે ભેદ છે. બ્રહ્મના સત, ચિત, આનંદ એ ધર્મો છે. એમાંથી સત ધર્મોનો આવિર્ભાવ થાય તેને જગત કહેવાય છે. બ્રહ્મના આધિભૌતિક, આધ્યાત્મિક અને આધિદેવિક ત્રણ સ્વરૂપો છે તેમાં જગત એ આધિભૌતિક રૂપ છે. આધ્યાત્મિક સ્વરૂપ અક્ષરબ્રહ્મ છે. અને આધિદેવિક સ્વરૂપ પરબ્રહ્મ છે, અક્ષરબ્રહ્મ પોતાનું ધામ છે અને તે અક્ષરબ્રહ્મ અનેક કર, ચરણ, મરતક, મુખ, નેત્રાણું છે. એજ અક્ષરબ્રહ્મ આ જગદ્ગુરૂપતાને પામે છે. તિરોભાવ થતાં જગતરૂપ ક્ષરબ્રહ્મ અક્ષરબ્રહ્મમાં અને અક્ષરબ્રહ્મ પરબ્રહ્મ પૂર્ણાનંદ

સ્વરૂપમાં સાચુજ્ય પામે છે. શ્રીભગવાનના ધર્મસ્વરૂપ, ધર્મસ્વરૂપ અને કાર્યસ્વરૂપ આ પ્રમાણે ત્રણ ઐત્ત્રિક સ્વરૂપ છે. તેમાં ધર્મસ્વરૂપ શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન પરબ્રહ્મ છે અને સત, ચિત્ત અને આનંદ એ ધર્મસ્વરૂપ અક્ષરબ્રહ્મ છે. અને સદ્સ્વરૂપ આ સદ્ધર્મ જગત ક્ષરબ્રહ્મ કહેવાય છે.

હરિપ્રસાદ—ભાષ કૃષ્ણદાસ, આજે તમે મારા જીવનમાં નવો પ્રકાર નાખ્યો ને આપના વિચાર મારા હૃદયમાં દંડતા પામ્યાથી મારા હૃદયમાં કંઈ અતેરી આનંદલહેરો ઉડી રહી છે. જયશ્રીકૃષ્ણ જંયશ્રીકૃષ્ણ કહી બન્ને ધ્રુવકો છુટા પડે છે.

ટેક રાખો.

(“ પરજ્યા એટલે પ્યારા લાડી, ચાલો આપણે ઘેર રે.” એ રાગ.)

- | | | |
|------------------------------|-------------------------|----|
| હું રે તમને વિનવું મ્હારા, | બહાલા શ્રીમજ્જનાથજી; | |
| અપરાધી છઉં શ્રી વલ્લભને, | લેટાડો શ્રી નાથજી. | ૧ |
| વલ્લભકુળના બાલક સઘળા, | શ્રીવલ્લભનું રૂપજી; | |
| અપરાધીને શરણે લઇને, | આપે અદક્ષી હુંફજી. | ૨ |
| આ ભારતમાં ભાવે પ્રગટયા, | “વલ્લભ વિઠ્ઠલ”. દેવજી; | |
| વલ્લભ વિઠ્ઠલ શ્રીજી અમને, | આપજ શરણે લેવજી, | ૩ |
| આ ભારતનાં ભાગ્યજ મ્હોટાં, | લેટે છે ભગવાનજી; | |
| ભારત વિષ્ણુ દોષ બૂ નહીં એવી, | જ્યહાં ખેડ્યા એ મ્હાનજી | ૪ |
| ધન્ય ધન્ય એ મજ્જની ભૂમિ, | જ્યાં-કીડે ધનરથામજી; | |
| ધન્ય ધન્ય ગોકુળના જન, | ખોલે રાધે રથામજી. | ૫ |
| રથામ સ્વરૂપે ધેન ચરાવી, | જમનાજીને તીરજી; | |
| કદમ વૃક્ષ પર આરઠ થઇને, | ચોર્યા જેણે ચીરજી. | ૬ |
| રાધાજીની સાથે રમીયા, | જ્યાં એ નૌતમ રાસજી | |
| બે ગોપીની વચ્ચે પ્રગટી, | પુરી મનગી આશજી. | ૭ |
| તેવી આશા મજવનિતાની, | પુરી હે મજ્જનાથજી ! | |
| તેવી આશા ભકત જનોની, | પુરો મ્હારા નાથજી. | ૮ |
| ભકતોને ભણુકારા વાજે, | આબ્યા શ્રીનંદલાલજી; | |
| એક બીજને ક્યારે કહેશે ? | બેડો ભેવા ચાલજી. | ૯ |
| કૃષ્ણ કનૈયે કામણ કીધું, | ખોલી દીધા ઠાનજી; | |
| શરણે લઇને નિજ ભકતોને, | આપી નવલી સાનજી. | ૧૦ |
| સુંદર વરથી સગપણ સાંધી, | સોપી દીધો હાથજી; | |
| જીવ હૃદને પતિતજ દેખી, | આખો પ્રભુનો સાથજી. | ૧૧ |
| વિઠ્ઠલ વિનવે વારે વારે, | વાણી વિરમે છેકજી; | |
| વાણીથી પર શ્રી વનમાળી, | રાખો અંતે ટેકજી. | ૧૨ |

લેખક—વિઠ્ઠલદાસ લાલદાસ રોહાવાળા.

પ્રકાશક—નગીનદાસ માતીલાલ ધાણાવાળાના જય શ્રી કૃષ્ણ.

માલાપ્રસંગની ઐતિહાસિકતા.

(લેખક—રા. રા. રામલાલ શુનીલાલ મોદી.)

ત્રણસો વર્ષ ઉપરનો સત્યાગ્રહ.

વિક્રમના સત્તરમા સ્વતંત્રતા હેઠળ ચરણના આરંભમા એક સત્યાગ્રહનો પ્રસંગ બન્યો હતો. આઘીજીનો સત્યાગ્રહ રાજ્યકીય અને ભારત-વાપી હતો. જ્યારે આ સત્યાગ્રહ ધાર્મિક અને મધુ-રાની આસપાસના મજમુડગમા જ ફેલાયો હતો વળી એ ધાર્મિક સત્યાગ્રહ વ્યક્તિવાચક—એક જ વ્યક્તિના અભય અને ધૈર્યના ફલરૂપ હતો, જ્યારે આ રાજ્યકીય સત્યાગ્રહમા ભગભગ આખા સમાજે ભાગ લીધો હતો. છતાં પણ બંને સત્યાગ્રહની પદ્ધતિ સરખી જોવામા આવે છે. બંને નિઃશસ્ત્ર હતા અને પ્રજાજી રાજ્યમત્તાની સામે હતા. પરંતુ ત્યારની રાજ્યમત્તાના અને હાલની રાજ્યસત્તાના સ્વરૂપમા ફેર છે હાલની રાજ્યસત્તા ગમે તેવા પણ કાયદાથી નિયંત્રિત છે અને તેને જગતના અનુકૂળ અને હિતજનક અભિપ્રાયની અપેક્ષા રાખવી પડે છે અત્યારના સત્યાગ્રહી પાસે પ્રકાશન અને પ્રચારના જેવા વિપુલ સાધનો છે, તેવા પ્રાચીન સત્યાગ્રહી પાસે ન હતા તે વખતે બાદશાહનો શબ્દ તે જ કાયદો ગણાયો અને તેને જગતના અભિપ્રાયની દરકાર નહોતી તેમા પણ એ સત્યાગ્રહ જહાગીર જેવા મમતી અને સત્તાપ્રિય બાદશાહ સામે હતો. છતાં પણ સત્યાગ્રહના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તો અનુસાર તે નિઃશસ્ત્ર અને ધૈર્યયુક્ત હોવાથી સફળ થયો હતો આઘીજી કહે છે કે પ્રજાજી પ્રજાજી સત્તા સામે એક પણ વ્યક્તિ નિહોંધ સત્યાગ્રહ આદરે તો પણ તે વિજયી થયા વિના રહે નહિ, એ સિદ્ધાન્તનું આ સત્યાગ્રહ સમર્થન કરે છે

આ સત્યાગ્રહની દખીલત ટૂંકામા આ પ્રમાણે છે ચિદ્રૂપ નામના મન્યાસીના ઉપદેશથી જહાગીર બાદશાહે એવો દુકમ કર્યો હતો કે કોઇએ દુવસીની માળા પહેરતી નહિ દુવસીની માલા વેષ્યુવ સંપ્રદાયોનું આવરણ ચિદ્રૂપ ગણાય છે એથી એનો ત્યાગ એ સંપ્રદાયોને વિષાદક હતો. પરંતુ જહાગીરી દુકમની મામે કોણુ યર્ષ થકે ? તે સમયે નજમડગમા શ્રીવલ્લાચાર્યજીના શુદ્ધદ્વૈત અને શ્રીહિતહરિવંશજીના રાધાવલ્લભી સમ્રાઢયનું પ્રાગત્ય હતું તેમના ધણા અનુયાયીઓએ દુવસીમાલાનો ત્યાગ કર્યો, પણ શ્રીવલ્લાચાર્યજીના (ચતુર્થ) પૌત્ર શ્રીગોકુળનાથજી (સં. ૧૬૦૮-૧૬૯૭) એ તેમ કર્યું નહિ જહાગીરના દુકમનો અમર કરાવવા ચિદ્રૂપ ઉગ્મે નથી મધુરામા આવીને રહ્યો હતો અને જહાગીરે તેને એ બાબતમા સર્વ સત્તા સોંપી હતી. તેણે શ્રીગોકુળનાથજીને ધણી ધણી લાલચો અને ધમકીઓ આપી, પણ તેને વચ્ચે થયા નહિ. હેવટે પોતાના દુકમના અનાદર માટે જહાગીરે તેમને કાસ્ટીર જેવા દૂર અને વિકટ મારગવાળા પ્રદેશમાં એમાસાની નકલમા બોલાવ્યા અને તેઓ ગીતેર વર્ષની ઉંમર છતાં પ્રવાસના અનેક કષ્ટો ભોગવી સાં ગયા ત્યાં પણ માળા ઉતારવાને તેમને સાફ ના પાડી. એ ઉપરથી જહાગીરે તેમને ધરખાર ત્યજવાનો દુકમ કર્યો તે પ્રમાણે તેઓ ગોકુળ ત્યજીને સોરભમા જઈ રહ્યા, પણ માળા ત્યજી નહિ પાછળથી જહાગીરને પોતાની જૂન સમગ્રજાત અને તેનું ચિદ્રૂપ પ્રત્યેનું માન ધરી મધુ, ત્યારે તેણે પોતાનો દુકમ રદ કર્યો અને શ્રીગોકુળનાથજી ગોકુળમા આવીને રહ્યા.

મૂળ કાવ્ય.

આ પ્રસંગ બ્યારના રહેવાસી વેષ્યુવ કવિ એપાળાસે ‘માલોદાર’ એ નામના વર્ણનમિત્રિત ગુજરાતી ભાષાના વિસ્તૃત કાવ્યમા વર્ણવ્યો છે. એ કાવ્ય સં. ૧૬૬૬ માં રચાયું હતું. આ

કાવ્ય આપું પ્રકટ થયું નથી, પણ તેનો હુંકા સાર નહીંઆદના સ્વ. લક્ષુભાઈ પારેખે સં ૧૯૬૪ મા પ્રકટ કર્યો હતો અને કંઈક લાખો સાર મોડાસાના શ્રી. મગનલાલ ગાંધીએ લખેલા શ્રીગોકુલ નાયજના જીવનચરિત્રમાં આપેલો છે. તે પછી એ કાવ્યની એક હસ્તલિખિત પ્રત જોઈ છે.

પરંતુ આ પ્રસંગની હકીકત ફારસી અથવા નોર્થવેસ્ટી જોવામાં આવતી નથી, તેથી ધણીને તેની ઐતિહાસિકતા વિશે શંકા ઉત્પન્ન થઈ છે. એ શંકાનું નિવારણ કરવું, એ આ લેખનો ઉદ્દેશ છે. મૂળ પ્રસંગ બન્યા પછી આ કાવ્ય માત્ર પીચ વર્ષમાં જ રમાયું હતું, અને શ્રીગોકુલનાયજના હાલમાં પ્રવેશ પછી બે જ વરસમાં રચાયું છે. તેમાં એટલી બધી ઝીણી વિગતો છે કે તે પ્રથમ દર્શને જ ઐતિહાસિક હોવામાં શંકા ઉત્પન્ન થાય તેવું નથી, છતાં પણ તેને બારીકાઈથી તપાસી, તેની ઐતિહાસિકતા સિદ્ધ કરીશું. આ અંશમાં કેટલીક બાબતો અતિશયોક્તિભરેલી છે એ કબૂલ કરીશું; પણ તે ઇતિહાસ નથી, પણ કાવ્ય-માર્ગિક કાવ્ય-છે એ વાત જૂલવી જોઈએ નહિં છતાં પણ એમાંની વિગતો ઇતિહાસ સાથે મેળવતાં જ એ સત્ય જણાઈ છે, એમાં એક પણ પ્રસંગ એવો નથી જણાયો કે જે ઇતિહાસવિરોધી હોય.

કોઈ પણ કાવ્યની ઐતિહાસિકતા સ્થાપિત કરવામાં આ ત્રણ બાબતો સત્ય છે કે કેમ તથા તેનો ઇતિહાસ સાથે મેળ થયો છે કે કેમ તે જોવું જોઈએ—(૧) સ્થળો, (૨) મનુષ્યો અને (૩) પ્રસંગો. આ કાવ્યની આ બાબતો તપાસીએ

સ્થળો:

આ કાવ્યમાં શ્રીગોકુલનાયજના કાશ્મીરના અવાસનું વિગતવાર વર્ણન છે. તેમાંના સ્થળો કાવ્યનિક નથી. કેટલાક અત્યારે પણ હયાત છે. બાકીના જહાગીરના અવાસવર્ણન સાથે મળે છે. ખુશાબના બળવા વખતે આગ્રાથી લાહોર અને ત્યાર પછી કાશ્મીરના પ્રથમ અવાસે તે ગયો છે એ પ્રવાસોમાં કરેલા મુકામના જે નામ આપ્યા છે તે શ્રીગોકુલનાયજના અવાસના સ્થળ સાથે ઘણી ખરી રીતે મળતાં છે.

કાવ્યમાં ગોકુળથી કાશ્મીરનું અંતર-ચીનગર સુધીનું-૪૪૪ કોચ જણાવ્યું છે જહાગીર આગ્રાથી કાશ્મીરનું અંતર ૩૭૬ કોચ લખે છે. પરંતુ આમાં બે બાબતો વિચારવાની છે જહાગીરે કાશ્મીરની હદ સુધીનું અંતર લખ્યું છે, એટલે કાશ્મીરની હદથી ચીનગર સુધીનું ચાળાસેક કોચનું અંતર કાવ્યના અંતરમાંથી બાદ કરવું જોઈએ વળી શ્રીગોકુલનાયજ કાશ્મીર જતા નિમ્બ્યા તે વખતે પ્રથમ આગ્રામાં ત્યાંના હાકેમ લાકરખાનને મળવા ગયા હતા. એટલે ગોકુળથી આગ્રાનું ૨૦ કોચનું અંતર પણ તેમાંથી બાદ કરવું જોઈએ એ બે અંતર બાદ કરીશું તો બને આઠકા સરખાજ થયે.

કાશ્મીરના વર્ણનમાં ત્યાંના બ્રાહ્મણોના આચારસંબંધી કાવ્યમાં આ પ્રમાણે લખ્યું છે—

“હિંદા વિદ્યા તો હે બહોત, ચે” નહિ કહ્યું આચાર,

બ્રાહ્મણ અઠ નામ મ્હેચ્છો તેસોઈ વિદવાર.”

(૬,૪૨૨)

આ સંબંધી જહાંગીર ઘુઝકે જહાંગીરીમાં આ પ્રમાણે લખે છે:—

“ Although most of the houses are on the riverbank, not a drop of water touches their bodies. In short, they are dirty outside as inside, without any cleanliness.

There is also a body of Brahmans living from old in this country who still remain there and talk in the Kashmiri tongue. Outwardly one cannot distinguish them from Mussalmans. They have, however, books in Sanskrit language and read them.”

—રાજર્સ અને વિવરિતકૃત અનુવાદ ભા. ૨ પૃ. ૧૪૮ અને ૧૫૦.

મનુષ્યો.

આ કાવ્યમાં જણાવેલાં સ્થળો જેમ સત્ય છે, તેમ તેમાં જણાવેલા મનુષ્યો પણ ઐતિ-
સિક છે, તેમાં જણાવેલાં જહાંગીરના ઘુઝકના માણસો અને સરદારોનાં નામ કાચ્છીપદોમાં
આવે છે. એટલુંજ નહિ પણ તેઓ જે હોદ્દા ઉપર હતા તે પણ ઇતિહાસ તપાસનાં
માં લાગે છે. તેનો વિચાર અહીં કરીએ. તેમાંથી જે નામો સામાન્ય ઇતિહાસમાં પ્રસિદ્ધ છે
તે કે પુરાણ, પુરંમ નરજહાન, અસરખાન—તે તપાસવાની જરૂર નથી, પણ જે નામ સામાન્ય
તેહાસનાં પુસ્તકોમાં જોવામાં આવતાં નથી તે અહીં તપાસીશું.

(૧) ઉલ્લેખનો હાકેમ મહુમ્મદ, તરી.

જહાંગીર તેને સં. ૧૬૭૧ માં મહુમ્મદ મોહમ્મદ હતા (ઘુઝક, ભા. ૧ પૃ. ૧૫૮) મહુ-
મ્મદના સુબાનું મુખ્ય સ્થળ હતું, એટલે ઉલ્લેખ તેના તાબામાં હતું.

(૨) આમનો મુબેદાર લરકરખાન.

સં. ૧૬૭૧ માં ત્યારે જહાંગીર કાશ્મીર જતા નીકળ્યો ત્યારે તેને દક્ષિણમાંથી બેલાવી
આમનો હાકેમ નીચેનાં હતા. (ઘ. ૨, પૃ. ૮૧.)

(૩) ચિદ્રૂપનું અપમાન કરનાર પૂરજહાનો બનેલી હાકેમ બેગ.

પૂરજહાની બેન ખાદીખ બેગમને તે પરણ્યો હતો. (ઘ. ૨, પૃ. ૩૦૬)

(૪) શ્રીગોકુળનાથજીનો વિરોધી સારંગદેવ.

એ પંતજના કોષ માંમનો જાગીરદાર અને જહાંગીરનો ખાદીખનાર હતા. (ઘ. ૨, પૃ. ૧૮૨).

(૫) શ્રીગોકુળનાથજીને સોરમ નહિ જતાં પોતાના રાજ્યમાં આવવાનું

આમનજી આપનાર રાજ રતન હાકે.

એ જુદીના રાજ બોજ હાકેનો પુત્ર હતો. એને જહાંગીરે સર જુદાંદરાજનો ઇલાખ
આપ્યો હતો. (ઘ. ૧, પૃ. ૧૩૧).

(૬) જહાંગીરની મહેતારીર મરીઅમ ઝમાની.

અકબર બાદશાહની બેગમ, જહાંગીરની મા અને રાજ લખવાનહાસની બેન (ઘ. ૨, પૃ. ૬૪).

(૭) રાજસંગ જુરહીઆની દીકરી અને જહાંગીરની. બેગમ માનીબાઈ.

ગિલાનના રાજા રાજ હમ્માજીમજીનો પુત્ર રાજ રાજસિંહ, એ જુરહીઆ કહેવાતો. (ઘ. ૧,

૧. આ લેખમાં જ્યાં જ્યાં ઘુઝકે જહાંગીરી (એટલે ઘુઝક) નો નિર્દેશ છે, ત્યાં ત્યાં આ અનુવાદનું
જ સૂચન સમાવ્યું.

૨. ૧૫. હફ્ઝાબ, પાર્શ્વે મહેતારીનો અર્થ જમાનખાનની જગતી એ અમજદારબેગમ કહેવામાં
૧૫. ૧૮) એ શબ્દ છે. તેનો અર્થ માં મોં છે.

પૃ. ૧૩૭) તેની પુત્રીને જહાંગીર પરણ્યો હતો. (પૃ. ૧, પૃ. ૧૩૨) આ બેચમનું નામ ફારસી ગ્રંથોમાં નથી, આ કાવ્ય તે નામ પૂરું પાડે છે.

(૮) બેના આધા ઉપર જહાંગીરે ચિદ્રૂપનો હાથ મુકાવ્યો હતો તે ખુલાસી.^૨

જહાંગીરના પાટકુંવર ખુશરો પુત્ર, જેને અસહજાને જહાંગીરના મરણ બાદ યોગ દિવસ માટે દાવજનક નામથી બાદશાહ બનાવ્યો હતો, પણ પાછળથી શાહજહાંના ફરમાન પ્રમાણે મારી નાખ્યો હતો. આ નામ તુરુકે જહાંગીરીમાં નથી,^૨ પણ Peter Mundy ના પ્રવાસવૃત્તાન્તમાં (History of Jahangir by Beni Prased. p. 338) અને Gladwin ના જહાંગીરના ઇતિહાસમાં (પૃ. ૧૬૦) છે. કન્ઝોલમાં પણ એ નામ છે, અને શાહજહાંને તેના કરાવેલા ખૂનની તોંધ તેમાં છે. (જ. ૨૦).

પ્રસંગો.

રચણ અને મનુષ્યોના નામ કરતા, ઐતિહાસિકતાના પ્રતિપાદનમાં પ્રસંગોની સત્યતા અને તેમનું કાલાનુસંધાન વધારે મહત્ત્વનાં છે. તેનું નિરીક્ષણ આપણે હવે કરીએ.

(૧) સં. ૧૬૭૪ માં જહાંગીર ગુજરાતમાં આવ્યો હતો, ત્યારે તે ચિદ્રૂપને ઉબ્બેન આચળ એક ગ્રામમાં મળ્યો હતો હતો.

“એહેવે સંવત સોળ આહોતેરે ઘઘ એક વાત,
જહાંગીર નુપ આગરેથી જતો હતો ગુજરાત.
અવંતી જઈ ઊતરેથી નુપ જોવાને કરી ખાત,
પૂછ્યું તે વળતું તેહને ‘ક્યાં રહે છે મહાત ?’
ગ્રામ માંહાં દેખાડીઓ ત્યાંહાં ગયો તેણી વાર.”

આમાં પ્રથમ સંવતનો વિચાર કરીએ. આ કાવ્યમાં જણાવેલાં વપ અને માસ ઉત્તર હિંદની મથુના અનુસાર છે; એટલે સંવત ચૈત્રમાં બદલાય છે અને માસ પૂર્ણિમાન્ત છે, અર્થાત્ વર્ષમાં માસારંભ થાય છે. જહાંગીર ઇ. સ. ૧૬૧૬ ના નવેમ્બરની દશમી તારીખે નીકળી (પૃ. ૧, પૃ. ૪૪૦) માહું તથા ખંભાત ઘણું ગુજરાતના પાટનગર અમદાવાદમાં ઇ. સ. ૧૬૧૮ ના જાનેવારી માસની પાંચમી તારીખે, એટલે સં. ૧૬૭૪ ના પૌષ માસમાં દાખલ થયો હતો. તેથી કાવ્યમાં આપેલો સંવત બરાબર છે.^૩

૧. ૨૧. લક્ષ્મણ પારેખ જુલાઈ એટલે નાનની વાળી એ ઉપરથી જુલાઈ એટલે નાનમાં વાળી પહેનાર જહાંગીરનો કોઇ મંત્રી એવો તર્ક કરે છે. (પૃ. ૧૮), પણ એ યદિત નથી, તેમ તેને માટે કોઈ આધાર રજૂ નથી.

૨. તુરુકે જહાંગીરના અનુવાદો રોજર્સ અને જિવરિજ તેની સંધિમાં ઘનીઆલની પુત્રીનું નામ જુલાઈ હર્લ એમ જણાવે છે. મૂળ ગ્રંથમાં તેમણે એ નામ કાંઈમાં લખ્યું છે, એટલે એ એમનો તર્ક હશે. તે વાત સત્ય હોય તો પણ ખુશરો પુત્રનું નામ જુલાઈ હર્લ એ જોઈએ છે, અને ગાદી વારસ તરીકે જ તેને ચિદ્રૂપ પાસે આવીવાંદ આપાવ્યો હોય એમ માનવું વધારે યોગ્ય છે.

૩. શ્રીગણેશનાથજીનો ચરિત્રમાં સં. ૧૫૭૨ નું વર્ષ આપ્યું છે, એ શા આધારે તે સમજાવતું નથી. ૨૫. લક્ષ્મણ સં. ૧૬૭૪ નું વર્ષ આપે છે અને એ જોએથી હાથપ્રતમાં પણ એ જ વર્ષ છે. સંસ્કૃત કન્ઝોલમાં પણ મૂલ ન થાય તેવા અક્ષરાતુકમમાં સં. ૧૬૭૪ નું જ વર્ષ રચી રીતે છે.

૪. ચાંચાંચુનિરસેન્દુમિતે વર્ષે (૧૬૦૪) જહાંગીરે યવનાનામલિકાનાં દાર્વમીમો નિજામપદાં। ગુર્જરેષે.....૪૦ ૫. ૮૦ ૧).

ઉજ્જૈન આમળની યુદ્ધમાં જહાંગીરની ચિદ્રૂપ સાથે મુલાકાત યદ્ય હતી, એ ઐતિહાસિક ખીના છે. તેનું વિસ્તૃત વર્ણન ઘણુંક બા. ૧ માં પૃ. ૩૫૫ થી ૩૫૯ સુધીમાં આપેલું છે. ઘણુંકમાં નામ 'જદ્રૂપ' છે, એ ફારસી લિપિને લીધે દર્શે. માસિરુલ હિમરામાં અને ઇકબાલ નામામાં 'અચદ્રૂપ' નામ છે, એટલે મૂળ શબ્દ નામ 'ચિદ્રૂપ' હોવામાં શંકાને સ્થાન નથી.

(૨) જહાંગીર યુજરાતથી ફાગણ માસમાં ફતેહપુર સીકરી યદ્ય, આગરે સં. ૧૬૭૫ માં પાછો આવ્યો હતો.

“ સંવત સોળ પચોતેર યુજરાતથી જહાંગીર,
ફાગણે આવ્યો આગરે, ત્યારે મારગમાં મહાધીર.
શ્રીજી અ તે શીકરી લગી દેવાને આશીર્વાદ
પધાર્યો સાદામા ત્યાં, રાખવાને મર્જદ. ”

જહાંગીર ઇ. સ. ૧૬૬૯ ની વસંત ઋતુમાં યુજરાતથી પાછો આવ્યો હતો, પણ આગ-રામાં ખેગ હોવાથી સીકરીમાં થોડો વખત રહ્યો હતો. આ માટે લુઓ શ્રી, વેણીપ્રસાદના શબ્દો:—

“ Owing to the prevalence of plague at Agra, Jahangir passed the spring of 1619 at Fatehpur Sikri and entered the metropolis in the middle of April ” (p. 300)

ઈ. સ. ૧૬૧૯ ની વસંત ઋતુ, એટલે સં. ૧૬૭૫ નો ફાગણ માસ.

(૩) જહાંગીર કાશ્મીર જવાનો છે, એ વાત સાંભળીને ચિદ્રૂપ ઉજ્જૈનથી નીકળી સં. ૧૬૭૬ ના વાસો સુદ દશમે મયુરા આવ્યો હતો.

“ લીધું કોઈ એક દિવસ પછી કાશ્મીરનું મુહૂર્ત,
તે સંન્યાસીએ સાંભળીને વિચારી મન વ્રત;
‘આગળ પેટે જઈને હું રહું મયુરા માંહે,
દેશાધિપતિ શું નિર્ધાર કરવા ત્યાંહે. ’
x x x x
પછે સંવત સોળસે ઉતરે આશ્વિન મુદિ દશમીય
ચિદ્રૂપ આવ્યો એણી ગમે સદુ દેશમા લભીય. ”

જહાંગીર ઇ. સ. ૧૬૧૯ ના દેશના દિવસે આગરેથી કાશ્મીર જવા નીકળ્યો હતો (પુ. ૨, પૃ. ૧૦૧), તેથી ઉત્તર હિંદની વર્ષગણના પ્રમાણે વિક્રમ સંવત ૧૬૭૬ હતો, એ સ્પષ્ટ છે. તેના ચિદ્રૂપની સાથેના મયુરાના મેળાપ માટે ઘણુંક બા. ૨, પૃ. ૧૦૪ થી ૧૦૭ જોવાં. એમાં એ મેળાપનું વિસ્તારપૂર્વક વર્ણન છે.

(૪) મયુરામાં ચિદ્રૂપની સલાહથી જહાંગીર ખુશરૂને નજરકેદમાંથી મુક્ત કર્યો હતો.

“ સુલતાન ખુશરૂ બંધાયે, જાદ્યો તખતિ છતકે કહ્યો. ”

મયુરાથી ઉપડ્યા પછી જન્દાવન મુકામે ખુશરૂને છોડવાનો જહાંગીર હુકમ કર્યો હતો, એ વાત ખરી છે. (પુ. ૨, પૃ. ૧૦૭). જહાંગીર પોતે તો ચિદ્રૂપના ઉપદેશની વાત લખતો નથી, તો પણ ખીજા કંઈનાં પ્રમાણે એનું સમર્થન કરે છે. Gladwinના કંઈમાં એ વાત સ્પષ્ટ રૂપે જણાવી છે. ઇકબાલનામામાં લખ્યું છે કે ખુશરૂના સસરા ખાન બાઝમના કહેવાથી ચિદ્રૂપે ખુશરૂને છોડાવ્યો હતો.

“ The Iqbal-nama, 128, calls him Achadруп and says that Khan Azam went privately to him and begged him to use his influence

with Jahangir for the release of Khusrav Achadrup spoke accordingly and Khusrav was released "

(Tuz. II, p. 104, foot-note)

કલ્લોલમા પશુ આ વાત નોંધેલી છે

(૫) શ્રીગોકુળનાથજી સં ૧૬૭૭ ના આવણ (ગુજરાતી આષાઢ) વદ ૯ ના રોજ ૧૭મી નીકળી કારમીર બાદરવા સુદ ૧૩ ના દિવસે પહોંચ્યા હતા અને આસો વદ ૨ (શ્રાવણ) ના દિવસે બાદશાહની મુલાકાત લીધી હતી હવે એ જોવાનું છે કે એ મુદત દરમ્યાન જહાંગીર કારમીરમા હતો કે નહિ ? વૃષ્ટિકે ઉપરથી જણાય છે કે તેણે ૪ સ ૧૬૨૦ ના મિહિર હીનાની ૧૩ તારીખે કારમીરમા દશરાતો વહેવાર ઉજવ્યો હતો અને એ જ મહીનાની ૨૭ મી તારીખે ત્યાંથી આવ્યા જવા નીકળ્યો હતો પ્ર. સ ૧૬૨૦ એટલે બાદરવા-આસોમા ચૈત્રી વંત ૧૬૭૭ હતો

(૬) બાદશાહે કારમીરથી પાછા આવતા ગોકુળમા મુકામ કર્યો હતો અને માંખાનિવેધનો કેમ રહ્યો હતો. આથી શ્રીગોકુળનાથજી સ ૧૬૭૭ ના ચૈત્ર (શ્રી કાગળ) વદ ૫ મેારમથી ૧૩મી વદ દશમે ગોકુળ પાછા આવ્યા હતા

" ચૈત્ર વદિ પચમી શુક્રવારે સૂર્ય ત્રણ વહી ચડતે

વિજય કર્યો સોરમથી મહા સુંગશ નગારા બડતે

x x x x x x

સવત સોળ સતોતરે ચૈત્ર વદિ દશમી છુધવાર રે,

શ્રીગોકુલેશ ગોકુલ પ્રવેશ કરે ચડેલ દિન ધરી ચાર રે.

આ ઉપરથી જણાય છે કે બાદશાહે કાગળ સુદમા હુકમ રહ્યો હતો

જહાંગીરે કારમીરથી આવતા ગોકુળ મુકામ કર્યો હતો, એનો વૃષ્ટિકમા સ્પષ્ટ નિર્દેશ છે —

" Next day Gokul was the place of encampment "

(Tuz. II, p 196)

સમય માટે નીચેની હકીકત ખ્યાનમા લેવાની છે. કારમીરથી આવ્યા પછી પુરત તેણે ૬. ૧. ૧૬૨૧ ના માર્ચ માસની દશમી તારીખે પોતાના રાજપાલિકેટનું સોળમું વર્ષ ઉજવ્યું હતું (વૃ ૨, ૫ ૧૯૬) એટલે સં. ૧૬૭૭ ના મહા કે કાગળમા (ફેબ્રુઆરી) તે ગોકુળમા હતો એ સ્પષ્ટ છે

મૂળ પ્રસંગ.

આ પ્રમાણે આ કાવ્યમા જણાવેલા રચનો, અનુષ્ઠો અને પ્રસંગો બધાજ ઐતિહાસિક રી છે, તેથી તે કાવ્ય કાર્પનિક નથી તે પછી માંખાનિવેધનો પ્રસંગ કારસી પ્રથેમા કેમ નથી ? આના ઉત્તરમા જણાવવાનું કે જહાંગીરના સમયનો બધાજ કારસી ઇતિહાસના પ્રથેના અનુવાદ હજી પ્રકટ થયા નથી, માત્ર વૃષ્ટિકે જહાંગીરનો અનુવાદજ પ્રકટ થયો છે તેથી બધાજ પ્રથેમા નથી, એમ ચોક્કસ રીતે ન કહી શકાય આ પ્રસંગ કાર્પનિક ઉગ્રો કરવાને કશુંજ કારણ નથી કદાચ એમ માનીએ કે શ્રીગોકુળનાથજીના સેવકે તેમનું ગૌરવ વધારવાને આ પ્રસંગ ઉગ્રો કર્યો છે, પણ તેની અદર એવી કેટલીક વિગતો છે કે જો એ બનાવગી હોત તો તેમા કાબજ કરવામા આવતાજ નહિ શ્રીગોકુળનાથજી સિદ્ધ પાસે વારવાર જાય, જહાંગીરને

એવું લખી આપે કે સિદ્ધ, ધર્મોત્સાર જે કહેશે તે કળ્પ કરીશું. તેમના મોટા ભાઈની આજ્ઞાનો અનાદર, મુસલમાન અમલદારોને વારંવાર મળવું—એ એવી ખીનાઓ છે કે જેનાથી તેમનું ઘૃસ્ત્ર વધતું નથી. વળી, જે પ્રસંગ-કાલ્પનિકજ ઉભો કર્યો હોય તો શ્રીગોકુલનાંયજ્ઞ મેરુજ બાદશાહના તેડાવ્યા કાશ્મીર-સુધી ગયા એમ થા માટે લખાયે? પોતાના ચમત્કારી પ્રભાવથી બાદશાહ પાસે ગોકુળમાંજ હુકમ રદ કરાવ્યો એમ કેમ ન જોઈવી શકાય? કાશ્મીરમાં જઈને પણ મૂળ હુકમ તદ્દન રદ ન કરાવ્યો અને દેશવટાતું ફરમાન મેળવ્યું એમાં પણ માનદાનિ જેવું નથી શું? આ વિગતો એવી છે કે જે પ્રસંગ મિથ્યાજ્ઞ કલ્પવો હોત તો આવી વિગતો અંદર દાખલજ કરવામાં ન આવત. મૂળ પ્રસંગના સંબંધમાં એક પણ ચમત્કારિક વાત નથી, એજ તેની ઐતિહાસિકતાનો પુરાવો છે. કાશ્મીર પહોંચવામાં તેમને દોઢ માસ થયો હતો, એને બદલે એમજ લખત કે પોતાના પ્રભાવથી રૂઢ કથાકથાં પહોંચી ગયા. જે આવું કંઈક લખ્યું હોત તો તેને માટે શંકા લેવાને કારણ મળે.

ઇતિહાસમાં એકતરફી પુરાવો મો છે.

કાશ્મી અંથોમાં આ પ્રમં નો ઉલ્લેખ ન હોય તેથી કહીને તેની ઐતિહાસિકતા ધટતી નથી. એકપક્ષી પુરાવો પણ જે વિશ્વસનીય હોય તો તે ઇતિહાસમાં ગ્રાહ્ય થઈ શકે છે. એનાં ઇતિહાસમાં ધણું દર્શાવે છે. મહાન સિકંદરની હિંદી ચડાઇ સંબંધી કોઇ પણ હિંદી લેખનું પ્રમાણ નથી, છતાં પણ ગ્રીક લેખકોના પુરાવા ઉપરથી એ ખીના ઐતિહાસિક હરી છે. મહમ્મદ ગઝનવીની સોમનાથની સ્વારી સંબંધી કોઇ પણ બ્રાહ્મણ કે જૈન ગ્રંથમાં નિર્દેશ નથી, એથી એ બનાવની સત્યતા માટે રવ. મહિમાય નજીબાઈએ એક વખતે શંકા ઉઠાવી હતી, પરંતુ એને કોઇ તરફથી અનુભાદન મળ્યું નથી કાશ્મી અંથોના પુરાવા ઉપરથી જ એનો ઇતિહાસમાં આંદર થયો છે. અલ્લાઉદ્દા ખુરીને કરજનો પ્રધાન માધવ ગુજરાતમાં લાવ્યો હતો એ માટે મુસલમાન લેખકોએ કંઈ લખ્યું નથી. પરંતુ ધર્મારણ્ય અને કાન્હાદે પ્રમંથ એ બ્રાહ્મણપ્રથો ઉપરથી અને વિચારણેષી અને તીર્થંકર એ તાત્કાલીન જૈન ગ્રંથો ઉપરથી એ વાત સિદ્ધ થઈ ચૂકી છે. રજપુતાનાના ઇતિહાસમાં પણ એવી ઘણી બાજતો છે કે જે કાશ્મી અંથોમાં ખોટી રીતે નોંધાય છે. બધી બાજતો લખવાથી વિસ્તાર થાય તેમ છે, તેથી માત્ર અકબર અને જહાંગીર સંબંધી વાતોનોજ વિચાર કરીશું.

અણ્ડજલે અકબરનામામાં લખ્યું છે કે અકબરે મોકલેલો પોપાક સ્વીકારી પ્રતાપે અકબરની અધીનતા પ્રથમ સ્વીકારી હતી અને કુંવર અમરસિંહને અકબરના દરબારમાં મોકલ્યો હતો; પણ આ વાત પંડિત ગીરીશંકર જોશીએ જૂઠી સાબીત કરી છે. નૌરોઝના મીના બજારની અનીતિ માટે કોઇ પણ કાશ્મી અંથમાં ઉલ્લેખ નથી, છતાં પણ બિકાનેરના રાવ પૃથ્વી-સિંહના રચેલા દુહાઓમાં તે સ્પષ્ટ છે. એથી કવિશ્રી નાનાલાલે એ વાત સાબીત માની છે.

૧. અકબરનું પોતાનું એક મજ બાણનું કવિત મિષ્વરબુલ્લોદમાં આપ્યું છે. તેમાં એક રમણીનું ચિત્ર છે. તે રમણીને મીના બજારમાંથી કોળવીને ઉપાડી લાવેલી હોય એમ લાગે છે. એ પ્રભાણે તે ગ્રંથના સંપાદકોનું માનવું છે. એ કવિત નીચે આપું છું.—

છાદિ શકર ચાલકીં મોહ અચિત મહીં ચલિ મીતર મીને ।

મુન્દર દારીહી દીઠિં લગાયકે ભાગિવેકો અમ પાવત મીને ॥

ચૌક તકીં ચંદુ બોર બિલોકન ચંક સુકોચ રહો મુલ મીને ।

મોં છવિ નૈન છવિલોકે છાંજત મનોં વિહોહ વેરિ મુગ છીને ॥

અકબરના જૂદા જૂદા ધર્મો પ્રત્યેના વસણોની વિગતો ફારસી ગ્રંથોમાં નથી, એ ધર્મોનાં લખાણો-
માથી જ મળી આવે છે. અકબરના વૈષ્ણવધર્મ પ્રત્યેના વસણની હકીકત પણ આદરોદી
ફરમાનોમાંથી મળે છે.^૧

જહાંગીરનું લખાણ.

જહાંગીરે વૃજુકમાં લખ્યું છે કે પ્રતાપનો પુત્ર અમરસિંહ પોતાની સાથેના મુઢની સેક-
આતમાં જ નથી પડ્યો હતો અને તેના પુત્ર વાધસિંહને પોતાના દરબારમાં ગોકલ્યો હતો આ
બીના પણ બીજા પ્રમાણોના આધારે પકિત ગૌરીચંદરે નાપાયાદાર સાબીત કરી છે. જહાંગીરે
બીજી ઐતિહાસિક બાબતો સંબંધી પણ કાં તે જ્ઞાન સેબ્યું છે અગર તે તે પાઠકેર લખી છે.
વૃજુકનો તરબુમો કરનાર બિવરિજ લખે છે કે જહાંગીરે પોતાના આપ સમિતેના બળવાની
બાબતમા અને શેર અફઘાનના મૃત્યુના સંજોગોની હકીકતમાં ટાંકપીઝોડો કર્યો છે:—

“Jahangir has glossed over his rebellion against his father and
the circumstances of Sher Afghan's death”—Preface to Tuzuk.

તેણે નૂરજહાનના પૂર્વપ્રેમ તથા તેની સાથેના પોતાના લગ્ન સંબંધી પણ એક અફસર
પણ લખ્યો નથી. વળી પોતે ખુરાસ્ની આબો ફાઝલી હતી અને શાહજહાંએ તેનું ખૂન કરાવ્યું
હતુ એ સંબંધી બીજાં સ્વતંત્ર પ્રમાણો મળે છે, છતાં પણ જહાંગીરે તે તે બાબતમાં જ્ઞાન
જ સેબ્યું છે. આપણે આગળ જોયું કે ચિદ્રપના કહેવાથી ખુરાસ્ને છાડ્યો હતો, છતાં પણ તેણે
પોતાનું મદત્ત ધરે તેથી ચિદ્રપની દરબાનગીરીનો સ્વીકાર કર્યો નથી. શ્રી. વેણીપ્રસાદ જહાંગીરના
મશસક હોવા છતાં લખે છે કે જે બાબતમા પોતાના ઉપર અદેજ પણ જવાબદારી આવે તેણે
પણ પ્રસંગ જહાંગીરે તોખ્યો નથી:—

૧. આ ફરમાનો દિ. બ. કૃષ્ણલાલ ઝવેરીએ સંપાદિત કર્યા છે, પણ હજી મહટ થયા
નથી. તેમની કૃપાથી તે હું જોષ શક્યો છું, તેમા શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીને ગોકુળ અને જતીપુરા ગામની
જમીન બાંધાવું, (એ ગામે હાલ પણ તેમના વંશજોના તાબામા છે) તેની હદમાં શિકાર ન કરવાવું
અને શાહી અમલદારોએ તેમની પાસેથી કરવેરા ન લેવાવું, તેમને કોઇ પણ પ્રકારે સતામણી
ન કરવાવું વગેરે જણાવ્યું છે. એક ફરમાનમાં શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીને ‘માફત-આગા’ એટલે
ઈશ્વરી ચાનના ચાતા જણાવેલા છે. એક ફરમાન તો અકબરની માતા હમીદા
બેગમના નામનું છે, જે મુગલ ઇતિહાસમાં વિરલ છે એમ દિ. બ. કૃષ્ણલાલભાઈનું ધારવું છે.
મધુસૂદનમહટ્ટક વશાવલિમાં લખ્યું છે કે સં. ૧૬૨૮ માં શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી અને અકબરનો મેળાપ
થયો હતો અને તેણે હાલતું ગોકુળ જે જગ્યાએ છે એ જમીન આપી હતી, ત્યાં કને ગામ
વસાવી, શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી મયુરાધી આવી રહ્યા હતા. હાલ મધુ એ નવા ગોકુળના નામે જ પ્રસિદ્ધ
છે. કવિશ્રી નાનાલાલે અકબરશાહ નાટકમા ‘ગોકુળ સુસાંધજીને આપ્યું’ એમ લખ્યું છે, પણ
પાછળથી ‘વ્રજ વ્રજરામને આપ્યું’ એમ શુદ્ધિપત્રકમાં સુધાર્યું છે. તેમને જે આ હકીકતની ખબર
હોત તો એમ સુધારો કરવાની આવશ્યકતા ન રહેત.

૨. આ ફરમાનોમાં જહાંગીરનું મોલાપ્રસંગ સંબંધીનું ફરમાન નથી, પણ તે હોવાનો સંભવ
નથી, કેમકે જહાંગીરે મોલાના કુદરો કર્યો હતા, લેખી ફરમાન એ સંબંધી કાઢ્યું ન હોતું,
એમ કાબ્ય વાંચતાં જણાય છે.

“The former (Jahangir) would hardly mention a deed for which ultimately he must be partly held responsible.”

(History of Jahangir, p. 336)

આના અપવાદરૂપે અર્ધુદ્ધતના ખૂનનો પ્રસંગ ગણવો પડે.

સર ટોમસ રોની મુલાકાત.

૫૨૦૬ સૈધી વધારે અગત્યની બાબત તો સર ટોમસ રોની જહાંગીરની મુલાકાત સંબંધી છે. તે ઇસ્લામા રાજના એલચી તરીકે હિંદુસ્તાનમાં આવ્યો હતો અને જહાંગીરને અજમેર મુકામે ઇ. સ. ૧૬૧૬ના જાનેવારીની ૧૦ મી તારીખે બર હરબારમાં મળ્યો હતો. એટલું જ નહિ પણ તે અજમેરમાં નવેબર સુધી રહ્યો હતો અને જહાંગીર ઝુજરાત આવવા નીકળ્યો ત્યારે તેની હાવણીમાં છેક માંડું સુધી સાથે હતો. છતાં પણ જહાંગીર દુરુકમાં એ સંબંધી ઈશારો સરખોએ ક્યો નથી. તો શું એ મુલાકાત કપોલકલ્પિત માનીયું ? રો અને તેના સાથીદારોએ એ મુલાકાત સંબંધી એટલું તો વિગતવાર લખ્યું છે કે તે ઐતિહાસિક ખીના તરીકે ઇતિહાસમાં સ્થાન પામી ચૂકી છે અને તે વિષે સહેજ પણ શંકા ઇશવવાની કોણે દિંમત કરી નથી. આ સંબંધી જહાંગીરનું મૈન હોવા છતાં પણ ખીજ પક્ષના પુરાવાથી આ વાત ઇતિહાસસિદ્ધ માનવામાં આવે, તો માળાપ્રસંગ સંબંધી જહાંગીરનું મૈન હોવા છતાં ખીજ પ્રમાણથી તે ઇતિહાસસિદ્ધ કેમ ન ગણાય, તે સમજાવ્યું પડતી નથી.

જહાંગીરના મૈનનો ખુલાસો.

સર ટોમસ રોની મુલાકાતનો જહાંગીર ઉલ્લેખ ન કર્યો તેનું કારણ એવું છે કે એ મુલાકાત સફળ નહોતી થઈ. તેણે ઇસ્ટ ઇન્ડીયા કંપની માટે જે વહેપારી લાગોની માગણી કરી હતી તે જહાંગીરે કબૂલ રાખી નહતી. આથી આ નિષ્ફળ મુલાકાતનો ઉલ્લેખ કરેલા જહાંગીરે ઉચિત નહિ માન્યો હોય. એ પ્રમાણે માળાનિષેધનો દુકમ તેણે પાછળથી ૨૬ ક્યો તેથી એ નિષ્ફળ દુકમની તોફ લેવાની જરૂર તેણે નહિ જોઈ હોય. પોતાનો દુકમ ૨૬ ક્યો એમ જણાવતા તેને માનહાનિ પણ જણાઈ હોય. વળી, શ્રીગોકુલનાથજી પ્રત્યેનું તેનું વલણ પાછળથી બદલાયું અને ચિદ્રખી વાતો પોતે જણાવ્યાં, એ કારણથી પણ મૂળ વાત દાખી રાખવામાજ તેણે કદાપણ જોયું હોય. નરજહાં અને આસફખાનનું વલણ શ્રીગોકુલનાથજી પ્રત્યે મૂળથી હતું તેથી તેમણે પણ એ પ્રસંગ દુરુકમાં ન દાખવ કરવાને આમદ કર્યો હોય. દુરુક કંઈ રાજનિશિ જેવું યુસ્તક નથી, તેમાં પ્રત્યેક દિવસની હકીકત નોંધાઈ નથી. વચમાં દિવસોના દિવસો અને કોય વાર તો મહીનાના મહીના કોરા જણાય છે. અને જહાંગીર પોતે કંઈ રાજ ને રાજ લખતો નહિ. મૂળ હકીકતો તેના વાકાનવિશો (વૃતાન્તલેખકો) લખી રાખતા અને અવકાશ મળે ત્યારે એ સાંભળાને પછી પોતે લખતા. તે પ્રમાણે લખતાં એ હકીકત લખવી રહી ગઈ હોય અગર તો તેના વાકાનવિશો બલભદ્ર અને ગોવિંદાસનું વલણ શ્રીગોકુલનાથજી તરફ હતું, તેથી તેમણે પણ હકીકત લખાવતાં એ ખીના યત્ન રાખી હોય. અત્રે તે કારણ હોય, પણ જહાંગીર માત્ર તે ખીના ન લખી, એટલા જ ઉપરથી તેની અનૈતિહાસિકતા સાબીત થતી નથી.

વિશેષ પ્રમાણો.

હા, જો આ પ્રસંગ માટે ખીજ પ્રમાણો ન હોત તો તે વિષે શંકા લેવાને કારણ ગણાય ખરું. પણ ખીજ કયા પ્રમાણો તે સંબંધી મળે છે તેનો વિચાર હવે કરીએ. આ પ્રમાણોના બે વિભાગ કરી શકાય છે—પરોક્ષ અને પ્રલક્ષ. પ્રથમ પરોક્ષ પ્રમાણો જોઈને પછી પ્રત્યક્ષ પ્રમાણો વિચારીયું.

પરોક્ષ પ્રમાણો.

આ પ્રસંગ સંબંધી વૃજુકની એક બે આંકતરી બાંજતો ઉપરથી કંઈક પ્રકાશ મળે છે. તેમાંની એક એ બાબત છે કે ચિદ્રૂપનાં કેટલાંક કાર્યોથી જહાંગીરનું મન કારમીર થયા પછી ચિદ્રૂપ ઉપરથી ઉતરી મધું હતું. આ વાતને એ બાબતથી ટેકા મળે છે કે કારમીરથી આવતાં તે ચિદ્રૂપને મળવા જતો નથી. પ્રથમ જ્યારે જ્યારે તેના પ્રવાસમાં ચિદ્રૂપનો મુકામ આવતો ત્યારે ત્યારે તેને મળવા જતો. શુજરાત આવતાં અને ત્યાંથી પાછા જતાં ઉજ્જૈનમાં અને કારમીર જતાં મધુરામાં તેની મુલાકાત લેવા જાય છે અને કારમીરથી આવતાં ગોકુલમાં મુકામ કરે છે છતાં પણ મધુરામાં તેને મળવા કેમ નથી જતો? આ શું તેનું મન ચિદ્રૂપ ઉપરથી ઉતરી ગયું હતું, એમ નથી જણાવતું? બીજું, ઇકલાંબનામાં લખ્યું છે કે ચિદ્રૂપને જહાંગીરના સાદુ હાકિમબેગે નિર્દય માર માર્યો હતો:—

"He was Cruelly beaten by Hakim Beg".

(Tuz. II, p. 104-foot-note).

જે ચિદ્રૂપ ઉપર જહાંગીરનો અભાવ થયો ન હોત તો હાકિમ બેગ આટલી બધી હિંમત કરે ખરો કે? કલ્લોલમાં લખ્યું છે કે જહાંગીરે કારમીર જતાં મધુરામાં મુકામ કર્યો હતો; ત્યાંથી તેણે મુકામ ઉપાડ્યા પછી, એક દિવસ હાકિમ બેગે ચિદ્રૂપની શકામાં જોડા પહેરીને જવાનો પ્રયત્ન કર્યો હતો. એટલા નહવા કારણથી જહાંગીરે તેને મારી નાંખવાનો હુકમ કર્યો હતો, પણ પાછળથી પ્રસારના કહેવાથી તેને સભા કરવા ચિદ્રૂપ પાસે મોકલ્યો હતો. ચિદ્રૂપે તેને એનાજ જોડા માથામાં મારીને કાઢી મૂક્યો હતો: એ વાતનું પેર લેવાને જ કદાચ હાકિમ બેગે જહાંગીરનો ચિદ્રૂપ પ્રત્યે અભાવ થવાથી તેને માર્યો હશે, જે આ પ્રમાણે અભાવ થયો હોય તો જહાંગીરને ચિદ્રૂપની વાત જોડી જણાવતાં માથાનિષેધનો હુકમ તેણે રદ કર્યો હોય એમાં કંઈ આશ્ચર્ય નથી.

પ્રત્યક્ષ પ્રમાણો.

હવે આપણે માળાપ્રસંગસંબંધી પ્રત્યક્ષ પ્રમાણો જોઈએ: 'માલોદાર' કાર્ય સંબંધી તે આપણે ઉપર વિસ્તારથી વિચાર કર્યો છે. તે સિવાયનાં પ્રમાણો અવગણીશું.

૧. કલ્યાણ ભટ્ટ નામના શ્રીગોકુળનાયકના સેવકે શ્રીગોકુલરાજાનારણ્ય નામનું બહુ વિસ્તૃત સંસ્કૃત કાવ્ય રચેલું છે. એમાં શ્રીગોકુળનાયકનું ચરિત્ર વર્ણવેલું છે. એના કલ્લોલ નામના પંદર ખંડ છે, અને પ્રત્યેક કલ્લોલમાં તરંગ નામના અધ્યાય છે. તેમાં કલ્લોલ ૭, ૮, ૯, માં માલા-પ્રસંગનું વર્ણન છે. આમાંથી પ્રો. ગોવિંદલાલ ભટ્ટની કૃપાથી ક. ૭, ૮ મેં વાંચ્યા છે. જહાંગીર સાથેના શ્રીગોકુળનાયકના કારમીરની અંદર યજ્ઞેશ સંવાદ તથા તરંગમાં વર્ણવેલો છે. આ કાવ્યમાં ચાદજીજીવાન ગાદીએ આપ્યાનો નિર્દેશ છે અને ઘમોદરના "પાખંડપ્રકાશ"માં કલ્યાણ ભટ્ટ ઉપર કટાક્ષ છે, તેથી તેની રચના સં. ૧૬૮૫ થી સં. ૧૬૯૩ સુધીમાં યજ્ઞેશ એમ હું માનું છું.

૨. શિશુપાલ મંથણી જ્યો સંગ્રહમાં પ્રેસિદ્ધ છે અને જ્યો શ્રીગોકુળનાયકના ભગીન હતો, તે આચાર્ય શીહરિયાભાઈ શ્રીગોકુળનાયકની સ્તુતિનું એક અષ્ટક રચેલું છે. તેના ૮ માં શ્લોકમાં માળાપ્રસંગનો ઉલ્લેખ છે:—

તાલગૈકપર: પરાશયવિદાં વર્ય: પરાનન્દદો માલ યેન સુરક્ષિતા નિજમહાયનેન કળે સતાં ।

યર્મો યેન વિવર્ષિત: વિવૃપદાચારપ્રચાર: સદા સ શ્રીગોકુળનાયક: કરુણ્યાં મૃયાદરે સેવિનામ ॥

૧. માલોદારકાવ્યમાં આ બાબતમાં એમ લખ્યું છે કે હાકિમ બેગે દારૂ પીને હાથમાં દારૂનો પ્યાલો લેધને શકામાં પેસવા પ્રયત્ન કર્યો હતો. આ વાત અતિશયોક્તિભરેલી જણાય છે; કલ્લોલની વાત માનવા લાયક છે.

શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીયવૈષ્ણવમહાસભા તરફથી લેવાયેલી પારિતોષિક
પરીક્ષાઓનું પરિણામ.

શ્રી. પુ. મા. વૈષ્ણવ મહાસભા તરફથી ગણ સાલમાં પારિતોષિક પરીક્ષાઓ સં. ૧૯૮૭ના
આસો સુદ ૧૫ ના દિવસે જુગ જુગ મામેમા લેવામા આવી હતી. જેનું વિગતવાર પરિણામ
તેજજ નિર્ણોત કરેલું પારિતોષિક નીચે મુજબ છે—

(પરીક્ષાના ચાર વર્ગો રાખવામા આવેલા હતા. પ્રવેશ, મધ્યમા, ઉત્તમા તે વિશિષ્ટ)

માર્ક મુજબ નંબર પરીક્ષણ નામ. શામ ગ્રજાંક ઈનામની રકમ.

વિશિષ્ટ વર્ષ ૧ હું.

૧	સરૈયા ગિરિધરદાસ નારાયણદાસ	નડીઆદ	૮૩	મુજબ પદક તથા પુસ્તક મળી રૂ. ૫૦)
---	---------------------------	-------	----	---------------------------------------

ઉત્તમા પરીક્ષા.

૧	ચીમનલાલ કીશોરદાસ શાહ	નડીઆદ	૬૬	૧૦
૨	ચાન્તિલાલ હીરાલાલ પરીખ	વડોદરા	૬૨	૮
૩	દેશાઈ નંદલાલ ત્રીકમવાલ	સિદ્ધપુર	૬૦	૭
૪	આસ રતિલાલ પુરુષોત્તમદાસ	નડીઆદ	૫૭	૬
૫	રાવળ રામચંદર જ્યેષ્ઠારામ	"	૫૨	૫
૬	પંડ્યા કુર્માચંદર દામોદર	"	૫૦	૫
૭	શા. જીસીલાલ અમૃતલાલ	"	૪૬	૫

મધ્યમા પરીક્ષા.

૧	રમણલાલ જ્યેષ્ઠારામ શાસ્ત્રી	કોમરેક	૮૮	૧૨
૨	શેઠ ગોકુળદાસ મગનલાલ	દાહોદ	૭૦	૬
૩	શેઠ હરિલાલ જોશલાલ	"	૬૨	૫
૪	પનાલાલ હીરાલાલ પરીખ	વડોદરા	૫૫	૪
૫	શા. વલ્લભદાસ મગનલાલ	દાહોદ	૪૮	૩
૬	હરિદાસ જમનાદાસ	ધારી	૪૭	૩

પ્રવેશ.

૧	પુરુષોત્તમ નાથારામ શાસ્ત્રી	પેટલાદ	૬૧	૧૦
૨	ધનસયામ મણિલાલ શાહ	"	૮૯	૬
૩	તારા બહેન ગિરિધરલાલ	"	૮૪	૬
૪	લીલાવતી	"	૮૪	૬
૫	મદનલાલ	"	૮૩	૬
૬	હીરાદાદમી ગોસ્વમીદાસ	"	૮૨	૬
૭	ચંદ્રાદાબહેન ચુનીલાલ	"	૮૨	૬
૮	દેવીદાસ મોતીલાલ પરીખ	"	૭૭	૩
૯	કાકીવા બાબુલાલ મનસુખ	વીરપુર	૭૭	૩
૧૦	વાઠીલાલ ચુનીલાલ શાહ	પેટલાદ	૭૬	૩

દાસિક કાવ્ય સં. ૧૭૧૮ માં રચેલું છે. તેમાં પણ આ પ્રસંગનો ઉલ્લેખ હોવાનો સંભવ છે. આ કાવ્યની પ્રત મેં મેળવવા પ્રયત્ન કર્યો હતો, પણ મળી શકી નથી, તેથી તેનું પ્રમાણ આમાં દાખલ કરી શક્યો નથી.^૧

ધણાક ઐતિહાસિક પ્રસંગો માત્ર એક કાવ્યથી રચાવિત થઈ શક્યા છે, તે આટલાં બધા પ્રમાણો હોવાથી માળાપ્રસંગ ઐતિહાસિક ગણવાને કાંઈ પણ જાતની દરકત આવતી જોઈએ નહિ.

૧. આ મનુસૂત્રન સદના પુત્ર રણછોડ સદે કાકોલીના સમસાગર ઉપરના નવ ચોડીમાં પત્થરો ઉપર કાતરેલું પચીસ સર્જનું 'રાજપ્રશસ્તિ' નામનું મહાકાવ્ય રચેલું છે. તેમાં ઉત્તેપુરના રાજાઓનો ઇતિહાસ છે. એવડું લાલુ સિલાકાવ્ય આખા જગતમાં નથી.

શ્રીગોકુલેશ્વરનું ઐતિહાસિક ચરિત્ર આરસો પાનાંથી પણ વધારે કાંઈ નું રા. લલિતસાર્થ જનલલાલ રેસાઈએ છપાવેલું, તેમને ત્યાંથી જ (કે. ૧૧૦, સિન્ધોરોડ-અમદાવાદ) મળે છે.

અઢીસો પાનાનું સર્વોત્તમ સ્તોત્ર.

કૌંભત ઘટાડીને અઢી આના કર્યાં, ટપાલ ખર્ચ દોઢ આનો છે.

મૂલપાઠ, જપપાઠ, વધાઈ, ધોળ, એક એક નામપર શ્રીગોવિન્દદાસજીનું એક એક ભાવપૂર્ણ પદ મળી ૧૧૬ પદો, શ્રીદારિકેશજીના એકસો પચીસ દૂહા, આ પ્રાચીને સાહિત્ય ઉપરાંત શ્રીગોકુલનાથજી, ચીરધુનાથજી તેમજ શ્રીચાચાગોપેશજી એ ત્રણે મહાનુભાવીઓની સંસ્કૃત દીકાઓનું સવિસ્તર ગુજરાતી ભાષાંતર, પાંચ સુંદર ચિત્રો. આવું સાહિત્ય કદી બહાર પડ્યું નથી, ઉચ્ચ શ્રાવણો. સો નકલના પંદર રૂપીઆ.

કીર્તનકુસુમાકર.

(કીર્તનોનો મહાન સંગ્રહ.)

પ્રભુને જગાવવાથી ચોદાકલા સુધીના નિત્યકીર્તનો, તેમજ વર્ષોગ્રસ્ત રીતકાલ, ઉજ્જુકાલ, ઉત્સવોની પ્રણાલિકા સાથે મહાન સંગ્રહ. તે ઉપરાંત વસંત ધમાર તથા ખારમાસી ઉત્સવના પદો. દીનતા આશ્રયનો મહાન સંગ્રહ. ધોળ પદો, નિત્યપાઠો.

ખીર્ણ પુસ્તકોની જરૂર નહિ પડે. અક્ષરો મોટા છે. ઉપરનો સંગ્રહ સપ્રદાયમાં પહેલોજ અપ્રસિદ્ધ પદોનો તે ભંડાર છે. ચોડાજ સમખમાં બહાર પડશે. નોંધાવર દ્વે પેંછી. નામ નોંધાવો.

વસંતરામ શાસ્ત્રી.

૧૭૪૮, રાજમહેતાની ધોળ—અમદાવાદ.

શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીયવૈષ્ણવમહાસભા તરફથી લેવાયેલી પારિતોષિક પરીક્ષાઓનું પરિણામ.

શ્રી. પુ. મા. વૈષ્ણવ મહાસભા તરફથી ગ્રહ સાલમાં પારિતોષિક પરીક્ષાઓ સં. ૧૯૮૭ના આસો સુદ ૧૫ ના દિવસે જુદા જુદા ગ્રામોમાં લેવામાં આવી હતી. જેનું વિગતવાર પરિણામ તેમજ નિર્ણીત કરેલું પારિતોષિક નીચે મુજબ છે—

(પરીક્ષાના ચાર વર્ગો રાખવામાં આવેલા હતા. પ્રવેશ, મધ્યમા, ઉત્તમા ને વિશિષ્ટ)

માર્ગ મુજબ નંબર	પરીક્ષકનું નામ.	ગામ.	ગ્રાંથાંક	ઈનામની રકમ.
-----------------	-----------------	------	-----------	-------------

વિશિષ્ટ વર્ગ ૧ હું.

૧	સરેયા ગિરિધરદાસ નારાયણદાસ	નડીઆદ	૮૩	સુવર્ણ પદક તથા પુસ્તકો મળી રૂ. ૫૦)
---	---------------------------	-------	----	------------------------------------

ઉત્તમા પરીક્ષા.

૧	ગીમનલાલ હીરોદાસ શાહ	નડીઆદ	૬૯	૧૦
૨	ચાન્તિલાલ હીરાલાલ પરીખ	વડોદરા	૬૧	૮
૩	દેશાઈ નંદલાલ ત્રીકમલાલ	સિદ્ધપુર	૬૦	૭
૪	બ્યાસ રતિલાલ પુરોષોત્તમદાસ	નડીઆદ	૫૭	૬
૫	રાવળ રામચંદ્ર જ્યેષ્ઠરામ	"	૫૧	૫
૬	પંડ્યા કુંભારચંદ્ર દામોદર	"	૫૦	૫
૭	શા. જંસીલાલ અમૃતલાલ	"	૪૬	૫

મધ્યમા પરીક્ષા.

૧	રમણલાલ જ્યેષ્ઠરામ શાસ્ત્રી	કુમરેક	૮૮	૧૨
૨	શેઠ ગોકુળદાસ મગનલાલ	દાહોદ	૭૭	૬
૩	શેઠ હરિલાલ જેઠાલાલ	"	૬૨	૫
૪	પનાલાલ હીરાલાલ પરીખ	વડોદરા	૫૫	૪
૫	શા. પ્રદીપદાસ મગનલાલ	દાહોદ	૪૮	૩
૬	હરિદાસ જમનાદાસ	ધારી	૪૭	૩

પ્રવેશ.

૧	પુરુષોત્તમ નાથરામ શાસ્ત્રી	ચેટલાદ	૯૧	૧૦
૨	ધનરથામ મણિલાલ શાહ	"	૬૯	૬
૩	તારા બહેન ગિરિધરલાલ	"	૮૪	૬
૪	લીલાવતી	"	૮૪	૬
૫	મહનલાલ	"	૮૩	૬
૬	હીરાદાદમી ગોરધનદાસ	"	૮૨	૬
૭	યશોદાબહેન યુનીલાલ	"	૮૨	૬
૮	દેવીદાસ મોતીલાલ પરીખ	"	૭૭	૩
૯	ઝઝાવા બાબુલાલ મનસુખ	વીરપુર	૭૭	૩
૧૦	વાઠીલાલ યુનીલાલ શાહ	ચેટલાદ	૭૬	૩
૧૧	યશોદાબહેન મોતીરામ	"	૭૩	૩

૧૨	ગાંધી ચંદુલાલ પ્રેમચંદ	બાકોર	૭૩	૩
૧૩	પ્રભુલાલ મગનલાલ શાહ	પેટલાદ	૭૧	૩
૧૪	શા. ઓચ્છવાલ સોમચંદ	બાકોર	૭૧	૩
૧૫	મહેતા વલ્લભદાસ શુભાચંદ	પાંડરવાડા	૭૧	૩
૧૬	સુરા મણીલાલ કોરલાલ	વીરપુર	૭૧	૩
૧૭	દેસાઈ કાન્તીલાલ બાળકૃષ્ણ	"	૭૧	૩
૧૮	હર્ષકેશ ભુગલભાઈ	પેટલાદ	૭૦	૨
૧૯	ગાંધી અમરચંદ ભોગીલાલ	બાકોર	૬૮	૨
૨૦	ગોરીનાથ મોતીરામ શુક્લ	પેટલાદ	૬૬	૨
૨૧	રમણલાલ મોતીરામ પુરોહિત	પેટલાદ	૬૬	૨
૨૨	યશોદા બેન બાઈલાલ ગાંધી	પેટલાદ	૬૬	૨
૨૩	દેસાઈ બગવતીદાસ ગોવિંદદાસ	મોગરોળ	૬૪	૨
૨૪	ગાંધી જીવીદાસ સામળામ	બાકોર	૬૪	૨
૨૫	મોદી લક્ષ્મદાસ કુમેરદાસ	પાંડરવાડા	૬૪	૨
૨૬	હડગીયા મણીલાલ ચંદુલાલ	વીરપુર	૬૪	૨
૨૭	ગાંધી ચંદુરલાલ મગનલાલ	વડોદરા	૬૨	૨
૨૮	કલાવતી બહેન બાઈલાલ	પેટલાદ	૬૧	૨
૨૯	સરોયા નગીનદાસ પુરોહિતભદાસ	નડીયાદ	૬૧	૨
૩૦	ગાંધી મણીલાલ દલસુખભાઈ	બાકોર	૬૧	૨
૩૧	શેઠ મોહનદાસ મગનલાલ	દાહોદ	૬૧	૨
૩૨	શાંતિલાલ મનસુખલાલ દેસાઈ	વીરપુર	૬૧	૨
૩૩	દેસાઈ શાંતિલાલ મનસુખલાલ બીન ચેલાદાસ	વીરપુર	૬૧	૨
૩૪	હડગીયા શાંતિલાલ લક્ષુભાઈ	વીરપુર	૬૧	૨
૩૫	સુરા ઓચ્છવાલ મગનલાલ	વીરપુર	૬૧	૨
૩૬	ગાંધી શંકરલાલ સાકળચંદ	વીરપુર	૬૧	૨
૩૭	શા. ગોવિંદલાલ મજબૂદજીદાસ	દાહોદ	૬૧	૨
૩૮	શા. મણીલાલ યુનીલાલ	પાંડરવાડા	૫૯	૨
૩૯	દેસાઈ રમણલાલ મનસુખલાલ	વીરપુર	૫૬	૨
૪૦	દેસાઈ અંબાલાલ રણુઝોર્જી	વીરપુર	૫૬	૨
૪૧	કમનાબેન ભોગીલાલ	પેટલાદ	૫૮	૨
૪૨	મળચંદર નાગજી રાજગુરુ	મોગરોળ	૫૮	૨
૪૩	મહેતા ચંદુલાલ દલસુખભાઈ	બાકોર	૫૮	૨
૪૪	શા. ગીરવરલાલ છોટાલાલ	દાહોદ	૫૭	૨
૪૫	શેઠ કમ્બેનલાલ મગનલાલ	દાહોદ	૫૭	૨
૪૬	ચંદ્રકાન્તાબેન ગોવિંદલાલ	પેટલાદ	૫૬	૨
૪૭	શાન્તાબેન દામનલાલ શેઠ	દાહોદ	૫૬	૨
૪૮	ચોકસી અમરતલાલ ભોગીલાલ	જાલુમર	૫૫	૨
૪૯	શેઠ દરીલાલ ગ્રેહાલાલ	દાહોદ	૫૫	૨
૫૦	શા. વલ્લભદાસ મગનલાલ	મોગરોળ	૫૫	૨

૫૧	જ્યોત્સનાબેન મગનલાલ શેઠ	દાહોદ	૫૫	૨
૫૨	દેશાઈ રમણલાલ લાલુભાઈ	વીરપુર	૫૫	૨
૫૩	સુરે. ઝોત્સનાલાલ જોશલાલ	વીરપુર	૫૫	૨
૫૪	ગાંધી રમણલાલ પ્રેમચંદ	હલોલ	૫૫	૨
૫૫	હાંમતલાલ મણીલાલ શાહ	પેટલાદ	૫૨	૨
૫૬	ગાંધી લક્ષ્મીચંદ અમરચંદ	બાકોર	૫૨	૨
૫૭	ગાંધી પુનમચંદ અમરચંદ	બાકોર	૫૨	૨
૫૮	સરસ્વતીબેન જગનલાલ દેશાઈ	દાહોદ	૫૨	૨
૫૯	ગાંધી પુનમચંદ ગુલામચંદ	બાકોર	૫૨	૨
૬૦	દેશાઈ કાંતિલાલ લાલુભાઈ	વીરપુર	૫૨	૨
૬૧	મધુવનદાસ સુનીલાલ શાહ	હાલોલ	૫૨	૨
૬૨	દેશાઈ શાંતિલાલ લાલુભાઈ	વીરપુર	૫૨	૨
૬૩	ચંદનબેન મીંઠાલાલ	દાહોદ	૪૮	૧
૬૪	શાહ અંબાલાલ હીરાલાલ	વીરપુર	૪૭	૧
૬૫	શાહ રમણલાલ સાંકળચંદ	વીરપુર	૪૭	૧
૬૬	પરીખ નટવરલાલ ભીખાભાઈ	હાલોલ	૪૭	૧
૬૭	દેશાઈ ગીરધરદાસ વિઠ્ઠલદાસ	હાલોલ	૪૭	૧
૬૮	ચંદનબેન જગનલાલ દેશાઈ	હાલોલ	૪૭	૧
૬૯	શરદકાન્તા મણીલાલ	હાલોલ	૪૭	૧
૭૦	શેઠ સાકરલાલ મગનલાલ	દાહોદ	૪૫	૧
૭૧	દેશાઈ પ્રભોતભદાસ ચામળદાસ	દાહોદ	૪૫	૧
૭૨	શાન્તાબેન જોશલાલ શાહ	દાહોદ	૪૫	૧
૭૩	ગાંધી મણીલાલ પુનમચંદ	વીરપુર	૪૫	૧
૭૪	પરીખ શાંતિલાલ મનસુખરામ	હાલોલ	૪૫	૧
૭૫	સુતાર વલ્લભજી ગોવિંદજી	ધોરાજી	૪૫	૧
૭૬	રતીલાલ મગનલાલ	વડોદરા	૪૮	૧
૭૭	દેશાઈ જયીજીદાસ ચંડુલાલ	વીરપુર	૪૩	૧
૭૮	શેઠ રતનલાલ મગનલાલ	દાહોદ	૪૨	૧
૭૯	શાહ રણજીદાસ મુળજીભાઈ	હાલોલ	૪૨	૧
૮૦	દરજી દરિદાસ દેવસી	ધોરાજી	૪૩	૧
૮૧	ગાંધી રમણલાલ હોટાલાલ	હલોલ	૪૨	૧
૮૨	હીલાવતી સુનીલાલ	પેટલાદ	૪૦	૧
૮૩	મહેતા મગનલાલ પાનીચંદ	પાંડરવાડા	૩૯	૧
૮૪	શાહ ગોવિંદલાલ નારણદાસ	દાહોદ	૩૯	૧
૮૫	શેઠ કૃષ્ણદાસ મણીલાલ	દાહોદ	૩૯	૧
૮૬	દરજીવનદાસ અંબાભાઈ	ધારી	૩૯	૧
૮૭	મહેતા જયીજીદાસ માણેજીલાલ	બાકોર	૨૭	૧

૮૮	હાડીઆ બાલુબાઇ લલ્લુબાઇ	વીરપુત્ર	૩૭	૧
૮૯	સુરા હીરાબાઇ કેશવલાલ	વીરપુત્ર	૩૭	૧
૯૦	મંગલાગૌડી કાલીદાસ	કલોત	૩૭	૧
૯૧	આદ વલ્લભદાસ વિદુલદાસ	હાલોદ	૩૫	૧
૯૨	આદ પુરુષોત્તમદાસ રામચંદ	ગોડાવા	૩૫	૧
૯૩	સરસ્વતીબેન છોટાલાલ	ગોડાવા	૩૩	૧
૯૪	આલચંદર જયવંતરાય	તડોદરા	૩૩	૧
૯૫	આદ રસિકલાલ સાકરલાલ	હાલોદ	૩૩	૧
૯૬	સુરા મણિલાલ મનસુખરામ	હાલોદ	૩૩	૧
૯૭	રોઠ ગોરધનદાસ હોમતલાલ	હાલોત	૩૩	૧
૯૮	રોઠ કચ્ચનલાલ કેશવલાલ	હાલોત	૩૩	૧
૯૯	પરિખ રસિકલાલ કુમરલાલ	હાલોદ	૩૩	૧
૧૦૦	દરીલાલ નંદલાલ	ધારી	૩૩	૧
૧૦૧	ગાંધી નંદલાલ પ્રેમચંદ	કલોત	૩૩	૧
૧૦૨	ગાંધી અંબાલાલ મોહનલાલ	કલોત	૩૩	૧
૧૦૩	ગાંધી જનનાલાલ જુડાલાલ	કલોત	૩૩	૧
૧૦૪	જુડાલાલ સામળદાસ	કલોત	૩૩	૧
૧૦૫	ગાંધી મુળચંદ લલ્લુબાઇ	કલોત	૩૩	૧
૧૦૬	ગાંધી જયંતીલાલ મણીલાલ	પાંડરવાડા	૩૩	૧

વિશિષ્ટપરીક્ષાના પ્રથમ વર્ષમાં વિદ્યાર્થી એક બેઠા છે તે પાસ થયા છે પરિણામ સેા દર્શાવેલ છે.

ઉત્તમા પરીક્ષામાં ૮ વિદ્યાર્થી બેઠા છે તેમાં ૭ પાસ થયા છે. પરિણામ ૮૭-૫ દર્શાવેલ છે.

મધ્યમા પરીક્ષામાં વિદ્યાર્થી ૭ બેઠા છે તેમાં ૬ પાસ થયા છે પરિણામ ૮૫-૫ દર્શાવેલ છે.

પ્રવેશ પરીક્ષામાં એકંદર વિદ્યાર્થી ૧૪૩ બેઠા હતા ૧૦૬ વિદ્યાર્થી પાસ થયા છે પ્રમાણુ ૭૪-૧ દર્શાવેલ છે.

બી પરીક્ષાઓમાં વિદ્યાર્થી ૨૪૯ ની અરજીઓ આવેલી પરંતુ, તાવ વિગેરેની બીમારી તેમજ બીજી અડચણોને લીધે માત્ર ૧૪૯ વિદ્યાર્થીઓ પરીક્ષામાં બેસી શક્યા છે જેમાં કુલ ૧૨૦ પાસ થયા છે.

ઉપર પ્રમાણે આ વર્ષે પારિતોષિક પરીક્ષાઓમાં વૈજ્ઞવ વિદ્યાર્થીઓએ લાભ લીધો છે. હવે પછીના વર્ષોમાં વધુ વિદ્યાર્થીઓ ભાગ લેશે એવી આશા છે.

પરીક્ષકો—વેંકટવિદ્યારત્ન યાત્રી હરિચંદર ઝાંકરજી, યાત્રી જ્યેષ્ઠરામજી, રા. રા. વિદુલદાસ મોહનલાલ ગાંધી બી. એ. એવ. બી., તથા રા. જયંતીલાલ પરીખ દત્તા.

મુચના:—જે રૂપીઆથી વધારે ઇનામવાળાઓ પોતાની પસંદગીનાં સાંપ્રદાયિક પ્રતિકા જ મંગલો તો પૂર્વ પાઠનામાં આવશે ઇનામ રોકડાં નહિ મળે. સાંપ્રદાયિક મર્યાદાના રૂપમાં અપારો.

મંત્રીઓ પરીક્ષા સમિતિ,
શીશુલિમાર્ગે વૈજ્ઞવ મહાસભા ડે. ૧૧૦, ગાંધીરાઈ-અમદાવાદ.

शुद्धादित



श्रीगोकुलनाथजीनुं प्राचीन चित्र.

(काश्मीरमा, तिलक्षमालात्रिजय समयनु)

શુદ્ધાદિત



ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીમદ્નિરૂપાચાર્યજી.

(નડીઆદ)

(શુદ્ધાદિતકેમરી-શુદ્ધાદિતભૂપણ-શુદ્ધાદિતસદલાંગુ-શુદ્ધાદિતવાચપતિ-
વેાન્તસુધાકર વેાન્તવિદ્યાવ કાર-પણિડતમણ્ડલેશ્વર પણિડતેન્દ)

॥ विजयते श्रीमदनमोहनारुयो रसः ॥

॥ विजयते श्रीचालकृष्णप्रभुः ॥

પદવી-સમર્પણ-સમારંભ.

સાક્ષરજન્મભૂમિ નડિયાદમાં એક અદિતોય વિદ્વત્સભા, શ્રીવલ્લભકુલના સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વદ્રત આચાર્યશ્રીનું મહાસન્માન, વિદ્વાનોનાં સંસ્કૃત ભાષામાં થયેલાં પ્રવચનો; ગ્રેજ્યુએટ વર્ગે આચાર્યશ્રીની વિદ્વત્તાની કરેલી પ્રશંસા, “પણ્ડિતેન્દ્ર” અને “પણ્ડિતમણ્ડલેશ્વર”ની મહાપદવીઓનું સુવર્ણચંદ્રક સાથે સમર્પણ અને સ્તુતિપત્રનું નિવેદન, આચાર્યશ્રીને વિદ્વતાપૂર્ણ વિનયયુક્ત જવાબ.

સં. ૧૯૮૮ ના કાર્તિક વદ ૭ તા. ૨-૧૨-૭૧ નો દિવસ તો નદીયાદના વિદ્વત્સન્માનના કૃતિહાસમાં સુવર્ણોક્ષરે કોતરાર્હ રહેશે, ચિરસ્મરણીય બનશે. હાલ જૂતળ ઉપર બિરાજતા શ્રીવલ્લભકુલના સર્વ આચાર્યશ્રીઓમાં ગ્રન્થકાર-ભાષ્યકાર તરીકે પ્રસિદ્ધિ પામેલા, નદીયાદ અને ભમનગરનાં અક્ષંકારૂપ એક સમર્થ મહાનું પંડિત આચાર્ય ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીઅનિરુદ્ધ-આર્ચં મહારાજશ્રીને મહાગૌરવપૂર્ણ પદવીઓથી સન્માનવા માટે જે આપૂર્વ વિદ્વત્સભા મળી, જે મહાનું સમારંભ ધર્યો તે બડભાગી દિવસ કાર્તિક વદ ૭ ગીનો જ છે. મહારાજશ્રીને આ કાંઈ નવીન પદવીઓ પ્રાપ્ત થઈ નથી. આનાથી પહેલાં પણ આપશ્રીને વિદ્વાનોએ અનેક ગૌરવ-પૂર્ણ ઇરકાઓ અર્પણ કરેલા છે. એ સર્વ પદવીઓને આચાર્યશ્રીએ ઉપનિષદો ઉપર ભાષ્ય લખીને અસૌકિક ઓપ ચડાવ્યો છે, એમાં લેશ પણ અતિશયોક્તિ નથી. આપશ્રીએ વિશ્વધર્મરૂપ પુષ્ટિમાર્ગની આ એક વિન્યવતાકા આર્યાવર્તમા ફરકાવી છે. આર્યસંસ્કૃતિના ભવ્ય, દિવ્ય મહામંદિર ઉપર દિવ્ય રતનજડિત દેહીપ્રમાન કલશ ચડાવ્યો છે! આ યુગ ધણી વર્ષો પછી જોવાનો વૈષ્ણવ વિદ્વાનોને એ યુગ પ્રત્યક્ષ કરવાનો-સુમંગલ અવસર પ્રાપ્ત થયો છે. આજથી પચાસ વર્ષ પહેલાં તો આવા સ્મરણીય અવસરો ધણી વાર પ્રાપ્ત થતા, પણ છેલ્લા પચાસ વર્ષમાં તો આ સુદિન દમણમાં જ સાંપડ્યો છે.

આજે શ્રીવલ્લભકુલ ઉપર આદ્યોપાત્મક લેખો લખવા ધણી અશિક્ષિત અથવા પાશ્ચાત્ય-શિક્ષાદીક્ષિત હૃદયો તત્પાપક હશે! પણ તે તંત્ર હૃદયો આવા સૂર્યસમા પ્રકાશને ધણી નિરખી નહિ શકે તો તેમનાં હતભાગ્યની સીમાજ્ઞ જળુષી રહી! ઉક્ત આદ્યોપ-આકોશકો માટે આજથી આઠ વર્ષ પહેલાં ગુજરાતના ટાંગેર સમા કવિસત્રાટ થીશુત નાનાલાલભાઈ કવિ એમ. એ. જો એક સચોટ અને પ્રખવ સુક્તિપૂર્ણ પ્રત્યુત્તરરૂપ દિવાસો આપ્યો હતો. આ રજા તે સ્મરણીય સપ્તહોઃ—

“વૈશ્ણવ સંપ્રદાયમાં ધર્મશિલ્પસૂરીના ઊર્ધ્વ ઉમર્ધ વિચારણીય સાદિત્યશાસ્ત્ર નથી એવેા હ્રમ નવયુગના નવમંરકારીઓ-મોટે ભાજે સંધગતા આવ્યા છે; ને પોતાના અજ્ઞાનની મૂર્તિ

ધરીને એને જ્ઞાનમૂર્તિ માનીને પૂજતા આવ્યા છે. હવે તો ધણું પુસ્તકો પ્રસિદ્ધ થયાં છે છતાં પોતાના પ્રમાદને જ્ઞાનની પરિસ્થિતિમાં માનવાની આ નવયુગની ટેવ સુધરી છે. વૈષ્ણવી સાહિત્યના આપણા ટીકાકારો સર્વે લખી આંખડીયે ઉઘાડવાની ના પાડે છે, ને કહે છે કે સૂર્ય છે જ નહીં.

...એ સર્વે વલ્લભકુલની સાહિત્યસેવકપરંપરા એક સાક્ષરકુલની સાહિત્યસેવાની જગતમાંની અખેડ જાહેરાતલાસી છે. પૃથ્વીના યુરોપોદ્યારનેકાને ભગીરથપ્રયત્ને ભાગીરથીજ એમણે વહેવડાવી છે.

...અને એ સૌએ એ ભગીરથ સાહિત્યસેવા કિયા મુગમાં કીધી છે ! ભારતવર્ષમાં સ્વાસ્થ્ય હતું ત્યારે ? સ્વાસ્થ્યમાં સાહિત્ય પાંગરે; ને મુગલવંશના મહારાજપીઓના સુવર્ણ સમયમાં ભારતમાં સ્વાસ્થ્ય હતું. પણ તે પહેલાં ને તે પછી, ઈ. સ. ૧૫૨૬ ની પૂર્વેને 'ઈ. સ. ૧૭૦૭ પછી ભારત એકચક્રશૂન્ય ને અસ્વસ્થ હતો; ત્યારે જે વલ્લભકુલની સાહિત્યસેવા જન્મનાં જલની પેડે, અવિરત ને અખંડવાદિની હતી. માત્ર ભારત વર્ષમાંજ નહીં, જગતનાં ઇતિહાસમાં એક સાક્ષરકુલ તરીકે વલ્લભકુલની સાહિત્યસેવા અદ્વિતીય છે. યુરોપમાં અમેરિકામાં આફ્રિકામાં એશિયામાં-પૃથ્વીના યડ ઉપર કોઈ રૂથળે એક જ વંશના વંશજોએ વલ્લભકુલે કીધા છે એવી ને એટલીજ સાહિત્યસેવા કીધી હોય તો વિદ્વંજનને આનંદદાતા ઇતિહાસની એ નવકથા જાણીને શીવલભકુલ પણ આનંદશે. ”

ઉપરનું સત્ય ઓળસ્તિની લાખામાં મૂકીને કવિશ્રીએ સંપ્રદાયને ન્યાય આપવામાં જે ઔદાર્ય બતાવ્યું છે તે ચિરમરણીય જ છે. કવિવર નાનાલાલબાઈ તો પ્રાર્થનાસમાજના સભ્ય છે, સુધારક ગણાય છે, છતાં એમના નિર્મલસર અને સત્યનાં ઓળસૂધી ભરેલા હૃદયમાં ઉક્ત સત્ય ઇતિહાસના શુદ્ધ પ્રતિબિંબો પડ્યાં છે અને તેમાંથી ઉપરનો સુંદર કર્ણપ્રિય મધુર શ્વનિ ઉડ્ડભવ્યો છે. આ સત્યનો સાક્ષાદ્ભવ નડિયાદની એ યાદમાર સભામાં સાક્ષરોને થયો.

મહાન્ સમારંભ.

કાર્નિક વડ ૭ મીના રોજ નડિયાદની સુપ્રસિદ્ધ શ્રીસાતરવરૂપની હવેલીનો મંધ્યએક સુશોભિત રીતે શબ્દગાયો હતો. આ પ્રસંગે નવે જ મંડપ બાંધવામાં આવ્યો હતો. બરોબર સાંજના પાંચ વાગ્યાનો સભાનો સમય નિયત થયો હતો, પણ શ્રોતા ગણ તો અગાઉથી ઉપરિચિત થતો હતો. મહારાજશ્રી પધારતાં સર્વે સભ્યોએ ઉભા થઈને વંદન કર્યાં હતાં, અને જયનાદથી સભા-રચાન ગાજી ઉઠ્યું હતું. સંસ્કૃત અને ગુજરાતી માનપત્રોમાં હસ્તાક્ષર કરનારા વ્યાકરણચાર્ય આદિ પદવીધારી વિદ્વાન શાસ્ત્રીઓ, એન્જીએરો અને સહૃદયરથો હાજર થયા હતા. એમ. એ. બી. એ. તથા એલએલ. બી. આદિ પદવીધારી એન્જીએરો તથા સરકારી સેવામાં નિયુક્ત યથશા વિદ્વાનો અને તે ઉપરાંત સુપ્રસિદ્ધ દેશભક્ત શ્રીયુત દાદુભાઈ દેસાઈ, કવિચિત્રકાર અને ભક્તારાજ શ્રુતચંદલાઈ, કેટનાં મુનસફ સાહેબ અને સુપ્રસિદ્ધ વરોટદ સરદાર શ્રીયુત નાનાસાહબ વગેરેની હાજરી ખાસ ધ્યાન ખેંચતી હતી.

પ્રારંભમાં લગવટીય કવિ પુરુષોત્તમદાસે મંગલ મેળલં એ સંસ્કૃત અષ્ટપદી સુંદર સ્વરથી કંઠ્યાણુ રાગમાં ગાઈને મંગલાચરણ કર્યું હતું. તે પછી પ્રશિભાગે ઉપર આલેખ કરનાર આધુનિક વિદ્વાનો સાથે બાખડીને તેમને જ હાથે સંપ્રદાયને ઇન્સાફ અપાવવામાં ફતેહમંદ થયલા અને ખાસ તો “વિદુરનાનના ઇતિહાસ” માંથી સંપ્રદાયને ઝાંખપ લગાડનારો ફકરો કમી કરાવીને, તેમના લેખક અને હાલ વિદ્યાધનમાં રહેતા ઈ. માર્ટીન સાહેબ પાસે મારી મંગાવનાર એક સંપ્રદાયિક શોદાસમા ભગવતીય મોહનલાલ લક્ષ્મીભાઈ રાહે (દાક્ષરકુલના અધ્યાપક) ધીમદ્-શ્વદાવનેન્દુ એ રલોડથી મંગલાચરણ કરીને જણાવ્યું કે:—“વિદ્યાવિવાસી મહારાજશ્રી અને

વિદ્વદ્ગણ! જગત્માં વિદ્યા એ એક અમૂલ્ય વસ્તુ છે. વિદ્યા એ મનુષ્યનું બૂપણ છે, ખૂબસૂરત સ્વરૂપ છે, ગુપ્ત ધન છે. વિદેશમાં પણ વિદ્યા એક સાથીની ગરજ સારે છે. વિદ્યા એ પરમ દેવન છે. રાજ્યમાં સન્માન પ્રાપ્ત કરાવનારી પણ વિદ્યા છે. એ વિદ્યા મેળવનાર વિદ્વાન્ જગત્માં પૂજ્ય છે. એ વિદ્યા સંપાદન કરવાનું કર્તવ્ય મનુષ્યમાનનું છે. અમારૂં આ નિઘ્યાદ સમગ્ર ગુજરાતમાં વિદ્યાનું કેન્દ્ર ગણાય છે. સદ્ગત સાક્ષર ગોવર્ધનરામભાઈ, કવિ બાલાશંકર આદિ આ જ ભૂમિમાં જન્મ્યા હતા. સંસ્કૃત ભાષાના વિદ્વાનો પણ નિઘ્યાદમાં થોડા નથી વસ્તુતઃ વ્યવહારાદિય એ શ્લોકમાં કહ્યા મુજબ ખરૂં પાંડિત્ય, વેદગતિ, વૈદિક ક્રિયા, ભગવન્-માર્ગનો પરિચય, શ્રીકૃષ્ણમાં પ્રીતિ આદિ સર્વ ગુણો થીવલ્લભાધીશ્વરમાં છે અને આપણા આજના સભાપતિ મહારાજશ્રીએ એ સર્વ ગુણોનો સાક્ષાત્કાર કરાવ્યો છે. (તાળીઓ.) આને એ સદ્ગુણોથી આકર્ષાઈને વિદ્વત્સન્માન અહીં ઉપરિચિત થયો છે. આને શ્રીમાન્ મહારાજશ્રીને સન્માનપત્ર તથા પદવીસમર્પણ કરવાનાં છે. આ સન્માન ઉદ્દેશ પુરતું હુંકું વિવેચન કરીને બેસી જવાની રજા લઉં છું.”

મુનસંદ સાહેબનું સંભાષણ.

ત્યારબાદ નિઘ્યાદની ઠાટના મુનસંદ સાહેબ પરમ ભગવદીય રા. રા. સુતીલાલ લલ્લુભાઈ માળવીએ હુંકું પણ મુદાસર નીચે મુજબ વિવેચન કર્યું:—

“મહારાજશ્રી તથા ભાઈઓ, આને આપણે મહારાજ શ્રીમદનિરંજલાલજીને અભિનંદન આપવા બેગા થયા છીએ. મહારાજશ્રી આચાર્ય શ્રીમદાપ્રભુજીના વંશમાંના હોઈ આપણે સર્વને ગુરુ તથા આચાર્ય તરીકે વંદનીય છે. મહારાજશ્રી રહેણીમાં સાદા છે. એમનો સ્વભાવ વિનયી વિવેચી, હસમુખો ને મળતાવડો છે; અને ધર્મસંબંધી અનેક કાર્યો પાર પાડવાની શુદ્ધ મતીયા ધરાવે છે. એક મહાપુરુષ કિયે બોલીએ તો મહાપુરુષ રૂપે દૃઢ નિશ્ચયવાળા, પુષ્કળ તર્કશક્તિવાળા, મનહરણ કરે તેવા એ મહારાજશ્રી છે. ધમના ગુરુ તરીકે બેઠેલું તો, શાન્ત, ધર્મ કાર્યમાં ઉત્સાહી, વિદ્યામયુર, ધર્મી, ધ્યાની ને મતાગ્રહી છે. દેવદરબારને દેવદરબાર જેવા કરવાનો એમનો ઉત્સાહ સતેજ પ્રકારો છે. ધર્મશુદ્ધિ માથે વિદ્યાશુદ્ધિનો હિંમો લોક રાખે છે. શુદ્ધાદૈત સંપ્રદાયના સર્વ ગ્રંથો પ્રકટ થઈ વૈષ્ણવોમા વંચાય એ એમની મહાઅભિલાષા છે તેઓ શુદ્ધાદૈત સંપ્રદાયનો વિજય, અદ્વૈત પ્રવલ્લ અને સતેજ કરવાને સદોદિત ઉમંગી જણાય છે. એમનો જય ભક્તિભર્યો પ્રકાર્યો છે, સર્વની પ્રાર્થના એ જ હોઈ શકે કે:—શુદ્ધ ભક્તિ ધર્મની સંશુદ્ધિ હજો, શ્રીકૃષ્ણપ્રેમમાં લીન થજો.

મહારાજશ્રીને એક જ વિનંતિ કરવાની છે, તે એ કે એઓશ્રીએ ગાગના શિક્ષિત વૈષ્ણવો પૈકી ત્રણ ચારને દર અઠવાડીએ આપશ્રીની રૂબરૂ બોલાવવા તથા તેઓ જાતે સેવા કરે એવી તેમના ઉપર છાપ પાડવી. સેવાની રીત સમજાવવી. જરૂર લાગે તો શ્રીકાકોરજીને એમને માથે પધરાવવા. અવારનવાર તેમની જોડે સંપ્રદાયના રહસ્ય આખત વાતચીત કરવી. આ પ્રમાણે આ ધર્મની ન્યાં સુધી લમતી લમાડવામાં આવશે નહિ ત્યાં સુધી જેટલો બોધએ તેટલો ધાર્મિક ફેલાવો થશે નહિ. જેમ ૮૪ તથા ૨૫૨ વૈષ્ણવો આશ્રયે લેવાયા હતા તે પ્રમાણે હાલના વૈષ્ણવોમાં ભાવ ભક્તિ તથા પ્રેમ જગૃત કરવાની જરૂર છે.

ત્યારબાદ કાર્યક્રમ મુજબ બે શબ્દ મારે બોલવાના આવ્યા. હું શું બોલું? જે વારંવાર કહેવાયલું છે જ ફરી કહેવું રહ્યું:—“આને આપણે મહાગુજરાતના એક વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રીને સન્માનવા એકદા થયા છીએ. શ્રીમાન્ આચાર્યશ્રી શ્રીવલ્લભકુલના એક અવધાર છે. જન્મહરુ

શ્રીવક્ષભાધીશ્વરના એ મહાન્ વંશમાં કેવા અદિતીય વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રીઓ પ્રકટ થયા છે એ વાન હવે છુપી રહી નથી. જગતમાં એવો કોઇ પણ વંશ નહિ જ હોય; કે જે મહાપુરુષોના વંશ સાગરમાં વર્ષ સુધી અધિકાધિક જહોજહાલી સમૃદ્ધિ પ્રાપ્ત કરીને, દેશને ઉત્તમોત્તમ તત્ત્વગાનનું સાહિત્ય-દેવભાષામય સંસ્કૃત સાહિત્ય-અર્પો રજો દોય. શ્રીવક્ષભવંશ તો જગતમાં અલોક જ છે અને રહેશે. વિદેશી અને વિદ્યમાઓના પ્રહારો ક્રીડતાં, અત્યન્ત અશાંતિના સમયમાં એ મહાન્ વંશે લાખો શ્લોકનું તત્ત્વગાનનું સાહિત્ય ભારતવર્ષને આપ્યું છે. આ ઉપકાર દેશ કદી નહિ જ વિસરે. ઔરંગઝેબના જુલમોના સમયમાં તબ લોખ શ્લોકનું (તબ મહાભારત જેટલું) મહાસાહિત્ય શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજે જ આપ્યું! આવા વિકટ સમયમાં આ કાર્ય કેળવ્યું કરી શકે? સો વર્ષમાં શ્રીવક્ષભવંશના અંચકર્તા આચાર્યશ્રીઓમાં કાશીવાળા નિયતીવાસ્ય શ્રીગિરિધરજી મહારાજ અને કોટાવાળા નિ. લી. શ્રીકન્હેલાલાજી મહારાજ સ્મૃતિપથ થશે. તે પછી શ્રીવક્ષભવંશમાં અંચકર્તા ઉપનિષદ્વાળ્યકાર તરીકેનું મહાગૌરવ પૂર્ણ સ્થાન આપણા આજના સભાપતિશ્રીએ પ્રાપ્ત કર્યું છે. (તાળીઓ) તેમ જ આપશ્રીના શાસ્ત્રીજી શ્રીયુગ હરિશંકર શાસ્ત્રીએ પણ તત્ત્વગાનના મહાભાષ્યો જેવા અથો ઉપર ટિપ્પણ તથા દીકાઓ લખી તે ગૌરવ સંપાદન કર્યું છે. આચાર્યશ્રી મહાયુગરાતના જ એક વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રી ગણાય. શુભરાત હવે વિદ્વાનોનું સન્માન કરવા લાગ્યું છે. કવિવર નાનાલાલભાઈને સન્માન્યા, હમણાં જ કવિ જગદ્ગરનો કનકોત્સવ ઉજવ્યો. તેમાંએ સાક્ષરબુદ્ધિ તરીકે પંકાતી આ નદીવાનગરીએ આવા એક સમર્થ વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રીને સન્માનીને પોતાની વિદ્યાગ્રિયતાનો મગ્નજન પુરાવો આપ્યો છે. બાકી આ માનપત્રાદિ તો સુધને દીપક દેખાડવા જેવાં જ ગણાય.”

અન્ય વિદ્વાનોનાં વિવેચનો.

વડોદરાવાળા રા. રા. સાકરલાલ શાસ્ત્રીએ સાહિત્યમય સંસ્કૃત ભાષામાં વિવેચન જણાવ્યું કે:—“તમે બધા આ દેવવાણીને શ્રુતભાષા કહો છો, પણ તે શ્રુત ભાષા નથી. બધાં સુધી વિદ્વાનો જે સંસ્કૃતમાં બોલે છે, લખે છે, તે સંસ્કૃત ભાષાને શ્રુત ભાષા કેમ કહેવાય? મહારાજશ્રી પોતે વિદ્વાન્ છે તેથી જ આટલી ગોટી વિદ્વાનોની મંડળા અત્રે આવી છે. મહારાજશ્રીએ વિદ્યાધ્યયન કરેલું છે, વિદ્વાનોના પરિચરને પણ જાણે છે. વળી વિદ્વાનો બીજાને માનતા નથી; તેઓ તો વિદ્વાનોને જ સત્કારે છે. આ કાંઈ બુદ્ધિની સલા નથી; પણ વિદ્વાનોની સલા છે. આજે આ સલા વિદ્વાન્ મહારાજશ્રીનો સમાદર કરે છે.”

ત્યાંજાદ વડોદરાના શ્રીસ્વામિનારાયણ સંપ્રદાયના વિદ્વાન્ શ્રીયુગ વિદ્વલભાઈએ વિવેચન કર્યું અને કહ્યું કે:—“મહારાજશ્રી એક વિદ્વાન્ આચાર્ય તરીકે આ સન્માન પ્રાપ્ત કરે છે. સમય ઘણોજ વિકટ આવેલો છે. હાલમાં ધર્મનો દ્વાસ થતો જાય છે. હાલમાં જ અમારા આપકવાડ નરેશ એક હુકમ કાઢીને ટેલેગ્રાફીના ઓફિસોને ઉચ્ચ વર્ણના ઓફિસોની સાથે નિરાળમાં બેસાડવાની જગતરદતી કરવા માંડી છે. હાલના સ્વરાજ્યવાદીઓ પણ આવાજ ધર્મ નાશ કરી રજા છે. આવા સમયમાં આવા વિદ્વાન્ આચાર્યશ્રી જે નેતા બને અને જનસમૂહને ધર્મ માર્ગે દોરે તે અમારા વિદ્વાનો ઉપર ધણે જ ઉપકાર થાય. (અત્રે મહારાજશ્રીએ સંસ્કૃત ભાષામાં કહ્યું કે ધર્મસંહિત જ સ્વરાજ્ય ભગવાન્ શ્રીનંદનંદન ભારતવર્ષને આપશે જ!) (જોશભરે તાળીઓ!) આવા વિદ્વાન્ મહારાજશ્રી અમારા આ ધાર્મિક અદિલના નેતા બને એવી પ્રાર્થના સાથે વિરમું છું.

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥ सम्मानपत्रम् ॥

श्रीमन्नन्दनन्दनपादारविन्दमुग्धमधुपायमानाः श्रीमत्पुरुषोत्तमवदनवैश्वानरा-
वतारश्रीश्रीवल्लभाचार्यवंगजोद्गुणे मुधांशुतां विभ्राणाः शुद्धाद्वैतकेसरि-शुद्धाद्वैत-
भूषण-शुद्धाद्वैतसहस्रांशु-शुद्धाद्वैतवाचस्पति-वेदान्तमुधाकर-वेदान्तविद्यालङ्कारे-
त्यादिविविधविरुदावलिसमलङ्कृताः श्रीमदनिरुद्धाचार्याः ।

श्रीमत्सकलश्रुतिसीमन्तिनीवृन्दवन्दनीयपादाम्बुजस्य क्षराभरातीतस्य प्रधान-
पुरुषयोर्निधामकस्य योगिभिरचिन्त्यवैभवस्य कर्मभिर्दुराराध्यस्य माहात्म्यज्ञानपूर्वक-
सुदृढस्नेहाख्ययाऽव्यभिचारिण्या भक्त्यैकलभ्यस्यानन्दमयस्य भगवतो गोपीजन-
वल्लभस्य पादारविन्दपरिचरणपरायणैकव्रतानां तात्कालिकसम्प्राप्तमुपलब्धगोस्वामि-
विरुदानां कविकुलकुमुदकलाधराणां श्रीमद्विद्वलनाथदीक्षितमहाभागानां प्रथमकुमार-
विद्वन्गण्डनप्रणयनहेतुभूतश्रीगिरिधराणां कुले जनिमतां तत्कुलप्राप्तपरिपाटीमनुसरतां
श्रीमतां निरन्तरं भगवत्सेवापरायणान्तःकरणमालोकमालोकं भृशं सन्तुष्यते चेत् ।

श्रीमतां निखिलशास्त्रकलावगाहिनी बुद्धिः, सर्वतन्त्रेष्वादरः, श्रीशङ्कररामा-
नुजमध्वनिम्बार्कशिवभिक्षुभास्करादिपरस्परविभिन्नमतेषु समानः परिशीलनादरः,
चौद्धर्जनयवनलिस्तादिवेदवाग्यमतखण्डनप्रवृत्तिः, सततं विद्याध्यवसायः, विद्वत्सु
श्रद्धाविशयः, तत्त्वविचारणभक्त्यं चेति गुणगणैराकृष्यन्ते विदुषां मानसानि ।

श्रीमतां प्रतिभाशालि पाण्डित्यं विनयं भाग्यानुत्सेकं निरर्थक्याकलहपरा-
ङ्मुखीमानवरतग्रन्थरचनव्यापृतिं च दृष्ट्वा सज्जातमनोगर्होत्सवैरस्माभिः “पाण्डितेन्द्र”
पदेन विभूष्यन्तेऽनभयन्तः श्रीमन्तः । सम्प्रार्थयामहे च भगवन्तं यदनेन पदावल्लेपेन
विभूषिताः श्रीमन्तश्चिरं विद्योतेष्यन्ते विद्योतायेष्यन्ते च स्वधर्मभाषितान्तरां
पाण्डितमण्डलीमिति शम् ।

श्रीमतां वरं वदाः

नटपत्तनम् कार्तिककृष्ण सन्म्यां सौम्ये १९८८.

याळशास्त्री वासुदेवशास्त्री तैलङ्गः
चिहलराम लल्लुराम शास्त्री
पं. ओङ्कारेश्वरः स्मृतितीर्थः
महाशङ्कर हिम्मतराम शास्त्री
महादेव प्रभाशङ्कर जोशी
हिम्मतराम मूलजीभाई भट्ट
हरिकृष्णात्मजवसन्तरामशास्त्री,
शुद्धाद्वैतसम्पादकः
घरसोनाथ काशीनाथ शास्त्री
मणिशङ्कर व. उपाध्यायः

शास्त्री साकरलालशर्मा यशेश्वरतनुजन्मा
चणोदरा संस्कृतमहाविद्यालयाध्यापकः
गोचर्धनशास्त्री (संस्कृतमण्डलम् नडियाद)
याशिकुकेसरी शास्त्री अमृतरामोपाध्यायः
हरिभाज नन्दलाल शास्त्री
शास्त्री हीरालाल शर्मा
नाथालालात्मजो भाईलाल आयुर्वेदविशाखः
मोहनलाल काशीराम शास्त्री
हरिशङ्करः

॥ श्रीबालकृष्णो विजयते ॥

शुद्धાદ્વૈતકેસરિશુદ્ધાદ્વૈતવાચસ્પતિશુદ્ધાદ્વૈતમૂળજ્ઞાદ્વૈતસહસ્રાંશુવેદાન્તસુધાકર
વેદાન્તધિચાલકૃષ્ણાદિવિરુદ્ધાવલિખિમૂપિત—
ગોસ્વામિશ્રીમદનિરુદ્ધાચાર્યજી મહારાજશ્રીને

॥ અમિનંદન ॥

શ્રીમદ્બળભૂમિભૂડલાચાર્યભગવદ્દેવધાનશાયતારશ્રીવલ્લભાચાર્યમહાપ્ર-
ભુપૂજ્યપાદવંશાયતંશ વિદ્વત્કેસરી ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીઅનિરુદ્ધાચાર્યજી મહા-
રાજશ્રીના પરમપવિત્રપાદપદ્મમાં પ્રણામપૂર્વક વિનંતિ—

આપશ્રીએ આજસુધી અનેક કટો સદન કરીને પણ શ્રીમદ્દેવસાગરસુધામાંભી-
ર્યના અવધારણુ માટે તથાસ્પર્શી અવગાહન કર્યું છે, જોટલું જ નહિ પણ વૈષ્ણવદ્વંદ
ઉપર અનુગ્રહ કરી તે સુધાસાગરના નવનીતસારને પ્રાઠવિચારપૂર્ણ અન્યથે પ્રકટાવી
સમ્પ્રતિ વિરાજમાન ગોસ્વામી આચાર્યોમાં એક અતિશાસત્પત્ર અન્યકાર તરીકેનું અનેક
આદ્ય માન ગેજવું છે.

આપશ્રીએ વારંવાર પ્રવચનો, શાસ્ત્રાર્થો અને ગ્રંથોદ્ધારા સમ્પ્રદાય ઉપર થતા
આલોચના સચોટ પ્રત્યુત્તરો આત્યન્ત સરલતા અને આચાર્યને યોગ્ય એવી પદ્ધતિપૂર્વક
આપીને, વૈષ્ણવસૃષ્ટિને ઉપદ્રુત બનાવી છે; છતાં આવા અનુકરણીય કાર્યો આચાર્યપદને
અનુરૂપજ હોવાથી તે વિરે આપશ્રીના પ્રત્યે માનભરી લાગણી જ દર્શાવી શકાય; કાર્ણ
પણ વૈષ્ણવ આપશ્રીના આ ઉપકારનું સ્મરણ શબ્દદ્વારા તો નજ કરી શકે.

આપશ્રી આચાર્યમિરહને અનુરૂપ સૌહાર્દ, કાર્યદક્ષતા, ગુણપ્રાદકતા, ચારિત્ર્ય,
આત્મભક્તિ, અને પ્રપંચવિરમ્ભિતિપૂર્વક ભગવદસક્તિરૂપ નિરોધ વગેરે ગુણોનું અધિશાન
સ્વરૂપ જ છે.

અમે નદીઆદવાસી વૈષ્ણુઓએ ખીસ વર્ષ પહેલાં જે આશા ધરાવી હતી, તે
સમ્પૂર્ણરીતે ફલીભૂત મળેલી દૃષ્ટિગોચર થાય છે.

આપશ્રીએ ગ્રંથો સ્વી આધુનિક આચાર્યો અને પદ્ધતિને આ દિશામાં ગ્રેરણા
કરી કહેવાય. આપશ્રીનો ઔપનિષદસાહિત્યપતિ કરવાનો શુભ મનોરથ જાણીને આનંદ
થાય છે. અમે આપશ્રીના વિદાભ્યસનને અન્વર્ય થાય એવા “વાગ્ડતમગ્ડેશ્વર” પદ્ધતિ
સુત્રોપદેશ ગોટ ધરી આપશ્રીનું આ વિવાહોત્સવ પ્રસંગે પૂજન કરીએ છીએ.

આપ દમ્પતી શ્રીઆજકૃષ્ણપ્રભુની સેવોમાં તત્પર રહીને ધણાં વર્ષો સુધી વૈષ્ણવ
પ્રાનને સુખ આપો, એમ તેમના ચરણકમલમાં પ્રાર્થના છે.

નરીઆદ.
કાર્તિક કૃષ્ણપક્ષ
સંવત ૧૯૮૮

અમે શ્રીએ આપશ્રીના સેવકો,
નરીઆદના સમસ્ત વૈષ્ણુઓ તરફથી

દેસાઇ ગોપાલદાસ વિદારીદાસ પરી. હોટાતાલ ભુનીતાલ
દેસાઇ ગિરધરદાસ મંગડદાસ પરી. બડદેવદાસ મથુરદાસ
પરીખ ત્રિકમજીભાઈ સાંકળજીદાસ મંગલજીભાઈ ભાઈજીભાઈ
ભુનીતાલ લલ્લુભાઈ માલવી તાડાડી હરગોવિંદદાસ પુરુષોત્તમદાસ
વૈષ્ણવ સુખ મંદળ તરફથી

દિવિ પુરુષોત્તમદાસ ત્રિભુવનદાસ

તે પછી વડોદરાના સુપ્રસિદ્ધ વિદ્વાન અને ‘લક્ષિતસાધ્ના’ના સંપાદક રા. રા. બ્રહ્મનાથ શાસ્ત્રીજીએ બોધનાં જણાવ્યું કે:—

મહારાજશ્રીનાં પાંડિત્ય અને પ્રગતિશીલ, વિદ્વત્તા આદિના પરિચય બીજાં કરતાં અમને વિદ્વાનોને વધારે હોય. અમે એઓશ્રીના વધુ સમાગમમાં આવ્યા ન હોઈએ તો પણ થોડા જ સમયના સમાગમથી એઓશ્રી પાસેથી ઘણું મેળવી શકીએ. અમે જૂની સૈદ્ધાંતના વિદ્વાનો છીએ. એક પુરતક વાંચીએ, તે પૂર્ણ વાંચીએ. વર્તમાનપત્રોની અમને દરકાર નથી. બ્યારે બીજાં જનસમૂહ છાપાંઓ વાંચવા માટે વર્તમાનપત્રો શોધતો ફરે ત્યારે અમે છાપાંઓની સામુંએ ન જોઈએ. કોઈ છાપાંઓ લાવીને અમારું ધ્યાન ખેંચે તો જ વાંચીએ. મતલબકે છાપાંઓને ગરજ હોય તો અમને શોધતાં આવે ! (હસાદસ) અને છાપાંઓ પણ વાંચીએ તો માત્ર ઉપરચોટીયાં હેડિંગો જ ન વાંચીએ, પણ પહેલેથી છેલ્લે સુધી વાંચી જઈએ; તેમાંની ‘શુંદરી સાથી’ની જાહેર ખબર પણ છોડીએ નહિ ! (વધુ હસાદસ.) આવી પ્રકૃતિના અમે વિદ્વાનો છીએ. અમારો વ્યાસંગ માત્ર વિદ્વાનો જ છે. તેથી જ આજે એક વિદ્વાન આચાર્યશ્રીનાં સન્માનાર્થે ઉપરિચિત થયા છીએ. મહારાજશ્રીમાં વિદ્વત્તા, શુદ્ધિચારુર્ય, આશુકવિત્ત્વ આદિ સમૃદ્ધ શુભોનો સંયોગ થયેલો છે. મધ, દૂધ, સાકર, અને દ્રાક્ષ; એ મધુર પદાર્થોની જેમ મધુર શુભો આપશ્રીમાં અનુભવાય છે. આ માનપત્ર તો કાગળમાં લખાયેલું છે, પણ ખરું જોતાં તો તે માનપત્ર અમારાં હૃદયમાં લખાયેલું છે. ”

તે પછી વક્તાએ સંસ્કૃત માનપત્ર સંસ્કૃતમાં વાંચ્યું હતું:—

ત્યારબાદ શુભરાત્રીના કાશીપુરીસમાન વડોદરાના ગૌરવાવશીષ્ઠ ત્રિભંગદેશના મહાન પંડિત વયોદૃઢ શાસ્ત્રીજી બાલશાસ્ત્રીજીએ ઉપરનું માનપત્ર અર્પણ કરતાં જણાવ્યું કે:—દંડાવનવિહારી રાધારમણ શ્રીકૃષ્ણના પ્રતિબિંબરૂપ-ભગવત્પ્રતિબિંબરૂપ-આપ ગૌરવામી છે. અમે આપશ્રીના ચરણમાં માનપત્ર અર્પણ કરવા મળ્યા છીએ. આ માનપત્ર તો પહેલાં એક વક્તાએ કહ્યું ‘તેમ સૂર્યને દીપક દેખાડવા સમાન છે. દેવાનાપ્રિયોએ પંડિતોનું ગૌરવ કરવા જેવું છે. સંસ્કૃત સાહિત્યના ઇતિહાસમાં માનપત્ર શબ્દ જ નથી. અહીં તો સ્તુતિપત્ર શબ્દ યોગ્ય બજાય [તાળીઓ.] વાછાંઓ, ગોવાળાઓ વગેરેને સંતાડનાર બ્રહ્માજીએ બ્યારે પ્રભુનો પ્રતાપ પેખ્યો ત્યારે નૌમીવ્ય એ બ્રહ્મસ્તુતિ કરી. તેવી જ રીતનું આ ‘સ્તુતિપત્ર છે. એ સ્તુતિથી જ ભક્તિ તથા આપશ્રીની કૃપાનો સંબંધ સધાય છે. તેથી આનંદપૂર્વક આ સ્તુતિપત્ર આપના ચરણારવિંદમાં સમર્પણ કરીએ છીએ અને આશીર્વાદ આપીએ છીએ કે આપ ચિરંજીવ રહે ! (તાળીઓ) એ પ્રમાણે સંસ્કૃત માનપત્ર અર્પણ થયું. બાદ વ્યાસરાજાચાર્ય ઠીંગણા શાસ્ત્રીએ સંસ્કૃતમાં મહારાજશ્રીના શુભગાનનો આશીર્વાદાત્મક રસોડો વિવેચન સાથે સંભળાવ્યો. ત્યારબાદ ભગવદીય કવિ પુરુષોત્તમસદાસજીએ શુભરાત્રી માનપત્ર વાંચ્યું:—

શુભરાત્રી માનપત્ર રેશમી શાદીનમાં મુંદર રીતે છપાયું હતું, તે નકિયાદના સુપ્રસિદ્ધ સદ્-ગૃહસ્થ રા. રા. હોટાલાલ પારેએ મહારાજશ્રીને અર્પણ કર્યું. અને “ પંડિતમંડલેશ્વર ” નો સોનાનો ચાંદ અર્પણ કરવા મથકુર અગ્રેસર સરદાર નાનાસાહેબ શ્રીયુત ગોપાલકાંત વિહારીદાસ દેસાઈ ઉભા થયા. તેમણે કહ્યું કે:—પ્રભુએ અમને કર્મેન્દ્રિયો આપેલી છે તેની આજે સાચકતા થાય છે. આ હાથથી આચાર્યશ્રીને સુવર્ણપદક અર્પણ કરું છું. વાગિન્દ્રિયથી આપશ્રીની સ્તુતિ કરીને સ્તુતિપત્ર અર્પું છે. અમારામાં કાંઈ યોગ્યતા નથી. માત્ર આપશ્રીના શુભ શુભોની સ્તુતિ

કરી શકીએ. અમારા હૃદયમાં આપશ્રી તારે જે જ્ઞાન, શક્તિ, પ્રેમ આદિ છે તેનું આ પ્રતિબિંબરૂપ સુવર્ણપદક આપશ્રીના ચરણમાં સર્પાઈ પડું.”

તદનંતર નડિયાદના નાગરિક અને શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુરતકાલયના જાણીતા મંત્રી શેઠ મગનલાલ ભાષાભાષ્યે હુંકું વિવેચન કરીને મહારાજશ્રીને શુધ્ધમાળા ધરાવી હતી.

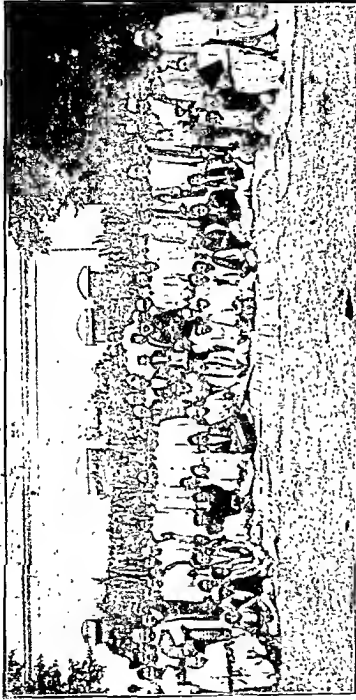
આચાર્યશ્રીનું વલેચન.

આપશ્રીએ છટાદાર મંરૂત લાપામાં વિવેચન કરતાં જણાવ્યું કે;—

વિદ્વાનો, વૈષ્ણવો અને શ્રોતાઓ ! “ પંડિતમણ્ડલેશ્વર ” અને “ પંડિતેન્દ્ર ” નામની જે મહાપદવીથી મને તમે અર્પકૃત કરો છો, તેમાં કારણ તમારું સૌજન્ય અને વિદ્યાપ્રિય જ છે. હું તેવા નથી. હું તો શ્રીવાગીશવાગ્ધારાનિધિ (શ્રીમહાપ્રભુજીની વાણીરૂપ મહાન્ સમુદ્ર) માં માત્ર અવગાહન કરનારો છું. આજે વિદ્વાનોની ગંડશીનાં દર્શનથી મહાન્ આનંદ થયો છે. આટલું સંસ્કૃત લાપામાં બોલીને હવે ગુજરાતીમાં કહીશ. કેમકે અહીં વિદ્વાનો ઘોડા છે જ્યારે સંસ્કૃત લાપા નહિ સમજનાર વર્ગ ઘણો છે. એની વચ્ચે સંસ્કૃતમાં બોલતાં વેરસ્ય પ્રાપ્ત થાય. તેથી ગુજરાતીમાં બોલતું અનુચિત નહિ જ મણાય. હું પ્રભુને પ્રાર્થના કરીશ કે આહું વિદ્વત્સંમિલન વારંવાર થાઓ. (ગુજરાતીમાં) આજે વિશેષ હું શું કહી શકું ? પરંતુ એટલું તો નિઃશંક જ છે કે નડિયાદની જેવી પ્રાપ્તિ પહેલાં હતી તેવી ને તેવી જ અત્યારે પણ હું જોઉં છું. આ સમારંભ એ તેનું પ્રાયશ્ચિત્ત છે. હું કાંઈ તેવા વિદ્વાન નથી. તો પણ શ્રીમહાપ્રભુજીની કૃપાથી તેઓશ્રીની વાણીનો આનંદ પ્રાપ્ત કરું છું. આપ સર્વનો મારા ઉપર જે પ્રેમ છે તેમાં પણ કારણ શ્રીમહાપ્રભુજીની કૃપા જ છે. વળી જ્યાં સ્વાર્થ હોય ત્યાં પ્રીતિ ન્યૂન તથા અધિક થાય, અહીં તેવા સ્વાર્થ સંબંધ નથી. તેથી જેવી પ્રીતિ પડેલાં હતી તેવી ને તેવી જ અત્યારે પણ છે. વળી મારા ઉપર આપ લોકોની પ્રસન્નતા જે દેખાય છે તેનું કારણ પણ આપ લોકોમાં શ્રીમહાચાર્યશ્રીના કમલમાં અને ધર્મશાસ્ત્રમાં સંપૂર્ણ શ્રદ્ધા છે તે જ છે. આજ કારણથી મારા તરફ આંટલો પ્રેમ તમે દર્શાવો છો. કાલ કેવો કરાલ છે તે આપ જાણો છો. આવા સમયમાં ધર્મ તથા ધર્મોચરણાદિમાં આપ સર્વની સંપૂર્ણ શ્રદ્ધા પ્રભુ રાખે એવી પ્રાર્થના છે. સાંપ્રદાયિક મંથોનું પંદનું પાકન પ્રચલિત થાઓ. સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતો તરફ અભિરુચિમાં અભિપ્રાય થાઓ અને વાણીના પેતિની (શ્રીમહાપ્રભુજીની) વાણીનું રહસ્ય જાણવા અને સ્વકર્તવ્યપરોપણ થવા શુદ્ધિને પ્રશ્ન પ્રેરો એ જ અભિલાષ છે.”

તે પછી જાણીતા વૈષ્ણવ વકીલ અને સહગત તેનીવાજાના મિત્ર રા. રા. બહેચરદાસ વકીલ ખી એ. એચ.એલ. ખી. એ મહારાજશ્રીનો ઉપકાર માનવાની દરખાસ્ત રજૂ કરી હતી, અને આપશ્રીની વિદ્વતાને લાભ અર્હિતા કેળવાયલા વર્ગને મળે તેવી વિનંતિ કરી હતી. (આ સમયે મહારાજશ્રી સાથે વિદ્વાનો વાર્તાલાપ કરી રહ્યા હતા તેથી વક્તાએ આ વિનંતિપર આપશ્રીનું ફરી પાન એટલું હતું !) મહારાજશ્રીએ આ વિનંતિ સ્વીકારી હતી. તે પછી એક સુવક વૈષ્ણવ અભ્યાસી ભાષા ગુરિધરલાલે સુવક અંબુજી તથા અન્ય તરફથી આજના મહાન્ સમારંભમાં કાંઈ ત્રુટી થઈ હોય તો તે ક્ષમા કરવાની વિનંતિ કરી હતી. હતી તે પછી મહારાજશ્રીના ‘ જય ’ ઘોષ વચ્ચે સભા વિસર્જન થઈ હતી.

गुजरायत



श्री कन्द्या प्रभुना प्राकृत्य भडोल्लेख प्रसन्न नरैय्यामां लगवटीय शैव मोहनलाल आयादाशना अंगलामां देवायलु
गुजरायतना वेज्जुवसगावन् मित्त.

વૈદક-વિજ્ઞાન.

(આમ, સંસ્કૃતિમાંના આયુર્વેદવિજ્ઞાને જન્મતમાં જે સ્થાન પ્રાપ્ત કર્યું છે, તે સ્થાન કોઈ પણ સંસ્કૃતિતનું તે વિજ્ઞાન પ્રાપ્ત નહિ જ કરી શકે. પણ હાલમાં વિદેશી સત્તા, વિદેશી શિક્ષાના પ્રભાવે દેશનું પ્રાણસભ એ વિજ્ઞાન હુમ્મપ્રાય થવા લાગ્યું છે. પુષ્ટિમાર્ગમાં તો એનાં રક્ષણ માટે વૈષ્ણવ જીવનજ એવું વ્યવસ્થિત કર્યું છે કે સદજમાં જ એ વિજ્ઞાન સુરક્ષિત રહે. કેાઈ પણ સુસ્ત વૈષ્ણવ પ્રાણુનું તે પણ વિદેશી દ્વાઓનો સ્પર્શ પણ નહિ જ કરે. આપણા ઘરનાં તો ડોસી-ડગરા પાઈ જે પાઈની દવામાં મોઠાં મોઠાં દર્દો દૂર કરતાં હતા! પણ હાલમાં તે સ્થિતિ નથી. તેથી આ વિભાગ નશ્વર થયો છે. ભણીતા ભગવદીય મોતીભાઈ (મોતીકાકા) આ વિષય પર અવારનવાર લખશે. તેઓ વંશપરંપરાના વૈદ છે. તેમની દવાઓ, તુરખાઓ અનેકવાર અનુભવેલા છે. આશા છે, કે 'શુદ્ધકૈત'ના વાચકોને આ વસ્તુ રુચ્યા વિના નહિ જ રહે તંત્રી.]

અસાક્ષિત—આજકાલ કુનિયા રોની માગણી કરી રહી છે? નિર્ગળતા, અસાક્ષિત, વીર્યદોષ, ક્ષીણતા વગેરે નષ્ટ થઈ શરીરમાં સારામાં સારી શક્તિ માગે છે, માટે નીચે પ્રમાણે તુરખા આપ્યા છે.

૧. માળવી ચોખર, એખરો, જેડીમ્બ, ગંજેડી, આદન, યુમળી, કેત્યા, સર્વ સમભાગે લઈ તેનું ચૂર્ણ કરી તેના બરાબર ઘીમાં શેકી તેથી આઠ ઘણા કુદમાં માવે કરી, સર્વથી બમણી સાકર નાંખી લાકુ બનાવી ખાવાથી ઉપરની કુરિયાદ બંધ થાય છે.

૨. અકબગરો, મુંક, લર્વીંગ, કેસર, પીપર, બમ્બળ, ભવંત્રી, સુખડ દરેક એકેક તોલો લઈ તેનું ચૂર્ણ કરી તેમાં ૪ તોલાભાર ચોખુ અરીણ નાંખી તેની પાંચ પાંચ રતીભારની ગોળા બાળી શખવી. તેમાંથી હમેશાં ૧ ગોળા રાતે ગ્રહ સાથે ખાવાથી વીર્ય સ્તંભન થાય છે.

૩. વડના દૂધને પતાસામાં સાત ટીપાં નાખી સાત દિવસ ખાવાથી જીવિંદ થાય છે.

૪. મુંક તો. ૧, આદન તો. ૨, વરધારો તો. ૩નું ચૂર્ણ કરી જે આનીમારથી પાવશીભાર સુધી શાકી મંથપા લઈ ઉપર દૂધ પીવાથી ધાતુપુષ્ટિ થાય છે.

નપુંસકત્વ માટે—૧. ઘોળા કરેલુના મૂળને મધેડાના મૂળમાં ઘસી તેનો લેપ કરવાથી પુરુષત્વ પ્રાપ્ત થાય છે. આ લેપ પ્રથમ ઘી ચોપડી કરવો અને લેપ ઘોળા પછી ઘી ચોપડવું.

ઘોળા કુંગરીના રસમાં અજમેા પઘાળી તે દરરોજ ૧ તોળો, સાકર ૨ તોળા એ પ્રમાણે ૨૧ દિવસ પીવાથી નપુંસકત્વ દૂર થાય છે.

અગ્રેજી ઉપચારો—મેએત્યા રાવકાસ ૩ ગ્રામ, ટીચર જીંજર ૫ ટીપાં, ટીચર સેનાકો ૧ ગ્રામ, ટીચર કારકમકો ૫ ટીપાં, સોડા સલ્ફાસ ૩ ગ્રામ, પાણી ૧ ઓસ. મિક્સ કરી એકી વખતે પી જવું. ત્યારબાદ સાત દિવસ પછી નીચેનું મિશ્રણ પીવું.

એસીડ નાઇટ્રો હાઇડ્રોક્લોરિક ડીફ્યુટ ૧૫ ટીપાં, ટીચર નકસલ્ગમીકા ૨૦ ટીપાં, ટીચર કનેથા ૧૫, એકના મેન્થા પીપરેટા ૩ ઓસ મિક્સ કરી દિવસમાં ત્રણ વખત થઈ પીવું.

સાધારણ પ્રકારના નપુંસકત્વપણામાં આહારવિહાર અતિશય કરવાથી થયેલા નપુંસકત્વને દૂર કરે છે. બ્રહ્મચર્ય પાળવું. ચોરાક હલકે ને પોવલુકારક લેવો.

યુનાની તુરખા—તુખમરીહાન (તકમરીયા) તેની ઝીણી છુટી કરીને તેમાં તેના બરાબર વળને ગોળ મેળવી એકેક પૈસાભારની ગોળા હંમેશાં ખાવાથી બદન મોટું થાય તથા ધણ સ્તંભન થઈ શકતી આવે છે.

અરીણ, બમ્બળ, ભવંત્રી, કપૂર ચાર સરખે ભામે લઈ તેને ખારીક વાડી નાગરવેલના પાનના રસમાં છુટી ૧ વાણતી ગોળા કરવી. રોજ એક ગોળા લઈ દૂધમાં પીવાથી શક્તિ આવે છે.

પ્રમેહ માટે—ગળા, ગોખરૂં, આંમળાને સરખે બાગે લાઇ પાણી સાથે અગર ઉઠાળીને પીવાથી પ્રમેહ મટે છે.

કંપાલના કીડા—કુકડાલેલાના પાનના રસનું નરમ (સુંઘવાથી) આપવાથી પીડા દૂર થાય છે.

ગર્ભધારણ પ્રયોગ—ગાભણી જેસના દૂધમાં બઢરીનું મૂત્ર નાંખી પીવાથી ગર્ભ રહે છે. રજસ્વલા થયેલી નારી વઢની વડવાળને ગાયના ઘીમાં પીએ તો ગર્ભધારણ થાય છે.

વંધ્યત્વના ઉપાય—આંબાદળદર, સૈંધવ, તથા ખાંડનું છુરૂ આ ત્રણે તોલો તોલો લઇ ખાંડી વજ્રગાળ કરી સ્ત્રી રજસ્વલા થાય એટલે પહેલા દિવસથી ત્રીજા દિવસ સુધી સવારમાંજ પાણી સાથે તો. ૦૫ ફાડી જવી. (દર ટંક ૦૫ તોલો એટલે ૭ ટંકમાં ત્રણ તોલા ફાડી ત્રણ દિવસમાં લેવી. ચોથા દિવસે સ્નાન શુદ્ધિ કરી નીચેનું ઔષધ લેવું. સાચાં મોતી દાણા ૭, શિવલિંગી દાણા ૭, શંખાવળી (શંખપુષ્પી) માસા ૭, મીઠી (સાકર) માસા ૭, સફેદ શર માસા ૭, ઘોળા રીંગણીનાં બીજ માસા ૭. શિવલિંગી તથા મોતી સિવાયની ચીજોને ખાંડી વજ્રગાળ કરી ૭ પડીકાં કરવાં અને મોતીને લીંણમાં પલાળી ગુલાબ જળથી વાટી પિષ્ટ છુરૂ વારંવાર ચાળી રાખવાં. પછી પતિપરાયણ અને સંતતિ માટે આગર એવી સ્ત્રીએ પતિની આગળ લઇ પ્રથમ સૂચ સામે મુખ રાખી પ્રથમ શિવલિંગીનાં દાણા ૭ ગળી જઇ ઉપર મોતીનો પિષ્ટ તથા તૈયાર કરી રાખેલી સાત પડીકામાંથી એક લઇ ગાયના ડંડા દૂધ સાથે પીવું. પથ્થ-તેલ, મરચું, ખટારા અંધ. દૂધ સાકર ધીવાળે સાત્ત્વિક ખોરાક ખાવો. આ પ્રમાણે ત્રણ માસ સુધી કરવું એટલે દરેક માસે ઝડપના ત્રણ દિવસ આંબાદળદરવાળી છુડી અને ચોથા દિવસથી નીચેના બીજવાળા દવા લેવી. વધુ ખુલાસા માટે નીચેના ઠંકાણે લખો.

દુરસ માને મસા, હીસીરીઆ, સંઘડણી, ધાતુક્ષય તથા સ્ત્રીઓના મલાંશ્લય સંબંધી તમામ દરદો માટે અક્સીર દવાની શોધમાં નિરાશ થયેલાને જણાવવાનું કે તેવાં દરદો મધ્યમ તથા ગરીબ વર્ગના માણુમે માર્ટે શીયાં લણીજ રહેઘાયત રાખી મટાડવામાં આવે છે અને શીઆળાની અજળ માત્રાઓ અમારે ત્યાં મળે છે. શીઆળામાં શોખીનો માટે અંબર કરતૂરી-વાળા અમીરી માત્રાઓ અમારે ત્યાંથી લઈ એક વખત વાપરી ખાત્રી કરો. ચાલુ ઝડપમાં નીચે પ્રમાણે નિયમે પાળવાથી તનદુરસ્તી મેળવી ચક્રશે. કાર્તિક અને માર્ગશીર્ષ એ બે માસને હેમંત ઝડપ કહે છે, આ ઝડપ માણસના ચરોરમાં જળની વૃદ્ધિ કરે છે. આ ઝડપમાં મધુર એટલે ગળપણવાળા તથા ખાટા અને ખારા પદાર્થો ખાવા. મધુર રસ કઢને વધારે છે અને કઢ વધે તોજ પ્રગળ થયેવ જઠરાગ્નિનું જરાખર પોષણ થાય. મધુર રસની રચિ ઉત્પન્ન કરવા માટે ખાટા અને ખારા રસવાળા પદાર્થો ખાવાની જરૂર છે. વળી બીજી રીત એમ પણ છે કે હેમંત ઝડપના ૬૦ દિવસોમાંના પ્રથમ ૨૦ દિવસોમાં મધુર રસવાળા પદાર્થો વધારે પ્રમાણમાં ખાવા. તે પછીના ૨૦ દિવસોમાં ખાટા રસવાળા અને છેવટના ૨૦ દિવસોમાં ખારા રસવાળા પદાર્થો વિશેષ ખાવા. હમેશા ત્રણેય રસવાળા પદાર્થોનો ઉપયોગ કરનારે બોજનમાં પ્રથમ મધુર પછી ખાટા અને પછી ખારા રસવાળા પદાર્થો લેવા. એટલે કે પ્રથમ મિષ્ટાન્નનો મોળીઓ પછી લીંણ, કાકમ કે રાઇ અકવેવ દાળ, શાક, રાયતું કે ખાંડું અથાણું હોય તેનો એક હાથ લેવો અને ચટણી પાપડ વગેરે પદાર્થો છેલ્લે ખાવા. , જે આ ક્રમેના લાગ કરી વિપરીત ક્રમમાં ખાનારને નુકસાન થાય છે સામાન્ય રીતે તીખા અને ટુરા પદાર્થોનું સેવન, ખુશી જગ્યામાં સૂવું, ડંડા પાણીએ નહાવું, ઝિન્ને મૂન, અને જુઝાબ એ આ ઝડપમાં નુકસાનકારક છે માટે તેનો લાગ કરવો.

૨. સારી રીતે પોષણ કરે એવો પુષ્ટિકારક ખોરાક, પૌષ્ટિક ઔષધો, પૌષ્ટિક પાકો, ગરમ કપડાં અને સખ્ત તાંડ વખતે સગરી, સીસેવન, તેલાબગ, કસરત એ આ ઝડપમાં શયનાકારક છે.

ઉપર બતાવેલ પૌષ્ટિક ઔષધોમાં અંજર કસ્તૂરીવાળા રાજવંશી માત્રાઓ અમારી પાસેથી કીકાયતે મળી શકશે, કેમકે એવી માત્રાઓ વંશપરંપરાથી અમારા ઘરમાં બનતી આવે છે અને તે માટે અમને મોટી જાગીર મળેલી છે માટે નીચેને ઠેકાણે મળે અથવા લખો. અમને મળેલ અનેક સર્દારીકેટા પૈકી ખંડવાના પ્રખ્યાત શેઠ મોહનલાલ પ્રાગજી લખે છે કે “અમારા ઘરમાંથી નામે અ. સૌ. જેડુંવરને લોહીવા તથા ધાતુલક્ષ્મીની બીમારી લાગેલી હતી જેને માટે ખંડવા, ઇંદોર, મીરજ વગેરે રથએ પ્રખ્યાત દાકતરો તથા વૈદોની દવા કરાવવા છતાં આરામ ન થયેલો પછી અમ્માવાદવાળા વૈદરાજ મોતીલાલ મહાશંકર પાસે દવા કરાવવાથી સદરહુ બાકને તદ્દન આરામ થઈ ગયો અને પ્રમુદ્ધપાથી પુનની પ્રાપ્તિ થઈ છે.”

ડે. સારંગપુર, કેકઢીઆની પોળ સામે, } વૈદરાજ મોતીલાલ મહાશંકર L. W. T.
અમદાવાદ. } (સંપ્રદાયીના ખાસ વૈદ-રાજકાવાળા)

મહાન પરોપકાર—એકજ વખત રૂ. ૫) ભરવાથી હીસ્ટીરીયા જેવા બચકર દરહ માટે મફત દવા આપવામાં આવે છે.

હુમની સાકર.

મોરસ ખાંડથી આપણે અભગ્રમ્યે છીએ. આચારવિચારોમાં આપણે ઉત્તમ સ્થાન મેળવ્યું છે અને અત્યારે પણ તે સ્થાન મોબાવી રહેલા છીએ. આર્થસંસ્કૃતિમાંની ઉત્તમોત્તમ સ્વદેશી ભાવનાનાં દરેક અંગનો વિકાસ કરવાનો દાવો અત્યારે પુષ્ટિમાર્ગીય વૈખણે જ કરી શકે. તે વખતે “સોનાની યાળામાં લોહાની મેખ” ની માફક આપણે ત્યાં જે મહાન ઇષ્ટાચાર ચાલી રહેલો છે, તે તરફ શા માટે આંખમીચામણ ચાપ છે? ચીન દેશમાં, મોખાસભક્ષક ચીના લોકોને હાથે બનેલી હુમની સાકર આપણે શા માટે વાપરીએ? આપણા મંદિરોમાં શા માટે તે ધર કરી રહી છે? જે મોરસ ખાંડ છોડવા માટે જરાગ પાડનારા આપણે એજ મોરસ-માંથી બનેલી હુમની સાકર શા માટે વાપરીએ? જે હુમની સાકર આપણા બધા મંદિરોમાં વપરાય તો પછી મોરસ ખાંડ શા માટે ન વાપરવી? આશા છે કે શ્રીનાથદ્વારાધીશ્વર આદિ શ્રીગોસ્વામિયાજકા આ વિકટ સમસ્યા વિષે વિચાર કરશે અને આપણાં બધાં મંદિરોમાં પેટેલા આ પ્રલશ્ ઇષ્ટાચારને બંધ કરવા આગ્રહ કરાવશે.

આ વિષે ઉજ્જૈનવાળા મુખસિદ્ધ દાહકાટ વડીલ શ્રીયુત જમનાદાસજી ગ્રાહાની એમ. એ. એલ.એલ. બી. લખે છે કે:—

एक आवश्यक बातकी तरफ आपका ध्यान आकर्षण करनेकी परवानगी लेता हूं.

गये सालमें बम्बई गया, तो मेरे एक सगे रामानुज सम्प्रदायके यहाँ रहते हैं, उन्होंने मुझसे कहा कि आपके सम्प्रदायमें जहाँ आचार-विचार आदर्शरूपमें हैं, इतनी बड़ी मोल है कि परदेसी मिथ्री मंदिरोंमें, अंगीकार होती है। इसको आपने बन्द करना चाहिये, मैंने इस बातको सचा नहीं माना तो वे बोले कि आपके मालवेकी तरफ न आती होगी, परन्तु यहाँ आप तलाश करना। डोमकी मिथ्री नामकी मिथ्री सेकड़ो हजारों मन आपके साम्प्रदायिक मंदिरोंमें जाती है. मैंने श्रीमद् गोत्वामीश्री १०८ श्रीगोकुलनाथजी महाराजसे रूबरूमें विनति की तो आपधर्मेने स्वीकार किया कि यह मिथ्री तो बहोत वर्षोंसे आती है. और चीन देशमें पेड़ रससे बनती है

સો મુના છે. મૈને વિનતિ કી કિ ઇસ્કો બન્દ કરના આવશ્યક છે. વહાં બન્દર્દ મેં તો કિસી વૈષ્ણવ મંદિરમેં સામગ્રી પહુચાના હો તો અમુક સેર મિશ્રી મેજનેકાં રિવાજ છે. આપશ્રીને આજ્ઞા કી કિ હમારે યહાં સે અધિકી તો શ્રીનાથદ્વારમેં અંગીકાર હોતી છે. હમારા બન્દ કર દેના તો કુંજર-સ્નાનવત નિષ્ફલ છે. મૈને વિનતિ કી કિ શ્રીનાથદ્વારમેં મી બન્દ કરના ચાહિયે; ક્યોંકિ આઢ મૂમફલી જૈસે કંદ મી ભારતવર્ષમેં આ જાનેકે સેકઢો વર્ષ વાદ વડી દ્વાનવીન તપાસ હોકર અવ ધોઢે વર્ષસે અંગીકાર હોને લગે છે, વહાં પ્રત્યક્ષ વિદેશી શકરફી બની હુઈ મિશ્રી કૈસે લી જા સકતી હૈ? ફિર મી આપશ્રીને બરાબર ધ્યાન નહીં દિયા. સુરત ઉતરા, તો વહાં શ્રી ૧૦૮ શ્રીવજરન-લ્હાજી મહારાજને સ્વીકાર તો કિયા, પરન્તુ આગે કયા વ્યવસ્થા કી ગઈ ઇસ્કા પત્તા નહીં છે. શ્રીજીદ્વાર તો અવ તરુ નહીં જા સકા, પરન્તુ બન્દર્દ ફિર મી વિનતિપત્ર લિખા તો શ્રીગોકુલનાથજી મહારાજકા આજ્ઞાપત્ર આયા કિ યહ મિશ્રી અશુદ્ધ છે, ઇસ્કા પ્રમાણ કયા છે સો લિખો.

પ્રમાણ તો મુઝે નહીં મિલ્યા પરન્તુ યહ મિશ્રી ચીનસે બનકર આતી હૈ; યહ સવ વ્યાપારી જાનતે હૈ. મૈને કેતકરકે મરાઠી વિધકોપમેં દેસા થા, ઔર આંસતે દેસકર આયે હુવે કુછ લોગ મી વિશ્વાસપૂર્વક કહતે હૈં કિ જાયા શકર શુદ્ધ હોતી હૈ. પહેલે કિસી જમાનેમેં જો અશુદ્ધ વસ્તુઓ-દ્વારા શુદ્ધ કી જાતી થી. વૈસા અવ નહીં હોતા અવ દૂસરી વિધિસે શુદ્ધ હોતા હૈ, જિસમેં કોઈ અશુદ્ધ પદાર્થ નહીં લિયા જાતા, પરન્તુ ઇસ કારણસે મી જાયા શકર હમારે યહાં સ્વીકાર નહીં કી જા સકતી, ફિર પરદેશી મિશ્રી કૈસે લી જાની ચાહિયે.

મંદિરોમેં અન્ય સામગ્રી સિદ્ધ હોનેકે લિયે શકર ગલાકર ચાસની કરની પડતી હૈ વૈસે મિશ્રી ક્યાં નહીં સિદ્ધ કી જાતી હૈ : યહાં કુછ મંદિરોમેં તથા પ્રામાણિક વૈષ્ણવોંકે ઘરમેં યહી હોતા હૈ. કુછ ટિકાને બનાસ શકરફી મિશ્રી બનાવેવાલેકે યહાંસે વિશ્વાસકી મિશ્રી મંગાઈ જાતી હૈ, જૈસે મધુરા, ટ્વનવ, કાશી પુષ્કરમેં મૈને દેખા હૈ. સામગ્રી પહુંચાનેવાલે યહાં શકર પહુંચાતે હૈ, મિશ્રી નહીં પહુંચાતે.

તાત્પર્ય યહ કિ પરદેશી મિશ્રી ઇકદમ બન્દકર દેનેસે કોઈ કાર્ય રુક નહીં સકેગા.

આજ્ઞા હૈ આપ સ્વતઃ તથા અપને માસિકદ્વારા ઇસ્કે બન્દ કરાનેકા પ્રયત્ન કરેંગે, ક્યોંકિ અન્યમાર્ગીય લોગ નિન્દા કરતે હૈં ઔર વડા મારી અવાચાર કૈજાતા હૈ.

પ્રાસંગિક નોંધ.

શ્રીકૃષ્ણપ્રભુપ્રાકટયોત્સવ.

નિત્યકીર્તિત રસિકચિરોગણિ શ્રીગોકુલેશ્વરવર્ય ગો. શ્રીકૃષ્ણદાસાદિ મહારાજશ્રીએ પંચમહાલમાના વૈષ્ણવો પર જે રસવર્ષા કરી છે તેનાં ફલનો અનુસવ આપશ્રીના પ્રાકટયોત્સવના રોજ અમદાવાદમાં થયો. ગોલોકવાસી શેઠ અચાભાઈએ આવોજ આનંદ અર્દાના વૈષ્ણવોને કેટલાક વર્ષો પહેલાં આપેલો, પણ ધનાઢય વૈષ્ણવોથી ભરેલા આ શહેરમાં આવા ભજનાનંદનો રસોત્સવ લેવા કેણુ તલપાપડ છે ? ભજનલ-હારાનંદ ખાસે ભજનાનંદને કેણુ સંભારે ? છતાં પરમ ભજવદીય શેઠ ગોદનદાસ આપાદાસ તથા અર્દાના શ્રીગોકુલનાથજીના મંદિરના મુખ્યાદિ શ્રીયુત દાસાદિએ એ બંનેની વિતત-તનુ સેવાના આસાધારણ સંયોગથી અણધાર્યો અદ્ભુત આનંદ જાન્યો. શ્રીકૃષ્ણપ્રભુનું પ્રાકટ્ય તેા જન્માટમીને મહામંજલમય દિનેજ છે, પણ ૩ માસની નાની વયમાંજ આપશ્રી શ્રીગોકુલેશ્વરજીના ધરમાં ગોદ બિરાજ્યા. તેને પ્રાગટ્ય મહામહોત્સવ કાર્તિક વદ ૧૧ નો મનાય છે. શ્રીગોકુલેશ્વરજીની અનન્ય સન્મુખ સુષ્ટિમા આને ધોરેર આનંદ પ્રસરી રહે છે. આ ઉત્સવ ઉપર મુખ્યાદિ દાસાદિએ ગામેગામથી વૈષ્ણવોને કુંકુમપત્રિકા લખીને તેડાવ્યા હતા. હાલોલ, ગોધરા, દેવગઢબારીઆ, દાહોદ, ઝાલોદ, નડીયાદ, આદિ અનેક રચળેથી વૈષ્ણવો ગોટી સંખ્યામાં અર્દા આવ્યા હતા. લગભગ આ ઉત્સવ માટે એક માસથી તૈયારીએ ચાલી રહી હતી. ઉત્સવના ચાર દિન પહેલેથીજ વૈષ્ણવો અર્દા આવેલા હાન્યા હતા. તેમને ઉતરવા વગેરેની બ્યવસ્થા ઉત્તમ હતી, અને આવા સમાજસમયે કેવો સંસ્કાર કરવો એ ચીંતવા જેવું હતું. પ્રતિદિન રાત્રિના ભેન્નણુ વાગ્યા સુધી ભજનાનંદના મહારસસાગરમાં ભરતી આવતી હતી. અર્દા બિરાજતા શ્રીગોરવામી બાલકોં પણ પધાર્યા હતા. પ્રેમ પાસે મહાદેવકીલા, દાટીકીલા આદિ લીલાઓ યતી હતી. ઉત્સવના રોજ નંદમહોત્સવનો આનંદ તેા અવર્ણનીય હતો. નંદમહોત્સવના મહારસની જગજગ્દ કરનાર ગો. મીમંસુદનદાસજી મહારાજશ્રી પણ પધાર્યા હતા. આજ દિવસે દાટીકીલા તથા મહાદેવકીલા પણ યજ્ઞ હતી. રાત્રે શ્રીનંદસમાજ મંદિરમાં તથા ભજવદીય ગોદનદાસભાઈને ત્યાં થયો હતો. એ રીતે ઉત્સવના દિવસે ચિરંમરણીય જાન્યા હતા. કાર્તિક વદ ૧૨ ના રોજ નરોડાની શ્રીવલ્લસાધીશ્વરની યેઠકમા પલ્લવાનો મનોરમ થયો હતો. આને બધાએ અર્દાજ મહાપ્રસાદ લીધો અને સમાજ થયો. સત્તે શેઠ ગોદનદાસભાઈના જંજલામાં સર્વ ભજવદીયોના ફેટા પડ્યા. જે આ અંકમાં છાપ્યા છે. એ રીતે આ મહોત્સવ-સમાર ભના સુમંતુર રમણે હૃદયમાંથી કદી વિસરાયે નહોં. ભજવદીય ગોદનસાઈ તથા મુખ્યાદિ દાસાદિ આવોજ આનંદ વૈષ્ણવોને આપે એ અભિલાષા સાથે વિરમીશ.

કરનાર દેશભક્ત વહનભાઈ પટેલને મરનહીના વૈશ્વજ્યોના ઇકરા ઠેરવી અને તેમની અહિંસાની નીતિ સાથે શ્રીમદ્દામ્બુજીના સિદ્ધાંતોના સંબંધ ઠોઠા બેસાડીને તેમણે ચોતાની પાટીદારશાહીની સીમા ખતાવી નાંખી । અલગત, તેઓ ગમે તેવા મહાન દેશનેતાઓ હશે, પણ ધર્મની દૃષ્ટિએ તો તેઓ હોઈ નહીં ગણાય. વળી શ્રીમદ્દામ્બુજીએ જેન તથા બોધ જેવી અહિંસા, માની પણ નથી. રહે ચરતા ક્ષત્રિય શામળોને પ્રસાદી ઉપરણા ચોરાડીને રાત્રીલેવેના સંદાર કરવા વિદાય કરનારા આચાર્યશીના સંપ્રદાયમાં હાલની અહિંસા જેવું તત્ત્વ હોય ન નહિ. અત્યારની અહિંસા તે ધર્મના અંગરૂપ નથી, પણ કૃત શામળીતરૂપ છે. આવા સંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતોનું ખૂન કરનારા લેખો માટે પણ દીનક્રિંકરને જે કપકો આપ્યા, પણ એઓ તો સર્વજ્ઞ (1) બની ગયા છે । તેમના ગળામાં એ વાત વતરી નહિ. હું શ્રીનંદમહોદયે કાંકેરાલીમાં કરીને ૭ મારે અમદાવાદમાં આવ્યો. તે પછી કાર્યાલયની ગેરવ્યવસ્થા ઉપર ટપકે રેઈ, યજ્ઞોન જેલ થયા, તે માટે તેમને સખ્ત કપકો આપ્યા. તે પછી હું સીમલા ગયો, એટલે પાછળથી તેઓ કાર્યાલયમાંથી નહાસી ગયા તે હજી સુધી મને મહોં ખતાવતા નથી । મેં તેમનાં હાથને લખેલા ૭ મારાના ચોપડા ભેંધા. વી. પી. તથા મનીઓડરોની કાપલીઓ, નોંધ અને માલિકાના કાગળો વગેરે મેળખ્યાં. કિચ્સો સુધી લલમરા ક્યાં અને તળીયત ખરાબ કરી । આખરે લવાલમો તથા ભદેર ખબરાનાં નાણાં, તે પણ પાંચ દસ રૂપિયા ન નહિ પણ લગભગ સો બસો રૂપિયા ઉચાપત કરેલા ભેંધા. વળી ચોપડામાં એમ લખેલું કે “રૂ. ૫૨) લવાલમના જમા” પણ તે કોના ? તેને ખુલાસા લખવાની કુસદ તેમને ક્યાંથી હોય ? છતાં ગદલે પ્રયાસે તે મેળખ્યાં. પછી લવાલમ નહિ ભરનાર છસો માલિકોને જે ચોર કાઢે મોકલ્યાં. તેમાંથી કેટલાકના જવાબો મફતા કે, અમે દીનક્રિંકરને પેસા આપ્યા છે. આ ઉપરાંત કાર્યાલયમાંથી પુરતકો તથા ચિત્રો વગેરેનો પણ ઊંચાળ મલ્યો નથી. આ પ્રમાણે ચોતાની બેસવાની કાળ ઉપર કુવાડા મારવાની તેમની વર્તણૂકથી હું દેખતાઈ ગયો, મને સદન શ્રેયો આવ્યો અને તેમને પોલીસ કોર્ટમાં ધસડીને સજા કરાવવાનો નિશ્ચય કર્યો, પણ મિત્રોએ હજી રોક્યા છે. હજી તો નવાનવા ગોઠાળા નીકળતાજ નય છે. ગયા કાર્તિક વડે ના તેઓ અમદાવાદમાં આવ્યા અને જેમને ત્યાં ઉતર્યા, તે બમવલીય મૂળજ્ઞભાઈ પ્રાંતીજી વાળા મારી પાસે આવી ગયા. તેમણે તથા નડીઆદના બીજા બંધુઓએ દીનક્રિંકરના ચોપડા અને ગોઠાળા ભેંધને તાલુખીજ ખતાવી છે. ભાઈ મૂળજ્ઞભાઈએ દીનક્રિંકરને ધણું કહ્યું, પણ તેઓ મહોં ખતાવે ન ચાતા । હવે તો નહાસતાજ કરે છે । મહામુરતીજે પાંચ વર્ષના સતત પ્રયાસ ગળી પ્રભુકૃપાએ આ કાર્યાલય કાર્તિક કેકાણે આપ્યું, ત્યાં આ હાલત યદ્ય છે. દીપેલસવાંકને પણ રી રીતે શસ્ત્રમારી શકું ? રંગીમ ચિત્રોનું ખર્ચ ક્યાંથી કરું ? આ મારી કંઈ કદાણી છે. દીનક્રિંકરને પરમભગવદીય માનનારાઓ મારા પર નારાજ થયા છે. તેપને વિનતિ છે કે, તેઓ કૃપા કરીને કાર્યાલયમાં પધારે, એ ઇચ્છા હશે તો હું ગાડાભાડું પણ તેમને આપીશ. બોલતા કાગળો ઉપરથી દીનક્રિંકરના આ ગોઠાળા જુએ. હજીએ દીનક્રિંકરના મિત્રો તથા પ્રદેશકોએ વચ્ચે પડીને દીનક્રિંકરને સમલવવાની જરૂર છે. મારો હોય મને ન જણાય. છતાં જો મારો હોય લાગે તો મને પણ સિદ્ધા કરવાનો તેમને અધિકાર છે એમ ભદેરમાં ક્યૂંકું છું. હજી દીનક્રિંકરનો ઊંચાળ પૂરો થયા નથી. પૂરો થયેથી કેટલાં નાણાં જોળખ્યે તે ભદેરમાં મૂકેજ કુટકો છે.

વડોદરાની જોરજગેજશાહી—વડોદરા રાજ્યની કાળી નોકરશાહીએ ઇતિહાસમાંની વિદેશી વિધર્મી આજગેજશાહીને હવે પ્રાંતને નજરોતનર દેખાડવાનું અજવર કરવા માંડ્યા છે. વડોદરાની ધાર્મિક પ્રજા આયારે ભયમાં છે. સાવલીવાળા ધર્મચરાયજી સદૃશદરપ બમવલીય દેસાઈ જસભાઈ છજસાહના પત્ર ઉપરથી મેં વડોદરાના ન્યારે હાંપાંઓ વાંચ્યા ત્યારે ઉભા વરતુરિયતિ પ્રત્યક્ષ થયું. એક તરફથી દેશની પ્રતિનિધિ બજાતી મહાસભા ધર્મવિષયમાં વઠરપતા જળવવાના પવિત્ર કોલને ઠોકરે મારી ડેડબંગીઓને મંદિરોમાં જગરજરવીથી ધુસાડવાની ચળવળ કરીને, સત્તા હાથમાં આવે તો આત્યારની ગેરી નોકરશાહી કરતાં કેવા બયાનક અત્યાચારો તે કરે તેને પ્રત્યક્ષ પૂરાવો આપી રહી છે, તો વડોદરા જેવા દેશી રાજ્યની નોકરશાહીનો શા માટે કોડો ચળવળે નહિ ? તેમની આ. વેદજ્ઞ તથા વિદેશીઓ અને વિધર્મીઓની ભજમાં ફસાઈને કરવા માટેનું અંધ અનુકરણ અધ્યાત્મિક અધ્યાત્મિક ખાડામાં ન દેશને યસડશે એમાં લેશ પણ સંશય નથી. વડોદરાની ધાર્મિક પ્રજાએ નોકરશાહીના કોરોની લેથ પણ પચા ન કરતાં જેવું મક્કમપણું ખતાવ્યું છે તેવુંજ ખતાવવું રજું. ડેડ વાંબીઓના લાગકોને જળવરતવીથી નિરાળોમાં યાલવાના હુકમોને

ધાર્મિક પ્રભુ છે એક બાજુ કરશે અને મોઢરાહીની વિરોધી અને વિધર્મી રીતસાતને એક નબળા કુટુંબ લગાવશે એવા વિશ્વાસ છે. અત્યારે ડેરડેર નવી નિયમો રચવામાં છે. સરકારી નીતીઓનો ત્યાગ થઈ ચૂક્યો છે. વિરોધસભાઓ લગામ છે. પાદરામ તે ચળવળને અંગે મુંઝાણથી પૂર્ણપણે ગોરવામી શીરે શીંગેકુલનાયલ મહારાજશ્રી પણ પધાર્યાનું સંભવ્યું છે. આ બધું સુસંધિત છે. 'નવ ગુનરાવ' તા. ૧૪-૧૨-૩૧ ના અંકનો એક વધારો એક લાઠીએ મોકલ્યો છે. એના લેખક પોતાની નીતને અને પોતાના કુલને બહોલ લાજવાના ડરથી તે લેખની નીચે પોતાનું નામ લામ પણ લખ્યું નથી. તેમાંની બધી દલીલોના જવાબો સંકટોત્તર આપાદ ચૂકેલા છે. દિલીપન પાદરીઓની દલીલોને સખ્તડખર અને દલ પાખડનો એવો ચલાવીને પોતે જ ભૂલે શાસ્ત્ર લખતો દોષ તેવા રોગ કરીને આર્થસંરક્ષિતિ ખૂન કરનાર તે લેખકના આવાં ચીંચાઓની સાથું નેવાનું નથી. આમેયમ પ્રચંડ દીકથાલ ઉપાડી લેવાની છે.

તેરસી હામણની 'કુંડા' ની કૂદાકૂદ—શ્રીમદ્ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીદામોદરવાલજી બાવાસાદબ મુંબઈથી શ્રીનાથદ્વારા એરાધ્યેનમાં પધાર્યાં તે બદલ જમે તેવા અપોજાના છાપાંઓમાં ફેંકનાર, સત્ય પ્રવાસો ભંડેરમાં વથો છતાં પોતાનાં અસત્ય લખાણો લખવાના પાપ માટે પ્રાયશ્ચિત્તનો એક સખ્ત પણ ન લખનાર બેઠમાન લેખકો સાથે ચર્ચાના ઉત્તરતું એ એક અર્થે વિદ્યા અથવા ગુનાદ છે. આવી ચર્ચામાં જે વૈષ્ણવ/ભાટીઆ લાઠીએ લાજ લીધી તે લેખાની જરૂર જ ન હતી. નિંદા-વિદ્યાના કીડાઓને તે ખોરાક વિના મલદ જ પડતી નથી ! એટલામાં વળી લાઠી તેરસી ફરી પડ્યા ! શ્રીયુવ પેદાવાળને તેમણે જવાબ આપના જે લાઠી વાપરી છે તે પરીથી એમ કાં ન કહેવું કે એવી લાઠી લખનાર કોઈ સચ્ચ ખાનદાન તો ન જ દોષ ! તેમની દલીલ તે જીવદલીલ દલીલ, જેનો દલરો વાર જવાબ આપાદ ગણેલા છે અને પ્રાચીન તથા નવીન પદ્ધતિધર વિદ્વાનોએ તેના કુચે કુચે કાઢી કાઢી કાઢ્યા છે ! હું તો મી. તેરસીને કહી રાહ કે પુષ્ટિમાર્ગમાં તમને જે 'નાલાયક તત્ત્વો'ની તથા "વેરયા તથા પિસાચ" પધાંની બંધ આવે છે તેના કાષ પુરાવા છે ! પોલપત્રને મદદ કરીને, પ્રવાસી પાતલ ઉપરના તમામ ફેરોમાં દલરો રૂપીઆની મદદ કરી લાવીને તમે શું પરિણામ કાઢ્યું ! કયા કેસમાં તમે જલ્લા ? પાતલને કયા કેસમાં સભ ન યક ? મુંબઈના મોટા મદિરાવાળા ઉત્તમ આરિંચ પરાવનારા એક મહાત્મ વિદ્યાવિલાસી આચાર્યશ્રીના બદનશીના કેસ વખતે તો તમે હોમનસેર બોલતા હતા કે આ કેસમાં તો એ મહારાજશ્રીને જરૂર કલક લગાડીશું, એમ સંભવ્યું હતું. પણ તેમાં તો પાતલને સત્તાવીસ માસની સજા થઈ ! મી. તેરસી ! તમે તો કોઈ ધર્મમાં માનતા નથી, તો આ ધર્મની ચર્ચામાં શા માટે ફૂટી પડો છો ! તમારો નંત અનુભવ ઘોરો પણ ન છતાં કોઈ વ્યક્તિના કહેવાતાં કહેવો બરાબ આવરણોનો ટોપલો સંપ્રદાયને માથે એરાદલો એ ક્યાનો ન્યાય ? જો તમારો ન્યાય બાળગી દોષ તો કાનજી મારતર જેવા સેવાનોને લઈને, મુંબઈની રૂઢ કમીટી, કારપોરેશન અને કોમેસ જેવી સંસ્થાઓને શા માટે 'વેરયા' એ તથા પિંચાઓ સાથે તમે સરખાવતા નથી ? પ્રશ્ન તમને સદૃશ્ય આપે અને મહારાજ વાણજલ કેસમાં થયેલા ન્યાય માટે હાલના કેળવાયલા પુષ્ટિમાર્ગના વિદ્વાન એમ. એ. આદિ પદ્ધતિધર અને કવિ રાગોરના શાંતિનિકેતનવાળા શ્રીયુવ વિદ્યુરોખર ભટ્ટાચાર્ય જેવા બીજા સંપ્રદાયનાઓએ શા અભિપ્રાયો આપ્યા છે તે તમે જાણો. બીજા વાત તો જવા દો, પણ હાલના તમારી કોમના જ વિદ્વાન એમ.એ.એ. આ સંપ્રદાયની કેવી મુંઝ સાદિલસેવા કરી રહ્યા છે ? તેઓ આ સંપ્રદાયના દોષો માટે કેવી મગરૂરી ધરાવે છે ? તમારાં ધર્મપત્ની અખંડસૌભાગ્યવતા પૂર્ણ બહેનનો સંપ્રદાયમાં કેવા પ્રેમ છે ? તમારા જેવા અરિયર મજલના અંધાને તો અરણ્યરૂઢન કરતા લાગે જ વધારે વળનદાર બહારો !

ઉપકાર—આ વર્ષના રીપોર્સવાકથી મને મુઠ્ઠે સંતોષ થયો નથી. રીનકિરે નુકસાનીના આકા કથાથી તેમજ જાહકો એકદમ ધટી ગયાના સળખે આજ વર્ષમાં જે નુકસાન આવશે તે ખમી શકારો કે કેમ ! એ સવાલના ઉચારમાં અત્યારે કેવી રીતે આર્થિક પ્રકટ થઈ રહે ? છતાં કદરદાન માહકોએ મારી તુચ્છ સેવાને હમ્ય માની લીધી અને મુંઝ અભિપ્રાયો લખી મોકલ્યા તેમાં તેમની મોટાદ છે. તેને માટે તેમને હું ઉપકાર માનું છું. દેવદીવાળી અંકનું કદ તથા વળન વધી જવાથી કેટલાંક છાપેલાં પાના સીધીકમાં રાખવાં પડ્યાં, તેમાંના ૮ પૃષ્ઠ આ વર્ષમાં સામીલ કર્યાં છે. તે જ્યપુરના રામના આશ્રિત સંચારીના ૬૪ પ્રેરેનાના જવાબમાં શ્રીમદ્નાયલ મહારાજશ્રીએ લખેલા એક સચોટ અત્યુત્તરની પુનરાવૃત્તિ છે.

સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ.

સાહિત્ય—‘પીયૂષપત્રિકા’નો દ્વિતીયક પ્રગટ થયો. શ્રીસુખેશિનીજીનો અનુવાદ ધમવોહાર છપાય છે. શ્રીયુગાર્ધજીના ઉત્સવ સુધીમા કે તે પછી પહેલો સામ બહાર પડે નથી. એક ઉત્તમ સાહિત્ય છપાઇ પ્રકટ થયું, તે શ્રીસુખેશિનીજી દ્વિતીય રક ધનો પ્રકાશ છે. પ્રથમ, દ્વિતીય અને તૃતીય રક ધનો શ્રી સુખેશિનીજી પ્રગટ થઇ ગયા છે. પણ એકલા શ્રીસુખેશિનીજીથી સંતોષ થતો નથી દશદિગંતવિજયી શ્રીપુરોષોત્તમજી મહારાજ હૃત પ્રકાશથી શ્રીસુખેશિનીજીનો ચસારવાદ કાઢક જોવા આવે છે. દ્વિતીય રક ધનો પ્રકાશ પ્રકટ થયો ન હતો, તે શ્રીયુત-બીમનલાલ સાક્ષીજીએ અનેક પ્રેરો પરીથી રોપીને બહાર પાડ્યો છે. એવા સમાચાર મળ્યા છે એને માટે સાક્ષીજીને ધન્યવાદ પડે છે. શુદ્ધાદિતમાર્ગદય તરફથી ‘ચિત્ર રતનાવલી’ પ્રકટ કરવાની યોજના કરી છે. પહેલું આસ્થામ આવતા માસમા પ્રકટ થશે. તેમા પ્રથમ શૃદ્ધના વિદ્યકથિતોના ચિત્રો છે ક્ષેત્ર બાર ચિત્રો છે. શ્રીમદ્દામ્બુજી, શ્રીયુગાર્ધજી, શ્રીગિરિધરજી, શ્રીરણુદાસજી (કાશવાળા) શ્રીગિરિધરજી (દાહવી વિદ્યકથિત) શ્રીનરવરલાલ (અમદાવાદમા બિરાજતું સ્વરૂપ) શ્રીભાટજી મહારાજ, શ્રીમનરાયજી મહારાજ અને તેઓશ્રીના બે દાહજી, શ્રીમયુસૂદનલાલજી મહારાજ અને શ્રીબાવાસાહેબ, એ પ્રમાણે બાર સુદર ચિત્રો છે. આજ પ્રમાણે સાત શૃદ્ધોના જુદા જુદા સુદર આસ્થામો, વ સાવળી, ટુક પરિચય સાથે બહાર પાડવાની યોજના કરી છે.

સોદી મારફતથી વૈષ્ણવ વિદ્યલભાષ્ય લખે છે કે, અરે પોરબ દરવાજા આયુષ્માન ગોરવામી શ્રીક શ્રીદ્વારકેશલાલ બાવા કાર્તિક વદ ૦)ના રોજ ધોરાજીથી પધાર્યા હતા. અહીં દલેરીમા મુકામ કર્યો હતો. રાત્રે તેમના સાક્ષીજી લક્ષ્મણભાઈએ કર્મ, જ્ઞાન અને ભક્તિ, એ વિષય ઉપર બસોથી ત્રણસો શ્રોતાઓ સમક્ષ વિવેચન કર્યું હતું. વ્યાખ્યાનની ધણીજ સારી અસર થઈ હતી. અહીંનું વૈષ્ણવ મંડળ ધણુજ બાવક દોઢ સિદ્ધાંતોના જ્ઞાનમા પહોંચી રહ્યો છે. શ્રીમાન બાવાસાહેબ માર્ગશીર્ષ સુદ ૨ના રોજ અહીંથી બીજા ગામ પધાર્યા હતા.

શુદ્ધિપત્રક—જાત શ્રીપુરોષોત્તમકાગમા રીનદિંદરે પૂર્વીરાજજીનું દાંડી લાવાતુ અરિત છાપ્યું તેમા પછી અશુદ્ધિઓ રહેલી છે, તે તેના લેખક શ્રીયુત પડિત કારીનાથજી લખે છે—

પૃષ્ઠ.	પંક્તિ.	અશુદ્ધ.	શુદ્ધ.	પૃષ્ઠ.	પંક્તિ.	અશુદ્ધ.	શુદ્ધ.
૧૬૧	૧૦	સોચે	સાચે	”	૧૫	કરદિયે	કરદિયે
”	૧૨	અગ્નિ	દાગ્નિ	૧૬૩	૨૧	જાય	જામું
”	૨૯	સેવાકો	સેવાર્કી	”	૧૭	વતાયા	વતાણ હે
૧૬૨	૨	ફનદે	ફદે	”	૧૭	સુરમુલધમ	મુલમુ ધમગતિ
”	૨	ઇદેવ	ઇદેવમે	”	૧૮	ઇકઆલ	અલ
”	૮	અનકા	અનકો	”	”	કમ	કમુ
”	૧૨	મેપકા	મેપકી	”	૧૯	પૃથ્વીરાજપૃથ્વી	પૃથ્વીમુત

ઉમરગામનો આનંદ—પરમભગવદીય રોક દરિસાઇના ઉમરગામના દર્શન કરવાનો અવસર શ્રીયુગાર્ધ પચમપોઠાધીશ્વરની દુપાથી એક વાર ફરી અહીં રોક દરિસાઇના દર્શન ન થાય એટલે બોટ તો નણાય, પણ રોક કાઢુસાઇ તથા રોક ત્રિભુવનદાસભાઇ તથા તેમનું કેળવાયત કુટુંબ લગ્ન સંદર્ભત રોકના રેનેર્ડમજી છવનની ઝખી કરાવે છે. નવસારીથી શ્રીયુગ બારાસાઇ સરકાર તથા પારેખ આદિ વૈષ્ણવ શૃદ્ધરો પણ આવ્યા હતા. સ્ત્રીબંધીથી રોક ભગવાનદાસભાઇ તથા ભગવદીય હર્ષદલાલભાઈ પણ આવી પહોંચ્યા હતા. મુબાઇથી રોક કાઢુસાઇ સીમલાવાળા અને ભગવદીય છગનભાઈ આવવાથી ધણુજ રમ નાચે. ત્રણે દિન આનંદમા તથા ભગવાનનંદનો તે સમુદ્ધ ઉમરગાં બોરડીવાળા ભગવદીય લેડીસનદાસભાઇ પણ પોતાને ત્યાં અન્ય વૈષ્ણવ ડગાજ સાથે શ્રીમાનને પયસાવવા આવી પહોંચ્યા હતા. શ્રીમાન બોરડી પણ પધાર્યા હતા. ઉમરગામના રેનેર્ડસ રમરજો કબી કલ્પમાથી ખસે તેમ નથી.

॥ श्रीविमुचयनानलाचार्यवरणा विजयन्तान्तमाम् ॥

विद्यया तारણदार श्रीमदाप्रबुલना विश्वोदारक सिद्धांताना
प्रचार કરવું સચિત્ર મંસિક

શુદ્ધાદ્વૈત-ભક્તિમાર્તંડ.

પુસ્તક ૬૬૦] માધ-કોડ્યુન, સં. ૧૯૮૮. [અંક ૧૧-૧૨

તંત્રીને સુવર્ણપદક તથા પદવી.

ધીમ ગામ પ્રજિભાગીય નિ પુત્રોના હૃદયમમાદ્ અને આપે સમૃત્તિના
હાત તેજના આદર્શ નગ્ન શ્રી મેવાડ મદાગાળાના ગુરુદેવ અને ભારતવર્તના
ધર્મચર્ચા બ્રહ્મીય અનુપમ ગ્ધાનો એ રૂપ કરતા પત્રપાદ આગાધર્મ
શ્રીનૃસીંહાધીશ્વર સિંધાસિ સી શ્રીકાકરે, સીનેશ ગોસ્વામી શ્રી ૧૦૮
શ્રીમજ્જુલગાતક મહાનગ્નશ્રીએ પોતાના જન્મદિનના સુમગર પ્રમગે
પાટકુમ ગન માધ વદ ગજના રોજ તે દિને 'મહાદેવભૂતમ'ની પદવી તથા
મન્મ નોપાધિપત્ર અને સુવર્ણપદક અર્પણ કર્યા છે આ અન્નાન તંત્રીનું
અન્ન તથા, પણ 'શુદ્ધાદ્વૈત' અને તેના નદયો, મુનેચ્છા, પ્રસમો તથા
માદમને છે તંત્રીનો એ પદવીને યોદે મલ્લે અંગે મોખાએ અને એ પદવીની
જાળવની જુને નદિ તેવા આવીરોએ સર્વેએ અલપવા ગયા

નો ૧૮૮૮, રાજમ્ભેવની પેજ } — નવી અને પ્રકાશક
અમગાવાદ, * } રમતગમ હરિકૃષ્ણ ગામ્રી.

વાર્ષિક સનાજમ એ રૂપિયા. (પાવ ખર્ચ છુડ.)

જલદીથી મંગાવી લે—માત્ર રૂ. ૧૨) માંજ તમારી લાયબ્રેરી ભરપુર થઇ જશે.

સફળતા દેસાઈ છગનલાલ જેઠાભાઈના સ્મારકમાં.

નીચેનાં પુસ્તકો મૂળ કીંમતથી અરધી કીંમતે માત્ર ૧૦૦ નકલોજ આપવાની છે.

આ લાભ કોને મળશે!!!

૧. ત્યાં નિયમિત રીતે ભગવદ્વાર્તા થતી હોય તેમને; ૨. શાળા પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓને; ૩. જાહેર લાયબ્રેરીઓને; ૪. વિદ્યાર્થીઓને ધનામમાં આપવા ઇચ્છા ધરાવતા હોય તેમને; ૫. સારા નરમા પ્રસંગે સ્લાહી કરતા હોય તેમને, તે સિવાય બીજાને આપવામાં નહિ આવે. પુસ્તકોના છ લોટ પાડવામાં આવ્યા છે. દરેક લોટ પુરેપુરો મળશે. તેમાંના અમુક પુસ્તકો છુટક નહિ આપી શકાય. દરેક લોટની લેવાની કીંમત પોસ્ટેજ સાથે ખતારી છે તે વાચી વાંકે થવું.

આલોકેને વિનંતિ—દરેક પુસ્તકની માત્ર ૧૦૦ જ નકલો છે અને માગણી કરનાર વધુ નીકળે છે તેથી મોડી માગણી આવશે તો નકલો પુરી થવા પછી નહિ મળે અને પાછળથી પડતાં પડશે મારે આ જાહેરાત વાચનાજ તમારો ઝોડર લખી મોકલો નહિ તો રહી જશે.

કેટલાક આલોકે ટેક મુધી ઘટાડેલી કીંમતે માગણી કરે છે તે વ્યાજબી નથી.

લાટ નંબર ૧.

- ૨-૦-૦ શ્રીરાશ્ત્રીકૃષ્ણ યાત્રે શ્રીકૃષ્ણ ચરિત્ર ૧.
- ૦-૮-૦ શ્રીકાકાવલ્લભજી મહારાજનાં ૫૨ વચનામૃત ૧
- ૦-૮-૦ શ્રીમિરિશાજી શૂરપણ ૧.
- ૦-૪-૦ બ્રહ્મસંમંથ કાંચ ૧.
- ૦-૪-૦ નિલ નિયમના પાઠ તથા ધોળ ૧.
- ૦-૪-૦ શ્રીગુણકૃષ્ણ કૃત વિશ્વસિ શુભરાત્રી ટીકા ૧.
- ૦-૪-૦ શ્રીનાથજીનો ઇતિહાસ ૧.

૪-૦-૦ પુસ્તક નંબ ૭.

લાટ નંબર ૨.

- ૨-૦-૦ ૨૫૨ વૈષ્ણવની વાર્તા ૧.
- ૧-૦-૦ શ્રીદાસકાવ્યજીની પ્રાગટ્ય વાર્તા ૧.
- ૦-૪-૦ શ્રીમોકુવનાથજીનાં ૨૪ વચનામૃત ૧.
- ૦-૪-૦ શ્રીમદ્દુષ્ટ મહારાજનાં વચનામૃત ૧.
- ૦-૮-૦ પંચામૃત ૧
- ૪-૦-૦ પુસ્તક નંબ ૫

લાટ નંબર ૩.

- ૨-૦-૦ વસંતધમાર કીર્તન ૧.
- ૧-૦-૦ વિવિધ ધોળ તથા પદસંગ્રહ ભા. ૧, ૨.
- ૦-૪-૦ શ્રીકૃષ્ણચરિત્ર બાળલીલા ૧.
- ૦-૪-૦ શ્રીકૃષ્ણ કીર્તનમાળા ૧.
- ૦-૪-૦ પદનાથદાસજીનાં પદ ૧.
- ૦-૩-૦ સરદપૂનમ ૧.
- ૦-૧-૦ વલ્લભાખ્યાન ૧.
- ૪-૦-૦ પુસ્તક નંબ ૭.

લાટ નંબર ૪.

- ૧-૪-૦ ૮૪ વૈષ્ણવની વાર્તા ૧.
- ૧-૦-૦ શ્રીરાધદાસજીનું જીવનચરિત્ર ૧.
- ૧-૦-૦ વિવિધ ધોળ તથા પદ સંગ્રહ ભા. ૨ બે
- ૦-૫-૦ શ્રીગોવર્ધનનાથજીની પ્રાગટ્ય વાર્તા ૧
- ૦-૨-૦ શ્રીસર્વોત્તમસ્તાત્ર ટીકા ૧.
- ૦-૨-૦ શ્રીવમુનાજીનાં ૪૦ પદ ૧.
- ૦-૨-૦ દીનતા આશ્રયનાં પદસંગ્રહ ૧.
- ૦-૨-૦ રાસપંચામ્યાથી ૧.

૪-૧-૦ પુસ્તક નંબ ૮.

લાટ નંબર ૫.

- ૧-૦-૦ શ્રીપુરુષોત્તમસદ્ભનામસ્તોત્રની ટીકા શુભરાત્રીમાં ૧.
- ૧-૦-૦ પોદરા ગ્રંથની શુભરાત્રીમાં ટીકા ૧.
- ૧-૦-૦ શ્રીમોકુવનાથજીનાં ધોળપદ ૧.
- ૦-૬-૦ નિલનિયમના પાઠ મૂળમાત્ર ૨૮ ગ્રંથ
- ૦-૨-૦ આટલુ વાંચનેજ ૧.
- ૦-૨-૦ કન્યાસિક્ષણ ૧
- ૦-૨-૦ પુષ્ટિપ્રવેશ ૧.
- ૦-૨-૦ ભક્તિપોષણ ૧.
- ૦-૨-૦ શ્રીદરિશાયવચનામૃત ૧.

૪-૦-૦ પુસ્તક નંબ ૬.

લાટ નંબર ૧.

૧-૦-૦ શ્રીહરિચલકૃત શિક્ષાપત્ર ૧.

૧-૪-૦ શ્રીમદ્ભગવત્ગીતા મૂળ શ્લોક, અનુવાર્ત, શબ્દામ તથા વિસ્તૃત વિવેચન સાથે ૧.

૦-૧૦-૦ નિત્યનિયમના ૩૫ પાક મૂળ શ્લોક માત્ર

મુચના:—વધારે પુસ્તકો મંગાવનારાઓએ રેવને પારસવધી મંગાવવાં જેથી ખર્ચ ઓછું આવશે. દરેક લોટ ચાર રૂપીઆનો છે, છતાં બે રૂપીઆમાં ૫૦ ટકા ઘટાડામા મળશે ટપાલ ખર્ચ ૧૨ થી ૧૪ આના મુધી જુદું આવશે.

સખો:—લલ્લુભાઈ છગનલાલ દેસાઈ.

રીચિસ નં. ૧૧૦; ગ્રેડ ઉપર—અમદાવાદ,

મુખ્યપાસંચારક કંપની મથુરા
અમદાવાદની આર્યવેદિક શાળાઓ
આનાવાવાની ધરમાન

શિક્ષાસ્થ	જમ પ્રસિદ્ધ પૌષ્ટિક મધુક અને લહેજતદાર પીચ ખોરાક પચાવનાર બુખ લગાડનાર લોહી માંમ વધારી તાકાત લાભગી બક્ષનાર કિંમત બાદથી નાનીતો રૂ. ૧) ઓલીના રૂ. ૨)
અષ્ટવર્ગ આયુધિ	અષ્ટવર્ગ આયુધિ મીઝિત લખન વર્ધક ખોરાક સદી, ખાંસી, સ્તેષ્ઠ અને છાતીના ઠોઈ પશુ રોગોની પ્રસિદ્ધ દવા. કિ. તોલા ૨૦ નો રૂ. ૧૧
બાલસુધા	દુખળા પાતળા અશક્ત બાળકોને રુદ્ધ પુષ્ટ અને સ્વસ્થિમય લાકડવાળા ખતાવનારી મીઠી દવા. કિંમત ૧૨ આના
દુધકુકરી	જલન અને તાસ લિવાય ઠોઈ પશુ જાતની દાદર ને રજ કસાકમાં આરામ આપનારી દવા. કિંમત બાદથી એકના ૪ આના
સુધાસિધ	ઠંદ, ખાંસી, કમ, ચૂળ, કોલેરા, લાંબલગ્નિ, અતિ-સાર, વમન થેડુ, ખાંધ, વગેરે એવાજ રોગોની અનુપાન વગરની દવા. કિ. બા એકના ૮ આના

આનાવાવાની ધરમાન મુખ્યપાસંચારક કંપનીનું
આમનજાઓનાં સુધિ ખર્ચોનો હિ
દવાઓ દરકદવાવગેનાં આપો સુધી મળશે

સાંપ્રદાયિક ગ્રંથો.

ધોળપદસાગર-સાગ-૧. નિત્યપાઠના ૧૦ સંસ્કૃત ગ્રંથો, શ્રીવલ્લભાખ્યાન, શ્રીયમુ-
નાજના ૪૦ પદો, નિત્યલીલા, શ્રીનંદદાસજીકૃત રાસપંચાધ્યાયી, અમરગીત, મુળપુરુષ, નિત્ય
પદ (જગ્યાવંચાથી યોદ્યાગવાના) જન્મપ્રાપ્તિ વધાઈઓ, દીનના આશ્રયનાં પદો, શ્રીભાગવતનાં
૧૬ ધોળ, ભક્તિપોષણ, શ્રીનાથજીનાં ધોળ, શ્રીમદ્દામનુજી, શ્રીયુક્તિજી, સાતગાળક
શ્રીવલ્લભજી આદિનાં ૪૦૦ ધોળ આવેા સગતો પાનાનો સરનામાં સરતો ગ્રંથ સંપ્રદાયમાં
પહેલો છે. અક્ષરો મોટા, સુંદર હાઈ, આકર્ષક બંધાઈ છે, છતાં મૂલ્ય સવા રૂપીઓ.
૮. ખ. સાત આના.

૧. શ્રીસર્વોત્તમસ્તોત્ર—અદીસો પાનાં, અનેક ચિત્રો, એક એક નામપર એક
એક કીર્તન, નામાવલિ, ધોળ અને શ્રીગોકુલનાથજી અને શ્રીયુનાથજી તથા શ્રીગોપેશજીની
સંસ્કૃત દીકાજોનો સ્વસ્તર અનુવાદ. છતાં મૂલ્ય અઢી આના, ૮. ખ. દોઢ આનો.

૨. શ્રીગોકુલેશજીનો માસાપ્રસંગ—શ્રીયુગાંધજીના ચોથા લાકંજીએ જહાંગીરના
જીમ્મો સામે જે અદિંસક કર્મકુલ વધો સુધી ચલાવ્યું તેનું જલદલતી લાપામા વર્ણન
પુક્તિઓથી મથબવેલું તિલકનું રહસ્ય, સચિત છતા નોજાવર માત્ર દોઢ આનો.

૩. શ્રીપુરુષોત્તમજીનું ચરિત્ર—નવ લાખ સ્લોક લખનારા મહાન વિદ્વાન ગોસ્વામી
શ્રીપુરુષોત્તમજી અંતિકાસિક ચરિત્ર તથા ધિવ મોટા કે વિષ્ણુ એ કિરે કવિ શ્રીદવારામભાઈનો
ગ્રંથ છે. વિષ્ણુદેહીઓને તમાઓ મારનાર આ ગ્રંથની નોજાવર માત્ર ચાર આના.

૪. જન્મસંત મહાત્માગ—પંચમળીધીશ્વર શ્રીગોવિન્દપ્રમુખે જયપુર નરેશના
જીમ્મોસામે ચલાવેલી લાગનો ઇતિહાસ વાંચી રહ્યું આવશે, ખુશી થશે, હસશે, સચિત
છતાં નોજાવર ચાર આના. ૮. ખ. ૦ા આનો.

૫. વૈષ્ણવ નરેશો—દિન્દમાંના પુષ્ટિમાર્ગીય રાગમદારાગઓનાં અદ્ભુત વૃત્તાંતો,
સચિત મૂલ્ય ત્રણ આના. ૮. ખ. ૦ા આનો.

૬. આટલું તો કરલેજ—હુંકામા હુંકો નિત્ય નિયમ ૩૦ ત્રીસ હળર નકલો
વેચાઈ ગઈ છે. નોજાવર એક આનો. ૮. ખ. ૦ા

૭. ન્યાયમૂર્તિનો ચુકડો—મુંબઈના ન્યાયમૂર્તિ રાગજીકરે ભગવદીય શેઠ પ્રામજી
મુરજીએ માકેલા કેસમાં આવેલો અગત્યનો ચુકડો વાંચને સુધારકોની પોલ પારખી શકશે
અને પુષ્ટિમાર્ગની જાહેજવાલી જોઈ શકશે. મૂલ્ય જે આના. ૮. ખ. એક આનો.

૮. પંચાવન પાઠનો શુટકો-પૃષ્ઠ રૂબંદ—નિત્ય નિયમના પંચાવન પાઠોનો આ
શુટકો (જે પહેલા ૪૨ પાઠો હતા તે) મોટા અક્ષરમાં હમણાં ફરી હયાલો છે. મૂલ્ય
માત્ર ત્રણ આના. ૮. ખ. એક આનો.

૯. શ્રીનંદવરલાલનાં ધોળ—રાગનગરવાળા ધિ. ગો. શ્રીરણજીકલાલ બાવા-
માદનનાનિત્યલીલારથ ખ. સા. વજીએ રચેલાં છે. મૂલ્ય જે આનો. ૮. ખ. અઢી આનો.

હીસ્ટરિયા દ વાતરોગ દર્શન.

ખંડોક, ૩૦ હીસ્ટરિયા, મૂર્ખો, ચક્રી, ફેફર, ગાંડપણ અને બકવાદ રોગની અગોચરનું છેલ્લું શોધ મુજબ પાશ્ચાત્ય, યુનાની અને આધુનિક સિદ્ધાંતો, સમજૂતી અને સાદા ઉપ-ચારોનું પુસ્તક વાચેથી ઘણી રાહત મળશે. કીમત ૧-૪-૦ પો. જુહુ, દેશીનામું. નવા અવધાર પ્રમાણે રચના બા. શાળા માટે નહું મંજૂર કી. બા. પો. ૦)૨.

હીસ્ટરિયા રોગનીજ રામખાણુ,

પેટ'ટ દવા વાંચુમુકતાજ છે. ઉપરના દરદોમાં ૨૪ કલાકમાં કાયદો મળે છે. સિલોન, આફ્રિકા, ઇરાન અને રંચન સુધીના દરદીઓ વાપરી સુખી થયા છે. મેડીકલ સરજનો હુદયી મંગાવે છે. દવા મદિનાની, કીમત ૩. ૫) પો. જુહુ.

છગનલાલ લાલુભાઈ નામાવાળા. પેલેસ રોડના નાકે—વડોદરા.

વીસમી સદીની નવીન શોધ

સંપ્રદણી (ગળણી) માટે અમૃતમય ઉપાય.

પ્રતિષ્ઠિત અને વિદ્વાન વૈદ ડોક્ટરોની દવા આજ કંઠાળેલા સંપ્રદણી (ગળતી), મુંબાઈના જાડા, અતિસાર અને આંતરડાના કાયથી પીડાતા નિરાશાજનક દર્દીને આશીર્વાદરૂપ થઈ પડેલી વીસ વરસના અનુભવની રામખાણુ દવા માટે રજૂ મળેા યા સવાલપત્ર મંગાવો. પત્રખાવધાર નીચેના સરનામે કરવો:—

માસ્તર કે. બે. પટેલ એન્ડ સન્સ, રમુ સ્પેસીઆલીસ્ટ-માણસાવાળા.

દુકાન મેળાપ —દર રવિવારે, અમદાવાદ—કાલુપુર ડાંડીગરાની પોળમાં તંત્રીગરાની ખડકી ઘર નં. ૪૫૧.

અમારું બાલાનંદ બચ્ચાઓને હૃદય પુષ્ટિ આનંદી અને સુંદર બનાવે છે. કી. ૦-૧૨-૦ પો. જુહુ.

અધ્યાય કરનાર દુરોચારના દોષ દેખાડનાર દીર્ઘાયુ લાવનાર સદાચારના ગુણ સમજાવનાર

કામશાસ્ત્ર

આ પુસ્તક વાચવાથી જતી જુવાનીને ટકાવવાનું શિક્ષણ હાથ લાગશે. તરીરની પાપમાલી થવાનું મજા નજર પર આવશે અને તે પાપમાલીથી દૂર રહી સુખી થવાનો રસ્તો મુશ્કેલ.

કીમત કે પોસ્ટ કાર્ડ પણ નહિ, માત્ર તમારું પુરું સરનામું ગોઠવી મંગાવો.

વૈદ્યશાસ્ત્રી મણીશંકર ગોવિંદજી

આતંકનિગ્રહ ઔષધોદ્યાન-જામનગર, કાઠીયાવાડ ૩.

સત્યવ્રતં સત્યપરં ત્રિસત્યં સન્યસ્ય યોનિં નિહિતં ચ સત્યે ।
મત્યસ્ય સત્યં વ્રતસત્યનેત્રં સત્યાત્મકં ત્વાં શરણં પ્રપદ્યે ॥

“શ્રીભક્તિમાર્ગીય—સાહિત્ય મન્દિર”

(વૈષ્ણવધર્મના સઘળાં પુસ્તકો અને મુન્દર ચિત્રાદિ સાહિત્ય મેળવવાનું અચુક સ્થાન)

‘વૈષ્ણવી જનતાને નમ્ર સૂચના’

અગદારે ત્વાંથી વૈષ્ણવ ધર્મના સંસ્કૃત, હિન્દી—ગુજ, મગડી, યુજરાની અને ઈંગ્લીશ વિગેરે દરેક ભાષામાં છપાયેલાં (સુદિત અથવા પુસ્તકો તથા શ્રીનાથજી આદિ સાતે સ્વરૂપ અને શ્રીની વિવિધ પ્રકારની દિવ્ય ક્રીડાઓનું દિગ્દર્શન કરાવતા મન્દર અને મનોરંજક વિવિધરંગી ચિત્રો તથા શ્રીકૃષ્ણસાધજી, શ્રીગોકુલેશ તથા બિરાજમાન પૂ પા જો. બાલકોના રંગભેરંગી સુન્દર ફેટાઓ અને ચિત્રો તથા નવાં વર્ષના રંગભેરંગી ફેન્સી કાર્ડો, અભિનન્દનપત્રો, કેરેન્ડરા, બ્લોટીંગપેપરો તથા પોકેટકાવરી, ગીતાકાવરી, વિગેરે યોગ્ય ન્યોહાવરથી મળશે.

તદુપરાંત ચિત્રો છબીઓની સોનેરી, નકશીદાર કે સાદી ફેમો મદાવી આપવાનું અને પુસ્તકો, માસિકો વિગેરેને કાગળનું, કાપડનું, રેશમી કે સોનેરી ખાઈડીંગ (છાંદ) યોગ્ય કિંમતે કરાવી આપવામાં આવશે વિશેષ માટે લખો અથવા રૂબરૂ મળો.

“શ્રીભક્તિમાર્ગીય—પુસ્તકાલય.”

(વાચન—વિભાગ)

મુજબ તથા આલુબાલુના પરાંઓના અને બહારગામના વૈષ્ણવો પણ ધાર્મિક સાહિત્ય ઘેરોનાં વાંચના મેળવી શકે તેને માટે ઉપરોક્ત ફી (મફત) પુસ્તકાલયની યોગ્ય વ્યવસ્થા કરવામાં આવી છે. પુસ્તકાલયનો લાભ ત્હેનાં હૃદયે અને નિયમોને અનુસર કાઢ પણ ધર્મજીવાસુ લઈ શકે છે. વિશેષમાં એટલે લખો વા મળે:—

મળવાનો સમય—	} ગિરિધરલાલ જ. શાહ, છુકોલર. વ્યવસ્થાપક— ‘ભક્તિમાર્ગીય—સાહિત્ય મન્દિર.’ દે. શ્રીલાલવાવાનું મન્દિર, ભુવેશ્વર; મુંબઈ નં. ૨.
સવારના ૭ થી ૧૨ (રટા. ટા.)	
સાંજના ૪ થી ૮	

વા. કં:—પુસ્તકાદિ સાહિત્યનો એડર આપતી/વખતે પોતાનું નામ તથા એડરેસ વિગેરે સંપૂર્ણ જણાવવું. ૨. એક રૂપિયાની અંદરની કીમતના પુસ્તકો મંગાવનારે તેટલી કિંમત ઉપરાંત માર્ગવ્યય સહિત પોસ્ટ સ્ટાંપ મોકલવા. ૩. પ્રત્યુત્તર માટે જવાબી કાર્ડ વા પોસ્ટસ્ટાંપ બીવડા. ૪. કંઈપણ સાહિત્ય સેમ્પલ તરીકે મફત મોકલવામાં આવશે નહિ.

નિવેદક—ગિરિધરલાલ જગજીવનદાસ શાહ.

ખાસ સૂચના—આ માર્ગિકાવરનું લેખાજમ પણ ઉપરના ફેમલે બરી ગકાશે

મોંધી લો !

ઉત્સાહી જાનો

સાહિત્યાવલાસી વૈખણ્ય વાંચકો માટે

ખાસ નવી સંગ્રહ

વારંવાર ઉઠતી ફરિયાદો !

પુષ્ટિમાર્ગમાં જ્યાં ગણ્યાગાંઠ્યા જ પુસ્તકો મળતાં હતાં, ત્યાં હાલમાં એટલા જાધા થયાં પ્રકટ થઈ ગયા છે કે એક જીન્દગીમાં તો તેનો અભ્યાસ કરવાનું ન જ જાની શકે. પણ આ છુટું છવાયું પ્રકટ થયેલું સાહિત્ય એક જ સ્થળે મળી શકે અને સાહિત્યવિદ્યાસીઓ તથા પુસ્તકાલય સ્થાપનારાઓને પણ સરળતા થાય તેને માટે અમે આ વ્યવસ્થા કરી છે.

પુષ્ટિમાર્ગીય સંસ્કૃત, વ્રજ, હિંદી, ગુજરાતી અને અંગ્રેજી જાધા થયાં આ જ સંસ્થા વ્યાજબી મોઢાવર લઈને મોકલી આપે છે. નહિ નગતાં પુસ્તકો પણ મેળવીને મોકલાય છે. એકવાર ખાતરી કરી લો. ખ્યાલ રાખશો કે આ સંસ્થા વ્યાપાર કરવા માટે નથી કાર્ય કરતી. સ્વચ્છ પત્ર મંગાવી લો.

ડૉ. શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય,

સુ. નકિયાદ, (જી. પેડા),

અનેક રોગની એક જ દવા !!

જીવન ધારા !!

ઝાડા, ઉંદરી, સુંક, શરદી, સુળ, અજીર્ણ હાય-પચ-માથું તથા બદનનો દુખાવો, હાંત-દાઢની પીડા, સંધીવા, તાવ, પાણીપીઠાર, ઝેરી ડંખ, પ્રમેહ, પ્રદર, અશક્તી, ખાંસી, દમ, શ્વાસ, ગડથમડ, ધા, લોહી નીકળતું, હરસ, મોઢાની તથા આળકુવાની દુરગંધ, આચડ-માકડની પીડા ઇત્યાદિ અનેક રોગોની ખાતીપુર્વક દવા.

કી. માટી બા. રૂ. ૧૫ અડધી બા. રૂ. ૧ નાની બા. રૂ. ૮૫.

જનસ મહીલા જીવન !!

સ્ત્રીઓના સર્વ રોગોને દૂર કરનાર અતુલભગીઈ ઉપાય છે. રજસ્વલાની તકલીફ, સુવારોગનો ત્રાસ, શ્વેત થા રક્ત પ્રદર, કસ્ટવાચક, પેટ તથા પેદું-કમરનો તથા આખા શરીરનો જીર્ણવ્યગ્ર, બદન ફીકું, જેન્મેની, દુખાવો, ઇત્યાદિ અનેક અડચણો દૂર કરી બદન તાઢાદથી ભરપુર અને અર્ધ ધારણ કરવા લાયક બનાવે છે. કિંમત રૂ. ૨) જે.

દરેક દવાનું ટપાલ ખર્ચ છુટું. રજીસ્ટર ડમાર્ક “જનસ” નં. ૩૦૨ તપાસીને ખરીદ કરજો દરેક ડેકાણે વેચાય છે. જે. એન. શેઠના પોસ્ટ નકિયાદ (ગુજરાત).

તન-મનની મહેનત કરનારાં !

તાકત તાઝગીધી ભરપુર

‘ઝંડુ’ દ્રાક્ષાસવ

મૃદિકારિણ-શારંગધર મ. અ. ૧૦

ઘરમાં હંમેશાં તૈયાર રાખો

ઘટ તાકત તાકત-તાઝગી મેળવવા

મનની મટાડનાર

ધાક ઉતારનાર

ઉંધ લાવનાર

દરન સાફ લાવનાર

ભુખ લગાડનાર

તાકત આપનાર

તાઝગી બક્ષનાર

ફળ, ખાંસી, મૂર્છા અને સાધારણ
નશ્વગ્રાહી તાકતે આરામ આપનાર

લગ્નજાતદાર દવા

‘ઝંડુ’ દ્રાક્ષાસવ

સવાર સાંજ જમ્યા પછી લેયો

ઝંડુ ફાર્માસ્યુટીકલ વૈકલ્પ લીન્ડ-કુંબક નં. ૧૪

અમદાવાદના એન્ટ-ભોગીલાલ પ્રધર્સ; ૧૧૪, રીચીરાડ

રતલ અધીના તેર આના; રતલ એકનો રૂપિયો દોઢ; રતલ દોઢના રૂપિયા બે

પ્રકટ થઈ ગયો !

અપૂર્વ શુજરાતી સામ્રાજિક અંધ !

ઉપદેશમીમાંસા.

ગોસ્વંદરવાળા નિત્યલીલાસ્ય ગોસ્વામી શ્રીક શ્રીછવનેશાચાર્યજી મહારાજને આ સરલમાં સરલ મનનીય શુજરાતી સામ્રાજિક અંધની રચના કરી છે. દરદિગંતવિન્યો શ્રીપુરુષોત્તમજી મહારાજશ્રીના “ ઉપદેશવિષવકસંકલિતરાસવાદ ” અંધનો સંપૂર્ણ ભાગથે આ અંધમાં છે તે ઉપરાંત

અલસંબંધમાં થતી તમામ શંકાઓ

આ અંધમાં રજુ કરીને તેનું અપૂર્ણ સંતોષજનક સમાધાન કર્યું છે. આ પુસ્તક વાંચ્યા પછી અલસંબંધ દીક્ષા વિશે એક પણ શંકા રહેશે નહિ એવું ખાતરીથી કહી શકાય તેમ છે. જુદા જુદા સત્તાવન વિષયો આ અંધમાં છે. આ અંધ બધા વર્ણથી મળતો નહતો તે સુપ્રસિદ્ધ સામ્રાજિક વિદ્વાન રા. રા. દગ્ધિપ્રજા પીરછશાસ્ત્રીએ એક નાની પણ સચોટ પ્રસ્તાવના લખીને લખજીના પ્રકટ કરાવ્યો છે, મૂલ્ય આઠ આના.

આ ઉપરાંત વેદ્યુવ દિવ્યે માટે (યજુર્વેદીત ધાસ્વ કરનારા માટે) સચારથી સાંજ સુમીનો વૈદિક નિત્યનિયમ બતાવનારા જે પૂસ્તકો વેદ્યુવ દિવ્યદિક દીક્ષામાં તથા શુજરાતીમાં તૈયાર છે.

દાદિ મૂલ્ય—એક રૂપીએ.

શુજરાતી મૂલ્ય—આઠ આના.

ટેકાણું—શ્રીલાલખાવ નું મંદિર.

બુલેટર, સુભાષ નં. ૨ તથા તેજ મંદિરમાં.

સામ્રાજિક અંધો વેચનારા રા. રા. ગિરધરલાલ જી. શાહ પાસેથી મળશે.

શુણ્ણાનુવાદ કેમ ગાશે ?

શુદ્ધ સંગીતનાં દિવ્ય કીર્તનો.

સારંગી, ખીન, લીલકળા, હાર્મોનીયમ વગેરે વાદ્યોમાં સાંપ્રદાયિક કીર્તનો ઉતારવાનું આલું સાધન અંપ્રદાયમાં એકેય નથી. મંગળાચી રચન પર્વતના સુખ્ય કીર્તનો, વધાઈ અને ધમાર જે બધાંનાં ૮૦ રાગોના ખાસ નોટશનો આજ અંધમાં છે. પખાવજ શિળનાર માટે તાલના જોલ પણ છાંપ્યા છે, શુજરાતી ભાષામાં સવિસ્તર સમજણ પાડી છે. નોંધાવર જે રૂપીઆ, ચોરોજ પાંચ આના

ડૉ. લમવાનદાસ નારાયણદાસ કોટડાવાળા.

સુ. ધ્રુવક. (જી. અમદાવાદ.)

‘શુદ્ધાદૈત’ જૂના અંકો.

પહેલું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાધેલા નો. રૂ. ૨-૮-૦ છે, અને બીજા પરચુરણ અંકોની કિંમત અંક દીઠ માત્ર બે આના છે.

બીજું વર્ષ—પૂરા અંકો નથી. પરચુરણ અંકો સીલોકમા દશે તેના અંક દીઠ બે આના છે.

ત્રીજું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો બાધેલા ૩. ૩-૦-૦ એક જ ફાઇલ છે. પરચુરણ અંકોના અંક દીઠ બે આના છે.

ચોથું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા, માત્ર દોઢ રૂપીઆમા. પરચુરણ અંકો અંક દીઠ માત્ર બે આના.

પાંચમું વર્ષ—પૂરા બાર અંકો છુટા, બે રૂપીઆમા. પરચુરણ અંકો અંક દીઠ બે આના.

છઠ્ઠું વર્ષ ચાલે છે. લખો કાચોતપમાં.

નવું સાહિત્ય પ્રગટ થશે.

૧. રસાલય તથા ગૂઢ રસ ગ્રન્થ—‘શુદ્ધાદૈત’માં પ્રકટ થઇ ગયલા આ બન્ને મનનીય ગ્રંથો સાથે બહાર પડી ચુક્યા છે. નોંધાવર માત્ર ત્રણ આના, ૮. ખ. ૦૦ આનો.

૨. ભાવભાવના—(ભા. ૧લો) યીદારિકેસ્વરજીવિત આ ગ્રંથ એક અદર્શિય વિચારણીય મહાગ્રંથ છે. થોડા જ સમયમાં પ્રકટ થશે. નોંધાવર પછીથી જણાવાશે.

૩. પંદરમો અધ્યાય—શ્રીમદ્ભગવદ્ગીતાનો પંદરમો અધ્યાય કે જે ઉત્તમોત્તમ ગૂઢ જ્ઞાનથી ભરેલો છે તે મુંદર વિવેચનો સાથે. દરેક રસોક પર ચંકરાચાર્યજી આદિ આચાર્યોના મતો બતાવેલા છે. થોડા જ સમયમાં પ્રકટ થશે. નો. માત્ર દોઢ આનો. ૮. ખ. ૦૦ આનો.

૪. આટલું તો કરજો જ—નિઃશનિયમના આ ગ્રંથની ૩૦ હજાર પ્રત તો પ્રકટ થઇ ચુકી. માત્રણીથી સુધારા વધારા સાથે ફરી છપાય છે. નોંધાવર માત્ર ૧ આનો, ૮. ખ. ૦૦ આનો.

૫. ‘ભાક્તપોષણ’—કવિશ્રી દયારામભાષીનો આ અપૂર્વ ગ્રંથ, સમજણ સાથે, રૂ. ૧ આનો, ૮. ખ. ૦૦ આનો.

૬. ભક્તરાણ!—અકોરવાળા વિદ્વાન્ મી. ઇન્દુજીભાઈ મમયસમય ઉપર કહેલા ઉત્તમોત્તમ મનનીય પ્રગ્નો. પ્રકટ થશે. નો. ત્રણ આના, ૮. ખ. એક આનો.

૭. શ્રીગોકુલેશવરનામૃત—શ્રીગોકુલનામૃતનાં વચનામૃતોનો મહાન્ સંગ્રહ, પ્રકટ થશે. નોંધાવર પછીથી.

૮. ચોરાશી પ્રશ્નના પ્રત્યુત્તરો—છપાય છે. વાચવાલાયક ગ્રંથ. નોંધાવર પછીથી.

પંચાવન પાઠનો ગુટકો.

પહેલી આજ્ઞાતિ ખપી જવાથી બીજી આજ્ઞાતિ મોઢ સુધારા વધારા સાથે છપાવી માત્રણી થઈ હોવાથી આ સાદસ બેચું છે. મૂલ ત્રણ આના, ૮પાલ ખર્ચ એક આનો.

કે. ૧૯૪૮, રાગમહેતા પોળ—અમદાવાદ.

છપાય છે

નામ નોંધાવો !!

શ્રીસુબોધિનીજીનો સંપૂર્ણઅનુવાદ

વિવેચન સાથે.

રમિકવર શ્રીકૃષ્ણની આવાતમક લીલાઓનું પાન કરવું હોય, શ્રીમહાભગવતનું મહત્ત્વ જાણવું હોય, દાર્શનિક વિષયોનું સ્પષ્ટીકરણ સમજવું હોય તો આજેજ નામ નોંધાવો. સંપૂર્ણ શ્રીસુબોધિનીજીનું સત્સંભાષાન્તર અને વિષય પદાર્થોનું સ્પષ્ટીકરણ કરનાર આ એકજ અનુવાદ છે એમ પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ૬ અનિરુદ્ધલાલજી મહારાજ આજ્ઞા કરે છે. અત્યંત વિદ્વાન એ ઉભયને સમાન રીતે આ ભાષાન્તર અને ઉપકારક છે.

આહુકોને નામ નોંધાવવાના રથળો:—

૧. શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય—નડિઆદ ૨. સરૈયા મણિલાલ ત્રિભુવનદાસ પીતાંબરદાસ વકવાકુવા—નડિઆદ. ૩. જોષી દામોદર લક્ષ્મીરામ મોટી હવેલી—જામનગર. ૪. શુદ્ધાદૈત કાર્યાલય, રાજમહેતાની પોળ—અમદાવાદ.

શ્રીગુણાય નમઃ ।

યો वै भूमा तदमृतम्, यदन्यत्तन्मर्त्यम् । (छान्दोग्यશ्रुतिः)

વિદ્યયામૃતમશ્રુતે (ઈશોપનિષન્શ્રુતિઃ)

વિજ્ઞાપનમ્ ।

હાલપ્રાય ગ્રાચીન સંસ્કૃત સાહિત્ય, एवं राष्ट्रीयभाषा हिन्दी में श्रीसुबोधिनीजी एवं श्रीहरिसायजी—भादिके ग्रन्थो का अनुवाद.

શ્રીપીયૂષપત્રિકા.

નામક્રમાંસિકપત્રિકા વિદ્યાકેસરી પૂજ્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીઅનિરુદ્ધાચાર્યજી, મહારાજ एवं विद्वज्जन गोस्वामी श्री ६ श्रीवज्ररत्नलज्जी महाराजके संरक्षकत्वमें प्रकट हो गई। विद्वज्जनों एवं सर्वसाधारणको इससे अवर्णनीय लाभ हुआ और होगा। सर्वसाधारण के हितार्थ वार्षिक मूल्य केवल तीन रुपया है। आज ही ग्राहकश्रेणीमें नाम लिखाइये ।

મિલ્લનેકા પતા—દીરાટાલ શાલી, સદાયતા સંસ્કૃત પાઠશાળા—નાડિયાદ; હરિશંકર શાલી, મટામંદિર—નાડિયાદ; શુદ્ધાદૈત કાર્યાલય—અમદાવાદ.

हरिशङ्कर शास्त्री.

મોમાંસાશાલી, વેદાન્ત વિદ્યારદ M. R. A. S. વ્યવસ્થાપક.

शुद्धद्वैत-सङ्कितमार्तः.

पृष्ठ ६०.]

भाष, श्रीपद्मसाध ४५३.

[अंक १३]

प्राचीन कीर्तन.

पतंग उडायवेको पद ॥ राग अडानो ॥ कान्ह अटा चड चंग उडायत में ८
आँगनहूतें हेर्यो ॥ लोचन चार भये नंदनंदन कामकयान्छ क्रियो भट्ट मेरो ॥१॥ क्रियो
समझाय सखीरी, अटक न मानत यह मन मेरो ॥ नंददास प्रभु कवधो मिलेगो खींचत
क्रियो मन मेरो ॥२॥

सीत विदाके पद—नईरी कृतुको आगम भयो सजनी जबतें विदा भयो हेम
विरहानिके भागिनतें सजनी आवत चल्थो हे वसंत ॥१॥ तन सीहाय त्रिय चले भर भाव ८
ताहीको फंथ ॥ चत्रभुज प्रभु पिय तारी बजावत या जाडेको आयो अंत ॥२॥ पद ॥ १
ससक रही अपने भवनमें चार मासको कीयो विहार ॥ नंद सुवन ब्रजराज सांवरो मोहो
चतुर ब्रजन्मर ॥१॥ कव आवेंगे मेरे घरमें विधनासों मांगुं अचरा पसार ॥ कुंभनदासप्रभु गो
घर जाडो चल्थो दोड कर झार ॥२॥ पद ॥ मदन मतवारो नागर नवल प्रेमरस बस रहे ८
नंद दुखारो ॥१॥ गये हो तुम भवन पराये हमसों नित करत तुम टारो ॥ सोय रही गृह ८
अकेली सीत दहत तनवारो ॥२॥ आज कीयो कर जोर मोहन हित पायो हे प्रीतम प्यारो
परमानंदप्रभु या जाडेको दीजाये देशनिकारो ॥३॥ पद ॥ मदन मनकी तू री मतवारो ॥ ८
नींद निरुक्त करन सब भर जीवन अति भारो ॥१॥ सेविय सीत परत सखी हमपर कांप
तन सारो ॥ सोवा सेज दबकके साजसैं अलसत अंग उपारो ॥२॥ कव आवें मेरे गृह वह प्री
प्रान हमारो ॥ परमानंदप्रभु या जाडेको कीजे मुंह खव कारो ॥३॥ पद ॥ वसंत आगम हुं
नदनंदन जो पाडें ॥ कुंवर कपट बनाय जतसों नीके गिरघराल लडाडें ॥१॥ अति प्रकुट
मन हरखत आनंद अपने पियसों उरज मिलाडें ॥ परमानंदप्रभु या जाडेको देश निकास क
॥२॥ पद ॥ कान तीहारे राज वसत हो सत्र सुख चैन दीखाई देत नही कर या टिन ॥
समीप मंगल भित अंत न होत जु जान वीतत वरज नितादिन ॥१॥ भूर भाग्य निज जन
ब्रजवासी कहावत नारीन धन्य ॥ परमानंद या सुखके कारन सदा वसंत रहत वृदावन ॥ पद
मोहो कहूं प्रानपिया भेरो प्यारो हों तलपतह उन बिन सजनी आयो न नंदकुमारो ॥१॥ सिं
क्रियो तन सारो सखीरी मग जीवत भयो भवन उजारो ॥ रहे अनत जाय कहूं आजह सोत
रस सारो ॥२॥ हमको जोग विधाता दीयो उबको मोग दियो सारो ॥ सूरदासप्रभु या जाडे

દીજે દેસ નિકારો ॥૩॥ પદ ॥ મદન મન મતવારો હી કીનો ॥ મધુવ્રત હોય ગિરિધરન જવહી
જવ વદન કમલ રસ મીનો ॥૧॥ જાકે કારન સુનરી સજની જવ આરજ પથ ઈનો ॥ મયા
કરી સોઈ તુમને કીની વ્યો કુંદનમે મીનો ॥૨॥ વેસી પ્રીત હતી મેરે ડનસોં પ્રાન પ્રકટકર દીનો ॥
બેર બેર હમને રસ જાન્યો ડન સોતન રસ બીન્યો ॥ કહા બિરહિની સીત લ્યો અતિ મો મન જાત
ન દીનો ॥ દ્વારકેશ પ્રમુ યા જાહેકો દેસનિકારો દીનો ॥૪॥ પદ ॥ નવલ કુંવર વ્રજરાજ લાહિયો
કહે જાહો મોહે અધિક સોહાય પહેરે કવાવ ઓઢ લઈ ફલમુલ તોહૂ સીત સતાવન આઈ ॥૧॥
અચરજ મયે મુનતહી લઝમનનંદન ફનક અંગીઠી ધરી મગાઈ ॥ પુનિ જિય સોચ મંગાય ઓઢાઈ
મજ ગઈ સીત હૈસે જદુરાઈ ॥૨॥ એસે પરમ કૃપાલ દયાનિધિ બીસરત નાંહી મુધિ ફરત સદાઈ ॥
ત્રીપુરી ગિરિધારીકી વાતે કહી જાને કોઝ દેહોં બતાઈ ॥૩॥

શ્રીદેવદીપોત્સવાક્ષ.

શ્રીનન્દનન્દનકરુણાન્વિતેષુ વેદરાક્ષસંપન્નરાશિમહોદયેષુ વસન્તરામશર્મસુ—સપ્રણામં
શ્રી.....સ્મરણાનિ, યમત્ર । પરશ્ચ સપ્રેમાધર્થમવલોક્ય શ્રીદેવદીપોત્સવાક્ષં પ્રસન્નતરત્તેસાવેષત
હૃદ મુલ્કળપરવશેનેતિ તત્રમવતાં પ્રકૃતિપ્રવૃત્તિર્વિભાવ્યાલોચ્ય ચ વાર્ષિકાયન્યયમાધાન્ત સહસૈવ
સ્ફુરતિ હૃદયે યદ્વાક્ષિઃ કથંકાર પ્રકાસ્યન્તે પ્રતિવર્ષમેતાદૃશા વિશેષાક્ષા इति । નિશ્ચયસ્તુ કન્પિ-
તસ્તત્ર યદલૌકિકોય ભગવતો વૈદ્યાનરસ્યાનુપ્રહવિશેષ इति । અન્યચ પ્યેયમનુસંધાતવ્યં તાદિ નત્ર
પરિશ્રમાદિકં વિચારણીયમિતિ ગ્રાહ્યણદેહમાજાં સહજત્વભાવાદ્રાહ્યણજન્માલંકુર્વદ્વિસ્તત્રમવદ્ધિ-
રિદં સાહસમારન્ધં સ્થાદિતિ ભાસતે । કરુણાપારાવસ્તત્ર પ્રયચ્છતિ કરુણાકટાક્ષામિત્યનુભાવ્યતે
વૈષ્ણવમહોદયાસ્તુ કુર્વન્તિ કરિષ્યન્ત્યાપિ ચ શ્રીમતાં નિ.સ્વાર્થપરિશ્રમેરિમસમસ્તવૈષ્ણવસમાજસ્યૈક એ
માસિકપત્રે સોત્સાહં સહાયમિતિ પ્રાર્થયતો પ્રમુપાદારાવિન્દં ભવદીયનરોત્તમસ્ય સપ્રણામં શ્રીસ્મરણાનિ ॥

સરળ હૃદયની વાત.

(ટાળ:—આસો આસો શરદ પુનમની રાત જો !)

સુજો હૃદના ! સરળ હૃદયની વાત જો ! આંખડી પેલી બની છે તારા તાનમાં,
મીઠા મીઠા મ્હારા આખો આપ જો ! વ્હાલબીની છેડા વેગે વાંસળી.

એ વાસળીએ જાડુ કયો અહલુત જો ! એ માટે સુજો સરળ હૃદયની વિનનિ,
સુખવા ઉભી પાસે પેલી ગાય જો ! આજે આગર આજો પેસો ચાંદયો.

દોડી આવી અહીંયા વેગે પ્રજનાર જો ! કુમકુમ લાવી પૂજવા પ્રીતથી,
પ્રાણી જનનાં આગર સુખવા સરજો ! યાને રવામ ! કરો છો વિલંબ ? !

સુજો હૃદના ! સરળ હૃદયની વાત જો ! આંખડી પેલી બની છે તારા તાનમાં.

શ્રુણુસાઈ ખીતામ્પરદાસ શાહ.

પ્રશ્નોત્તર વિચારગ્રન્થ.

[ભક્ત કવિ શ્રીદયારામભાઈકૃત આ 'પ્રશ્નોત્તરવિચારગ્રન્થ' ગોલાકવાસી જેઠી ઘોડાલાલ ઉદે નાથજીભાઈ ગિરિભરાઈદેના સમદુભાંધી ઉતાયો છે.]

પ્રશ્ન:—આ ક્ષિકાથને વિષે જે મનુષ્ય છે. તેમને સંસારરૂપ સમુદના પૂરમાં તણાના વા હુળતા જનોને તરવારૂપ મુખ્ય શ્રેષ્ઠ સરલ ઉપાયનું સાધન શું છે ?

ઉત્તર:—વેદ, ગીતા, વ્યાસસૂત્રને શ્રીમદ્ભાગવતાર્થસત્સાચ પુરાણ, ઇતિહાસ, મહાભારતાર્થ સર્વનો સત્ય નિર્ણય સિદ્ધાંત સર્વ સંપ્રદાયના આચાર્યોએ તથા શ્રીકૃષ્ણાર્થ, શ્રીમદ્દેવ્યાસાર્થિક ગાની ભક્તરાજ મુનીન્દ્રોએ એજ નિર્ણય કરેલો છે કે—મુમુક્ષુ જનોએ સર્વના મૂલ્યાર્થ પરબલ પરાત્પર ત્રિજુષ્ઠાતીત, અદ્વારાતીત, કાલાતીત, સર્વોત્તીત, પરથી પર એવા તો એક શ્રીપૂર્ણ પુરુષોત્તમ, જે અગણિત પૂર્ણ પરમાર્નંદ સદા સત્ય નિત્ય સ્વયં બલ શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માનેજ કહેવા છે, ને તેમની સદાસર્વદાની અશ્વપ્રાપ્તિમાજ એક પરમાવધિ (અનિશ્ચય) સુખાર્નંદ છે, એમ જાણી તેમની પ્રિયતારૂપ પ્રસન્નતા શ્રેયવત્ત ગર્હ મુખ્ય સારરૂપ એકજ ઉપાય શ્રેષ્ઠ છે કે, શ્રીસદ્ગુણાર્થે અનન્યમથવે ચરણે જઈ સર્વોત્તમનિવેદન કરવું અને તેમનું ભજન (સેવન) રમરજાદિ ભક્તિએ પ્રાપ્તિવંત ચક્રને પ્રવર્તવું, એજ મુખ્ય ઉપાય છે. સર્વ સાધનોના ફળરૂપ શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની સ્વધર્મસંહિત જ્ઞાનવંશામ્યુક્ત ભક્તિ કરવી. એજ ક્ષિમા સાગી રીતે જલદીથી તરી શકાય એવો ઉપાય કહેલો છે. ત્યાં સુધી અન્ય પદાર્થ ઉપર આમંકિત હોય છે, ત્યાં સુધી તેને પ્રમુ ઉપર પૂર્ણ પ્રેમ-રૂપરંગ લાગે નથી અને સત્સંગ કયાં વિના અનિત્ય પદાર્થ ઉપરનો અગ્નિ કરીને થયેલો મોદ્દ ટળતો નથી, માટે સત્સંગરૂપી પગથીયે ચઢવાથી મોક્ષની શ્રેણીએ સરળતાથી ચડાય છે.

પ્રશ્ન:—સર્વ સાધનોમા અગ્રગણ્ય મુખ્ય સાધન કયું છે જે દ્વારાએ સર્વફળની પ્રાપ્તિ થઈ શકે ?

ઉત્તર:—સર્વ સાધનોનું પ્રથમ પગથીયું મૂળ પાવારૂપ તો સાત્તમજ છે ને તે સત્પુરુષના સમાગમથી સત્ત્વિદાનંદની પ્રાપ્તિના સર્વ ઉપાયો સદગતમા જાણવામાં આવે છે. વેદાદિકથી આરંભીને સર્વ ક્ષુતિ ઉપનિષદ સંહિતા સ્મૃતિપુરાણ, ધર્મશાસ્ત્ર અને શિષ્ટપુરુષોએ રચાવેન કરેલા સર્વ સિદ્ધાંતોના સારરૂપ મુખ્ય ૩ સાધનો છે—૧ કર્મ, ૨ જ્ઞાન, ૩ ભક્તિ. આ ત્રણે ઉપાયો અન્યોઅન્ય સદાયકારી છે, ને એથીજ વૈરાગ્યાર્થિ શુભ સર્વ લક્ષણો સાથે, બહાને ઉદેશીને નિષ્કામ જીવિથી શ્રીકૃષ્ણાર્થે મતિએ પદાભિનિ વિરદાત્મકભક્તિ સારી રીતે માદાત્મજ્ઞાનપૂર્વક સર્વથી અધિક સ્નેહાત્મક પરબલને વિશે યાય છે, માટે સદાસર્વદા સત્સંગ કરવો ને દુઃખંતો ત્યાગ કરવો. જેની રીતે આમદ્ધર્મપૂર્વક સત્સંગ કરવાની આવરણકના કહી તેટલાજ માપથી આમદ્ધર્મપૂર્વક દુઃખંતો ત્યાગ કરવાની પણ ફરજ સમજવાની છે. જુએને ૬૦૦૦૦ સાંદગર વર્ષપર્યંત શ્રીમુનાજીમાં ગ્દીને તીવ તપાચરણ સૌભરી ઋષિએ કર્યું હતું, તેમને એક સદગત્વાર મનરથનો રમજીપ્રમંજ દષ્ટિએ પડવામાવથી તે સર્વ વટાવીને, સુરૂપ પારણ કરીને, માંધાતા રાજની ૫૦ કન્યાઓને પરણી, મદદલક્ષ્યયથાકૃત તપનું પુણ્ય ખર્ચી નાખ્યું. દરિદ્રચપુરાણમા કથા છે કે, વસિષ્ઠ વિશ્વામિત્રને ત્યાં સંવાદ છે કે, અનેક વર્ષનું તપસ્યોનું વિશ્વામિત્રે અર્પણ કરેલું ફળ તથા હવ સવસંજતિ જેટલું વિશ્વામિત્રને વસિષ્ઠજીએ આપેલું ફળ વધી પડ્યાનો ન્યાય શ્રીશંકરજીએ વૃદ્ધા કરીને ભૂમિભાર-ચાપે જેટલા વખતમા ન લાગવાને કરી જનારો ત્યારે ગાથોઆપ અન્યો-અન્ય સત્સંજનો પ્રભાવ બદ્ધ જલિદ છે, એમ સમજ્યા.

પ્રશ્ન:—આપ કહો છો તેવા સાત્તમજ કરવા લાગે હિંમ મન્ત પુરોને કેમ એજાખી નકાય ? તે સમજ્યા સારે તે મહાપુરુષોનાં લક્ષણ કહેા.

ઉત્તર:—શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની કથાને વિષે નિરંતર આસક્ત રહેતા હોય, ને વેદવેદાંગ શાસ્ત્રોક્ત સ્વધર્મને વિષે નિષ્ઠા હોય, ને યંચ વિષયને વિષે આસક્તિરહિત હોય, સંચારાચર બ્રહ્મદષ્ટિ રાખી બ્રહ્મથી વ્યતિરિક્ત કોઈ પદાર્થ ઉપર અદંતામગતા ન રાખે, ને કોઈની નિંદા કે સ્તુતિ ન કરે, જેના દર્શન થતાં માનથી પ્રપંચનું બાન ભૂધી જવાય, ને ભગવંતનું સ્મરણ થાય, સમગ્ર જગતનું ભર્યું આશ-હિત થાય એમ ઇચ્છી તેમ કરવાને પ્રવર્તે, અભિમાનથી રહિત હોય, ભગવદ્ગુણાનુવાદ કથન કરતાં રોમરોમ પુલકિત ગાન થઈ નેત્રે પ્રેમાશ્રુ વહે, ગદગદ-કંઠિત હૃદય ફેધાર્થ જાય, કોષનો દ્રોહ કે ઈર્ષ્યા ન કરતાં ચક્રિત પ્રમાણે મદદ કરી બીજાનું દુઃખ ભાગે, મનઈટિપને ઝીતે, માયિક પદાર્થમા મોહ ન પામે, ભગવાનની લીલામાં મન અખંડ સંલગ્ન રહે, પરાપકાર કરવામા અતિઆતુરવંત થાય, અત્યંત કેરુણાદષ્ટિ સર્વપર રાખે, સ્વભાવ શાંત હોય, સહેજે સમગ્ર જગતને વ્હાલા લાગે, સતોષટ્ટિ હોય, અનન્યભાવે શ્રીકૃષ્ણને ભાગે, વિત્ત-ગૃહાદિ વિષે આનાસક્ત હોય, પ્રભુ ઉપર દંઢ વિશ્વારુથી પ્રીતિ રાખી કપટરહિત સેવા સ્મરણ સતંસગ કરે, એ ઇલાદિક લક્ષણોથી યુક્ત હોય, જેનો સમાગમ, દર્શન, સ્પર્શ, ભાષણ આદિ થવાથી પ્રપંચની વિરમૃતિ થઈ શ્રીકૃષ્ણ ભગવાન ઉપર પ્રીતિમાં વધારો કરે ને તે શ્રીકૃષ્ણનું કીર્તન થોતે કરતા હોય, ને બીજાને કરાવતા હોય, તેવા હરિભક્તોનો સત્સંગ નિત્યમેવ કરતા રહેવો. એ પ્રમાણે સત્પુરુષને એળખીને સમાગમ કરવો, સત્પુરુષોનો સમાગમ કરવો એ મોહનું દાર છે. એમ કહી “ તાદશી જન તેને જાણીયે જેદમા એદવા યુજ્ય હોય ” એ પદ ગાઈ બતાવ્યું હતું.

પ્રશ્ન:—અસત્ પુરુષને એળખવાનાં ચિન્હ શાં છે ?

ઉત્તર:—કુદ્ધ સંગત એળખવાને તો અનેક પ્રત્યક્ષ પ્રમાણ હોય છે. તથાપિ વધારે સમજાવું હોય તો જેનો સમાગમ કરવાથી શ્રીભગવાનને વિરમૃત કરાય, ને પ્રપંચાસક્તિ કમતી ન થાય તો તે જરૂર જાણુવો કે આ સત્પુરુષનો સમાગમ નથી. બગલાની માફક ઉપરથી ઉજળા, પણ અંતરમા કાળાશ, ઘર, સ્ત્રી ધન, પુત્રાદિકની આસક્તિવાળા હોય ને કામ-ક્રોધાદિક અધર્મોને જે સર્ગ તેણે વ્યાપ્ત એવા જે હોય તે અસત્પુરુષ (અસતં) જાણુવા, ને તેમના પ્રસંગથી અવિદ્યા (માયા) ના બંધનને પ્રાપ્ત થવાય છે.

પ્રશ્ન:—અવિદ્યા (માયા) ના બંધનને ભેદે એવા કાઈ ઉપાય છે ?

ઉત્તર:—અવિદ્યા (માયા) તે પણ એક છાજની શક્તિ છે ને તે કુર્જેન્ન છતી ન શકાય, એવી છે. તથાપિ તે માયાના કર્તા સર્વ અનંતશક્તિવાળા એવા પરબ્રહ્મ છે. તેને તે નિરંતર આધીન (વશ) રહે છે, માટે તે પરાત્પર પુરુષોત્તમને શરણે અનન્યપણે રહેનારને માયાનું બંધન રહેતું નથી. મગવદ્ગીતાયાં મમ માયા દુરત્યા મામેવ ચે પ્રપદ્યેતે માયામેતા તત્તિ તે ॥ વળી માયાથી રહિત એવા ભગવન્નિષ્ઠ સત્પુરુષજનો તેમનો જે પ્રસંગ તે પણ અવિદ્યાના બંધનને ભેદી નાખે એવી શક્તિવાળા હોય છે.

પ્રશ્ન:—બંધનનો હેતુ કાણુ છે ?

ઉત્તર:—અસત્પુરુષનો જે પ્રસંગ તે બંધનનો હેતુ છે.

પ્રશ્ન:—કેવા કેવા પુરુષની સાથે સદજ સ્વાભાવિક પણ સમાગમ ન ગણવો ?

(સંપ્રદર્શનો:—મહીયાવાળા આનંદચંદ્રાલ જમનાદાસ શાહ.

રાસરમણ.

[શ્રીકૃષ્ણવ યુવક મંડળના નવમા વાર્ષિક મહોત્સવ પ્રસંગે ગો. શ્રીઃ અનિરુદ્ધદાસજી મહારાજશ્રીના વિદ્વાતાલયોં પ્રવચનનો સાર છે. આ શુભ પ્રસંગે પોતાનું 'આત્મનિવેદન' નું પ્રવચન નિર્ણીત અર્થે હતું, પરંતુ "વિચિત્ર જ્ઞા" નામના સંવાદમાં "રાસરમણ" વિષયપર વડુ પ્રકાશની આવશ્યકતા જણાયાથી "રાસરમણ" પર પ્રવચન કર્યું હતું.]

શરૂઆતમાં તેઓ શ્રીમાને આત્મનિવેદનનું પ્રવચન પ્રથમ પછુ થયેલું અને ફરીથી તેજ રાખવામાં આવેલું તેનું સ્વસ્થ સમજાવતા જણાવેલું કે જે પ્રિય બાળન હોય તેનું વારંવાર પાન ચવા છતાં તે રસવર્ધનજ છે. સારખાદ "રાસરમણ" પ્રવચન શરૂ કરતાં જણાવ્યું હતું કે શ્રદ્ધા જનતા તેમજ ઠલિકાલના દુષ્ટ વાતાવરણથી કલુષિત જનનાને-અને સતોપ યાચ તે માટે શ્રીકૃષ્ણચરિત્રી આ લીલા લૌકિક અને અલૌકિક બન્ને રીતે સર્વથા નિર્દોષ છે તે પ્રતિપાદન કર્યું હતું. જો કે પોતે સ્વીકાર્યું હતું કે શ્રીકૃષ્ણને ધરીબાર પછુ લૌકિક મનુષ્ય-માનવા તે એક જાતનો મહાન અપરાધ છે. પરંતુ ઉપરિચિત પ્રશ્નને યંદા, કુલંકાથી તદ્દન નિર્મૂલ કરવા પોતે લૌકિક રીતે આ લીલા નિર્દોષ છે, એમ સિદ્ધ કર્યું હતું. તેમા પ્રથમ પ્રમાણુ તો શ્રીકૃષ્ણની એકાદશ વર્ષની વય કે જે હાલના ઠલિકાલમા પછુ કામવિદ્યારતી કલુષિતતાથી સર્વથા મુક્ત હોય છે. તો તે સમયમાં તો હોય તેમાં નરાઈજ નથી. વળી કામ પછુ સમાન વયમા સંભવે છે. જગજગીજ-વ્યથનેવુ મેની ॥ બ્યારે આ પ્રસંગમાં તો પ્રશુ એકાદશ વર્ષના હતા અને ભગવદ્દસનુબ્ધા અપરિમિત શ્રીગોપીજનો પેટી કેટલાક વયોરુદ્ધ પછુ હતા. આ બન્ને રીતે 'રાસરમણ' તે કામક્રીડા નથી તેમ લૌકિકરીત્યા પ્રતિપાદન કરવામા આવ્યું હતું.

ત્યારબાદ અલૌકિક રીતથી પ્રતિપાદન કરતાં પ્રથમ તો જણાવ્યું હતું કે શ્રીકૃષ્ણ કેવલ શ્રીગોપીજનના પ્રિય નથી પરંતુ તે તો અખંડ વિશ્વના નાયક છે. અને પોતે શક્તિમાન છે બ્યારે શ્રીગોપીજનો પોતાની શક્તિ છે. એટલે શક્તિ શક્તિમાનથી જુદી હોય નહિ. તેમ પોતાના સ્વરૂપમાં વિલસી રહેલું આ જ્ઞાત સર્વથા પોતારૂપ (સ્વરૂપ) હોવાથી રાસરમણ એ જ્ઞાતનું જ્ઞાન સાથેજ રમણ છે. અર્થાત્ અંશીનું અંશ સાથેનું રમણ છે.

વળી બ્યારે શ્રીગોપીજનોને ભગવાને વેલુનાદ કરી પોતાની પાસે તેડ્યાં ત્યારે શરૂઆતમાંજ ભગવાન તેમને પાછા ફરવાનું કહેતા શ્રીગોપીજનો પ્રત્યુત્તરમાં જણાવે છે કે હે ભગવાન ઇન્દ્રિય-જન્ય કામ અને તેની વાસનાઓ પર તો અમે પૂણે મુકીને આવ્યાં છીએ. સર્વોપવિગ્નસંત્યજ્ય ॥ સમ્યક પ્રકારે દૃઢ કરીને આવ્યાં છીએ. એટલે અમે તદ્દન નિષ્કામ બનીનેજ આવ્યાં છીએ. મદિ વસ્તુતઃ કામજ પ્રાધાન્યે હોત તો આવાં પાછાં ફરવાના તેમજ શ્રીગોપીજનનાં પ્રત્યુત્તરનાં વચનો સંભવનજ નહિ. અર્થાત્જ લૌકિક કામને તો અમે બરાબર જુલુ નાખીને આવેલા છીએ એટલે તે ફરીથી પછુ ઉત્પન્ન થવાનો નથી. એટલે કે અમે ભગવદ્દસ પ્રાપ્તિને માટે અત્રે ઉપરિચિત ચર્ચા છીએ.

વળી જો એમ કહેવામાં આવે કે ભગવદ્દસના અધિકારી તો ફક્ત શ્રીકૃષ્ણનીજ છે. તો પ્રથમથીજ દરેક ગોપીજનમાં લક્ષ્મીત્વ સ્થાપન કર્યો બાદ એટલે કે ભગવદ્દસભોગ્યત્વનાં અધિકારી બનાવ્યા પછીજ ભગવદ્દસનું દાન કરેલું છે. આ વેલુનાદે માત્ર સમ્મનીય અર્થોત્ માનવ જાતિનેજ મુખ્ય કરેલી નથી પરંતુ ઇતરજાતિનાદિક વૃક્ષો, નદીઓ પદાર્થો, ગાયો, ઇલાદિકની નૈસર્ગિક પ્રકૃતિઓનો સ્વભાવ જુસાવી દેતા અતર્ગત આનંદને પ્રકટ કર્યો છે.

અને આપશ્રીએ ગોપાલોત્તરતાપિની ઉપનિષદમાં આવેલી આખ્યાયિકાનો ઉલ્લેખ કરતા જણાવેલું કે, જ્યારે ગોપીજનોએ ગૃહસ્થના ધર્મ પ્રમાણે અતિથિ સત્કાર માટે શ્રીકૃષ્ણને પૂછ્યું ત્યારે હુવોસા મુનિનું નામ આપ્યું હતું. તેમના આશ્રમે જતાં વયમાં શ્રીયમુનાજીને સામેપાર જવાનું હતું તેમ કરવામા પોતાની અશક્તિ જણાવતાં શ્રીકૃષ્ણચંદ્રે આજ્ઞા કરી કે તમે શ્રીકૃષ્ણ સદા બ્રહ્મચારી છે, તેમ કહી શ્રીયમુનાજીને વિનંતિ કરશે તો માર્ગ મળશે તે પ્રમાણે કરવાથી ગોપીજનો હુવોસા મુનિના આશ્રમે જઈ ભોજનાદિક કરાવી પાછા ફરવા માટે પૂછતાં મુનિએ જણાવ્યું કે “હુવોસા સદા ઉપવાસી છે.” તેમ કહેતાં શ્રીયમુનાજી માર્ગ આપશે. આ ઉપરથી એક ગાન્ધર્વા નામની ગોપી આગળ આવી પ્રશ્ન કરે છે કે અમેએ આપને હમણાં જ ભોજન કરાવ્યું છે માટે આનું રહસ્ય અમે સમજી શકતાં નથી. ત્યારે મુનિએ જણાવ્યું કે જેમ શ્રીકૃષ્ણનું રમણસ્વીય રમણ છે. અર્ચાર બ્રહ્મને બ્રહ્મસાથેના વિલાસજ છે, એટલે શ્રીકૃષ્ણ સદા બ્રહ્મચારી છે. તેમજ આ ભોજન પાચણોત્તિક શરીરે કર્યું છે તદન્તર્ગત આત્માએ કંઈ નથી. આત્મા તો સદા ઉપવાસી છે. એટલે ભોજન કર્યા છતાં હું સદા ઉપવાસી છું. આ પ્રસંગથી શ્રીકૃષ્ણે પોતાનું નામ મહાત્મ્ય તથા લક્ષ્મીમાહાત્મ્ય દર્શાવ્યું અને સાથે સાથે રાસક્રીડા એ કામગીરી નથી એનું પણ સૂચન કર્યું આવી રીતે આત્મીયતાં શ્રીગોપીજનો સ્વચ્ચાને આવી પહોંચ્યાં. આ ઉપરથી પણ આ રાસમણ્ય લૌકિક કામોપભોગ નથી પરંતુ ભગવદ્ભક્તોમા આધાન છે.

છેવટમા આપશ્રીએ સમયના અભાવે હુંકાવતાં જણાવ્યું કે લૌકિક કામનું ફળ તો સંસારોત્પત્તિજ હોઈ શકે. પરંતુ બ્રહ્મિઆં તેનું કાષ્ટ છેજ નહિ. પ્રત્યુત્તર લૌકિક કામનાઓ તો વેણુનાદ્વારા આર્જીન પૂર્વજ સમ્યક પ્રકારે દબ્ય થયેલી હતી. જ્યારે રાસરમણમા તો કેવળ ભગવદ્દરાનીજ લ્હાણી થઈ રહી હતી.

શ્રીમત્પ્રમુચરણ.

(શ્રીઆલકૃષ્ણ શુદ્ધાદૈત મહાસભાના વાર્ષિક મહોત્સવ પ્રસંગે આયુષ્માન ગોસ્વામી શ્રીદ શ્રીગોવિન્દરાયજી મહોદયે કરેલું રસપૂર્ણ આખ્યાન.]

શ્રીમાન સભાપતિ મહોદય તથા પિતૃચરણ તેમજ શ્રીમદ્વલ્લભચરણસરોરુદાગ્રિન ઉપસ્થિત વૈષ્ણવ વૃંદ.

આજે આપણા સર્વના ભાગ્યના ઉદયરૂપ શ્રીમદ્ભક્તભાંધીરાના દ્વિતીય કુમાર શ્રીવિકૃલેશ પ્રભુના પ્રાકટ્ય મહોત્સવનો દ્વિતીય દિવસ છે. આપણા સંપ્રદાયમાં આ દ્વિતીય દિવસ પણ ઉત્સવ દિન ગણાય છે. એ ઉત્સવપ્રસંગે આપ સર્વને એકત્ર થએલા બેઠેને મને ધણો આનંદ થાય છે, એટલુંજ નહિ, પણ એ આપણા સૌભાગ્યના હેતુરૂત શ્રીમદ્વિકૃલ્લાધીરાના કંઈક ગુણાનુવાદ આપ સર્વની સમક્ષ કરવા માટે પૈરાઈ છું.

ભાગ્યવાન વૈષ્ણવો, શ્રીમદ્વિકૃલ્લનાથ એ નામજ્ઞ આપણા ભાગ્યોદયનું સૂચન કરે છે. આપ સર્વને એ સુવિદિત છે કે આપણે સર્વ કલિકાલમાં જન્મ્યા છીએ, કાલનો પ્રભાવ એવો છે કે તેણે વેદાક્ત સર્વ સાધનોના આધારરૂત પદ સાધન સંપત્તિને કુલ બનાવી દીધી છે. કર્મ, જ્ઞાન અને લક્ષિતમાર્ગ એ ત્રણે શ્રેયસના સાધનરૂત માર્ગોમાંથી એકેય માર્ગનું અવલંબન અશક્ય પ્રાય થઈ પડ્યું છે. “કલૌ મન્ત્યાદિમાર્ગા દિ દુઃસાધ્યા ઇતિ મે મતિઃ” એ શ્રીમદ્વાયર્થચરણની ઉક્તિ અત્ર પ્રમાણ છે. આવી પરિસ્થિતિમાં આધુનિક જીવોપર અત્યંત દૃપા વિચારી

રિય પુત્રને વિષે નિરંતર મનનું સ્થાપન કરવું, અને એમની સમાન ખીળ છે એવી મતિ કાઢવું દિવસ કરવી નહીં.

વૈષ્ણવ સન્નનો ! શ્રીમદ્દાપ્રભુજીના લાલજી બે છે, શ્રીગોપીનાથજી અને શ્રીવિઠ્ઠલનાથજી; પરંતુ જેમ શ્રીવૈષ્ણુગીતના પ્રસંગમાં કૃષ્ણ-બદ્ધેવ શ્રીયજ્ઞેયના બે સુત હોવા છતાં એકજ મુખનું નિરૂપણ કરેલું છે. તેમ અહીં પણ પ્રિય પુત્ર એ સંબંધથી શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીમાં શ્રીગોપીનાથજીનો સ્વાદેશ આપણે કરી શકીએ છીએ. આમ કરવાનું કારણ બીજું એકે નથી, પરંતુ એટલુંજ છે કે શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ પુષ્ટિમાર્ગનું પ્રાકટ્ય કર્યો પછી તે માર્ગનો પ્રકાશ ખાસ કરીને શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીએ કરેલો છે. અને અહીં જે મનના સ્થાપનનો પ્રકાર શ્રીહરિરાયજીએ ઉપદેશેલો છે, તે સાંપ્રદાયિક સિદ્ધાંતપરત્વેજ છે એમ સ્પષ્ટ માલમ પડે છે. શ્રીવલ્લભાધીશ તથા શ્રીવિઠ્ઠલાધીશ સમાન કાષ્ઠ ખીળે નથી એવા મનમાં નિશ્ચય કરવાની જે આગા આ શ્લોકમાં છે તે એટલા માટેજ કે જ્યાં સુધી સિદ્ધાંતનો નિશ્ચય થાય નહિ, ત્યાં સુધી માર્ગ સૂત્રો નથી અને વ્યવસ્થિત આચરણ યદ્ય રાક્ષતું નથી, માટે સૌથી પહેલી આગા બાબુક ભક્ત પ્રત્યે શ્રીહરિરાયજી તરફથી એજ મહે છે કે પહેલો નિર્ધાર એજ કરવો ઘટે છે કે શ્રીમદ્દાપ્રભુજી તથા શ્રીગુણાંકજી જે સિદ્ધાંત સાર પ્રતિપાદન કરે છે તેજ એક અનિશ્ચિત સિદ્ધાંત છે, ખીળ આચાર્યોમાં ભલે પાંડિત્ય હોય, નિગમને વિષે ગતિ હોય, નિગમોક્તિક્રિયાનું પાલન હોય, હરિમાર્ગનો પરિચય હોય, તેમજ એ વગેરે બીજી શુણે ભલે હોય, તો પણ શ્રીવલ્લભાધીશની સાથે કાષ્ઠની તુલના કરી શકાય એમ નથી, શ્રીવલ્લભાધીશ અને શ્રીવિઠ્ઠલાધીશ વચ્ચે એકજ છે, અને એકજ કાર્ષ કરવા માટે જે સ્વરૂપે પ્રાકટ્ય છે. તેથીજ સ્વહસનના હેલા દોઢ અધ્યાયનું બાબ્ય પણ શ્રીગુણાંકજીએ રચેલું હોવાથી આચાર્યત્વ પણ શ્રીમદ્દાપ્રભુજી સાથે સમાનપણાથી છે.

હવે આ પ્રમાણે શ્રીમદ્દાપ્રભુજી તથા શ્રીગુણાંકજી વિષે મનના સ્થાપનની આગાપર આટલો કાર દેવાની જરૂર શ્રીહરિરાયજીએ શા કારણથી જોષ દરો તે સમજવા જરા પ્રયાસ કરીએ. આપ સર્વ જણો છો કે ધર્મની ગતિ અતિસૂક્ષ્મ છે. ધર્મના સિદ્ધાંતો સામાન્ય બુદ્ધિથી અગ્રાહ્ય છે. અને તેનો પ્રકાશ હૃદયમાં ત્યારેજ થાય છે કે જ્યારે શુરભક્તિ પ્રેમપૂર્વક કરવામાં આવે છે. શુર વિના જ્ઞાન નહિ, એ સામાન્ય કહેવત સાર્વજનિક છે. શ્રુતિ પણ એ આગા કરે છે કે:-

यस्य देवे परा भक्तिः यथा देवे तथा गुरौ । तस्यैते कथिता ह्यर्वाः प्रकारान्ते महात्मनः ॥

વેદાદિશાસ્ત્રપ્રતિપાદિત સિદ્ધાંતનો પ્રકાશ તો તેનાજ હૃદયમાં થાય કે જેને જેની દેવને વિષે પરાભક્તિ છે તેવીજ શુરને વિષે પણ છે. આ કારણથી શુરનો નિશ્ચય થવા વિના ધર્મમાં કાષ્ઠ પણ પ્રકારની પ્રગતિ થવી મુશ્કેલ છે. વેદાદિ શાસ્ત્રના અર્થનો પ્રકાશ જે પોતાના હૃદયમાં થએલો નેવા ધ્વજોતો હોય, તેણે તો યોગ્ય શુરનું ચરણ સ્વીકારી તેની પ્રેમપૂર્વક સેવા કરવી જોઈએ. આટલું થયા પછી તો તેને ફક્ત શુરની આગાનું પાલન કરવાનુંજ બાકી રહે છે, અને જેમ જેમ આગાનું પાલન થતું જાય છે તેમ તેમ તે પુરુષ આગળ ને આગળ વધતો જાય છે. પ્રથમ સૌથી અધરામાં અધરી બાબન છે તે એજ કે યોગ્ય શુરની પ્રાપ્તિ કેવી રીતે કરવી કે મતલબ કે તેમને કેવી રીતે શોધી કાઢવા ? આ અધરામાં અષ્ટ કાર્ષ હોવાથી શ્રીહરિરાયજી પોતેજ એ બાબતમાં જે નિશ્ચય કરી શક્યા છે તે જણાવે છે અને આગા કરે છે કે જો તમે તમારું બધું ધ્વજતા હોત તો શ્રીમદ્દાપ્રભુજી તથા શ્રીગુણાંકજીને વિષે પ્રથમ ભાવ સ્થાપન કરવો કે એજ અમારા શુર છે, અને એમનીજ આગા અમને સિરસાવંછા છે. બીજી કાષ્ઠ ગમે તે પ્રકારે કહેતા

હોય તેની સાથે અગારે નીસજત નથી. આ બાબતમાં ઘણું કહી શકાય એવું છે, પણ એ બધું કહેવા જેટલો સમય પણ નથી. તેમ છતાં આપ તો પુષ્ટિમાર્ગીનુયાયી છો, એટલે શ્રીમહાપ્રભુજી તથા શ્રીયુક્તિષ્ઠજીની સંકિત, પાકિલ વગેરે બાબતમાં કંઈને કંઈ આપના સાંભળવામાં, વાંચવામાં, તેમજ જાણવામાં આવ્યું હશેજ એમ હું આશા રાખું છું. હું તો આગે એટલુંજ કહી વિદમીશ કે શ્રીમહાપ્રભુજી તથા શ્રીયુક્તિષ્ઠજીના પ્રાકટ્યોત્સવ પ્રસંગે જે થોડી ઘણી બાબતો 'મેં' વિવેચન કર્યું તેટલું પણ આપના દીક્ષમાં કર્યું હશે તો શ્રીહરિરાયજીના આ વચનામૃત આપને ગળે તરનજ ઉતરી જશે અને આપની ખાતરી થયા વિના રહેશે નહિ કે શ્રીમહાપ્રભુજી તથા શ્રીયુક્તિષ્ઠજીએ જે સંપ્રદાય ચલાવ્યો છે તે એક વાક્ય જેવો નથી, પરંતુ એક સરસ રાજમાર્ગ છે. વિચાર કરશો તો એટલું પણ માણુમ પડશે કે દેશકાલની પરિસ્થિતિ પણ એ બંને આચાર્યશ્રીઓએ સંપૂર્ણ ખ્યાલ કરેલો છે, અને ત્યાર પછીજ જુદરયાત્રમને પણ અનુકૂળ થાય એવો દુંકામાં દુંકા, સરળમાં સરળ અને ઉત્તમમાં ઉત્તમ રસો શોધી કાઢી તેનો જનકલ્યાણને અર્થે ઉપદેશ કરેલો છે. માટે શ્રીમહારિરાયચરણની આરા દરદ'મેશ યાદ રાખશો અને એ બંનેની આરાઓતું યથાશક્તિ પાલન કરવા દૃઢ નિશ્ચય કરશો એવી હું આશા રાખું છું 'શ્રીમદ્ભક્તમનામધેયસદશો ભાવી ન ભૂતોસ્ત્યાપિ' એ ધ્યન આપને પરિચિતજ હોતું હોતું જોઈએ. "ન કોષ્ઠ હુઓ ન હોય એ રૂપ સમ તેના સકલ નિજનિગમ સાખી" એ ભગવદીય ગોપાલદાસજીના કથનમાં ઉપરના વચનનોજ અનુવાદ છે. વિશેષતા એટલીજ છે કે ઉપજી પંકિતમા શ્રીમહાપ્રભુજીતું અદ્વિતીયત્વ પ્રતિપાદન કરેલું છે, અને ભગવદીય ગોપાલદાસજીએ તેવીજ રીતે શ્રીયુક્તિષ્ઠજીતું પણ અદ્વિતીયત્વ અનુભવસિદ્ધ તરીકે બહાર પાડ્યું છે. માટે આવા સર્વ અલૌકિક સામર્થ્ય ધારણ કરનાર શ્રીમદ્વિદ્યેશ્વરજી સરણ સ્વીકારી બને તેટલું તેમની આરાતું પાલન કરવામાજ આપણું કર્તવ્ય સમાપ્ત થાય છે એમ હું ધારું છું.

શ્રીગોકુલનાથજી.

માફે સર્વરવ ધન થી ગોકુલનાથજી અન્ય સાધન તથા નહિ કામજી માફે.
બિન રખવાળે રહે સદામત, ચોર ચોરે નહિ લગારજી;
પ્રેમભક્તિથી ચોરવા ધારે, ચોરે તે તત્કાળજી. માફે.
અશસિદ્ધિ નવનિધિ ચરણમાં, દેવદેવી તલ્લો વાસજી;
અનન્ય પ્રેમથી પ્રભુજીને ભજતાં, ન રહે કાંઈ કચાસજી. માફે.
સમય સમયે ભક્તોની રક્ષા, કરો થીષનરવામજી;
ભક્તો તેમારા તમે ભક્તોના, પ્રિય છો રાધે સ્વામજી માફે.
નવધા ભક્તિ સિદ્ધ કરી પ્રભુ, દશમી ભક્તિથી દાન કરજોજી;
હું ભાવ પુ'ભાવ દૂર કરીને, પ્રેમ લક્ષણા ઉર ભરજોજી. માફે.
જીવ અતિ દોષોનો ભરેલો, સાધન નથી શિરિધારીજી;
દિન ચંદ દાસીની આકાંક્ષા પૂર્ણ કરો શ્રીમુરારિજી. માફે.

(લેખક રા. રા. કુન્નચંદ ગોવર્ધનદાસ શાહ, પાલડા)

વેદાન્તતાત્પર્યનિરૂપણ.

(અનુવાદક — શ્રીયુત હરિશંકર ઓંકારજી શાસ્ત્રી મીમાંસક વેદાન્ત
વિશારદ M. R. A. S.)

અમવદતિરસાલં જિહ્વાવિદ્યુજટાલં પ્રલયજલદજાલં ચક્રપાલદ્વજેતુપી ।

શિશિરમુલમયૃતૈર્મત્સન્તાપહાલં સવિમુરિલલકાલં મદ્દદશાં ગોચરોઽસ્તુ ॥

શ્રુતિરિસિ યસ્ય મહિમા નિરૂપિરીશોઽપિ યસ્ય સ્તુ મહિમા ।

તં કૃષ્ણમાદિમૂર્તિં નમામિ નિરવચસદ્ગુણં બ્રહ્મ ॥

ઉપકેન્દ્રમ—શ્રીમદ્ભગવદ્દત્તનૈવૈશ્વાનરાવતાર જગદ્ગુરુ શ્રીમદ્ભક્તભાગ્યાધ્યપૂજ્યપાદપ્રણીત તત્ત્વાર્થ-
દીપનિબંધમા સમ્યક્દાનંદ પરબ્રહ્મ આદિમૂર્તિત્વે શ્રીકૃષ્ણને ઓળખાવ્યા છે. વ્યાસ ભગવાને
બ્રહ્મસૂત્રોમા અને શ્રીમદ્ભાગવતમા પણ આજ સ્વરૂપને મૂલ પુરુષત્વે સ્વીકાર્યું છે. કેટલાક
લોકો “ શ્રીકૃષ્ણથી પર (શ્રેષ્ઠ) કેઈ પણ વસ્તુ હું બાંધુતો નથી ” કહે છે; છતાં પણ
દુરાગ્રહાવિષ્ટચેતસત્ત્વે, “ તે, વ્યાસ રીતે અવિદ્યાત્મક ઉપાધિ પરિવેદાપેક્ષાજ ધર્મચરણ
સર્વગત અને સર્વશક્તિત્વ છે; પણ પરમાર્થતઃ નથી. ” એમ પણ કહેવાની શૂંચતા કરે છે.
વિદ્વાન અને વિચારશીલ વૈષ્ણવો સમજી શકે છે, કે આ આરિનકતા છે, કે બૌદ્ધમતપ્રવેશ ?
ધર્મચરવાદ છે કે અનીધર્મવાદ ? અરે સત્યવાદિતા છે, કે અસત્યવાદિતા ? વળી કેટલાક દુરગારથો-
પાસકો પણ વર્ગાવિહીન થઈને “ દુરગતું ” કે પા કરીને શ્રીકૃષ્ણની સાથે સંબંધ બાંધવાને પગીણ
સંબંધ સિદ્ધ કરવા પ્રયત્ન છે. પશ્ચિમપુરંદર શ્રીમત્પુરુષોત્તમપ્રભુચરણ આપ્યા કરે છે કે શ્રીકૃષ્ણ
નિરૂપધિ છે. શ્રીકૃષ્ણ સાથેનો જીવનો સંબંધ ગૌણ નથી, પ્રધાન છે. ધર્મચરને અવિદ્યાની ઉપાધિથી
યુક્ત કહેવા જેમ શ્રુતિસૂત્રથી વિરુદ્ધ છે; તેમજ જીવનો ધર્મચર (શ્રીકૃષ્ણ) સાથે થતો સંબંધ
ગૌણ માનવો એ પણ પૂર્વતંત્રના તૂટીયાધ્યાયરથ યુગ્યપ્રધાનના વિષેકનું અગાનજ શાખવે છે.

ધર્મચર કારણરૂપ, આન્તર, લોકતા અને અન્તર્યામી પણ છે; અને તેથી જ તે અનેક-
વિધમહિમાયુક્ત પણ છે. “ બ્રહ્મ એક જ રૂપે યાય છે, તે અનેક રૂપે શી રીતે યાય છે, તે
પણ તત્ત્વરથલોમા પ્રતિપાદન કર્યું છે જ. યાવદ્ વેદાન્તવાંકશે અન્તરૂપ બ્રહ્મની મહિમાનું નિરૂપણ
છે. અને તેથીજ સર્વ વાંકશે બ્રહ્મપર છે; આ વાર્તા તો નિર્વિવાદ છે જ. ”

શ્રીકૃષ્ણ જગતનું કારણ છે—હવે સૌથી પ્રથમ એ વિચારવાનું છે, કે ભગવાન
જગતનું કારણ કારણ યદ્ય શકે કે નહિ ? વ્યાસભગવાન વેદાન્તસૂત્રોમા બ્રહ્મવિચારો પ્રારંભ
કરી સૌથી પ્રથમ જગતનું કારણ નિરૂપધિ શ્રીકૃષ્ણ-પરબ્રહ્મ-એ એમ કહે છે. “ જેથી જન્મ
આદિ યાય છે, તે બ્રહ્મ છે; કારણ કે તેને શાસ્ત્રમા કારણ કહ્યું છે. ” અથ “ જેથી
“ આ જૂતો ઉત્પન્ન યાય છે, ” ઇત્યાદિ તૈત્તિરીય શ્રુતિ ઉપર વિચાર પ્રસ્તુત થયો છે, પ્રથમ યાય
છે કે, બ્રહ્મમાં કર્તૃત્વ છે કે અકર્તૃત્વ ? કેમ “ સત્ય ” જ્ઞાનરૂપ અને અન્ત-બ્રહ્મ છે. ”
આ બ્રહ્મસ્વરૂપપ્રતિપાદક વાક્યમા બ્રહ્મને જગતનું કારણ કહેવામા આવ્યું નથી અને બ્યા

૧ આદિમૂર્તિઃ કૃષ્ણ એવં સેવ્યઃ સામુદયકામ્યવા । ૨ કૃષ્ણાત્વ કિમપિ તત્ત્વમદં ન જાને । ૩
તદેવમાવિષાત્મકોપાધિપરિચ્છેદોપેક્ષમેવેશ્વરસ્યેશ્વરત્વં સર્વશક્ત્યં સર્વશક્તિત્વં ચ, ન પરમાર્થતઃ । જીઓ ૨૧/૧૪
નું શાકર બાબ. ૪ દેવો મૃત્વા દેવં અજેત એ ન્યાયે. ૫ જીઓ સિ. ૨. વિ. નું બાધાન્તર ૫૪
૪૭. ૬ એકોઽહં બહુ સ્યામ્ હૃદિશ્રુતેઃ ૭. જન્માવત્સ યતઃ શાસ્ત્રયોગિત્વાદ્ । ૮ યતો વા ઇમાનિ
મૃગાને જાયન્તે । ૯ સત્યં જ્ઞાનમનન્તં મક્ષા ।

આગળ શ્રુતિમાં કર્તૃત્વ કહેવામાં આવ્યું છે, ત્યાં અન્યગત કર્તૃત્વનો આરોપ કરાયો છે, એમ માનવાથી પૂર્વ પર વાક્યોની સંગતિ લાગી જાય છે, તેથી સ્વરૂપપ્રતિપાદક વાક્યના ઉપરથી કાર્યપ્રતિપાદક વાક્યમાં પણ આરોપજ માનવો ઉચિત છે, માટે જ્યાં કારણ નથી એમજ કેમ ન માનવું જોઈએ ?

ઉપર જણાવેલી કારણત્વપ્રતિપાદક તૈત્તિરીય શ્રુતિમાં 'આ' એ દર્શક સર્વનામ વડે જગત્તો જતાનીને તેનું જન્માદિ કહ્યું છે. વળી આ શ્રુતિનું વિવરણ કરતી કે કમરુદ્ધિનું પ્રતિ-પાદન કરતી "તે પરમાત્માથી આકાશથી ઉત્પન્ન થયું" શ્રુતિમાં આજ આકાશની ઉત્પત્તિ જણાવી છે, આ ઉપરથી સિદ્ધ થાય છે કે શાસ્ત્રમાં-પૂર્વકાંડ તથા ઉત્તરકાંડ-સૃષ્ટિપ્રતિપાદક વાક્યો કારણત્વે પરબ્રહ્મનેજ સ્વીકારે છે. કાર્યપ્રતિપાદક વાક્યો સ્વરૂપપ્રતિપાદક વાક્યોના આધારે હોવાથી સ્વરૂપપ્રતિપાદકવાક્યોમાં "બ્રહ્મ કારણ નથી" એમ નિષેધ વાક્ય જોવામાં આવતું નથી, પ્રત્યુત્તર કહ્યું છે એમજ કહ્યું છે. તેથી "તે સ્વરૂપજ્ઞ અનણુ" દત્તાદિ ધર્મનિષેધક વાક્યમાં ધર્મનો નિષેધ હોવા છતાં પણ બ્રહ્મ અલૌકિક હોવાથી અને નિષેધમાં લૌકિક ધર્મોનો સમાવેશ થયેલો હોવાથી લૌકિકરીતિકર્તૃત્વનો નિષેધ પ્રાપ્ત થતાં અલૌકિકે કર્તૃત્વ તો સિદ્ધજ છે. અન્યથા કર્તૃત્વપ્રતિપાદક શ્રુતિ અને ધર્મનિષેધક શ્રુતિમાં વિરોધ ઉપરિચિત થતાં અમુક શ્રુતિ જાણવતી અને અમુક નિર્જળ એમ કરીને પરસ્પર વિરોધ બાધ પ્રસક્ત થાય પણ અત્ર તેનો બાધ લાગુ પડી શકે તેમ નથી, બાધ કે બલાબલનું આ પ્રકરણ ન હોવાથી કોઈ પણ આસ્તિક તેવી કલ્પના ન રી શકે. વળી માયાવાદની પદ્ધતિને અનુસારીને લક્ષણ કરીને બ્રહ્મપર કર્તૃત્વનો આરોપ કરવો જન્ય હોવાથી શ્રુતિસિદ્ધ કર્તૃત્વનો ત્યાગ કરવો અનુચિત છે. આથી સિદ્ધ થાય છે કે સર્વનું આદિ કારણ પરબ્રહ્મ સમિચ્છાનંદ સ્વરૂપ કીકૃષ્ણ જ છે. ૧ મન્વથ ધિકરણમાં નિરુપધિક બ્રહ્મનું ઉપાદાનકારણત્વ જણાવ્યું છે અને ૨ ઇક્ષ્વકધિકરણમાં સમિચ્છાને કારણત્વ વિચાર્યું છે તેમજ આનંદમયા ધિકરણમાં આનંદરૂપે કારણ કહ્યું છે. અને ત્યાંજ એ મયાદિની અપેક્ષાએ આન્તરત્વ પણ જણાવ્યું છે. અપ્રમથ, પ્રાણમથ, મનોમથ અને વિજ્ઞાનમથ કહીને "૪આનંદમથ આત્મા આથી અન્ય અને આન્તર છે" દત્તાદિવાક્યોમાં આન્તરત્વ કહ્યું છે.

ધોળ.

પોષ મહાખડ લાગી રે આજે સોહેલો, તેમાં સુરી પંચમી સુદાગી આજે સોહેલો. વાર બોલો રવિવાર રે આજે સોહેલો, નિસ ધટિકા છપન પલ અનુરાગી રે આજે સોહેલો. મંવત ઓગણીસે પીસતાલીસ રે આજે સોહેલો, પ્રાફુલ્લવ બોલો પુષ્ટ પુષ્ટ રે આજે સોહેલો. દેવી જીવ લખે પ્રથુ સ્પષ્ટ રે આજે સોહેલો, મીટયો વિરહાનધી કષ્ટ રે આજે સોહેલો. ધન્ય શ્રીગોવિંદરામ રે આજે સોહેલો, સુત પાયે શ્રીગોપેશ્વરલાલ રે આજે સોહેલો. શ્રીગોવિંદગ્રમજના લાલ કહીએ રે આજે સોહેલો, સેવ્યા વિટલેશ્વર રે આજે સોહેલો. મુંદર અનુપમ સોદાએ રે આજે સોહેલો, વજ્રજન નીરખી દરખ મનમોહીએ રે આજે સોહેલો. નાયત ઉમંગ ભરી સુકુમારી રે આજે સોહેલો, સંગ ઝંઝ પખાવજ યાદી રે આજે સોહેલો. દેત આશિષ ત્રજખાલ રે આજે સોહેલો, જીવે શ્રીગોવિંદરામજી તિહારો લાલ રે આજે સોહેલો. ઉત્સવ ધરધર પ્રતિ કરહી રે આજે સોહેલો, શ્રીગોપેશ્વર પતિપદ અનુસરહી રે આજે સોહેલો.

KRISHNA AND HIS FLUTE.

Be still, my heart, and listen,
For sweet and yet accute;
I hear the wistful music,
Of Krishna and his flute.
Across the cool, blue evenings,
Throughout the burning days.
Persuasive and beguiling,
He plays and plays and plays.
Ah, none may hear such music,
Resistant to its charms,
The household work grows weary,
And cold the husband's arms.
I must arise and follow,
To seek in vain pursuit,
The blueness and the distance,
The sweetness of that flute.

In linked and liquid sequence,
The plaintive notes dissolve;
Divinely tender secrets,
That none but he can solve.
Oh, Krishna, I am coming,
I can no more delay;
My heart has flown to join thee,
How shall my footsteps stay ?
Beloved, such thoughts have peril,
The wish is in my mind;
That I had fired the jungle,
And left no leaf behind,
Burnt all bamboos to ashes,
And made their music mute;
To save thee from the magic
Of Krishna and his flute.

(By Larence Hope.)

શ્રીમોકુલનાયજી.

૧

રક્ષક એ તો વૈષ્ણવતાના, તારણદારા વૈષ્ણવ જનના;
જહાગીરી આદેશ ન માની, પરાસ્ત વળી ચિદ્રૂપને કીધો;
ઉડવી વિશ્વે વિજયપતાકા, કીધી માલા તિલકની ન્યા;
રક્ષક એ તો વૈષ્ણવતાના, તારણદારા વૈષ્ણવ જનના.

૨

સંસ્કૃત ગ્રંથો પ્રચુર વિલેખ્યા, ભાવાત્મક ગંભીર અનેરા;
એ બુદ્ધિ પંડિત મંડલના, ગોસ્વામિ-કુલ-દીપક-બદાલા;
રક્ષક એ તો વૈષ્ણવતાના, તારણદારા વૈષ્ણવ જનના.

૩

ધીમદ્ ગોકુલનાય તણો છે, ઉત્સવ આગે ઉજવો પ્રેમે;
કામ-કોથ ત્યાગી સયણા, દેવ હઠાગ્રહ છોટી બદાલા;
રક્ષક એ તો વૈષ્ણવતાના, તારણદારા વૈષ્ણવ જનના.

“ સિદ્ધાંતમુક્તાવલી. ”

(લેખક:—વિદ્યાર્થી ભગવતીદાસ ગોવિંદદાસ દેસાઇ)

નત્વા હરિં પ્રવક્ષ્યામિ સ્વસિદ્ધાંતવિનિશ્ચયમ્ । કૃણ્ણસેવા સદા કાર્યા માનસી સા પરા મતા ॥

અર્થ:—હરિભગવાનને નમીને પોતાના સિદ્ધાંતનેા આરી રીતે નિશ્ચય કહીશ. હંમેશાં કૃષ્ણની સેવા કરવી. માનસી સેવા તે ઉત્તમ મનાએલી છે.

પ્રથમ તો આ સિદ્ધાંતમુક્તાવલી ગ્રન્થમાં શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ દરેક યાચોતું તરવ શું છે ? તે પોતાના નિર્ણય ભક્તો માટે બતાવેલ છે. એ પોણ અંધમાં શ્રીમદ્દાપ્રભુજીએ સ્વમન દર્શાવ્યું છે અને તેજ નિર્ણય અને મુખ્ય છે પૂર્ણવિતા શ્રીગોપેશ્વરજી કહે છે કે જ્ઞાનમય ભાષ્યમાં આચાર્યશ્રીએ આધિભૌતિક મતનું નિરૂપણ કર્યું છે. નિયન્ધમાં આધ્યાત્મિક મતનું અને મુખોધિનીજીમાં આધિદેવિક મતનું, બધારે પોણ પ્રથોમાં નિર્ણય મતનું પ્રતિપાદન કર્યું છે. તેમજ આ સિદ્ધાંતમુક્તાવલી ગોખ્ય છે. આ ગ્રન્થનું રક્ષણ બકેનો તેમા કહેલા ઉપદેશો પ્રમાણે વર્તે તો જ યથ શકે.

આ ગ્રન્થમાં પણ શ્રીમદ્દાપ્રભુજી હરિને જ નમન કરે છે. એટલે શ્રીમદ્દાપ્રભુજી જેવા પણ દીનતા રાખી પ્રથમ દરેક કાર્યની અંદર ભક્તોનાં હુખને હરણ કરનાર એવા શ્રીહરિભગવાનને નમન કરે છે. તેવી રીતે આપણે પણ પ્રભુને આજ્ઞ રાખી કાર્ય કરીશુ તોજ તેમાં દુતેહમંદ યથશું, આમાં કશું છે કે “ કૃણ્ણસેવા સદા કાર્યા ” કૃષ્ણની સેવા હંમેશા કરવી. આમાં શંકા થાય કે શ્રીકૃષ્ણનીજ મેવા સા માટે ? ખીજા ખીજાની કેમ નહી ? તેને માટે કહે છે કે શ્રીકૃષ્ણ શ્રીપુરુષોત્તમ પૂર્ણવનાર છે. ક્ષર અને અક્ષરથી જે ઉત્તમ પુરુષોત્તમ તેજ શ્રીકૃષ્ણ એમ ગીતા પણ સાક્ષી પૂરે છે. જેમ ગંગાજના ત્રણ સ્વરૂપો, આધિભૌતિક, આધ્યાત્મિક અને આધિદેવિક એ ત્રણ છે. તેમ પ્રભુના પણ ત્રણ સ્વરૂપો છે. ગંગાજનું જે જલ તે આધિભૌતિક સ્વરૂપ, માણસ જે તીર્થરૂપે પૂજે છે તે આધ્યાત્મિક સ્વરૂપ અને જે ગંગાજનું દેવતારૂપી સ્વરૂપ તે આધિદેવિક, સ્વયંગંગાજ. તેજ પ્રમાણે ભગવાનનું આધિભૌતિક સ્વરૂપ આ જગત, આધ્યાત્મિક અક્ષર જ્ઞાન અને આધિદેવિક સ્વરૂપ તે પોતેજ પુરુષોત્તમ શ્રીકૃષ્ણચન્દ્ર છે. સેવા અને તેમાં વળી માનસી સેવા છે તે પર છે, એટલે તે માનસી સેવા શ્લરૂપ છે એમ ખીજા શ્લોકથી સ્પષ્ટ રીતે સમજાય છે કે ચૈત્તત્ત્વપ્રવર્ણ, સેવા તત્ત્વદ્વૈય તત્ત્વવિત્તજ્ઞા । તત: સંવારદુ:સસ્ય નિશ્ચિત્તિ-મંદાવોષનમ્ ॥૨॥ માનસી સેવાનું લક્ષણ એ કે પ્રભુની અંદર મનને પરાવનું અને તે માનસી સેવાની સિદ્ધિ માટે તત્ત્વવિત્તજ્ઞ સેવા કરવી. તત્ત્વવિત્તજ્ઞ એટલે તનથી અને વિત્તથી બન્ને સેવા કરવી કે જેથી માનસી મેવા સિદ્ધ થાય. એકથી તનુજ્ઞ એટલે શરીરને કષ્ટ આપીને સેવા કરવાથી કે એકથી વિત્તજ્ઞ એટલે પૈસાની સેવા એમ એક એક લુટી લુટી કરવાથી માનસી સેવા સિદ્ધ થાય નહિ પણ બન્ને એકથી સાથે કરવાથી ગોપીજનોના ચેડે માનસી સિદ્ધ થશે અને સંસારનું હુખ નિવૃત્ત થશે. સંસારનું હુખ એ શું ? સંભારનું હુખ એક અહંતા અને ખીજું મમતા. અહંતાની રિધતિ દેહ સાથે ને અને મમતાની વિત્તાદિમાં છે એટલે શ્રીકૃષ્ણની સેવા કરવાથી દેહાધ્યાસ છૂટી જશે અને બધી ઇન્દ્રિયો પ્રભુમાં જોડાઈ જશે. નહિતર ઇન્દ્રિયો આડે મારે જશે અને આપણું પનન કરી નાખશે. કારણકે ઇન્દ્રિયો એ તોફાની થોડા છે. ધણા પેરે તે કે ઇન્દ્રિયોને તનુજ્ઞ ને વિત્તજ્ઞ ને આડે મારે ને નિવૃત્ત કરવા માટે શ્રીકૃષ્ણની સેવા કરવી પડે છે.

શ્રીગોકુલનાથજી અને ધાર્મિક સત્યાગ્રહ.

(ગુજરાતી સાહિત્યના હાસ્યરસના સુપ્રસિદ્ધ લેખક રા. રા. છોટાલાલ ડાહ્યાલાલ બાગીરદારે) ઉત્સવાગે મળેલી સભામાં કર્યું વિવેચન.)

આજથી લગભગ ત્રણ સૈકા પૂર્વે એટલે આજના મહોત્સવના નાયક શ્રીમદ્ગોકુલનાથજીના સમયમાં ખેલાયેલા સત્યાગ્રહનો અને સવિનય ભંગનો સંગ્રામ વૈષ્ણવી સૃષ્ટિમા ચિત્તમરણીય છે અને રહેશે. આજના અને તે સમયના સત્યાગ્રહનાં સાધ્યમાં ઘણા ભેદ માલમ પડશે. પણ ઉભય સત્યાગ્રહમા વપરાયલાં સાધનો અને બનેલા પ્રસંગોમાં એકંદરે ઘણું સામ્ય છે. આ વખતનો સત્યાગ્રહ જેમ અહિંસા અને સત્ય પર રચાયેલો છે તેમ તે સમયના સંગ્રામની ધમારત પણ એ જે અમોઘ સાધનોથી ચલાયેલી હતી. એનું વિસ્તૃત વિવરણ કરવું રહેવા દઈ હવે હું આપની સમક્ષ તે સમયના સત્યાગ્રહ માટે ઉપસ્થિત થયેલાં કારણોની ચર્ચા કરીશ.

શ્રીગોકુલનાથજી ભૂતલ ઉપર ખિરાબતા હતા ત્યારે મોગલ બાદશાહ જહાંગીર સમ્રાટ્પદે હતા. હવે આ તો સર્વસ્વીકૃત બીના છે કે સમસ્ત આર્યાવર્તમાં મુસ્લીમ સંસ્કૃતિ અને ધર્મના ધસી આવતા પ્રચંડ પુરને ખાળી તેમ તથાધ જતાં હિન્દુ સંસ્કૃતિ અને ધર્મને બચાવવાનો ભગીરથ પ્રયત્ન કરનાર વૈષ્ણવ સમ્રદાયના આત્મપોજ હતા. એટલે દાલગાં જેમ શ્રીસ્તી પાદરીઓને, તેમ તે સમયમાં મુસ્લીમ ધર્મના ઉપદેશકોને એ સમ્રદાય આખા કણ્ઠાની માફક માફક ખૂંચે એમા નવાઈ નહિ. ખ્રીસ્તી પાદરીઓને પોતાના ધર્મપ્રચારના કાર્યમાં જેમ કુદાકામાં હાથા રૂપ આપણાજ બાઇઓ મળી જાય છે, તેમ તે સમયમા મિદૂષ નામનો એક સંન્યાસી જહાંગીર બાદશાહને મળી ગયો. આ ચિરપ વાચાળ અને ધારી અસર પહોંમાડી રહે એવા કાવત્રાખોર હતા. વૈષ્ણવ સમ્રદાયની વિરુદ્ધ અનેક એર બાદશાહના કાનમા રેડી તેણે વૈષ્ણવોના પ્રિયમા પ્રિય તિલક અને તુલસીની માળા પર કુહાંગધાત કરે એવા હુકમ બાદશાહ પાસે બહાર પડાવ્યો. આ હુકમની રૂબરૂ કોઈથી તુકરીની માળા અને તિલક ધારણ કરી શકાય નહિ એમ હતું. ગંતરના મનસ્વી કલેંકરે ખાદીની શાધી ટોપી વિરુદ્ધ જે સ્વચ્છંદી હુકમ બહાર પાડ્યો હતો. તે વખતે મચી રહેલો ખજાણાટ જેના રમરણમાં હશે તેને માળા તિલક વિરુદ્ધ બહાર પાડેલા જહાંગીરી હુકમથી તે સમયમા વૈષ્ણવી સૃષ્ટિમા કેવો જબરદસ્ત કાલાહલ મચી રહ્યો હશે તેની કલ્પના આવી રહેશે. તે સમયમા વૈષ્ણવોમાં પુષ્ટિસમ્રદાય અને રાધાવલ્લભી સમ્રદાયનો ફેલાવો મહાન હતો. તેમાં શ્રીરાધાવલ્લભી સમ્રદાયના ઘણા અનુયાયી. એએ આ હુકમને માન આપી તુલસીમાળા અને તિલકનો ત્યાગ કર્યો. પણ પુષ્ટિસમ્રદાય બૂપણુ શ્રીયસાંધજીના ચતુર્થ કુમાર શ્રીમદ્ગોકુલનાથજી પ્રણયરણે આ જહાંગીરી હુકમનો સવિનય અનાદર કર્યો. પેશે ચિદૂષ સંન્યાસી બાદશાહ જહાંગીર તરફથી આ હુકમની અમલ બખબળી બરાબર ચાલ છે કે નહિ તે જોવાના કામ ઉપર સર્વ સત્તા સાથે નીમાયો હતો. તેણે આજની વાઈસરોયની ધમકીઓ માફક પોતાના નિશ્ચયમાં અડમ અને અબેદ એવા શ્રીગોકુલનાથજીને દમદાડી અને બની ચકચું ત્યાં લાવ્યોયી ચલાયમાન 'કરવાના અનેક પ્રયત્નો કર્યા પણ જેને એક શ્રીકૃષ્ણનારાયણ સિવાય બીજા કોઈની જરા પણ પડવાહ નહિ હતી તેને એ ફૂટેલ સંન્યાસી પોતાના નિશ્ચયથી ડગવી ચકચો નહિ. એટલે એ બાબતની વાટાઘાટ કરવા જહાંગીર બાદશાહે પોતે આજના ગીમવા જેવા સોંતસોને મજાએ આવેલા કારભારમા રહેતા હતા ત્યાં શ્રીગોકુલનાથજીને બોલાવ્યા. 'દલાવસ્થા અને વાટની વિષમ સ્થિતિ છતાં' આપત્રી



ગિા. શ્રીમજ્જિમણીસુત્તપ્રકરણનું આલેખન ગિા. શ્રીગિરિનાથરાયજી તથા

દિ મતને ત્યા પવાયો નો બાદલાદે પોતાના વાટકમના બનાવના મનધમા આપનો વધે
પ્રશ્ન થો ત્યારે આપશ્રીએ માફ માફ સુણાવી હીધુ કે ' માશ્વાદ ' એ તિનું ને માગા તો શિંગ
સાગે છે ચાહે તે કરી લો, પણ એ ઉતરશે ત્યારે પૂર્વનો સ્વર્ગ પશ્ચિમમાં ઉગે તો '

હિન્દી ભાષાના પ્રલાક કરિઓએ આ પ્રસંગ સંબંધી બનેલ પદો ગ્યા છે તેમાં શ્રીવિદ્યા
શ્રીવલ્લભ અને શ્રીપતિના કાવ્યો આપની આગળ હું ઉદ્ધૃત કરીશ

શ્રીવિદ્યારીત્થમ કહે છે

ટેકકી, ટેકકી, ટેકકી રે, ગિરિ ટેક ટરે તો, ટરે ધ્રુવ તારો ॥

શ્રીગોકુલનાથજી માલ્ય તજે તો રોષ સીસ ન ધરે મૂંઝારો ॥

પોન થકે તો થકે તો થકે, વ્રજકો પન ફૌન કરે મહિમે રતન્યારો ?

શ્રીવલ્લભવદા ' વિહારી ' વહે કવિ ગાવત હૈ જગમેં જરા થારો ॥

શ્રીપતિ ગાય છે —

૦ શાહ કહી સો ન કરી, કરી સો વેદ પુરાનન માણી ।

માલ વિલકુ જનેઝકે કારન, બઢેન પેંઢન નાણી ॥

શ્રીપત કહે જહાગીરકે સ્થાન, જે હમરાવ તે સવ સાણી ।

શ્રીવિઠ્ઠલનાથજીને શ્રીગોકુલનાથજી સમ દિનની પત રાણી ॥

સાંપ્રદાયિક પ્રવૃત્તિ.

સુરતમાં આનંદ—પૂન્યપાદ વિદ્વદ્ગણ આચાર્યવર્ય ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીમન્નરતનાથજી મહારાજશ્રીના ન્યેજા કુમાર આચાર્યશ્રીના ગો શ્રી ૬ શ્રીતોવિન્દગચજી આચાર્યશ્રીના અર્ચનકોત્તમચર્યતા શ્રીમતી વહનનાં સીમંતોત્સવન પ્રસંગે સુરતમાં આનંદનો આપ પ્રસરી રહ્યો હતો. બહારમામથી શ્રીવૃત્તીયપીઠાધીશ્વર અને નેત્રેશ્રીના સાતેજ અનુજ તથા શ્રીચતુર્થપંથમપીઠાધીશ્વર અને મુખાધી શ્રી. શ્રીદક્ષિત ભગવાન તથા ચિ શ્રીગોપીનાથજી પદ્માયાં હતા. આ પ્રસંગે શ્રીવિઠ્ઠલેશ્વર પ્રજ્ઞપ્રજ્ઞને મહામહોત્સવ પણ પ્રાપ્ત થતાં મુવર્ણમુગ્ધને મહાન સુખદ સંયોગ થયા હતા. માર્ગશીર્ષ વદ ૮-૬-૧૦ એ ત્રણ દિન સવા રાજવામાં આવી હતી. આ સભાએ એક 'પરિષદ' ના મહાધિવેશનની ડાંખી કરાની હતી તો દિવસના સંમિતતા ત્રણ-ચાર કલાક આકર્ષક, હૃદયોધક અને ચેતનાપ્રસારક તરીકે ચાદમાર બન્યા હતા. બાજુ શુભ પ્રસંગે મહારાજશ્રીએ રથાધેશી મહાસભાને વાર્ષિક મહોત્સવ પણ ઉજવાયા હતા. સંપ્રદાયમાં ૭ વર્ષ જેટલા ટૂંક સમયમાં આ મહાસભાએ સંગીત માર્ગદર્શક પ્રવૃત્તિ કરી છે. વૈષ્ણવપરિષદ ન્યાયે એકદેશી કાર્ય-કેવર્માજ હૃદયાર્થતા માનવી ત્યારે આ મેં આએ વિશાળતમ કાર્યક્રમમાં કંપવાલીને સફળતા પ્રાપ્ત કરી છે. પુરાતત્ત્વશોધનનું કાર્ય, પ્રાચીન સાહિત્યનું મુદ્રણ, બાંધતંત્ર, પાઠશાસ્ત્રપાનાદિ, માસિકાદિકાર પ્રચારકાર્ય અને ખાસ કરીને તે બાલકો-બાલ્યાવસ્થાથીજ સાંપ્રદાયિક સિદ્ધિતાના અધ્યાસી અને તેને માટે જે પરીશ્વ તથા ઈનામોની જે ચોળના કરી તેને માટે તે આ મહાસભાએ ચિરંમુદ્રાશ્રય બની છે. માર્ગશીર્ષ વદ ૮ ના રોજ પ્રથમ અધિવેશન થયું શ્રીવૃત્તીયપીઠાધીશ્વર પૂન્યપાદ ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીમન્ન-ભૂવલ્લુવાજી મહારાજશ્રીને પ્રમુખસ્થાન અર્પવાની દરખાસ્ત શ્રીચતુર્થપંથમપીઠાધીશ્વર ગોસ્વામી શ્રી ૬ શ્રીવલ્લભાચાર્યજી મહારાજશ્રીએ મૂખી અને પોતે શ્રીદારકાધીશ્વરના તિલકાયિત હોવાથી, દારકાલીલામાં મર્મદાનુ પાલન હોવાથી આ સભામાં મુખ્યસ્થાનું પાલન એએશી કરશે, એવી મતવબનું હુંકું પણ માર્મિક વિવેચન કર્યું તે પછી સુરતના મુખ્યસિદ્ધ વૈષ્ણવ આનંદરી મેટરેટ સરદાર દીરજલાલ છબીલાલ નેરા બીએ એ સંસ્થાનો હેવાવ વાંચ્યો. આ સમયનું સભાનું ચિત્ર બાજુ અંકમાં છે. હેવાલમાં વર્ષ દરમ્યાન ગ્યાનિક (સુત) ની મહાસભાએ સુરતમાં શી શી પ્રવૃત્તિ કરી તેનું સૂચન હતું. તેમાં મહારાજશ્રીએ પોતે પોટશ ગ્રંથો ઉપર સચિત્ત પ્રવચન કરી સુરતના વૈષ્ણવોને અલભ્ય લાભ આપ્યો હતો. વર્ષો પછી આનું હૃદયકાર્ષક પ્રવચન સાંભળવાનો લાભ સુરતના વૈષ્ણવોને પ્રાપ્ત થયો હતો. આ ઉપરાંત મહાસભાએ પ્રગતિમાં આજળ પગલાં માંડ્યાં હતાં. મહારાજશ્રી ૧૬ વર્ષથી 'શ્રીબાલકૃષ્ણપીઠાધીશ્વર' નામની સંસ્થા ચલાવતા હતા અને અનેક દિનબાલકો સંસ્કૃત ભાષા સાહિત્યનું અધ્યયન તેમાં કરતા હતા. તેમજ સંસ્થાને અંગે એક છાત્રાલય (લોડિંગ) પણ હતું આ સંસ્થાઓને વિનામૂલ્ય લાભ વિદ્યાર્થીઓને અપાતો હતો ઉપરાંત આ પાઠશાળાનો લાભ રકુવ તથા કોલેજના વિદ્યાર્થીઓ પણ લેતા હતા. આ ભવેથી સંસ્થાનો વહીવટ મહાસભાએ પોતાના હાથમાં ગયા આપણે માસમાં લીધે આ સંસ્થાને સરકારી કેળવણી ખાતાએ મંદર કરીને આંટ પણ આપવા માંડી અને સંસ્થાના ગ્રેફો તથા પરીક્ષકોએ હતમ અભિપ્રાયો આપ્યા પાઠશાળાનો લાભ ૩૯ વિદ્યાર્થીઓ લે છે અને ૧૩ વિદ્યાર્થીઓ હાતાલપર્માજ રહે છે રકુવ તથા કોલેજના વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા જુદી છે. આ અરણ્ય સંસ્થા ચલાવવા માટે રોકડ, અનાજ, વજ, મહાન આદિ સર્વની અવરજવર છે. આરા છે કે વૈષ્ણવો જેમ અન્ય નજરે સંસ્થાઓ નમાવવા માટે હૃદયેશી રૂપીઓને વ્યય કરે છે, તેમ આ પોતાની ધાર્મિક સંસ્થાને ચોપના માટે પાછી પાની નહિ કરે. આ પ્રમાણે હેવાલ વચ્ચે પછી એ શ્રીદક્ષિત ભગવાને પ્રવચન કર્યું. આપનું પ્રવચન કવિબચરતાકરની રીતીને અપનાવવું હતું. સાંપ્રદાયિક તિર્થાંતોના નિનાદ્ય આ અસરકારક વ્યાખ્યાને વૈષ્ણવોનાં હૃદયમાં અનેક પ્રકારે આપ્યાં. એક લાભ આ પ્રવચનથી ન મળ્યો આ પ્રવચન આપશ્રીએ પોતેજ લખેલું હતું અને સભામાં પોતેજ વાંચતા હતા. એ પોતે સ્વતઃ વાંચ્યા વિનાજ વ્યાખ્યાન કરત, (જેમ અન્ય રમતે કરે છે) તે કૃપાદિદ્વારા વૈષ્ણવોના નેત્રોમાં જોરજ આનંદ છવાઈ રહેત. વજા અને એતાની દષ્ટિ એક થયા વિના આનંદમાં હલુપ રહે છે અન્ય વિવેચનો થયાં. અને પણ થોડું જોલવાની આ થતાં શીશુસાંદેહ અને પતિતોનો ઉદ્ધાર એ વિષે થોડું વિવેચન કર્યું હાથમાં સળગી રહેલા

શ્રીકૃષ્ણાય નમઃ

શ્રીકૃષ્ણ પંચાંગ. “કાયમી”

Perpetual Calendar.

શ્રીકૃષ્ણપ્રભુ, એ છે મોર્ચિદના અંતઃકરણની કુન ભક્તાર્થીન, શ્રીકૃષ્ણ શરણથી અમને શ્રીકૃષ્ણ પ્રાપ્તિ છે. અમુક.

સમજ.

૧. ઉપરના બાર શબ્દો એટલે અનુક્રમે બાર અંગ્રેજ મહીનાના નામ છે.
૨. આ કેલેન્ડરમાં સને ૧૯૩૨ ની સાલમાં જાનેવારી તથા ફેબ્રુઆરીમાં પ્રથમવાર સોમવાર લેવા અને બાકીના માસમાં એટલે માર્ચથી ડીસેમ્બર સુધીમાં પ્રથમ વાર મંગળવાર લેવા. કારણ કે ૧૯૩૨ નું “Leap Year” લીપ વર્ષ છે.

૩. આ શબ્દોમાં જેટલા અક્ષર છે તેટલામા અક્ષરે પ્રથમ વારથી ગણનાં છેલ્લે અક્ષરે, જે વાર આવે તે વારે પહેલી તારીખ આવે. જેમકે પ્રથમ જાનેવારી માસ લેા, તેમાં પ્રથમ શબ્દ “શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુ” છે. તેમાં પાંચ અક્ષર છે, એટલે પેરા બીજામાં જાણ્યાવા મુજબ પ્રથમવાર સોમવારથી ગણનાં પાંચમા અક્ષરે પાંચમો વાર શુક્રવાર આવે છે. એટલે જાનેવારી માસની પહેલી તારીખે શુક્રવાર આવે. બીજા દાખલો ત્રીજા માર્ચ માસ લેા, તેમાં “છે” એક અક્ષર છે. માટે બીજા પેરામાં જાણ્યાવા મુજબ પ્રથમ વાર મંગળવાર છે. એટલે માર્ચ માસમાં પહેલી તારીખે મંગળવાર આવે. ત્રીજા દાખલો આઠમો ઓગસ્ટ માસ લેા, તેમાં “શ્રીકૃષ્ણશરણથી” સાત અક્ષર છે. એટલે મંગળવારથી ગણનાં સાતમાં અક્ષરે સાતમો સોમવાર આવે છે, માટે ઓગસ્ટ માસમાં પહેલી તારીખે સોમવાર આવે.

૬. સમજઃ—ઉપરના બાર શબ્દોમાં જેટલા અક્ષર છે. તેટલામા અક્ષરે પ્રથમ વારથી તે માસની પહેલી તારીખ આવે.

૪. સને ૧૯૩૨ ની સાલ પછીથી દરેક સાલ માટે પ્રથમ વાર તરીકે અનુક્રમે વાર લેવા અને Leap Year માં લીપ વર્ષમાં પાંચ મહીનાથી તે પછીનો વાર પ્રથમવાર તરીકે ગણવેા. જેમકે સને ૧૯૩૩ ની સાલમાં પ્રથમવાર શુક્રવાર, ૧૯૩૪ માં પ્રથમવાર શુક્રવાર, ૧૯૩૫ માં પ્રથમવાર શુક્રવાર, ૧૯૩૬ માં જાનેવારી તથા ફેબ્રુઆરી માટે પ્રથમવાર શનિવાર અને માર્ચથી સપ્ટેમ્બર સને ૧૯૩૭ માં પ્રથમવાર સોમવાર અને તે મુજબ ગણવું.

લી. શ્રીકૃષ્ણદાસ ગોવિંદલાલ કેશવલાલ.

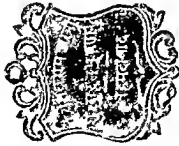
૧. માંડવીની પોળમાં સેતનીપોળ શ્રીકૃષ્ણદાસ—અમદાવાદ.



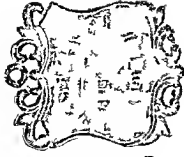
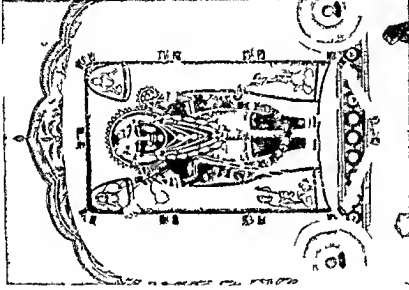
વાયોડીઆ અકરણ—નુપ્રસિદ્ધ આનંદાન શ્રીયુત મણિલાલ કાશીવાળા વિશે જતાંકમાં જે ઈસાદા કર્યો હતો, તે પરથી તેમનો પત્નિ આનંદ મલ્યા છે. એ વાંચતાં તેમને વિશે જે ખબર મળી હતી તે જોડી હતી અને આજ અંતર લીલાવાળાં ધર્મનું કલ્પન થાય તેવું કોઈ પણ હૃદયન તેમના તરફથી થયું હતી જાણી આનંદ થયો છે. તેમને મુવેળા અન્યાય માટે અમે દીવગીર છીએ. વળી વાયોડીઆમાં સમાધાન થઈ ગયું છે. આનંદી રાણા બંધ થઈ છે અને અંતર આજકોને છેગ બેસાડવાની કારતે મરમરી આવાનો કામ બધા પહેલાંની માફક લેવા લાગ્યા છે.

जयति ॥

महया ३



(विश्रयाऽमृतमश्नुते)



“श्रीविद्याविभाग कांकरोली.”

सन्मानोपाधिपत्रम्

श्रीमन्निखिलभूषण्डलाचार्यवर्य-जगद्गुरु-श्रीभागवतपीयूषमुद्रमयनयम-भक्तिमार्गा-जमार्तण्ड-भगवद्दत्तानलावतार-
श्रीमद्वल्लभाधीश्वर-देशिकेन्द्र-प्रादुर्भाषित-शुद्धाद्वैतसम्प्रदाय-श्रीतृतीयपोठाधीश्वरा गोस्वामिकुलकर्मलब्धिवार्का,
श्री १०८ श्रीव्रजभूषणलाजमीमहाराजा, कांकरोलीनरेश, श्रीविद्याविभागाध्यक्षा, साम्प्रदायिकप्रचारविपयव
धैदुष्यसन्तुष्ट्यान्ता अहमदाबादनगरवास्तव्य राखियसतरामशर्माण, “शुद्धाद्वैतभूषण” इतिसन्मानोपाधिना
सोत्साह सप्रसाद समलैकुबन्ति। कांकरोली, फाल्गुन कृ २ सम्भत् १९८८।

शुद्धिद्वैत-सङ्कितमार्तः.

पृष्ठ ६.]

अध्यायः, श्रीवृद्धभाष्यः ४५३,

[अ' १२

श्रीमद्ब्रह्मवैवर्तपुराणश्रीवज्रभूषणमहोदयानां यज्ञोपवीतोत्सवसमुचितं

शुभाशंसनम्.

१.

सङ्कलैकशिरोमणेः कविगुणैः सूरस्य सर्वस्वता निभद्, बलभदेशिरेन्द्रदयितो, गोपाङ्गनाजीवनम् ॥
देवः श्याममनोहरो निजजनप्रेमानुविजः सदा यस्यां राजति सा विभाति सुभगा चापासनी पावनी ॥

२.

श्रीमद्ब्रह्मदेगिकेश्वरकुले कृपायनारा कृमात् तस्या पीठमतिष्ठिन् विजयिने गोस्वामिनो देशिका. ॥
येषां प्रौढतमैः प्रभावयिर्नैर्विधत्त विस्तारिभिर्न्यायैश्च गृहसेवकचमदधुरते ते धरिर्त्राभुजः ॥

३.

स्थाने सत्र कुले च ता विटसन्, मर्मात्मना पूज्यैः क्षुण्णे वर्त्मनि संचलत्तनुपमं तेजोविशेषं वहन् ॥
बुद्ध्या सद्बुधगुणविन्मगलता माहात्म्यमुद्गावयन् गोस्वामी वज्रभूषणो विजयते बाधो प्पवालोदय. ॥

४.

प्रोयद्वैदिकमन्त्रमद्गुणैः, साहायवैतालिकप्रोद्रीताभ्युदयः, कवीन्द्ररचनः प्रागन्म्यजागर्तकृत् ॥
अस्मात्कृतकव्यप्रतिवहाग्नीर्दादसंभाषितो गायत्रीप्रहणोऽसवः प्रतिनवस्तस्याच विद्योतेते ॥

५.

चञ्चचारशिखस्य, कामविरुचिं संविभ्रत पावनी, लोकैर्बद्धकैः स्तुतस्य, महसां चीतावधीनां निधेः ॥
साधुस्नेहपुरस्कृतस्य निभत्तं, माविरुदीक्षाजुषो बालस्यास्य विभायसोश्च फलन्तिस्तुन्यः प्रभावो जैनैः ॥

६.

सौजन्यं समुदेतु माधु भवतो विद्याप्रकर्षाश्रितं, नित्यं मन्दिरमन्दिराविलसन्निर्विभाजतां विस्तृतैः ॥
दिश्याद्यानिशमेहनानमनसा म्सेव्यमानः प्रभुर्देवः श्याममनोहरो नवनगाः श्रेयोमयीः सम्पदः ॥

७.

इति चापासनीसमाश्रितमद्गुलावाससमनः प्रणयी । 'कविकिङ्करः' इति स्वामुपहरते गिरिधरो मुदितः ।
विनीतः, भावत्कः, निराश्रितः भट्टगिरिधरदामां, यागरोदी कविकिङ्करः अलवरस्यः
गोकुलमृगनयनीनामतिशयगन्धर्वाणैरपाङ्गसंकैः । नृत्यन्मधुरवपुर्वरमुपनिषदां वन्दते हृदयम् ॥१॥
आक्रान्ताया यज्ञैरवेग्येन्द्रे जनीतविभक्तस्य । विद्यानगगिरिपतेः सद्गमि जयी देशिके जयति ॥२॥

तस्यान्यथे भुवनविद्युतकीर्तिरावासीत्युद्योदधिसमे सदृशः सुधांशोः ।

गाम्भीर्यधैर्यविनयादिगुणैकसिन्धुर्वन्धुः-स सदगुणवतां रघुनाथलालः ॥३॥

तस्यात्मजन्मनः श्रीमद्भजभूषणशर्मणः । उपनायनबेलयामिदमस्त्वभिनन्दनम् ॥४॥

आत्तस्वभक्तबलिराश्रितकामपूरः पद्माग्रयप्रणयपूजितपादपद्मः ।

तन्वा लघुगुणगणैर्गुरुवर्यद्वयो राजत्युपेन्द्रसदृशो भजभूषणोऽसौ ॥५॥

चित्रं यदुदण्टकरोऽप्यदण्टकरो जनेनैव वटुर्विमृष्टः ॥

विनीतचर्यो-यदयं च सत्यं न मे खलो भाति समेखलोऽपि ॥६॥

स्याममनोहरदययाऽऽचार्यकृतिं सफल्यन् भ्यात् । भारतभूतलभूषणमाचार्यधर्या चारुः ॥७॥

इति किञ्चिदकिञ्चिज्ज्ञोऽप्यार्यः प्रेम्णा पुरस्कृतः । पुरुषोत्तमशर्माख्यधनुर्वेदः समभ्यधात् ॥८॥

पण्डित पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदः “साहित्याचार्यः”

गोस्वामिवंशान्बुजभास्करस्य महोदयश्रीरघुनाथमूर्तेः ॥

सुतस्य दृष्ट्वा मुदमाप लोको “यज्ञोपवीत परमं पवित्रम्” ॥१॥

वेदाननः किल कमण्डलुमण्डितोऽपि वेदाननो न, वटुकोऽयमहो व्रतस्थः ॥

आपाढभूषिततनुर्न च वत्सरोऽसौ नो वा मनो हरति यामनतामुपेतः ॥२॥

यः श्रीवल्लभमल्लभस्य वदनश्रीवल्लभार्य-प्रभोः वगे विद्याविशुद्धवादविदिते, विद्याविशेषप्रभः ॥

सोऽयं श्रीभजभूषणो विजयते, नूत्ने वटुत्वे वृत्तो वेदार्थव्रतचन्वधनविधौ भिक्षाप्रसीक्षापरः ॥३॥

यस्मान्ते पुरवासिनामभिनयं कौतूहलं जायते । येन स्वीयनरेपु भक्तिसहितो मोदः समुद्रासते ॥४॥

यच्चात्मीयजनेषु मङ्गलमयः प्रोज्ज्वलति चोद्भवः । तन्मूर्तं भजभूषणस्य परमो यजोपवीतोत्सवः ॥५॥

पो. कण्ठमणिशाल्मी विशारदः, कांकरोल्ला.

नानादेशनिवासिसज्जनचर्यैः संसेवितोऽहर्निशं शुद्धाद्वैतमतप्रचारकरणाल्लोकोपकारी महान् ।

मायावादनिरासकारणमसौ सद्वर्त्मसंस्थापको जीयाल्लक्ष्मणभट्टसूनुर्मलः श्रीवल्लभार्यः प्रभुः ॥१॥

अखण्डभूमण्डलवर्मदेष्टा, द्रष्टा श्रुतिप्रोक्तसुधर्मकस्य ।

यथा च सद्वर्मपथस्य साक्षात्, कथा च बाखण्डमतस्य नित्यम् ॥२॥

तदन्वयेऽभूकिल कुण्ठजीवनः श्रीस्यामनाथाङ्गप्रसरोजसेवकः ।

श्रीतत्त्वसिंहान्वितपादपीठकस्तदात्मजोऽभून्मुख्यधराभिषः ॥३॥

सदङ्गजः श्रीरघुनाथनामा, गोस्वामिवर्यो मतिमत्सु मुख्यः ।

तदाभजः श्रीपुरुषोत्तमाख्यो, यो जीर्णदुर्गं समलंकरोति ॥४॥

तस्यानुजः श्रीभजभूषणाख्यधौपासनापाठपद्माधिकारी ।

द्विजवमाप्याऽय महानयं सन्मार्गोपदेष्टा भवितेति मन्ये ॥५॥

यज्ञोपवीतोत्सवके महान्तः समागता धर्मधुराधरा ये ।

दिशन्तु ते आशिपमीड्य एष धर्मोपदेशा भवताञ्ज आरात ॥६॥

दाधीवो रामकर्णार्थ्य आसोपाकुलसंभवः । आरागते दयमाचार्यः स्यामुधर्मधुराधरः ॥७॥

पंडित धीरामकर्णजी आम्होपा, जोधपुर.

सुकृतं फलितं हि मादृशानामधुना मेऽपचिताः सुराध तुष्टाः ।

ब्रजभूषणमय लोक्यामि यदुत प्रोक्तविधेः पथोपनीतम् ॥१॥

दवदेप गोकुलपदे निजां रतिं दयितोद्भवः सकलमोदकारणम् ।

प्रियधेनुवत्स-मुखदायि-सेवनो ब्रजभूषणो जयतु कीर्तिनांधिरम् ॥२॥

श्रीकृष्ण-पादयुग-सेवनदत्तचित्तः संपूज्यमातृपदपूजनकर्मलभः ।

सदमलसूत्रमुपसेष्य समाहितोऽथ वेदार्थसत्पथचरिण्युरितः परं स्तात् ॥३॥

चिद्याभूषणः श्रीभगवत्तीलालशर्मा.

श्रीमद्योगधुरेन्द्रमानितमहागोस्वामिवंशोद्भवः पूज्यस्याममनोहराद्भ्रमिकमलत्पशवती सन्मतिः ।

श्रीमद्गोकुलनाथवैष्णवगुरोर्वासिसव्यपार्श्वं चिरं जीव्याद्भीत्रजभूषणोऽयमधुनाऽऽदर्शोपनीतिं श्रितः ॥

श्रीपुत योवपुरेधर का बहुमान्य कुलोद्भव बुद्धि-अनूना,

श्रीपुत श्यामननोहरके पद का जिसको प्रिय है नित छूना ।

श्रीपुत गोकुलनाथ महोदय का अति-प्रेम-हृषाश्रय दना,

सो ब्रजभूषण हो सुचिरायु, धरा जिसने उपनीति-नमूना ॥

यावदयज्ञोपवीतप्रतिनियतदिनज्ञभिरासीत् पुरेऽत्र तावदगोविन्दचन्द्राधिकृतजनतया कर्म कर्तुं प्रयेते ।

नृप्याणांमुच्यभूषा विहृतविनलनं चित्रणं नण्डपश्रीर्मन्वेरामस्य चैयं गुणयनवसन्तोत्सवैर्नव्यशोभम् ॥

जब से यज्ञोपवीत-उत्सव की बात चीत पुरे हुरे प्रतीत, तब से तैयारी है ।

प्रसन्न-मुखचन्द्र औ उज्ज्वल-सुकीर्तिचन्द्र चैव गोविन्दचन्द्र प्रबन्ध-अधिकारी है ॥

दूषित का उत्कारना, भूषित का उजारना, नण्डप का सँवारना चारु चित्रकारि है ।

क्या वसन्त-उत्सवको, मल्लनूत्र-उत्सव को देव दाउ-मन्दिर ने नई छवि धारी है ॥

पूज्यश्रीब्रजभूषणस्य विततं सदमलसूत्रोत्सवपायोधिं नरितुं रविर्नम इयामूर्वं कथंचित् भ्रमः ।

आपे तत् सुपमा-प्रवर्तकमिदं गोस्वामिनां किंकुलं तं वा गोकुलमाकुलं हतकुलं वा सङ्कुलं धोकुलम् ॥

हनि-सर्व-दूषण के ज्ञान-रस-नृपण के पूज्य ब्रजभूषण के मलसूत्र-त्रल को ।

देख देख निय कवि सोच सोच चैव छवि पार पावे, क्यों कि रवि व्योम के वैपुल को ॥

उत्सव अपार देख उसमें संचार देख सागर में नागर क्यों पाय कौन पुल को ।

स्वामि-कुलको सराहे, सराहे वा गोकुल को कर्मकुलको सराहे, वा चैव धोकुल को ॥

पंडितः श्रीनित्यानन्दशर्मा आशुकायिः राजपूत स्कूल.

સજ્ઞાનગમ્भीરતાં સુમૂર્તિ દ્વદ્વા ન કે વોષચ્છા ભવન્તિ ।

સૃત્વાઽનિશ્ચેતસિ ચિત્સ્વરૂપમ્, ભક્ત્યા ભવત્પાદયુગે લુઠન્તિ ॥૧॥

સેવાપ્રદત્તાસ્વિલપૂતભાવો, દેયાત્ પ્રભુઃ ક્યામમનોહરસ્તે ।

સૂક્ષ્માણિ તત્ત્વાણિ નિરીક્ષિતું જ્ઞામ્, યત્ત્રિલેખ્યાં વિજયં લભસ્વ ॥૨॥

શ્રીવલ્લભે વલ્લભતાં લભન્તામ્, નિર્સ્થધીરાધરતાન્ધરન્તામ્ ।

સદાતિદીને દયતોન્દયન્તામ્, પીડાં હરન્તો ભવતામ્ભવન્તામ્ ॥૩॥

ગોપાલપાદપાથોજ-પરાગે ભ્રમરાયતામ્ । તદ્ભક્તિમધુવેખ્યોઽપિ તનુતાલુમનો મધુ ॥૪॥

ચિરાયુપસ્સન્તુ સદોપનીતા વ્રજભૂષણાઃ । વિષ્ણુપ્રસાદાદ્ ભવતો લક્ષ્મીનિત્યમિહાવતુ ॥૫॥

પણ્ડિત ચહુરા શ્રીવિષ્ણુશર્મા, જોધપુરીયદરવાર-સંસ્કૃત પાઠશાલા-પ્રધાનાધ્યાપકઃ-

ઉપનયનમુપાગતો યશસ્વી હરિચરણાન્જરતઃ કૃતી મનસ્વી ॥

વ્રજભૂષણલાલ ણ્ય ચાલો સુવિ શરદામિહ જીવતાચ્છતાણિ ॥

શ્રૌતસ્માર્તમતાનુસારઘૃતસદયજ્ઞોપવીતવ્રતઃ શ્રીમદ્ગોકુલનાથનામસુમહાગોસ્વામિભિર્ભોલિતઃ ॥

શ્રીમચ્છ્યામમનોહરાદ્ધ્રિકમલપ્રેમદિરેફાયિતસ્વાન્તઃ શ્રીવ્રજભૂષણો વિજયતે ગોસ્વામ્યસૌ સંતતમ્ ॥૨॥

ઉપનીતિસંસ્કૃતિમુપાગતો દ્વિજો નિજનીતિસંગતમગોરુચિર્દશમ્ ।

ચિરમેવ જીવતુ સતાં મુલાવદો વ્રજભૂષણઃ શમિતસર્વદૂષણઃ ॥૩॥

પંડિતશ્રીદિગ્વીદત્તશર્મા, હેડ પળ્ડિત દરવાર હાઈ સ્કૂલ.

શ્રીસુવોધિનીજી.

(લેખકઃ—શ્રીયુત હરિશંકર ઓઝારજી શાસ્ત્રી.)

(ગત્તાંકથી ચાલુ.)

શ્રીમદ્ભાગવતનું શ્રીકૃષ્ણરૂપત્વ.

શ્રીમદ્ભાગવત ચરૂપાત્મક છે, એમ તો-પુષ્ટિમાર્ગીય પ્રત્યેક વૈષ્ણવ સમજે છે જ. અને તદનુસાર મોટા મોટા મંદિરોમાં પ્રભુની સાથે નિલમન્દિરમાં શ્રીસુવોધિનીજી કે શ્રીમદ્ભાગવત શ્રીમદ્ભાગવત આદિના હસ્તાક્ષરે લખાયેલાં હોવાથી નિયમિત સેવા પણ થાય છે. કેટલાક વૈષ્ણવો તો સ્વરૂપના અભાવે શ્રીમદ્ભાગવતની સેવા કરી બોય ધરી પ્રસાદ લે છે. અર્થાત્ જ શ્રીમદ્ભાગવત અને ભગવત્સ્વરૂપ અભિન્ન છે એવી ભાવના મેંકડા વર્ધી પોપાયલી છે. આ પ્રકારની ભાવનાનું મૂલ્ય શ્રીમદ્ભાગવતના વાક્યોમાં મળી આવે છે.

શ્રીભાગવતાથપ્રકરણના પ્રારંભમાં જ શ્રીમદ્ભાગવત મંગલાચરણ કરીને શ્રીમદ્ભાગવતને ભગવત્સ્વરૂપથી અભિન્ન જણાવે છે—પ્રીકૃષ્ણં સત્ચિદાનન્દં દશલીલાયુતં સદા । સર્વમજ્જસમુદ્ધારે વિસ્ફુર્ત્વં પરં નમઃ ॥ આ રથસે શ્રીકૃષ્ણને દશલીલાયુક્ત કહે છે. શ્રીકૃષ્ણની દશવિધલીલાને ઉદ્દેશ્ય કરવાનું કારણ ફક્ત પદ્મપદ્મનું સાધન શ્રીભાગવતત્રયજનું જ છે, તેથી દશલીલાયુક્તત્વે શ્રીભાગવતત્રયજનું રૂપતા પણ છે જ. પ્રભુ દશવિધલીલાયુક્ત છે અને ભાગવત પણ દશવિધલીલાનું પ્રતિપાદન કરે છે; તેથી પણ દશવિધલીલાયુક્ત જ છે. શ્રીમદ્ભાગવત કહે છે કે દશવિધલીલારૂપઆપાર કરતું સ્વરૂપ જ

અન્યુ વિષયવે ગ્રાહ્ય છે. ભગવદગત અને શ્રીમદ્ભાગવત એ ઉભયનું પ્રયોગન સર્વભક્ત-
અમુદ્ધાર છે. સર્વભક્ત એટલે હીન-મધ્યમ અને ઉત્તમ અધિકાર ત્રિવિધ ભક્તો. જેમ આપના
દશામાં સાક્ષાત્ ઉદ્ધાર કર્યો, તેમ આત્મારક્ષામાં શ્રીભાગનાદિ ઉદ્ધારક છે, તેનું દેહીધ્માન પ્રમાણ
પરીક્ષિતનો જ ઉદ્ધાર છે પાણ્ડવોનો ઉદ્ધાર અવ્યવસ્થ વડે થયો, ત્યારે પરીક્ષિતાદિનો ઉદ્ધાર
શ્રીમદ્ભાગવત વડે થયો. આથી સિંહ ભાગવતની ભગવત્સ્વરૂપતાના નિરૂપમાં કથુ કહેતા જેવું
અવશિષ્ટ જ રહેતું નથી તથાપિ, જે પ્રમાણોનો જ મગ્દ કગ્વો હોય તેા ઘણાં પ્રમાણો
મળી શકે છે. શ્રીમદ્ભાગવતની વાચનિક મહત્તા તેા તેમાં પ્રતિપાદન કરેના તત્ત્વો ઉપગ્રથી જ
ભળી શકાય તેમ છે. ઇતર પ્રમાણો માહાત્મ્યનું જ ખ્યાપન કરે છે.

ભગવત્સ્વરૂપ સાથે ઐક્ય.

શ્રીમદ્ભાગવતનું ભગવત્સ્વરૂપ સાથે ઐક્ય ખ્યાપન કર્યું છે. 'હતાદં દ્વદશસ્કન્ધ પુરાણ હરિરેવ સ
હત્યાદિ વામ્યો દ્વાદશસ્કન્ધયુક્ત પુરાણ એટલે શ્રીમદ્ભાગવતને શબ્દત અને અર્થત આખા
ભગવત્સ્વરૂપ જ અવ્યવસ્થે બેદ હોના છતાં પણ-પગ-પગકાન્ધાથી નિહિત હોના છતાં પણ-ભગવત્સ્વરૂપ
હોવાથી ઉભય (પ્રભુનું નિવૃત્ત્યરૂપ અને શ્રીમદ્ભાગવત) એક જ છે શ્રીમદ્ભાગવતના આ
સ્કન્ધ પ્રાનના દ્વાદશ અંગ જ છે તે નીચેના ગ્રંથક Table ઉપગ્રથી મમજ શકાશે.

અંગનામ.	સ્કન્ધ.	લીના	મર્ગો લીનાની વ્યાખ્યા.
૧ દક્ષિણુચરણારવિન્દ	પ્રથમ સ્કન્ધ	આધકાર	• ૦
૨ વામચરણારવિન્દ	દ્વિતીય સ્કન્ધ	જ્ઞાન	૦
૩ દક્ષિણુ બાહુ	તૃતીય સ્કન્ધ	મર્ગ ૧	અહાની પામથી સત્ત્વાદિ ગુણના વૈરમ્ય વડે પચમદાશ્રુત, તન્માના, હન્દિયો અને અન્ત કમ્પુની ઉત્પત્તિનો પ્રકાર મર્ગ શાન્નાન્ધ છે
૪ વામ બાહુ	ચતુર્થ સ્કન્ધ	વિમર્ગ ૨	અહાની પામથી અગત્યની ઉત્પત્તિ વિમર્ગ છે
૫ દક્ષિણ મહિય	પચમ સ્કન્ધ	ધ્યાન ૩	ભગવાનનો વિગ્રહ-મર્ગેના પદાર્થોનું મર્ગોદાપરક પાપનન પર્ક છે આ ધ્યાનનીના છે
૬ વામ મહિય	ષટ્ સ્કન્ધ	ચોરત ૪	નિજ ભક્તા ઉપર પ્રભુનો અનુગ્રહ ચોરત ૨ પુષ્ટિમદ્વાન્ધ છે
૭ દક્ષિણુ ત્રીદગ્ન	સપ્તમ સ્કન્ધ	ગિનિ ૫	કર્મ વડે ગદ્દિ પામે તે ગિનિ-અર્ધ વામના ગિનિનીના છે.
૮ દક્ષિણ ગતન	અષ્ટમ સ્કન્ધ	મન્વન્તર ૬	અગત્યનુગ્રહીન મન્વન્તરગદ્ધિપતિઓનો ધર્મ તે મન્વન્તરનીના

૯ વામ સ્તન	નવમ રચન્ધ	દશાનુકથા ૭	અવનાશનું ચરિત્ર અને ભગવાનને અનુમરનારા રાગઓનું ચરિત્ર દશાનુકથા કહેવાય.
૧૦ હૃદય	દશમ રચન્ધ	નિર્નાય ૮	પ્રપંચવિસ્મૃતિપૂર્વક ભગવદ્ભક્તિ નિરોધ છે.
૧૧ શ્રીમદ્ભક્ત	એકાદશ રચન્ધ	મુક્તિ ૯	અન્યથા ઉપનો ત્યાગ કરી અવરખમાં અવસ્થિતિ એ મુક્તિ.
૧૨ વામ શ્રીમદ્ભક્ત	દ્વાદશ રચન્ધ	આશ્રય ૧૦	જગતનો આધારભાવ, નિરોધ અને પ્રત્યક્ જોનાથી જાણી શકાય તે આશ્રય.

આ રીતે શ્રીનાથજીના દ્વાદશ અંગો સાથે શ્રીમદ્ભાગવતની મરખામણી થાય છે. અને તેથી જ હતાં દ્વાદશસ્કન્ધ પુરાણે હરિરેવ સઃ કલ્યાદિ વાક્યો સંગત થાય છે.

શ્રીમદ્ભાગવતની મહત્તા શાથી છે ?

પુરાણ પંચસક્ષણુ છે, એ ઉપર કહેવામાં આવ્યું છે. શ્રીમદ્ભાગવત દશસક્ષણુયુક્ત છે. તત્સા હદ માગવત્ પુરાણ દશસક્ષણમ્ । પ્રોક્તં મગવતા પ્રાહ પ્રીતઃ પુત્રાય ભૂતવૃત્ત (૨-૧-૪૨) તે (પૂછનાર) પુત્ર નારદને પ્રમત્ર થયલા બ્રહ્માજીએ દશસક્ષણુયુક્ત ભાગવત કે જે (તેમણે પથ્યું) ભગવાનની પામેથી સાભળ્યું હતું-કયું. એ દશસક્ષણુ ઉપર જણાવેલી દશ પ્રકારની લીલા એજ છે. અન્ય પુરાણો પંચસક્ષણુ છે અને ભાગવત દશવિધલીલાવિશિષ્ટ હોવાથી અન્યની અપેક્ષાએ વિનિષ્ટ છે. આજ તેની મહત્તો છે.

ટિપ્પણી ક્યાંથી લેશે ?

સાપ્રદાયિક ત્રનોત્સવની ટિપ્પણી તથા પંચાંગો મેળવવા માટે આ ન્યજે જવડો, અથવા પત્રવ્યવહાર કરો. મૂલ્ય માત્ર ૧ આનો. ટેકાણું:—ગિરધરલાલ જ. શાહ, શ્રીરામપાયાનુ મંદિર, કમ્બરખાના, ભૂલેશ્વર, મુંબાઈ નં. ૨.

† શ્રીનાથજી વામશ્રીમદ્ભક્ત ઉચો કરીને ભક્તોને જોડાવે છે. લુઓ શ્રીમુખોધિનીજીમાં અમારું ચિવેચન અને ઉપોદ્યાન.

• નિરોધની વિરત્ત વ્યાખ્યા દશમસ્કન્ધો પરિચય કરાવતી વખતે આપીયું. અને તેથીયે ચિન્તાર શ્રીમુખોધિનીજીના જન્મપ્રકરણના ભાષાન્તરમાં સ્વનન્ધ ચિવેચન અને પ્રત્યક્ષમાં લખ્યો છે. નિયામુએ પણ રૂપીઆ મોકલાવીને આદક થયું. લખો આ પત્રના કાર્યાલયમાં અથવા દરિ-સંકર શાસ્ત્રી મોટું મંદિર, નડિયાદ.

આ એક અને અદિતીય અથ્વા 'સત્' જ હતું તેણે અનેક ચવાની ઇચ્છા કરી, તેણે તેજ સર્જ્યું" હસ્યાદિ શ્રુતિમાં 'સત્' શબ્દવાચ્ય નિમિત્ત અને ઉપાદાન કારણ છે એમ પ્રસિદ્ધ છે. આ શ્રુતિમાં સતને ઉપાદાન કહીને એક અને અદિતીય કહેવાથી તેનું બીજું કોઈ અધિદાન નથી એમ અધિદાનાન્તરનો નિર્ણય કરી તેણે ઇચ્છા કરી એમ કહેવાથી તે એક જ છે એમ પ્રતિપાદન કર્યું છે; તેથી જગત્ના જન્મ રચિતિ અને પ્રકરણોનું ઉપાદાન અને નિમિત્ત કારણ પોતે એક જ અથ્વા છે એમ લક્ષિત થાય છે. અને તે ઉપરથીજ સર્વજ્ઞત્વ, સર્વસંકલ્પત્વ, સર્વશક્તિમત્ત્વાદિ આકાર બૃહત્વથી પ્રાપ્ત થઈ અલ્પ છે એ સિદ્ધ થાય છે. તેથી આકારાન્તરની કલ્પના થઈ શકે નહિ. જગતનું જન્માદિ વિશેષણ હોવા છતાં પણ કોઈ જગતનો રોપ પ્રાપ્ત થતો નથી. તેમ વૈષ્ણવ પણ નથી અને અન્યોન્યાશ્રય પણ નથી. એમ કહ્યું છે.

મધ્યભાષ્યમાં—'શ્રુતિ, રિચિતિ, મંદાર, નિયમન, જ્ઞાન, અજ્ઞાન, બંધ, મોક્ષ જેથી થાય છે તે અલ્પ છે. તેમજ ઉપર જણાવેલી શ્રુતિભાષ્યે અલ્પને કારણ કહ્યું છે જ એમ કહે છે.

લઘુ ભાષ્યમાં—આ ઉપાદાન કારણ છે એમ કહે છે.

લિટ્તુભાષ્યમાં—અલ્પનું આ જન્માચારણમાં અધિદાન કારણ સ્વીકાર્યું છે; અને તે (અધિદાન કારણ) સમવાયી અસમવાયી નિમિત્ત આ ત્રણેથી જુદું અપૂર્વકારણ છે. તે પ્રકૃતિ પુરુષાદિ અનેક શક્તિઓનો આધાર અને ચિન્માત્ર સ્વરૂપ છે એમ સ્વીકારે છે.

શંકરાચાર્યના—મતમાં સ્વીકારેલું નિર્વિશેષત્વનું ઉપર જણાવેલા બધાએ સ્વસ્વ પ્રસ્થાનની રીતિથી ખપ્પન કરે છે.

યદ્યપિ આ સ્થળે નીલકંઠ શિવાચાર્યના ભાષ્યનું મત લખ્યું નથી, તથાપિ તે વિશિષ્ટાદૈત્યમતાનુસારી હોવાથી તેની ગતાર્થતા થઈ જાય છે.

આ રીતે આદર્શ વ્યુત્પત્તિ માટે સ્ફેજ ઉદાહરણ રૂપે મનો દેખાડ્યા છે,

પ્રશ્નોત્તરવિચારઅન્ય.

(ગતીક પૃષ્ઠ ૩૭૨ થી ચાલુ.)

ઉત્તર ૭—સતસાક્ષોક્ત એવો જે ધર્મ તે ચણી અવળો એવો જે પાપમંદી ધર્મ તેના આચરણના કરનારા તથા ઉપદેશ આદિક જે પાપકર્મ તેના કરનારા, તથા થીકૃત્ય ભગવાન અને ભગવાનના અવતાર, તેમના દ્રોહના કરનારા તથા સત્પુરુષોને તથા સર્વધર્મને દ્વેષણ દેનારા તથા પીડનારા એવા જે બળ પુરુષ, તેમની સાથે તો સદજ્ઞ શ્યાભાવિક પણ સમાગમ ન કરવો.

પ્રશ્ન ૮—સદ્ગુરુ કેવા હોય તે કરેલા ?

ઉત્તર ૮—જેને અલ્પનો પ્રવક્તા (સ્પષ્ટાકાર) અનુભવરૂપ યોગ હોય, જે સદા સત્માર્ગે જ વર્તતા હોય, મદાચારસંપન્ન હોય, જે પરંપરાથી (કુશ્વરંપરાથી) ભગવદ્ધર્મચરણના આચાર્ય હોય, વૈષ્ણવદીક્ષાવાળા હોય, નિરંતર જેની અલ્પનેજ વિશે અનન્ય નિષ્ઠા હોય, પ્રમના જન્મભરણાદિ (અંસારપ્રવાહ) તેના દર્શી, અને શિષ્યને સ્વધર્મનેજ વિશે મનિના દેનાર હોય, અસત્ કર્મને વિશે ક્યારે પણ ન પ્રેરના હોય, ને મત્સરથી (જે દ્રોહ એકનું આદર્શ દેખીને તેનો ઉત્કર્ષ ખમી શકતા ન હોય એવા દુર્ગુણથી) રહિત હોય, અને નિરંતર ધર્મનેજ

૧ સત્પતિસ્થિતસંહારા વિગતિજ્ઞાનમાશુત્તેઃ સ્વધર્મોક્ષૌચ પુરુષાયમ્મત્ત હરિરેકરાટ્ હન્તે સ્કાન્દાદ્ ૧

ઉત્તર—જોલ કામ રવાદ માન અને જોલ એ ખાંચ ને સ્વાર્થ કામના હેતુરૂપ માનેલા હોય તેનો ને નાશ થાય તે કોષાનું કારણ છે.

પ્રશ્ન ૧૮—કોષાવેગમાં ચિહ્ન શાં છે ?

ઉત્તર—પોતાને અને પારકાને પીકાનો કરનારો ને કહેવા યોગ્ય અને ન કહેવા યોગ્ય એવાં વચન તેનો વિવેક ન રહે. એવો વિવેક નાશ કરનારો ને પોતાના સ્વરૂપને વિરૂપનો કરનારો તેને કોષી જાણવો.

પ્રશ્ન ૧૯—સત્માર્ગ ને કીયો જાણવો ?

ઉત્તર—ચાર વર્ણના અને માહાત્મ્યજ્ઞાન ધર્મ વંશગ્યાદિ લક્ષણે યુક્ત એવી ને શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માની ભક્તિ તે ને માર્ગને વિશે પ્રાધાન્યપણે થતી હોય ને જેમાં મુખ્યાબ્રહ્મવર્ગક ભગવદ્-ધર્મજ્ઞ પળાતો હોય તેજ સત્માર્ગ જાણવો. એટલે કદમાણકારી માર્ગ જાણવો.

પ્રશ્ન ૨૦—અમત્ માર્ગ તે કીયો જાણવો ?

ઉત્તર—વેદશાસ્ત્ર પુરાણ તંત્રાદિ અને મહાભારતાદિ ઇતિહાસમાં નિરૂપણ કરેલા વર્ણશ્રમના ધર્મે ભક્તિ એવી ને ભક્તિ તેથી રહિત એવાં કર્મજ્ઞાનાદિ તથા ૩ પ્રકારની મુગ્ધા અને ૧૧ પ્રકારનું ને મઘ તેનું પાન ને વામમાર્ગી આદિકમાં થતું હોય એવો ને માર્ગ તે અમત્માર્ગ જાણવો.

પ્રશ્ન ૨૧—મનુષ્ય, તેમણે સર્વ પ્રકારે ત્યાગ કરવા યોગ્ય એવી ને હિંસાવાળી કૃતિ તે સત્પુરુષોએ કરી કદી છે.

ઉત્તર—શિષ્ય જૂ આદિક જેવાં સૂત્રમ ચેનન્ય પ્રાણીઓથી આરંભીને તે મનુષ્યાદિ સ્વપ્રાણી માત્ર કોષને પણ મને વગને કે કિયાએ કરીને પીડા થાય એવું જાણી ધુટીને અધમને માર્ગે કરવું તે હિંસા ગરોઝર પાપરૂપ ગણાય છે.

પ્રશ્ન ૨૨—શયને (પનનને) પમાડે એવો મુખ્ય દોષ કિયો છે ?

ઉત્તર—દેવના, બ્રાહ્મણ, વિધ્વ, ગાય, સત્પુરુષ આચાર્યની ભક્તિ અને સત્પુરુષ તથા વિધ્વનું પ્રતિપાદન કરનાર એવું ને વેદાદિક સત્શાસ્ત્ર તેની ને નિંદા કરે છે તેથી તે જરૂર ક્ષય (પનન) ને પમાડે એવો મહાન દોષ થાય છે.

પ્રશ્ન ૨૩—પુણ્યનો નાશ કરનારો અને અપકીર્તિના કરનારો એવા તે કિયા દોષ છે ?

ઉત્તર—૧ પરસ્ત્રીનું ગમન અને પગધન, ૨ સત્તાની વસ્તુમાત્રને છાનુંમાનું ચોરી લેવું દરી લેવું. ૨ વિશ્વાસઘાત. ૩ કૃત્તવ્યવર્ણ. ૪ પૂજ્ય યોગ્ય પદાર્થ (દેવશ્રુ આચાર્ય વરીલ સત્પુરુષ આગળ માન કરવું.) પ કોઈના પર મિત્રયાદાદ મકલે. આ દોષો પુણ્યનો નાશ કરનાર છે અને અપકીર્તિ કરાવે છે.

પ્રશ્ન ૨૪—અવળું કયાં માત્રથી ગમમ પાપને દરી લે એરી કર્મ કયા વાળાં છે ?

ઉત્તર—શ્રીકૃષ્ણ નારાયણની ને કથા અને વાર્તા તે સમગ્ર પાપ માત્રને દરી લે એવી છે.

પ્રશ્ન ૨૫—વિદ્યા (સુવિદ્યા તે કથી છે.)

ઉત્તર—પરબ્રહ્મ શ્રીકૃષ્ણ પરમાત્માને વિશે મનિની આપનારી એવી ને અભાવિદ્યા તેનેજ વિદ્યા જાણવી.

પ્રશ્ન ૨૬—અવિદ્યા તે કહ જાણવી ?

ઉત્તર—અસત્યને વિશે ને સત્યપણાની ધુદ્ધિ છે અને અનિત્યને વિશે ને નિત્યપણાની ધુદ્ધિ છે તેજ અવિદ્યા (માયા) છે.

એવી રીતે છે કે—દેવાનાં (કા.) એ સ્થળે જે ભક્તિ સિદ્ધ કરવામાં આવી છે, તેવી ભક્તિ-વાળા જીવોનેજ કોઈ પણ જાતના આવરણ કે ઘિર વિના તેના આનન્દ રૂપનું દર્શન થાય છે. જુઓ—“પર્યન્તિ તે મે કચિરાવતંતપ્રસવવજ્રપ્રાણલોચનામિ (કા.) તેઓ જેમાં સુન્દર કણ્ઠી ભૂખણ, પ્રમત્ત મુખ અને લાઝ લોચનો છે, તેમાં મારાં સ્વરૂપોનાં દર્શન કરે છે.” આ વાક્યમાં તે પદ્ધતી પૂર્વોક્ત ભક્તોનું સૂચન છે. “મત્તયાદમેકયા પ્રાપ્તઃ હં એક ભક્તિથી અદણ કરાડો તેવો છું.” “મત્તયેવત્તુષ્ટિમધ્યોત વિષ્ણુઃ ભક્તિથીજ વિષ્ણુ ભગવાન સન્નોપ પામે છે.” એ વગેરે વાક્યોથી જાણી નકાશે કે—પ્રમત્ત થયેલા પ્રભુ પોતાનાં ગુણમા ગુણ રૂપ પણ ભક્તોને બતાવે છે. આવા ભક્તો સિવાયના બીજાઓને તો આવરણવાળું દર્શન થાય છે. તેઓએ તો મત્તગુણાત્મક સ્વામરૂપ, જે સ્વરૂપે રહેલા આનન્દરૂપમાં પ્રતિરૂપિત થઈ હોય છે, તે બતાવે છે. આમ સત્ત્વમાં રહેલા રૂપનો પ્રતિરૂપન—અકાર સાર્થકજ છે, તેથી કોઈ પણ જાતના દોષ વિના સ્ફુટ થાય છે.

આ પ્રમાણે બરોબર વિચાર કરવામાં આવે તો શ્રીમદ્વાચાર્યરણુ તેમજ શ્રીપ્રભુચરણોના લેખમાં ક્યાંય પણ સિદ્ધાન્તવિરોધ કે વિરોધાદિરૂપ દોષ દેખતોજ નથી. એમ વૈષ્ણવ વિદ્વાનોએ (નિશ્ચિન્તાથી) જાણ્યું.

શ્રીકૃષ્ણની સેવા.

(લેખક:—વિદ્યાધીપ ભગવતીદાસ મોવિંદદાસ દેસાઈ,).

ભક્તિમાર્ગમાં મેવા એ જ બરોબર ધર્મ છે મારે દરેક વૈષ્ણવે શ્રીકૃષ્ણ પ્રભુનું સ્વરૂપ અથવા ચિત્ર પંચરાત્રી મેવા કરીને જોઈએ કારણ કે શ્રીકૃષ્ણ એ જ પૂર્ણપુરોગાત્મ છે તે ગીતાના પ્રમાણથી સિદ્ધ થાય છે. ગીતાના પંદરમા અધ્યાયમા દ્વાવિમો પુરુષો લોકે ॥ એ શ્લોકથી સિદ્ધ થાય છે કે શ્રીકૃષ્ણ પૂર્ણપુરોગાત્મ છે. તેમજ સિદ્ધાંતમુક્તાવલીમા પણ શ્રીમદ્વાચાર્યરણુએ કહ્યું છે કે શ્રીકૃષ્ણ તો પરબ્રહ્મ છે. તેમજ શ્રીભાગવતના વાક્યથી પણ સિદ્ધ થાય છે. તેમજ શ્રીકૃષ્ણાશ્રયમાં પૂર્ણાનન્દો હરિઃ હરિ પૂર્ણાનન્દ છે. એ શ્લોકથી સિદ્ધ થાય છે કે, શ્રીકૃષ્ણ પરબ્રહ્મ, પૂર્ણપુરોગાત્મ, પૂર્ણાનન્દ છે. અર્જુનને ભગવાને કહ્યું છે કે “હે ધનંજય મારાથી પર કોઈ પણ નથી.” તેમજ “અદ સર્વસ્ય પ્રમત્તઃ” એ શ્લોકથી તેમજ કૃષિમૂર્તિવાચકઃ આ શ્રુતિથી પણ સંદાનન્દરૂપ શ્રીકૃષ્ણ છે એમ ચોખ્ખું દેખાય છે મારે આદ્યાત્ શ્રીકૃષ્ણ જ મેવવા ચોખ્ખું છે. જુઓ! આપણે ત્યાં એક સામાન્ય પદોણો (મહેમાન) આવે છે ત્યારે આપણે તેની મેવા કરીને તેના મનને સતોપ પમાડીએ છીએ. તેમજ આપણા શેઠ હોય કે જેને ત્યાં આપણે નોકરી કરતા હોઈએ એટલે જેના હાથ તથા હોઈએ તે શેઠની આપણે ફેટલી મેવા કરીએ છીએ ? અર્થો રાત્રે એ આપણને ગમે તે જગ્યાએ મોકલે, ત્યાં જઈએ છીએ અને તેનું મન હંમેશાં કેમ ખુશી રહે તે પ્રમાણે કરીએ છીએ. તથા તેની આત્મામા જ રહીએ છીએ ? ત્યારે તે શેઠ અથવા મહેમાનથી આપણા શ્રીકૃષ્ણચરંદ્ર જેનાથી આ જગતની ઉત્પત્તિ. સિંચન અને લય, એટલે સચ્ચિદાનન્દ પ્રભુમાંથી આ જગત ઉત્પન્ન થયું છે, સર્વ માથી દરેક જડ વસ્તુ, વિદ્ય માથી જીવ (ચેતન) અને જાનન્દ માથી અંતર્યામી થયેલ છે અને જેનાથી આખા જગતનું ભરણપોષણ થઈ રહ્યું છે અને જે આપણું રક્ષણ રાત દિવસ કરી રહેલ છે, અને આપણે જેના યજ્ઞ છત્રીએ છીએ, એવા મોટા ધણીને મૂળને આપણે લોકિક ધણી (શેઠ)ની સેવા કરીએ છીએ, તેના કરતાં શ્રીકૃષ્ણચરંદ્રની જ સેવા ઉચિત છે. કારણ કે ગીતાજીમા કહ્યું છે કે મમૈવાંશો જીવત્કે ॥ એ શ્લોકથી જ મારાં

અંશ છે એમ કહેવું છે. તેથી આપણે અંશ છીએ, પ્રભુ અંશી છે. તેથી અંશનો ધર્મ અંશીની મેવા કરવાનો જ છે. માટે બીજા બધા લૌકિક રોક વગેરે તથા દેવદેવીઓની સેવા મુદ્દા તેની સેવા કરવી કે જેથી આપણું શ્રેય થાય.

લક્ષ્યકથિ દયારામભાઈ પણ ભક્તપોષણમાં કહે છે કે—

જગત વૃક્ષ તહેનું મૂળ દરિ, મૂળ પોરે વૃક્ષ પોષાય;

પ્રતિ સાખા જગ સીંચીએ, તેથી નરુ તુમિ ના થાય.

તુમિ ના થાય જ્યાં શ્રમ પહોંચે, સમજતુ આવે ત્યાર પહોંચી શોચે;

મુખદાર સદુ ઇન્દ્રિય સતોષે, બોજન અંગ લેખું કાઢને ન પોષે.

—સેવો શ્રીકૃષ્ણ કૃપાળ

નહોં કોઈ તહેના સમોવચી, કોઈ ઈસિ નહોં તહેને સીશ;

સર્વં યતુ જે યદી થઈ, જે કોઈ કહાવે સર્વના અધીય.

સર્વોંધીસ વદે સદુ તહેને, નિગમ નેતિ નેતિ કહે છે તહેને;

શોષ મરેસ વિધિ શી અગમ્ય, તેને કહીએ પૂર્ણ પુરગોતમ.

—સેવો શ્રીકૃષ્ણ કૃપાળ

અર્થ:—આ જગતરૂપી વૃક્ષનું મૂળ દરિ (કૃષ્ણ) છે. એ જગતરૂપી વૃક્ષના મૂળને પાણી પાથું (કૃષ્ણની સેવા કરું) એટલે મૂળને પાણી પાથું તો વૃક્ષ પોષાયો. પણ જે તેની સાખાઓ-માંથી પાણી રેડું (એટલે બીજા લૌકિક ધણા દેવદેવીઓની સેવા કરું) તેથી વૃક્ષ તુમ નહોં થાય, કૃષ્ણને તે મેવા નહોં પહોંચે. વૃક્ષને તુમિ નહોં થાય પણ હિમરો શ્રમ પહોંચશે (બીજાની મેવા કરવાથી કોઈ નહોં વળે નહિતમ કરવી એટલું જ) પણ ત્યારે માણસને મનજન્ય આવે છે ત્યારે બિચારો પડતાય છે. (હવ ત્યારે જાણે છે શ્રીકૃષ્ણ પરબ્રહ્મની સેવા મુદ્દા આપણે આ લોકની નકામી મેવા કરી ત્યારે પડતાય છે.) જે આપણે આપણા મુખમાં અજને મૂકું અને આશું તો બધી ઇન્દ્રિયો સતોષ પામશે. પણ દાઝ, પગ, મોંડું વગેરે અંગો ઉપર બોજનનો શોષ કરવાથી ઇન્દ્રિયો સતોષ પામતી નથી, (કૃષ્ણની મેવા કરીએ તો જ ઇન્દ્રિયરૂપી બીજા દેવ-દેવીઓને સતોષ થાય છે, પણ તેઓની સેવા કરવાથી કૃષ્ણને સતોષ થતો નથી) માટે શ્રીકૃષ્ણને જ મેવો. તેમજ બીજી કદી પણ સમજાય એમ છે તેથી તેનો અર્થ કયો નથી, તે કદીમાં પણ પૂર્ણ પુરગોતમને જ સેવવાનું શ્રીદયારામભાઈ કહે છે.

હવે કોઈ પ્રશ્ન કરે કે શ્રીકૃષ્ણની સેવા ક્યારે કરવી? તેને માટે શ્રીમહાપ્રભુજીએ શ્રીકૃષ્ણની હમેશા સેવા કરવી એમ સિદ્ધાંતમુક્તાવલીમાં આજ્ઞા કરી છે. આમાં એક શંકા ઉપસ્થિત થયા પિના નહોં રહે, કે સંસારની અંદર રહીને આખો દિવસ હમેશાં કેમ સેવા થઈ રહે? તેનો જવાબ એટલેજ છે કે “સદા” નો કહેવાનો ભાવાર્થ એ છે કે મેવાના વખતે પ્રભુના સ્વરૂપની સેવા કરવી અને અનોસરમાં પ્રભુ માટે સામગ્રી નૈવાર કરવી. મંદિરમાંથી વાસીંદાં વાળ્યાં વગેરે જે કાર્ય કરીએ છીએ તે પણ પ્રભુની સેવા છે. તે ઉપરાંત કહેવાનો ભાવાર્થ એટલો જ છે કે હમેશાં ત્યારે કાંઈ પણ કાર્ય કરતાં હોયએ ત્યારે અને વાનગીન કરતાં હોયએ ત્યારે પણ આપણા મનને પ્રભુમાં જ રાખવું, તેનું સ્મરણ જ કરવું અને મન પ્રભુમાં અને બીજાં કામ કરવું એ જ સાધનરૂપી માનસી મેવા છે. એ પ્રમાણે મન પ્રભુમાં હમેશાં રાખવું તેનું નામ જ “સદા કાંચો” તેમજ આપણા પુષ્ટિમાત્રમાં સેવાના ત્રણ પ્રકાર કહેલા છે. (૧) તનુજ, (૨) ચિત્તજ અને (૩) માનસી. તેમાં તનુજ અને ચિત્તજ એ સાધનરૂપ છે અને તેનું કાર્ય માનસી છે. તનુજ

શ્રીહરિરાયજીને પ્રભુએ કહ્યું ફલાણા મળૂરને લાં સખારના પધારને અને તેની, પાસેથી રૂ. ૨) જે બંટના લઈ લેજો. એ પ્રમાણે પ્રભુની આજ્ઞાને માથે ચઢાવી સવારે તેને ઘેરે પધાર્યા; તેથી તેને લઈ તો ક્યાંય ન માથ. ત્યારે તેઓ ત્યાંથી એટલે તે મળૂરના ઘેરથી વિદાય થયા ત્યારે રૂ. ૨) મારી લીધા. આ જોઈ તે બહુજ આશ્ચર્ય પામ્યો. શ્રીહરિરાયજીએ આ એ રૂપિયાની સામગ્રી નોખી મંગાવી પ્રભુને તેનો નોખો ભોગ ધર્યો, અને પ્રસાદ રાત્રે ભગવદ્મંડળીમાં વાટયો. અને જે જે વંણુવાએ તે પ્રસાદની કણિકા લીધી તેને રાત્રે પ્રભુએ સાક્ષાત્ દર્શન આપ્યાં. બુચ્ચો ખરી પિત્તમનું ફૂલ ? હવે ત્રીજી સેવાનો પ્રકાર માનસી છે. આ માનસીના જે પ્રકાર છે. એક સાધનરૂપ બીજી ફલરૂપ “ચેતસ્તત્પ્રવર્ણ સેવા” પ્રભુની અંદર મનને પરાયણુ તેનું નામ માનસી સેવા અને તેના સાધનરૂપ તનુવિત્તમ છે. જે કે તનુવિત્તમ પણ ફલરૂપ છે, છતાં તેને સાધન રૂપે કહેવું છે. આ સેવા પણ પ્રભુની કૃપા વિના થવી દુર્લભજ છે. પુષ્ટિમાર્ગમાં સાધન અને ફલ એકજ છે. તનુવિત્તમ મેત્રા કરીએ છીએ તેમાં પણ આપણું મન કાષ્ઠિક અંશે પ્રભુમાં પરાવાચ્યુ હોય છે, અને તે આપણે પ્રભુ અર્થેજ કરીએ છીએ. તેથી તે સાધનરૂપ માનસી છે અને ફલરૂપ માનસી તો તેનું નામ કે ગોપીજનોની માફક પ્રભુ સાથે મન સનત ચોટી રહેવું. બહારની કાષ્ઠિકણ ઉપાધિ નહોતી. ગોપીજનો પ્રભુ સાથે દસનાં, રમના, ખેલનાં, ફરતાં, સૂતાં, ભોજન કરતાં. એ અત્માકિક સામર્થ્ય રૂપી જે ફલ પ્રભુની લીલાનો અનુભવ કરવાનું તેનું નામજ માનસી, અને તે માનસી સિદ્ધ કરવા દરેક વેણુવો તનુવિત્તમ કરશે. પ્રભુમાં મનને જોડશે, એજ અભિપ્રાય.

આજ કાલેતો આપણી માનસી ચાહમાંજ લાગેલી હોય છે. ઊડીએ ત્યારે ચાહ, બેસીએ કે ચાહ, સુઇએ ત્યારે પણ ચાહ, પણતે ચાહની પેડે પ્રભુની અંદર મન હોય તો જુનું સાઈ ભણા!

વૈદક—વિજ્ઞાન.

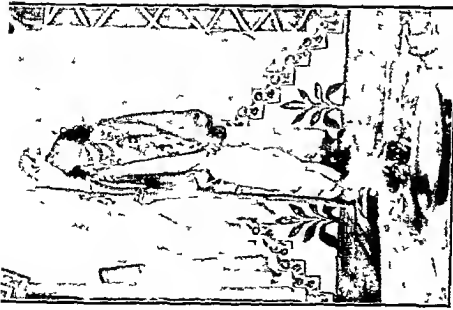
(લે. શ્રીયુત વૈદરાજ ગોતીલાલ મહાશંકર.)

વસંત ઋતુ—ફાગણ તથા ચૈત્ર વસંત ઋતુના ગણાય છે. શિયાળામાં ધણું કરીને પુષ્ટિ-કારક અને ચિકિત્સા ખોરાક ખાધો, જેથી બદનમા કરતો સંગ્રહ યાય અને દંડી કફનો સંગ્રહ કરે છે પણ વસંત જેમના ફાગણના તાપથી કફ ઓગળવા મંડે છે. મગજ, છાતી અને સંધાઓ કરના ચ્યાન છે. માથાનો કફ પીગળી ગળામાં ઉતરે જેથી સજેખમ, કફ અને ખાંસીના દર્દ યાય છે અને છાતીનો કફ પીગળી હોળવીમાં વ્યય છે જેથી મંદ અગ્નિ યાય છે, અને મરડો યાય છે. મારે એ કફ દર્દ ઉત્પન્ન કરે તે પહેલાંજ કાં તો કફની શાન્તિ કરાવવી અને કાં તો કઢાવી નાખવો. આદાર ચિદાનના ફરફારથી શાન્તિ યાય છે અને કાઢવા મારે ઉગ્રદી તથા લુલાખ છે. ખાસ કરીને બાળક તથા વૃધ્ધે અને અગરને ઉગ્રદી લુલાખ લેવા નહિ. જે શક્તિમાન હોય તેજેજ ઉગ્રદી લુલાખ લેવા.

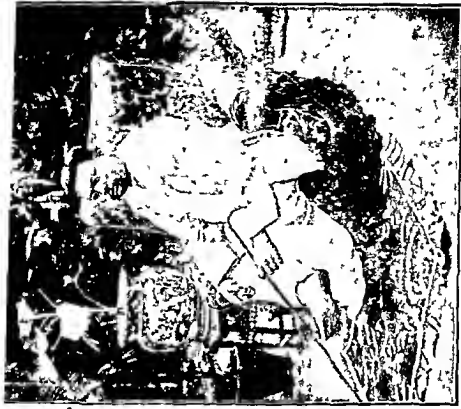
કફની શાન્તિના નિયમો:—

૧. ભારે તથા ટાહું અનાજ, દિવસની ઉંધ, ચીકણા ખાટા અને મીઠા પદાર્થો તથા નરું બાન્ય એટલી વસ્તુઓ ત્યાગ કરવે અથવા એકદમ ઘટાડી દેવી.

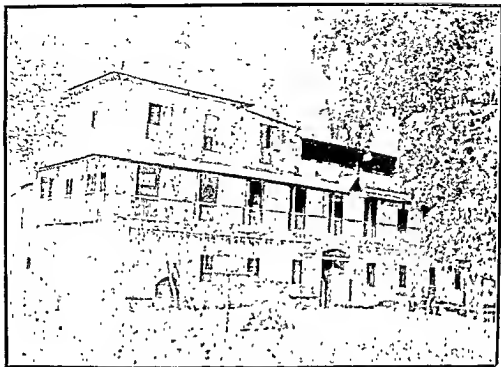
૨. લુના ધાન્ય, મધ, કસરત તૈલાભ્ય ચપી વિગેરે ઉપાયો કફની શાન્તિ કરે છે. મધ કફને તોડે છે અને કસરત, તૈલાભ્ય તથા ચપી કફને છુટા પાડે છે.



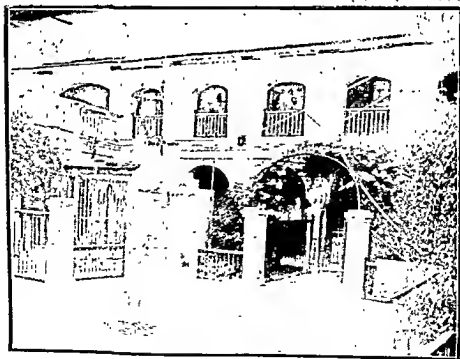
गोस्वामीश्री ६ श्रीमजभूपणलाडजी महाराज, चोपासनी.
(यशोपवीतधारणसमय ब्रह्मचर्योचित वेष्टामें)
प्राकट्य-पीपठुण १२ सं. १९७६



निर्यलोद्यास रुपरीगुणपारावार गोस्वामीश्री ६
श्रीरघुनाथलाडजी महाराज, जूनागढ.
प्राकट्योरसव-आम्बिनशुकल १३ सं. १९८१



बहारतु सम्पूर्ण दृश्य.



अन्दरतु एक दृश्य.

મઈનત મલુરી અને સુકો રોટસો ખાઈ ગુજરાન કરનાર ગરીબ વર્ગના લોકોને આ ઋતુમાં કંઈ ઉપદ્રવ થતો નથી પણ બેઠાડોને કંઈ હેરાન કરે છે. માટે સાવચેત રહેવું. ફાગણ માસના પંદેલા પખવાડીયામાં હોળીના તહેવારની રમત ગમત ધાણી દાળીયા તથા તેનો સાચવો કરી અને ઘેરઘેર અને પોતે પોતે ફરી તાપવું એ ઘણું જ અગત્યનું છે.

તાઝ લરમની વિધિ—રાત્રી છાપના પૈસા લઈ તેને શુદ્ધ કરી ગળજીની પાન વાડી તેની હુગદી બનાવી તેમાં પૈસો મુકી કપડ મરી કરી ગળપુટનો અમિ આપવો. રવાંમ શીનળ થયે કાઠી ઉપર જે પોપરી વગેરી હોય તેને સાચવી ઉભેડી લઈ, કચાચવાળા ભાગને ફરીથી ગળજીની હુગદામાં ગળપુટ દેવો. એ પ્રમાણે પોપરીથી ઉખાડી ઉખાડી ફરીથી હુગદીમાં મુકી પુટ આપે જવું એમ દસ વખત કરવાથી લરમ સાચ છે. છેવટે તૈયાર થયેલી બધી પોપરીઓને બેગી ઘુટી ગળપુટ આપવાથી સારી લરમ તૈયાર થાય છે. આ લરમ એક ચોખ્ખા પુર લઈ મધ તો, ૧ તથા આફનો રસ તો. ૧ ખાવાથી ગમે તેવો કંઈ તથા દમ મટે છે.

દંમ-ઉધરસની દવા—કુખાંસ (કોળ) ની જડ કે જેના ઉપર ફળપુટ આવી ગયા હોય તેની જડ લાવી વાડી વજ્રમાળ કરી ચીરીમાં રાખી મુકવી, તેમાંથી જે માસા (જેઆની ભાર) થોડા ગરમ પાણી સાથે સતાર સાંજ આપવું. જરૂર હોય તો ત્રણવાર આપવું એવી વધારે વાર આપવું નહિ. કંઈના વધારામાં ત્યારે રીત દેખાય ત્યારે મધ સાથે આપવું. અપથ્ય-તેજ, મરચું અને ખટાર આપવા નહિ. ઘણો ગરમ તથા ઘણો ઠંડો પદાર્થ આપવો નહિ. ત્યારે ખીજ અગ્રેજી યુનાની દવાઓ આસ ઉપર નિષ્ફળ નીવડે છે ત્યારે આ દવા ફોલ્ડમંદ નીકળી આસને બેસારી સારો કરે છે. આ દવા યજ્ઞ દરદીઓ ઉપર અજમાય કરેલ છે અને લોકલિતાયે ખંદેરમાં મુકેલી છે.

દમ—ગોળ શેર ૦૧ તમાકુ શેર ૦૧ બેને વાડી સંપુટ કરવો તેની વચમાં કોડીયા લોખાન શેર ૦૧ ને એક ટુકડો મુકવો પછી કપડમરી કરી બંધોર અડાયા ઢાલુનો તાપ આપવો. ટાડું પડે ત્યારે લોખાન કાઢી લેવો. તેમાંથી એક રતિથી એક વાદ ધીમાં આપવું. ઉપર તરત સુરમાનો લાડુ ખચરાવવો. ન્તેથી દમ અમુંજી બેસી જાય છે.

૨—સાગરસીંગાની લરમ, ધુધાવેલો ટંકણ ખાર, મોરપીછની લરમ, અથેડાનો કાર બોરોંગળી એ સરને બારીક વાંરી દિવસમાં ત્રણવાર મધમાં આપવાથી કંઈ ધુરો પડી દમ મટે છે.

શુભ પ્રસ્તાવનું મંગળ ગીત.

(રાગ—સુભદ્રાજની કંકોત્રીના.)

શ્રીઆલકૃષ્ણ પ્રસુદ્ધનાં મંદિરે-શ્રીશ્રીનરવાણ વેર આજ.	આચ્યેરે રૂંદો સોલીઓ—ટેક.
સુરનામાં મંદિરે મોટા બાળીયે, વજનદબુવન નીરખાય.	આચ્યેરે. શ્રીશ્રીનરન.
નંદાં શ્રીવજ્રમવંસ ખીરાજતા, પવિત્ર સરવ પરિસાર.	આચ્યેરે. શ્રીશ્રીનરન.
મંગલ રૂપે શ્રીશ્રીનરન નિરખીયે, શ્રીવદુજ કૃષ્ણપ્રીયાબોતા શોભાય.	આચ્યેરે. શ્રીશ્રીનર.
શ્રી દંપતિ અતિ ભાગ્યવંત હો, શ્રીઆલકૃષ્ણ કૃપાના સુખધામ.	આચ્યેરે. શ્રીશ્રીનર.
એમના મોટા કુંવર (શ્રી) ગોવિંદવાણજ કુંભમીડારીવાણ કુંવાય.	આચ્યેરે. શ્રીશ્રીનર.

લાલના લગ્ન હુઆ મુંબા નગરીમાં, શ્રીરાણી વડુછ નામ શોભાય.
લાડકોડે વળી નામ ધારીઆ, દિવ્યપ્રભા અધિક ગોભાવ્યા.

અષ્ટ માસો પ્રસ્તાવ કરવા તણે, આઘ્યા સમય મુરત જોવાડ્યા.
શ્રી માતતાન જાણી મન દરખીયા, પુત્રવધુને મુરત સુદીન.

સંવત શત ઓગણીસ અઢ્યાસીમાં, માગસર વદ સાતેન શુક્રવાર.
શુભ કારજ મોટા આરંભીયા, શ્રીમહારાજને હર્ષ અપાર.

કુંભકુમ પત્રિકા લખી રવકુંભમાં, લખ્યાં મુરત વડુછને મહીએર.
લખી વૈધ્યવોને ઘણા વ્હાલથી, માનસહીત સહુ ગામેગામ.

હરખે આઘ્યા વેહેવાઇ બલભદ્રછ, પરીવારે મોસાળીયા શોભાયા.
સાથે દીક્ષિતછને ગોપીનાથછ, શ્રીગોકુળનાથછ મહારાજના લાજ.

શ્રીમહારાજના મુંબધી સહુ આવીયા, શ્રીવલ્લભી બેડી આઘ્યા જિમંગે.
કાંકરાલીથી ગણુઆ પધારીયા, બેઉ લાલછ છે વદ્દછ સહીત

શ્રીમજ્યુપણુને વીરુવનાથછ, સાથે વડુછને લાજ છોટાખાળ.
ક્રીસનમદથી ચંચુઆ આવીયા, શુભ અવસરે શોભ્યા મોસાળ.

શ્રીમધુસૂદનલાલ બહુ પ્રેમથી, રાજનગરથી વહીત મહારાજ.
એમના લાલ શ્રીરણુછોડનાલ સાથ છે, જિમંગ ભર્ષા શોભાય.

શ્રી કામવનથી શ્રીવલ્લભલાલછ, શોભે રાજ રસાલા સાથ.

મદ્રાસથી શ્રીવડુછના પીહેરીયા, આઘ્યા કુંકુંબ સહીત પરીવાર.
મહારાજશ્રીના મોસાળીયા, માયા મામી આઘ્યા દરખાય.

સંબંધી લાલછઓ આવીયા, ચોન્ન પૂજ્ય રીતે રીધા માન.
સહુને મુખનીવામ સારા આપીયા, માનભર્ષા કર્યા વીવેક,

વૈધ્યપુત્રજનનો સમાજ બહુ આવતો, આનંદ સહુને મન વાધે.
શહેરવાસી વૈધ્યુન હરખે ભર્ષા, પ્રસ્તાવ આનંદમાં મહોતે.

સીમંતની શોભા ભારે દીશતી, મહેલ મેરીયે જોતી પ્રકાશ.
મોક રંગમંડપે શોભા ધણી, શાંતિદયન વેદવીધી થાય.

લુગલ સ્વરૂપ ન્યા ચોકે ખીરાજતા, મંગળ ગીત સોદાયજો ગાય.
વેદમંત ઘોષ ધણા ગજર્તા, દરસણુ કરતા વૈધ્યુવ અગભીત.

શ્રીવલ્લભ કુળ સતુ ખીરાજે શોભા ભર્ષા, દીશે અત્રૌટીક દરસન.
બીડ ભારે થાય દરસણુ સમે, રખે સેવકા સારી સંભાળ.

એવા આનંદ સદા મોટા મંદિરે, શ્રીવલ્લભચંદ્ર મુરત શોભાવે.
પ્રસ્તાવ શોભા ઘોડે વરજુવી, ગાય દાસ ત્રીકમ રચી ગીત.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

આવ્યોરે. શ્રીશ્રીજ.

શ્રીમેદીજના પ્રાગટ્યનું માંગલિક ગીત.

(ગજ—શ્રીકૃષ્ણ કમળ મુખ નિગ્મવા આલો શ્રીનંદજને ઘરે.)

- મખી આનંદ રામની મામળી, વાધો છે હર્ષ સજ્જે મ. ઘેરે
શ્રીમાનકૃષ્ણના મરિ, શ્રીશ્રીજનનારને ઘેરે ૧
- શ્રીગજ રત્ની જહા પ્રગીષા, શ્રીમદ્ધારસ દિવ પ્રકાશરે
વિષમતા જલો શ્રીકૃષ્ણે જનમ્મા કારી મું મુખગારે ૨
- એરે વધામ ની મુ ની મુની, વૈષ્ણવ જન વેગ લ્યા જાયરે
મદિરકારે વધામણ, ધોળ મંગી મની ગીતો ગાયરે ૩
- શ્રીગદા ગવન નજ પ્રગીષા, આનંદ તેમ હરે હજીયારે
દોન પ્રાણ નામ વાગના, જન તોરણરે શોભા છેરે ૪
- વૈષ્ણવ વનિના સોદાગણો, લાવે વધાવો મગજ સાન્ને
જીતરજને જીમ શ્રીનાડલીજને નીગમના કાન્ને ૫
- શ્રીમુખ કુવરીજના જોઈ જોઈ, લેતા ઓવાળા કરી કરી વ્હાન્ને
વહ પૂજ્ય આગી દીરે, ચિરનજની રાન્ને ચિરકારે ૬
- શ્રીશ્રીજગજ આનંદભર્યા, નીરખીરે પ્રમન વદનરે
જોતા વૈષ્ણવોને એદથી, સતોરે કુદુમ સહિત સ્વજનરે ૭
- છટી પુજન દિન શોભીયો, ગમ્યે અનૈકિક દમનરે
શ્રીમદ્ધારજ જીરાજે માનમ્મગ, મોભા જોતા હજીયા મનરે ૮
- ઘોઠમા જોડે જીગદ્યા, ગાન આપશી જોવિંનારે
ભુગવ અરૂપ નીડાગીરે, દીગે છે શાભા સુદઝ મ્માજરે ૯
- શ્રીકૃષ્ણ પૂજ મનાવતા, વે વિધિ સરવે શુભ રીતરે
વધાર્ધ પ્રગતન લ્યા ગવાય છે, એન્દાતી ગાય છે મગજ ગીતરે ૧૦
- મગા સરોદ શ્રીમદ્ધારજના, ગાન સહિત પ્રેમ મ. આજારે
વસા આભરણ હીંગ મોતીના શ્રીનાડકીરે પહેગવા લા પરે ૧૧
- વિવિધ રાગગા ઝામો શોભતી, જોઈ જોઈ નયણ શ્રીનમ ધાયરે
નિકટ સમધાને મોમાળના, પ્રેમ અધિક આધમ પ્રાધરે ૧૨
- છટી પૂજન પ્રન્તાનના, મગજ થયા છે સુરોભિતરે
જોભા એરી શ્રીરમજીક, આદ સત નરા નરા નીતરે ૧૩
- મવત શન ઓગાસ છે, હિપ અયાતી મુખમળે
પ્રાગટ મદા સુદ અટમી, વાગ છે સીનમ મોમવારે, ૧૪
- નિન્દામ મ્મિ ગતિ હજીયી, મું ધોળ રચી મોભા મુરે
શ્રીશ્રીજગ પ્રમત થવા કપ્પુ ગીત ત્રીકમ મન લા મુરે ૧૫

(ગ્યના—વૈષ્ણવકવિ, ત્રીકમદામ શિવદાસ નવાધુરવાળા, સુખનિરામ, મોગા મન્નિ—મુન્ત.)

સાહિત્ય સત્કાર.

દ્વિતીય સ્કંધ પ્રકાશ—સંશોધક: રા. રા. ગીમનલાલ શાસ્ત્રી શુદ્ધાદૈતરત્ન, ગોડા મંદિર, સુરત. મૂલ્ય દોઢ રૂપીઆ. શ્રીમુખોધિનીજી એ શ્રીમદ્ભાગવતની માત્ર ટીકા જ નથી, પણ સત્તાત્મક વાણીમાં ગુંથાયેલું મહાભાષ્ય છે. દ્વિતીય સ્કંધ મૂળે હર્ષિન, અને તેનાં શ્રીમુખોધિની સરળ ક્યાંથી હોય ? શ્રીમુખોધિનીજી સમજવા માટે દશદિગંતવિજયી શ્રીપુરુષોત્તમજીનો વિદંતાપૂર્ણ પ્રકાશ અત્યંત સહાયક છે, તેથી તેને પ્રકટ કરીને શાસ્ત્રીજી શ્રીમનજીવજીએ શ્રીમુખોધિનીજીના અભ્યાસીઓ ઉપર મહાન ઉપકાર કર્યો છે. પ્રકાશની ચાર પ્રતો સંશોધકે મેળવી હતી અને ધણા જ પ્રવાસે શોધન કરીને આ ગ્રંથ પ્રકટ કર્યો છે. રા. ઈશ્વરલાલ શાહ, રા. પ્રભુદાસભાઈ, રા. રતિમાલજી એ વિદ્યાવિદ્યાસીઓએ પણ શાસ્ત્રીજીના શોધન કાર્યમાં નિરુપાર સહાયતા આપી છે. ગ્રંથ શુદ્ધ રીતે છપાયો છે. આ ગ્રંથમાં આર્થિક સાહાય્ય વિદ્વદ્વત્ત ગોરવાળી શ્રી. શ્રીવજ્રવત્તજી, મહારાજશ્રીએ અર્પણ કર્યું છે અને તે પણ નિજ દ્વિતીયકુમાર શ્રીમધુસૂદનજી બાવાસાહેબના યજ્ઞોપવીત પ્રસંગને યાદગાર બનાવીને. આ અનુકરણ અન્યત્ર યાય એવી ઇચ્છા સાથે મહારાજશ્રી તથા શાસ્ત્રીજીનો ઉપકાર રમરીને વિરમીએ છીએ.

શ્રીપીયૂષ પત્રિકા—આ સચિત્ર વિશેષાંક પ્રકટ કરીને, સંસ્કૃતવાક્યમયની સાર્વદેશિક સેવામાં સ્ત્રીજી હરિશંકરજીએ મહાન ફાળો આપ્યો છે. આ અંક પ્રાચીન સંપ્રદ કરવા યોગ્ય પ્રદાયિક તથા ઈતર સાહિત્યથી પરિપૂર્ણ છે. આવાં પ્રાસિકને ટકાવી રાખવાનો ભાર સંપ્રદાય મા સંસ્કૃતસાહિત્યવિદ્યાસીઓ ઉપર છે.

ભારત વીરોની સત્ય ઘટના—પ્રકાશક—ચિવપ્રસાદ લીલાધર પંડિત, ડૉ. ગાંધીરામ, વહેલામ (ડી. અમદાવાદ) મૂલ્ય સવા આનો. દેસભક્તિની વેદીપર પ્રાણાહુતિ અર્પનાર જે તરણ ભક્તોની કરણ કથા આ નાનારા પુસ્તકમાં છે. વાંચીને હૃદય રહે છે. દેશના ઉદાર માટે કેવાં મિદાન આપ્યાં પડે છે તેનો અસરકારક ચિતાર દાલના જ સમયમાં પ્રત્યક્ષ બનેલા આર્થ યાતો જ આપી શકે છે. ભાષા સરળ અને સચોટ અસર ઉપજવનારી છે, નવ યુવકો માટે રણ્યાત્મક છે.

સંસારગીતા—લેખક: પ્રકાશક—અંજાલાલ કૃષ્ણભાઈ પટેલ મુ. બોડ (ડી. ખેડ) વાયા શણુંદ. મૂલ્ય અઢી આના. જગતમાં જન્મીને પ્રભુપ્રાપ્તિનું અતિમ ધ્યેય સિદ્ધ કરવા ઇચ્છનાર માટે આ નાનું પુસ્તક ઉત્તમ અનુભવાત્મક વિચારોની દિશા બતાવે છે. મોક્ષપથના પ્રવાસીઓ માટે ભિન્ન ભિન્ન અનેક ઉચત વિચારોનો સરળ ભાષામાં સંપ્રદ કરીને લેખકે આ જમાનામાં સંસાર તાપથી તપી રહેલા માનવીઓ માટે સારો યત્ન કર્યો છે.

વીસમીસદી—(ઈદ અંક) મૂલ્ય ચાર આના. ડૉ. ડૉ. ટેમરીન્ડસેન દીવાળી અંક પછી ખુસદ્દાન ભાઈઓના તહેવાર ઉપર આ આકર્ષક અંક કાઢીને તંત્રીજીએ શુભરાતી સમાજને નવી દેશાનું જ્ઞાન કરાવ્યું છે. હિન્દુ ધર્મ સંકૃષ્ટિ નથી, તેમ અસદનશીલ પણ નથી. સમગ્ર કુનીયાની ઉત્તમ સંસ્કૃતિને સન્માનવામા જ આદર્શ હિન્દુપણ છે. આ ઉત્તમ અને ઉદારતાપૂર્ણ આદર્શ સમાજને આપવા માટે વીસમીસદીનો આ ઇદ અંક ફત્તેદમંદ થયો છે. અંકમાંના ચિત્રો અત્યાકર્ષક છે. મુદ્રણકળામાં તો વીસમીસદી હિન્દુસ્થાનમાં એક અનુદેશ સાપ્તાહિક તરીકે અનુપમ સ્થાનને શોભાવે છે. આ અંકનું સાહિત્ય પણ સર્વદેશી છે. શરીરનું અજેનનો હારખરસનો લેખ વાંચતાં તો હારખરસના પુવારા, અરે ધોધજ ઉડ્યા માંડે છે ! ઇતિહાસ, સિંધવસાહિત્ય, વાતાંઓ વગેરે વાંચવા લાયક છે.

પ્રાસંગિક નોંધ.

તંત્રીને સુવર્ણપદક તથા પદવી.

‘શુદ્ધાદેવ’ દ્વારા સંપ્રદાયની યત્નિચિન્ન સેવા બદલ ‘શુદ્ધાદેવ’ ના તંત્રીને ત્રીજી વાર સુવર્ણપદક મળે છે. અમદાવાદની શ્રીપુષ્પિમાર્ગીય વૈષ્ણવ મહાસભાએ એક માનપત્ર તથા સુવર્ણપદક તંત્રીને અર્પી દર્તા. તે પછી અમદેલીના વૈષ્ણવોએ શ્રીપ્રથમપીઠાધીશ્વરના શ્રીહરતથા એક સુવર્ણપદક તંત્રીને મહંદ્ય હનું. આ બન્ને સન્માન કરતાં એ વિશેષ ગૌરવારપદ પદવી તથા સુવર્ણપદક માધ વડે બીજાના સુમંગલ દિને પાટણમાં મહર્ષી. શ્રીકાંકરોશીનરેશ શ્રીતૃતીયપીઠાધીશ્વર પૂજ્યપાદ આચાર્યવર્ય વિદ્યાવિજ્ઞાસી ગોસ્વામીશ્રી શ્રીમજ્જુલુલાલ મહારાજશ્રીએ પોતાના જન્મદિનના મહાન્ સુમંગલ અવસરના ઉપલક્ષ્યમાં તંત્રીને “શુદ્ધાદેવભૂષણ” ની ગૌરવાન્વિત પદવી, પ્રમાણપત્ર તથા સુવર્ણપદક પ્રદાન કર્યા હતાં. સંપ્રદાયમાં આવી પદવી પીઠાધીશ્વરે તરફથી મળત એજ વિદ્વાને મરણે છે. એક તો વિદ્વદ્ય બદ શ્રીજગદ્ગદ રામ અને દેવર્ષિ બદ શ્રીરમાનાથ સાસ્ત્રીજી. સૂર્યવંશના શુદ્ધ દ્વિત્રિય નરેશ અને આર્ય સંસ્કૃતિના મહાન્ આદર્શરૂપ મહારાણુ એવારતુપતિ છે. એ મહારાજ્યહું ગૌરવ ભારતવર્ષમાં આદિતીય છે. એ મહાન્ નરેશના ગુરુ તરીકે શ્રીતૃતીયપીઠાધીશ્વરનું રથાન ભારતવર્ષના ધર્માચાર્યોમાં એક અને આદિતીય છે. એઓશ્રીના તરફથી મળેલી આ પદવી અધિતન અમૂલ્ય અને અધિક મહાન્ છે. એ પદવી માટેની યોગ્યતા તંત્રીમાં નથી, પણ એ પદવીથી તંત્રીની જોખમહારી વધી છે. એ જોખમહારી સમજીને વર્તવાનું મનોબલ તો એ પદવીના પ્રદાતા આચાર્યશ્રીની કૃપાને જ આધીન છે. તંત્રી ઉપરાંત અન્ય વિદ્વાનોને પણ ગૌરવાન્વિત પદવી એઓશ્રીએ અર્પણ કરેલી છે. એ ભાગ્યશાળી વિદ્વાનોમાં પ્રથમ રથાને મજ ભાષાના આદિતીય કવિરત્ન શ્રીનવનીતજ ચતુર્વેદી છે. તેમને ‘કવિતાકાષ્ઠ’ ની પદવી આપીને એક યોગ્ય કવિની યોગ્ય કદર કરવામાં આવી છે. કવિ શ્રીનવનીતજ અત્યારે અતિરુદ્ધ છે. એમણે પોતાની કવિત્વ શક્તિનો વિકાસ નિલશીકારય શ્રીતૃતીયપીઠાધીશ્વર ગ્રે. શ્રીબલકૃષ્ણલાલ મહારાજશ્રીના આશ્રયમાં રહીને કર્યો હતો. આજે એઓશ્રીના જ આત્મજ એ મહાકવિની કદર કરે તે અત્યંત ઉચિત જ છે. તે ઉપરાંત પં. કંઈમણિ સાસ્ત્રીજીને કાળ્યાકંઠારની પદવી મળી છે. સાસ્ત્રીજી કંઈમણિજી હાંદી ભાષા તથા સંસ્કૃત ભાષા ઉપર સાક્ષી કાણુ ધરાવે છે. હાંદી ભાષામાં એક ઉત્તમ ધાર્મિક વક્તા પણ છે. તેમણે થોડાંક વર્ષોમાં સંસ્કૃત તથા હાંદી ભાષામાં સુન્દર કવિતાઓ રચે છે. તેમની હાંદી ભાષાની કવિતાઓ તો મધુર અને હૃદયગ્રાહી હોય છે. બરિચમાં તેઓ એક અનુપમ રથાને સોનાવરો એવી આશા રહે છે. તેમને ‘કાળ્યાકંઠાર’ ની પદવી અર્પવામાં આચાર્યશ્રીએ ઉચિત કદર કરી છે. સાસ્ત્રીજી જરાશંકરજીના વ્યાખ્યાનોથી તો વૈષ્ણવો સુપરિચિત જ છે, તેથી તેમને ‘વ્યાખ્યાનાલંકાર’ પદવીથી તેમની કદર આપીએ કરી છે. તે ઉપરાંત અમરા પરિચિતોમાં પં. ગોપાલરાવ સાસ્ત્રીને ‘પુરાણવિશારદ’ પદવી, શ્રીયુત જ્યેષ્ઠારામ સાસ્ત્રીને ‘સંતિર્દાંતવિશારદ’ ઉપાધિ ઉચિત જ ગણુરો. સાસ્ત્રીજી જ્યેષ્ઠાગમજી તો શં. માધવ તીર્થના પ્રદાતા ઝીઠનાથ એક મહાન્ સંપ્રિયાર્થિ બોધા છે અને તેમણે ઉત્તમ સંપ્રદાય સેવા કરી છે. સાસ્ત્રીજી ગોપાલરાવજી પણ સારા કથાકાર છે. વ્યાખ્યાનવિષયમાં પં. જ્યેન્દ્રનાથ સાસ્ત્રી તથા સાસ્ત્રી રમણલાલજીને વ્યાખ્યાનભૂષણ તથા વ્યાખ્યાનવિશારદોના રત્નપદકો અર્પણ કરીને એ બન્ને વક્તાઓના ઉત્સાહમાં અસિદ્ધિ કરવામાં આવી છે. અને બન્નેના વ્યાખ્યાનો સાંભળ્યા છે અને બન્ને આથીએ વધુ છતાંહાર વ્યાખ્યાનકર્તાઓ યવાની દરેક આશા સખી રાખાય છે. પં. ગોપાલજી ચતુર્વેદીને ‘ન્યોતિ-ભૂષણ’ ની ઉપાધિપ્રદાન કરવામાં એ ચમત્કારિક ન્યોતિપીઠને ગૌરવ અર્પ્યું છે. સદુથી વિશેષ તો પં. જ્યેન્દ્રનાથજી રોહીકરને ‘મંત્રવિશારદ’ ની ઉપાધિ ઉચિત લાગે છે. મંત્રશાસ્ત્રમાં એમણે ખૂબ માણું માણું છે અને હાલની તેમની જે રિયતિ ટકી રહેલી છે તે તેને જ આધારે હોય તેમ લાગે છે. પં. નારાયણજીજી વર્મા તથા પં. ઇન્દુલાલ વર્મા એ બન્ને હાંદી સાહિત્યરસજ્ઞોને અનુક્રમે કાવ્યકોવિદ તથા કલાકોવિદની પદવી ઉચિત રથાને છે. અન્ય વિદ્વાનોને અમને પરિચય નથી. આ ઉત્સાહપ્રેરક કાવ્ય

તરફથી પ્રાપ્ત થાય તો જોઈને જામને આનંદ થાય છે અને એ સ્થાનના આધીશ્વર આવા યશસ્વિ અને પ્રોત્સાહક અનેક કાર્યો કરતા હોય અને દીર્ઘાયુ થાય એવી આતર અભિલાષા માથે વિગ્નીયુ

કલકત્તા અધિવેશન.

તેવીસ કોટી હીન્દુઓને નામે જમે તેવા છબરડા વાળાને હીન્દુ ધર્મની ઘોર ખોડનારા દેશનેતાઓ સામે વ્યવસ્થિત જગ મચાવના માટે વર્ણશ્રમ સ્વચાલ્ય સઘની સ્થાપના થઈ છે એ સઘના જગજામના અધિવેશનનો સંવિત્ત હેવાન અમાગ આહ્વાને વાચ્યો હતો તેથી કલકત્તા—અધિવેશનનો હેવાવ બલ વાની ગદગદ બના આહ્વાને થાયજ એ હેવાવ કેમ ન આવ્યા એા પ્રશ્નો પણ પચદાશ થયા છે ધારા સમય પછી તે વિષયુ ખીન તોળએ છીએ એક તો ‘શુદ્ધદેવ’ નું ખામ લક્ષ સાપ્રદાયિક હોઈને વિશાલતમ છે એવું વર્ણશ્રમધર્મ’ એવા એકદેશી પ્રશ્નોની જ ચર્ચા એ તેનું દ્રવ્ય નથી પણ જાણક ત્રીવલ્લાવીશ્વરના શુદ્ધદેવ પ્રજાવાદ અને વિશ્વધર્મ પ્રદિમાર્ગ’ એવા મહાન પ્રશ્નો એ લક્ષ્ય છે બીજું, મહોદયગ્રંથિ ચિદ્રૂપ નાસ્ત્રામી શ્રીક શ્રીમોહરવાવળ બાવાસાહબનુ યશસ્વિ ઔદ્યોધપૂર્ણ ચારિત્ર્ય સમગ્ર જનતાને આદ્યુત રીતે આકર્ષે છે તેથી એઓશ્રી ન્યા પધા’ છે ત્યા કાઈ આરજ આદીકિક રજ જમે છે જલ્પમામમા શુ હુત ? આપશ્રીના ત્યા પધારવાથી મરુમુખિમા અમૃતમહાસાગર ઉતર્યો હતો અને તે યાદગાર અધિવેશન બન્યુ હતુ વળી મતબેદ સહન કરીને પણ કાર્યકર્તાઓને પોતાની શીતળ હાયામાથી દૂર ફેરી ન હોતા વ્યથિત આપવાની ઉારતા એઓશ્રી વિના અગને તો કોઈ રમ્યે દેખાઈ નથી તેથીજ એઓશ્રીના અમેમરત્વ નીચે થતાં દરેક કાર્યામા એક મહાન વિશ્વશુક્તવા આદર્શો પ્રકાશે છે અને તેની નોંધ ‘શુદ્ધદેવ’ ધારાજ આનંદથી લે છે ત્રીજુ કાણુ કલકત્તા જવાનું બની રાક્યુ ન હતુ તે પછુ છે નથી કાઈ આચાર્યશ્રીના આશ્રય કે જેમના પ્રતિનિધિ તરીકે ત્યા જઈ રાકાય કે નથી કાઈ સસ્થનું અધેસરત કે તે સસ્થાને ખર્ચે જાડીએ દોડનાય તેમ કાંઈ ધરમા ટકરાણ નથી કે કલકત્તા જેટલે દૂર જતા માટે જો કપીઆના અર્ચની જેઠવાઈ તત્ત્વજા કરી લેવાય કલકત્તા—અધિવેશનના સમાપતિશ્રીએ જામ લાલના રટસને પ્રશ્ન કર્યો કે, કલકત્તામા કેમ ન આવ્યા ? તો જવાબ આપુ ? મોટાએ પાસે ખીનજ રોવણુ હુ મનમા તો ધરી ગયયર થઈ કે, આતર સ્થિતિનુ નજ ચિત્ર રાખદાગ આલેખુ, પણ શુપકી સાધી હીની ! ધરમા કાંઈ રૂપીઆનુ આડ નથી કે આવ્યા વખતે એકાદ થેરી રૂપીઆ ખ ખેરી લેવાય ! તેમાએ મહામુરદીએ ઠેકાતો આવેલા કાર્યાવયને હબુ ઉપરાંતની ખોટી મરજતોર ફટકા લાગેા ! એ ધા લાંબેજ કંતો આ ગિતિ આથી શો લાલ છે ? સપ્રદાયમા પણ સામજે છે ? ‘કલ્યાણુ’ જેપુ માસિક મ મ કાઢતા નથી ? અ સમાન બધા કરે છે ? પણ ‘કલ્યાણુ’ પાસે લાગેનુ નડ છે અને તેના આધારે તે પ્રગતિ કરી રહુ છે એ જા જોઈ નથી કલકત્તાના અધિવેશનના હેવાલો અમે વાચ્યા, પ્રમુખશ્રીનુ બાપણુ વાન્યુ જામને જેમાથી કાંઈ મોધવાવાચક સંજીન કાર્ય’ હેખાયુ નહિ જલજામથી ઉતમ નહિ તો તેની સમન પણ કાય થયુ હોત, તો તેની મોલ લેવાત પણ આ તો ઉતરોત્તર આ જ પધવાને બલે બાડીથી પાછા હટાની વાત થઈ ! આની મોધ કેવી ? પ્રમુખશ્રીનાં બાપણુની માંડેરી નકલ જામને મળી હતી તેનો કોઈ પ્રકાગક ન મળ્યો, તે ત્રીવલ્લાવીશ્વર માટે મહાન ઘોર અપરાધ હાપનાર સપ્રદાયદાહી સઘની મળા આજી એક ગોસ્વામી આચાર્યશ્રીના બાપણુનો પ્રકાશક આવો સપ્રદાયદેવી હોય તેમા વળા અને સપ્રદાયનુ તોલીનજ ગણાય વળી બાપજમાં ન છાંને તેવા રાખ પ્રોગે અને વિચારોથી આમાર લોટી હક્ષા આન્યુ ! પણ હંજુ સુધી ખામોશી પકગ છે સાસ્રીજ જાણ કરજીનારા સામજ્યુ કે, પ્રમુખશ્રીએ કલકત્તામાં સઘનીને સાત ઠપકા આપ્યો કે મારાં બાપજમાં આવા ફેરાર કરી તમે તે મ છાપી માનું ? આથી કઈકે શાંતિ થઈ નહિતર પ્રમુખશ્રીનાં એ કહેવાતાં હાપેા બાપણુની સખત સમીમા કમી હતી પ્રમુખશ્રી ઉપર વેપાવેચિત અહા તો હોયજ કલકત્તાના અધિવેશનમાં થતા ‘અગવન ત્રીવલ્લાવીશ્વર’ની જગ ના વન્ય સપ્રદાયના બાલો વિદ્વાનોના જય ખનિથી પ્રમુખશ્રીની ઝાતી મજબૂત હજમી હતી, આનંદ સમાનો ન હતો, એમ એઓશ્રીએ કહ્યુ એટલે એટલા યુગની એ અધિવેશનની મહત્તા વાગી નાને તે બદેર કરીને સતોય પામીયુ બાકી એ અધિવેશન પતા મંદેરેા પ્રાપ્તમાં નિષ્પર્ગમાં નિષ્પર્ગ તિરજક ગચિશ્ચાન તુ તેરી ‘અસર’ મારી નામે મહ

મહુધાના વૈષ્ણવો પ્રત્યે બે બોલ.

નવેક વર્ષ પછી શ્રીચતુર્થપંચમખીલાધીશ્વર મહુધામાં પધાર્યા. મહુધા, નડીયાદ પાસેનું એક નાનું ગામ છે અને ત્યાંની વૈષ્ણવ સૃષ્ટિ શ્રીચંદ્રમાઝના ધરની સેવક છે. વૈષ્ણવો ભાતુક હોઇને સંપ્રદાય તરફ અડગ શ્રદ્ધા રાખનારા છે. શ્રીવક્ષેષ કુલ અને વૈષ્ણવોની સેવામાં યથારાજિ કાળો આપનારા છે, પણ ખેદની સાથે બે બોલ લખના પડે છે. આવા નાના ગામની આ વાતો નહેરમાં કરવાની પણ નરર છે. કેમકે લગભગ ગમેગામમાં આવી રિયતિ અનુભવાય છે. એક દિવસે નહેર પ્રવચન વખતે યુવકોએ એક વિનતિપત્ર શ્રીગુરુદેવને ચરોત્રે નિવેદન કર્યું. પત્રમાં આ વિનતિ હતી:—સં. ૧૯૮૪ ની સાતમાં અને સુરતવાળા ડૉ. શ્રી. ૧૦૮ શીશ્વરસ્તનસાલજી મહારાજશ્રી પધાર્યા તે વખતે તેઓશ્રીના ઉપદેશથી એક પાઠશાળા સ્થાપન ચર્ચેથી હતી. આ પાઠશાળો નખાવના માટે એક કાર્યવાહક સમિતિ પણ સ્થપાઇ હતી. પણ પાઠશાળા એ કાર્ય ફેલેલુંદરે થયું નહિ, માટે વિનંતિ છે કે અમારા ખાતર પાઠશાળા સ્થાપન થાય અને સાંપ્રદાયિક જ્ઞાન મેળવવા અમે ફેલેલુંદરે થઇએ તેની કૃપા કરશે. એવી સેવકોની આશા છે. માથ સુદ ૧૦ સં. ૧૯૮૮. આ પત્ર નીચે ૧૬ ઉત્સાહી યુવકોની સહી છે. આ પરથી ત્યાં બે બોલ કહેવાયા. ગમે ગામમાં મોટી હમ્મરના વૈષ્ણવો ફરીઆદ કરે છે કે અમારી ઉછળતી પ્રભુ ધર્મથી વિરુદ્ધ થાય છે, નાસ્તિક બને છે. યુવકો અમારી આજ્ઞામાં રહેતા નથી, તેમ ધર્મમર્યાદા માનતા નથી. આ ફરીઆદમાં વળદે છે, તે બનાવરી નથી. પણ આ રિયતિના જવાબદાર કોણ? ધાર્મિક સંસ્કારોનું રચાન આપણા કંઈ છે. સેંકડે નવવાણું ટકા વૈષ્ણવ ગ્રંથોમાંથી વૈષ્ણવ જીવન તિરોદિત થયું છે. બહેનોમાં અજ્ઞાનનું સામાન્ય છે. પુરુષો બ્યાપાર કે મોકરી આદિમાં પોતાનો સર્વ સમય હોમી દે છે. ઉછરતી પ્રભુ ધર્મ-શૂન્ય કેળવણી લઇને, આપણી સંસ્કૃતિ, સમાજ અને ધર્મ તરફ સંદેહ કરતાં શરૂ થાય છે અને આખરે હુનીયાની કોઈ પણ સંસ્કૃતિ વિનાના થઇને કેવળ પશુજીવન તરફ ધસડાય છે. આપણા વૈષ્ણવ ધનાઢ્યોની જ દશા જુઓને? ૧૪માં બાલકોને બહુાવનાર શિક્ષક રાખે છે તો તે કેવો હોય છે? આપસમાજ, નેન, પારસી, ખ્રિસ્તીમાન કે ધર્મના સંસ્કાર વિનાના ધર્મશ્રોત્રી કોઈ હીન્દુ શિક્ષક વૈષ્ણવ ધનાઢ્યોના ધરમાં આવે છે. એમને કોઈ કુપોગ્ય વૈષ્ણવ શિક્ષક કેખાતો જ નથી. ભગવદ્વીય પ્રે. જ્ઞાસાલ શાહ એમ. એ. અને એક નેન સદ્ગુરુદેવને ત્યાં શિક્ષણ આપવા જતા હતા, પણ કોઈ વૈષ્ણવ શ્રીમંત તેમને પોતાના બાલકો માટે ઘેર બાલકાવવા તૈયાર ન થયો. આ સ્થિતિમાં વૈષ્ણવતાના સંસ્કાર પડે તેવો કોઈ માગ રહ્યો નથી. મહુધાના ભાગ્ય છે કે આવો ઉત્સાહ (પાઠશાળા વિષેનો) યુવકોમાં ઉત્પન્ન થયો. આ ઉત્સાહને વધાવી લઇને શ્રીગુરુદેવે વૈષ્ણવોને ઉપદેશ કર્યો. જે કડક સંજોગોમાં કેટલુંક કહ્યું. તેથી ધણાને બોલું પણ લાગ્યું હતો તેની સખા મામી લઈસ; પણ એટલી પ્રાર્થના તો નહેરમાં ફરી કરીસ કે, ને આપણી સંસ્કૃતિ, આપણી સમાજવ્યવસ્થા, આપણો ધર્મ જોરે સુરક્ષિત રાખવાં હોય, નવી ઉછરતી પ્રજાનાં જીવનમાં ધર્મ અને નીતિનાં તત્ત્વો પ્રકાશતાં કરવાં હોય તો હવે ગુરુજીવન ધર્મમય બનાવો અને તેને આદર્શ બનાવવા માટે આવી પાઠશાળાને નખાવો. આ એક વાત મહી બીજી વાત પણ ખેદ સાથે લખવી પડે છે. મહુધા છાતરાં એક દુઃખદ બનાવ બન્યો. મહુધામાં બે મર્યાદી વૈષ્ણવ ભાઈઓ છે. કાખાં, તિલક, જંદી, ટોપા જોરે બેધરક પહેરીને મર્યાદી વૈષ્ણવ તરીકે કોઇનો સ્પર્શ પણ કરતા નથી. ગામમાં તેમની વૈષ્ણવતા ઉત્તમ રીતે પંકાય છે. તેમનાં ગુરુજીવનનો મને પરિચય નથી. મને ખ્યાનગી બાતમી મળી કે, બે વૈષ્ણવને ત્યાં સાતે સ્વરૂપની ભેટા એકઠી થાય છે અને સાતે ધરની તેઓ સેવા બાલવે છે. પણ હાલમાં તેમને ત્યાં શ્રીનાયજી તથા સાને સ્વરૂપોની ભેટા મોટી રકમમાં જમા થઇ છે અને તેઓ કોઈ વ્યવસ્થા કરતા નથી. બીન્દ ધરની ભેટાનો હીસાબ નેવાનો અમને શો હક્ક હોય? પણ શ્રીગોકુલનાયજી તથા શ્રીચંદ્રમાઝના ધરની ભેટાનો હીસાબ નેવાનો હક્ક તો છે જ. આ પરથી તેમને ચોપડા લઇને સવારથી બોલાવ્યા. પણ ભાઈ તો આવે જ રાત્રા? સંજના ચાર વાગ્યા છતાં ન આવ્યા. આખરે માટે બે મર્યાદી બંધુઓ મળે કરવા સમદ કહેવાં પડ્યા કે “નર્ચોરે તમે જ ગુરુના ધરનું દ્રવ્ય બોળવો અને બદ્ધારથી વૈષ્ણવોનો વેશ બાળવો, તો પછી ઉછરતા વર્ગે હપર શી ચારી અસર થાય? તમે કહો છો કે, ઉછરતા વર્ગને બોધ આપો, પણ નર્ચો તમે જ ધર્મને નામે આમ પંડા બોળવો ત્યારે યુવકો કેમ નાસ્તિક ન બને?” મારા આ સંજોગોની બીજાણીક અસર થઇ અને ભાઈ ચોપડા લઇને આવ્યા, બે વર્ષની ખાતાવહી

છે. તે પછી દૈહિક કાર્યમાં બધા લાગી નથી છે. બ્રહ્મવર્ષાશ્રમ આમથી દૂર પણ નથી, તેમ જામની અંદર પણ નથી. શ્રીકૃષ્ણનીજ નજીકમાં છે. કષિણ જેવું નિહતા કુંડા-તીર્થો, શ્રીમદ્વાપ્તભુજની શિક્ષક શ્રીદ્વારકામીશનું મંદિર, સંતોશ આદિ તદ્દન સમીપ છે. સંસ્થામાં ગૌરના પણ છે. વ્યાયામશાળા પણ છે. બ્રહ્મચારી બહુકે દેવવાણીનું અભ્યાસ કરવામાં મસ્તુક બની નથી છે. અભ્યાસપદ્ધતિ ઉત્તમ છે. સંસ્કૃત વિદ્યા સાથે વ્યાવહારિક શિક્ષણ પણ આપાય છે. બ્રહ્મચારીઓ જ્યારે વેદ જ્ઞાનથી સંધ્યાહોમાદિ કરે છે ત્યારે તે પ્રાચીન ઋષિકુળોનું દૃશ્ય અભિદ્વેષ ખડું થાય છે. આશ્રમમાં પ્રભુનું મંદિર છે. ત્યાં શ્રીકૃષ્ણજી ગિરાએ છે. આ રોગ પણ વિદ્યાર્થીઓનારા થાય છે. આર્થ જીવન અને ભક્ત જીવનના સંસ્કારોનો અદ્ભુત સંયોગ તે આ આશ્રમમાં જ જોયો. આવી ઉત્તમ વ્યવસ્થા માટે આશ્રમસ્થાપક સદૃશતા રાખીને ગુજરાત યાદ કરો અને રાખીજના પરોક્ષવાસ પછી આશ્રમની કાર્યવાહી ઉત્તમોત્તમ સ્વરૂપમાં ચાલુ રાખવા માટે શાસ્ત્રીજી ઉમાશંકરજીને પણ ધન્યવાદ અર્પણે. શિક્ષણ આપનારા અન્ય ગાસ્ત્રીજ પણ સ્નેહથી વિદ્યાર્થીઓને શિક્ષણ આપે છે. આશ્રમવાસીઓનાં શારિરિક અને નીતિ ઉપર ધ્યાન આપાય છે. વિદ્યાર્થીઓ અને અધ્યાપક વચ્ચેનો સંબંધમાં આધુનિક નિશાળોની આસ્તરશાલીની મંદિર નથી. વિદ્યાર્થીઓ વિનયશીલ છે, અતિવિસત્કારનો આદર્શ પણ, આ આશ્રમમાં અર્પણ છે. દરેક વિભાગમાં સ્વચ્છતા છે. આવે એક આદર્શ આશ્રમ ગુજરાતનું મૂલ્ય છે. તેને કાયમની આવક કાઢી નથી. તેના વ્યવસ્થાપકો નાટકી દબે નજરમાં કરીને, દંભ અને આકર્ષણી જનસમૂહમાં આશ્રમમાં બાણમાં ફૂકતાં નથી. તે આવા એક સંજોન કાયં કરનાર, દિવ્ય જીવનવાળા બ્રહ્મચારીઓ દેશને અર્પનાર આશ્રમને ગુજરાતના ધનાઢય ધાર્મિકોએ કોઈપણ ભોજી નમાવી રાખવો રહ્યો.

- (૩) કૃષ્ણ કટપરી વર્કસ. ગુજરાતવાસી
(૪) રામ ઇન્ડસ્ટ્રીઅલ વર્કસ. વડોદરા
(૫) કે. એન. અમ્બાની મુબઈ નં. ૪
(૬) સ્વદેશી વસ્તુ કાર્યાલય-હાથરસ

ટાંક

- (૧) નીબલ મેન્યુફેક્ચરીંગ કંપની લીમીટેડ
મોસંધણ

- (૨) ડી. આર. પુની એન્ડ સન્સ
ગુજરાત (પંચમ)

- (૩) કુશકર્ણી ઇથર્સ
પન્નાલાલ ટેરેસીઝ મુંબઈ-૭

- (૪) નંબર ઇથર્સ લેસકર (ગ્રાસીઅર)

- (૫) એફ. એન. શુભા એન્ડ કંપની
૧૨, બેનુર હાટરોડ-કલકત્તા

- (૬) બાશુ હરિદાસ મુકરજી
૩, કાશીચંદી સ્ટ્રીટ જી. ડી. મદ્રાસ

- (૭) મોડર્ન ઇન્ડસ્ટ્રીઝ દયાળપાલ, આમ્રા

- (૮) હથરશીંગ ખી. એમ. સી.
રોમર્ટસ રોડ-લાહોર

- (૯) નીમ મેન્યુફેક્ચરીંગ કંપની
ટેપીવાલા મેન્થન્સ, સેન્ડહર્ટ રોડ-મુંબઈ

તાળાં

- (૧) બી. એફ. યાત્રિક અને કંપની.
અલીગઢ (યુ. પી.)

- (૨) સીંધલ એન્ડ કંપની.
અલીગઢ (યુ. પી.)

- (૩) કે. એન. અમ્બાની.

- દાના બદર મુંબઈ-૩
(૪) ધી મોડેલ ઇન્ડસ્ટ્રીઝ કંપની.

દયાળપાલ આમ્રા

- (૫) તબલ ઇથર્સ. લેસકર (ગ્રાસીઅર)

- (૬) ડી. આર. પુની એન્ડ સન્સ.

ગુજરાત (પંચમ)

- (૭) કુશકર્ણી ઇથર્સ પન્નાલાલ-ટેરેસીઝ
મુંબઈ-૭

દંતમંજન

- (૧) સરેલાલ ઇથર્સ બીલીમોરા

- (૨) બંગાલ કેમીકલ એન્ડ ફાર્માસ્યુટીકલ વર્કસ.
કલકત્તા

- (૩) ભાગવત એન્ડ કંપની. કોલ્હાપુર
દાંતીઆ

- (૧) જેસેર કાન્નર્ગ એન્ડ સોલ્યુશીઝ ફેક્ટરી.
જેસેર

- (૨) બેગોલ સ્ટોર્સ, સુતાર આલ-મુંબઈ

- (૩) ડી. એન. બટ્ટાચાર્ય એન્ડ સન્સ.
૩૩, કેનીંગ સ્ટ્રીટ, મુંબઈ

- (૪) ચુપ્તા એન્ડ ઇથર્સ. જુમા મસીદ પાસે
અમ્બુલ રહેમાન સ્ટ્રીટ ફિલ્દી

દાંતનું ઇથર તથા હાલમતની પીંછી

- (૧) આપર્ન ઇથર કંપની દાદર, મુંબઈ

- (૨) ગોરીજનલ ઇથર વર્કસ.
૬૬, કાવસજી પટેલ સ્ટ્રીટ ફોર્ટ-મુંબઈ

- (૩) શાહ ઇથર ફેક્ટરી અમદાવાદ

- (૪) કસાઈમેક્સ ઇથર વર્કસ
૯, મરાઠા ડીય લેન, કલકત્તા

- (૫) ઇથર વેર્સ લીમીટેડ

- ૧૨૮-૧, હેલ્સી રોડ કાનપુર
(૬) આમ્રા ઇથર કંપની

- ગૈનીફી મંડી બૈલાનગંજ, આમ્રા
(૭) ગગા એન્ડ કંપની

- કલોક ટાવર-મીરત સીટી
(૮) ઇન્ડીઅન ઇથર ફેક્ટરી બાસ મડ-કાનપુર

(૯) સત્યનારાયણ એન્ડ કંપની આમા દોરા

- (૧) કૃષ્ણી મીલ્મ અમદાવાદ
(૨) સેન્ટ્રલ ઇન્ડિયા સ્પીનિંગ, વીવીંગ એન્ડ મેન્યુ કુપની લીમીટેડ. નાગપુર

ચેન્સિલો અને હોલ્ડરો

- (૧) ભારત એન્ડ સન્સ પુના
(૨) ડી ગ્રામરેડ એન્ડ સન્સ દિલ્હી
(૩) ઇન્ડિયન ઇન્ડસ્ટ્રીઝ ધરમપુરા-લાહોર
(૪) મદ્રાસ પેન્સિલ ફેક્ટરી પો. બો. ૮૬ મદ્રાસ

- (૫) નેશનલ કેપોન વર્ક્સ અમદાવાદ
(૬) ઇન્ડિયા કેપોન કંપની ગવર્નર પેટ-બેઝવામ

- (૭) માતી પેન્સિલ ફેક્ટરી, ટુંબકુર
(૮) એફ એન. ગ્રાપ્તાની કંપની. કલકત્તા
(૯) ભગત એન્ડ સન્સ. કલકત્તા

બામ

- (૧) કર્મવીર બામ. (૩) પાટણવાળા બામ.
(૨) અમૃતાશ્રવન બામ (૪) નોરમા પેન બામ.
બોમ્બે ટેન્સોપરેટીવ રવરેટી રોસર્સ-મુંબઈ

બંગડી

- (૧) ધર્મિય રથુનાથ વેલ્જી દીવ-પ્રાણીઆવાડ.
(૨) ભાગવત એન્ડ કંપની. પાંડુરગ નિવાસ. કોલ્હાપુર ન. ૩
(૩) રોક અવરોજ નિર્માણ કુમાર નં. ૩૯ કેપેક્સ રફીટ, છુનેશર-મુંબઈ

(૪) સિદ્ધાપ્પા કુમારપ્પા અમુમ. પોસ્ટ પોસ્ટલેસી વાયા ગોકાક છન્ને બેલગામ

(૫) કાંદીવલી બેન્ગલ્સ મેન્યુફેક્ચરીંગ કંપની. કાંદીવલી

બી બી. એન્ડ સી. આઇ રેલ્વે (૬) ન્યુએલ ગ્રાસ વર્ક્સ સીસીલ રોશન-જામલપુર

(૭) એન ઇ. વર્ક્સ બિકાની (છન્ને માથુ)

છુતાન

- (૧) વર્ધમાન એન્ડ સન્સ પાપધુની-મુંબઈ
(૨) ડી. એન ચંદ્ર એન્ડ કુપની નાનાપેક-મુંબઈ

(૩) ભારતસક્ષી કંપની લીમીટેડ. ૧૩, યાજી તોલા, હાકા

(૪) ઇસ્ટર્ન રમેલ ઇન્ડસ્ટ્રીઝ સક્ષી બજાર હાકા

(૫) હોર્ન મેન્યુફેક્ચરીંગ કંપની. હરમાઈન ખીલ્ડોંગ સુતાર ચાલ-મુંબઈ

(૬) ડેક્કન બટન ફેક્ટરી. હૈદરાબાદ ડેક્કન
(૭) ચિતળીઆ લક્ષ્મી. મુંબઈ નં. ૨

(૮) બગાવ કમરથીઅલ એન્ડ-સી. હરમાઈન ખીલ્ડોંગ, જુમામસીદ ગલી, સુતાર ચાલ મુંબઈ ૨

(૯) ફર્લબાદમ મૂળજી ઝવેરી. જૂલેશ્વર બગામાના સામે, ૨૧ ફેરબવાડી મુંબઈ ૨

(૧૦) લીમર્ડ હોલો કંપની પીલે પોલે મુંબઈ

(૧૧) આર. આર. વાડગે એન્ડ કમર્સ
મુંબઈ-૨

મીણખતીઓ

(૧) સરદેશાઈ કમર્સ બીલીમોરા

(૨) ચેરાન કેન્ડલ ફેક્ટરી.

બાયખલા મુંબઈ-૮

(૩) દાઉદભાઈ અલીદીના

ધી લાઇટ હાઉસ કેન્ડલ ફેક્ટરી મુંબઈ

(૪) બનારસ હિંદુ યુનિવર્સિટી બનારસ

(૫) કેસરી કેન્ડલ વર્ક્સ. ગોઆઈ-સાલેમ

(૬) નાશાપનવાસ એન્ડ કંપની મદ્રાસ

(૭) સોપ કેન્ડલ મેન્યુ. કંપની

મજગામ, મુંબઈ. ૧૦

શાહી

(૧) હાલે હન્ડ મેન્યુ. કંપની કુશા મુંબઈ

(૨) છ. એસ. ચતરે

હન્ડ મેન્યુફેકચરર્સ મુંબઈ

(૩) લોકમાન્ય એજન્સી

હન્ડ એન્ડ રેશનરી મેન્યુફેકચરર્સ મુંબઈ

(૪) એચ. ડી. નરીમાન કમર્સ

હુદાર ચાવ, ધીગીતખાવ, મુંબઈ

(૫) ડી. એન્ડ ડી. કમર્સ

૬૬૭ એ, માદર મુંબઈ

(૬) ગિરધરલાલ વી. સંઘવી

સંઘવી બિલ્ડીંગ સેન્ડરર્ટ રોડ, મુંબઈ

(૭) વજાવળકર કમર્સ

મેજેસ્ટીક સીનેમા પાસે મુંબઈ

(૮) ભારત હન્ડ

૫૮, ટેમેરીન્ડ લેન, કોટ મુંબઈ

(૯) સ્ટાર ટેકનોલોજીકલ વર્ક્સ

માતર (જલ્દે ખેડ)

(૧૦) બંગાળ મીસલેની લી.

૧૭૪, માલ્કેનોલા, મેનરોડ હલકલા

(૧૧) ભાગવત એન્ડ કંપની કોલ્કાતા

ચાણુ

(૧) ગોવિંદ સોપ કુર્. મુંબઈ

(૨) સૌરાષ્ટ્ર ઊદય સોપ ફેક્ટરી

ગાયવાડી મુંબઈ

(૩) તાતા એપ્રલ મીલમ લીમીટેડ

બોમ્બે હાઉસ, કોટ મુંબઈ

(૪) વિદ્યોતીઆ વાલકલી વર્ક્સ

ન્યુ બંકારી લેન, માંડવી મુંબઈ

(૫) મલ્લાવાયા એન્ડ સન્સ,

વેરોશવરનગર (કાઠિઆવાડ)